जॉन रीड

जॉन रीड

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक – त्रिभुवन नाथ

ДЖОН РИД

ДЕСЯТЬ ДНЕЙ,
КОТОРЫЕ ПОТРЯСЛИ МИР

(На языке хинди)

विषय-सूची

व्ला० इ० लेनिन
और
ना० को० क्रुप्स्काया
की
भूमिकायें

अमरीकी संस्करण की भूमिका

मैंने जॉन रीड की पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' को बड़ी दिलचस्पी और पूर्ण एकाग्रता से पढ़ा। मैं दुनिया के मजदूरों को निस्संकोच सलाह दूंगा कि वे इसे पढ़ें। यह एक ऐसी किताब है, जिसके लिए मैं चाहूंगा कि वह लाखों-करोड़ों प्रतियों में प्रकाशित हो तथा सभी भाषाओं में अनूदित हो। सर्वहारा क्रान्ति तथा सर्वहारा अधिनायकत्व वास्तव में क्या है, इसको समझने के लिए जो घटनायें इतनी महत्त्वपूर्ण हैं, उनका इस पुस्तक में सच्चा और जीता-जागता चित्र दिया गया है। आज इन समस्याओं की व्यापक चर्चा हो रही है, परन्तु इसके पहले कि कोई इन विचारों को अपनाये या ठुकराये, इसे अपने निर्णय के पूरे महत्त्व को समझना होगा। जॉन रीड की पुस्तक इस प्रश्न के स्पष्टीकरण में असन्दिग्ध रूप से सहायक होगी। यही प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन की आधारभूत समस्या है।

१९१९ न० लेनिन

रूसी संस्करण की भूमिका

'दस दिन जब दुनिया हिल उठी'—जॉन रीड ने अपनी अद्भुत पुस्तक को यही नाम दिया। उसमें अक्तूबर क्रान्ति के शुरू के दिनों का एक आश्चर्यजनक रूप से सजीव तथा शक्तिशाली वर्णन है। वह घटनाओं का इतिवृत्त मात्र नहीं है, न ही वह दस्तावेजों का संग्रह है, वह जीवन के कुछ ऐसे दृश्यों का विवरण है, जो इतने लाक्षणिक हैं कि क्रान्ति में भाग लेने वाला कोई भी आदमी उनसे मिलते-जुलते दृश्यों को, जिन्हें उसने अपनी आंखों देखा हो, याद किये बिना नहीं रह सकता। जिन्दगी की इन तसवीरों में जन-साधारण की भावनाओं का आश्चर्यजनक रूप से सच्चा प्रतिबिम्ब है, उन भावनाओं का प्रतिबिम्ब है, जिनके द्वारा क्रान्ति की प्रत्येक गतिविधि निर्धारित हुई।

शुरू शुरू में आपको इस बात पर अचरज हो सकता है कि एक विदेशी, एक अमरीकी, जो इस देश की भाषा से या तौर-तरीकों से वाक़िफ न था, ऐसी किताब कैसे लिख सका। आपको शायद लगे कि उसने बहुत सी बड़ी बड़ी भूलें की होंगी और बहुत सी बुनियादी बातें उसकी नजर में नहीं आई होंगी।

अधिकांश विदेशी रूस के बारे में दूसरे ही अन्दाज़ से लिखते हैं। वे या तो जिन घटनाओं के वे चश्मदीद गवाह हैं, उन्हें समझ ही नहीं पाते, या वे कुछ थोड़े से अलग अलग तथ्यों को, जो सदा उपलक्षक नहीं होते, पकड़ लेते हैं और उनका उपयोग कर सामान्य निष्कर्ष निकाल डालते हैं।

निस्संदेह इने-गिने विदेशियों ने ही क्रान्ति को अपनी आंखों देखा था।

जॉन रीड अगर ऐसी किताब लिख सके, तो इसका कारण यह है कि वह तटस्थ अथवा उदासीन द्रष्टा न थे, वह स्वयं एक जोशीले क्रान्तिकारी थे, कम्युनिस्ट थे, जिन्होने घटनाओं के अर्थ को, महान् संघर्ष के अर्थ को समझा। इस समझ ने ही उन्हें वह तीक्ष्ण दृष्टि दी, जिसके बिना ऐसी पुस्तक कभी भी लिखी नही जा सकती थी।

रूसी लोग क्रान्ति के बारे में और भी दूसरे ढंग से लिखते है: वे या तो उसका समग्र मूल्यांकन करते है, या उन घटनाओं का वर्णन करते है, जिनमे उन्होंने भाग लिया था। रीड की पुस्तक एक सचमुच लोकप्रिय जनव्यापी क्रान्ति का व्यापक चित्र प्रस्तुत करती है और इसलिए वह युवाजनों के लिए, भावी पीढ़ियों के लिए, इन लोगों के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण होगी, जिनके नजदीक अक्तूबर क्रान्ति विगत इतिहास की बात होगी। रीड की पुस्तक एक प्रकार की वीर-गाथा है।

जॉन रीड ने अपने जीवन को पूरी तरह रूसी क्रान्ति के साथ सम्बद्ध किया। सोवियत रूस उनके लिए प्रिय और नजदीकी बन गया। वह रूस में टाइफस की बीमारी से मरे, और उन्हें लाल चौक मे, क्रेमलिन की दीवार के साये में दफनाया गया। जो आदमी क्रान्ति के शहीदों की वीर-मृत्यु का वर्णन उतनी अच्छी तरह करे, जितनी अच्छी तरह जॉन रीड ने किया, वह इस महान् सम्मान के सर्वथा योग्य है।

नादेज्दा क्रूप्स्काया

जॉन रीड

दस दिन जब दुनिया हिल उठी

प्रस्तावना

यह पुस्तक, जैसा मैंने देखा, इतिहास का – जब उसकी चाल बहुत तेज हो गयी हो – एक छोटा सा क़तरा है। वह उस नवम्बर* क्रान्ति का एक तफ़सीलवार बयान होने के अलावा और कुछ होने का दावा नही करती, जब मजदूरों और सैनिकों का नेतृत्व करते हुए, बोल्शेविकों ने रूस में राज्य-सत्ता पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसे सोवियतों के हाथों में सौंप दिया।

पुस्तक के अधिकांश भाग में स्वभावतः "लाल पेत्रोग्राद" की चर्चा है, जो राजधानी तो था ही, विद्रोह का केन्द्र भी था। लेकिन पाठकों को अवश्य ही यह समझना चाहिए कि पेत्रोग्राद में जो कुछ हुआ, क़रीब क़रीब हूबहू वही न्यूनाधिक तीव्रता के साथ और समय के भिन्न भिन्न व्यवधान से पूरे रूस में हुआ।

इस पुस्तक में, जो जिन पुस्तकों को मैं लिख रहा हूं उनमें पहली है, मैं अपने को अनिवार्यतः उन घटनाओं के इतिवृत्त तक सीमित रखूंगा, जिनको मैंने ख़ुद देखा और अनुभव किया है और जिनकी विश्वसनीय प्रमाणों द्वारा पुष्टि होती है। इस इतिवृत्त से पहले दो अध्यायों में नवम्बर क्रान्ति की पृष्ठभूमि तथा उसके कारणों का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। मैं जानता हूं कि ये दो अध्याय पढ़ने में कठिन होंगे, लेकिन बाद के अध्यायों को समझने के लिए वे ज़रूरी हैं।

---

*अक्तूबर (पुराने पंचांग के अनुसार) – सं०

पाठक के मन में बहुत से सवाल उठ सकते हैं। बोल्शेविज्म क्या बला है? बोल्शेविकों ने किस प्रकार की शासन-व्यवस्था स्थापित की? अगर नवम्बर क्रान्ति से पहले बोल्शेविकों ने संविधान सभा का समर्थन किया, तो बाद में उन्होंने उसे शस्त्र-बल से भंग क्यों किया? और अगर बोल्शेविज्म का ख़तरा प्रत्यक्ष होने तक पूंजीपति वर्ग ने संविधान सभा का विरोध किया, तो बाद में उसने उसका समर्थन क्यों किया?

यहां पर इन सवालों के और ऐसे बहुत से सवालों के जवाब नहीं दिये जा सकते। 'कोर्नीलोव-काण्ड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की सन्धि तक'* नामक मेरी दूसरी पुस्तक में जर्मनी के साथ शान्ति-सन्धि तक क्रान्ति का प्रक्रम निर्देशित है। उस पुस्तक में क्रान्तिकारी संगठनों की उत्पत्ति तथा कार्य, जन-भावना के विकास, संविधान सभा के विघटन, सोवियत राज्य की बनावट और ब्रेस्त-लितोव्स्क की सन्धि वार्ता के प्रक्रम तथा परिणाम की व्याख्या की जा रही है...

बोल्शेविकों के उत्कर्ष पर विचार करते समय यह समझना ज़रूरी है कि रूसी आर्थिक ज़िन्दगी तथा रूसी सेना ७ नवम्बर, १९१७ को विसंगठित नहीं हुईं, बल्कि महीनों पहले एक ऐसी प्रक्रिया के तर्कसंगत फलस्वरूप विसंगठित हुईं, जो १९१५ में ही शुरू हो चुकी थी। ज़ार के दरबार में जिन भ्रष्ट प्रतिक्रियावादियों का बोलबाला था, उन्होंने जानबूझ कर रूस को तहस-नहस करने का बीड़ा उठाया, ताकि जर्मनी के साथ अलग में शान्ति-सन्धि की जा सके। मोर्चे पर हथियारों की कमी, जिसके फलस्वरूप १९१५ की गर्मियों में बुरी तरह पीछे हटना पड़ा, सेना में और बड़े बड़े शहरों में खाद्य की कमी, १९१६ में औद्योगिक उत्पादन तथा परिवहन का ठप हो जाना—हम जानते हैं कि ये सब कार्रवाइयां एक प्रबल अन्तर्ध्वंस-अभियान का अंग थीं, जिसे मार्च** क्रान्ति ने ऐसे वक़्त रोक दिया था, जब ज़रा सी भी देर घातक सिद्ध होती।

नयी हुकूमत के पहले चन्द महीनों में, बावजूद उस अव्यवस्था के,

---

* «Kornilov to Brest-Litovsk». —जॉ० री०
यह पुस्तक पूरी नहीं हो पाई।—सं०

** फरवरी (पुराने पंचांग के अनुसार)—सं०

जो एक महान् क्रान्ति मे उत्पन्न होती है, जिसमे संसार के सबसे ज़्यादा सताये हुए १६ करोड़ लोगों ने यकायक आज़ादी हासिल कर ली, आन्तरिक परिस्थिति तथा सेना की जुझारू शक्ति, दोनो मे ही वास्तविक सुधार हुआ।

लेकिन यह "मौज" थोड़े अरसे तक ही रही। सम्पत्ति-सम्पन्न वर्ग केवल राजनीतिक क्रान्ति चाहते थे, जो राज्य-सत्ता जार से छीनकर उनके हाथों मे सौंप दे। वे चाहते थे कि रूस मे फ़्रास या सयुक्त राज्य अमरीका की तरह वैधानिक जनतन्त्र स्थापित हो, या इंगलैण्ड की तरह वैधानिक राजतन्त्र हो। दूसरी ओर आम जनता सच्चा औद्योगिक तथा कृषक जनवाद चाहती थी।

विलियम इंगलिश वालिंग* ने अपनी पुस्तक 'रूस का सन्देश' («Russia's Message») में, जो १६०५ की क्रान्ति का एक विवरण है, रूसी मज़दूरो की मानसिक अवस्था का सुन्दर चित्रण किया है, जो बाद मे प्राय सर्वसम्मति से बोल्शेविज़म का समर्थन करने वाले थे। वह लिखते हैं.

> वे (मेहनतकश लोग) समझते थे कि यह सम्भव है कि स्वतन्त्र सरकार के तहत भी, अगर उस सरकार पर दूसरे सामाजिक वर्गो का कब्ज़ा हो गया, वे भूखों मरते रह सकते हैं...
>
> रूसी मजदूर क्रान्तिकारी है, परन्तु वह हिंसावृत्ति नही रखता। वह कट्टर मताग्रही नहीं है और न ही वह बुद्धिहीन है। वह बैरिकेडों की लड़ाई के लिए तैयार है, परन्तु उसने इस लड़ाई का अध्ययन किया है, और संसार के मजदूरो मे अकेले उसी ने इस लड़ाई के बारे में अपनी जानकारी असली तजरबे से हासिल की है। वह अपने उत्पीड़क पूजीपति वर्ग के साथ तब तक लड़ने के लिए इच्छुक और तत्पर है, जब तक कि इस लड़ाई का फ़ैसला न हो ले। लेकिन वह दूसरे वर्गो के अस्तित्व की अवहेलना नही करता। वह उनसे केवल यह आग्रह करता है कि इस उग्र संघर्प मे, जो नज़दीक आता जा रहा है, वे इस ओर आयें या दूसरी ओर जायें...

---

* **विलियम इंगलिश वालिंग** (१८७७–१९३६) – अमरीकी अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री, मजदूर-आन्दोलन और समाजवाद के बारे मे कई कृतियों के लेखक। 'रूस का सन्देश' नामक पुस्तक, जिसके कुछ उद्धरण जॉन रीड ने यहां दिये है, १९०८ मे अमरीका में प्रकाशित की गयी थी। –सं०

वे (मजदूर) सभी यह मानते थे कि हमारी (अमरीकी) राजनीतिक संस्थाये उनकी अपनी संस्थाओं से बेहतर है, लेकिन वे इसके लिए बहुत व्यग्र नही थे कि वे एक जालिम को हटाकर उसकी जगह दूसरा जालिम (अर्थात् पूजीपति वर्ग) लायें...

रूस के मजदूरों ने मास्को, रीगा और ओदेस्सा मे सैकड़ों की तादाद मे गोलिया खाईं और फासी पर चढ़ाये गये, रूस के हर जेल में हजारों की तादाद में कैद हुए, रेगिस्तानो और उत्तर ध्रुवीय प्रदेशो में निर्वासित हुए – इसलिए नही कि वे यह क़ीमत चुका कर गोल्डफ़ील्ड्स और क्रीप्ल-क्रीक के मजदूरो के सदिग्ध विशेषाधिकारों को प्राप्त करें...

और इस प्रकार रूस मे वाह्य युद्ध के बीच राजनीतिक क्रान्ति का सामाजिक क्रान्ति मे विकास हुआ, जिसकी परिणति बोल्शेविज्म की विजय मे हुई।

अमरीका में सोवियत सरकार विरोधी रूसी सूचना ब्यूरो के निर्देशक श्री ए० जी० सैक अपनी पुस्तक 'रूसी जनवाद का जन्म' में कहते है:

बोल्शेविकों ने अपना मन्त्रिमण्डल गठित किया, जिसमे निकोलाई लेनिन प्रधान मन्त्री तथा लेव त्रोत्स्की परराष्ट्र मन्त्री थे। मार्च क्रान्ति के प्रायः तत्काल बाद ही यह स्पष्ट हो गया कि उनका सत्तारूढ़ होना अनिवार्य है। क्रान्ति के पश्चात् बोल्शेविकों का इतिहास उनके सतत उत्कर्ष का इतिहास है...

विदेशी लोग और विशेषतः अमरीकी लोग रूसी मजदूरों की "अनभिज्ञता" को महत्त्व देते हैं। यह सच है कि उनके पास वह राजनीतिक अनुभव नहीं था, जो पश्चिम के लोगों के पास था, परन्तु वे स्वैच्छिक संगठनों के काम मे खूब माहिर थे। १९१७ मे रूस में उपभोक्ता सहकारी समितियों के १२० लाख से अधिक सदस्य थे, और सोवियतें स्वयं रूसी मजदूरों की संगठन प्रतिभा का अद्भुत उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त जितनी अच्छी तरह वे समाजवादी सिद्धान्त में और उसके व्यावहारिक

प्रयोग में दीक्षित हैं, उतनी अच्छी तरह सम्भवतः संसार में और कोई लोग नहीं हैं।

उनकी विशेषताओं का वर्णन करते हुए, विलियम इंगलिश वालिंग कहते हैं:

रूस के मेहनतकश लोग अधिकांशतः पढ़-लिख सकते हैं। अनेक वर्षों से देश में ऐसी अशान्ति रही है कि उन्हें यह सुविधा प्राप्त हो सकी कि स्वयं उन्हीं के बीच से निकलने वाले समझदार व्यक्तियों ने ही नहीं, बल्कि समान रूप से क्रान्तिकारी शिक्षित वर्ग के एक बड़े भाग ने भी उनका नेतृत्व किया, जो रूस के राजनीतिक तथा सामाजिक पुनरुद्धार के अपने विचारों को लेकर मेहनतकश जनता की ओर आया है...

बहुत से लेखक सोवियत सत्ता के प्रति अपने वैर भाव की सफाई देते हुए तर्क करते हैं कि रूसी क्रान्ति का अन्तिम चरण और कुछ नहीं बोल्शेविज्म के वहशियाना हमलों के खिलाफ "भद्र" जनों का संघर्ष था। लेकिन मिल्की वर्गों ने ही, जब उन्होंने यह समझ लिया कि क्रान्तिकारी जन-संगठनों की शक्ति कितनी बढ़ गयी है, उन्हें नष्ट कर देने और क्रान्ति को ठप कर देने का बीड़ा उठाया। इस गरज से मिल्की वर्गों ने अन्ततः निराशा में उत्तेजित होकर दुःसाहसिक उपायों का सहारा लिया। केरेन्स्की मन्त्रिमण्डल तथा सोवियतों को छिन्न-भिन्न करने के उद्देश्य से परिवहन को विसंगठित किया गया और आन्तरिक उपद्रव भड़काये गये। कारख़ाना समितियों को कुचलने की गरज से कारख़ाने बन्द कर दिये गये और ईंधन तथा कच्चा माल दूसरी जगहों में भेज दिये गये। मोर्चे पर सैनिक समितियों को तोड़ने के लिए मृत्यु-दण्ड का फिर से विधान किया गया और सैनिक पराजय को अनदेखा कर दिया गया।

ये सारी बातें बोल्शेविज्म की आग के लिए बहुत अच्छा ईंधन थीं। बोल्शेविकों ने उनका जवाब वर्ग-युद्ध का प्रचार करके और सोवियतों की सर्वोपरिता का दावा करके दिया।

इन दोनों छोरों के बीच, दूसरे गुटों के साथ साथ जो उनका पूरी लगन से या अन्यमनस्क भाव से समर्थन करते थे, तथाकथित "नरम" समाजवादी – मेन्शेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी थे और कई और

छोटी छोटी पार्टियां थीं। मिल्की वर्गों ने इन दलों पर भी हमला किया, लेकिन उनके अपने सिद्धान्तों ने उनकी प्रतिरोध-शक्ति को क्षीण कर दिया था।

मोटे तौर पर मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों का विश्वास था कि रूस आर्थिक दृष्टि से सामाजिक क्रान्ति के लिए तैयार न था, और वहां राजनीतिक क्रान्ति ही सम्भव हो सकती थी। उनकी व्याख्या के अनुसार रूसी जन-साधारण इतने शिक्षित न थे कि वे सत्ता को अपने हाथ में ले सकते, ऐसा करने की कोशिश से अनिवार्यतः जो प्रतिक्रिया होगी, उसका इस्तेमाल कर कोई बेरहम अवसरवादी पुरानी व्यवस्था को फिर से कायम कर सकता था। और इसका नतीजा यह हुआ कि जब "नरम" समाजवादियों को बाध्य होकर सत्ता अपने हाथों में लेनी पड़ी, वे उस सत्ता का इस्तेमाल करते घबराते थे।

उनका विश्वास था कि रूस को राजनीतिक तथा आर्थिक विकास की उन मंजिलों से गुज़रना पड़ेगा, जिनसे पश्चिमी यूरोप परिचित हो चुका था, और तब बाकी दुनिया के साथ साथ आख़िरकार वहां भी पूर्ण समाजवाद आविर्भूत होगा। फलतः वे मिल्की वर्गों के साथ स्वभावतः इस बात में सहमत थे कि रूस को सबसे पहले संसदीय राज्य बनना चाहिये, यद्यपि पश्चिमी जनवादी देशों की तुलना में उसे अधिक परिमार्जित होना चाहिए। इसलिए उन्होंने इस बात का आग्रह किया कि सरकार के अन्दर मिल्की वर्गों से सहयोग होना चाहिए।

इससे आगे एक और क़दम उठाना और उनकी हिमायत करना आसान था। "नरम" समाजवादियों को पूंजीपति वर्ग की ज़रूरत थी, लेकिन पूंजीपति वर्ग को "नरम" समाजवादियों की ज़रूरत न थी। इसका नतीजा यह हुआ कि समाजवादी मंत्री मजबूर होकर अपने समूचे कार्यक्रम से कदम ब क़दम पीछे हटते गए, जबकि मिल्की वर्ग अधिकाधिक दुराग्रही होते गये।

और अन्त में जब बोल्शेविकों ने सारे खोखले समझौतों को औंधा कर दिया, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने अपने को मिल्की वर्गों की ओर लड़ते हुए पाया... आज संसार के प्रायः हर देश में ऐसा ही व्यापार देखा जा सकता है।

मुझे ऐसा लगता है कि विध्वंसकारी शक्ति होने के बजाय बोल्शेविकों की पार्टी ही रूस में अकेली ऐसी पार्टी थी, जिसके पास एक रचनात्मक कार्यक्रम था और उसे देश में लागू करने की शक्ति थी। अगर

वे उस समय सत्तारूढ़ न हुए होते, तो मुझे इस बात में सन्देह नहीं है कि दिसम्बर मे शाही जर्मनी की सेनाये पेत्रोग्राद और मास्को मे होती और रूस की गर्दन पर फिर कोई जार सवार होता...

आज सोवियत सत्ता के पूरे एक बरस बाद भी यह कहना फ़ैशन मे दाखिल है कि बोल्शेविक विद्रोह एक "जोखिम" का काम था। इसमे सन्देह नही कि वह एक जोखिम का काम ही था, और अभी तक मानवता ने जितने ऐसे कामो का उपक्रम किया है, उनमे यह विद्रोह एक अत्यन्त अद्भुत कार्य था जिसने मेहनतकश जन-समुदायो की लहर पर उठकर इतिहास मे प्रबल वेग से प्रवेश किया और जिसने सब कुछ उन समुदायो की सीधी-सादी मगर इन्तिहा बड़ी ख्वाहिशो के दाव पर लगा दिया। वह मशीनरी, जिसके द्वारा बड़ी बड़ी जमीदारियो की भूमि किसानो के बीच बाटी जा सकती थी, उसी वक्त कायम की जा चुकी थी। उद्योग पर मजदूरों का नियन्त्रण स्थापित करने के लिए कारखाना समितिया और ट्रेड-यूनियने थी ही। हर गाव, क़सबे और शहर मे, हर हलक़े और प्रान्त मे स्थानीय प्रशासन के कार्यभार को सभालने के लिए तैयार मजदूरों, सैनिकों और किसानों के प्रतिनिधियो की सोवियते मौजूद थी।

बोल्शेविज़्म के बारे मे कोई कुछ भी सोचे, लेकिन इस बात से इनकार नही किया जा सकता कि रूसी क्रान्ति मानव-इतिहास की एक महान् घटना है और बोल्शेविको का उदय एक विश्वव्यापी महत्त्व की घटना है। जिस प्रकार इतिहासकार पेरिस कम्यून की दास्तान की छोटी से छोटी तफ़सील के लिए दस्तावेजो की छानबीन करते है, उसी प्रकार वे यह भी जानना चाहेंगे कि नवम्बर १९१७ मे पेत्रोग्राद मे क्या घटनायें घटी थी, कौन-सी भावना जनता को अनुप्राणित कर रही थी और उनके नेता क्या कहते और करते थे, और वे देखने-सुनने मे कैसे थे। मैने इसी दृष्टि से इस पुस्तक की रचना की है।

संघर्ष मे मेरी हमदर्दी किसी ओर न हो, ऐसी बात नही है। लेकिन उन शानदार दिनों की कहानी कहते समय मैंने घटनाओ को एक ईमानदार रिपोर्टर की नजर से देखने की कोशिश की है, जिसकी दिलचस्पी इस बात में है कि सच बात कलमबन्द की जाये।

जॉ० री०

न्यू-यार्क, १ जनवरी, १९१९

टिप्पणियां तथा व्याख्यायें*

साधारण पाठक को रूसी संगठनो – राजनीतिक दलों, समितियो और केन्द्रीय समितियो, सोवियतो, दूमाग्रो तथा यूनियनों – की बहुलता से बेहद उलझन होगी। इसीलिए मै यहा संक्षेप से कुछ परिभाषायें और व्याख्यायें दे रहा हूं।

राजनीतिक पार्टियां

संविधान सभा के चुनावों मे उम्मीदवार पेत्रोग्राद में १७ पार्टी-टिकटों पर और कुछ प्रान्तीय नगरो में ४० तक टिकटों पर खड़े हुए थे; परन्तु राजनीतिक पार्टियो के गठन तथा उनके उद्देश्यों का जो साराश नीचे दिया जा रहा है, वह उन्ही दलों तथा गुटो तक सीमित है, जिनका जिक्र इस पुस्तक मे किया गया है। यहां उनके कार्यक्रम के मूलतत्व तथा उनके जन-आधार के सामान्य चरित्र पर ही ध्यान दिया जा सकता है...

---

*जॉन रीड द्वारा लिखित 'टिप्पणियां तथा व्याख्यायें' कुछ छोटी-मोटी गलतियो के बावजूद पाठक के लिए दिलचस्प होंगी। इनसे यह प्रगट होता है कि लेखक ने रूस मे अक्तूबर क्रान्ति से पहले के राजनीतिक सम्बन्धों का कितना अच्छा अध्ययन किया था, और यह भी कि जॉन रीड किस पक्ष के हमदर्द और किस पक्ष के विरोधी थे और उन्होंने संघर्षरत पार्टियों और गुटो का किस प्रकार मूल्यांकन किया। – सं०

१. **राजतन्त्रवादी** – रंग रंग के राजतन्त्रवादी, जैसे **अक्तूबरवादी**, आदि। ये गुट किसी जमाने में शक्तिशाली थे, लेकिन अब उनका खुला अस्तित्व समाप्त हो चुका था। वे या तो चोरी-छिपे काम करते थे, या उनके सदस्य कैडेटों में शामिल हो गये थे, क्योंकि कैडेटों ने धीरे धीरे करके उनके राजनीतिक कार्यक्रम को अपना लिया था। इस पुस्तक में उन गुटों के जिन प्रतिनिधियों का उल्लेख हुआ है, वे हैं रोद्ज्यान्को और शुलगीन।

२. **कैडेट**। उनकी पार्टी "संवैधानिक जनवादियों" की पार्टी के प्रथमाक्षरों के आधार पर उन्हें **कैडेट** कहते हैं। इस पार्टी का आधिकारिक नाम "जन-स्वातन्त्र्य पार्टी" है। ज़ार के तहत यह पार्टी, जो मिल्की वर्गों के उदारतावादियों को लेकर गठित हुई थी, राजनीतिक सुधारों की विशाल पार्टी थी, जो मोटे तौर पर अमरीका की प्रोग्रेसिव पार्टी के अनुरूप थी। जब मार्च १९१७ में क्रान्ति भड़की, **कैडेटों** ने पहली अस्थायी सरकार बनायी। अप्रैल में **कैडेट-मंत्रिमण्डल** उलट दिया गया, क्योंकि उसने यह घोषणा की कि वह ज़ार की सरकार के साम्राज्यवादी उद्देश्यों समेत मित्र-राष्ट्रों के साम्राज्यवादी उद्देश्यों का समर्थन करता है। क्रान्ति जैसे जैसे अधिकाधिक सामाजिक **आर्थिक** क्रान्ति का रूप लेती गयी, **कैडेट** वैसे वैसे अधिकाधिक अनुदार होते गये। **कैडेटों** के जिन प्रतिनिधियों का इस पुस्तक में उल्लेख हुआ है, वे हैं: मिल्युकोव, विनावेर, शात्स्की।

२क. **"सार्वजनिक व्यक्तियों का दल"**। जब कोर्नीलोव-प्रतिक्रान्ति के साथ अपने सम्बन्धों के कारण **कैडेट** बदनाम हो गये, मास्को में **"सार्वजनिक व्यक्तियों के दल"** की स्थापना की गयी। अन्तिम केरेन्स्की मंत्रिमण्डल में इस दल के प्रतिनिधियों को पोर्टफ़ोलियो दिये गये। बावजूद इस बात के कि दल के बौद्धिक नेता रोद्ज्यान्को और शुलगीन जैसे लोग थे, उसने अपने को ग़ैरजानिबदार घोषित किया। इस दल के सदस्य अपेक्षाकृत अधिक "आधुनिक" बैंकर, व्यापारी और कारख़ानेदार थे; जो यह समझने की तमीज़ रखते थे कि सोवियतों का मुकाबला उनके अपने हथियार – आर्थिक संगठन – से ही किया जा सकता है। इस दल के प्रतिनिधि: लिआनोज़ोव, कोनोवालोव।

३. जन-समाजवादी अथवा त्रुदोविक दल (श्रम दल)। संख्या की दृष्टि से यह एक छोटी पार्टी थी, जिसके सदस्य फूक फूंक कर क़दम रखने वाले बुद्धिजीवी, सहकारी समितियों के नेता और रूढ़िवादी किसान थे। ये लोग समाजवादी होने का दम भरते थे, परन्तु वास्तव में वे निम्न-पूंजीवादी वर्ग – क्लर्कों, दूकानदारों वगैरह – के हितों की हिमायत करते थे। वे प्रत्यक्ष "वंशानुक्रम" से चौथी राजकीय दूमा के त्रुदोविक दल की, जिसके अधिकांश सदस्य किसानों के प्रतिनिधि थे, समझौतापरस्त परम्परा के उत्तराधिकारी थे। जब मार्च १९१७ की क्रान्ति भड़की, केरेन्स्की राजकीय दूमा में त्रुदोविक दल के नेता थे। जन-समाजवादी पार्टी एक राष्ट्रीयतावादी पार्टी थी। इस पुस्तक में उल्लिखित उनके प्रतिनिधि हैं: पेशेखोनोव, चाइकोव्स्की।

४. रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी। शुरू में मार्क्सीय समाजवादी। १९०३ में होने वाली पार्टी कांग्रेस में पार्टी में कार्यनीति के प्रश्न को लेकर फूट पड़ गयी और वह दो गुटों में बंट गयी – बहुमत (बोल्शिन्स्त्वो) और अल्पमत (मेन्शिन्स्त्वो), जिसके कारण उनका नाम "बोल्शेविक" और "मेन्शेविक" – अर्थात् "बहुमत के सदस्य" और "अल्पमत के सदस्य" – पड़ा। इन दोनों पक्षों ने दो अलग अलग पार्टियों का रूप धारण किया – दोनों अपने को "रूसी सामाजिक जनवादी मज़दूर पार्टी" कहते रहे और दोनों मार्क्सीय होने का दावा करते रहे। वास्तव में १९०५ की क्रान्ति के समय से बोल्शेविक अल्पमत में थे, लेकिन सितम्बर १९१७ में उनका फिर से बहुमत स्थापित हुआ।

(क) मेन्शेविक। इस पार्टी में सभी रंगों के समाजवादी शामिल थे, जिनका विश्वास था कि समाज स्वाभाविक क्रमिक विकास द्वारा ही समाजवाद की ओर बढ़ सकता है, और मजदूर वर्ग को सबसे पहले राजनीतिक सत्ता पर अधिकार करना होगा। यह पार्टी राष्ट्रीयतावादी पार्टी भी थी। यह समाजवादी बुद्धिजीवियों की पार्टी थी, जिसका अर्थ है: शिक्षा के सभी साधन मिल्की वर्गों के हाथ में होने के कारण बुद्धिजीवियों की सहज प्रवृत्ति यही होती थी कि वे अपने प्रशिक्षण से प्रभावित हों और मिल्की वर्गों का ही पक्ष ग्रहण करें। इस पुस्तक में उल्लिखित उनके प्रतिनिधि हैं: दान, लीबेर, त्सेरेतेली।

(ख) मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादी। मेन्शेविक पार्टी का गरम पक्ष, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी तथा मिल्की वर्गों के साथ किसी भी प्रकार के संश्रय के विरोधी। फिर भी वे अनुदार मेन्शेविकों के साथ अपना नाता तोड़ने के लिए राजी न थे। उन्होंने मजदूर वर्ग के अधिनायकत्व का विरोध किया, जिसका बोल्शेविक समर्थन करते थे। त्रोत्स्की बहुत दिनों तक इस दल के सदस्य बने रहे। उसके नेताओं में उल्लेखनीय हैं मार्तोव, मर्तीनोव।

(ग) बोल्शेविक। अब ये "नरम" अथवा "संसदीय" समाजवाद की उस परम्परा से अपने पूर्ण विच्छेद को महत्त्व देने के उद्देश्य से अपने को कम्युनिस्ट पार्टी कहते हैं, जो सभी देशों के मेन्शेविकों और तथाकथित "बहुसंख्यक समाजवादियों" पर छायी हुई है। बोल्शेविकों का प्रस्ताव था कि सर्वहारा फ़ौरन विद्रोह करे और शासन-सूत्र अपने हाथ में ले ले, ताकि उद्योग, भूमि, प्राकृतिक साधन तथा वित्तीय संस्थाओं पर बलपूर्वक अधिकार करके समाजवाद को जल्दी लाया जा सके। यह पार्टी मुख्यत: औद्योगिक मजदूरों की, लेकिन साथ ही गरीब किसानों के एक बड़े भाग की भी इच्छाओं को व्यक्त करती है। "बोल्शेविक" शब्द "पराकाष्ठावादी" का पर्याय नहीं है। पराकाष्ठावादी अलग एक दल थे (देखिये अनुच्छेद ५ ख)।

(घ) संयुक्त सामाजिक-जनवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावादी, जिन्हें उनके अत्यन्त प्रभावशाली मुखपत्र 'नोवाया जीज्न' (नया जीवन) के नाम पर नोवाया जीज्न दल भी कहते थे। यह बुद्धिजीवियों का एक छोटा सा दल था। उसके नेता मक्सिम गोर्की के निजी अनुयायिओं को छोड़ दें, तो मजदूर वर्ग के अन्दर उसके बस मुट्ठी भर समर्थक ही थे। ये लोग बुद्धिजीवी थे, जिनका कार्यक्रम लगभग वही था, जो मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों का था। फ़र्क सिर्फ यह था कि नोवाया जीज्न दल ने दो बड़े गुटों में से किसी का भी पल्ला पकड़ने से इनकार किया। बोल्शेविक कार्यनीति का विरोध करते हुए भी दल के प्रतिनिधि सोवियत सरकार में बने रहे। इस पुस्तक में उल्लिखित अन्य प्रतिनिधि: आवीलोव; क्रामारोव।

(ङ) येदीन्स्त्वो (एकता)। एक बहुत छोटा सा, समाप्तिप्राय दल, जिसके लगभग सारे सदस्य पिछली शताब्दी के नौवें दशक में रूसी-सामाजिक-

जनवादी आन्दोलन के मार्गदर्शक और उनके सबसे बड़े सिद्धान्तकार प्लेखानोव के अपने अनुयायी थे। प्लेखानोव अब बूढ़े हो चुके थे और घोर राष्ट्रवादी थे, यहा तक कि वह मेन्शेविकों तक के लिए बहुत अधिक अनुदार थे। बोल्शेविकों द्वारा सरकार का तख्ता उलट दिये जाने के बाद येदीन्स्त्वो का लोप हो गया।

५ **समाजवादी-क्रान्तिकारियों की पार्टी,** जिन्हें उनकी पार्टी प्रथमाक्षरों के आधार पर **एसेर** कहते थे। शुरू शुरू में किसानों की क्रान्तिकारी पार्टी, "जुझारू संगठनों" की – आतंकवादियों की – पार्टी। मार्च क्रान्ति के पश्चात् उसमे ऐसे कितने ही लोग शामिल हो गये, जो कभी समाजवादी नही थे। उस समय यह पार्टी केवल भूमि के निजी स्वामित्व के उन्मूलन के पक्ष मे थी और वह भी मालिकों को किसी न किसी शक्ल मे मुआवजा देकर ही। अन्ततोगत्वा किसानों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई क्रान्तिकारी भावना से मजबूर होकर एसेरों ने अपने कार्यक्रम से "मुआवजे" की धारा को निकाल दिया, और उसी के फलस्वरूप १९१७ की शरद ऋतु मे पार्टी के अधिक तरुण तथा ओजस्वी बुद्धिजीवियों ने मुख्य पार्टी से अलग हो कर एक नयी पार्टी, **वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी** की स्थापना की। एसेरों ने, जिन्हें बाद में हमेशा गरम दली लोग "**दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी**" कहा करते थे, मेन्शेविकों के राजनीतिक दृष्टिकोण को ग्रहण किया और उनके साथ मिल कर काम किया। अन्ततः वे अपेक्षाकृत धनी किसानों, बुद्धिजीवियों और दूर-दराज के देहाती इलाको की राजनीतिक रूप से अशिक्षित आबादियों का प्रतिनिधित्व करने लगे। फिर भी उनके बीच मेन्शेविकों की अपेक्षा राजनीतिक तथा आर्थिक विचारो का अधिक अन्तर दिखाई देता था। इन पृष्ठों में उनके जिन नेताओं का जिक्र आया है, वे हैं: अव्क्सेन्त्येव, गोत्स, केरेन्स्की, चेर्नोव, "बाबुश्का"* ब्रेश्कोव्स्काया।

(क) **वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी।** सिद्धान्ततः मजदूर वर्ग के अधिनायकत्व के कार्यक्रम को स्वीकार करते हुए भी वे शुरू शुरू में बोल्शेविकों की कड़ी कार्यनीति का अनुसरण करने के लिए अनिच्छुक थे।

---

*दादी। – सं०

फिर भी वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी सोवियत सरकार में बने रहे, बोल्शेविकों के साथ उन्होंने मन्त्रि-पदों, विशेष रूप से कृषि-मन्त्रित्व को संभाला। वे मन्त्रिमण्डल से कई बार निकले, लेकिन फिर हमेशा लौट आये। किसान अधिकाधिक संख्या में (दक्षिणपंथी) एसेरों की पांतों से निकल कर वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी में शामिल होते, और इस प्रकार यह पार्टी एक विशाल किसान पार्टी बन गयी, जो सोवियत सत्ता का समर्थन करती थी और इस पक्ष में थी कि बड़ी बड़ी जमींदारियां बिला मुआवज़ा ज़ब्त कर ली जायें और फिर किसान ख़ुद इस बात का फ़ैसला करें कि इन ज़मींदारियों का क्या किया जाये। उनके नेताओं में उल्लेखनीय: स्पिरिदोनोवा, करेलिन, कम्कोव, कोलेगायेव।

(ख) पराकाष्ठावादी। १९०५ की क्रान्ति में समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी से अलग हो जानेवाली एक शाखा, जिसने उस समय एक शक्तिशाली किसान आन्दोलन का प्रतिनिधित्व किया और माग की कि अधिकतम समाजवादी कार्यक्रम अविलम्ब लागू किया जाये। अब किसान अराजकतावादियों का एक नगण्य दल।

संसदीय पद्धति

रूस मे सभायें और सम्मेलन उतने हमारे नहीं, जितने यूरोपीय नमूने पर संगठित किये जाते हैं। आम तौर से पहला काम अधिकारियों और **सभापतिमण्डल** का निर्वाचन होता है।

सभापतिमण्डल सभापतित्व करनेवाली वह समिति है, जिसमे सभा में प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाले सभी दलों और राजनीतिक गुटों के उनकी संख्यानुसार प्रतिनिधि होते हैं। **सभापतिमण्डल** कार्यवाही का क्रम निर्धारित करता है, और मण्डल के सदस्य अध्यक्ष के निर्देश पर, बारी बारी से सभापति का आसन ग्रहण कर सकते हैं।

प्रत्येक प्रश्न (**वोप्रोस**) का पहले सामान्य निरूपण किया जाता है और फिर उस पर बहस होती है। बहस के अन्त मे भिन्न-भिन्न दल अपने प्रस्ताव पेश करते हैं, और हर प्रस्ताव पर अलग से मतदान लिया जाता है। कार्यवाही का क्रम शुरू के ही आधे घंटे मे छिन्न-भिन्न हो सकता है

और अकसर होता भी है। "आपात-स्थिति" की दलील देकर, जिसे भीड़ प्रायः सदा ही मंजूर कर लेती है, सभा में कोई भी व्यक्ति उठकर किसी भी विषय पर कुछ भी कह सकता है। भीड़ सभा पर पूरी तरह हावी होती है, और अध्यक्ष का वस्तुतः बस यही काम होता है कि वह एक छोटी सी घंटी बजा कर व्यवस्था रखे और वक्ताओं को बोलने को स्वीकृति दे। सभा का प्रायः सारा वास्तविक कार्य विभिन्न दलों और राजनीतिक गुटों की अन्तरंग बैठकों में होता है। ये दल और गुट, जिनका प्रतिनिधित्व उनके नेता करते हैं, प्रायः सदा ही एकमत हो कर मतदान करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि जब भी कोई नयी, महत्त्वपूर्ण बात सामने आती है या वोट लेना होता है, सभा स्थगित कर दी जाती है, ताकि विभिन्न दल और राजनीतिक गुट अपनी अन्तरंग बैठकें कर सकें।

सभा में उपस्थित भीड़ बेहद शोरगुल करती है, वक्ताओं की तारीफ में तालियां बजाती है या फिर सवालों की झड़ी लगा कर उनके लिए बोलना मुश्किल कर देती है। **सभापतिमण्डल** की सारी योजनायें एक ओर धरी रह जाती हैं। बीच बीच में प्रथानुसार ये आवाज़ें लगाई जाती हैं: "**प्रोसिम**! कृपया, आगे कहिये!", "**प्राविल्नो**! या "**एतो वेर्नो**! सच है! ठीक है!", "**दोवोल्नो**! बस करो!", "**दोलोई**! मुर्दाबाद!", "**पोज़ोर**! शर्म!" और "**तीशे**! चुप रहो! इतना शोर न करो!"

जन-संगठन

१. **सोवियत**। **सोवियत** शब्द का अर्थ है परिषद्। ज़ार के तहत राजकीय परिषद् को **गोसुदार्स्त्वेंन्नो सोवियत** कहते थे। परन्तु क्रान्ति के समय से "**सोवियत**" शब्द से एक विशेष प्रकार के संसद का बोध होने लगा, जो मजदूर वर्ग के उत्पादन-सम्बन्धी संगठनों के सदस्यों द्वारा चुना जाता है—अर्थात् मजदूरों या सैनिकों या किसानों के प्रतिनिधियों की **सोवियत**। इसलिए मैंने इस शब्द का उपयोग इन्हीं निकायों तक सीमित रखा है और उनके अतिरिक्त अगर कहीं यह शब्द आया है, तो मैंने उसके लिए "परिषद्" शब्द का इस्तेमाल किया है।

रूस के हर गांव, क़स्बे और शहर में चुनी जाने वाली स्थानाय **सोवियतों** के – और बड़े बडे शहरों मे वार्ड (**रइग्रोन्नी**) **सोवियतों** के भी – अतिरिक्त **ओब्लास्त्नोई** या **गुबेर्नस्की** (हलके या प्रान्त की) **सोवियतों** का और राजधानी में अखिल रूसी **सोवियतों** की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का भी अस्तित्व है, जिसे उसके प्रथमाक्षरों के आधार पर **त्सै-ई-काह** कहते हैं (देखिये, निम्नलिखित अनुच्छेद 'केन्द्रीय समितियां')।

मार्च क्रान्ति के थोड़े दिनों ही बाद प्रायः सभी जगह मजदूरों के और सैनिकों के प्रतिनिधियों की **सोवियतें** एक में मिल गयी। फिर भी विशेष मामलों में, जिनका उनके अपने विशेष हितों से सम्बन्ध होता था, मज़दूरों और सैनिकों की शाखाओ की अलग सभायें होती रही। किसानों के प्रतिनिधियों की **सोवियतें** शेष दोनों **सोवियतों** के साथ तभी मिली, जब बोल्शेविकों ने सरकार का तख़्ता उलट दिया। उनकी **सोवियतों** का भी गठन उसी प्रकार हुआ था, जिस प्रकार मजदूरों और सैनिकों की **सोवियतों** का और उसी प्रकार किसानों की अखिल रूसी **सोवियतों** की कार्यकारिणी समिति भी राजधानी में स्थापित की गयी थी।

२. **ट्रेड-यूनियनें**। यद्यपि रूसी ट्रेड-यूनियनों का रूप अधिकांशतः औद्योगिक था, उन्हें फिर भी ट्रेड-यूनियन ही कहा जाता था। बोल्शेविक क्रान्ति के समय इन ट्रेड-यूनियनों की सदस्य संख्या तीस-चालीस लाख रही होगी। ये ट्रेड-यूनियनें एक अखिल रूसी निकाय के रूप में भी संगठित थी – अमरीकी फ़ेडरेशन आफ लेबर का एक प्रकार का रूसी संस्करण, जिसकी अपनी, राजधानी में स्थापित, केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति थी।

३. **कारख़ाना समितियां**। ये स्वतःस्फूर्त संस्थायें थी, जिन्हें मजदूरों ने उद्योग पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने की कोशिश के दौरान कारख़ानों के अन्दर क्रान्ति के बाद की उस परिस्थिति का फ़ायदा उठा कर स्थापित किया, जिसमें प्रशासन-व्यवस्था ठप हो गयी थी। इन समितियों का काम यह था कि क्रान्तिकारी संघर्ष के जरिए कारख़ानों पर क़ब्ज़ा कर ले और उन्हें चलायें। **कारखाना समितियों** का भी अपना अखिल रूसी संगठन था, जिसकी केन्द्रीय समिति पेत्रोग्राद में स्थापित थी। यह समिति ट्रेड-यूनियनों के साथ सहयोग करती थी।

४ दूमायें। दूमा शब्द का मोटे तौर पर अर्थ है "विचारक निकाय"। पुरानी शाही दूमा, जो क्रान्ति के बाद एक जनवादी रूप ग्रहण कर छः महीनों तक चलती रही, सितम्बर १६१७ में स्वभावतः काल का ग्रास बनी। इस पुस्तक में जिस नगर दूमा का उल्लेख है, वह पुन.संगठित म्युनिसिपल परिषद् थी, जिसे अक्सर "म्युनिसिपल स्वशासन निकाय" कहते थे। वह प्रत्यक्ष तथा गुप्त मतदान द्वारा निर्वाचित हुई थी, और अगर वह बोल्शेविक क्रान्ति के दौरान जन-समुदायों को क़ाबू में नही रख सकी, तो उसका एकमात्र कारण यह था कि आर्थिक सूत्र से बंधे समूहों पर आधारित सगठनो की बढ़ती हुई शक्ति के सामने विशुद्ध राजनीतिक प्रतिनिधित्व के प्रभाव में सामान्यतः गिरावट आ गयी थी।

५. जेम्सत्वो। इन्हे मोटे तौर पर "ज़िला-परिषद्" कहा जा सकता है। ज़ारशाही के तहत भूस्वामी वर्गों के बुद्धिजीवी उदारतावादियों द्वारा विकसित और अधिकांशत. उन्ही के द्वारा नियन्त्रित अर्द्ध-राजनीतिक, अर्द्ध-सामाजिक निकाय, जिनके हाथ में अत्यन्त न्यून शासन-सत्ता थी। किसानों के बीच शिक्षा और सामाजिक सेवा का काम ही उनका सबसे महत्त्वपूर्ण काम था। लड़ाई के दौरान जेम्सत्वोओं ने धीरे धीरे रूसी सेना के लिए खाने-कपड़े का पूरा इन्तजाम अपने हाथ मे ले लिया, और इसके अलावा वे विदेशो से माल की ख़रीद भी करने लगे और मोर्चे पर सिपाहियो के बीच बहुत कुछ उस किस्म का काम करने लगे, जैसा अमरीकी ईसाई युवक सघ करता था। मार्च क्रान्ति के बाद जेम्सत्वोओं को जनवादी रूप दिया गया, ताकि वे देहाती इलाकों मे स्थानीय शासन के अंग बनाये जा सकें। परन्तु नगर दूमाओं की ही तरह वे सोवियतों के सामने नही ठहर सके।

६ सहकारी समितियां। ये मजदूरों और किसानो की उपभोक्ता सहकारी समितिया थी, जिनके रूस मे क्रान्ति से पहले कई लाख सदस्य थे। क्रान्तिकारी समाजवादी दलों ने उदारपंथियो और "नरम" समाजवादियों द्वारा संस्थापित सहकारिता-आन्दोलन का समर्थन नही किया, क्योंकि वह उत्पादन तथा वितरण के साधनों को मजदूरों के हाथों में पूर्णत. अन्तरित करने का एक अनुकल्प मात्र था। मार्च क्रान्ति के पश्चात् सहकारी समितियों का बड़ी तेज़ी से प्रसार हुआ, उन पर जन-समाजवादी, मेन्शेविक और

समाजवादी-क्रान्तिकारी हावी हो गये, और बोल्शेविक क्रान्ति के सम्पन्न होने तक उन्होंने एक अनुदार राजनीतिक शक्ति की भूमिका अदा की। फिर भी जब वाणिज्य तथा परिवहन का पुराना ढांचा चरमरा कर टूट गया, सहकारी समितियों ने ही रूस का पेट भरा।

७. **सैनिक समितियां।** मोर्चों पर सैनिकों ने पुरानी अमलदारी के अफसरों के प्रतिक्रियावादी प्रभाव का मुकाबला करने के लिए सैनिक समितियों को स्थापित किया था। हर कम्पनी, रेजीमेन्ट, ब्रिगेड, डिवीजन और कोर की अपनी समिति, और उन तमाम समितियों के ऊपर सेना की सैनिक समिति निर्वाचित थी। (पेत्रोग्राद स्थित) केन्द्रीय सैनिक समिति सेना के जनरल स्टाफ के साथ सहयोग करती थी। क्रान्ति के फलस्वरूप सेना की प्रशासन-व्यवस्था के टूट जाने से सैनिक समितियों के कन्धों पर क्वार्टरमास्टर विभाग का अधिकांश काम आ पड़ा, और कहीं कहीं तो सैनिक कमान की जिम्मेदारी भी उन्हीं के ऊपर आ पड़ी।

८. **नौसैनिक समितियां।** नौसेना में सैनिक समितियों के अनुरूप संगठन।

केन्द्रीय समितियां

१९१७ के वसन्त और गर्मियों में पेत्रोग्राद में तरह तरह के संगठनों के अखिल रूसी सम्मेलन आयोजित किये गये। मजदूरों, सैनिकों और किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों, ट्रेड-यूनियनों, कारखाना समितियों, सैनिक तथा नौसैनिक समितियों (सैनिक और नौसैनिक सेवाओं की प्रत्येक शाखा के अतिरिक्त), सहकारी समितियों, जातियों इत्यादि की राष्ट्रीय कांग्रेसें हुई। ऐसे हर सम्मेलन ने शासन-केन्द्र में अपने विशेष हितों की हिफाजत के लिए केन्द्रीय समिति या केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति निर्वाचित की। अस्थायी सरकार जैसे जैसे कमजोर होती गयी, इन केन्द्रीय समितियों को बाध्य होकर अधिकाधिक प्रशासकीय अधिकार अपने हाथ में लेने पड़े।

इस पुस्तक में उल्लिखित सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्रीय समितियां ये हैं:

यूनियनों की यूनियन। १९०५ की क्रान्ति के दौरान प्रोफेसर मिल्युकोव तथा दूसरे उदारपंथियों ने डाक्टरों, वकीलों आदि उदार पेशों के लोगों

की यूनियनें स्थापित कीं, जिन्हें एक केन्द्रीय संगठन, **यूनियनों की यूनियन** के तहत एकजुट किया गया। १६०५ में इस संगठन ने क्रान्तिकारी जनवाद का साथ दिया, लेकिन १६१७ में उसने बोल्शेविक विद्रोह का विरोध किया और सोवियत सत्ता के खिलाफ हड़ताल करने वाले सरकारी कर्मचारियों को एकजुट किया।

त्से-ई-काह्। मजदूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति, जिसे इस नाम के प्रथमाक्षरों के आधार पर **त्से-ई-काह्** कहा जाता था।

त्सेन्त्रोफ्लोत। "नौसेना-केन्द्र" – केन्द्रीय नौसैनिक समिति।

विक्जेल। रेल मज़दूर यूनियन की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति, जिसे उसके नाम के प्रथमाक्षरों को लेकर **विक्जेल** कहा गया।

अन्य संगठन

लाल गार्ड। रूसी कारखानों के हथियारबंद मजदूर। सबसे पहले १६०५ की क्रान्ति में लाल गार्ड टुकड़ियों की स्थापना की गयी और मार्च १६१७ में, जब नगर में शान्ति और व्यवस्था कायम रखने के लिए सैनिक शक्ति की आवश्यकता पड़ी, वे दोबारा उठ खड़ी हुई। उस समय ये लाल गार्ड हथियारबंद थे और उन्हें निहत्था करने की अस्थायी सरकार की तमाम कोशिशें बेकार गयीं। क्रान्ति के दौरान जब भी कोई बड़ा संकट उत्पन्न हुआ, ये लाल गार्ड सड़कों पर निकले – वे प्रशिक्षित न थे, न ही उनमें अनुशासन था, परन्तु उनके अन्दर क्रान्तिकारी उत्साह भरा हुआ था।

सफ़ेद गार्ड। पूंजीवादी स्वयंसेवक, जो क्रान्ति की आखिरी मंजिलों में निजी स्वामित्व को बोल्शेविकों द्वारा उन्मूलित होने से बचाने के लिए सामने आये। उनमें से बहुतेरे यूनिवर्सिटी के छात्र थे।

तेकीन्त्सी। सेना की तथाकथित "बर्बर डिवीजन", जो मध्य एशिया के मुसलमान कबायलियों को लेकर बनायी गयी थी और 'व्यक्तिगत रूप में जनरल कोर्नीलोव के प्रति निष्ठा और भक्ति रखती थी। तेकीन्त्सी अपनी अन्ध आज्ञानुवर्तिता के लिए और युद्ध में अपनी पाशविक क्रूरता के लिए विख्यात थे।

"**शहीदी टुकड़ियां**" या "**हिरावल टुकड़ियां**"। औरतों की बटालियन सारी दुनिया मे **शहीदी टुकड़ी** के नाम से जानी जाती थी, लेकिन मर्दों की भी कितनी ही **शहीदी टुकड़ियां** थी। १९१७ की गर्मियो मे केरेन्स्की ने "वीरत्वपूर्ण" उदाहरण द्वारा सेना का अनुशासन और जुझारू उत्साह प्रवल करने के लिए इन टुकड़ियों की स्थापना की थी। **शहीदी टुकड़ियों** के सिपाही मुख्यत: उग्र राष्ट्रवादी युवक, अधिकाशत: सम्पत्तिसम्पन्न वर्गो की संतान होते थे।

अफ़सरों की यूनियन। सेना के प्रतिक्रियावादी अफ़सरो का एक संगठन, जिसे सैनिक समितियों की वढ़ती हुई शक्ति का राजनीतिक दृष्टि से मुकावला करने के लिए स्थापित किया गया था।

सेंट जार्जी शूरवीर। सेंट जार्ज का पदक* रणक्षेत्र मे जौहर दिखलाने के लिए दिया जाता था। इस पदक का पाने वाला अपने आप **सेंट जार्जी शूरवीरों** के इस संगठन का सदस्य हो जाता था, जिसमे सैन्यवाद के समर्थकों का ही बोलवाला था।

किसान संघ। १९०५ मे **किसान संघ** किसानो का एक क्रान्तिकारी संगठन था, परन्तु १९१७ मे वह अधिक समृद्ध किसानो की राजनीतिक अभिव्यक्ति बन गया, ताकि किसानों के प्रतिनिधियो की सोवियतों की बढ़ती हुई शक्ति और क्रान्तिकारी उद्देश्यों के ख़िलाफ संघर्ष किया जा सके।

काल-क्रम तथा वर्ण-विन्यास

मैंने इस पुस्तक में सर्वत्र पुराने रूसी पंचांग की जगह, जो तेरह दिन पीछे है, अपने पंचांग का इस्तेमाल किया है।

रूसी नामों तथा शब्दो का जो हिज्जे मैंने दिया है, उसमे मैंने लिप्यन्तरण के किन्ही वैज्ञानिक नियमों का अनुसरण करने की कोशिश नही

---

*सेंट जार्ज का पदक १७६९ में स्थापित किया गया था। वह जनरलों और अफ़सरों को जौहर दिखलाने और अच्छी लंबी सेवा के लिए दिया जाता था। – सं०

की है, मैंने वही हिज्जे देने की कोशिश की है, जिससे अंगरेज़ी बोलने वाला पाठक उनके उच्चारण के सरलतम तथा निकटतम रूप को उपलब्ध कर सके।

पुस्तक की सामग्री

इस पुस्तक की बहुत सी सामग्री मेरे अपने नोटों से ली गयी है। लेकिन इसके साथ ही मैंने कई सौ छांटे हुए रूसी अख़बारों की एक पंचमेल फाइल का भी सहारा लिया है, जिससे वर्णित काल के प्रायः प्रत्येक दिन का हवाला मिलता है। इनमें (पेत्रोग्राद से प्रकाशित) अंग्रेज़ी अख़बार «Russian Daily News» (रूसी दैनिक समाचार) तथा दो फ़ासीसी अख़बार – «Journal de Russie» (रूस की पत्रिका) तथा «Entente» (एन्टेन्ट) – की फाइलें उल्लेखनीय हैं। लेकिन इन सबसे कहीं अधिक मूल्यवान थी «Bulletin de la Presse» (प्रेस बुलेटिन), जिसे पेत्रोग्राद में फ़ासीसी सूचना ब्यूरो रोज़ाना शाया करता रहा है और जिसमें रूसी अख़बारों में प्रकाशित सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं, भाषणों तथा टिप्पणियों की रिपोर्टें दी जाती रही हैं। मेरे पास इस बुलेटिन की १९१७ के वसन्त से १९१८ की जनवरी के अन्त तक लगभग पूरी फाइल मौजूद है।

उपरोक्त सामग्री के अतिरिक्त मध्य सितम्बर १९१७ से लेकर जनवरी १९१८ के अन्त तक पेत्रोग्राद की दीवारों पर चिपकाई जाने वाली लगभग हर घोषणा, आज्ञप्ति तथा विज्ञप्ति मेरे पास मौजूद है। साथ ही सभी सरकारी आदेशों और आज्ञप्तियों के आधिकारिक प्रकाशन तथा बोलशेविकों द्वारा सत्तारूढ़ होने के समय परराष्ट्र मन्त्रालय में पायी जाने वाली गुप्त सन्धियों तथा दूसरे दस्तावेजों के आधिकारिक सरकारी प्रकाशन भी मेरे पास मौजूद हैं।

व्ला० इ० लेनिन, १९१७

पहला अध्याय

पृष्ठभूमि

सितम्बर १९१७ के प्रायः अन्त में रूस आये हुए समाजशास्त्र के एक विदेशी प्रोफ़ेसर पेत्रोग्राद में मुझसे मिलने आये। व्यवसायियों तथा बुद्धिजीवियों ने उन्हें बताया था कि क्रांति की रफ़्तार धीमी पड़ रही है। प्रोफ़ेसर ने इसके बारे में एक लेख लिखा और फिर देश का दौरा किया। वह औद्योगिक नगरों में गये और किसान-समुदायों के बीच भी – उन्हें यह देखकर ताज्जुब हुआ कि वहां क्रांति की रफ़्तार तेज होती मालूम हो रही थी। मेहनत-मजूरी और खेती-बनिहारी करने वालों के बीच अक्सर इस किस्म की बातें सुनी जा सकती थीं : "जमीन जोतने वालों की, कारख़ाने मजदूरों के!" अगर प्रोफ़ेसर साहब मोर्चे पर तशरीफ़ ले गये होते, तो उन्होंने देखा होता कि पूरी सेना के लबों पर एक ही बात है – शान्ति...

प्रोफ़ेसर को बड़ी उलझन हुई, लेकिन दर असल उलझन की ज़रूरत नहीं थी ; दोनों ही बातें सही थीं। अगर मिल्की वर्ग अधिक अनुदार होते जा रहे थे, तो जन-समुदाय अधिक उग्र।

सामान्यतः व्यवसायियों तथा बुद्धिजीवियों में यह भावना व्याप्त थी कि क्रान्ति बहुत काफी दूर तक जा चुकी है, बहुत देर तक चल चुकी है और अब ठहराव आना चाहिए। केरेन्स्की की अस्थायी सरकार का

समर्थन करने वाले मुख्य "नरम" समाजवादी दलों – मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की भावना भी यही थी।

१४ अक्तूबर को "नरम" समाजवादियों के आधिकारिक मुखपत्र** ने लिखा :

क्रांति के नाटक के दो अंक हैं – पुरानी व्यवस्था का विध्वंस तथा नयी व्यवस्था की रचना। पहला अंक काफी देर तक चल चुका है और अब वक्त आ गया है कि दूसरा अंक खेला जाये और जितनी तेजी से हो सके खेला जाये। जैसा एक महान् क्रांतिकारी ने कहा है, "मित्रों, आइये, हम शीघ्रता करें और क्रांति को समाप्त करें। जो भी उसे बहुत देर तक चलायेगा, वह उसके फलों को नहीं बटोर पायेगा..."

परन्तु मजदूर, सैनिक तथा किसान जन-समुदायों के मन से यह भावना जाती नहीं थी कि अभी "पहला अंक" पूरी तरह खेला नहीं गया है। मोर्चे पर सैनिक समितियों की उन अफसरों के साथ हमेशा टक्कर होती रहती थी, जो अपने सैनिकों के साथ इन्सानों की तरह बर्ताव करने के आदी नहीं हो सके थे। मोर्चे के पीछे किसानों द्वारा निर्वाचित भूमि समितियों के सदस्यों को भूमि के सम्बन्ध में सरकारी विनियमों को कार्यान्वित करने की कोशिश करने के लिए जेलों में बन्द किया जा रहा था और कारखानों में मजदूर[2] काले चिट्ठों और तालाबन्दी के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे। इतना ही नहीं, विदेश से लौटने वाले राजनीतिक प्रवासियों को "अवांछनीय" नागरिक कह कर देश से बाहर रखने की कोशिश की जा रही थी। कुछ मामलों में तो विदेशों से अपने गांवों में लौटने वाले

---

*पुस्तक में दिये गये सूचना-अंक पाठकों को जॉन रीड की टिप्पणियों की ओर इंगित करते हैं। टिप्पणियों में लेखक ने प्रत्येक अध्याय के लिए अलग सिलसिलेवार अंक दिये हैं। – सं०

**यहां जॉन रीड ने 'केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के समाचार' ('इज्वेस्तिया') नाम के अख़बार का ज़िक्र किया है, जो उस समय मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों द्वारा चलाया जा रहा था। – सं०

आदमियों को, १६०५ में की जाने वाली उनकी क्रांतिकारी कार्रवाइयों के लिए गिरफ़्तार किया जा रहा था और उन पर मुकद्दमा चलाया जा रहा था।

जनता में जो तरह तरह का असन्तोष व्याप्त था, उसके समाधान के लिए "नरम" समाजवादियों के पास बस एक ही नुस्खा था: संविधान सभा के लिए, जो दिसम्बर में बुलाई जाने वाली थी, इन्तज़ार कीजिये। परन्तु जन-साधारण इतने से संतुष्ट होने वाले नहीं थे। संविधान सभा बहुत अच्छी चीज़ थी; परन्तु कुछ ऐसे निश्चित लक्ष्य थे, जिनके लिए रूसी क्रांति की गई थी और जिनके लिए क्रांतिकारी शहीद मार्स मैदान* की बिरादराना क़ब्र में अपनी हड्डियां गला रहे थे; ये लक्ष्य थे: शान्ति, भूमि तथा उद्योग पर मजदूरों का नियन्त्रण। और संविधान सभा चाहे हो या न हो, इन लक्ष्यों को प्राप्त करना ही होगा। संविधान सभा को टाला गया है, बार बार टाला गया है और उसे शायद फिर टाला जायेगा तब तक, जब तक कि लोग पर्याप्त शान्त न हो जायें, उतने कि वे शायद अपनी मांगों में कमी करने को तैयार हो जायें! जो भी हो, क्रांति के आठ महीने गुज़र चुके थे, लेकिन इतने दिनों में किया क्या गया, यह नज़र नहीं आता था...

इस बीच सैनिकों ने बस सीधे सीधे सेना से पलायन कर शान्ति के प्रश्न को हल करना शुरू किया। किसान ज़मीदारों की छावनियों में आग लगा देते और बड़ी बड़ी ज़मीदारियों पर कब्ज़ा कर लेते। मज़दूर तोड़-फोड़ करते और हड़ताल करते। कहने की ज़रूरत नहीं कि कारख़ानेदारों, ज़मीदारों और फौजी अफ़सरों ने स्वभावतः किसी भी जनवादी समझौते के ख़िलाफ़ अपना सारा असर डाला...

अस्थायी सरकार की डांवांडोल नीति कभी प्रभावशून्य सुधारों की ओर झुकती, तो कभी कठोर दमनकारी कार्रवाइयों की ओर। समाजवादी श्रम-मंत्री ने एक फ़रमान जारी करके मजदूर समितियों को हुक्म दिया कि

---

*मार्स मैदान – पेत्रोग्राद (आज लेनिनग्राद) का एक चौक। ज़ारशाही के विरुद्ध पूंजीवादी-जनवादी मार्च (फरवरी) क्रान्ति के शहीद ५ अप्रैल (२३ मार्च) को उसी चौक में दफनाये गये थे। – सं०

अब से वे काम के घंटों के बाद ही अपनी सभायें करें। मोर्चे पर सैनिकों के बीच विरोध-पक्षी राजनीतिक पार्टियों के आन्दोलनकर्त्ताओं को गिरफ़्तार किया जाता, गरम विचारों के अख़बारों को बन्द किया जाता और क्रांतिकारी प्रचारकों को मृत्यु-दंड तक दिया जाता। लाल गार्डों को निरस्त्र करने की कोशिशें की गईं। प्रान्तों में अमन व कानून की हिफ़ाज़त के लिए कज़्ज़ाकों को भेजा गया...

"नरम" समाजवादियों ने और मन्त्रिमण्डल में उनके नेताओं ने, जो मिलकी वर्गों के साथ सहयोग करना जरूरी समझते थे, इन कार्रवाइयों का समर्थन किया। लोगों ने बड़ी तेजी से उनका साथ छोड़ कर बोल्शेविकों की तरफ़ रुख किया, जो इस हक़ में थे कि शान्ति कायम की जाये, किसानों को जमीन दी जाये, उद्योग पर मज़दूरों का नियन्त्रण हो तथा मजदूर वर्ग की सरकार की स्थापना की जाये। सितम्बर १९१७ में परिस्थिति नाज़ुक हो गई। देश की अत्यन्त प्रबल भावना के विपरीत, केरेन्स्की और "नरम" समाजवादी मिलकी वर्गों के साथ मिल कर एक संयुक्त सरकार की स्थापना करने में सफल हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी जनता का विश्वास सदा के लिए खो बैठे।

आधा अक्तूबर गुज़रा होगा कि 'राबोची पूत' (मजदूरों का मार्ग) में 'समाजवादी मन्त्री'[3] शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ, जिस में "नरम" समाजवादियों के ख़िलाफ़ जन-साधारण की भावना को व्यक्त किया गया था:

उनकी सेवाओं की फेहरिस्त यह है—

त्सेरेतेली: जनरल पोलोव्त्सेव की सहायता से मजदूरों को निरस्त्र किया, क्रांतिकारी सैनिकों पर अंकुश लगाया और सेना में मृत्यु-दंड के विधान का अनुमोदन किया।

स्कोबेलेव: शुरू में पूंजीपतियों के मुनाफ़ों पर सौ फीसदी टैक्स लगाने का वादा किया और आख़िर में—आख़िर में मजदूरों की कारख़ाना समितियों को भंग करने की कोशिश की।

अव्क्सेन्त्येव: भूमि समितियों के सदस्यों, सैकड़ों किसानों को जेलों में ठूंसा और मजदूरों तथा सैनिकों के दर्जनों अख़बारों को बन्द किया।

चेर्नोव : उस "शाही" घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये, जिसके द्वारा फिनिश संसद को भंग करने का आदेश दिया गया था।

साविन्कोव : जनरल कोर्नीलोव के साथ खुले तौर पर सांठ-गांठ की। अगर देश के यह उद्धारक (कोर्नीलोव) पेत्रोग्राद पर कब्जा न कर सके, तो ऐसे कारणों से, जिनपर साविन्कोव का वस नही था।

जारूद्नी : अलेक्सिन्स्की और केरेन्स्की की मंजूरी से क्रांति के कितने ही बेहतरीन सपूतों को, सिपाहियों और मल्लाहों को पकड कर जेलों में डाल दिया।

निकीतिन : रेल मजदूरों से एक बेहूदा पुलिसमैन की तरह पेश आया।

केरेन्स्की : इन हजरत के बारे में खामोश रहना ही बेहतर है। इनकी सेवाओं की सूची बेहद लम्बी है...

हेल्सिंगफ़ोर्स में होने वाली बाल्टिक बेडे के प्रतिनिधियों की एक कांग्रेस मे एक प्रस्ताव पास किया गया, जो निम्नलिखित पंक्तियों से शुरू हुआ :

हम मांग करते है कि नामधारी "समाजवादी" राजनीतिक प्रवंचक केरेन्स्की को, जो पूंजीपति वर्ग के हित में बड़ी बेशर्मी से राजनीतिक धौंसबाजी करके महान् क्रांति को और उसके साथ क्रांतिकारी जन-समुदायों को बदनाम और तबाह कर रहा है, अस्थायी सरकार की पांतों से फ़ौरन ही निकाला जाये...

बोल्शेविकों का उत्कर्ष इन सब घटनाओं का प्रत्यक्ष परिणाम था...

मार्च १९१७ से, जब मजदूरों और सिपाहियों की गरजती हुई लहरें तव्रीचेस्की प्रासाद से टकराई और उन्होने निरुत्साही राजकीय दूमा को रूस में सर्वोच्च सत्ता अपने हाथ मे ले लेने के लिए मजबूर किया, क्रान्ति की दिशा और प्रक्रम में प्रत्येक परिवर्तन जन-साधारण के, मजदूरों, सिपाहियों और किसानों के जोर और दबाव से ही घटित होता रहा है। उन्होंने मिल्युकोव मन्त्रिमण्डल को गिरा दिया; यह उन्ही की सोवियत थी, जिसने दुनिया के सामने शान्ति के लिए रूस की शर्तों को घोषित किया –

"बिना संयोजनों के, बिना हरजानों के, सभी जातियों को आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ शान्ति"; जुलाई में फिर असंगठित सर्वहारा का स्वतःस्फूर्त विद्रोह हुआ, जिन्होंने एक बार फिर तव्रीचेस्की प्रासाद पर चढ़ाई की और माग की कि सोवियतें रूस का शासन-सूत्र अपने हाथ में लें।

बोल्शेविकों ने, जो उस समय एक छोटा-मोटा राजनीतिक गुट* ही थे, इस आन्दोलन की अगुआई की। विद्रोह की अनर्थपूर्ण असफलता के फलस्वरूप जनमत उनके खिलाफ हो गया और बिना नेताओं के मजदूरों की भीड़ चुपचाप खिसककर अपनी विबोर्ग बस्ती में वापिस चली गयी, जिसका पेत्रोग्राद मे वही स्थान है, जो सेंट अंतुआन** का पेरिस में है। इसके बाद बोल्शेविकों की वहशियाना धर-पकड़ शुरू हुई। त्रोत्स्की***, कामेनेव और श्रीमती कोल्लोन्ताई**** समेत सैकड़ों बोल्शेविकों को गिरफ़्तार

---

*मार्च १९१७ की पूंजीवादी क्रांति के तुरंत बाद, अभी अभी क़ानूनी हुई बोल्शेविक पार्टी की सदस्य-संख्या अपेक्षाकृत कम थी। – सं०

**सेंट अंतुआन – पेरिस का एक उपनगर। यह उपनगर अपनी मजदूर आबादी के उस जुझारूपन के लिए मशहूर था, जो उसने १८ वीं सदी के अंत तथा १९ वी सदी के क्रांतिकारी विद्रोहों मे प्रदर्शित किया था। विबोर्ग बस्ती पेत्रोग्राद में मजदूरों की एक बस्ती थी। – सं०

***त्रोत्स्की (ब्रोन्स्तीन), ल० द०, १८६७ से रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी के एक सदस्य, मेन्शेविक। १९१७ की गर्मियों मे वह बोल्शेविक पार्टी मे शामिल हो गये। परंतु उन्होंने बोल्शेविक नीति को स्वीकार नही किया, और लेनिनवाद तथा पार्टी की नीति के खिलाफ उन्होंने प्रत्यक्ष तथा प्रच्छन्न, दोनों प्रकार से संघर्ष चलाया। उनकी इन सरगर्मियो के लिए उन्हे १९२७ मे पार्टी से निकाल दिया गया। – सं०

****कोल्लोन्ताई, अ० म० (१८७२ – १९५२) – १९१५ से बोल्शेविक पार्टी की सदस्य। नवंबर क्रांति के पश्चात् जन-कल्याण के लिए जन-कमिसार।

१९२० मे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महिला-विभाग की अध्यक्ष। १९२१–२२ मे कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के अंतर्राष्ट्रीय महिला-सेक्रेटेरियट की मंत्री। १९२३ से एक मशहूर कूटनीतिज्ञ। – सं०

किया गया। लेनिन और जिनोव्येव* क़ानून की गिरफ़्त से निकल कर फ़रार हो गये और छिप कर रहने लगे। बोल्शेविक अखबारों को बन्द कर दिया गया। उकसावेबाज और प्रतिक्रियावादी चिल्लाने लगे कि बोल्शेविक जर्मनों के दलाल हैं, यहां तक कि सारी दुनिया में लोग इस बात मे विश्वास करने लगे।

लेकिन अस्थायी सरकार ने देखा कि वह इन आरोपों को प्रमाणित करने में असमर्थ है। जर्मनों से मिलकर साज़िश रचने के बारे मे जो दस्तावेज़ें बतौर सबूत के पेश की गईं**, उनके बारे में मालूम हुआ कि वे जाली दस्तावेज़ें थी, और बोल्शेविकों पर बगैर मुकद्दमा चलाये उन्हें एक एक करके बिला ज़मानत के या बरायनाम जमानत पर रिहा किया गया। अन्त में केवल छः बोल्शेविक जेल मे रह गये। गिरगिट की तरह रोज रंग बदलने वाली अस्थायी सरकार की नपुंसकता और डावांडोल

---

*जिनोव्येव (रादोमीस्ल्स्की), ग० ये०–बोल्शेविज्म से अनेक अवसरों पर विचलित हुए और अंततोगत्वा मार्क्सवाद-लेनिनवाद से अपना नाता ही तोड़ लिया। नवंबर १९१७ में उन्होंने और कामेनेव ने मेन्शेविक समाचारपत्र 'नोवाया जीज्न' (नव-जीवन) में एक लेख प्रकाशित किया, जिसमे उन्होने सशस्त्र विद्रोह के बारे में केंद्रीय समिति के निर्णय के प्रति विरोध प्रगट किया और इस प्रकार बोल्शेविक योजना का भेद खोल दिया। यह एक गद्दारी का काम था। बोल्शेविक पार्टी के सदस्यों के नाम अपने पत्र मे लेनिन ने कहा कि यह काम हड़ताल-भेदकों का काम था और मांग की कि उन्हें पार्टी से बाहर निकाल दिया जाये। नवंबर क्रांति की विजय के बाद जिनोव्येव ने मेन्शेविकों, समाजवादी-क्रांतिकारियों तथा "जन-समाजवादियों" के प्रतिनिधियों के साथ एक संयुक्त सरकार बनाने के विचार का समर्थन किया। १९२७ में जिनोव्येव को लगातार पार्टी-विरोधी गुटपरस्त कारंवाइयां करने के लिए पार्टी से निकाल दिया गया।–सं०

**ये दस्तावेजें बदनाम "सीसन दस्तावेजो" का ही भाग थीं।–जॉ० री०

सीसन–प्रतिक्रियावादी अमरीकी पत्रकार। बोल्शेविक नेताओं को बदनाम करने के लिए उन्होंने जाली दस्तावेज़ों का एक संग्रह अमरीका मे प्रकाशित किया।–सं०

स्थिति एक ऐसा तर्क थी, जिसका खण्डन कोई नही कर सकता था। बोल्शेविकों ने फिर वही नारा उठाया, जो जन-साधारण को इतना अधिक प्रिय था – "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में!"। यह नारा उठा कर वे अपना उल्लू सीधा नही कर रहे थे, क्योंकि उस समय सोवियतों के अन्दर उनके कट्टर दुश्मन "नरम" समाजवादियों का बहुमत था।

लेकिन इससे भी ज्यादा जोरदार काम यह था कि उन्होने मजदूरों, सिपाहियो और किसानों की सीधी-सादी, अपरिष्कृत इच्छाओं को लिया और उन्ही के आधार पर अपने तात्कालिक कार्यक्रम की रचना की। और इस प्रकार जहा **ओबोरोन्त्सी** (प्रतिरक्षावादी) मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों ने अपने को पूजीपति वर्ग के साथ समझौतो मे फंसाया, वही बोल्शेविको ने बडी तेजी के साथ रूसी जन-साधारण के मन को जीत लिया। जुलाई मे उन्हे हिकारत की निगाह से देखा जाता था और उनका पीछा किया जा रहा था, लेकिन सितम्बर बीतते बीतते राजधानी के मजदूर, बाल्टिक बेडे के नाविक और सैनिक करीब करीब पूरी तरह उनकी ओर आ गये थे। सितम्बर* मे बड़े बड़े शहरों मे होनेवाले नगरपालिका-चुनाव महत्त्वपूर्ण थे: चुने जाने वाले लोगों मे केवल १८ प्रतिशत मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी थे, जबकि जून में वे ७० प्रतिशत थे...

एक घटना ऐसी है, जिसने विदेशी पर्यवेक्षकों को उलझन मे डाल दिया – वह यह कि सोवियतों की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति, केन्द्रीय सैनिक तथा नौसैनिक समितियों** तथा कई ट्रेड-यूनियनो, विशेष रूप से डाक-तार मजदूरो तथा रेल मजदूरों की यूनियनों की केन्द्रीय समितियों ने बोल्शेविको का अत्यन्त उग्र और हिंस्र भाव से विरोध किया। ये सभी केन्द्रीय समितिया बीच गर्मियो मे या और भी पहले चुनी गई थी, जब मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियो के पीछे चलने वाले लोगो की संख्या बहुत बड़ी थी और इन समितियों ने नये चुनावों को टाल दिया था या न होने दिया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि मजदूरो और सैनिकों

---

*अगस्त (पुराने पचाग के अनुसार)। पेत्रोग्राद मे चुनाव २० अगस्त को हुए। – सं०

**देखिये 'टिप्पणिया और व्याख्याये'। – जॉ० री०

के प्रतिनिधियों की सोवियतों के संविधान के अनुसार अखिल रूसी कांग्रेस सितम्बर में बुलाई जानी चाहिए थी। लेकिन त्से-ई-काह ने इस बिना पर उसे बुलाने से इनकार किया कि संविधान सभा का अधिवेशन दो महीने बाद ही होनेवाला है और उन्होंने कुछ इस किस्म का इशारा किया कि उस समय सोवियतें अपने अधिकारों का समर्पण कर देंगी। इस बीच पूरे देश में स्थानीय सोवियतों के अन्दर, ट्रेड-यूनियनों की शाखाओं में और सैनिकों तथा नाविकों की पातों में बोल्शेविकों की एक के बाद एक विजय हो रही थी। किसानों की सोवियतें अभी भी अनुदार बनी हुई थीं, क्योंकि उनींदे देहाती इलाकों में राजनीतिक चेतना धीरे धीरे ही विकसित हो रही थी और वहां जिस पार्टी ने किसानों के बीच एक पीढ़ी से आन्दोलन चलाया था, वह थी समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी... लेकिन किसानों के अन्दर भी एक क्रांतिकारी पक्ष आकार ग्रहण कर रहा था। और यह चीज अक्तूबर में बिलकुल साफ हो गयी, जब समाजवादी-क्रांतिकारियों का वामपक्ष उनसे टूट कर अलग हो गया और उसने एक नये राजनीतिक दल, वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की स्थापना की।

इसके साथ ही इस बात के लक्षण सर्वत्र प्रगट हो रहे थे कि प्रतिक्रियावादी शक्तियों का आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा था[6]। उदाहरण के लिए, जब पेत्रोग्राद के त्रोइत्स्की थियेटर में 'जार के पापों का घड़ा' नामक एक प्रहसन खेला जा रहा था, राजतंत्रवादियों की एक टोली ने अभिनेताओं को "सम्राट का अपमान करने के लिए" जान से मार डालने की धमकी दी। कुछ अख़बार एक "रूसी नेपोलियन" के लिए हसरत कर रहे थे। पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के लिए मजदूरों के प्रतिनिधियों (राबोचिख़ देपुतातोव) की सोवियतों के लिए सोबाचिख़ देपुतातोव—कुत्तों के प्रतिनिधियों की सोवियतें—कहना एक बिलकुल मामूली बात थी।

१५ अक्तूबर को मेरी बातचीत स्तेपान गेओर्गीयेविच लिआनोजोव नामक एक बहुत बड़े रूसी पूंजीपति से हुई, जिनके बारे में कहा जाता था कि वह "रूस के राकफेलर" हैं। राजनीति में वह कैडेट मतावलम्बी थे।

"क्रान्ति एक बीमारी है," उन्होंने कहा। "विदेशी शक्तियों को यहां कभी न कभी हस्तक्षेप करना ही होगा, उसी तरह जैसे डाक्टर

बीमार बच्चे के मामले में हस्तक्षेप करते हैं, ताकि उसे अच्छा किया जा सके और उसे चलना सिखाया जा सके। बेशक यह बात कमोवेश गैरमुनासिब होगी, लेकिन राष्ट्रों को यह समझना होगा कि उनके अपने देशों मे बोल्शेविज़म का, 'सर्वहारा अधिनायकत्व' और 'विश्व सामाजिक क्रान्ति' जैसे संक्रामक विचारों का ख़तरा कितना बड़ा है... एक संभावना यह है कि यह हस्तक्षेप शायद आवश्यक न हो। परिवहन में गड़बड़ी फैली हुई है, कारखाने बन्द हों रहे हैं और जर्मन आगे बढ़ते जा रहे हैं। हो सकता है कि भुखमरी और पराजय से रूसी जनता की अक़्ल ठिकाने आ जाये..."

श्री० लिआनोज़ोव ने ज़ोर देकर अपनी यह राय ज़ाहिर की कि चाहे कुछ भी हो व्यापारियों और कारख़ानेदारों के लिए मज़दूरों की कारख़ाना समितियो को क़ायम रहने देना या उद्योग के प्रबन्ध में मज़दूरों को किसी भी तरह हाथ बंटाने देना असम्भव होगा।

"जहां तक बोल्शेविकों का प्रश्न है, उनका निपटारा दो मे से एक तरीके से होगा। सरकार पेत्रोग्राद खाली कर दे, मुहासिरे का एलान करे और फिर हलके का सैनिक कमांडर बिना किसी रस्मी कानूनी कार्रवाई के इन साहबान के साथ पेश आ सकता है... या अगर, उदाहरण के लिए, संविधान सभा कोई कल्पनावादी प्रवृत्ति प्रदर्शित करती है, तो उसे शस्त्र-बल से भंग किया जा सकता है..."

जाड़ा आने वाला था—रूस का भयानक जाड़ा। मैंने व्यवसायियों को यह कहते सुना है: "जाड़ा हमेशा से रूस का सबसे अच्छा दोस्त रहा है। अब वह शायद हमें क्रान्ति से छुटकारा दिला देगा।" बर्फ़ीले मोर्चे पर आफ़त के मारे निरुत्साह सैनिक पहले ही की तरह फ़ाके कर रहे थे और मारे जा रहे थे। रेलों की व्यवस्था टूट रही थी, ख़ुराक की कमी हो रही थी और कारख़ाने बन्द हो रहे थे। निराशा की चरम सीमा पर पहुंच कर जन-साधारण चीख पड़े—पूंजीपति वर्ग ही जनता के जीवन को अन्तर्ध्वंस्त कर रहा है, वही मोर्चे पर हार के लिए जिम्मेदार है। जनरल कोर्नीलोव ने जब सार्वजनिक रूप से कहा: "हमे रीगा देकर देश को उसके कर्त्तव्य के प्रति सचेत करने की कीमत अदा करनी पड़ेगी," उसके ठीक बाद ही यह नगर दुश्मन के हवाले कर दिया गया।

वर्ग-युद्ध इतना उग्र हो सकता है, अमरीकियों के लिए यह अविश्वसनीय है। लेकिन मैं खुद उत्तरी मोर्चे पर ऐसे अफसरो से मिल चुका हूं, जो साफ साफ कहते थे कि वे सैनिक समितियों से सहयोग करने की अपेक्षा युद्ध में पराजय को अधिक श्रेयस्कर समझते हैं। कैडेट पार्टी की पेत्रोग्राद शाखा के मन्त्री ने मुझे बताया कि देश के आर्थिक जीवन को ठप करना क्रान्ति की साख मिटाने के आन्दोलन का ही एक भाग है। एक मित्र-राष्ट्र के कूटनीतिज्ञ ने, जिनका नाम प्रगट न करने के लिए मैं वचनवद्ध हूं, इस बात की स्वयं अपनी जानकारी के आधार पर पुष्टि की। मुझे मालूम है कि ख़ारकोव के नजदीक की कई कोयले की खानो मे उनके मालिकों ने आग लगवा दी और उनमे पानी भरवा दिया, मास्को की कुछ सूती मिलों के इंजीनियर जाते जाते मशीनो को चौपट कर गये, रेल अधिकारी रेल-इंजनों को तहस-नहस करते रगे हाथो मजदूरों द्वारा पकड़े गये...

मिलकी वर्गो का एक बड़ा भाग क्रान्ति की अपेक्षा, अस्थायी सरकार की भी अपेक्षा जर्मनो की जीत को अधिक श्रेयस्कर समझता था, और ऐसा कहने में भी न झिझकता था। जिस रूसी परिवार के साथ मैं रहता था, उसमे खाने की मेज पर बातचीत का विषय प्राय: निरपवाद रूप से यह होता – जर्मन आयेगे और अपने साथ "शान्ति और सुव्यवस्था" लायेगे... मैंने एक शाम मास्को के एक व्यापारी के घर बिताई। चाय के वक्त हमने मेज के गिर्द बैठे ग्यारह आदमियो से पूछा, वे किसे बेहतर समझते हैं – "विल्हेल्म को या बोल्शेविकों को", ग्यारह मे से दस ने विल्हेल्म को चुना...

सट्टेबाज़ो ने आम गड़बड़ी और अव्यवस्था का फ़ायदा उठा कर दौलते बटोरी और उन्हे अपनी रंगरेलियों मे या सरकारी अफ़सरो की मुट्ठिया गर्म करने मे उड़ाया। अनाज और ईंधन को चोर गोदामो मे जमा किया गया, या चोरी-छिपे देश से बाहर स्वीडन रवाना किया गया। उदाहरण के लिए, क्राति के पहले चार महीनों में पेत्रोग्राद नगरपालिका के बड़े बडे गोदामो से अनाज के रिज़र्व स्टाक दिन-दहाड़े लूटे गये, और यह लूट यहा तक बढी कि दो साल के लिए पर्याप्त अनाज का स्टाक एक महीना के लिए भी नगरवासियों का पेट भरने के लिए काफ़ी नही रह गया...

अस्थायी सरकार के अन्तिम खाद्य-मन्त्री की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार कहवा व्लादीवोस्तोक में फी पौंड दो रूबल के थोक भाव से खरीदा गया और उसी के लिए पेत्रोग्राद में उपभोक्ता ने १२ रूबल दिये। बड़े शहरों की सभी दुकानों में टनों अनाज और कपड़ा भरा पड़ा था, लेकिन उन्हें दौलतमन्द लोग ही खरीद सकते थे।

मुफ़स्सल के एक शहर में मेरी वाक़िफ़ियत एक व्यापारी के परिवार मे थी, जो अब सट्टेबाज या जैसा रूसी लोग कहते है, मारोदोर (लुटेरा, नरपिशाच) हो गया था। उसके तीन लड़के रिश्वत देकर फ़ौजी नौकरियों से निकल आये थे। एक अनाज की सट्टेबाजी करता था। दूसरा लेना की खानों का उड़ाया हुआ सोना फिनलैंड के कुछ रहस्यमय ख़रीदारों के हाथ बेचता था। तीसरे का एक चाकलेट के कारख़ाने में इतना बड़ा हिस्सा था कि वह कारखाना उसी के नियन्त्रण मे चलता था। यह अपना माल स्थानीय सहकारी समितियों को बेचता था – इस शर्त पर कि ये समितियां उसकी तमाम जरूरतों को पूरा करें, और इस प्रकार जब कि जन-साधारण अपने राशन-कार्डों पर आधा पाव काली डबल-रोटी पाते थे, उसके पास सफ़ेद डबल-रोटी, चीनी, चाय, मिस्री, मक्खन और केक के ढेर के ढेर थे... फिर भी, जब मोर्चे पर सिपाही भूख, ठंड और थकावट से लाचार हो कर लड़ न सकते, इस परिवार के लोग कितने गुस्से से चीखते, "डरपोक! मुर्दादिल!" और "रूसी होने के लिए" कितनी "शर्मिन्दगी" जाहिर करते... और जब आखिरकार बोल्शेविकों ने चोर गोदामों में बहुत सा रसद-पानी जमा किया हुआ पाया और उसे जब्त कर लिया, तो इन व्यापारियों की निगाह में वे कितने बड़े "लुटेरे" थे।

समाज की सतह पर इस सारी सडांध के नीचे पुराने जमाने की तारीक ताकतें, जो निकोलाई द्वितीय के पतन के समय से बदली न थीं, पोशीदा तौर पर और बडी सरगर्मी के साथ काम कर रही थीं। बदनाम ओख़राना (राजनीतिक पुलिस) के एजेन्ट अभी भी काम कर रहे थे जार के लिए और जार के ख़िलाफ़, केरेन्स्की के लिए और केरेन्स्की के ख़िलाफ़ – जो भी उन्हे पैसा दे, वे उसके हाथों बिकने के लिए तैयार थे... अंधेरे मे यमदूत सभाइयों जैसे तरह तरह के रूपोश संगठन प्रतिक्रिया को किसी न किसी रूप मे पुन:स्थापित करने की कोशिश में लगे हुए थे।

भ्रष्टाचार तथा वीभत्स अर्धसत्यो के इस वातावरण में एक स्पष्ट स्वर दिन-प्रतिदिन गूजता रहता था, वह था बोल्शेविको की बराबर गहरी होती हुई आवाज़: "समस्त सत्ता सोवियतो के हाथ मे! लाखों-करोड़ो ग्राम मजदूरों, सिपाहियों, किसानो के प्रत्यक्ष प्रतिनिधियो के हाथ में! हमे ज़मीन चाहिए, रोटी चाहिए! इस बेमतलब लड़ाई का ख़ात्मा होना चाहिए, गुप्त कूटनीति का, सट्टेबाज़ी का, गद्दारी का ख़ात्मा होना चाहिए... क्रांति ख़तरे मे है, और उसके साथ सारे संसार मे जनता का ध्येय ख़तरे में है!"

सर्वहारा और पूंजीपति वर्ग के बीच, सोवियतों और सरकार के बीच जो संघर्ष शुरू मार्च के दिनो मे छिड़ गया था, अब उसकी परिणति होने को थी। एक ही छलांग मे मध्य युग से निकल बीसवी सदी मे प्रवेश कर रूस ने चकित-विमूढ़ संसार के सामने क्रान्ति की दो प्रणालियो— एक राजनीतिक और दूसरी सामाजिक—को साघातिक संघर्ष की अवस्था में प्रगट किया।

इन तमाम महीनों की भुखमरी के बाद और भ्रम टूटने के बाद रूसी क्रांति की प्राणशक्ति की यह कैसी अभिव्यक्ति थी! पूंजीपति वर्ग को अपने रूस को ज्यादा अच्छी तरह जानना चाहिए था। जल्दी ही रूस मे क्रांति की "बीमारी" का सिलसिला पूरी तेज़ी पर आने वाला था...

हमने इतनी तेज़ी के साथ अपने को नये, अधिक गतिशील जीवन के अनुरूप ढाल लिया था कि पीछे मुड़कर देखने से लगता था कि नवम्बर विद्रोह के पहले रूस एक दूसरे ही युग मे था, बेहद रूढ़िपंथी था। हम उसी तरीके से बदल गये थे, जैसे रूसी राजनीति समूची की समूची वामपंथी दिशा मे ढुलक पड़ी थी, यहा तक कि कैडेटों को "जनता के शत्रु" कहकर गैरकानूनी क़रार दिया गया, केरेन्स्की "प्रतिक्रांतिकारी" बन गये, त्सेरेतेली, दान, लीबेर, गोत्स और अव्क्सेन्त्येव जैसे "मध्यमार्गी" समाजवादी नेता उनके अनुयायियों के लिए भी घोर प्रतिक्रियावादी बन गये और वीक्तोर चेर्नोव जैसे लोग, यहां तक कि मक्सिम गोर्की तक, दक्षिणपथी हो गये...

लगभग बीच दिसम्बर, १९१७ मे कुछ समाजवादी-क्रांतिकारी नेताओ ने ब्रिटिश राजदूत सर जॉर्ज ब्यूकनन से एक निजी मुलाकात की और

उनसे बड़ी आजिजी से कहा कि वह किसी से उनके आने का जिक्र न करें, क्योंकि वे "घोर दक्षिणपंथी" समझे जाते थे।

"ज़रा सोचिये," सर जॉर्ज ने कहा। "साल भर पहले मेरी सरकार ने मुझे हिदायत दी कि मैं यह देखते हुए कि मिल्युकोव कितना खतरनाक वामपंथी है उससे मुलाकात मजूर न करूं!"

रूस मे, खासकर पेत्रोग्राद में, सितम्बर और अक्तूबर से बुरे महीने और नही हैं। फीका, उदास, धुंधला आसमान, लम्बी होती जाती रातें, लगातार सराबोर कर देने वाली बारिश। राह चलते पैरों के नीचे लबालब, गहरी फिसलन भरी कीचड, जो पैरों से चिपकती और जिसकी छाप भारी भारी बूट हर जगह डालते। नगरपालिका प्रशासन के बिल्कुल ठप हो जाने की वजह से हालत और भी बुरी हो गई थी। फ़िनलैंड की खाड़ी से तेज़, चुभती हुई नम हवायें बह रही थी और ठंडा कोहरा सड़कों में उमडा आ रहा था। रात में बचत के ख्याल से और ज़ेप्लिनों के डर से भी सड़कों की बत्तियां बहुत कम जलाई जाती थी—एक बत्ती यहां, तो एक वहां। लोगों के अपने घरों मे बिजली छः बजे शाम से आधी रात तक जलती रहती, जब कि मोमबत्तियां फ़ी मोमबत्ती ४० सेंट के हिसाब से बिकती और मिट्टी के तेल का तो दर्शन भी दुर्लभ था। तीसरे पहर तीन बजे से लेकर दूसरे दिन दस बजे तक अंधेरा छाया रहता। चोरियां बढ़ गई थी और मकानों मे कसरत से सेंधें लगायी जा रही थी। अपने मकानों मे लोग भरी राइफलें हाथ में लेकर पूरी रात पारी पारी से पहरा देते। यह थी अस्थायी सरकार के तहत पेत्रोग्राद की हालत।

हफ्ता-ब-हफ़्ता खाद्य की कमी होती जाती। डबल-रोटी का दैनिक राशन डेढ पौंड से एक पौंड हुआ, फिर तीन चौथाई, आधा और एक चौथाई पौंड ही रह गया। अन्त में एक हफ्ता बिना रोटी के ही निकल गया। जहां तक चीनी का सवाल है, आप महीने मे दो पौंड की दर से उसे पाने के हकदार थे—बशर्ते कि आप उसे पा सकें, ऐसा सौभाग्य कम ही प्राप्त होता था। चाकलेट के एक बार (डंडी) या बेज़ायका कैंडी के एक पौंड के लिए सात से दस रूबल तक कुछ भी, और एक डालर से कम तो किसी हालत मे नहीं, देना पड़ता था। शहर के आधे बच्चों के लिए दूध था और आधे के लिए नहीं। अधिकांश होटलों और निजी घरों मे

महीनों तक दूध का दर्शन न होता। फलों के मौसम मे फलों का यह हाल था कि सड़क के नुक्कड़ों पर सेब और नाशपाती सोने के मोल बिकते – एक सेब या एक नाशपाती एक रूबल में...

दूध और डबल-रोटी के लिए, चीनी और तम्बाकू के लिए आपको ठंड और बारिश में घंटों लाइन में खडा होना पड़ता। रात भर की एक मीटिंग से घर लौटते हुए मैंने सवेरा होने से पहले ही ख़्वोस्त (पूछ) को बनते हुए देखा है; अधिकांशतः स्त्रियां, जिनमें कुछ गोद मे बच्चे लिए भी होती, लाइन में खड़ी होती... कार्लाइल ने अपनी पुस्तक 'फ़्रांसीसी क्रांति' में कहा है कि फ़्रांसीसी जनता दूसरे सभी जनों की तुलना में इस माने मे विशिष्ट है कि वह लाइन में खड़ी होने की क्षमता रखती है। रूस इस दस्तूर का आदी हो चुका था, जो १९१५ मे ही "महामान्य" निकोलाई के शासनकाल मे शुरु हुआ, और तब से लेकर १९१७ की गर्मियों तक बीच बीच मे चलता रहा और इन गर्मियो में तो वह एक नियमित व्यवस्था के रूप में पूरी तरह स्थापित हो गया। जरा सोचिये, रूस की कड़ाके की सर्दी में लोग फटे-चीथड़े पहने हुए पेत्रोग्राद की सड़कों पर, जिनपर मालूम होता था कि सफ़ेद टीन की चादरे बिछी हुई हैं, दिन दिन भर खड़े रह जाते थे! मैंने रोटी के लिए लगी हुई लाइनों मे खड़े होकर सुना है कि किस तरह उनके बीच से रूसी भीड़ की अद्‌भुत सदभावनापूर्ण प्रकृति के ऊपर हावी होकर असंतोष का कटु, तीक्ष्ण स्वर रह रह कर फूट पड़ता था...

कहने की जरूरत नहीं कि सभी थियेटरों मे इतवार समेत हर रात शो होते। मारिईन्सकी थियेटर मे करसाविना ने एक नये बैले मे अभिनय किया, नृत्य-प्रेमी तमाम रूसी उसे देखने के लिए उमड़ पड़े। शल्यापिन का गायन उन्हीं दिनों चल रहा था। अलेक्सान्द्रीन्स्की थियेटर में अलेक्सेई तोल्सतोई की कृति 'इवान भयानक की मृत्यु' का मैयेरख़ोल्द* द्वारा प्रस्तुत नाट्य-रूपांतर फिर से खेला जा रहा था। मुझे याद है, जब यह नाटक

---

*मैयेरख़ोल्द, व० ए० (१८७४–१९४०) – एक सोवियत नाट्य-निर्देशक और अभिनेता। – सं०

4-2360

चल रहा था, शाही पेज स्कूल* का एक छात्र अपनी वर्दी पहने हुए नाटक के अंको के बीच सूने शाही बाक्स, जिसके राज्य-चिह्न मिटा दिये गये थे, की ओर मुह करके बाकायदा सलाम बजाने की मुद्रा में खड़ा हुआ... "क्रिवोये ज़ेरकालो" (तिरछा आईना) नामक कम्पनी ने श्नीतसलेर** की कृति 'रीगेन' का एक सुन्दर अभिनय प्रस्तुत किया।

यद्यपि हरमिताज और दूसरी चित्रशालायें पेत्रोग्राद से हटा कर मास्को भेज दी गई थी, चित्रों की प्रदर्शनियां हर सप्ताह होती रहती थीं। बुद्धिजीवी परिवारो की महिलायें झुड की झुड साहित्य, कला तथा सुगम दर्शन के बारे मे भाषण सुनने जाती। खास तौर पर थियोसोफिस्टो की सरगर्मिया बड़े ज़ोर पर थी, और मोक्ष सेना (सैल्वेशन आर्मी) ने, जिसे इतिहास मे पहली बार रूस मे प्रवेश करने दिया गया था, दीवालो पर अपने बेशुमार पर्चे चिपकाये थे, जिनमे दिव्य-सन्देश सभाओं की सूचनायें होती। रूसी दर्शको के लिए ये सभायें विनोद की और आश्चर्य की भी वस्तु थी...

जैसा ऐसे वक़्त हमेशा होता है, नगर का लीक से बंधा तुच्छ जीवन क्राति की यथासम्भव अवहेलना करता हुआ चलता जा रहा था। कवि अपनी तुकबदिया करते, लेकिन उनमे क्राति का जिक्र भूले भी न होता, यथार्थवादी चित्रकार मध्ययुगीन रूसी इतिहास के दृश्यों को आकते, कुछ भी आकते, लेकिन वे क्राति की तसवीर हरगिज न देते। प्रान्तों से युवा महिलाये फ़ासीसी भाषा और गायन सीखने के लिए राजधानी में आती और नौजवान, हसीन और ख़ुशमिजाज अफसर अपने सुनहली गोट वाले सुर्ख बश्लोक पहने और अपनी नक़्काशी की हुई काकेशियाई तलवारें बाधे होटलों के प्रकोष्ठों मे घूमते रहते। छोटे-मोटे अफसरों के घरों की महिलायें तीसरे पहर एक-दूसरे के साथ बैठ कर चाय पीती, हर महिला अपने दस्तानाबंद हाथ में अपने साथ अपनी सोने या चादी की या रत्नजटित शर्करा मजूषा और आधी डबल-रोटी लेकर चलती और वे यह मनाती

---

*शाही पेज स्कूल – जारशाही रूस में एक विशेष सैनिक स्कूल, जिसमे जनरलों और उच्च पदाधिकारियों के बेटे भरती होते थे। – सं०

**श्नीतसलेर, आर्थर (१८६२–१९३१) – एक आस्ट्रियाई लेखक। – सं०

कि ज़ार वापिस आ जाये या जर्मन आ जाये, या कुछ ऐसा हो कि नौकरों की समस्या सुलझ जाये... एक दिन तीसरे पहर मेरे एक दोस्त की लड़की घर लौटी, तो वह आपे से बाहर हो रही थी, क्योंकि उसे ट्राम-गाड़ी की महिला कंडक्टर ने "कामरेड" कह कर पुकारा था!

उनके चारों ओर रूस की धरती प्रसव वेदना से छटपटा रही थी और एक नये संसार को जन्म दे रही थी। जिन नौकरों के साथ कुत्तों जैसा सलूक किया जाता था और जिनके सामने चन्द ठीकरे फेंक दिये जाते थे, वे अब ख़ुदमुख़्तार हो रहे थे। एक जोड़ी जूते की क़ीमत सौ रूबल से ज्यादा थी और चूंकि मासिक तनख़ाह औसतन् करीब ३५ रूबल थी, नौकर लाइनों में खड़े होकर एड़िया रगड़ने या जूते घिसने से इनकार कर देते। इतना ही नहीं, नये रूस में हर मर्द और औरत को वोट देने का हक हासिल था; मजदूरों के अख़बार निकल रहे थे, जो नयी और चौंका देने वाली बातें कहते थे। और फिर सोवियतें थीं और यूनियनें थीं। इज़्वोज़्चिकों (गाड़ीवानों) की अपनी यूनियन थी; उनके प्रतिनिधि भी पेत्रोग्राद सोवियत में थे। होटल कर्मचारी और वेटर संगठित थे और वे बख़्शिश लेने से इनकार कर देते। रेस्तोरां की दीवालों पर वे नोटिसें चिपका देते, जिनमें लिखा होता: "यहां बख़्शिश नहीं ली जाती", या "अगर कोई आदमी वेटरी करके अपनी रोजी कमाता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप उसे बख़्शिश देकर उसकी तौहीन करें"।

मोर्चे पर सिपाही अफसरों के साथ अपनी लड़ाई लड़ रहे थे और अपनी समितियों द्वारा स्वशासन की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। कारखानों के अन्दर वे बेजोड़ रूसी संस्थायें – कारखाना समितियां* – पुरानी व्यवस्था से संघर्ष के दौरान अनुभव, शक्ति और अपने ऐतिहासिक मिशन की समझ अर्जित कर रही थीं। समूचा रूस पढ़ना-लिखना सीख रहा था, वह

---

*देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – जॉ० री०

३० मई (१२ जून) – ३ (१६) जून में होनेवाले कारखाना समितियों के पेत्रोग्राद सम्मेलन में भाग लेनेवालों के बहुमत ने (तिन चौथाई) बोल्शेविकों का साथ दिया। – सं०

राजनीति, अर्थशास्त्र, इतिहास पढ़े जा रहा था, क्योंकि लोगों की ज्ञान-पिपासा जाग गयी थी . हर बड़े शहर में, अधिकांश छोटे शहरों में भी, मोर्चे पर हर राजनीतिक गुट का अपना अख़बार निकलता था—कभी कभी तो एक नहीं, कई अख़बार निकलते थे। लाखों पैम्फलेट हज़ारों संगठनों द्वारा बांटे जा रहे थे, और सेनाओं में, गावों में, कारख़ानों में, सड़कों-गलियों तक में उनकी जैसे झड़ी लगी हुई थी। शिक्षा की लालसा, जो इतने दिनों दबाई गई थी, क्रांति के साथ सहसा प्रज्वलित हो उठी और अत्यन्त प्रबल तथा उग्र रूप में प्रगट हुई। अकेले स्मोल्नी संस्थान से पहले छः महीनों में हर रोज टनों साहित्य गाड़ियों में भरकर, रेल-गाड़ियों में भर कर बाहर भेजा गया, और यह साहित्य देश के कोने कोने में फैल गया। जिस तरह गर्म तपता हुआ बालू पानी सोखता है और फिर भी अतृप्त रहता है, उसी तरह रूस यह सारी पठन-सामग्री चाट गया, और फिर भी उसकी प्यास नहीं बुझी। और यह सामग्री किस्सा-कहानी न थी, गढ़ा हुआ इतिहास नहीं थी, मिलावटी मजहब नहीं थी और न ही वह सस्ता, दो कौड़ी का बिगाड़ने वाला कथा साहित्य थी। यह पठन-सामग्री थी—सामाजिक और आर्थिक सिद्धान्त, दर्शन, तोल्स्तोई, गोगोल और गोर्की की कृतियां...

और फिर वह सारी बातचीत और बहस, जिसके सामने कार्लाइल का "फ़्रांसीसी वाक्-प्रवाह" महज एक पतली सी धारा था। थियेटरों, सर्कसों, स्कूलों, क्लबों, सोवियतों के सभा-कक्षों, यूनियनों के सदर दफ्तरों, बारिकों में लेक्चर, वाद-विवाद, भाषण... मोर्चे की खाइयों में, गावों के चौकों में, कारखानों में सभायें... वह कितना अद्भुत दृश्य होता, जब पुतीलोव्स्की ज़ावोद (पुतीलोव कारख़ाना) के ४०,००० मज़दूर सामाजिक-जनवादियों, समाजवादी-क्रांतिकारियों, अराजकतावादियों—जिस किसी को, जो कुछ भी कहना हो, उसे सुनने के लिए, जब तक वह बोलता जाये, तब तक सुनने के लिए निकल पड़ते। पेत्रोग्राद में, समूचे रूस में महीनों तक सड़क और गली का हर नुक्कड़ सार्वजनिक भाषण का एक मंच बना हुआ था। रेल-गाड़ियों में, ट्राम-गाड़ियों में, सभी जगहों में बहसें हमेशा अपने आप छिड़ जातीं...

और फिर अखिल रूसी सम्मेलन और कांग्रेसें, जिनमें दो प्रायद्वीपों के लोग इकट्ठे होते – सोवियतो के, सहकारी समितियों के, ज़ेम्सत्वोओं*, जातियों, पादरियो, किसानों, राजनीतिक पार्टियों के सम्मेलन; जनवादी सम्मेलन, मास्को राजकीय सम्मेलन, रूसी जनतन्त्र की परिषद्। पेत्रोग्राद मे हमेशा तीन-चार सम्मेलन एक साथ ही चलते रहते। हर सभा मे भाषणकर्त्ताओं का वक़्त बाध देने की कोशिशें बेकार जाती, हर आदमी इसके लिए आजाद था कि उसके मन मे जो भी विचार हो, उसे वह बेधड़क जाहिर करे।

हम रीगा के पीछे बारहवी सेना के मोर्चे पर गये, जहा फटेहाल और नंगे पैर आदमी, जिनकी हड्डिया निकल आयी थी, घोर निराशाजनक खाइयों की कीचड़ मे घुल रहे थे। जब उन्होंने हमे देखा, वे उठ खड़े हुए – उनके चेहरे ठिठुरे हुए थे और उनके बदन की नीली जिल्द फटे हुए कपड़ों के बीच से झलक रही थी। उन्होंने बड़े चाव से पूछा, "क्या आप कुछ **पढ़ने के लिए** लाये हैं?"

परिवर्तन के कितने ही बाह्य लक्षण देखे जा सकते थे तो क्या; अलेक्सान्द्रीन्स्की थियेटर के सामने महान् येकातेरीना की मूर्ति अपने हाथ में एक छोटा सा लाल झंडा लिये थी, तो क्या; दूसरे झंडे, जिनका रंग कुछ उड़ा हुआ था, सभी सार्वजनिक भवनो के ऊपर फहरा रहे थे, शाही निशान और उकाब या तो फाड़ डाले गये थे, या उन पर कपड़ा डाल दिया गया था, और डरावने **गोरोदोवोई** (नगर पुलिस) की जगह अब नर्मी से पेश आने वाली निहत्थी नागरिक मिलिशिया सड़कों पर गश्त लगा रही थी, तो भी क्या, इन सब के बावजूद गुजरे जमाने की बहुत सी अजीबोगरीब अलामते अभी मौजूद थी।

उदाहरण के लिए, पीटर महान् का '**ताबेल ओ रान्गाख़**' – दरजावार तरतीब – जिस को उन्होंने सख़्ती के साथ रूस पर लागू किया था, अभी भी चल रही थी। स्कूली लड़को समेत प्राय. सभी लोग अपनी मुकर्रर वर्दिया पहनते थे, जिनके बटनो और कधे की पट्टियों पर शाही निशान अकित होते थे। तीसरे पहर करीब पाच बजे सडके ढलती उम्र के कुछ

* देखिये, 'टिप्पणिया और व्याख्याये'। – जॉ० री०

दूसरा अध्याय

उठता हुआ तूफ़ान

सितम्बर* में जनरल कोर्नीलोव ने अपने को रूस का सैनिक अधिनायक घोषित करने के लिए पेत्रोग्राद पर चढ़ाई की। सहसा उनके पीछे पूंजीपति वर्ग का फौलादी पंजा प्रगट हुआ, जिसकी यह जुर्रत हुई थी कि क्रान्ति को कुचलने की कोशिश करे। कुछ समाजवादी मन्त्री भी कोर्नीलोव-काण्ड में शामिल थे, केरेन्स्की तक पर शक किया जा रहा था[1]। साविन्कोव से जब उनकी पार्टी, समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी, की केन्द्रीय समिति ने जवाब तलब किया, उन्होंने अपनी सफाई देने से इनकार किया और उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया। कोर्नीलोव सैनिक समितियों के हाथों बन्दी हुआ। उनके जनरलों को बर्ख़ास्त किया गया, मन्त्रियों को मुअत्तल करके काम से अलग कर दिया गया और फलतः मंत्रिमण्डल का पतन हो गया।

केरेन्स्की ने पूंजीपति वर्ग की पार्टी, कैडेटों को शामिल करते हुए एक नया मन्त्रिमण्डल बनाने की कोशिश की। लेकिन उनकी पार्टी, समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी ने उन्हें आदेश दिया कि वह कैडेटों को शामिल न करे। केरेन्स्की ने पार्टी का हुक्म मानने से इन्कार किया और समाजवादी-क्रान्तिकारियों के अपने हठ पर अड़े रहने की सूरत में मन्त्रिमण्डल से इस्तीफा देने की धमकी दी। लेकिन जन-भावना इतनी प्रबल थी कि फिलहाल

---

*अगस्त (पुराने पंचाग के अनुसार)—सं०

उनकी यह हिम्मत न पडी कि उनका विरोध करें, और हुआ यह कि केरेन्स्की की अध्यक्षता मे पाच पुराने मन्त्रियों के एक अस्थायी निर्देशक-मण्डल* ने तब तक के लिए सत्ता अपने हाथ में ले ली, जब तक कि इस प्रश्न का निपटारा न हो ले।

कोर्नीलोव-काण्ड के फलस्वरूप सभी समाजवादी दल, "नरम" तथा क्रान्तिकारी, दोनों ही आत्म-रक्षा की एक प्रबल, तीव्र प्रवृत्ति के वशीभूत हो एक दूसरे के समीप खिंच आये। अब दूसरा कोई कोर्नीलोव-काण्ड हरगिज होने नही दिया जा सकता। एक नयी सरकार बनाना ज़रूरी था, जो क्रान्ति का समर्थन करने वाले तत्वों के प्रति उत्तरदायी हो। और इसलिए त्से-ई-काह ने जन-संगठनों को आमन्त्रित किया कि वे पेत्रोग्राद में सितम्बर मे बुलाये जाने वाले एक जनवादी सम्मेलन[2] के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे।

तुरन्त ही त्से-ई-काह के अन्दर तीन गुट सामने आये। बोल्शेविको ने माग की कि सोवियतो की अखिल रूसी काग्रेस बुलाई जाये और वह सत्ता अपने हाथ में ले। चेर्नोव के नेतृत्व में "मध्यमार्गी" समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने, कमकोव तथा स्पिरिदोनोवा के नेतृत्व में वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियो के साथ मिलकर, मार्तोव के नेतृत्व मे मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियो ने और "मध्यमार्गी" मेन्शेविकों** ने, जिनके प्रतिनिधि बोग्दानोव और स्कोबेलेव थे, मांग की कि एक विशुद्ध समाजवादी सरकार की स्थापना की जाये। दक्षिणपंथी मेन्शेविकों के नेता त्सेरेतेली, दान और लीबेर ने और अव्क्सेन्त्येव तथा गोत्स के पीछे चलनेवाले दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने आग्रह किया कि नयी सरकार में मिल्की वर्गो के प्रतिनिधि जरूर होने चाहिये।

इसके बाद बोल्शेविकों को पेत्रोग्राद सोवियत में बहुमत प्राप्त करते देर नही लगी और मास्को, कीयेव, ओदेस्सा और दूसरे नगरों की सोवियतों ने पेत्रोग्राद सोवियत का अनुगमन किया।

---

* अस्थायी निर्देशक-मंडल में निम्नलिखित व्यक्ति शामिल थे: केरेन्स्की, निकीतिन, तेरेश्चेन्को, वेर्खोव्स्की तथा वेर्देरेव्स्की। – सं०

** देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – जॉ० री०

मेन्शेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी, जिनके हाथ में त्से-ई-काह की बागडोर थी, घबरा उठे, और उन्होंने फ़ैसला किया कि उनके लिए आख़िरकार कोर्नीलोव से उतना ख़तरा न था, जितना लेनिन से था। उन्होंने जनवादी सम्मेलन की प्रतिनिधित्व-योजना मे संशोधन किया और सहकारी समितियों तथा दूसरे अनुदार संगठनों के प्रतिनिधियों को ज्यादा बड़ी तादाद में शामिल किया। इस सभा ने भी, जिसमे कुछ ख़ास लोग चुन-चुन कर भरे गये थे, शुरू मे **कैडेटों को छोड़कर संयुक्त सरकार** गठित करने के पक्ष में वोट दिया। केवल इसलिए कि केरेन्स्की ने इस्तीफा देने की खुली धमकी दी, और "नरम" समाजवादियों ने घबरा कर चीख-पुकार मचाई कि "जनतन्त्र ख़तरे मे है", सम्मेलन ने अल्प बहुमत से पूजीपति वर्ग के साथ मिल कर संयुक्त सरकार गठित करने के पक्ष में निर्णय किया और वैधानिक अधिकारों से रहित एक प्रकार के सलाहकार संसद की स्थापना के लिए मंजूरी दी, जिसे 'रूसी जनतन्त्र की अस्थायी परिषद्' का नाम दिया गया। नये मन्त्रिमण्डल की बागडोर वस्तुतः मिल्की वर्गों के हाथ में थी और रूसी जनतन्त्र की परिषद् में उन्हें अपनी शक्ति को देखते हुए कही ज्यादा सीटें मिली थी।

हकीकत यह थी कि अब त्से-ई-काह सोवियतों के आम सदस्यों की प्रतिनिधि-संस्था न रह गयी थी, और वह क़ानून का उल्लंघन कर सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस को, जो सितम्बर में होनेवाली थी, बुलाने से इनकार कर रही थी। उसका इस कांग्रेस को बुलाने का या उसे बुलाये दिये जाने का कोई इरादा न था। उसके आधिकारिक मुखपत्र 'इज्वेस्तिया' (समाचार) ने कुछ इस प्रकार का संकेत करना शुरू कर दिया था कि सोवियतों का काम ख़त्म होने के क़रीब आ रहा है[3], और उन्हें जल्द ही भंग किया जा सकता है... नयी सरकार ने इसी समय "ग़ैरजिम्मेदार संगठनों" अर्थात् सोवियतों के उन्मूलन को अपनी नीति का एक अंग घोषित किया।

उत्तर में बोल्शेविकों ने आह्वान दिया कि सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस पेत्रोग्राद में २ नवम्बर को बुलाई जाये और वह रूस का शासन-सूत्र अपने हाथ में ले। साथ ही वे रूसी जनतन्त्र की परिषद् से अलग हो

गये – उन्होंने कहा कि वे "जनता के साथ गद्दारी करने वाली सरकार" में कोई हिस्सा नही लेंगे[4]।

लेकिन बोल्शेविकों के बाहर निकल आने से ही अभागी परिषद् में शान्ति स्थापित नही हुई। मिल्की वर्ग अपने को प्रभुत्व की स्थिति में पाकर उद्धत हो गये। कैडेटों ने एलान किया कि सरकार को कानूनन् इस बात का कोई अधिकार नही है कि वह रूस को जनतन्त्र घोषित करे। उन्होंने माग की कि सैनिकों और नाविकों की समितियों को नष्ट-भ्रष्ट कर देने के लिए सेना और नौसेना के अन्दर सख़्त कार्रवाई की जाये और सोवियतों की मलामत की। परिषद् के दूसरे पक्ष में मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों और वामपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने अविलम्ब शान्ति, किसानों के हाथ में भूमि के अन्तरण तथा उद्योग पर मजदूरों के नियन्त्रण का – वस्तुतः बोल्शेविकों के ही कार्यक्रम का – समर्थन किया।

मैंने कैडेटों के जवाब में मार्तोव का भाषण सुना था। वह बेहद बीमार थे, और सभा-मंच की मेज के ऊपर एक बेहद बीमार आदमी ही की तरह दोहरे झुके हुए और एक ऐसी भारी बैठी हुई आवाज़ में बोलते हुए कि उन्हें मुश्किल में ही सुना जा सकता था, उन्होंने दक्षिणपंथियों की बेंचों की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा:

"आप हमें पराजयवादी कहते हैं, लेकिन असली पराजयवादी वे हैं, जो शान्ति सम्पन्न करने के लिए ज्यादा माकूल मौके की ताक में हैं, जो शान्ति को बाद के लिए टाल देने के लिए आग्रह करते हैं, उस वक़्त के लिए, जब रूसी सेना का कुछ भी बाकी नही रह जायेगा, जब रूस विभिन्न साम्राज्यवादी गुटों के बीच सौदेबाजी का विषय बन जायेगा... आप रूसी जनता के ऊपर एक ऐसी नीति लादने की कोशिश कर रहे हैं, जो पूंजीपति वर्ग के स्वार्थों द्वारा निश्चित होती है। शान्ति का प्रश्न अविलम्ब उठाया जाना चाहिये... और तब आप देखेंगे कि जिन लोगों को आप जर्मनों के दलाल कहते हैं, उनका काम, उन जिम्मरवाल्डियों* का काम

---

*यूरोप के समाजवादियों का क्रान्तिकारी अन्तर्राष्ट्रीयतावादी पक्ष, जो जिम्मरवाल्डी इसलिए कहलाता कि उन्होंने १९१५ में जिम्मरवाल्ड, स्विट्ज़रलैंड, में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया था। – अं० सं०

अकारथ नहीं गया है, जिन्होंने सभी देशों में जनवादी जन-समुदायों की अन्तश्चेतना को जागृत करने के लिए जमीन तैयार की है..."

मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रान्तिकारी इन दोनों दलों के बीच थाली के बैंगन की तरह लुढ़कते रहते थे; जन-साधारण के बढ़ते हुए असन्तोष का दबाव उन्हें अनिवार्यतः वामपंथी दिशा में प्रेरित कर रहा था। परिषद् के सदस्य गहरे विरोध के कारण ऐसे दलों में बंटे हुए थे, जिनमें कभी सामंजस्य नहीं हो सकता था।

उस समय जब पेरिस में मित्र-राष्ट्र सम्मेलन बुलाये जाने की विज्ञप्ति ने विदेश नीति के उत्कट प्रश्न को सम्मुख उपस्थित कर दिया था, यही स्थिति थी...

सिद्धान्ततः रूस की सभी समाजवादी पार्टियां जनवादी शर्तों पर यथाशीघ्र शान्ति सम्पन्न करने के पक्ष में थीं। मई १९१७ में ही पेत्रोग्राद सोवियत ने, जो उस समय मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रान्तिकारियों के हाथ में थी, शान्ति के लिए रूस की प्रसिद्ध शर्तों की घोषणा की थी। इन शर्तों के अन्तर्गत यह माग की गयी थी कि मित्र-राष्ट्र युद्ध-उद्देश्यों के बारे में बातचीत करने के लिए सम्मेलन बुलायें। अगस्त में इस सम्मेलन को बुलाने का वादा किया गया था, फिर उसे सितम्बर तक टाल दिया गया, फिर अक्तूबर तक, और अब उसके लिए १० नवम्बर की तारीख़ निश्चित की गयी थी*।

अस्थायी सरकार का सुझाव था कि रूस की ओर से इस सम्मेलन में दो प्रतिनिधि भाग लें – प्रतिक्रियावादी जनरल अलेक्सेयेव तथा परराष्ट्र-मन्त्री तेरेश्चेन्को। सोवियतों ने अपनी ओर से बोलने के लिए स्कोबेलेव को चुना और एक घोषणापत्र प्रस्तुत किया, जो नकाज़[5] – निर्देशपत्र – के नाम से प्रसिद्ध है। अस्थायी सरकार ने स्कोबेलेव के चुने जाने पर तथा उनके नकाज़ पर आपत्ति प्रगट की। मित्र-राष्ट्रों के राजदूतों ने प्रतिवाद प्रगट किया, और अन्ततः बोनर लॉ** ने ब्रिटेन की

---

* अस्थायी सरकार के पतन के कारण सम्मेलन बुलाया न जा सका। – सं०

** एन्ड्रयू बोनर लॉ (१८५८–१९२३) – ब्रिटिश लार्ड, कंजरवेटिव पार्टी के नेता, १९१७ में लायड जॉर्ज की संयुक्त सरकार में वित्त-मन्त्री, हाउस आफ कामन्स के नेता। – सं०

पार्लामेंट में एक प्रश्न के उत्तर में रयाबाई से कहा, "जहां तक मुझे मालूम है, पेरिस सम्मेलन युद्ध-उद्देश्यों के बारे में बिल्कुल विचार नहीं करेगा, वह केवल इस बात पर विचार करेगा कि युद्ध किन तरीकों से चलाया जाये..."

बोनर लॉ के इस वक्तव्य से रूस के अनुदार अखबार फूले न समाये। बोल्शेविकों ने डपट कर कहा, "देख लो, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की समझौतापरस्त कार्यनीति ने उन्हें कहा पहुचा दिया है!"

युद्ध के १००० मील के मोर्चे पर रूस की सेनाओं के लाखों-लाख आदमियों में ऐसी जबर्दस्त हलचल हुई, जैसे समुद्र में ज्वार आयी हो और जैसे लहरे उठती हैं, वैसे ही उनके सैंकड़ों प्रतिनिधिमण्डल राजधानी में उमड़ पड़े और उन सबके लबों पर एक ही आवाज थी, "शान्ति! शान्ति!"

मैं नेवा नदी पार कर सर्कस माडर्न पहुचा, जहा एक महती जन-सभा हो रही थी। ऐसी सभाये रात-ब-रात बढती हुई तादाद में शहर भर में हो रही थी। धुंधला, सरोसामान से खाली गोल सर्कस-घर, जिसमें एक पतले से तार से लटकी हुई पांच छोटी छोटी बत्तिया अपनी रोशनी बिखेर रही थी, बिल्कुल ऊपर छत तक खचाखच भरा हुआ था। सिपाही, मल्लाह, मजदूर, स्त्रियां—सभी इस तन्मय भाव से भाषण को सुन रहे थे, जैसे वही उनकी जिन्दगी का दारोमदार हो। एक सिपाही बोल रहा था, ५४८ वी डिवीजन का सिपाही—मालूम नही वह कौन-सी डिवीजन थी और कहां थी।

"साथियो," सिपाही ने चिल्ला कर कहा, और उसके खिंचे हुए चेहरे मे, उसकी निराशापूर्ण भावभंगी में एक सच्ची तड़प थी। "चोटी के लोग हमेशा हमसे कहते रहते हैं कि और भी कुर्बानी दो, और भी कुर्बानी दो, जबकि जिन लोगों के पास सब कुछ भरा पडा है, उन्हें कोरा छोड़ दिया जाता है, उन्हें जरा सा भी दिक नही किया जाता।

"हम जर्मनी से युद्ध की स्थिति मे है। क्या हम जर्मन जनरलों को अपने सैनिक स्टाफ में काम करने को बुलायेंगे? लेकिन हम पूंजीपतियों के साथ भी युद्ध की स्थिति में हैं और फिर भी हम उन्हे अपनी सरकार में आने के लिए दावत देते हैं...

"रूस का सिपाही कहता है, 'आप मुझे दिखाइये, वह कौन-सी चीज़ है, जिसके लिए मैं लड़ रहा हूं; क्या वह कुस्तुनतुनिया है या यह आज़ाद रूस है? क्या वह जनवाद है या पूंजीवादी लूट-खसोट? अगर आप यह साबित कर सकें कि मैं मोर्चे पर क्रांति की हिफ़ाजत कर रहा हूं, तो मैं उठूंगा और लड़ूंगा और इस बात की क़तई जरूरत नहीं है कि मुझे मजबूर करने के लिए मृत्यु-दंड का विधान किया जाये।'

"जब जमीन किसानों की होगी और कारख़ाने मजदूरों के होंगे, और सत्ता सोवियतों के हाथ में होगी, तब हम समझेंगे कि हां, हमारे पास कोई चीज है, जिसके लिए हमें लड़ना है और हम उसके लिए लड़ेंगे!"

बारिकों में, कारख़ानों मे, सड़को-गलियों के नुक्कड़ों पर सिपाहियों के भाषणों का सिलसिला कभी ख़त्म होने को न आता। वे सभी बस एक चीज़ के लिए आवाज़ उठाते—लड़ाई ख़त्म होनी चाहिए और एलानिया कहते कि अगर सरकार शान्ति स्थापित करने की पुरजोर कोशिश नहीं करती, तो सिपाही ख़ाइयों को छोड़कर घर लौट आयेंगे।

आठवीं सेना का एक प्रवक्ता:

"हम कमजोर हैं, हरेक कम्पनी में बस थोड़े से ही सिपाही रह गये हैं। यह बिल्कुल जरूरी है कि वे हमें रसद-पानी, जूते और कुमक पहुंचायें, नहीं तो बहुत जल्द सिर्फ़ खाली ख़ाइयां ही रह जायेंगी। शान्ति चाहिए, नहीं तो रसद-पानी चाहिए... सरकार या तो लड़ाई को ख़त्म करे, या सेना की पूरी इमदाद करे..."

४६ वीं साइबेरियाई तोपख़ाना डिवीज़न की ओर से:

"सेना के अफ़सर हमारी समितियों के साथ काम करने से इनकार करते हैं, वे हमें दुश्मन के हवाले करते हैं, हमारे आन्दोलनकर्त्ताओं को मौत की सज़ायें देते हैं, और प्रतिक्रांतिकारी सरकार उनका समर्थन करती है। हमने सोचा था कि क्रांति शान्ति लायेगी। लेकिन अब तो सरकार हमें ऐसी बातें करने को भी मना करती है, और साथ ही वह न तो हमें इतनी ख़ुराक देती है कि हम जिन्दा रह सकें और न इतना गोला-बारूद कि हम लड़ सकें..."

यूरोप से अफ़वाहें आ रही थी कि रूस को बलि चढ़ा कर शान्ति स्थापित की जायेगी[8]...

फ़ास में रूसी सैनिकों के साथ जो सलूक हो रहा था, उसकी ख़बर ने असतोष को और भी भड़काया। वहा पहली ब्रिगेड ने अपने अफ़सरो को हटा कर उनकी जगह सैनिक समितिया स्थापित करने का प्रयत्न किया, जैसा उनके साथियो ने देश मे किया था; ब्रिगेड ने सलोनिकी भेजे जाने के हुक्म को मानने से इनकार किया और मांग की कि उसे वापिस रूस भेजा जाये। ब्रिगेड के सिपाहियों को घेर लिया गया, उनका रसद-पानी बन्द कर उन्हे भूखो मारा गया और फिर तोपों से उन पर गोले दगवाये गये। कितने ही सिपाही मारे गये[7]...

२६ अक्तूबर को मैं मारिईन्स्की महल के सगमरमर से बने सुर्ख़-सफ़ेद दीवानख़ाने मे गया, जहा जनतन्त्र की परिषद् की बैठक होती थी। मै सरकार की विदेश नीति के बारे मे तेरेश्चेन्को के उस बयान को सुनना चाहता था, जिसका शान्ति के लिए लालायित और लड़ाई से थका-मादा पूरा देश बेइन्तिहा बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था।

एक लम्बा-तड़ंगा नौजवान आदमी, जिसके कपड़ो मे शिकन तक न थी, जिसका चेहरा नरम और चिकना था और गाल की हड्डिया उभरी हुई थी, मृदु, कोमल स्वर में सावधानी से तैयार किया हुआ अपना भाषण पढ़ रहा था[8], जिसमे कोई ठोस पक्की बात नही कही गई थी, जिसमे कुछ नही, बस वे ही पुरानी लचर, खोखली बाते थी – मित्र-राष्ट्रों की सहायता से जर्मन सैन्यवाद को कुचल देने के बारे में, रूस के "राजकीय हितों" के बारे मे और उस "उलझन और परेशानी" के बारे में, जो स्कोबेलेव के नकाज़ से पैदा हुई थी। तेरेश्चेन्को के भाषण की टेक, जिससे उन्होंने अपनी बात ख़त्म की, यह थी:-

"रूस एक महान् शक्ति है। और चाहे कुछ भी हो, रूस एक महान् शक्ति बना रहेगा। हम सबको उसकी रक्षा करनी होगी, हमें दिखाना होगा कि हम एक महान् आदर्श के रक्षक हैं और एक महान् देश की सन्तान हैं।"

इस भाषण से किसी को संतोष नही हुआ। प्रतिक्रियावादी चाहते थे कि एक "जोरदार" साम्राज्यवादी नीति अपनाई जाये; जनवादी पार्टिया चाहती थी कि सरकार यह आश्वासन दे कि वह शान्ति के लिए

पूरी ताकत से कोशिश करेगी... मैं यहां बोल्शेविक पेत्रोग्राद सोवियत के मुखपत्र 'राबोची इ सोल्दात' (मजदूर और सिपाही) के एक सम्पादकीय को उद्धृत कर रहा हूं:

खाइयों में पड़े हुए सिपाहियों को

सरकार का जवाब

हमारे सबसे मितभाषी मन्त्री श्री तेरेश्चेन्को ने खाइयो मे पड़े हुए सिपाहियों को वास्तव में निम्नलिखित उत्तर दिया है:

१. हम मित्र-राष्ट्रों के साथ (उन देशों की जनता के साथ नही, वरन् उनकी सरकारों के साथ) घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध हैं।

२. शीत-अभियान सम्भव है या नही, इस प्रश्न पर जनवादी बहस-मुबाहिसे से कोई फ़ायदा नही है। इस प्रश्न का निपटारा हमारे मित्र-राष्ट्रों की सरकारें करेंगी।

३. पहली जुलाई के हमले से फ़ायदा हुआ और वह एक खुशगवार मामला था। (लेकिन उसका क्या नतीजा हुआ, इसके बारे मे उन्होंने एक शब्द भी नही कहा।)

४. यह बात सच नही है कि हमारे मित्र-राष्ट्र हमारी परवाह नही करते। मन्त्री महोदय के हाथ में बड़ी महत्त्वपूर्ण घोषणायें हैं। (कथनी? लेकिन करनी? ब्रिटिश बेड़े के रवैये के बारे मे आपका क्या कहना है? और निर्वासित प्रतिक्रांतिकारी जनरल गुर्को के साथ ब्रिटिश सम्राट् की बातचीत के बारे में? मन्त्री महोदय ने इन सब बातों का कोई जिक्र नही किया।)

५. स्कोबेलेव को दिया गया नकाज़ बुरा है, मित्र-राष्ट्र उसे पसन्द नही करते, न ही रूसी कूटनीतिज्ञ उसे पसन्द करते हैं। यह जरूरी है कि मित्र-राष्ट्र-सम्मेलन में हम सभी "एक स्वर मे" बात करे।

क्या बस इतनी ही बात कही गई? हां, इतनी ही। समस्या का हल क्या है? हल यह है कि मित्र-राष्ट्रों पर और तेरेश्चेन्को पर भरोसा रखो। शान्ति कब आयेगी? जब मित्र-राष्ट्र उसकी इजाजत दें।

यह है शान्ति के बारे में खाइयों में पड़े हुए सिपाहियों को सरकार का जवाब!

रूसी राजनीति की पृष्ठभूमि में अब एक भयानक शक्ति की धुंधली धुंधली आकृति प्रगट होने लगी। यह थी कज्ज़ाकों की शक्ति। गोर्की के अखबार 'नोवाया जीज्न' (नव-जीवन) ने उनकी सरगर्मियों की ओर ध्यान दिलाया:

क्रांति के आरम्भ में कज्ज़ाकों ने जनता पर गोली चलाने से इनकार किया। जब कोर्नीलोव ने पेत्रोग्राद पर चढ़ाई की, उन्होंने उसके पीछे चलने से इनकार किया। क्रांति के प्रति निष्क्रिय वफादारी को तिलांजलि देकर कज्ज़ाक अब उस पर सक्रिय राजनीतिक आघात कर रहे हैं। क्रांति की पृष्ठभूमि से निकल कर वे सहसा राजनीतिक मंच के पुरोभाग में आ गये हैं...

दोन प्रदेश के कज्ज़ाकों के **अतामान** (सरदार) कलेदिन को अस्थायी सरकार ने बर्ख़ास्त कर दिया था, क्योंकि कोर्नीलोव-कांड में उनका भी हाथ था। उन्होंने इस्तीफा देने से साफ इनकार किया और अपने गिर्द तीन बड़ी बड़ी कज्ज़ाक सेनाओं को लिये नोवोचेर्कास्क नामक शहर में कुचक्र रचते हुए और आतंक की सृष्टि करते हुए पड़े रहे। उनकी ताकत इतनी जबरदस्त थी कि सरकार को मजबूर होकर उनकी हुक्म-उदूली को नजरअंदाज कर देना पड़ा। इतना ही नहीं, उसे मजबूर होकर कज्ज़ाक सेनाओं के संघ की परिषद् को भी औपचारिक मान्यता देनी पड़ी और हाल में ही स्थापित सोवियतों की कज्ज़ाक शाखा को गैरकानूनी करार देना पड़ा।

अक्तूबर के शुरू में एक कज्ज़ाक प्रतिनिधिमण्डल ने केरेन्स्की से मुलाकात की और बड़े उद्धत भाव से आग्रह किया कि कलेदिन पर लगाये अभियोग वापिस लिए जायें और मन्त्रिमण्डल के अध्यक्ष को इसके लिए भी फटकारा कि वह सोवियतों के सामने झुक गये थे। केरेन्स्की ने मान लिया कि वह कलेदिन को छेड़ेंगे नहीं और फिर कहा जाता है, उन्होंने कहा, "सोवियत नेताओं की दृष्टि में मैं अत्याचारी और स्वेच्छाचारी हूं...
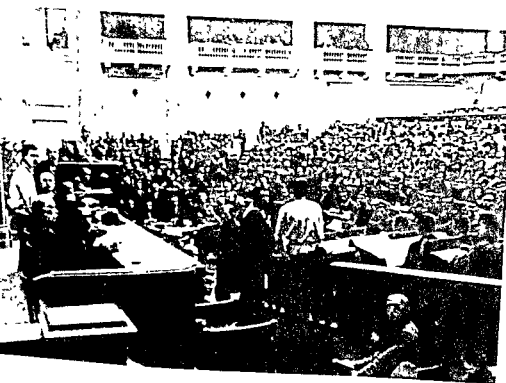
कारख़ाना समितियों का पेत्रोग्राद सम्मेलन, १२–१६ जून, १६१७।

ग्रेनाडियर बारिकों में सिपाहियों की एक मीटिंग, अक्तूबर, १९१७। बाल्टिक बेड़े का एक मल्लाह भाषण कर रहा है।

जहां तक अस्थायी सरकार का प्रश्न है, वह सोवियतों के ऊपर निर्भर नही है, इतना ही नही उसे इन सोवियतों के अस्तित्व तक के लिए खेद है।"

उसी समय एक दूसरा कज़्ज़ाक मिशन ब्रिटिश राजदूत से मिला और उसने यहा तक जुर्रत की कि वह उनसे "आज़ाद कज़्ज़ाक जनता" के प्रतिनिधियों की हैसियत से पेश आया।

दोन प्रदेश में बहुत कुछ कज़्ज़ाक जनतन्त्र जैसी चीज स्थापित की जा चुकी थी।

कुबान ने अपने को एक स्वतन्त्र कज़्ज़ाक राज्य घोषित कर दिया। रोस्तोव-आन-दोन और येकातेरीनोस्लाव की सोवियतें हथियारबन्द कज़्ज़ाको द्वारा छिन्न-भिन्न कर दी गई, ख़ारकोव मे कोयला मज़दूर यूनियन के सदर दफ़्तर पर छापा मारा गया। कज़्ज़ाक-आन्दोलन अपने सभी प्रत्यक्ष रूपों में समाजवाद-विरोधी तथा सैन्यवादी था। कलेदिन, कोर्नीलोव, जनरल दूतोव, जनरल कराऊलोव तथा जनरल बारदिजी की तरह ही उसके नेता रईस और बड़े बड़े ज़मीदार थे। मास्को के शक्तिसम्पन्न व्यापारी और बैंकर इस आन्दोलन का समर्थन करते थे...

पुराना रूस बड़ी तेजी से टूट और बिखर रहा था। उक्रइना, फ़िनलैंड, पोलैंड और बेलोरूस मे राष्ट्रवादी आन्दोलन ज़ोर पकड़ रहा था और उसकी हिम्मत बढती ही जाती थी। स्थानीय सरकारे, जिनकी बागडोर मिल्की वर्गों के हाथ मे थी, स्वायत्त-शासन की माग करती थी और पेत्रोग्राद के हुक्म को मानने से इनकार करती थी। हेलसिंगफोर्स मे फिनलैंड की सेनेट ने अस्थायी सरकार को क़र्ज़ देने से इनकार किया, फिनलैंड को स्वायत्त राज्य घोषित किया और मांग की कि रूसी फ़ौजे हटाई जायें। कीयेव मे स्थापित पूजीवादी रादा ने उक्रइना की सीमाओ को यहां तक बढ़ाया कि पूर्व मे उराल तक दक्षिणी रूस की सबसे उपजाऊ धरती सारी की सारी उक्रइना में शामिल हो गयी। साथ ही उसने एक राष्ट्रीय सेना का गठन करना भी शुरू किया। मुख्यमन्त्री विन्निचेन्को ने कुछ इस प्रकार का संकेत दिया कि वह जर्मनी के साथ पृथक् शान्ति-सन्धि सम्पन्न करेंगे – और अस्थायी सरकार लाचार यह सब देख रही थी। साइबेरिया और काकेशिया ने माग की कि उनकी अलग संविधान सभायें बुलाई जाये। इन

प्रदेशो में अधिकारियों और मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियो की स्थानीय सोवियतों के बीच कठोर संघर्ष का सूत्रपात हो रहा था...

गडबडी दिन-ब-दिन बढती जा रही थी। लाखों सिपाही मोर्चे को छोडकर भाग रहे थे, उनकी लहर पर लहर उठ रही थी—विशाल और दिशाहीन—और देश को आप्लावित कर रही थी। तम्बोव और त्वेर गुबेर्निया के किसान जमीन के लिए इन्तजार करते करते आजिज आकर और सरकार की दमनकारी कार्रवाइयो से खीझकर जमीदारों की छावनियों को जला रहे थे और ख़ुद उन्हें मौत के घाट उतार रहे थे। जबरदस्त हडतालो और तालाबदियो ने मास्को और ओदेस्सा को, दोन प्रदेश की कोयले की खानो को जैसे झकझोर डाला था। परिवहन ठप हो गया था, सेना भूखो मर रही थी और बड़े बड़े शहरों में रोटी नदारद थी।

जनवादी तथा प्रतिक्रियावादी गुटों के बीच असमंजस में पड़ी हुई सरकार किंकर्तव्यविमूढ थी। अगर मजबूर होकर वह कुछ करती भी थी, तो हमेशा मिल्की वर्गों के हितों का ही समर्थन ही करती थी। किसानो के बीच शान्ति और सुव्यवस्था पुन.स्थापित करने के लिए, मजदूरों की हड-तालो को तोडने के लिए कज्जाकों को भेजा गया। ताशकंद में सरकारी अधिकारियो ने स्थानीय सोवियत का दमन किया। पेत्रोग्राद में आर्थिक परिषद्, जिसे देश के छिन्न-भिन्न आर्थिक जीवन का पुनर्निर्माण करने के लिए स्थापित किया गया था, पूजी तथा श्रम की परस्पर-विरोधी शक्तियों के बीच फसकर रह गई, उसमे गतिरोध उत्पन्न हो गया और उसे केरेन्स्की ने भंग कर दिया। पुरानी व्यवस्था के फ़ौजी लोग, जिन्हे कैडेटो का समर्थन प्राप्त था, मांग कर रहे थे कि सेना तथा नौसेना मे फिर से अनुशासन स्थापित करने के लिए कडी कार्रवाई की जाये। श्रद्धास्पद नौ-मन्त्री एडमिरल वेर्देरेव्स्की तथा युद्धमन्त्री जनरल वेर्खोव्स्की ने आग्रह किया कि सैनिक तथा नौसैनिक समितियों से सहयोग पर आधारित एक नया स्वैच्छिक जनवादी अनुशासन ही सेना तथा नौसेना को बचा सकता है, लेकिन उनकी आवाज नक़्कारखाने में तूती की आवाज थी। उनकी सलाहों और सुझावों को उठाकर ताक पर रख दिया गया।

प्रतिक्रियावादी लोग जनता का गुस्सा भडकाने पर तुले हुए दिखाई देते थे। कोर्नीलोव की पेशी होने वाली थी। पूजीवादी अखबार अधिकाधिक

खुले तौर पर उसकी हिमायत करते और उसके लिए कहते कि वह "एक महान् रूसी देशभक्त है"। बूर्त्सेव के अखबार 'ओबश्चेये देलो'* (सामान्य ध्येय) ने नारा दिया कि कोर्नीलोव, कलेदिन और केरेन्स्की की तानाशाही कायम हो!

एक दिन जनतन्त्र की परिषद् की प्रेस गैलरी में बूर्त्सेव के साथ मेरी बातचीत हुई। एक नाटे क़द का आदमी, जिसकी कमर झुकी हुई थी, चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई थी, तंगनजर आंखो पर मोटा चश्मा चढा हुआ था, बाल बिखरे हुए थे और दाढ़ी खिचड़ी हो रही थी – यह थे बूर्त्सेव।

"मेरी बात को गिरह मे बांध लो, मेरे नौजवान दोस्त!" उन्होंने कहा। "रूस को शक्ति-पुरुष की आवश्यकता है। हमे अब अपना ध्यान क्रांति की ओर से हटाकर जर्मनों मे लगाना चाहिए। ये घपलेबाज, ये काम बिगाड़ने वाले, जिनकी वजह से कोर्नीलोव की हार हुई। और इन घपलेबाजो के पीछे जर्मन दलालों का हाथ है। कोर्नीलोव को जीतना चाहिए था..."

घोर दक्षिणपक्ष में प्रायः प्रत्यक्ष राजतन्त्रवादियों के मुखपत्र – पुरिश्केविच का पत्र 'नरोद्नी त्रिबून' (जनता की आवाज), 'नोवाया रूस' (नया रूस) और 'जिवोये स्लोवो' (प्राणवान् शब्द) – क्रांतिकारी जनवाद का सफ़ाया करने का खुल्लमखुल्ला समर्थन करते थे...

२३ अक्तूबर को रीगा की खाडी मे जर्मन बेड़े के एक स्क्वाड्रन के साथ मुठभेड़ हुई। अस्थायी सरकार ने, इस बहाने से कि पेत्रोग्राद खतरे में है, राजधानी को खाली करने की एक योजना बनाई, जिसके अनुसार सबसे पहले गोला-बारूद के बड़े बड़े कारखाने हटाये जा कर सारे रूस मे फैला दिये जाने वाले थे और इसके बाद सरकार ख़ुद पेत्रोग्राद से हटकर

---

*बूर्त्सेव, व० ल० – उदारतावादी पूंजीवादी प्रकाशक। उनका अख़बार 'ओबश्चेये देलो' (१९१७) बोल्शेविक-विरोधी प्रचार करता था। क्रान्ति के शीघ्र ही बाद बूर्त्सेव रूस छोड़कर पेरिस चले गये और उन्होंने वहां फिर से उपरोक्त अख़बार का प्रकाशन शुरू किया – इस बार उन्होंने राजतन्त्रवादी दृष्टिकोण ग्रहण किया। – सं०

5

मास्को चली जानेवाली थी। योजना निकलते ही बोल्शेविकों ने जोर-शोर से कहना शुरू किया कि सरकार क्रांति को कमजोर करने की गरज से लाल राजधानी को छोड़ रही है। रीगा को जर्मनों के हाथ बेच दिया गया है और अब पेत्रोग्राद को दुश्मन के हवाले किया जा रहा है!

पूंजीवादी अखबारों की खुशी का ठिकाना न था। कैडेटों के अख़बार 'रेच' (वाणी) ने लिखा, "मास्को में, जहां अराजकतावादियों की छेड़छाड़ का डर न होगा, सरकार शान्त वातावरण में अपना काम कर सकेगी।" कैडेट पार्टी के दक्षिणपक्ष के नेता रोद्ज़्यान्को ने 'उत्रो रोस्सीई' (रूस में प्रभात) नामक अखबार में लिखते हुए एलानिया कहा कि जर्मनों द्वारा पेत्रोग्राद पर कब्जा एक बहुत बड़ी नेमत होगा, क्योंकि उससे सोवियतों का नाश होगा और क्रांतिकारी बाल्टिक बेड़े से भी नजात मिल जायेगी। उन्होंने लिखा

"पेत्रोग्राद खतरे में है... मैं अपने आप से कहता हूं, 'ईश्वर पेत्रोग्राद की हिफाजत करे'। उन्हें डर है कि अगर पेत्रोग्राद हाथ से चला जाता है, तो केन्द्रीय क्रांतिकारी संगठन छिन्न-भिन्न हो जायेंगे। इसके जवाब में मैं कहता हूं कि अगर ये सारे संगठन छिन्न-भिन्न हो जायें, तो मुझे बड़ी खुशी होगी, क्योंकि वे रूस को मुसीबत में ही डाल सकते हैं...

"जर्मन पेत्रोग्राद ले लेंगे, तो बाल्टिक बेड़ा भी नष्ट हो जायेगा... लेकिन इसमें अफसोस करने की कोई बात न होगी, क्योंकि अधिकांश जंगी जहाज पूरी तरह भ्रष्ट हो चुके हैं..."

प्रबल जन-विरोध की ऐसी आंधी उठी कि पेत्रोग्राद ख़ाली करने की योजना को रद्द करना पड़ा।

इस बीच सोवियतों की कांग्रेस रूस के राजनीतिक आकाश में इस तरह मंडरा रही थी, जैसे रौद्र मेघ, जिसमें असंख्य बिजलियां कौंध रही हों। सरकार ही नहीं, तमाम "नरम" समाजवादी भी इस कांग्रेस को बुलाने का विरोध कर रहे थे। केन्द्रीय सैनिक तथा नौसैनिक समितियां, अनेक ट्रेड-यूनियनों की केन्द्रीय समितियां, किसानों की सोवियतें और सबसे ज्यादा त्से-ई-काह' अपनी भरसक इस बात की कोशिश कर रही थी कि कांग्रेस का अधिवेशन न होने पाये। पेत्रोग्राद सोवियत द्वारा स्थापित परन्तु अब त्से-ई-काह के नियन्त्रण में निकलने वाले अखबार 'इज़्वेस्तिया' (समाचार)

तथा 'गोलोस सोल्दाता' (सिपाही की आवाज) कांग्रेस पर प्रचण्ड आक्रमण कर रहे थे और उसी तरह 'देलो नरोदा' (लोक-ध्येय) तथा 'वोल्या नरोदा' (लोक-संकल्प) समेत समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी प्रेस का पूरा तोपख़ाना उस पर अपने गोले दाग रहा था।

देश भर में नुमाइन्दे दौड़ाये गये, स्थानीय सोवियतों की बागडोर संभालने वाली समितियों को, सैनिक समितियों को तार द्वारा सन्देश भेजे गये कि वे कांग्रेस के लिए होने वाले चुनावों को रोक दें या टाल दें। कांग्रेस के ख़िलाफ सार्वजनिक सभाओं में गम्भीर प्रस्ताव पास किये गये, इस आशय की घोषणायें की गयी कि जनवादी तबके इसके खिलाफ है कि कांग्रेस का अधिवेशन ऐसे समय हो, जब संविधान सभा की तिथि इतनी निकट आ गयी हो। युद्ध-मोर्चा, जेम्सत्वो, किसान संघ, कज्जाक सेनाओं का संघ, अफसरों की यूनियन, सेंट जार्ज पदकधारी शूरवीर, शहीदी टुकड़िया* – इन सब के प्रतिनिधि प्रतिवाद प्रगट कर रहे थे.. रूसी जनतन्त्र की परिषद् ने एक स्वर से अस्वीकृति प्रगट की। मार्च क्रान्ति ने जो मशीनरी स्थापित की थी, वह पूरी की पूरी सोवियतों की कांग्रेस का रास्ता रोके खड़ी थी...

दूसरी ओर, सर्वहारा का – मजदूरों, आम सिपाहियों और गरीब किसानों का – आकारहीन संकल्प था। बहुत सी स्थानीय सोवियतें अभी से बोल्शेविक हो गयी थीं; फिर औद्योगिक मजदूरों के संगठन, **फ़ाब्रीचनो-जावोद्स्कीये कोमितेति** – कारखाना समितियां – भी थीं और उनके अलावा सेना तथा जहाजी बेड़े के विद्रोही संगठन भी। कई स्थानों में नियमित रूप से सोवियत प्रतिनिधियों का चुनाव करने में बाधित होकर जनता ने अपनी "रम्प" मीटिंगें की और अपने बीच से एक आदमी को पेत्रोग्राद भेजे जाने के लिए चुना। दूसरे स्थानों में उन्होंने पुरानी बाधक समितियों को छिन्न-भिन्न कर डाला और नयी समितियों की स्थापना की। विद्रोह की ज्वार उठ रही थी और उसने, उन तमाम महीनों में भीतर ही भीतर सुलगती क्रान्ति की आग के ऊपर जो पपड़ी धीरे धीरे जम रही थी और सख़्त हो रही थी, उसको चटका दिया। एक स्वतःस्फूर्त जन-

---

*देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – जॉ० री०

आन्दोलन ही सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस को सम्भव बना सकता था...

बोल्शेविक आन्दोलनकर्ता दिन-ब-दिन बारिकों और कारखानों का चक्कर लगाते और "गृहयुद्ध की इस सरकार" को बुरी तरह फटकारते। एक दिन इतवार के रोज हम लोग एक भारी-भरकम भाप से चलने वाली ट्राम-गाडी में सवार होकर, जो लबालब कीचड़ के बीच से टनटन करती, शोर मचाती, कारखानों की सादी इमारतों और बड़े बड़े गिरजाघरों के बीच से गुजर रही थी, श्लिसेलबुर्ग मार्ग पर स्थित सरकारी गोला-बारूद फैक्टरी, ओबूखोव्स्की जावोद, पहुंचे।

एक बहुत बड़ी आधी तैयार इमारत की नंगी ईंट की दीवारों के साये में सभा हुई। लाल कपड़े से सजाये मंच के गिर्द काले कपड़े पहने दस हजार औरत-मर्द जमा थे। लोग इमारती लकड़ियों और ईंटों की ढेरियों पर लदे हुए थे या स्याह गाटरों के ऊपर टंगे हुए थे, सब के सब उत्सुक और एकाग्र, आवाज में बिजली की कड़क। कभी कभी धूमिल, बोझिल आकाश में बादलों के बीच से सूरज अचानक निकल पड़ता और उसका रक्तिम प्रकाश-पुंज खिड़कियों के चौखटों से होकर उन हजारों सीधे-सादे चेहरों पर पड़ता, जो हमारी ओर उठे हुए थे।

नाजुक बदन के लुनाचार्स्की, जो देखने में कालेज के छात्र मालूम होते थे और जिनके कलाकार जैसे चेहरे से भावुकता टपकती थी, बता रहे थे कि क्यों यह जरूरी है कि सोवियतें सत्ता अपने हाथ में ले लें। क्रांति के उन दुश्मनों से क्रांति के बचाव की और किसी भी तरह जमानत नहीं की जा सकती है, जो जानबूझ कर देश को तबाह कर रहे हैं, सेना को तबाह कर रहे हैं और एक नये कोर्नीलोव-कांड के लिए अवसर उत्पन्न कर रहे हैं।

रूमानिया के मोर्चे से लौटा हुआ एक दुबला-पतला सिपाही, जो एक साथ ही करुण और प्रचंड दोनों था, बोल रहा था, "साथियो! मोर्चे पर हम भूखों मर रहे हैं, ठंड से अकड़ रहे हैं। हम बेवजह मारे जा रहे हैं। मैं अपने अमरीकी साथियों से कहता हूं, वे हमारी आवाज़ को अमरीका तक पहुंचायें और बतायें कि रूसी मरते दम तक क्रांति को हर्गिज तिलांजलि नहीं देंगे। हम अपनी पूरी ताकत से अपने मोर्चे पर डटे रहेंगे, तब तक जब तक कि दुनिया के लोग उठ न जायें और हमारी मदद के लिए न आ जायें।

अमरीकी मजदूरों से कहिए कि वे उठे और सामाजिक क्राति के लिए संघर्ष करे!"

इसके बाद पेत्रोव्स्की बोलने के लिए खड़े हुए—दुबले-पतले, आहिस्ता लहजे मे बोलने वाले और कभी न झुकने वाले।

"यह बाते बघारने का वक्त नहीं है, काम का वक्त है! आर्थिक परिस्थिति बहुत बुरी है, मगर हमें उसका आदी होना पडेगा। वे हमे भूख और ठंड मे मारने की कोशिश कर रहे हैं। वे हमें भडकाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन वे जान ले कि वे हद से बाहर भी जा सकते हैं—वे जान ले कि अगर वे सर्वहारा संगठनो पर चोट करनें की जुर्रत करते है, तो हम उन्हें कूड़ा-कर्कट की तरह इस तरह साफ कर देगे कि इस धरती पर उनका निशान तक न रह जायेगा।"

बोल्शेविक अख़बारों की तादाद बडी तेजी से बढने लगी। 'राबोची पुत' (मजदूरों का मार्ग) और 'सोल्दात' (सिपाही) नामक पार्टी के दो अखबारों के अलावा 'देरेवेन्स्काया बेद्नोता' (गाव के गरीब) नाम से किसानो के लिए एक नया अखबार निकला, जिसकी रोजाना पाच लाख प्रतियां छपती थीं और फिर १७ अक्तूबर को 'राबोची इ सोल्दात' (मजदूर और सिपाही) निकला। उसके एक सम्पादकीय लेख मे बोल्शेविक दृष्टिकोण को सारांश रूप में उपस्थित किया गया:

चौथे साल की मुहिम का मतलब होगा सेना का और देश का सर्वनाश... पेत्रोग्राद की सुरक्षा के लिए ख़तरा पैदा हो गया है... प्रतिक्रांतिकारी जनता की मुसीबतों को देख कर फूले नहीं समाते... निराशा से उत्तेजित होकर किसान खुली बगावत कर रहे हैं। जमीदार और सरकारी अधिकारी उनके खिलाफ़ ताजीरी मुहिम भेज कर उनका क़त्ले-आम कर रहे हैं। कारखाने बंद हो रहे है, मजदूरों के लिए भूखों मरने का ख़तरा पैदा हो गया है... पूजीपति वर्ग और उसके जनरल सेना मे फिर से अन्ध-अनुशासन स्थापित करना चाहते हैं। पूजीपति वर्ग के समर्थन से कोर्निलोवपंथी सविधान सभा के अधिवेशन को छिन्न-भिन्न करने के लिए खुल्लमखुल्ला तैयारिया कर रहे हैं...

केरेन्स्की की सरकार जन-विरोधी सरकार है। वह देश को तबाह

कर डालेगी... यह अखबार जनता की तरफ है, जनता के साथ है – गरीब वर्गों, मजदूरो, सिपाहियो और किसानो के साथ है। जनता का निस्तार तभी हो सकता है, जब क्रांति को पूरा किया जाये... और इसके लिए जरूरी है कि पूर्ण राज्यसत्ता सोवियतो के हाथ मे हो...

यह अखबार माग करता है:

समस्त सत्ता सोवियतो के हाथ मे – राजधानी मे और प्रान्तों मे भी।
सभी मोर्चो पर अविलम्ब युद्ध-विराम। राष्ट्रो के बीच सच्ची शान्ति।
जमींदारिया बगैर मुआवजे के किसानो को दी जाये।
औद्योगिक उत्पादन पर मजदूरो का नियन्त्रण।
पूरी वफादारी और ईमानदारी से चुनी हुई सविधान सभा।

इसी अखबार से, उन्ही बोल्शेविको के मुखपत्र से, जिन्हे दुनिया जर्मनो के दलाल के रूप मे इतनी अच्छी तरह जानती है, यहा एक उद्धरण देना दिलचस्प होगा:

जर्मन सम्राट, जिसके हाथ लाखो हताहतो के ख़ून से रगे हुए हैं, अपनी सेना को पेत्रोग्राद पर चढाई करने के लिए भेजना चाहता है। हम जर्मन मजदूरों, सिपाहियो और किसानो से, जो उसी तरह शान्ति चाहते हैं जैसे हम, अपील करेंगे कि वे इस घृणित युद्ध के ख़िलाफ अपनी आवाज बुलन्द करें।

ऐसा आह्वान एक क्रातिकारी सरकार ही दे सकती है, जो सचमुच रूस के मजदूरों, सिपाहियों और किसानों की ओर से बोलने की हकदार होगी, और जो कूटनीतिज्ञों की उपेक्षा कर सीधे सीधे जर्मन सेनाओ से अपील करेगी, जर्मन खाइयों को जर्मन भाषा मे मुद्रित घोषणाओ से पाट देगी... इन घोषणाओ को हमारे हवाबाज पूरे जर्मनी मे फैला देंगे...

जनतन्त्र की परिषद् में दोनों पक्षो के बीच की खाई दिन पर दिन चौड़ी होती जा रही थी।

वामपक्षी समाजवादी-क्रान्तिकारियों की ओर से भाषण करते हुए कारेलिन ने कहा, "किसी वर्ग राज्य की क्रान्तिकारी मशीनरी का इस्तेमाल

कर रूस को मित्र-राष्ट्रों के युद्धरथ के साथ जोत देना चाहते है! क्रान्तिकारी पार्टियां इस नीति के बिल्कुल खिलाफ है..."

जन-समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधि बूढ़े निकोलाई चाइकोव्स्की ने अपने भाषण में किसानों को जमीन देने का विरोध किया और कैडेटों का पक्ष लिया। उन्होंने कहा:

"यह आवश्यक है कि सेना के अन्दर अविलम्ब कठोर अनुशासन स्थापित हो... लड़ाई शुरु होने के दिनों से ही मैं इस बात पर बराबर जोर देता रहा हूं कि युद्ध-काल मे सामाजिक तथा आर्थिक सुधारो में पडना एक जुर्म है। हम यही जुर्म कर रहे है–हालाकि मैं इन सुधारो का विरोधी नही हूं, क्योंकि मैं समाजवादी हूं।"

वामपंथियों की पांतों से आवाजे, "हमे आप पर यक़ीन नही है!" दक्षिणपंथियो की जोरदार तालिया...

कैडेटों की ओर से अजेमोव ने कहा कि सेना को यह बताना जरूरी नही है कि वह किस चीज़ के लिए लड़ रही है, क्योंकि हर सैनिक को समझना चाहिये कि उसका पहला काम रूस की सरज़मीन से दुश्मन को खदेड़ बाहर करना है।

केरेन्स्की ख़ुद दो बार तशरीफ़ ले आये और उन्होने राष्ट्रीय एकता के लिए पुरजोश अपील की। एक बार तो वह बोलते बोलते रो भी पड़े। लेकिन सभा ने उन्हें निरुत्साह भाव से सुना और उनके भाषण के बीच बीच मे फबतियां भी कसी जाती रही।

त्से-ई-काह और पेत्रोग्राद सोवियत का हेडक्वार्टर, स्मोल्नी सस्थान मीलो दूर शहर के एक छोर पर विस्तीर्ण नेवा नदी के किनारे था। मैं वहां एक ठसाठस भरी ट्राम-गाड़ी मे गया, जो कीचड़ से लथपथ सड़को से, जिनमें पत्थर का खड़ंजा लगाया हुआ था, कांखती-कूंखती चीटी की चाल से चल रही थी। जहां ट्राम की लाइन ख़तम होती थी, स्मोल्नी कानवेन्ट के सुन्दर धुएं के रंग के नीलाभ, मगर किनारों पर मद्धिम सुनहले गुम्बद आसमान को चूम रहे थे। एक हसीन इमारत थी यह। और उसके साथ ही दो सौ गज लम्बी और तीन मंजिल ऊंची स्मोल्नी संस्थान की इमारत का विशाल बारिकनुमा मुखभाग था, जिसके फाटक के ऊपर पत्थर

मे बडा बडा गुदा हुग्रा शाही राज्यचिह्न अभी भी जैसे धृष्टता से मुह चिढ़ा रहा था . .

पुराने शासन काल मे यहा रूसी अभिजात वर्गीय लड़कियों का एक प्रसिद्ध कानवेन्ट-स्कूल था, जिसकी सरक्षिका स्वयं जारीना हुग्रा करती थी मजदूरो और सिपाहियो के क्रान्तिकारी सगठनों ने उस पर कब्जा कर लिया था। उसके अन्दर सौ से भी ज्यादा कमरे थे, काफूरी, सामान से खाली कमरे, और उनके दरवाजों पर अभी भी एनेमल-तख्तियां लगी हुई थी, जो आने-जाने वाले को बताती थी कि अमुक कमरा "लड़कियो की कक्षा चार है" और अमुक "अध्यापिका-ब्यूरो" है, इत्यादि। लेकिन अब उनके ऊपर मोटे मोटे अक्षरो मे लिखे साइनबोर्ड लटके थे, जिनमे नयी व्यवस्था की प्राणशक्ति का पता चलता था: "पेत्रोग्राद सोवियत की कार्यकारिणी समिति" और "त्से-ई-काह" और "विदेशी मामलों का ब्यूरो", "समाजवादी सैनिको का सघ", "अखिल रूसी ट्रेड-यूनियनों की केन्द्रीय समिति", "कारखाना समितियां", "केन्द्रीय सैनिक समिति"; और राजनीतिक पार्टियों के केन्द्रीय दफ्तर तथा अन्तरंग सभा कक्ष...

लंबे मेहराबदार बरामदो मे, जिनमे बिजली की इक्की-दुक्की बत्तिया जलती होती, झुण्ड के झुण्ड दौडते-भागते सिपाहियो और मजदूरो की शक्ले दिखाई देती, जिनमें से कुछ अखबारो, एलानों और सभी तरह के मुद्रित प्रचार-साहित्य के बडे बडे बडलो के बोझ से दोहरे हो रहे होते। लकडी के फर्श पर उनके भारी जूतों की गहरी आवाज बराबर गूंजा करती.. सभी जगह पोस्टर लगाये गये थे: "साथियो! अपनी तन्दुरस्ती की खातिर सफाई का ध्यान रखिये!" हर मंजिल पर सीढ़ियां पार करते ही य सीढियो की चौकी पर ही लम्बी लम्बी मेजें पडी होती, जिन पर विभिन्न राजनीतिक पार्टियो के पैम्फलेट और प्रचार-साहित्य बिक्री के लिए लदा होता..

नीचे की मजिल पर नीची छत वाला लम्बा-चौड़ा खाने का कमरा अभी भी खाने का कमरा बना हुआ था। मैने दो रूबल का एक कूपन खरीदा, जिसमे मुझे खाना मिल सकता था और सैकड़ो और लोगों के साथ लाइन मे खड़ा हो गया और उन लम्बी लम्बी मेजों के पास पहुचने का इन्तजार करने लगा, जहा बीस-बाईस औरत-मर्द खाना परस रहे थे और काली डबल-रोटी के बड़े बडे टुकड़ों के साथ बड़े बड़े देगों से बंदगोभी का

शोरवा, गोश्त के टुकड़े, ढेर का ढेर काशा (दलिया) उंडेल रहे थे। पाच कोपेक दीजिये और तामचीनी के एक प्याले मे चाय भरवा लीजिये। उधर, टोकरी मे एक मैली, चिक्नी लकडी की चम्मच उठा लीजिये... लकड़ी की खाने की मेजों के साथ बेंचों पर भूखे मजदूर ठसाठस भरे थे, जो खाना हड़प रहे थे, तरह तरह के मंसूबे बाध रहे थे और जोर जोर से – इधर बैठे लोग उधर के लोगों से – भद्दे मजाक कर रहे थे।

ऊपर की मंजिल पर एक दूसरा खाने का कमरा था, जो त्से-ई-काह के लिए रिजर्व था, गोकि हर कोई वहा जाता था। यहा खूब मक्खन लगी रोटी और चाय के जितने भी गिलास चाहिये मिल सकते थे।

दूसरी मंज़िल के दक्षिणी भाग मे बडा हॉल था, जो संस्थान का नाच-घर हुआ करता था – एक ऊंची छत का काफूरी कमरा, जिसके बीच से बड़े बड़े खम्भों की दो कतारे गुज़रती थी और जो उजले, चमकदार झाड़-फानूसों से, जिनमें सैकड़ो सजावटी बिजली के बल्ब लगे थे, जगमग था। उसके एक सिरे पर एक मंच था। दोनों बाज़ू मे शाखा-प्रशाखा युक्त दीपस्तम्भ थे और पीछे दीवार मे एक सुनहरा चौखटा था, जिसमे से शाही शबीह काट कर निकाल दिया गया था। यहा उत्सव-समारोह के अवसरों पर फ़ौजी अफ़सरों और पादरियों की तड़क-भड़क वाली वर्दियां चमका करती थी – यह थी रानियों-महारानियों की रंगभूमि...

बाहर हॉल के ठीक दूसरी ओर, सोवियतों की कांग्रेस की क्रिडेन्शियल समिति का दफ़्तर था। मैं वहा खडा नये प्रतिनिधियों को आते हुए देखता रहा: हट्टे-कट्टे दढियल सिपाही, काली जैकेट पहने मजदूर और चन्द बडे बड़े बालो वाले किसान। दफ़्तर मे काम करने वाली लड़की, जो प्लेखानोव के "येदीन्स्त्वो"* दल की सदस्य थी, उन्हे देख कर हिकारत से मुंह बिचका रही थी। "ये लोग पहली स्येज़्द (कांग्रेस) के प्रतिनिधियो से बिल्कुल भिन्न है," उसने कहा। "देख लीजिए, कैसे उजड्ड, जाहिल लोग है ये! गंवार जनता..." उसकी बात सही थी; रूस भीतर तल तक आलोड़ित हुआ था और जो नीचे था, वही अब ऊपर आ गया था। पुरानी त्से-ई-काह द्वारा नियुक्त क्रिडेन्शियल समिति एक प्रतिनिधि के बाद दूसरे प्रतिनिधि

---

* देखिये, 'टिप्पणिया और व्याख्यायें'। – जॉ० री०

पर इस बिना पर एतराज़ कर रही थी कि उनका चुनाव गैरकानूनी ढग से हुआ है। बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य कागखान इस बात पर सिर्फ मुस्करा कर रह गये। "फिक्र न करो," उन्होंने कहा, "हम देखेंगे कि वक्त आने पर आपको अपनी सीटें कैसे नही मिलती..."

'राबोची इ सोल्दात' ने लिखा :

नई अखिल रूसी काग्रेस के प्रतिनिधियो का ध्यान इस ओर दिलाया जाता है कि सगठन समिति के कुछ सदस्य यह कह कर कि काग्रेस नही होगी और बेहतर है कि उसके प्रतिनिधि पेत्रोग्राद छोड़कर चले जायें काग्रेस को छिन्न-भिन्न करने की कोशिश कर रहे हैं... इन सब झूठी बातों की ओर ध्यान मत दीजिये... महान् दिवस आने वाले हैं...

यह साफ था कि २ नवम्बर तक इतने प्रतिनिधि इकट्ठे नही हो सकेंगे कि कोरम पूरा हो, इसलिए काग्रेस का उद्‌घाटन ७ तारीख़ तक के लिए स्थगित कर दिया गया। लेकिन अब पूरा देश उत्तेजित हो उठा था, और मेन्शेविको तथा समाजवादी-क्रातिकारियों ने, यह समझते हुए कि उन्होने हार खाई है, यकायक अपनी कार्यनीति बदल दी और घबरा कर अपने प्रान्तीय संगठनों को इस आशय के तार भेजने लगे कि वे यथासम्भव अधिक से अधिक संख्या मे "नरम" समाजवादी प्रतिनिधियो को चुनें। इसके साथ ही किसानो की सोवियतो की कार्यकारिणी समिति ने आपातिक आह्वान दिया कि किसानों की काग्रेस १३ दिसम्बर को बुलायी जाये, ताकि मजदूर तथा सिपाही जो भी कदम उठायें, उसकी काट की जा सके...

बोल्शेविक क्या कदम उठाने वाले है? शहर में अफ़वाह गर्म थी कि एक सशस्त्र "प्रदर्शन" होने वाला है,.कि मजदूर और सिपाही "विस्तुप्लेनिये" – "विद्रोह" – करने वाले है। पूजीवादी और प्रतिक्रियावादी अखबारों ने भविष्यवाणी की कि विद्रोह होने वाला है और उन्होने सरकार से आग्रह किया कि वह पेत्रोग्राद सोवियत को गिरफ़्तार कर ले या कम से कम काग्रेस का अधिवेशन न होने दे। 'नोवाया रूस' जैसे कुख्यात अखबारों ने तो बोल्शेविकों के कत्ले-आम तक के लिए आवाज़ उठाई।

गोर्की के अख़बार 'नोवाया जीज़न' ने बोल्शेविकों के साथ सहमति प्रगट करते हुए लिखा कि प्रतिक्रियावादी क्राति को विनष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं और आवश्यक होने पर उनका शस्त्र-बल से प्रतिरोध करना होगा, लेकिन उसने यह भी लिखा कि सभी क्रातिकारी जनवादी पार्टियों के लिए आवश्यक है कि वे अपना सयुक्त मोर्चा कायम करे:

जब तक कि जनवाद ने अपनी मुख्य शक्तियों को सगठित नहीं कर लिया है, जब तक कि उसके प्रभाव को शक्तिशाली विरोध का सामना करना पड़ रहा है, तब तक हमला शुरू करने मे कोई फायदा नहीं है। परन्तु यदि विरोधी तत्व बल-प्रयोग का आश्रय लेते हैं, तो क्रातिकारी जनवाद को सत्ता हाथ में लेने के लिए लड़ाई मे उतरना चाहिये, और ऐसी सूरत में जनता की व्यापकतम श्रेणियां उसका समर्थन करेंगी...

गोर्की ने इस बात की ओर इशारा किया कि प्रतिक्रियावादी और सरकारी दोनों ही तरह के अख़बार बोल्शेविको को हिंसा के लिए भड़का रहे हैं। फिर भी ऐसे समय में विद्रोह करने का अर्थ होगा एक नये कोर्नीलोव-कांड के लिए मार्ग प्रशस्त करना। गोर्की ने बोल्शेविकों से आग्रह किया कि वे इन अफवाहों का खण्डन करें। पोत्रेसोव ने मेन्शेविक अख़बार 'देन' (दिन) में एक नक्शे के साथ एक सनसनीख़ेज रिपोर्ट छापी, जिसमे बोल्शेविक अभियान की गुप्त योजना का भण्डाफोड़ करने का दावा किया गया था।

जैसे किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी हो, शहर की दीवारे पोस्टरो[10] से भर गई, जिनमें "नरम" और अनुदार गुटों की केन्द्रीय समितियों तथा त्से-ई-काह की चेतावनी, अपीलें और घोषणायें थी, हर तरह के "प्रदर्शन" की निंदा की गई थी और मजदूरों तथा सैनिकों से अनुरोध किया गया था कि वे आन्दोलनकर्ताओं की बात पर कान न दे। उदाहरण के लिए, समाजवादी-क्रातिकारी पार्टी की सैनिक शाखा का यह बयान पेश है:

शहर मे फिर इस किस्म की अफवाहें फैल रही है कि **विस्तुप्लेनिये** का इरादा किया जा रहा है। ये अफवाहे कहां से पैदा हुई है? वे कौनसे

संगठन है, जिन्होंने आन्दोलनकर्ताओं को विद्रोह का प्रचार करने का अधिकार दिया है? रसी-ई-फाह के अन्दर बोल्शेविकों ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि उनका ऐसे प्रचार से कोई सम्बन्ध नहीं है... लेकिन इन अफवाहों में ही एक बहुत बड़ा खतरा पैदा होता है। यह सहज ही संभव है कि कुछ गर्म जोशीले व्यक्ति मजदूरों, सिपाहियों और किसानों के बहुमत की मनोदशा का ध्यान किये बिना मजदूरों और सिपाहियों के एक भाग को सड़कों पर प्रदर्शन करने के लिये बुलायें और उन्हें विद्रोह के लिए भड़कायें .

इस नाजुक और संगीन दौर में, जिससे क्रांतिकारी रूस इस समय गुजर रहा है, कोई भी विद्रोह बहुत आसानी से गृहयुद्ध में बदल सकता है और उसके फलस्वरूप सर्वहारा के सभी संगठन, जिनका इतने परिश्रम से निर्माण किया गया है, नष्ट-भ्रष्ट हो सकते हैं... प्रतिक्रांतिकारी षड्यन्त्रकारी यह योजना बना रहे हैं कि विद्रोह का फायदा उठा कर क्रांति का नाश करें, मोर्चे को विल्हेल्म के लिए खुला अरक्षित छोड़ दें और संविधान सभा को छिन्न-भिन्न कर दें... आप सब अपनी अपनी जगहों पर मजबूती से जमे रहें! आप हरगिज बाहर न निकलें!

२८ अक्तूबर को स्मोल्नी भवन के बरामदे में मेरी बातचीत कामेनेव से हुई—एक नाटे कद के दुबले-पतले आदमी, तीखी सुर्खीमायल दाढ़ी और प्रबल अंग-भंगी। उन्हें इस बात का बिल्कुल यकीन नहीं था कि कांग्रेस के प्रतिनिधि काफी तादाद में आयेंगे। उन्होंने कहा, "अगर कांग्रेस होती है, तो वह जनता की प्रबलतम भावना का प्रतिनिधित्व करेगी। अगर कांग्रेस में बोल्शेविकों का बहुमत होता है, जैसा कि मैं समझता हूं कि होगा, तो हम मांग करेंगे कि सत्ता सोवियतों के हवाले की जाये और अस्थायी सरकार इस्तीफा दे..."

वोलोदार्स्की ने—लम्बे कद का एक नौजवान, आंख पर चश्मा, चेहरा जर्द जैसे जिल्द का रोगन उतर रहा हो—कुछ ज्यादा पक्की बात कही: "लीबेरदान* और उनके जैसे दूसरे समझौतापरस्त कांग्रेस को

---

* लीबेर और दान।—सं०

भीतर से तोड़-फोड़ रहे हैं। अगर वे उसके अधिवेशन को रोकने में सफल हुए, तो, हम उस पर निर्भर नहीं रहेंगे—हम इतने यथार्थवादी जरूर हैं!"

मेरी नोटबुक में २६ अक्तूबर की तारीख़ में उस दिन के अख़बारों से ली गई निम्नलिखित ख़बरें दर्ज हैं:

मोगिल्योव (सेना के जनरल स्टाफ का सदर दफ्तर)। यहा वफादार गार्ड रेजीमेंटों, "बर्बर डिवीजन", कज़्ज़ाक टुकडियों और "शहीदी टुकड़ियों" का भारी जमावडा है।

पाव्लोव्स्क, त्सारस्कोये सेलो, पीटरहोफ के सैनिक अफसरों के स्कूलों के युंकरों* को सरकार ने हुक्म दिया है कि वे पेत्रोग्राद आने के लिए तैयार रहें। ओरानियेनबाउम के युंकर शहर में आ रहे हैं।

पेत्रोग्राद गैरिसन की बख़्तरबन्द गाड़ियों की डिवीजन का एक हिस्सा शिशिर प्रासाद की रक्षा के लिए तैनात कर दिया गया है।

त्रोत्स्की के दस्तख़त से एक हुक्म जारी किया गया है, जिसके मुताबिक सेस्त्रोरेत्सक के सरकारी आयुध कारख़ाने ने कई हज़ार बन्दूकें पेत्रोग्राद मजदूरों के प्रतिनिधियों के हवाले की हैं।

निचली लितेइनी बस्ती की नगर मिलिशिया की एक सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा मांग की है कि समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में सौंप दी जाए।

उन उत्तेजनापूर्ण दिनों में, जब हर शख़्स जानता था कि कुछ होने वाला है, लेकिन ठीक क्या होने वाला है, यह कोई नहीं कह सकता था, जो उलटी-पुलटी घटनायें हो रही थीं, यह उनकी एक बानगी भर है।

३० अक्तूबर की रात को स्मोल्नी में पेत्रोग्राद सोवियत की एक सभा में त्रोत्स्की ने पूंजीवादी अख़बारों के इस दावे की कि सोवियत सशस्त्र विद्रोह का विचार कर रही है कठोर निन्दा करते हुए कहा कि

---

*युंकर—सैनिक स्कूलों के विद्यार्थी। इन स्कूलों में अभिजात-वर्गीय लड़कों को जारशाही सेना में अफसरी के लिए तालीम दी जाती थी।—सं०

वह "सोवियतो की कांग्रेस की साख गिराने और उसे छिन्न-भिन्न करने के लिए प्रतिक्रियावादियो की एक कोशिश है..." उन्होंने जोर देकर कहा, "पेत्रोग्राद सोवियत ने किसी विस्तुप्लेनिये के लिए आदेश नहीं दिया है। जरूरी होने पर हम ऐसा आदेश देगे और पेत्रोग्राद की गैरिसन हमारा समर्थन करेगी.. वे (सरकार) प्रतिक्राति के लिए तैयारी कर रहे है और हम उसके जवाब मे ऐसी चोट करेगे, जो बेरहम और फैसलाकुन होगी।"

यह सच है कि पेत्रोग्राद सोवियत ने प्रदर्शन के लिए आदेश नहीं दिया था, परन्तु बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति विद्रोह के प्रश्न पर विचार कर रही थी। २३ तारीख़ को पूरी रात समिति की बैठक होती रही। बैठक मे पार्टी के सभी बुद्धिजीवी, सभी नेता तथा पेत्रोग्राद के मजदूरो और वहा की गैरिसन के प्रतिनिधि मौजूद थे। बुद्धिजीवियो मे केवल लेनिन और त्रोत्स्की ने विद्रोह का समर्थन किया। यहा तक कि फ़ौजी आदमियो ने भी उसका विरोध किया। वोट लिए जाने पर विद्रोह का पक्ष हार गया!

और फिर एक सीधा-सादा मजदूर बोलने के लिए उठा। उसका चेहरा क्रोध से तमतमाया हुआ था। "मै पेत्रोग्राद सर्वहारा की ओर से बोल रहा हू," उसने सख्त लहजे मे कहा। "हम विद्रोह के पक्ष मे है। आपकी जो मर्जी हो आप करे, लेकिन मै आपसे कहता हू कि अगर आपने सोवियतो का नाश होने दिया, तो हम हमेशा के लिए आपसे बाज आयेंगे!" कुछ सिपाहियो ने भी इस मजदूर का साथ दिया... इसके बाद फिर वोट लिये गये और विद्रोह का पलड़ा भारी निकला...*

---

*अक्तूबर, १६१७ में बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति के ऐतिहासिक अधिवेशन मे सशस्त्र विद्रोह के बारे मे जो बहस हुई, यहा उसकी सही रिपोर्ट नहीं दी गई है। सशस्त्र विद्रोह सगठित करने का निर्णय २३ अक्तूबर, १६१७ को हुई केंद्रीय समिति की एक गुप्त बैठक मे किया गया। इस बैठक मे भाग लेनेवाले सदस्य थे: लेनिन, बुबनोव, दजेर्जीन्स्की, जिनोव्येव, कामेनेव, कोल्लोन्ताई, लोमोव, स्वेर्दलोव, सोकोलनिकोव, स्तालिन, त्रोत्स्की और उरीत्स्की। जिनोव्येव तथा कामेनेव ने लेनिन

छद्मवेश में लेनिन का एक चित्र। यह चित्र जुलाई, १९१७ की घटनाओं के
बाद रूपोशी की उनकी आख़िरी मुद्दत के दौरान लिया गया था, जब लेनिन
क० प० इवानोव नामक एक मज़दूर के नाम जारी किये गये पहचान-पत्र का
इस्तेमाल किया करते थे।

Ц. К. признает, что как между-
народное положение русской рево-
люции (восстание во флоте в Гер-
мании, как крайнее проявление
нарастания* всемирной социалисти-
ческой революции, затем угроза
мира империалистов с целью
удушения революции в России),
— так и военное положение
(несомненное решение русской
буржуазии и Керенского с Ко сдать
Питер немцам), — так и
приобретение большевистской
партией большинства в Сове-
тах, — все это в связи с
крестьянским восстанием
и с поворотом народнаго

* во всей Европе

सशस्त्र विद्रोह के बारे में व्ला० इ० लेनिन द्वारा सूत्रबद्ध तथा २३ अक्तूबर, १९१७ को पार्टी की केन्द्रीय समिति की ऐतिहासिक बैठक द्वारा

इसके बावजूद रियाजानोव, कामेनेव और जिनोव्येव के नेतृत्व मे दक्षिणपंथी बोल्शेविक सशस्त्र विद्रोह के विरोध मे आन्दोलन करते रहे। ३१ अक्तूबर* की सुबह 'राबोची पूत' में लेनिन के 'साथियों के नाम पत्र'[11] की पहली किस्त प्रकाशित हुई। अभी तक ससार मे जितना भी राजनीतिक प्रचार देखा गया है, उसमे इससे ज्यादा ढीठ रचना मुश्किल से ही मिलेगी। इस लेख में लेनिन ने कामेनेव और रियाजानोव की आपत्तियों को अपनी आलोचना का आधार बनाकर विद्रोह के समर्थन मे अपने तर्क उपस्थित किये। उन्होने लिखा :

"...या तो हम अपना नारा 'समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ मे हो' छोड़ दे, नही तो विद्रोह करें। इन दोनों के बीच और कोई रास्ता नही है..."

उसी दिन तीसरे पहर कैडेट नेता पावेल मिल्युकोव ने जनतन्त्र की परिषद् में एक तल्ख़, तेज-तर्रार तकरीर की[12], जिसमें उन्होने स्कोबेलेव

द्वारा पेश किये गये प्रस्ताव का विरोध किया। छ: दिन बाद, २६ अक्तूबर को, केंद्रीय समिति का एक विस्तारित अधिवेशन हुआ, जिसमे पेत्रोग्राद पार्टी समिति, सैनिक संगठन, पेत्रोग्राद सोवियत, ट्रेड-यूनियनों, कारख़ाना समितियों, रेल मजदूरों और पेत्रोग्राद हलके की पार्टी समिति के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक मे लेनिन ने केंद्रीय समिति के पिछले अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव को पढ़ा। अपने भाषण में लेनिन ने कहा कि रूस तथा यूरोप, दोनो ही की वस्तुनिष्ठ राजनीतिक परिस्थिति निर्णायक से निर्णायक, जोरदार से जोरदार नीति की माग करती है, जो सशस्त्र विद्रोह की ही नीति हो सकती है। लेनिन ने एक प्रस्ताव उपस्थित किया, जिसमे सशस्त्र विद्रोह के बारे मे केंद्रीय समिति के फ़ैसले का स्वागत और समर्थन किया गया था। प्रस्ताव दो के ख़िलाफ़ १६ वोटों से स्वीकृत हुआ; चार व्यक्तियों ने मतदान मे भाग नही लिया। जिनोव्येव और कामेनेव ने दोबारा केंद्रीय समिति के प्रस्ताव के खिलाफ वोट दिये।—सं०

*यह तारीख गलत है। 'राबोची पूत' का यह अंक पहली नवंबर को निकला था।—सं०

6-2360

के नकाव को जर्मन-परस्त कह कर बदनाम किया और कहा कि "क्रांतिकारी जनवाद" रूस को तबाह कर रहा है; उन्होंने तेरेश्चेन्को की खिल्ली उड़ाई और खुल्लमखुल्ला कहा कि वह रूसी कूटनीति से जर्मन कूटनीति को ज्यादा पसन्द करते हैं... जितनी देर उनका भाषण चलता रहा, उतनी देर बराबर वामपंथी बेंचों में बेहद शोर उठता रहा...

उधर सरकार बोल्शेविक प्रचार की सफलता के महत्व की उपेक्षा नहीं कर सकती थी। २६ अक्तूबर को सरकार तथा जनतन्त्र की परिषद् के एक संयुक्त आयोग ने बड़ी उतावली में दो क़ानून बनाये, एक जमीन अस्थायी रूप से किसानों को देने के लिए और दूसरा शान्ति की एक जोरदार विदेश नीति को अग्रसर करने के लिए। दूसरे दिन केरेन्स्की ने सेना में मृत्यु-दंड स्थगित कर दिया। उसी दिन तीसरे पहर एक नये आयोग; "जनतन्त्रीय शासन को सुदृढ़ बनाने तथा अराजकता और प्रतिक्रांति का मुकाबला करने के लिए आयोग" का पहला अधिवेशन बड़े धूमधाम से शुरू हुआ, लेकिन इतिहास में इस आयोग का और कोई चिह्न नहीं मिलता। दूसरे दिन सुबह दो संवाददाताओं के साथ मैंने केरेन्स्की से मुलाकात की[13]—पत्रकारों की उनके साथ यह आख़िरी मुलाकात थी।

हमारे साथ बातचीत करते हुए उन्होंने तल्ख़ लहजे में कहा, "रूसी जनता आर्थिक क्लान्ति से तथा मित्र-राष्ट्रों में अपना विश्वास टूट जाने से पीडित है! दुनिया सोचती है कि रूसी क्रांति चन्द रोज़ की मेहमान है। गलती न कीजिये। रूसी क्रांति अभी बस शुरू ही हो रही है.." उनके इन शब्दों में भविष्य का कितना अधिक पूर्वाभास था इसे शायद वह ख़ुद नहीं जानते थे।

३० अक्तूबर को रात भर पेत्रोग्राद सोवियत की एक पुरशोर तूफ़ानी बैठक हुई, जिसमें मैं मौजूद था। "नरम" समाजवादी बुद्धिजीवी, अफ़सर, सैनिक समितियों के सदस्य, त्से-ई-काह के सदस्य इस बैठक में दल-बल से मौजूद थे। उनके खिलाफ खड़े होकर बोलने वालों में थे—मजदूर, किसान और मामूली सिपाही, सीधे-सादे और जोशीले।

एक किसान ने त्वेर में होनेवाले उपद्रवों का ज़िक्र करते हुए कहा कि उनका कारण भूमि समितियों के सदस्यों की गिरफ़्तारी है। "यह

केरेन्स्की और कुछ नही पोमेश्चिकों (जमींदारो) की ढाल है," उसने चिल्ला कर कहा। "वे जानते हैं कि हम संविधान सभा में बहरसूरत जमीन अपने हाथ मे ले लेंगे और इसलिए वे संविधान सभा को मिस्मार करने की कोशिश कर रहे हैं!"

बैठक में बोलते हुए पुतीलोव कारख़ाने के एक मशीन-कर्मचारी ने बताया कि विभाग सुपरिन्टेंडेन्ट एक एक करके विभागो को इस बहाने से बन्द कर रहे हैं कि कारख़ाने के पास न ईंधन है और न कच्चा माल। उसने कहा कि कारखाना समिति ने ईंधन और कच्चे माल की ढेर सारी छिपाई गई सप्लाई का पता लगाया है।

"यह एक उकसावा है," उसने कहा। "वे हमें भूखो मारना चाहते हैं या फिर हमें हिंसा के लिए उत्तेजित करना चाहते हैं!"

एक सैनिक ने उठकर कहना शुरू किया, "साथियो! मैं आपके लिए एक ऐसी जगह से अभिवादन-सदेश लाया हूँ, जहा लोग अपनी क़ब्र खोदते हैं और उसे कहते हैं मोर्चे की खाई!"

और फिर एक लम्बे क़द का नौजवान सिपाही, जिसकी हड्डियां निकल आयी थी और आंखें चमक रही थी, बोलने के लिए उठा और उसका तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया। यह था चुद्नोव्स्की, जिसके बारे में ख़बर आई थी कि वह जुलाई की लडाई मे मारा गया। अब वह गोया क़ब्र से उठकर आ गया था।

"आम सिपाही अब अपने अफ़सरों पर कोई भरोसा नही रखते। यहां तक कि सैनिक समितियों ने भी, जिन्होंने हमारी सोवियत का अधिवेशन बुलाने से इनकार किया, हमें धोखा दिया है... आम सिपाही चाहते हैं कि संविधान सभा का अधिवेशन ठीक उसी समय हो, जब उसे बुलाया गया है और जो लोग उसे टालने की जुर्रत करेंगे, उन्हे हम लानत भेजेंगे। और यह कोई अफलातूनी लानत न होगी, क्योंकि, याद रखिये, सेना के पास बन्दूकें भी हैं..."

पाचवी सेना में संविधान सभा के लिए जो चुनाव-आन्दोलन बड़े ज़ोर-शोर से चल रहा था, उसका जिक्र करते हुए उसने कहा, "फ़ौजी अफ़सर, ख़ासकर मेन्शेविक और समाजवादी-क्रातिकारी, जानबूझकर बोल्शेविकों को पंगु बनाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे अखबारो के

6*

खाइयों में बाटे जाने की इजाज़त नही दी जाती। हमारे भाषणकर्ताओं को गिरफ्तार किया जाना है..."

"तुम रोटी की कमी की बात क्यों नही करते?" एक दूसरे सिपाही ने चीख कर कहा।

"इन्सान सिर्फ रोटी के सहारे नहीं जी सकता," चुद्नोव्स्की ने सख्त लहजे मे जवाब दिया...

उसके बाद एक अफ़सर ने भाषण दिया, जो वीतेब्स्क सोवियत का एक प्रतिनिधि तथा मेन्शेविक-ओबोरोनेत्स (प्रतिरक्षावादी) था। "सवाल यह नही है कि सत्ता किसके हाथ मे है," उसने कहा। "मुश्किल सरकार ने पैदा नही की है, लड़ाई ने की है... और इसके पहले कि कोई तबदीली हो यह जरूरी है कि लड़ाई जीती जाये..." इस बात पर सीटियां दी गई और चिढ़ाने के लिए तालियां बजाई गईं। "ये बोल्शेविक आन्दोलनकर्ता कोरी लफ़्फ़ाजी करते हैं!" हंसी के ठहाकों से दीवारें तक हिल उठी। "हमें चाहिये कि हम क्षण भर के लिए वर्ग-संघर्ष भूल जाये..." लेकिन उसका भाषण इसके आगे नही चल सका। किसी ने चीख़ कर कहा, "आप यही चाहते हैं!"

उन दिनों पेत्रोग्राद का नज्जारा कुछ अजीबोगरीब था। फ़ैक्टरियों मे कारख़ाना समितियों के कक्षों में ढेर की ढेर बन्दूकें जमा थी, संदेश-वाहक आते-जाते रहते थे और लाल गार्ड* क़वायद करते रहते थे... सभी बारिकों मे रोजाना रात को मीटिंगें और पूरे दिन मे गर्म, लम्बी, कभी न ख़त्म होने वाली बहसें चलती रहती। सड़कों पर शाम का झुटपुटा होते ही भीड़ बढ़ने लगती और जैसे एक जन-समुद्र की लहरें नेव्स्की मार्ग पर दोनों दिशाओं मे धीरे धीरे शोर करती बढ़ती, लोगों में अख़बारों के लिए छीना-झपटी होती... ठगी और बटमारी इस हद तक बढ़ गई थी कि गलियों से गुजरना ख़तरनाक था... एक दिन तीसरे पहर सदोवाया मार्ग पर मैंने देखा कि कई सौ आदमियों की एक भीड़ ने एक सिपाही को मारते मारते बेदम कर डाला, जिसे चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया था। रोटी और दूध के लिए ठंड में घंटों लाइनों

---

*देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'—जॉ० री०

मे इन्तजार करती हुई ठिठुरनी ग्रौरतो के इर्द-गिर्द कुछ बहुत रहस्यमय प्रकार के व्यक्ति मंडराने ग्रौर उनके कानो मे फुसफुसा कर कहते कि यहूदियों ने ग्रनाज का स्टाक दवा रखा है ग्रौर ऐसे वक्त जब कि लोग भूखों मर रहे हैं, सोवियत के सदस्य बडे ठाठ-बाट से दिन गुजार रहे हैं...

स्मोल्नी मे दरवाजे पर ग्रौर बाहरी फाटको पर कड़ा पहरा था। बिना "पास" दिखाये कोई भी ग्रन्दर नही जा सकता था। समितियो के कक्षों मे न दिन में खामोशी थी, न रात मे—हर वक्त एक हल्की सी गूज उठती रहती। सैकडों सिपाही ग्रौर मजदूर फर्श पर ही सो जाते—जहा भी उन्हें जगह मिलती लेट रहते। ऊपर बडे हॉल मे पेत्रोग्राद सोवियत की पुरशोर बैठकों मे एक हजार ग्रादमी जमा थे. .

जुए के ग्रड्डे पूरी रात जोर-शोर से चलते, उनमे शैम्पेन पानी की तरह बहता ग्रौर बीस बीस हजार रूबल की बाजिया लगाई जाती। शहर के बिचले भाग में रात के वक्त कीमती फर ग्रौर जेवरो से लदी हुई वेश्याये घूमती रहती थीं, कैफे ग्रौर रेस्तोरा में उनकी खासी भीड़ होती...

राजतन्त्रवादी कुचक्र, जर्मन जासूस, षड्यन्त्र रचने वाले, तस्कर व्यापारी...

बारिश मे, कड़ी सर्दी मे, मेघाच्छादित ग्राकाश के नीचे यह विशाल स्पन्दनशील नगर तेज से तेजतर रफ्तार से भागा जा रहा था—लेकिन किधर?

तीमरा अध्याय

तूफ़ान फटने से पहले

जब एक कमजोर सरकार का साबिका विद्रोही जनता से पड़ता है, एक घड़ी ऐसी आती है, जब अगर अधिकारी कोई कदम उठाते हैं, तो उससे जन-साधारण का गुस्सा भड़कता है और अगर नही उठाते, तो वे उनकी घृणा के पात्र बन जाते हैं...

पेत्रोग्राद छोड़ने का प्रस्ताव करते ही एक तूफान खड़ा हो गया; लेकिन जब उसका खण्डन करते हुए केरेन्स्की ने यह सार्वजनिक वक्तव्य दिया कि सरकार ऐसा कोई इरादा नही रखती, लोगों ने थुडी-थुड़ी ही की।

क्रांति के दबाव के कारण जकड़ी हुई "अस्थायी" पूंजीपतियों की सरकार ('राबोची पूत' ने कड़क कर कहा) ये झूठे आश्वासन देकर छुटकारा पाना चाहती है कि उसका पेत्रोग्राद छोड़कर भाग जाने का कभी ख़्याल न था, न ही उसकी यह ख़्वाहिश थी कि राजधानी दुश्मनों के हवाले कर दी जाये...

खार्कोव* मे कोयला खानों के तीस हजार संगठित मजदूरों ने विश्व

---

*मालूम होता है यहा जॉन रीड का अभिप्राय दोनेत्स कोयला खदान प्रदेश से है।—सं०

के औद्योगिक मजदूरों* (J. W. W.) के संविधान का यह आमुख अपनाया : "मजदूर वर्ग और मालिक वर्ग के बीच कोई समानता नहीं हो सकती।" कज्जाकों ने इन मजदूरों को तितर-बितर कर दिया, कुछ मजदूर खानों के मालिकों द्वारा तालाबन्दी का एलान होने से अन्दर जाने नहीं दिये गये, बाकी मजदूरों ने आम हड़ताल की घोषणा की। वाणिज्य तथा उद्योग-मन्त्री कोनोवालोव ने अपने नायब ओर्लोव को पूर्ण अधिकार देकर इस झगड़े का निपटारा करने के लिये नियुक्त किया। खान मजदूर ओर्लोव को घृणा की दृष्टि से देखते थे, परन्तु त्से-ई-काह ने न केवल उसकी नियुक्ति का समर्थन किया, उसने यह मांग करने से भी इनकार किया कि कज्जाकों को दोन प्रदेश से वापिस बुला लिया जाये...

इसके बाद कालूगा सोवियत को छिन्न-भिन्न कर दिया गया। बोल्शेविकों ने सोवियत मे अपना बहुमत स्थापित करके कुछ राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया था। केन्द्रीय सरकार के कमिसार की मजूरी से नगर दूमा ने मीन्स्क से फौज बुलाई और कालूगा सोवियत के सदर दफ्तर पर गोलाबारी की गयी। बोल्शेविकों को झुकना पड़ा, लेकिन जब वे भवन से बाहर निकल रहे थे, कज्जाकों ने यह कहते हुए उनके ऊपर हमला किया, "मास्को और पेत्रोग्राद समेत तमाम बोल्शेविक सोवियतों के साथ हम इसी तरह पेश आयेंगे!" इस घटना से समस्त रूस में दहशत के साथ गुस्से की एक लहर दौड़ गई...

पेत्रोग्राद में उत्तर प्रदेश की सोवियतों की प्रादेशिक कांग्रेस समाप्त हो रही थी। इस कांग्रेस मे बोल्शेविक क्रिलेन्को ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। कांग्रेस ने विशाल बहुमत से फैसला किया कि सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस को समस्त सत्ता अपने हाथ में ले लेनी चाहिये।

---

*विश्व के औद्योगिक मजदूर — रूस की क्रांतिकारी घटनाओं के प्रभाव से संयुक्त राज्य अमरीका में १९०५ मे स्थापित एक क्रांतिकारी ट्रेड-यूनियन जन-संगठन। १९३१–४० के दशक मे, जब वह पतित होकर एक संकीर्णतावादी संगठन बन गया था और जन-साधारण से अपने पुराने संबंधों को खो बैठा था, उसका अस्तित्व समाप्त हो गया। जब यह संगठन पूरे जोर पर था, जॉन रीड उसके सक्रिय सदस्य थे। — सं०

अन्त मे उसने जेलों मे बन्द बोल्शेविकों को एक अभिवादन-संदेश भेजा, जिसमे उनसे कहा गया था कि वे ख़ुश हो जायें, क्योंकि उनकी आज़ादी की घडी आ पहुची है। इसी वक़्त कारख़ाना समितियों के प्रथम अखिल रूसी सम्मेलन[1] ने सोवियतों के प्रबल समर्थन की घोषणा की और फिर यह अर्थपूर्ण विचार प्रगट किया :

जारशाही से अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद मजदूर वर्ग चाहता है कि जनवादी व्यवस्था उसके उत्पादन सम्बन्धी क्रियाकलाप के क्षेत्र मे भी विजयी हो। उत्पादन में जनवादी व्यवस्था का सर्वश्रेष्ठ रूप औद्योगिक उत्पादन पर मजदूरों का नियन्त्रण है, जिसका विचार प्रभुता-सम्पन्न वर्गों की अपराधपूर्ण नीति द्वारा उत्पन्न आर्थिक विघटन के वातावरण मे स्वभावतः प्रगट हुआ...

रेल मजदूर यूनियन ने रेल परिवहन-मन्त्री लिवेरोव्स्की के इस्तीफ़े की माग की।

रूसे-ई-काह के नाम पर स्कोबेलेव ने आग्रह किया कि उनको दिया जाने वाला नकाज़ मित्र-राष्ट्र-सम्मेलन में पेश किया जाये और उन्होंने तेरेश्चेन्को के पेरिस भेजे जाने के विरोध मे औपचारिक रूप से अपना प्रतिवाद प्रगट किया। तेरेश्चेन्को ने इस्तीफा देने की रजामन्दी जाहिर की...

सेना का पुनःसंगठन करने मे असमर्थ जनरल वेर्ख़ोव्स्की मन्त्रिमंडल की बैठकों में यदा-कदा ही आते...

३ नवम्बर को बूर्त्सेव के पत्र 'ओबश्चेये देलो' ने बडी बड़ी सुर्ख़ियां देते हुए लिखा :

नागरिको! पितृभूमि को बचाइये!

मुझे अभी अभी मालूम हुआ है कि कल राष्ट्रीय प्रतिरक्षा आयोग की एक बैठक मे युद्ध-मन्त्री जनरल वेर्ख़ोव्स्की ने, जो कोर्नीलोव के पतन के लिये उत्तरदायी प्रमुख व्यक्तियों में है, प्रस्ताव किया कि मित्र-राष्ट्रों से स्वतन्त्र रूप मे एक पृथक शान्ति-सन्धि सम्पन्न की जाये।

यह रूस के प्रति विश्वासघात है!

तेरेश्चेन्को ने इजहार किया कि अस्थायी सरकार ने वेर्खोव्स्की के प्रस्ताव पर गौर तक नहीं किया है।

"आप वहां होते, तो शायद सोचते कि हम किसी पागलखाने में हैं!" तेरेश्चेन्को ने कहा।

आयोग के सदस्य जनरल वेर्खोव्स्की की बात को सुन कर हक्का-बक्का रह गये।

जनरल अलेक्सेयेव रो पड़े।

नहीं। यह निरा पागलपन नहीं है! यह और भी बुरी बात है। यह प्रत्यक्षत: रूस के प्रति विश्वासघात है!

वेर्खोव्स्की ने जो कहा है, उसके लिए केरेन्स्की, तेरेश्चेन्को और नेक्रासोव फौरन जवाबदेही करें।

नागरिको, उठिये!

रूस को बेचा जा रहा है!

उसे बचाइये!

वेर्खोव्स्की ने वास्तव में यही कहा था कि मित्र-राष्ट्रों पर इसके लिए दबाव डाला जाये कि वे शान्ति का प्रस्ताव करें, क्योंकि रूसी सेना अब और लड़ने में असमर्थ है ...

रूस में और विदेशों में भी इस समाचार से बड़ी खलबली मची। वेर्खोव्स्की को "अस्वस्थ होने के कारण अनिश्चित काल के लिए छुट्टी" दी गयी, और उन्हें मन्त्रिमण्डल से निकलना पड़ा। 'ओवश्चेये देलो' को बन्द कर दिया गया...

४ नवम्बर, इतवार का दिन पेत्रोग्राद सोवियत दिवस घोषित किया गया था, और उस दिन जाहिरा तौर पर संगठन तथा प्रेस के लिए पैसा उगाहने के लिए शहर भर में बड़ी बड़ी सभायें आयोजित की गयी थीं। परन्तु वास्तविक उद्देश्य अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना था। यकायक एलान किया गया कि उसी दिन कज्जाक लोग **क्रेस्तनी खोद** – सलीब का जुलूस – निकालेंगे। कहा गया कि यह जुलूस १८१२ की कलीसाई प्रतिमा के सम्मान में निकाला जायेगा, जिसके चमत्कार से नेपोलियन को मास्को छोड़ कर भागना पड़ा था। हवा में सनसनी थी। बारूद का

ढेर जमा था और एक चिनगारी गृहयुद्ध की आग भड़का सकती थी। पेत्रोग्राद सोवियत ने 'कज्जाक भाइयों के नाम' एक घोषणापत्र निकाला, जिसमें कहा गया था :

आप कज्जाकों को हम मजदूरों और सिपाहियों के खिलाफ भड़काया जा रहा है। जो लोग भाई को भाई से लड़ाने की यह योजना कार्यान्वित कर रहे हैं, वे हैं हमारे सामान्य शत्रु, हमारे उत्पीड़क, विशेषाधिकार-सम्पन्न वर्गों के लोग; फौजी जनरल, बैंकर, जमींदार, भूतपूर्व अफसर, जार के भूतपूर्व नौकर... भ्रष्टाचारी और धनिक, रईस व उमरा, जागीरदार व जनरल और खुद आपके कज्जाक जनरल हमसे नफरत करते हैं। वे किसी भी घड़ी पेत्रोग्राद सोवियत का नाश करने और क्रान्ति को कुचल देने के लिए तुले बैठे हैं...

४ नवम्बर को किसी ने एक कज्जाक धार्मिक जुलूस निकालने का आयोजन किया है। इस जुलूस में भाग लिया जाये या न लिया जाये, यह हर व्यक्ति के स्वतन्त्र विवेक का प्रश्न है। हम इस मामले में दस्तन्दाजी नहीं करते, न ही हम किसी को रोकते हैं... लेकिन कज्जाको! हम आपको आगाह करते हैं, आप खबरदार रहिये और ख्याल रखिये कि कहीं ऐसा न होने पाये कि **क्रेस्तनी खोद** के बहाने आपके कलेदिन जैसे नेता आपको मजदूरों के खिलाफ, सिपाहियों के खिलाफ भड़कायें...

जुलूस का ख्याल यकायक छोड़ दिया गया...

बारिकों में और शहर की मजदूर बस्तियों में बोल्शेविक नारा उठाते थे, "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में!" और उधर काली यमदूती शक्तियां लोगों को भड़का रही थी कि वे उठें और यहूदियों को, दूकानदारों को, समाजवादी नेताओं को मौत के घाट उतारें...

एक ओर राजतन्त्रवादी अखबार खूनी आतंक और दमन के लिए भड़का रहे थे, दूसरी ओर लेनिन की पुरजोर आवाज कड़क रही थी, "बगावत!.. अब हम एक लमहा भी ठहर नहीं सकते!"

पूंजीवादी अखबार भी बेचैन थे[2]। 'बिर्जेवीये वेदोमोस्ती' (एक्सचेंज गजेट) ने लिखा कि बोल्शेविकों का प्रचार "समाज के सबसे प्राथमिक सिद्धान्तों – व्यक्तिगत सुरक्षा तथा निजी स्वामित्व की मान्यता" – पर प्रहार है।

लेकिन बोल्शेविकों के विरोध में "नरम" समाजवादी पत्रिकायें सबसे कट्टर निकलीं[3]। 'देलो नरोदा' ने लिखा, "बोल्शेविक क्रान्ति के सबसे खतरनाक दुश्मन हैं।" मेन्शेविक 'देन' ने लिखा, "सरकार को चाहिए कि अपने को बचाये और हमें भी।" प्लेखानोव के अखबार 'येदीन्स्त्वो' (एकता)[4] ने सरकार का ध्यान इस बात की ओर दिलाया कि पेत्रोग्राद के मजदूरों के हाथ में हथियार दिये जा रहे हैं और माग की कि बोल्शेविकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये।

सरकार दिन-ब-दिन ज्यादा लाचार होती जा रही थी। नगरपालिका का प्रशासन तक चरमरा कर बैठ गया। सुबह अखबारों के कालम घोर दुःसाहसपूर्ण डकैती और कत्ल की खबरों से भरे होते। अपराधियों को छुट्टा घूमने के लिए छोड़ दिया गया था।

उधर हथियारबन्द मजदूर रात में सड़कों पर गश्त लगाते, चोरों-लुटेरों से निपटते और जहां भी हथियार मिलते उन्हें जब्त कर लेते।

१ नवम्बर को पेत्रोग्राद के सैनिक कमांडर कर्नल पोल्कोवनिकोव ने एक एलान जारी किया :

बावजूद इसके कि देश एक मुश्किल दौर से गुजर रहा है, पेत्रोग्राद में चारों ओर अभी भी सशस्त्र प्रदर्शन और मारकाट के लिये गैरजिम्मेदार अपीलें जारी की जा रही हैं, और लूट-पाट तथा अव्यवस्था रोजाना बढ़ती जा रही है।

यह स्थिति नागरिकों के जीवन को छिन्न-भिन्न कर रही है तथा सरकार और नगरपालिका के संस्थानों के व्यवस्थित कार्य में बाधा पहुंचा रही है।

अपनी जिम्मेदारी का और देश के प्रति अपने कर्तव्य का पूरा ध्यान रखते हुए, मैं आदेश देता हूं :

१. गैरिसन के अधिकार-क्षेत्र में, विशेष निर्देशों के अनुसार, प्रत्येक

सैनिक टुकड़ी सरकारी संस्थानों की सुरक्षा के लिए नगरपालिका को, कमिसारों को तथा मिलिशिया को पूरी मदद दे।

२. हलके के कमांडर तथा नगर मिलिशिया के प्रतिनिधियों के सहयोग से गश्ती दलों का सगठन किया जाये और अपराधियों तथा सेना से भागे सिपाहियों को गिरफ्तार करने के लिए कार्रवाई की जाये।

३. जो भी लोग बारिकों में घुस कर सिपाहियों को सशस्त्र प्रदर्शन और मारकाट के लिये भड़काते हैं, उन्हें गिरफ़्तार करके नगर के द्वितीय कमाण्डर के सदर दफ्तर के हवाले किया जाये।

४. कोई भी सशस्त्र प्रदर्शन या बलवा होते ही उसे समस्त उपलब्ध सैनिक शक्ति से तुरत कुचल दिया जाये।

५. मकानों में नाजायज तलाशियां और नाजायज़ गिरफ़्तारियां रोकने में कमिसारों की मदद की जाये।

६. हर व्यक्ति अपने अधिकार-क्षेत्र में होने वाली प्रत्येक घटना की रिपोर्ट अविलम्ब पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्र के स्टाफ को दे।

मैं सभी सैनिक समितियों तथा संगठनों को आदेश देता हूं कि वे कमाण्डरों को, जिन कर्तव्यों की जिम्मेदारी उनके ऊपर डाली गई है, उन्हें पूरा करने में मदद पहुंचायें।

जनतन्त्र की परिषद् की एक बैठक में केरेन्स्की ने घोषणा की कि सरकार बोल्शेविक तैयारियों के बारे में अच्छी तरह जानती है और उसके पास किसी भी प्रदर्शन से निबट पाने के लिये पर्याप्त शक्ति है[5]। उन्होंने 'नोवाया रूस' और 'राबोची पूत' पर यह आरोप लगाया कि वे दोनों एक ही प्रकार की विध्वंसक कार्रवाई करने में लगे हुए हैं। "परन्तु," उन्होंने आगे कहा, "निर्बाध प्रेस-स्वातन्त्र्य के कारण सरकार इस स्थिति में नहीं है कि अखबारों में छपने वाले झूठ का प्रतिकार कर सके..."* उन्होंने जोर देकर कहा कि इन दोनों अखबारों में एक ही

---

*केरेन्स्की ने साफ बात नहीं कही। अस्थायी सरकार इससे पहले, जुलाई में ही, बोल्शेविक अखबारों को बंद कर चुकी थी और अब फिर ऐसा करने का इरादा रखती थी।—जॉ० री०

प्रकार के प्रचार के दो पहलू नजर आते हैं, जिसका इच्छित लक्ष्य है प्रतिक्रांति को अग्रसर करना। यमदूती शक्तिया यही चाहती हैं और बेतरह चाहती हैं। उन्होंने आगे कहा :

"मेरा सर्वनाश निश्चित है और इस बात का बहुत अधिक महत्व नहीं है कि मेरे ऊपर क्या बीतती है। मैं यह कहने की जुर्रत करूंगा कि शहर की घटनाओं में जो कुछ रहस्यमय है, उसका कारण बोलशेविकों के अविश्वसनीय उकसावे में निहित है!"

२ नवम्बर तक सोवियतों की कांग्रेस के केवल पन्द्रह प्रतिनिधि पेत्रोग्राद पहुंचे थे। दूसरे दिन एक सौ मौजूद थे और उसके अगले दिन सुबह १७५, जिनमे १०३ बोलशेविक थे... चार सौ प्रतिनिधियों से कोरम बनता था और कांग्रेस के शुरू होने मे केवल तीन दिन बाक़ी रह गये थे...

मैं बहुत काफ़ी वक़्त स्मोल्नी मे बिताता। अब अन्दर दाख़िल होना उतना आसान न था। बाहरी फाटकों पर संतरियों की दोहरी क़तार होती, अंदर के सदर दरवाज़े के सामने इन्तजार करने वाले लोगों की एक लम्बी लाइन दिखाई पड़ती, जिनमे चार चार एक साथ अन्दर जाने दिये जाते, जहां उनसे उनके नाम-धाम के साथ यह पूछा जाता कि वे किस काम से वहां आये हैं। उन्हें स्मोल्नी के लिये पास दिये जाते और पास-व्यवस्था हर दो-चार घंटे के बाद बदल दी जाती, क्योंकि जासूस चुपके से भीतर घुसने की बराबर कोशिश कर रहे थे...

एक दिन जैसे ही मैं बाहर के फाटक पर पहुंचा, मैंने अपने ठीक आगे त्रोत्स्की और उनकी पत्नी को देखा। उन्हे एक सिपाही ने रोक दिया। त्रोत्स्की ने अपनी जेबों को उलट डाला, लेकिन उन्हे अपना पास न मिला।

"कोई बात नही," अन्त में उन्होने कहा। "आप मुझे जानते है, मेरा नाम त्रोत्स्की है।"

"आपके पास अपना पास नही है," सिपाही ने अड़ते हुए कहा। "आप अन्दर नही जा सकते। आपका नाम कुछ भी हो, मेरे लिये इससे कोई फ़र्क नही पड़ता।"

"लेकिन मैं पेत्रोग्राद सोवियत का अध्यक्ष हूं।"

"अच्छा," सिपाही ने जवाब दिया। "अगर आप इतने बड़े आदमी हैं, तो आपके पास कम से कम एक पुर्जा तो होना चाहिये।"

त्रोत्स्की ने सब्र से काम लिया।

Военно-Революціон.
Комитетъ
при
ПЕТР С. Р. и С. Д.

Комендантскій отдѣлъ.

16 ноября 1917 г.
№ 955
Смольный институтъ.

Пропускъ.

Дано сіе Джону Риду
Корресп. амер. соц. прес.
срокомъ по 1. Декабря.

на право свободнаго входа въ Смольный Институтъ.

Комендантъ Ф. Дзержинский

Дѣлопроизводитель

Воен. Революціонный Комитетъ
Исполнитель Комитетъ Петрогр. Сов. Р. и Солд. Деп.

स्मोल्नी भवन मे प्रवेश के लिए जॉन रीड को दिया गया पास

"मैं कमांडेंट से मिलना चाहता हूं," उन्होंने कहा। सिपाही हिचकिचाया और उसने बुडबुडा कर कहा कि वह हर सिरफिरे के लिए, जो वहा पहुच जाये, कमांडेंट को तंग नही करना चाहता। आखिरकार उसने एक दूसरे सिपाही को इशारा किया, जिसके हाथ मे गारद टुकडी की कमान थी। त्रोत्स्की ने उसे सारी बात समझाई और फिर कहा, "मेरा नाम त्रोत्स्की है।"

"त्रोत्स्की?" इस दूसरे सिपाही ने माथा खुजलाते हुए कहा। फिर सोचते सोचते बोला, "मैंने यह नाम कही सुन रखा है। मेरा ख्याल है ठीक है। आप अन्दर जा सकते है, कामरेड..."

अन्दर बरामदे में मेरी मुलाकात बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य काराखान* से हुई, जिन्होंने मुझे समझाया कि नई सरकार कैसी होगी :

"एक लचकीला संगठन, जो सोवियतों के माध्यम से प्रगट होने वाली जनता की इच्छा के प्रति संवेदनशील होगा और जो स्थानीय शक्तियों को काम करने का पूरा मौका देगा। इस समय जार की सरकार की ही तरह अस्थायी सरकार भी स्थानीय जनवाद को रोकती है। नये समाज में पेशकदमी नीचे से होगी... सरकार का ढाचा रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी के संविधान के अनुरूप होगा। नयी त्से-ई-काह, जो सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के जल्दी जल्दी होने वाले अधिवेशनों के प्रति उत्तरदायी होगी, हमारा संसद होगी। विभिन्न मंत्रालयों की अध्यक्षता मन्त्री नही करेंगे, कोल्लेगिया अथवा समितिया करेंगी, जो सीधे सीधे सोवियतों के प्रति उत्तरदायी होंगी..."

३० अक्तूबर को पहले से निश्चित समय पर मैं त्रोत्स्की से बात करने के लिये स्मोल्नी भवन के सबसे ऊपर के एक सादे असज्जित कमरे मे दाख़िल हुआ। त्रोत्स्की कमरे के बीचोबीच एक मामूली कुर्सी पर बैठे थे ; सामने ख़ाली मेज थी। मुझे उनसे बहुत से सवाल करने की जरूरत नही हुई। वह घण्टा भर से ज्यादा लगातार तेज रफ़्तार से बोलते रहे। मैं यहा उनकी बात का साराश उन्ही के शब्दों मे दे रहा हू :

"अस्थायी सरकार की बिल्कुल ही कमर टूट गयी है। उसकी नकेल पूजीपति वर्ग के हाथ में है, लेकिन खुल्लमखुल्ला नही ; उस पर **ओबोरोन्त्सी** (प्रतिरक्षावादी) पार्टियों के साथ मिथ्या संश्रय का पर्दा डाल दिया गया है। अब, क्राति के दौरान आप देखते हैं कि किसान, जो वादा की गई ज़मीन का इन्तजार करते करते थक चुके है, बगावत कर रहे है ; और पूरे देश मे, सभी मेहनतकश वर्गों के अन्दर, वैसी ही नफरत दिखायी देती है। पूंजीपति वर्ग गृहयुद्ध के द्वारा ही अपना यह प्रभुत्व कायम रख सकता है। पूजीपति वर्ग एकमात्र कोर्नीलोव के तरीके मे ही अपना नियन्त्रण क़ायम रख सकता है। परन्तु पूजीपति वर्ग के पास

*काराख़ान केन्द्रीय समिति के सदस्य नही थे। – सं०

शक्ति का अभाव है... सेना हमारे साथ है। समझौतापरस्त तथा शान्तिवादी, समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मेन्शेविक लोग अपनी सारी साख खो बैठे हैं, क्योंकि किसानों और जमींदारों का संघर्ष, मजदूरों और मालिकों का संघर्ष, सिपाहियों और अफ़सरों का संघर्ष आज जितना उग्र और कठोर हो गया है, उतना वह पहले कभी नहीं हुआ था। इस संघर्ष में सुलह-मसालहत की कोई गुंजाइश नहीं रह गई है। जन-साधारण का मिलजुल कर उठाया हुआ कदम ही, सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय ही क्रांति सम्पन्न कर सकती है और जनता को उबार सकती है...

"सोवियतें जनता का सर्वश्रेष्ठ – अपने क्रांतिकारी अनुभव, अपने विचारों तथा उद्देश्यों की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ – प्रतिनिधित्व करती हैं। खाइयों में सैनिकों, कारखानों में मजदूरों और खेतों में किसानों के ऊपर सीधे सीधे आधारित ये सोवियतें क्रान्ति की रीढ़ हैं।

"सोवियतों के बगैर एक प्रकार की सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है, और उससे सत्ता का अभाव ही उत्पन्न हुआ है। रूसी जनतन्त्र की परिषद् के गलियारों में तरह तरह के प्रतिक्रांतिकारी षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। कैडेट पार्टी उग्र प्रतिक्रांतिकारियों का प्रतिनिधित्व करती है। दूसरी ओर सोवियतें जनता के ध्येय का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन दोनों खेमों के बीच ऐसे कोई दल नहीं हैं, जिनकी कोई खास अहमियत हो... यह «lutte finale» – निर्णयकारी संघर्ष है। पूंजीवादी प्रतिक्रांति अपनी समस्त शक्ति को बटोरती और संहत करती है और उस समय की प्रतीक्षा करती है, जब वह हमारे ऊपर आक्रमण कर सकेगी। हम मुंहतोड़ फ़ैसलाकुन जवाब देंगे। जो काम मार्च में मुश्किल से शुरू हुआ और जो कोर्नीलोव-काण्ड के समय आगे बढ़ा, उसे हम पूरा करेंगे..."

इसके बाद उन्होंने नयी सरकार की विदेश नीति की चर्चा की:

"हमारा पहला काम होगा सभी मोर्चों पर अविलम्ब युद्ध-विराम के लिए तथा एक जनवादी शान्ति-संधि की शर्तों पर विचार करने के हेतु विभिन्न जनों का एक सम्मेलन करने के लिये आह्वान देना। शान्ति के समझौते में जनवाद का कितना गहरा पुट होगा, यह इस बात पर निर्भर होगा कि यूरोप में हमारे इस आह्वान का कितना क्रांतिकारी प्रत्युत्तर

दिया जायेगा। अगर हम यहा पर सोवियतो की सरकार स्थापित कर लेते हैं, तो वह यूरोप में शान्ति की तत्काल स्थापना का एक शक्तिशाली साधन होगी; क्योंकि यह सरकार सभी जनों से, उनकी सरकारों की उपेक्षा कर, सीधे उनसे अविलम्ब अपील करेगी, और उनके सामने युद्ध-विराम का प्रस्ताव रखेगी। शान्ति-सन्धि सम्पन्न करने की घडी में रूसी क्रान्ति का पूरा जोर इस ओर पड़ेगा: 'संयोजन न हो, हरजाने न लिये जाये, जातियों को आत्म-निर्णय का अधिकार मिले' और यूरोप का एक संघात्मक जनतन्त्र स्थापित हो...

"मेरी दृष्टि मे इस युद्ध के पश्चात् यूरोप का पुनर्जन्म होगा – कूटनीतिज्ञो के हाथों नही, सर्वहाराओ के हाथो। यूरोप का सघात्मक जनतन्त्र – यूरोप के संयुक्त राज्य – यही होना चाहिये। राष्ट्रीय स्वायत्तता पर्याप्त नही रह गयी है। आर्थिक विकास का तकाजा है कि राष्ट्रीय सरहदें मिटा दी जायें। अगर यूरोप राष्ट्रीय समूहो मे बटा रहता है, तो साम्राज्यवाद फिर अपना धधा शुरू कर देगा। एकमात्र यूरोप का संघात्मक जनतन्त्र ही संसार को शान्ति प्रदान कर सकता है।" कहते कहते त्रोत्स्की के चेहरे पर हंसी खेल गयी – वही उनकी स्निग्ध, ईषत् व्यंग्यात्मक हंसी। "लेकिन जब तक यूरोपीय जन-साधारण जद्दोजेहद न करें, ये लक्ष्य पूरे नही किये जा सकते – इस समय..."

जब हर आदमी इस इन्तजार में था कि बोल्शेविक यकायक एक दिन सुबह सड़को पर निकल पड़ेगे और सफेदपोश लोगों पर दनादन गोलिया चलाना शुरू कर देगे, वास्तविक विद्रोह अत्यन्त सहज भाव से शुरू हुआ और खुल्लमखुल्ला हुआ।

अस्थायी सरकार की योजना थी कि पेत्रोग्राद की गैरिसन को मोर्चे पर भेज दिया जाये।

इस गैरिसन में लगभग साठ हज़ार सिपाही थे, जिन्होंने क्रान्ति में प्रमुख भाग लिया था। मार्च के शानदार दिनो में उन्होंने ही हवा का रुख बदल दिया था, सैनिको के प्रतिनिधियो की सोवियतों की स्थापना की थी और कोर्नीलोव को पेत्रोग्राद के द्वार से पीछे खदेड़ दिया।

7-2360

उस समय इस गैरिसन का एक बड़ा भाग बोल्शेविक-पंथी था। जब अस्थायी सरकार ने राजधानी खाली कर देने की बात की, पेत्रोग्राद की गैरिसन ने ही उसे जवाब दिया: "यदि आपमे राजधानी की रक्षा करने की सामर्थ्य नही है, तो शान्ति सम्पन्न कीजिये और अगर आप शान्ति सम्पन्न नही कर सकते, तो हट जाइये और एक जन-सरकार के लिये रास्ता छोड़ दीजिये, जो दोनों काम कर सकती है..."

यह बिल्कुल साफ था कि विद्रोह करने की कोई भी कोशिश हो, उसका अंजाम पेत्रोग्राद गैरिसन के रुख़ पर मुनहसर होगा। सरकार की चाल यह थी कि गैरिसन की रेजीमेंटों को हटा कर उनकी जगह "भरोसे लायक" टुकड़िया – कज्जाक टुकड़िया और "शहीदी टुकड़िया" – लायी जायें। कुछ सैनिक समितियो, "नरम" समाजवादियों और त्से-ई-काह ने सरकार की इस योजना का समर्थन किया। मोर्चे पर और पेत्रोग्राद मे इस बात पर ज़ोर देते हुए व्यापक प्रचार किया गया कि आठ महीनों से, जब खाइयों मे थके-मादे सिपाही फ़ाके कर रहे थे और जान से हाथ धो रहे थे, पेत्रोग्राद गैरिसन के उनके साथी राजधानी की बारिको मे आरामतलब जिन्दगी बसर कर रहे थे।

स्वभावतः इस आरोप मे कुछ सच्चाई थी कि गैरिसन की रेजीमेंटे अपनी अपेक्षाकृत आराम की जिन्दगी को छोड़ कर शीत-अभियान की मुसीबत मे नही पड़ना चाहती थी। लेकिन पेत्रोग्राद छोड़ कर जाने से इनकार करने की वजह कुछ और थी। पेत्रोग्राद सोवियत को आशंका थी कि सरकार का इरादा बहुत नेक नही है, और मोर्चे से मामूली सिपाहियों द्वारा चुने गये सैकड़ों प्रतिनिधि आ आकर कह रहे थे, "यह ठीक है कि हमे कुमक की जरूरत है, लेकिन हमारे लिये यह जानना ज्यादा जरूरी है कि पेत्रोग्राद सुरक्षित है, क्रान्ति सुरक्षित है... आप पिछाया संभालिये, साथियो, और हम मोर्चा संभालेंगे!"

२५ अक्तूबर को बन्द दरवाज़ों के भीतर पेत्रोग्राद सोवियत की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक हुई, जिसमें पूरे सवाल का फ़ैसला करने के लिए एक विशेष सैनिक समिति स्थापित करने के बारे मे विचार किया गया। अगले दिन पेत्रोग्राद सोवियत की सैनिक शाखा ने एक समिति का चुनाव किया, जिसने तुरंत पूंजीवादी अख़बारों के बहिष्कार की घोषणा

की ग्रौर सोवियतों की कांग्रेस का विरोध करने के लिए त्सै-ई-काह को फटकारा। २६ तारीख़ को पेत्रोग्राद सोवियत के खुले अधिवेशन में त्रोत्स्की ने प्रस्ताव किया कि सोवियत सैनिक क्रान्तिकारी समिति की स्थापना को औपचारिक रूप से मंजूरी दे। उन्होंने कहा, "हमे अपना विशेष संगठन बनाना चाहिए, ताकि हम लड़ाई के मैदान मे उतर सकें और आवश्यकता हो, तो मृत्यु को भी वरण कर सकें..." यह निश्चय किया गया कि सैनिक समितियों और जनरल स्टाफ से सलाह-मशविरा करने के लिए दो प्रतिनिधिमण्डल मोर्चे पर भेजे जायें – एक सोवियत की ओर से, दूसरा गैरिसन की ओर से।

प्स्कोव मे उत्तरी मोर्चे के कमांडर जनरल चेरेमीसोव ने सोवियत प्रतिनिधियों से साफ़ दो टूक शब्दो मे कहा कि उन्होंने पेत्रोग्राद गैरिसन को मोर्चे की खाइयों में जाने का हुक्म दिया है और बस। गैरिसन के प्रतिनिधिमण्डल को पेत्रोग्राद से बाहर जाने की इजाजत नही दी गयी...

पेत्रोग्राद सोवियत की सैनिक शाखा के प्रतिनिधिमण्डल ने मांग की कि उसके एक प्रतिनिधि को पेत्रोग्राद क्षेत्र के सैनिक स्टाफ मे शामिल किया जाये। जवाब – नही। पेत्रोग्राद सोवियत ने माग की कि सैनिक शाखा के अनुमोदन के बिना कोई भी आदेश जारी न किया जाये। फिर इनकार। प्रतिनिधियो को टका सा जवाब दिया गया, "हम केवल त्से-ई-काह को मानते हैं। हम आपको नही मानते। अगर आप कानून का उल्लंघन करेंगे, तो हम आपको गिरफ़्तार कर लेंगे।"

३० तारीख़* को पेत्रोग्राद की सभी रेजीमेंटो के प्रतिनिधियों की एक सभा मे यह प्रस्ताव पास किया गया: **"अब पेत्रोग्राद गैरिसन अस्थायी सरकार को अपनी सरकार नहीं मानती। हमारी सरकार पेत्रोग्राद सोवियत है। पेत्रोग्राद सोवियत सैनिक क्रान्तिकारी समिति की मारफ़त हमें जो हुक्म देगी, हम उसे ही मानेंगे।"** स्थानीय सैनिक टुकड़ियों को आदेश दिया गया कि वे पेत्रोग्राद सोवियत की सैनिक शाखा के निर्देशों की प्रतीक्षा करें।

---

*यह सभा ३१ अक्तूबर को हुई थी। – सं०

7*

दूसरे दिन रसे-ई-काह ने अपनी एक मीटिंग बुलाई, जिसमें भाग लेने वाले अधिकाशतः अफसर थे, और उसमें सैनिक स्टाफ से सहयोग करने के लिए एक विशेष समिति का गठन किया गया तथा शहर की सभी बस्तियों के लिए कमिसारों की नियुक्ति की गयी।

३ नवम्बर को स्मोल्नी मे सैनिकों की एक महती सभा हुई। सभा ने फ़ैसला किया :

सैनिक क्रान्तिकारी समिति की स्थापना का अभिनन्दन करते हुए पेत्रोग्राद की गैरिसन क्रान्ति के हित मे मोर्चे और पिछाये को और भी घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध करने के लिए समिति जो भी क़दम उठाती है, उसका पूर्ण समर्थन करने का उसे आश्वासन देती है।

इसके अतिरिक्त, गैरिसन यह भी घोषणा करती है कि क्रान्तिकारी सर्वहारा के साथ मिल कर वह पेत्रोग्राद में क्रान्तिकारी सुव्यवस्था को सुनिश्चित बनायेगी और उस पर आच न आने देगी। कोर्नीलोवपंथियो या पूजीवादियो की भडकावे की हर कोशिश का सख्ती से मुक़ाबला किया जायेगा।

अब अपनी शक्ति का अनुभव करती हुई सैनिक क्रातिकारी समिति ने पेत्रोग्राद सैनिक स्टाफ़ को अन्तिम रूप से आदेश दिया कि वह समिति की अधीनता को स्वीकार करे। सभी प्रेसों को हुक्म दिया गया कि वे समिति की मजूरी के बगैर किसी तरह की अपील या घोषणा न छापे। हथियारवन्द कमिसार क्रोनवेर्क के शस्त्रागार में पहुंचे और उन्होंने ढेर के ढेर हथियारों और गोला-बारूद को अपने क़ब्ज़े मे ले लिया और उसी समय शस्त्रागार से कलेदिन के सदर मुकाम, नोवोचेर्कास्क के लिये दस हज़ार संगीनों का चालान रोक दिया...

सरकार को अब यकायक ख़तरे का एहसास हुआ, और उसने इस शर्त पर समिति के सदस्यों की निरापदता का आश्वासन देने का प्रस्ताव किया कि वह अपने को भंग करे। लेकिन यह प्रस्ताव बहुत देर से आया। ५ नवम्बर की आधी रात को स्वयं केरेन्स्की ने मालेव्स्की की मारफ़त पेत्रोग्राद सोवियत को सन्देश भेजा कि वह सोवियत के प्रतिनिधियों को

पेत्रोग्राद सैनिक स्टाफ़ में शामिल करने के लिए तैयार है। सैनिक क्रान्तिकारी समिति ने इसे स्वीकार कर लिया। एक घंटा बाद कार्यवाहक युद्ध-मन्त्री जनरल मनिकोव्स्की ने केरेन्स्की के प्रस्ताव को रद्द कर दिया...

मंगलवार, ६ नवम्बर की सुबह एक पोस्टर का निकलना था कि शहर में सनसनी फैल गयी। पोस्टर "मज़दूरों तथा सैनिको के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के अधीन सैनिक क्रान्तिकारी समिति" की ओर से निकाला गया था।

पेत्रोग्राद की जनता के नाम

नागरिको!

प्रतिक्रान्ति ने अपना ज़हरीला फन उठाया है। कोर्नीलोवपंथी सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस को कुचलने के लिए तथा संविधान सभा को छिन्न-भिन्न करने के लिए अपनी शक्तियों को जुटा रहे हैं। इसके साथ ही, फ़सादी और दंगाई लोग पेत्रोग्राद की जनता को उपद्रव और रक्तपात के लिए भड़काने की कोशिश कर सकते हैं। मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत प्रतिक्रान्ति की तथा दंगा-फ़साद की कोशिशों से शहर को बचाने और वहां क्रांतिकारी सुव्यवस्था सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेती है।

पेत्रोग्राद गैरिसन किसी प्रकार की हिंसा और उपद्रव को नहीं होने देगी। जनता का आवाहन किया जाता है कि वह उपद्रवियों और यमदूत सभाई आन्दोलनकर्ताओं को गिरफ़्तार कर ले और उन्हें सबसे नज़दीक की बारिकों में सोवियत कमिसारों के पास ले जाये। यमदूती शक्तियों ने पेत्रोग्राद की सड़कों पर जहां फ़साद मचाने की कोई कोशिश की, चाहे वह ठगी-बटमारी हो या लड़ाई, मुजरिमों का एकदम सफ़ाया कर दिया जायेगा और इस धरती पर उनका निशान भी न छोड़ा जायेगा!

नागरिको! हम आपका आह्वान करते हैं कि आप अपने को क़ाबू में रखें और पूर्ण शान्ति बनाये रखें। क्रान्ति तथा सुव्यवस्था का ध्येय मजबूत हाथों में है।

जिन रेजीमेंटो मे सैनिक क्रान्तिकारी समिति के कमिसार मौजूद हैं, उनकी सूची यह है...

तीन तारीख को बोल्शेविकों के नेताओं की एक और ऐतिहासिक महत्व की बन्द मीटिंग हुई। जालकिंद* से सूचना पा कर मैं दरवाजे से बाहर गलियारे मे इन्तजार करता रहा। वोलोदार्स्की ने निकलते ही मुझे बताया कि मीटिंग में क्या हो रहा था।

लेनिन ने कहा: "छः नवम्बर वक़्त से पहले होगा। विद्रोह के लिए एक अखिल रूसी आधार होना ही चाहिए; और छः तारीख़ तक कांग्रेस के सारे प्रतिनिधि पहुंचे नही होंगे... दूसरी ओर ८ नवम्बर तक वक्त बीत चुकेगा। उस वक़्त तक कांग्रेस संगठित हो चुकेगी और लो के किसी भी बड़े संगठित निकाय के लिए तेजी से निर्णायक क़दम उठा कठिन है। हमे ७ नवम्बर को, जिस दिन कांग्रेस जुटती है, उसी दिन कार्रवाई शुरू करनी होगी, ताकि हम उससे कह सकें, 'लीजिये, यह सत्ता! बताइये, आप उसका क्या करेंगे?'"

ऊपर के एक कमरे में दुबले चेहरे और लम्बे बालों वाला एक व्यक्ति काम कर रहा था। ओव्सेयेन्को नामक यह सज्जन, जिन्हें अन्तोनोव कह कर पुकारते थे, किसी जमाने मे जारशाही सेना के अफसर थे और बाद में क्रान्तिकारी आन्दोलन मे आये और निर्वासित हुए। वह गणितज्ञ और शतरंज के खिलाडी भी थे। इस समय वह बडी सावधानी से राजधानी पर कब्जा करने की योजना बनाने मे लगे हुए थे।

अपनी ओर सरकार भी तैयारी कर रही थी। कुछ वफादार रेजीमेंटो को, जो पूरे मोर्चे पर बिखरी हुई डिवीजनों से चुनी गयी थीं, चुपचाप पेत्रोग्राद आने का हुक्म दिया गया। शिशिर प्रासाद में युंकर तोपखाना बैठा दिया गया। जुलाई के दिनों के बाद पहली बार कज्ज़ाक सिपाहियों ने सड़कों पर गश्त लगाना शुरू किया। पोल्कोवनिकोव ने

*जालकिंद, इ० प्र० –पेत्रोग्राद के बोल्शेविक संगठन के सदस्य, जिन्होंने नवबर विद्रोह मे सक्रिय भाग लिया।–सं०

"पूरी ताकत" के साथ नाफ़रमानी और सरकशी को कुचल देने की धमकी देते हुए आदेश पर आदेश जारी किये। सार्वजनिक शिक्षा-मन्त्री किशकिन, जो मन्त्रियों में सबसे ज्यादा नफरत की निगाह से देखे जाते थे, पेत्रोग्राद में शान्ति और सुव्यवस्था क़ायम रखने के लिए विशेष कमिसार नियुक्त किये गये। उन्होंने दो आदमियों को अपने सहायक नियुक्त किये, जो उतने ही बदनाम थे, जितने वह खुद। ये थे रुतेनबेर्ग और पालचीन्स्की। पेत्रोग्राद, क्रोंश्ताद्त तथा फ़िनलैंड को मुहासराबन्द घोषित किया गया। इस पर पूंजीवादी अखबार 'नोवोये व्रेम्या' (नव-युग) ने विद्रूप करते हुए लिखा:

मुहासराबन्दी क्यों? सरकार के हाथ में न सत्ता है, न बलप्रयोग के लिए आवश्यक उपकरण, न ही उसकी कोई नैतिक प्रतिष्ठा रह गयी है... परिस्थिति बहुत अनुकूल हो, तो वह बस समझौते की बातचीत कर सकती है, बशर्ते कि उसके साथ कोई बात करने के लिये तैयार हो। इससे अधिक अधिकार उसके पास नहीं है...

सोमवार, ५ नवम्बर की सुबह। मैंने सोचा कि मारिईन्स्की प्रासाद में जरा जाकर देखूं कि रूसी जनतन्त्र की परिषद् में क्या हो रहा है। गया तो देखा कि तेरेश्चेन्को की विदेश नीति को लेकर तेज बहस छिड़ी हुई है। बूर्त्सेव-वेर्खोव्स्की काण्ड की गूंज भी सुनायी पड़ी। सारे कूटनीतिज्ञ मौजूद थे, एक इतालवी राजदूत को छोड़ कर। लोगों का कहना था कि कार्सो-दुर्घटना ने उनका दिल तोड़ दिया था।

जिस वक़्त मैं अन्दर दाख़िल हुआ, वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी करेलिन लंदन 'टाइम्स' का एक सम्पादकीय लेख पढ़ कर सुना रहे थे, जिसमें लिखा हुआ था, "बोल्शेविज़्म का एक ही इलाज है – गोली!"

कैडेटों की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "आपका भी यही ख़्याल है!"

दक्षिणपंथी बेंचों से आवाजें, "हां, है!"

कोर्नेलिन ने गरम होकर कहा, "हां, मैं जानता हूं आपका यही ख्याल है। लेकिन आपमें ऐसा करने की हिम्मत नही है!"

इसके बाद स्कोबेलेव बोलने के लिये खड़े हुए— मुलायम उजली दाढ़ी, सुनहरे घुंघराले बाल—देखने में वह किसी नाटक के मैटिनी शो के प्रिय अभिनेता लगते थे। उन्होंने हिचकिचाते हुए उखड़े-उखड़े ढंग में सोवियत नकाज़ का समर्थन किया। उनके बाद तेरेश्चेन्को उठे—उठते ही वामपंथियों की बौछार: "इस्तीफा दो! गद्दी छोड दो!" उन्होंने जोर देकर कहा कि पेरिस सम्मेलन में सरकार के प्रतिनिधि तथा त्से-ई-काह के प्रतिनिधि, दोनों को एक ही दृष्टिकोण, यानी उनका—तेरेश्चेन्को का—दृष्टिकोण ग्रहण करना चाहिए। इसके बाद सेना में अनुशासन की पुनर्स्थापना के बारे में, विजयपर्यन्त युद्ध के बारे में कुछ शब्द... शोर, हगामा... और अडियल वामपंथियों के कडे विरोध की परवाह न करती हुई जनतन्त्र की परिषद् अपनी साधारण दिनचर्या में लग गयी।

सदन मे एक ओर बोल्शेविक बेंचों की क़तारें थी—वे उसी दिन से खाली पडी थी, जिस दिन बोल्शेविक जनतन्त्र की परिषद् को छोड़कर निकल गये थे। उनके साथ सदन की रौनक जाती रही थी। सीढ़ियों से उतरते समय मुझे ऐसा लगा कि यहा चाहे जितनी तू तू मैं मैं हो, बाहर के क्षुब्ध अशान्त ससार की सच्ची आवाज इस विशाल पर निर्जीव भवन मे प्रवेश नही कर सकती, और यह कि अस्थायी सरकार युद्ध और शान्ति की उसी चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो गयी थी, जिसने मिल्युकोव मन्त्रिमण्डल को खण्ड-खण्ड कर दिया था... दरबान ने मुझे ओवरकोट पहनाते हुए कहा, "मैं नही जानता कि हमारे गरीब मुल्क का क्या होने वाला है... ये सारे मेन्शेविक और बोल्शेविक और त्रुदोविक... यह उक्रइना और यह फिनलैण्ड, जर्मन साम्राज्यवादी और अग्रेज साम्राज्यवादी। मेरी उम्र पैतालिस साल की हो चली है, लेकिन अपनी पूरी जिन्दगी मे मैंने इतने सारे शब्द नही सुने थे, जितने यहा सुनने को मिल रहे हैं।"

बरामदे में मेरी मुलाकात प्रोफेसर शात्स्की से हुई—चुहिया का सा छोटा सा मुह, बदन पर भड़कीला कोट, यह सज्जन कैडेट पार्टी की

सभाओं में बड़ा प्रभाव रखते थे। मैंने उनसे पूछा कि बहुचर्चित बोल्शेविक **विस्तुप्लेनिये** – प्रदर्शन – के बारे मे उनका क्या ख़याल है। उन्होंने कंधे सिकोड़ कर विद्रूप के स्वर मे कहा :

"वे जानवर हैं, जानवर। वे प्रदर्शन करने की जुर्रत नही करेंगे, लेकिन अगर उन्होंने जुर्रत की, तो उन्हे फूक मार कर उडा दिया जायेगा। हमारे दृष्टिकोण से **विस्तुप्लेनिये** बुरी चीज न होगी, क्योंकि तब वे स्वयं ही अपना सर्वनाश बुलायेंगे और सविधान सभा मे उनकी कोई शक्ति नही रह जायेगी...

"लेकिन, मेहरबान, मुझे इस बात की इजाजत दीजिये कि मै आपको नई शासन-पद्धति के बारे मे अपनी उस योजना की रूपरेखा दूं, जो सविधान सभा में पेश की जानेवाली है। आप जानते हैं, मैं उस आयोग का सभापति हूं, जिसे अस्थायी सरकार के साथ मिलकर जनतन्त्र की परिषद् ने संविधान का एक प्रारूप बनाने के लिये नियुक्त किया है... हम एक ऐसी विधान सभा स्थापित करेंगे, जिसके दो सदन होंगे, जैसे आपके यहां, संयुक्त राज्य अमरीका मे है। अवर सदन में प्रादेशिक प्रतिनिधि होंगे और प्रवर में उदार पेशों के, ज़ेम्सत्वोओं, सहकारी समितियों तथा ट्रेड-यूनियनों के प्रतिनिधि होंगे..."

बाहर नम और ठंडी पछुआं हवा चल रही थी और पैरों के नीचे ठंडी कीचड़ से जूते भीतर तक गीले हो रहे थे। युंकरों की दो कम्पनियां झूमती-झामती मोस्कोया मार्ग से निकल गयी। युंकर अपने लम्बे कोटों में जैसे अकड़े हुए मार्च कर रहे थे और पुराने जमाने का एक जोरदार कोरस उच्च स्वर मे गा रहे थे, जैसा जारशाही ज़माने मे सिपाही गाया करते थे... पहले ही चौराहे पर मैंने देखा कि नगर मिलिशिया के सिपाही घोड़ों पर सवार थे और उन्हें पिस्तौलों से लैस किया गया था, जिनके नये पिस्तौलदान चमक रहे थे। एक ओर कुछ लोग गोल बनाये खड़े उनकी ओर एकटक देख रहे थे। नेव्स्की मार्ग की मोड़ पर मैंने लेनिन का लिखा हुआ एक पैम्फ़लेट ख़रीदा, 'क्या बोल्शेविक राज्य-सत्ता रख सकते हैं?' जिसके लिये मैंने एक टिकट दिया; ऐसे टिकट अक्सर पैसों की जगह दिये जा सकते थे। ट्राम-गाड़ियां रोज की तरह रेंगती चली जा रही थी, नागरिक और सिपाही बाहर

की ओर इस तरह टंगे हुए थे कि उन्हें देखकर थियोडोर पी शोन्ट्स* को भी भारी ईर्ष्या होती... सड़क के किनारे पटरी पर एक क़तार में खड़े सैनिक भगोड़े अपनी वर्दियां पहने सिगरेट और सूरजमुखी के बीज बेच रहे थे...

नेव्स्की मार्ग पर गीले कुहासे में लोगों की भीड़ ताजा अख़बारों के लिये छीना-झपटी कर रही थी। जहां भी खड़ी सपाट जगह मिली थी, ढेर के ढेर पोस्टर चिपकाये गये थे और उनके सामने लोग झुण्ड के झुण्ड खडे अपीलो और घोषणाओं[७] को पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। त्से-ई-काह, किसानों की सोवियतों, "नरम" समाजवादी पार्टियों, सैनिक समितियों की अपीलें और घोषणायें, जिनमें मजदूरों और सिपाहियों को धमकियां दी गयी थीं, गालियां दी गयी थीं और उनसे विनती भी की गयी थी कि वे चुपचाप अपने घरों में बैठे रहें और सरकार का समर्थन करें...

एक बख़्तरबन्द मोटर-गाड़ी नेव्स्की मार्ग पर ऊपर और नीचे गश्त लगा रही थी, उसका सायरन बुरी तरह चीख रहा था। गली-सड़क के हर नुक्कड़ पर, हर खुली जगह में लोगों की भीड़ जमा थी—बहस करते हुए सिपाहियों और विद्यार्थियों की भीड़। अंधेरा घिर रहा था, सड़कों पर दूर दूर लगी हुई बत्तियां टिमटिमा रही थीं और भीड़ के झोंके पर झोंके आ रहे थे... तूफ़ान फटने से पहले पेत्रोग्राद में हमेशा ऐसा ही होता है...

शहर में दहशत थी। लोग खटका होते ही चौंक पड़ते। मगर बोल्शेविकों का अभी तक पता न था। सिपाही अपनी बारिकों में और मजदूर कारखानों में ठहरे हुए थे... हम कज़ान गिरजाघर के नजदीक एक फिल्म देखने के लिये गये—हिंसा और षड्यन्त्रों से भरी एक उत्तेजनापूर्ण इतालवी फिल्म। नीचे सामने की ओर बैठे हुए कुछ सिपाही और मल्लाह पर्दे की ओर शिशुवत आश्चर्य के भाव से देख रहे थे—उनकी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा था कि इतनी अंधाधुंध दौड़-भाग, इतनी मारकाट की क्या जरूरत थी।

---

*उस समय के एक प्रसिद्ध नट।—सं०

वहां से निकल कर मैं जल्दी जल्दी स्मोल्नी पहुंचा। सबसे ऊपर की मंज़िल पर दस नम्बर के कमरे में सैनिक क्रांतिकारी समिति की लगातार बैठक चल रही थी। लाज़िमीर नाम का एक अठारह साल का नौजवान, जिसके बालों का रंग पटसन जैसा था, सदारत कर रहा था। मेरे पास से गुज़रता हुआ, उसने मुझे देखा और रुक कर सलज्ज भाव से हाथ मिलाया।

"पीटर-पाल क़िला अभी-अभी हमारी ओर आ गया है," उसने ख़ुशी से मुस्करा कर कहा। "क्षण भर पहले हमारे पास एक रेजीमेंट का संदेश पहुंचा, जिसे सरकार ने पेत्रोग्राद पहुंचने का हुक्म दिया था। सिपाहियों को कुछ शुबहा हुआ, इसलिये उन्होंने गातचिना के स्टेशन पर रेल-गाड़ी रोक दी और हमारे पास एक प्रतिनिधिमण्डल भेजा। 'माजरा क्या है?' उन्होंने पूछा। 'आप क्या कहते हैं? हमने अभी अभी एक प्रस्ताव पास किया है—समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में'... सैनिक क्रांतिकारी समिति ने उत्तर में संदेश भेजा, 'भाइयो! हम क्रांति के नाम पर आपका अभिनन्दन करते हैं। जब तक आपको और हिदायतें नहीं दी जातीं, आप जहां है वहीं टिके रहें!'"

उसने बताया कि सारे टेलीफोन काटे जा चुके थे, लेकिन फिर भी सैनिक टेलीग्राफ उपकरणों की बदौलत कारख़ानों और बारिकों से सम्पर्क बना हुआ था...

संदेशवाहक और कमिसार लगातार आ-जा रहे थे। दरवाज़े से बाहर एक दर्जन वालंटियर ख़बर मिलते ही उसे बात की बात मे शहर के दूर से दूर इलाके में पहुंचाने के लिये तैयार खड़े थे। उनमे से जिप्सी की शक्ल के एक आदमी ने, जिसने लेफ़्टीनेंट की वर्दी पहन रखी थी, फ़्रांसीसी ज़बान में कहा, "हम बिल्कुल तैयार हैं, बटन दबाते ही सारी कार्रवाई शुरू हो जायेगी..."

उसी वक़्त पोद्वोइस्की वहां से गुज़रे—दुबले-पतले, दढ़ियल सिविलियन, जिनके मस्तिष्क ने विद्रोह की रणनीति को आकल्पित किया था; अन्तोनोव, दाढ़ी बढ़ी हुई, कालर मैला, रात रात भर जगने से आखें लाल, जैसे वह नशे में हों; नाटे और ठिंगने क्रिलेन्को, जिनके चौड़े-चकले चेहरे पर हंसी हमेशा खेला करती और जो बड़े ज़ोर से हाथ

हिला हिला कर बोलते; और लम्बे-तड़ंगे, दढ़ियल मल्लाह दिबेन्को, जिनका चेहरा शान्त और आवेशहीन था। ये ही थे इस घड़ी के और आने वाली घड़ियों के इतिहास-पुरुष।

नीचे कारखाना समितियों के दफ़्तर में सेरातोव बैठे हुक्मनामों पर दस्तखत कर रहे थे—सरकारी शस्त्रागार को हुक्म दिया जाता है कि हर कारख़ाने को डेढ़ सौ बन्दूकें दी जायें... कारख़ानों के प्रतिनिधि—वे चालीस थे—लाइन में खड़े इंतजार कर रहे थे।

हॉल के अन्दर मेरी मुठभेड़ कुछ छोटे-मोटे बोल्शेविक नेताओं से हो गयी। एक ने—उसका चेहरा जर्द था—मुझे तमंचा दिखा कर कहा, "लडाई छिड़ गई है, हम चाहे कोई क़दम उठायें या न उठायें, दूसरा पक्ष जानता है कि या तो वह हमारा सफाया करे, नहीं तो हम उसका सफाया कर देंगे..."

पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक रात और दिन बराबर चल रही थी। जब मैं बड़े हॉल में दाख़िल हुआ, त्रोत्स्की अपना भाषण समाप्त कर रहे थे:

"हमसे पूछा जाता है कि क्या हम विस्तुप्लेनिये का इरादा रखते हैं। मैं इस सवाल का साफ़ जवाब दे सकता हूं। पेत्रोग्राद सोवियत यह महसूस करती है कि आख़िरकार वह घड़ी आ पहुंची है, जब सत्ता जरूर सोवियतों के हाथ में आनी चाहिये। सत्ता का यह अन्तरण अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा सम्पन्न किया जायेगा। सशस्त्र प्रदर्शन की जरूरत होगी या नहीं, यह... यह उन लोगों पर निर्भर है, जो अखिल रूसी कांग्रेस के काम में रुकावट डालना चाहते हैं...

"हम महसूस करते हैं कि हमारी सरकार, जो अस्थायी मंत्रिमण्डल के सदस्यों के हाथ में है, एक दयनीय और निःसहाय सरकार है, जो सिर्फ़ इस बात का इन्तजार कर रही है कि इतिहास उसे कूड़े-कचरे की तरह उठाकर एक ओर फेंक दे और उसकी जगह एक सच्ची लोकप्रिय सरकार की स्थापना करे। लेकिन हम आज भी, इस घड़ी भी टकराव से बचने की कोशिश कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि अखिल रूसी कांग्रेस अपने हाथों में वह सत्ता और अधिकार ग्रहण करेगी, जिसका आधार है जनता की संगठित स्वतन्त्रता। सरकार चन्द घड़ियों की मेहमान है, लेकिन

अगर वह इन घड़ियों—चौबीस घंटों, अड़तालीस घंटों या बहत्तर घंटों—का इस्तेमाल कर हमारे ऊपर हमला करना चाहती है, तो हम जवाबी हमले करेंगे, हम एक घूंसे की जगह दो लगायेंगे, ईंट का जवाब पत्थर से देंगे!"

उन्होंने घोषणा की—और उनकी घोषणा का तालियों से स्वागत किया गया—कि वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने सैनिक क्रांतिकारी समिति में अपने प्रतिनिधियों को भेजना मंजूर कर लिया है ...

जब सुबह तीन बजे मैं स्मोल्नी से रवाना हो रहा था, मैंने देखा कि दरवाज़े के दोनो ओर दो मशीनगनें बैठायी गयी हैं और सिपाहियों के मज़बूत गश्ती दस्ते फाटकों पर और पास की मोड़ों और नुक्कड़ों पर पहरा दे रहे हैं। बिल शातोव* सीढ़ियों पर दौड़ते हुए आये। "सुना?" उन्होंने चिल्ला कर कहा। "हम निकल पड़े हैं! केरेन्स्की ने युंकरों को हमारे अख़बार 'सोल्दात' और 'राबोची पूत' को बन्द करने के लिये भेजा, लेकिन हमारे सिपाहियों ने जाकर सरकारी ताले और सील-मुहर तोड़ डाले और अब हम अपने दस्तों को पूंजीवादी अख़बारों के दफ़्तरों पर छापा मारने और उनपर क़ब्ज़ा कर लेने के लिये भेज रहे हैं।" उन्होंने बड़े जोश में आकर मेरी पीठ पर एक धौल जमायी और अन्दर दौड़ गये ...

छः तारीख़ की सुबह मुझे सेंसर से कुछ काम था, जिसका दफ़्तर परराष्ट्र मंत्रालय में था। मैंने वहां देखा कि सभी दीवारों पर, सभी जगह पोस्टर लगे हुए हैं, जिनमें जनता से घबराई हुई अपीलें की गयी थीं कि वह "शान्त" रहे। पोल्कोवनिकोव एक प्रिकाज़ (आदेश) के बाद दूसरा प्रिकाज़ जारी कर रहे थे। एक बानगी यह है:

---

*शातोव, व्लादीमिर सेर्गेयेविच, जो अमरीका में "विश्व के औद्योगिक मजदूरों" के एक संगठनकर्त्ता थे और वहां से जून, १९१७ में स्वदेश लौटे। १९१७ में वह पेत्रोग्राद की सैनिक क्रांतिकारी समिति के सदस्य तथा कारख़ाना समितियों की केंद्रीय परिषद् के अध्यक्ष-मंडल के सदस्य थे। बाद में वह कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये।—सं०

मैं सभी सैनिक यूनिटों और दस्तों को हुक्म देता हूं कि वे जब तक
क्षेत्र के स्टाफ की दूसरी हिदायतें न मिलें, अपनी बारिकों के अन्दर र
जो अफसर अपने ऊपर के अफ़सरों के हुक्म के बगैर कोई कार्रवाई
उनका बगावत के लिये कोर्टमार्शल किया जायेगा। मैं सिपाहियों
किन्ही भी दूसरे सगठनों की हिदायतों को तामील करने से एकदम
करता हू...

सुबह अख़बारो ने ख़बर दी कि सरकार ने 'नोवाया रूस', 'जि
स्लोवो', 'राबोची पूत' और 'सोल्दात' नामक अखबारो को बन्द
दिया है और पेत्रोग्राद सोवियत के नेताओ की तथा सैनिक क्रांतिक
समिति के सदस्यों की गिरफ़्तारी का वारंट जारी किया है...

जब मैं द्वोर्त्सोवाया चौक को पार कर रहा था, मैंने देखा मुं
तोपखाने की कई बैटरियां दुलकी चाल से टनटन करती हुई ला
मेहराबी दरवाज़े से निकल कर राजमहल के सामने पक्तिबद्ध हो रही थी
जनरल स्टाफ के विशाल लाल भवन मे गैरमामूली चहलपहल थी। ब
बख़्तरबन्द मोटर-गाड़िया दरवाज़े के सामने खड़ी थी और अफसरो से लदं
मोटरें आ-जा रही थी... सेंसर महोदय इस तरह उत्तेजित थे, जैसे
सरकस के अन्दर एक छोटा सा लड़का होता है। उन्होंने मुझे बताया कि
केरेन्स्की अभी अभी जनतन्त्र की परिषद् मे यह घोषणा करने के लिए गये
हैं कि वह इस्तीफ़ा देने के लिये तैयार हैं। मैं भागा भागा मारिईन्स्की
प्रासाद गया। जब मैं वहा पहुंचा, केरेन्स्की अपनी जोशीली और बहुत
कुछ बेतुकी और बेतरतीब तकरीर ख़त्म कर रहे थे, जिसमे उन्होंने अपना
बचाव और अपने दुश्मनो की सख़्त लानत-मलामत करते हुए बहुत सी
बातें कही थी। उनके भाषण का एक टुकड़ा यह है:

"मैं यहां एक उद्धरण पढ़ूंगा, जो 'राबोची पूत' मे प्रकाशित
होनेवाली इस पूरी लेखमाला के लिये लाक्षणिक है, जिसका लेखक
उल्यानोव-लेनिन नामक एक फरार राज्य-अपराधी है, जिसे हम पकड़ने
की कोशिश कर रहे हैं... इस राज्य-अपराधी ने सर्वहारा को और
पेत्रोग्राद की गैरिसन को न्योता दिया है कि वे १६–१८ जुलाई के
अनुभव को दोहरायें। वह और ऐलान करता है कि परिस्थिति [illegible]

करना जरूरी है... यही नही, दूसरे बोल्शेविक नेताओं ने भी, जो एक के बाद एक कितनी ही मीटिंगों में बोले हैं, फ़ौरन बगावत करने की अपील की है। इस सम्बन्ध में पेत्रोग्राद सोवियत के मौजूदा अध्यक्ष ब्रोन्स्तीन-त्रोत्स्की के क्रिया-कलाप पर विशेष ध्यान देना चाहिये...

"मुझे इस ओर आपका ध्यान दिलाना चाहिये... कि 'राबोची पूत' तथा 'सोल्दात' में प्रकाशित होनेवाली एक पूरी लेखमाला की ध्वनि और शैली हू-बहू वही है, जो 'नोवाया रूस' की है... हमारा साबिका अमुक या अमुक राजनीतिक पार्टी के आन्दोलन से उतना नही पड़ा है, जितना इस बात से कि आबादी के एक हिस्से की राजनीतिक अनभिज्ञता तथा अपराधपूर्ण प्रवृत्तियों का नाजायज इस्तेमाल किया जा रहा है, हमारा साबिक़ा एक ऐसे संगठन से पड़ा है, जिसका उद्देश्य है कि रूस में, चाहे जिस क़ीमत पर भी हो, तबाही और लूटमार का विमूढ़कारी आन्दोलन भड़काया जाये, क्योंकि जन-साधारण की जैसी मानसिक दशा है उसको देखते हुए यह निश्चित है कि पेत्रोग्राद में कोई आन्दोलन छिड़ा नही कि यहां पर हौलनाक कत्ले-आम शुरू हो जायेगा, जिससे स्वतन्त्र रूस के नाम पर सदा के लिये बट्टा लग जायेगा।

"...उल्यानोव-लेनिन ने ख़ुद यह स्वीकार किया है कि रूस में सामाजिक-जनवादियों के घोर वामपंथियों के लिये परिस्थिति बहुत ही अनुकूल है।" (यहां केरेन्स्की ने लेनिन के लेख का निम्नलिखित उद्धरण पढ़ा):

ज़रा सोचिये!.. जर्मन साथियों के एक ही नेता है—लीब्कनेख़्त, उनके पास अख़बार नही हैं, मीटिंग करने की आज़ादी नही है, सोवियतें नही हैं... उन्हें समाज के सभी वर्गों की कट्टर दुश्मनी झेलनी पड़ रही है—और फिर भी जर्मन साथी विद्रोह करने की कोशिश करते है, और हम, जिनके पास दर्जनों अख़बार हैं, जिनके हाथ में अधिकांश सोवियतें है, जिन्हें मीटिंग करने की आजादी हासिल है, हम, जो समस्त संसार के सबसे सुसंगत सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी हैं, क्या हम जर्मन

क्रांतिकारियों और विद्रोही संगठनों का समर्थन करने से इनकार कर सकते हैं ? ..

केरेन्स्की ने आगे कहा :

"इस प्रकार विद्रोह के संगठनकर्ता यह मानते हैं कि इस समय रूस में किसी भी राजनीतिक पार्टी के स्वतन्त्र क्रिया-कलाप के लिये बेहतरीन हालात मौजूद हैं, जबकि रूस का प्रशासन एक ऐसी अस्थायी सरकार कर रही है, जिसका अध्यक्ष इस पार्टी की दृष्टि में 'बलादग्राही' है, एक ऐसा आदमी है, जिसने अपने आपको पूंजीपति वर्ग के हाथ बेच दिया है, वह है मन्त्रि-सभापति केरेन्स्की...

"...विद्रोह के संगठनकर्ता जर्मन सर्वहारा की नहीं, जर्मन शासक वर्गों की मदद करते हैं और वे विल्हेल्म तथा उनके मित्रों के फ़ौलादी घूंसे से चकनाचूर हो जाने के लिये रूसी मोर्चे को अरक्षित छोड़ देते हैं... अस्थायी सरकार को इस बात से मतलब नहीं है कि इन लोगों के उद्देश्य क्या हैं, इस बात से मतलब नहीं है कि वे ऐसा जानबूझकर करते हैं या अनजाने करते हैं; बहरसूरत मैं इस मंच से, अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी तरह समझता हुआ एक रूसी राजनीतिक पार्टी की ऐसी कार्रवाइयों को रूस के प्रति विश्वासघात का नाम देता हूं!

"...मैं न्याय के दृष्टिकोण को ग्रहण करता हूं और मैं प्रस्ताव करता हूं कि फौरन तहकीकात शुरू की जाये और जरूरी गिरफ़्तारियां की जायें।" (वामपथी बेंचों से शोर।) "मेरी बात सुनिये!" उन्होंने कड़क कर कहा। "एक ऐसी घड़ी में, जब जानबूझकर या अनजाने की गई गद्दारी की वजह से राज्य ख़तरे में है, अस्थायी सरकार और दूसरों के साथ मैं ख़ुद रूस की जिन्दगी, इज्ज़त और आजादी से गद्दारी करने के बजाय मारा जाना ज्यादा पसन्द करूंगा..."

इसी समय केरेन्स्की के हाथ में एक पुर्जा दिया गया।

"मुझे अभी वह घोषणा मिली है, जिसे वे रेजीमेंटों में बांट रहे हैं। यह है उसका मज़मून, सुनिये।" वह पढ़ते हैं:

"'मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत ख़तरे में है। हम रेजीमेंटों को आदेश देते हैं कि वे फ़ौरन युद्ध की स्थिति के अनुसार

तैयारियां करें और नये आदेशों की प्रतीक्षा करें। इसमें अगर कोई देर होती है, या अगर इस आदेश का पालन नहीं किया जाता, तो इसे क्रांति के प्रति विश्वासघात समझा जायेगा। क्रान्तिकारी सैनिक समिति। अध्यक्ष के लिये, पोद्वोइस्की। मन्त्री, अन्तोनोव।'

"वास्तव में यह वर्तमान व्यवस्था के विरुद्ध भीड़ को भड़काने, संविधान सभा को छिन्न-भिन्न करने और विल्हेल्म के फ़ौलादी घूसे—उसकी सेना की रेजीमेंटों के सामने मोर्चे को खुला छोड़ देने की कोशिश है...

"मैंने 'भीड़' शब्द इरादतन् कहा है, क्योंकि चेतन जनवादी तत्व तथा उनकी त्से-ई-काह, सभी सैनिक संगठन, स्वतन्त्र रूस की दृष्टि में जो कुछ भी गौरवपूर्ण है वह सब—महान् रूसी जनवाद की सुबुद्धि, आत्मसम्मान तथा अन्तर्विवेक—एक ओर है और ये सब बातें दूसरी ओर...

"मैं यहा कोई बिनती करने नही आया हूं, बल्कि अपना यह दृढ़ विश्वास प्रगट करने आया हूं कि अस्थायी सरकार को, जो इस घड़ी हमारी सद्यः प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा कर रही है, नये रूसी राज्य को, जिसका भविष्य उज्जवल है, सभी का समर्थन प्राप्त होगा, सिवाय उन लोगों के, जिन्होने कभी भी सच्चाई से आंखें चार करने का साहस नही किया है...

"अस्थायी सरकार ने राज्य के प्रत्येक नागरिक की अपने राजनीतिक अधिकारों का उपयोग करने की स्वतन्त्रता का कभी उल्लंघन नहीं किया है... परन्तु अब अस्थायी सरकार... घोषणा करती है: इस घड़ी रूसी राष्ट्र के जिन अंशकों ने, जिन दलों और पार्टियों ने रूसी जनता की स्वतन्त्र इच्छा पर हाथ उठाने की जुर्रत की है, और साथ ही जो जर्मनी के लिये मोर्चे को खुला छोड़ देने की धमकी दे रहे हैं, उन्हे दृढ़ता से समाप्त करना होगा!..

"पेत्रोग्राद की जनता यह समझ ले कि उसके सामने एक ऐसी सत्ता है, जो विचलित होने वाली नही है और शायद आख़िरी वक़्त उन लोगों के हृदय में सुबुद्धि, अन्तर्विवेक और आत्मसम्मान की विजय होगी, जो उन्हे बिल्कुल ही खो नही बैठे हैं..."

जितनी देर यह भाषण चलता रहा, हॉल में इस क़दर शोर होता रहा कि लगता था कान के परदे फट जायेंगे। जब मन्त्रि-सभापति भाषण

समाप्त कर मंच से उतरे—उनका चेहरा जर्द और बदन पसीने से तर हो रहा था—और अपने अफ़सरों के साथ बाहर निकल गये, वामपंथियों और मध्यमार्गियो के बीच से एक के बाद एक वक्ता ने उठकर दक्षिणपंथियों को आड़े हाथो लिया। उनके भाषण क्या थे एक प्रचण्ड गर्जन था। यहा तक कि समाजवादी-क्रांतिकारियों ने भी गोत्स की आवाज़ मे कहा :

"बोल्शेविकों की जनता के असंतोष का नाजायज इस्तेमाल करने की नीति कोरी बकवास है, एक जुर्म है। परन्तु जनता की कितनी ही मांगे हैं, जिन्हे अब तक पूरा नही किया गया है... शान्ति, भूमि और सेना के जनवादीकरण के प्रश्नों का निरूपण इस प्रकार किया जाना चाहिये कि किसी भी सिपाही, किसान या मजदूर को इस बात में तनिक भी सन्देह न रहे कि हमारी सरकार दृढ़ तथा अविचल भाव से इन प्रश्नों को हल करने की कोशिश कर रही है...

"हम और मेन्शेविक लोग मन्त्रिमण्डल में संकट पैदा करना नही चाहते, और हम अपनी पूरी ताकत से अपने ख़ून का आख़िरी क़तरा देकर भी अस्थायी सरकार को बचाने के लिये तैयार हैं—बशर्ते कि इन सभी उत्कट प्रश्नों के बारे में अस्थायी सरकार स्पष्ट और दो टूक शब्दो मे वह बात कहे, जिसका लोग इतनी बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे हैं..."

और तब मार्तोव गुस्से में :

"मन्त्रि-सभापति के ये शब्द, जिन्होंने एक ऐसे वक़्त 'भीड़' की बात की है, जब सवाल सर्वहारा तथा सेना के महत्वपूर्ण भागों के आन्दोलन का है—चाहे उन्हें गलत दिशा में ले जाया जा रहा है—ऐसे वक़्त मन्त्रि-सभापति के ये शब्द और कुछ नहीं गृहयुद्ध के लिये एक उकसावा है।"

वामपंथियों ने जो प्रस्ताव पेश किया, सभा ने उसे स्वीकृत किया। वस्तुतः इसका अर्थ था मन्त्रिमण्डल में अविश्वास का वोट। प्रस्ताव निम्नलिखित है :

१. पिछले कुछ दिनों से जिस सशस्त्र प्रदर्शन की तैयारिया की जा रही हैं, उसका उद्देश्य है सरकार का तख़्ता उलट देना, उससे गृहयुद्ध

छिड़ जाने का ख़तरा पैदा हो गया है और दंगा-फ़साद तथा प्रतिक्रांति के लिये और यमदूत सभाइयों जैसी प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों के एकजुट होने के लिये अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न हो गयी हैं, जिसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि संविधान सभा को बुलाना असम्भव हो जायेगा, सैनिक पराजय होगी, शांति का नाश होगा, देश का आर्थिक जीवन ठप हो जायेगा और रूस मटियामेट हो जायेगा;

२. जरूरी कार्रवाइयों मे देर होने के कारण और उन वस्तुगत परिस्थितियों के कारण भी इस आन्दोलन के लिये अनुकूल भूमि तैयार हुई है, जो युद्ध तथा सामान्य अव्यवस्था के फलस्वरूप उत्पन्न हुई हैं। इसलिए सबसे ज्यादा जरूरी काम यह है कि भूमि को तत्काल किसानों की भूमि समितियों के हाथ मे सौंपने के लिए एक आज्ञप्ति जारी की जाये और मित्र-राष्ट्रों से शान्ति की अपनी शर्तों की घोषणा करने और शान्ति-वार्ता आरम्भ करने का प्रस्ताव करके अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक ज़ोरदार कार्रवाई करने की नीति अपनाई जाये;

३. अराजकतावादी प्रदर्शनों और फसादी आन्दोलनों से पार पाने के लिए यह लाज़िमी है कि इन आन्दोलनों को कुचलने के लिए फ़ौरन कार्रवाई की जाये और इस उद्देश्य से पेत्रोग्राद में नगरपालिका तथा क्रान्तिकारी जनवादी निकायों के प्रतिनिधियों को लेकर एक सार्वजनिक सुरक्षा समिति स्थापित की जाये, जो अस्थायी सरकार से सम्पर्क रखती हुई कार्य करेगी...

यह एक दिलचस्प बात है कि सभी मेन्शेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी इस प्रस्ताव के समर्थन में एकजुट थे... परन्तु जब केरेन्स्की ने उसे पढ़ा, उन्होंने उसका स्पष्टीकरण करने के लिए अव्क्सेन्त्येव को शिशिर प्रासाद में बुला भेजा। उन्होंने अव्क्सेन्त्येव से अनुरोध किया कि अगर इस प्रस्ताव द्वारा अस्थायी सरकार में अविश्वास प्रगट किया गया है, तो वह एक नया मन्त्रिमण्डल बनायें। "समझौतापरस्तों" के नेता दान, गोत्स और अव्क्सेन्त्येव ने अपना आख़िरी समझौता सम्पन्न किया... उन्होंने केरेन्स्की से सफ़ाई देते हुए कहा कि प्रस्ताव का अर्थ सरकार की आलोचना करना नहीं है!

मोर्स्काया मार्ग तथा नेव्स्की मार्ग के नुक्कड़ पर संगीनधारी सिपाहियों के जत्थे सभी प्राइवेट मोटर-गाड़ियों को रोक रहे थे, उनमें सवार लोगों को उतार कर गाड़ियों को शिशिर प्रासाद की ओर भेज रहे थे। उन्हें देखने के लिये ख़ासा मजमा इकट्ठा हो गया था। यह किसी को नहीं मालूम था कि ये सिपाही सरकार के हैं या सैनिक क्रान्तिकारी समिति के। कज़ान गिरजाघर के सामने भी यही बात हो रही थी और गाड़ियों को नेव्स्की मार्ग पर पीछे लौटाया जा रहा था। बन्दूकें लिये और उत्तेजित भाव से ज़ोर ज़ोर से हंसते हुए पांच-छः मल्लाह वहां पहुंच गये और दो सिपाहियों से बातचीत करने लगे। उनकी टोपियों की पट्टियों पर बाल्टिक बेड़े के प्रमुख बोल्शेविक क्रूज़र, "अव्रोरा" और "ज़ार्या स्वोबोदी" के नाम अंकित थे। एक मल्लाह ने कहा: "क्रोंश्तादत के लोग आ रहे हैं!.." यह कहना ऐसा ही था, जैसे १७९२ में पेरिस की सड़कों पर किसी का यह कहना: "मार्सेल्स के लोग आ रहे हैं!" क्योंकि क्रोंश्तादत में २५ हज़ार मल्लाह थे, सबके सब पक्के बोल्शेविक और मौत से बेख़ौफ़...

'राबोची इ सोल्दात' अभी अभी निकला था। उसका मुखपृष्ठ पूरा का पूरा एक घोषणा से भरा था, जिसे बड़ी बड़ी सुर्ख़ियों के साथ प्रकाशित किया गया था:

सैनिको! मज़दूरो! नागरिको!

पिछली रात जनता के दुश्मनों ने हमला शुरू कर दिया। सैनिक स्टाफ़ के कोर्नीलोवपंथी शहर के बाहरी हिस्सों से युंकरों और वालंटियर-टुकड़ियों को ले आने की कोशिश कर रहे हैं। ओरानियेनबाउम के युंकरों ने तथा त्सारस्कोये सेलो के वालंटियरों ने बाहर आने से इनकार कर दिया है। पेत्रोग्राद सोवियत पर प्रबल विश्वासघाती आक्रमण करने का विचार किया जा रहा है... प्रतिक्रान्तिकारियों का अभियान सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के विरुद्ध एक ऐसे समय निर्देशित है, जब उसका अधिवेशन होने जा रहा है। वह संविधान सभा के विरुद्ध, जनता के विरुद्ध निर्देशित है। पेत्रोग्राद सोवियत क्रान्ति की हिफ़ाज़त कर [illegible]। सैनिक क्रान्तिकारी समिति के निर्देश में [illegible] के आक्रम[illegible]

करने की तैयारी हो रही है। पेत्रोग्राद की समूची गैरिसन और सर्वहारा वर्ग जनता के दुश्मनों पर क़रारी चोट करने के लिये तैयार है।

सैनिक क्रान्तिकारी समिति आदेश देती है:

१. सोवियत कमिसारों के साथ सभी रेजीमेंटों, डिवीज़नों और जंगी जहाज़ों की समितियों तथा सभी क्रान्तिकारी संगठनों की बैठकें लगातार चलती रहें, और वे षड्यन्त्रकारियों की योजनाओं के बारे में समस्त सूचनाओं को एकत्र करें।

२. समिति की अनुमति के बिना एक भी सिपाही अपनी डिवीज़न को न छोड़े।

३. हर सैनिक यूनिट से दो तथा हर वार्ड-सोवियत से पांच प्रतिनिधि अविलम्ब स्मोल्नी भेजे जायें।

४. पेत्रोग्राद सोवियत के सभी सदस्यों तथा अखिल रूसी कांग्रेस के सभी प्रतिनिधियों को एक असाधारण सभा के लिये फ़ौरन स्मोल्नी आने का बुलावा भेजा जाता है।

प्रतिक्रान्ति ने अपना ज़हरीला फन उठाया है।

सिपाहियों और मज़दूरों की सभी जीतों और आशाओं के लिये भारी ख़तरा पैदा हो गया है।

परन्तु क्रान्ति की शक्तियां शत्रु की शक्तियों से कहीं ज्यादा हैं।

जनता का ध्येय शक्तिशाली हाथों में है। षड्यन्त्रकारियों को कुचल दिया जायेगा।

दुविधा या संशय को फटकने मत दीजिये! अविचल दृढ़ता, अनुशासन तथा संकल्प से काम लीजिये!

इंक़लाब जिन्दाबाद!

सैनिक क्रान्तिकारी समिति

स्मोल्नी में, जो तूफानी घटनाओं का केन्द्र बना हुआ था, पेत्रोग्राद सोवियत की लगातार बैठक हो रही थी। सोवियत के सदस्य नींद से बेबस हो वहीं फ़र्श पर लुढ़क जाते, और फिर उठ कर बहस में हिस्सा लेने लगते। त्रोत्स्की, कामेनेव, वोलोदार्स्की एक दिन के अन्दर छः घंटे, आठ घंटे, बारह घंटे बोले होंगे...

मैं पहली मंज़िल पर १८ नम्बर के कमरे में गया, जहां बोल्शेविक प्रतिनिधियों की एक अन्तरंग सभा हो रही थी। एक कड़कती हुई आवाज़ लगातार गूज रही थी, लेकिन बोलने वाला भीड़ की वजह से दिखाई नही दे रहा था। "समझौतापरस्तों का कहना है कि हम जनता से कट गये हैं। उनकी बात पर ध्यान न दीजिये। वे अनिवार्यतः हमारे साथ खिंच आयेंगे, नही तो अपने अनुयायियों से हाथ धोयेंगे..."

कहते कहते उसने हाथ ऊंचा कर एक पुर्ज़ा दिखाया। "हम उन्हें खींच रहे हैं! यह देखिये, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों का एक सन्देश अभी अभी पहुंचा है! वे कहते हैं कि वे हमारी कारंवाई की निन्दा करते हैं, परन्तु यदि सरकार हमारे ऊपर हमला करती है, तो वे सर्वहारा के ध्येय का विरोध नही करेंगे!" लोग मारे ख़ुशी के चिल्लाने और नारे लगाने लगे...

रात होते ही स्मोल्नी भवन का बड़ा हॉल सिपाहियों और मजदूरों से भर उठा—एक विशाल धूमर जनपुंज, जिसकी आवाज धुएं के नीले कुहासे में गहरी गूंज रही थी। पुरानी त्सी-ई-काह ने अन्ततोगत्वा उस नयी कांग्रेस के प्रतिनिधियों का स्वागत करने का निश्चय किया था, जिसके होने का मतलब था उसका अपना सर्वनाश और संभवतः जिस क्रान्तिकारी व्यवस्था का उन्होंने निर्माण किया था उसका भी सर्वनाश। लेकिन अभी जो मीटिंग शुरू हो रही थी, उसमें त्सी-ई-काह के सदस्य ही वोट दे सकते थे...

जब गोत्स ने सभापति का आसन ग्रहण किया और दान बोलने के लिये उठे, आधी रात गुज़र चुकी थी। हॉल में खामोशी थी, मगर ऐसी तनावभरी खामोशी, जिससे डर ही लगता है।

"ये घड़ियां, जिनमें हम रह रहे हैं, बेहद ख़तरनाक हैं," दान ने कहा, "दुश्मन पेत्रोग्राद के दरवाज़े पर खड़ा है, जनवादी शक्तियां उसका मुकाबला करने के लिये संगठित होने की कोशिश कर रही हैं, और फिर भी हम राजधानी की सड़कों पर खून-ख़राबा होने का इन्तज़ार

कर रहे हैं, ग्रकाल हमारी यकरंगी सरकार को ही नहीं, स्वयं क्रान्ति को अपना ग्राम बनाना चाहती है...

"जन-साधारण बेहद ऊबे-खीझे ग्रौर थके-मांदे हैं। क्रान्ति में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। अगर बोल्शेविकों ने कोई हंगामा शुरू किया, तो वे क्रान्ति की मौत बुलायेंगे..." (ग्रावाजें – "यह सरासर झूठ है!") "बोल्शेविकों के साथ प्रतिक्रान्तिकारी लोग भी दंगा-फसाद ग्रौर मारकाट शुरू करने के इन्तजार में हैं... ग्रगर कोई भी विस्तुप्लेनिये होती है, तो फिर संविधान सभा होने वाली नहीं है..." (ग्रावाजें – "झूठ! शर्म!")

"युद्ध-क्षेत्र में होती हुई भी पेत्रोग्राद की गैरिसन सैनिक स्टाफ के हुक्म की तामील न करे – यह बात हरगिज मानी नहीं जा सकती... ग्राप के लिये जरूरी है कि ग्राप स्टाफ के ग्रौर ग्रापके द्वारा निर्वाचित त्से-ई-काह के ग्रादेशों का पालन करें। समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में – इस नारे का ग्रर्थ है सर्वनाश! चोर ग्रौर लुटेरे उस घड़ी का इन्तजार कर रहे हैं, जब वे लूटमार ग्रौर ग्रागजनी शुरू कर सकते हैं... जब ग्राप को इस किस्म के नारे दिये जाते हैं, जैसे 'मकानों के ग्रन्दर घुस जाग्रो, पूंजीपतियों से उनके जूते व कपड़े छीन लो...'" (शोर, ग्रावाजें – "झूठ है! ऐसा कोई नारा नहीं दिया गया है!") "हो सकता है शुरूग्रात ग्रौर तरीके से हो, लेकिन खातमा इसी ढंग से होगा!

"त्से-ई-काह को, जो भी कार्रवाई वह करना चाहे, करने का पूरा ग्रधिकार है ग्रौर उसकी ग्राज्ञा का पालन होना ही चाहिये... हम संगीनों से नहीं डरते... त्से-ई-काह अपने शरीर की ग्राड देकर क्रांति की रक्षा करेगी..." (ग्रावाजें – "शरीर कहां है, वह तो बहुत पहले मर चुका!")

शोर-शराबा उसी तरह जारी था, ग्रौर उसमें दान की चीखती हुई ग्रावाज मुश्किल से सुनाई दे सकती थी। वह मेज पर जोर जोर से हाथ पटक कर कह रहे थे, "जो लोगों को इसके लिये उकसा रहे हैं, वे एक बहुत बड़ा जुर्म कर रहे हैं!"

एक ग्रावाज – "ग्रापने बहुत पहले जुर्म किया, जब ग्रापने सत्ता पर ग्रधिकार किया ग्रौर फिर उसे पूंजीपति वर्ग के हवाले कर दिया!"

सभापति गोत्स ने घंटी बजाते हुए कहा: "चुप रहिये, वरना मैं आपको बाहर निकलवा दूंगा!"

एक आवाज – "ज़रा कोशिश करके देखिये तो सही!" तालियां और सीटियां।

"अब शान्ति सम्बन्धी अपनी नीति के बारे में दो शब्द।" (हंसी) "दुर्भाग्य की बात है कि रूस अब और लड़ाई को जारी रखने का समर्थन नही कर सकता। शान्ति स्थापित होने जा रही है, परन्तु वह स्थायी शान्ति न होगी, जनवादी शान्ति न हागी... आज जनतन्त्र की परिषद् मे हमने ख़ून-ख़राबे से बचने की गरज़ से एक प्रस्ताव पास किया, जिसके द्वारा हमने मांग की कि भूमि भूमि समितियों के हवाले की जाये और शान्ति-वार्ता तुरत शुरू की जाये..." (**हंसी, आवाजें** – "अब ऐसे प्रस्तावो का वक़्त बीत चुका है!")

और तब बोल्शेविकों की ओर से त्रोत्स्की बोलने के लिये खड़े हुए- उनका प्रचण्ड जयघोष से स्वागत किया गया। लोग खड़े हो गये और तालियां पीटने लगे। उनके दुबले, तीखे चेहरे पर द्वेषपूर्ण व्यंग्य का ऐसा भाव था कि इस घड़ी उनकी मुखाकृति सचमुच दानवीय प्रतीत हो रही थी।

"दान की कार्यनीति से सिद्ध हो गया है कि विशाल जन-समुदाय - मूढ और जड़ जन-समुदाय – बिल्कुल उन्ही के साथ है!" (**हंसी के ठहाके**) उन्होंने सभापति की ओर बड़े नाटकीय ढंग से मुड़कर कहा, "जब हमने किसानों को भूमि देने की बात की, आपने उसकी मुख़ालफ़त की। हमने किसानों से कहा, 'अगर वे आपको भूमि नही देते, तो आप ख़ुद उसपर कब्जा कर लीजिये!' और किसानों ने हमारी सलाह को मान लिया। हमने छ: महीने पहले जो कहा आप आज उसका समर्थन करने चले हैं...

"मैं नहीं समझता कि केरेन्स्की ने अपने आदर्शों से प्रेरित होकर सेना में मृत्यु-दण्ड स्थगित करने का आदेश दिया है। मेरा ख़्याल है कि पेत्रोग्राद की गैरिसन ने, जिसने उनका हुक्म मानने से इनकार किया, केरेन्स्की को कायल किया है।

"आज दान के ऊपर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होंने जनतन्त्र की परिषद् मे एक ऐसा भाषण किया, जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि

वह प्रच्छन्न बोल्शेविक है... वह वक़्त भी आ सकता है, जब दान कहेंगे कि सोलह और अठारह जुलाई के विद्रोह में क्राति के बेहतरीन सपूतों ने भाग लिया... जनतन्त्र की परिषद् में दान के आज के प्रस्ताव में सेना में अनुशासन लागू करने का कोई ज़िक्र नही था, हालांकि उनकी पार्टी के प्रचार में इस बात का आग्रह किया जा रहा है...

"नही। पिछले सात महीनों के इतिहास ने यह दिखा दिया है कि आम जनता ने मेन्शेविकों का साथ छोड़ दिया है। मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों ने कैडेटों को परास्त किया, लेकिन जब उनके हाथ में सत्ता आई, उन्होंने उसे उन्ही कैडेटों के हवाले कर दिया...

"दान आपसे कहते हैं कि आपको विद्रोह करने का अधिकार नहीं है। विद्रोह सभी क्रांतिकारियों का अधिकार है! जब पददलित जन-साधारण विद्रोह करते हैं, यह उनका अधिकार होता है..."

और तब लम्बे मुंहवाले मुंहफट लीबेर बोलने के लिये खड़े हुए। लोगों ने उनका हंसी और 'हाय हाय' से स्वागत किया। लीबेर ने कहा:

"एंगेल्स और मार्क्स ने कहा है कि सर्वहारा वर्ग को सत्ता हाथ में लेने का तब तक कोई अधिकार नही है, जब तक कि वह उसके लिये तैयार न हो गया हो। इस जैसी पूजीवादी क्राति में... जन-साधारण का सत्ता पर कब्ज़ा करने का अर्थ है क्राति का दुःखद अन्त... एक सामाजिक-जनवादी सिद्धान्तकार के नाते त्रोत्स्की स्वयं उस बात में विश्वास नही करते, जिसका आज वह यहां पर समर्थन कर रहे है..." (आवाज़ें – "बस करो! लीबेर मुर्दाबाद!")

फिर मार्तोव का भाषण, जिसमें बराबर खलल डाला गया:

"अन्तर्राष्ट्रीयतावादी लोग जनवादी तत्वों के हाथ में सत्ता के अन्तरण के विरोधी नही हैं, परन्तु वे बोल्शेविकों के तरीकों का अनुमोदन नहीं करते। अभी वह घड़ी नही आई है कि सत्ता पर क़ब्ज़ा किया जाये..."

दान फिर बोलने के लिये खड़े हुए और उन्होंने सैनिक क्रांतिकारी समिति द्वारा 'इज़्वेस्तिया' अख़बार के दफ़्तर पर क़ब्ज़ा करने और उसका सेंसर करने के लिये एक कमिसार के भेजे जाने के प्रति घोर प्रतिवाद प्रगट किया। दान की इस बात पर बेतरह शोर होने लगा। मार्तोव ने बोलने की कोशिश की, लेकिन उनकी बात सुनी नही जा

सकी। पूरे हॉल मे सेना तथा बाल्टिक बेड़े के प्रतिनिधि उठ खड़े हुए और उन्होंने चिल्ला चिल्ला कर कहना शुरू किया कि सोवियत ही उनकी सरकार है।

अन्धाधुन्ध गड़बड़ी के बीच एरलिख़* ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमे मजदूरों और सिपाहियों से अपील की गयी थी कि वे शान्त रहे और प्रदर्शन के भड़कावे में न आयें, अविलम्ब एक सार्वजनिक सुरक्षा समिति की स्थापना आवश्यक मानी गयी थी और अस्थायी सरकार से मांग की गयी थी कि वह भूमि को किसानों के हाथ में अन्तरित करने के लिये तुरन्त आज्ञप्तियां जारी करे और शान्ति-वार्ता शुरू करे...

इस पर वोलोदार्स्की उछल पड़े और उन्होंने कड़क कर कहा कि एक ऐसे वक़्त, जब कांग्रेस होने ही वाली है, त्से-ई-काह को कोई अधिकार नही है कि वह कांग्रेस के कर्तव्यों को अपने ऊपर ओढे। उन्होंने कहा कि त्से-ई-काह वस्तुतः मर चुकी है और यह प्रस्ताव उसकी क्षीण होती हुई शक्ति को थूनी लगा कर किसी तरह बचा लेने की एक चाल भर है...

"जहां तक हम बोल्शेविकों का प्रश्न है, हम इस प्रस्ताव पर वोट नही देंगे!" इस पर सारे बोल्शेविक हॉल से बाहर चले गये और प्रस्ताव पास कर दिया गया...

सुबह चार बजे के क़रीब बाहरी हॉल मे मेरी मुलाकात जोरिन से हुई, जिनके कंधे से एक राइफ़ल लटक रही थी।

"हम कारंवाई शुरू कर रहे है!"[7] उन्होने शान्त भाव से, परन्तु साथ ही बड़े संतोष से कहा, "हमने उप-न्यायमंत्री तथा धर्म-मन्त्री को हिरासत में ले लिया है और अब वे नीचे कैद की कोठरी में हैं। एक रेजीमेंट टेलीफोन एक्सचेंज पर कब्जा करने के लिये बढ़ रही है, दूसरी तारघर पर और तीसरी राजकीय बैंक पर। लाल गार्ड के दल सड़कों पर निकल आये है..."

स्मोल्नी की सीढ़ियों पर, अंधेरे और सर्दी में हमने पहली बार लाल गार्डों को देखा—मज़दूरों के कपड़े पहने और संगीनदार बन्दूकें लिये

---

*एरलिख़—एक मेन्शेविक नेता।—सं०

नौजवान, जो एक झुंड में खड़े थे और घबराये से एक दूसरे से बात कर रहे थे।

दूर पश्चिम में बेहिम छतों के ऊपर से छिटफूट गोली छूटने की आवाज़ें आ रही थी। वहां नेवा के तट पर युंकर लोग पुल उटाने की कोशिश कर रहे थे, ताकि विबोर्ग बस्ती के मिल-मज़दूर और सिपाही बीच शहर में आकर सोवियत शक्तियों के साथ मिलने न पायें, लेकिन क्रोंश्ताद्त के मल्लाह उन्हें फिर गिरा रहे थे...

हमारे पीछे विशाल स्मोल्नी भवन रोशनी से जगमग मधुमक्खियों के एक विराट छत्ते की तरह गुंजार कर रहा था...

चौथा अध्याय

अस्थायी सरकार का पतन

बुद्धवार, ७ नवम्बर, मैं सोकर बहुत देर से उठा। जब मैं नेव्स्की मार्ग पहुंचा, पीटर-पाल क़िले में दोपहर की तोप दागी गयी। उस दिन ठंड तो थी ही, साथ मे सीलन भी थी। राजकीय बैंक के सामने बन्द दरवाज़ों के बाहर कुछ सिपाही हाथ में संगीनदार बन्दूकें लिये खड़े थे।

"आप लोग किस तरफ़ हैं?" मैंने पूछा, "सरकार की तरफ़?"

"अब कोई सरकार-वरकार नही है," एक सिपाही ने हंस कर कहा। "स्लावा बोगु! ख़ुदा की शान है!" मैं उससे और कोई बात नहीं निकाल सका...

नेव्स्की मार्ग से ट्राम-गाड़िया आ-जा रही थी और उनके बाहर पैर टिकाने की कोई ऐसी जगह न थी, जहां मर्द, औरत और छोटे बच्चे तक लटके हुए नहीं चल रहे थे। दूकाने खुली थी और ऐसा लगता था कि सड़कों पर लोगों मे बेचैनी कल से भी कम थी। रात में दीवालो पर विद्रोह के खिलाफ नयी अपीलों की एक पूरी "फ़सल" तैयार हो चुकी थी—किसानो के नाम, मोर्चे पर सिपाहियों के नाम, और पेत्रोग्राद के मजदूरों के नाम अपीलें। एक बानगी यह है:

पेत्रोग्राद की नगर दूमा की ओर से

नगर दूमा नागरिकों को सूचना देती है कि छ: नवम्बर को एक असाधारण बैठक में दूमा ने केन्द्रीय तथा हल्क़ों की दूमाओं के सदस्यों को तथा निम्नलिखित क्रांतिकारी जनवादी संगठनों के प्रतिनिधियों को लेकर एक सार्वजनिक सुरक्षा समिति गठित की: **त्से-ई-काह**, किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी कार्यकारिणी समिति, सैनिक संगठन, **त्सेन्त्रोफ़्लोत**, मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत (!), ट्रेड-यूनियन परिषद् तथा अन्य संगठन।

सार्वजनिक सुरक्षा समिति के सदस्य नगर दूमा के भवन में ड्यूटी पर तैनात रहेंगे। उनके टेलीफ़ोन नम्बर ये हैं—१५-४०, २२३-७७, १३८-३६।

७ नवम्बर, १९१७

यद्यपि उस समय मैंने यह बात नही समझी, यह सूचना वस्तुत: बोलशेविकों के ख़िलाफ़ दूमा की युद्ध-घोषणा थी।

मैंने 'राबोची पूत' की एक प्रति ख़रीदी, जिसके अलावा कोई दूसरा अख़बार बिकता हुआ दिखाई नही दे रहा था, मगर थोड़ी ही देर बाद मैंने एक सिपाही को ५० कोपेक देकर 'देन' की एक पढ़ी हुई प्रति ख़रीदी। 'रूस्काया वोल्या' के दफ़्तर पर क़ब्ज़ा करके वहां बड़े आकार के क़ाग़ज़ पर छापे गये इस बोलशेविक अख़बार में बड़ी बड़ी सुर्ख़ियां दी गयी थी: "**समस्त सत्ता मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों की सोवियतों के हाथ में! शान्ति! रोटी! जमीन!**" सम्पादकीय लेख ज़िनोव्येव* के नाम से निकला था, जो फ़रारी की हालत में लेनिन के साथ थे। यह लेख इस प्रकार शुरू हुआ था:

---

*यह एक गलती है। जिस लेख से अभिप्राय है वह ७ नवंबर, १९१७ को 'राबोची पूत' में निकला था, लेकिन उसके साथ लेखक का नाम न था। उसका लेखक अज्ञात है।—सं०

हर सिपाही, हर मजदूर, हर सच्चा समाजवादी, हर ईमानदार जनवादी इस बात को समझता है कि मौजूदा परिस्थिति में केवल दो विकल्प हैं।

या तो राज्य-सत्ता पूंजीपति-जमींदार गिरोह के हाथ में बनी रहे और इसका मतलब होगा मजदूरों, किसानों और सिपाहियों पर हर तरह का दमन, लड़ाई का जारी रहना और अनिवार्यतः भूख तथा मौत...

या फिर सत्ता क्रांतिकारी मजदूरों, सिपाहियों और किसानों के हाथ में अन्तरित की जाये, जिसका अर्थ होगा सामन्ती अत्याचार का पूर्ण उन्मूलन, पूंजीपतियों की फ़ौरन रोक-थाम और एक न्यायपूर्ण शान्ति-संधि की अविलम्ब प्रस्तावना। ऐसी स्थिति में किसानों के लिये भूमि सुनिश्चित है, मजदूरों के लिये उद्योग पर नियन्त्रण सुनिश्चित है, भूखों के लिये रोटी सुनिश्चित है और इस निरर्थक युद्ध का अन्त सुनिश्चित है।

'देन' में रात की हलचल की कुछ छिटफूट ख़बर छपी थी—टेलीफ़ोन एक्सचेंज, बाल्टिक स्टेशन और तारघर पर बोल्शेविकों का क़ब्ज़ा; पीटरहोफ़ के युंकरों का पेत्रोग्राद पहुंचने में असमर्थ होना; कज्ज़ाकों की डांवांडोल स्थिति; कुछ मन्त्रियों की गिरफ़्तारियां; नगर-मिलिशिया के अध्यक्ष मेयेर को गोली मार दिया जाना; गिरफ़्तारियां और बदले में दूसरी ओर गिरफ़्तारियां, विरोधी गश्ती सिपाहियों, युंकरों और लाल गार्डों के बीच मुठभेड़ें[1]।

मोस्कोया मार्ग के नुक्कड़ पर मैं मेन्शेविक-ओबोरोनेत्स (प्रतिरक्षावादी) तथा मेन्शेविक पार्टी की सैनिक शाखा के मन्त्री कप्तान गोम्बेर्ग से टकरा गया। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या सचमुच ही बगावत हुई है, उन्होंने क्लान्त भाव से अपने कंधों को सिकोड़ कर कहा, "चोर्त ज़नायेत! (शैतान जानता है!) हां, बोल्शेविक शायद राज्य-सत्ता पर क़ब्ज़ा कर सकते हैं, परन्तु वे उसे तीन दिन से ज्यादा अपने हाथ में नहीं रख सकेंगे। उनके पास सरकार चलाने के लिये आदमी नहीं हैं।

शायद उन्हें चलाने की कोशिश करने देना अच्छा होगा। इससे उनकी मिट्टी ही पलीद होगी..."

सेन्ट इसाक के चौक के कोने मे जो सैनिक होटल था, उसकी हथियारबन्द मल्लाहों ने नाकेबंदी कर रखी थी। होटल के हॉल मे बहुत से सजीले, नौजवान अफ़सर चहलक़दमी कर रहे थे या आपस में भुनभुना कर कुछ कह रहे थे; मल्लाह उन्हें वहां से बाहर जाने नही दे रहे थे।

एकाएक बाहर गोली छूटने की तेज आवाज आयी और उसके बाद छिटफूट गोलीबारी की आवाजें। मैं बाहर दौड़ा। मारिईन्स्की प्रासाद की तरफ, जहां रूसी जनतन्त्र की परिषद् की बैठक हुई थी, कोई असाधारण बात हो रही थी। वहा सिपाही एक आड़ी रेखा मे वसीह चौक के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पंक्तिबद्ध खड़े थे, हाथ मे राइफले लिये, गोली छोड़ने के लिये तैयार, होटल की छत की ओर निगाह उठाये।

"**प्रोवोकात्सिया!** (उकसावेबाजी) हमारे ऊपर गोली चलायी गई है!" एक सिपाही ने गुस्से से कहा और दूसरा दरवाजे की तरफ़ दौड़ा।

प्रासाद के पश्चिमी कोने में एक वडी वख़्तरबंद गाड़ी खड़ी थी। गाड़ी पर एक लाल झंडा फहर रहा था और उसपर ताज़ा पेन्ट किये हुए लाल अक्षरों में लिखा था: "सो० रा० सो० दे०" (**सोवेत राबोचिख़ इ सोल्दातस्किख़ देपुतातोव**); वख़्तरवद गाड़ी की सभी तोपें सेन्ट इसाक की ओर सीधी की हुई थी। नोवाया ऊलित्सा (नयी सड़क) के मुहाने पर एक बैरिकेड वनाया गया था—वक्सों, पीपों, एक पुरानी स्प्रिंगदार चारपाई, एक सगड़—इन सबका इस्तेमाल किया गया था। मोइका घाट के किनारे को लक्कड़-पत्थर जमा करके रोक दिया गया था। पास की एक लकड़ी की टाल से लकड़ियां लेकर इमारत के सामने एक रेलिंग सी वनाई जा रही थी...

"क्या लड़ाई होने जा रही है?" मैंने पूछा।

"जल्द, वहुत जल्द," एक सिपाही ने उत्तेजित स्वर मे कहा, "आप यहां से चले जायें, साथी, नही तो आपको चोट लग जायेगी।

वे उधर से आयेंगे," और उसने एडमिरेल्टी भवन की ओर इशारा किया।

"कौन आयेंगे ?"

"इसके बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता, भाई," उसने जमीन पर थूकते हुए कहा।

प्रासाद के द्वार पर सिपाहियों और मल्लाहों की एक भीड़ जमा थी। एक मल्लाह बता रहा था कि रूसी जनतन्त्र की परिषद् का अन्त कैसे हुआ: "हम वहां घुस गये और हमने सभी दरवाज़ों को घेरकर साथियों को खड़ा कर दिया। सभापति की गद्दी पर जो प्रतिक्रांतिकारी कोर्नीलोवपंथी बैठा था, मैंने उसके पास जाकर कहा, 'परिषद् बन्द करो और सीधे घर भाग जाओ!'"

इस पर हंसी छूट पड़ी। मैं अपने कई तरह के मिले-जुले कागज़ात दिखलाता हुआ किसी तरह प्रेस गैलरी के दरवाज़े तक पहुंच गया। वहां एक लंबे-तड़ंगे हंसमुख मल्लाह ने मुझे रोका। जब मैंने उसे अपना पास दिखाया, उसने बस इतना ही कहा, "साथी, अगर आप ख़ुद सेन्त मिखाईल होते, तो भी यहां से गुजर नहीं सकते थे!" दरवाज़े के शीशे से मैं देख सकता था, एक फ़्रांसीसी संवाददाता, जिसका चेहरा विकृत हो रहा था, जोर जोर से हाथ हिला कर अपनी बात समझाने की कोशिश कर रहा था। उसे अन्दर बन्द कर दिया गया था...

सामने एक नाटे क़द का भूरी मूछों वाला आदमी जनरल की वर्दी पहने खड़ा था, जिसके चारों ओर सिपाहियों का झुण्ड जमा था। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था।

"मैं हूं जनरल अलेक्सेयेव," उसने चिल्लाकर कहा। "आपके ऊपर का अफ़सर होने के नाते और जनतन्त्र की परिषद् का सदस्य होने के नाते, मैं मांग करता हूं कि मुझे अन्दर जाने दिया जाये!" सन्तरी ने अपना माथा खुजलाया और वह परेशानी की मुद्रा में आंख चुराये एक ओर देखता रहा। उसने एक अफ़सर की ओर इशारा किया, जो उधर ही आ रहा था। अफ़सर ने जब देखा कि उसके सामने कौन खड़ा है, वह घबरा उठा और इसके पहले कि उसे यह ख़्याल हो कि वह कर क्या रहा है, उसने उसे सलाम ठोंका।

स्मोल्नी संस्थान का प्रवेश-द्वार, जहां सिपाहियों और लाल गार्डों का पहरा था।

लाल गार्ड स्मोल्नी के लिए दिये गये पासों को देख रहे हैं।

"वाशे विसोकोप्रेवोस्ख़ोदीतेल्स्त्वो" (महामान्य), उसने हकलाते हुए पुरानी हुकूमत के तर्ज़ पर कहा, "प्रासाद के ग्रन्दर जाने की सख्त मनाही है। मुझे कोई हक नही है..."

तभी एक मोटर-गाड़ी उधर ग्रायी, ग्रौर मैंने देखा ग्रन्दर गोत्स बैठे जाहिरा बड़े विनोद के भाव से मुस्कुरा रहे थे। चन्द मिनट बाद एक ग्रौर गाड़ी ग्रायी—ग्रस्थायी सरकार के गिरफ़्तार सदस्यों से लदी हुई। ग्रगली सीट पर हथियारबन्द सिपाही थे। उसी वक़्त सैनिक क्रान्तिकारी समिति के लाटवियाई सदस्य पेटेर्स जल्दी जल्दी चौक को पार कर वहां पहुंचे।

"मेरा ख़्याल था ग्रापने पिछली रात को ही इन साहवान को पकड़ लिया था," मैंने उनकी ग्रोर इशारा करते हुए कहा।

"ग्रोह, इसके पहले कि हम पक्का इरादा बना सके, उन बेवकूफ़ों ने उन्हें छोड़ दिया," उन्होंने एक नन्हें बच्चे के से भाव से कहा, जो हाथ की मिठाई गिर जाने से उदास हो गया हो।

वोस्क्रेसेन्स्की मार्ग पर मल्लाह एक बड़ी संख्या मे क़तार बांधे जा रहे थे, ग्रौर उनके पीछे, जितनी दूर भी निगाह जा सकती थी, सिपाही मार्च करते हुए चले ग्रा रहे थे।

हम एडमिरेल्टेइस्की मार्ग से होकर शिशिर प्रासाद की ग्रोर बढ़े। संतरियों ने प्रासाद के चौक में जानेवाले सारे रास्तों की नाकेबंदी कर रखी थी, ग्रौर चौक के पश्चिमी सिरे पर हथियारबन्द सिपाहियों का घेरा पड़ा हुग्रा था, जिनके गिर्द नागरिकों की एक ग्रशान्त भीड़ जुट ग्राई थी। दूर पर जो सिपाही प्रासाद के प्रांगण से लकड़ियां ला लाकर सदर फाटक के सामने जमा कर रहे थे, उन्हें छोड़ चारों तरफ खामोशी थी।

हम यह ग्रन्दाजा नही लगा पाये कि ये संतरी सरकार की तरफ है, कि सोवियत की तरफ। स्मोल्नी से जो कागजात हमें मिले थे, वे वहां बेकार साबित हुए, लिहाजा हम दूसरी सफों की ग्रोर बड़े रोब से बेधड़क बढ़े ग्रौर हमने ग्रपने ग्रमरीकी पासपोर्ट दिखाते हुए कहा, "हम सरकारी काम से ग्राये है!" ग्रौर लोगों को ठेलते-ठालते भीतर घुस गये। प्रासाद के ग्रन्दर उन्ही पुराने श्वेइत्सारों (दरवानों) ने, जो पीतल

9-2360

के बटन वाली और लाल-सुनहरे कालर वाली नीली वर्दियां पहने हुए थे, हमारे ओवरकोट और हैट ले लिये, और हम ऊपर सीढ़ियों से चढ़ गये। धुधले अंधियारे गलियारे मे, जिसके पर्दे नदारद थे, कुछ पुराने कर्मचारी निठल्ले घूम रहे थे और केरेन्स्की के कमरे के सामने एक नौजवान अफसर अपनी मूछे चबाता हुआ चहलकदमी कर रहा था। हमने उससे पूछा कि क्या हम मंत्रि-सभापति से मुलाक़ात कर सकते है? उसने अदब से झुककर सलाम बजाते हुए फ़ांसीसी मे उत्तर दिया:

"नही, मुझे अफ़सोस है। अलेक्सान्द्र फ़्योदोरोविच इस समय बहुत ही व्यस्त है..." उसने हमारी ओर एक नजर देखा और फिर कहा, "दर असल वह यहा है ही नहीं..."

"फिर कहा है?"

"वह मोर्चे पर गये[2]। आपको मालूम है, उनकी मोटर के लिये काफ़ी पेट्रोल भी न था। हमें अंगरेजी अस्पताल से आदमी भेज कर पेट्रोल मंगाना पड़ा।"

"क्या मन्त्रिगण यहां मौजूद है?"

"वे किसी कमरे में मीटिंग कर रहे है, लेकिन मै नही जानता किस कमरे में।"

"क्या बोल्शेविक लोग आने वाले है?"

"बेशक, वे आने ही वाले है। मुझे हर लमहा इस बात का इन्तज़ार है कि टेलीफोन पर ख़बर आयेगी कि वे आ रहे है। लेकिन हम भी तैयार है। प्रासाद के सामने युंकर तैनात कर दिये गये है। उधर उस दरवाज़े की दूसरी ओर।"

"क्या हम उस तरफ अन्दर जा सकते है?"

"नही, बिल्कुल नही। वहां जाना मना है।" यकायक उसने हम सभी से हाथ मिलाया और एक ओर को चल दिया। हम उस दरवाज़े की ओर बढ़े, जिसके भीतर जाना मना था। दरवाज़ा हॉल को दो खण्डों में बांटने वाली एक अस्थायी दीवार में लगा था और हमारी ओर से बन्द था। उसकी दूसरी ओर से लोगों के बोलने की और एक आदमी के हंसने की आवाज़ें आ रही थीं। ये ही आवाज़ें थीं, नहीं तो इस पुराने राजमहल के विशाल कोष्ठों-प्रकोष्ठों में क़ब्रिस्तान की सी ख़ामोशी

छाई हुई थी। एक बूढ़ा खिदमतगार दौड़ता हुआ वहां आया और बोला, "नहीं, साहिब, आप हर्गिज अन्दर नहीं जा सकते।"

"दरवाज़ा बन्द क्यों है?"

"ताकि सिपाही बाहर [illegible]," उसने जवाब दिया। क्षण भर बाद उसने एक गिलास चाय पीने के बारे में कुछ कहा और हॉल में वापिस चला गया। हम दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाखिल हुए।

दहलीज़ के ठीक अन्दर ही दो सिपाही पहरा दे रहे थे, लेकिन उन्होंने कुछ कहा नहीं। जहां गलियारा खत्म होता था, एक बड़ा, खूब सजा हुआ सुनहरी कार्निसों और बड़े बड़े बिल्लौरी झाड़-फानूस वाला कमरा था और उसके आगे कई छोटे कमरे थे, जिनकी दीवारों पर सियाह लकड़ी से तख्ताबन्दी की गयी थी। लकड़ी के फर्श की दोनों तरफ कतार की कतार मैले-कुचैले गद्दे और कम्बल पड़े थे – कुछ पर इक्के-दुक्के सिपाही टांगें पसारे लेटे हुए थे। हर जगह जली हुई सिगरेटें, डबल-रोटी के टुकड़े और चीथड़े और क़ीमती फ्रांसीसी शराब की खाली बोतलें पड़ी हुई थीं। युंकर स्कूलों के लाल बिल्ले कंधों पर लगाये अधिकाधिक सिपाही सिगरेट के धुएं और मैले-कुचैले बेनहाये-धोये मानव-शरीरों के उस गंदे दुर्गंधपूर्ण वातावरण में घूम-फिर रहे थे। एक सिपाही के पास सफ़ेद बर्गुंडी की एक बोतल थी, जिसे स्पष्टतः उसने राजमहल के शराब के तहखाने से उड़ाया था। जब हम एक कमरे के बाद दूसरे कमरे से गुज़रते हुए घूम रहे थे, वे हमारी ओर अचरज से देख रहे थे। अन्ततः हम एक ऐसी जगह पहुंचे, जहां एक सिलसिले में विशाल राजकीय स्वागत-कक्ष बने हुए थे, जिनकी लम्बी, गर्द-गुबार से भरी खिड़कियां चौक में खुलती थीं। दीवारों पर बड़े बड़े सुनहरे फ़्रेमों में जड़ी हुई तसवीरें लटकी हुई थीं – ऐतिहासिक युद्ध-दृश्य... '१२ अक्तूबर, १८१२', '६ नवम्बर, १८१२' और '१६–२८ अगस्त, १८१३'... एक तसवीर में ऊपर दाईं ओर कोने में एक बड़ा सा चीरा था।

राजमहल एक बहुत बड़ी बारिक बना हुआ था और फर्श और दीवारों को देखने से मालूम होता था कि हफ़्तों से बना हुआ था। खिड़कियों की सिलों पर मशीनगनें बैठायी गयी थीं; गद्दों के बीच में बन्दूकें जमा थीं।

जिस वक़्त हम इन तसवीरों को देख रहे थे, मेरी बायी कनपटी की ओर से शराब की भभक आयी और एक आदमी ने, अच्छी-ख़ासी फ़ांसीसी बोलते हुए, अस्पष्ट स्वर में कहा, "आप लोग जिस तरह तारीफ़ की नज़र से इन तसवीरों को देख रहे हैं, उससे मुझे लगता है कि आप विदेशी हैं।" वह एक मोटा, ठिंगना सा आदमी था और जब उसने अपनी टोपी हाथ में ली, मैंने देखा उसका सिर गंजा हो रहा था।

"आप लोग अमरीकी हैं? वाह, कितनी ख़ुशी की बात है। मैं हूं आपका हुक्म बजा लाने के लिये तैयार स्तेब्स-कप्तान व्लादीमिर अर्त्सिवाशेव।" मालूम होता था उसके लिये यह कोई असाधारण या विलक्षण बात न थी कि चार अजनबी, जिनमें एक औरत थी, एक सेना की रक्षा-पंक्तियों के बीच मज़े से घूम रहे थे, ऐसे वक़्त जब वह हमले का इन्तज़ार कर रही थी। उसने रूस की हालत के बारे मे शिकायत के लहजे में कहना शुरू किया।

"ये बोल्शेविक ही अकेली आफ़त नहीं है," उसने कहा। "रूसी सेना की बेहतरीन परम्परायें टूट चुकी हैं। अपने चारों ओर निगाह दौड़ाइये। देखिये, ये सभी अफ़सरी की तालीम देने वाले ट्रेनिंग स्कूलों के छात्र है। परन्तु ये क्या भद्रलोग हैं? केरेन्स्की ने इन स्कूलों के दरवाज़े साधारण सैनिकों के लिये, जो भी सैनिक एक इम्तहान पास कर सके, उसके लिये खोल दिये थे। स्वभावतः उनमे ऐसे कितने ही लोग हैं, जिन्हे क्रांति का संक्रामक रोग लग चुका है..."

अपनी बात पूरी किये बिना ही उसने विषय बदल दिया। "मैं रूस से बाहर जाने के लिये बहुत बेताब हूं। मैंने अमरीकी फ़ौज में भर्ती होने का इरादा बना लिया है। क्या आप मेहरबानी करके अपने राजदूत से मिलेंगे और मेरे लिये कुछ इन्तजाम करेंगे? मैं आपको अपना पता देता हूं।" हमारे बारबार मना करने पर भी उसने एक चिट पर अपना पता लिखा और ऐसा लगा कि फ़ौरन उसके दिल के ऊपर से एक बोझ उतर गया और वह अपने को हल्का महसूस करने लगा। यह पता अभी भी मेरे पास है—"ओरानियेनबाउमस्काया श्कोला प्रापोर्श्चिकोव २, स्तारो पीटरहोफ़।"

हमें कमरों के बीच से ले जाते हुए और सब कुछ दिखाते और

समझाते हुए, उसने कहा, "आज सुबह बड़े तड़के ही फौजी मुआयना हुआ। औरतों की बटालियन ने सरकार के प्रति वफादार रहने का निश्चय किया।"

"क्या महिला सैनिक प्रासाद में मौजूद हैं?"

"जी हां, वे पीछे के कमरों में हैं, जहा अगर कुछ गड़बड़ी हुई, तो उन पर आंच न आयेगी।" फिर उसने ठंडी सास लेकर कहा, "हमारे लिए यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।"

हम थोड़ी देर तक खिड़की के सामने खड़े नीचे चौक की ओर देखते रहे, जहां लम्बे कोटधारी युंकरों की तीन कम्पनिया हथियारो से लैस पंक्तिबद्ध खड़ी थीं और एक लम्बा-तड़ंगा, चुस्त और फुर्तीला अफसर उन्हें हिदायतें दे रहा था। मैंने पहचाना वह अस्थायी सरकार का प्रमुख सैनिक कमिसार स्तान्केविच था। जरा देर बाद दो कम्पनियों ने बड़े जोर की खनखनाहट के साथ हथियार उठाये और लेफ्ट-राइट की आवाज के साथ मार्च करती हुई चौक से पार हो गई और लाल मेहराबी दरवाजे से* निकल कर ख़ामोश शहर के भीतर अदृश्य हो गई।

"वे टेलीफोन एक्सचेज पर कब्जा करने जा रहे हैं," किसी ने कहा। हमारे पास युंकर स्कूल के तीन छात्र खड़े थे और हम उनसे बातचीत करने लगे। उन्होंने कहा कि वे सेना की पातो से निकल कर स्कूलो में दाखिल हुए हैं। उन्होंने अपने नाम बताये—रावर्ट ओलेव, अलेक्सेई वर्मिलेंको और एर्नी सावस। यह सावस एस्तोनियाई था। लेकिन उन्होंने कहा अब वे अफ़सर होना नही चाहते, क्योकि अफ़सरों की साख बिल्कुल मिट गयी थी। और वास्तव मे यह स्पष्ट था कि वे अपनी स्थिति से बहुत प्रसन्न नही थे और उनकी समझ मे नहीं आ रहा था कि वे करें क्या। लेकिन जरा ही देर बाद वे लगे डींगें हाकने:

"अगर बोल्शेविक आते हैं, तो हम उन्हें मजा चखायेंगे और दिखायेंगे कि लड़ा कैसे जाता है। वे कायर हैं, वे लडने की क्या हिम्मत करेंगे! मगर अगर हम बेकाबू कर ही दिये जायें, तो हर आदमी के पास एक गोली अपने लिये है..."

---

*जनरल स्टाफ भवन का मेहराबी दरवाजा।—सं०

ठीक इसी वक़्त कहीं नज़दीक ही गोलियां छूटने की आवाज़ आई। बाहर चौक में भगदड़ मच गई और लोग तितर-बितर भागने लगे और मुंह के बल गिरने लगे। नुक्कड़ों पर खड़े इज्वोज़चिकों (कोचवानों) ने अपने घोड़े चारों ओर दौड़ा दिये। प्रासाद के अन्दर खलबली मच गयी और कोलाहल होने लगा। सिपाही इधर से उधर दौड़-भाग रहे थे, झपट कर बन्दूकें और कमरबन्द उठा रहे थे और चीख रहे थे, "आ गये वे! आ गये वे! .." लेकिन ज़रा ही देर में फिर सन्नाटा छा गया। कोचवान लौट आये और जो लोग मुंह के बल लेट गये थे, वे उठ खड़े हुए। लाल मेहराबी दरवाज़े से युंकर आते हुए दिखाई पड़े। लेकिन वे पूरी तरह कदम मिलाकर मार्च नहीं कर रहे थे और उनमें एक अपने दो साथियों के सहारे चल रहा था।

जब हम प्रासाद से रवाना हुए, काफ़ी देर हो गयी थी। चौक से संतरी सारे के सारे ग़ायब थे। एक अर्द्धवृत्ताकार रेखा में खड़ी बड़ी बड़ी सरकारी इमारतों मे वीरानगी नज़र आ रही थी। हम खाना खाने के लिये फ़्रांस होटल मे गये। अभी हम अपना सूप ही पी रहे थे कि बीच में ही एक वेटर, जिसके चेहरे का रंग उड़ गया था, वहां आया और उसने साग्रह कहा कि हम होटल के पिछले हिस्से में खाने के बड़े कमरे मे चले जायें, क्योंकि सामने के रेस्तोरां वाले हिस्से में बत्तियां बुझाई जा रही थी। "मालूम होता है, ख़ूब गोलियां चलेंगी," उसने कहा।

जब हम फिर मोर्स्काया मार्ग पर आये, अंधेरा पूरी तरह घिर आया था, बस नेव्स्की मार्ग की मोड़ पर सड़क की एक बत्ती टिमटिमा रही थी, जिसके नीचे एक बड़ी बख़्तरबन्द गाड़ी खड़ी थी। उसका इंजन चालू था और उससे बुरी तरह पेट्रोल का धुआं निकल रहा था। एक छोटा सा लड़का गाड़ी के ऊपर चढ़ गया था और वह मशीनगन की नाल से आंख लगा कर देख रहा था। सिपाही और मल्लाह गाड़ी के चारों ओर खड़े थे, स्पष्ट ही, वे किसी चीज का इन्तज़ार कर रहे थे। हम पीछे मुड़ कर लाल मेहराबी दरवाज़े तक आये, जहां सिपाहियों का एक झुण्ड इकट्ठा हो गया था। वे रोशनी से जगमग शिशिर प्रासाद की ओर एकटक देख रहे थे और ज़ोर ज़ोर से बात कर रहे थे।

"नही, साथियो," एक कह रहा था, "हम उनके ऊपर गोली कैसे चला सकते हैं? औरतों की बटालियन अन्दर है—लोग कहेंगे, हमने रूसी औरतों पर गोली चलाई।"

जिस वक्त हम नेव्स्की मार्ग पर फिर पहुचे, एक और बख्तरबन्द गाड़ी मोड़ से घूमकर वहा आयी और एक आदमी उसकी बुर्जी मे से सिर निकाल कर जोर से चिल्लाया

"आ जाओ! हम चले और हमला बोल दे।"

दूसरी गाडी का ड्राइवर वहा चला आया और चिल्ला कर बोला, ताकि इजन के शोर मे उसकी आवाज सुनी जा सके, "समिति का कहना है कि हम अभी इन्तजार करे। उन्होने वहा लकडी के अटाले के पीछे तोपखाना बैठा रखा है..."

इस जगह ट्रामो का चलना बन्द हो गया था, इक्के-दुक्के आदमी ही आने-जाते नजर आते थे, और सडक पर रोशनी नही थी, लेकिन वहा से थोडी ही दूर पर बीच मे इमारतो की एक लाइन पार करने की देर थी—हम चलती हुई ट्रामो, दूकानो की जगमग खिडकियो, सिनेमा के बिजली के जगमगाते इश्तहारो और भीड-भडक्के को देख सकते थे—जिन्दगी बदस्तूर चलती जा रही थी। हमारे पास मारिईन्स्की थियेटर के बैले के टिकट थे—थियेटर सभी खुले हुए थे—परन्तु बाहर इतनी हलचल थी कि वहा जाये कौन...

अंधेरे मे एक जगह ठोकर खाकर हम गिरते गिरते बचे—पुलिस पुल की नाकेबन्दी के लिये बहुत सा काठ-कबाड जमा किया गया था। अंधेरे मे नजर ठहरा कर हमने देखा स्त्रोगानोव प्रासाद के सामने कुछ सिपाही तीन इंच की एक तोप को बैठा रहे थे। तरह तरह की वर्दिया पहने लोग निरुद्देश्य भाव मे आ जा रहे थे और बडी बाते कर रहे थे...

नेव्स्की मार्ग को देखने से ऐसा लगता था कि पूरा शहर घूमने के लिए बाहर निकल पडा है। हर नाके और मोड पर गरमागरम बहस छिडी हुई थी, और चारो ओर सुननेवालों की एक खासी बडी भीड जमा थी। हर चौराहे पर सगीनें लिए एक दर्जन सिपाहियो की टुकडिया तैनात थी, कीमती फर-कोट पहने सुर्ख़र बूढे आदमी उन्हे घूसा दिखाते, भड़कीली पोशाके पहने औरतें चीख चीख कर उन्हे जली-कटी सुनाती।

सिपाही गश्ते में जवाब देते और परेशान, फौजी हंसी हंसते... बख्तरबन्द गाड़ियां गश्तों में आ जा रही थीं, जिन्हें पहले के राजाओं के नाम पर ओलेग, 'रूरिक' या 'स्व्यातोस्लाव' कहते थे, और जिन पर बड़े बड़े लाल अक्षर पुते थे: 'रू० सा० ज० म० पा०' (रोस्सीइस्काया सोत्सिअल-देमोक्रातीचेस्काया राबोचाया पार्तिया)*। मिखाइलोव्स्की मार्ग पर एक आदमी अखबारों का बंडल लिये आया और बेसब्र, बेताब आदमियों की एक भीड़ फौरन उस पर 'टूट' पड़ी—वे एक अखबार के लिए एक रूबल, पांच रूबल, दस रूबल तक देने के लिए तैयार थे, और अखबारों के लिए इस तरह छीना-झपटी कर रहे थे, जैसे वे इंसान नहीं, बौख-लाये हों। यह अखबार 'राबोची इ सोल्दात' था, जिसमे सर्वहारा क्रान्ति की विजय की और जेल से बोल्शेविक बंदियों की रिहाई की घोषणा की गयी थी, और मोर्चे और पिछाये दोनों जगह की सेनाओं से अपील की गयी थी कि वे शान्ति का समर्थन करें... अखबार क्या था चार पन्नों का एक गरम, पुरजोश पर्चा था, जिसमें खबरें नदारद थीं।

सादोवाया मार्ग की मोड़ पर लगभग दो हजार नागरिकों की एक भीड़ इकट्ठी हो गयी थी, जो एक ऊंची इमारत की छत की ओर एकटक देख रहे थे, जहां एक छोटी सी लाल बत्ती बार बार जल रही थी और बुझ रही थी।

"देखा!" एक लम्बे-तड़गे किसान ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा। "वह कोई उकसावेबाज है। देखना, वह अभी लोगों पर गोली चलायेगा..." इतने लोग जमा थे, लेकिन मालूम होता है किसी ने यह नहीं सोचा कि वहां जा कर पता लगाये कि माजरा क्या गया है।

* * *

जब हम विशाल स्मोल्नी भवन के सामने पहुंचे, हमने देखा वह रोशनी से जगमगा रहा था और अंधेरे में हर रास्ते से झुण्ड की झुण्ड दौड़ती-भागती परछाइयां उसी ओर आ रही थीं। मोटरें और

---

*रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी।—सं०

मोटरगाड़ियाँ आ जा रही थीं। एक बहुत बड़ी मटमैले गजवर्ण की बख्तरबन्द मोटर-गाड़ी, जिसकी बुर्जी से दो लाल झण्डे लगे हुए थे, घड़घड़ाती हुई निकली। उसका साइरन चीख रहा था। सर्दी बहुत थी और बाहरी फाटक पर लाल गार्डों ने अलाव सुलगा रखा था। अन्दर के फाटक पर भी आग जल रही थी, जिसकी रोशनी में सन्तरियों ने हमारे पासों को टो टोकर पढ़ा और हमें सिर से पैर तक देखा। फाटक के दोनों ओर जो चार मशीनगनें बैठायी गयी थीं, उनकी कैनवस की खोल हटा ली गयी थी और उनकी ब्रीचों में कारतूसों की पेटियाँ साँप के मानिन्द लटक रही थीं। सहन में दरख्तों के साये में मटमैले रंग की बख्तरबन्द गाड़ियों का एक झुंड जमा था – उनके इंजन चालू थे। स्मोल्नी भवन के बड़े बड़े बेआरास्ता हॉलों में, जिनमें मद्धिम रोशनी फैली हुई थी, चीखते, पुकारते लोगों की आवाजें और उनकी पदचाप गूंज रही थी। वातावरण में यह भावना व्याप्त थी कि जान पर खेल जाओ, देखा जायेगा। कुछ आदमियों का एक झुंड सीढ़ियों से नीचे उतरा – काले जैकेट और फर की काली गोल टोपियाँ पहने मजदूर, जिनमें कितनों के कन्धों में बन्दूकें लटक रही थीं, मटमैले खुरदरे कोट और भूरी पिचकी हुई फर की शापकी (टोपी) पहने सिपाही, और इक्के-दुक्के नेता भी – लुनाचार्स्की, कामेनेव* – अपने गिर्द एक साथ बोलते हुए लोगों की भीड़ लिये हुए, चेहरे पर परेशानी और फ़िक्र का भाव और हाथ में कागज़-

---

***कामेनेव (रोज़ेनफ़ेल्द), ले० बो०,** १९०१ से बोल्शेविक पार्टी के सदस्य। नवबर क्रांति के पश्चात् मास्को सोवियत के अध्यक्ष। जन-कमिसार परिषद् के उपाध्यक्ष।

बहुधा लेनिन की नीति का विरोध किया; मार्च की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति के बाद समाजवादी क्रांति अग्रसर करने की पार्टी की नीति की मुखालफत की; नवबर १९१७ में मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रांतिकारियों के साथ मिलकर संयुक्त सरकार स्थापित करने के विचार का समर्थन किया।

बाद में मार्क्सवाद-लेनिनवाद से अपना नाता तोड़ लिया और पार्टी से निकाल दिये गये। – सं०

पत्र से ठसाठस भरे पोर्टफोलियो। पेत्रोग्राद सोवियत की असाधारण बैठक समाप्त हो चुकी थी। मैंने कामेनेव को रोका—नाटे कद के एक फुरतीले आदमी, जिनका चौड़ा, ओजपूर्ण चेहरा उनके कंधों पर इस तरह बैठा था कि गर्दन का पता ही न चलता था। उन्होंने बिना कोई भूमिका बांधे फ्रांसीसी में जल्दी जल्दी वह प्रस्ताव पढ कर सुनाया, जिसे अभी अभी सोवियत ने स्वीकृत किया था

मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत पेत्रोग्राद सर्वहारा तथा गैरिसन की विजयी क्रान्ति का अभिनन्दन करती है और इस विद्रोह में जन-साधारण ने जो एकता, संगठन, अनुशासन तथा पूर्ण सहयोग प्रदर्शित किया है, उस पर विशेष बल देती है। पहले किसी विद्रोह में शायद ही इतना कम खून कभी भी बहाया गया हो, पहले शायद ही कभी कोई विद्रोह इतनी अच्छी तरह सम्पन्न हुआ हो।

पेत्रोग्राद सोवियत अपना दृढ विश्वास प्रगट करती है कि मजदूरों और किसानों की सरकार, जो सोवियतों की सरकार के रूप में क्रान्ति द्वारा स्थापित की जायेगी, और जो औद्योगिक सर्वहारा के लिए गरीब किसानों के समूचे जन-समुदाय का समर्थन सुनिश्चित बना देगी, मजबूत कदमों से समाजवाद की ओर बढेगी, जिसके द्वारा ही देश को युद्ध की अश्रुतपूर्व विभीषिकाओं तथा कष्टों से बचाया जा सकता है।

नयी मजदूरों और किसानों की सरकार सभी युद्धरत देशों से अविलम्ब एक न्याय्य तथा जनवादी शान्ति-सन्धि सम्पन्न करने का प्रस्ताव करेगी।

वह जमींदारियों को फौरन जब्त करेगी और भूमि किसानों के हाथों में अन्तरित करेगी। वह उत्पादन पर तथा तैयार माल के वितरण पर मजदूरों का नियन्त्रण लागू करेगी और बैंकों पर, जिन्हें राजकीय इजारेदारी में बदल दिया जायेगा, सामान्य नियन्त्रण स्थापित करेगी।

मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत रूस के मजदूरों और किसानों का आह्वान करती है कि वे अपनी पूरी शक्ति और पूरी निष्ठा से सर्वहारा क्रान्ति का समर्थन करें। पेत्रोग्राद सोवियत अपना यह विश्वास प्रगट करती है कि नगर के मजदूर और उनके सघाती गरीब

विमान पूर्ण क्रान्तिकारी सुव्यवस्था को, जो समाजवाद की विजय के लिए अपरिहार्य है, सुनिश्चित बनायेंगे। सोवियत को यकीन है कि पश्चिमी यूरोपीय देशों का सर्वहारा हमें समाजवाद के ध्येय को वास्तविक तथा स्थायी विजय की परिणति तक पहुंचाने में मदद देगा।

"आपका विचार है, क्रान्ति की विजय हुई है?"

उन्होंने अपने कंधे उचका कर कहा, "अभी बहुत कुछ करने को पड़ा है—बहुत कुछ। यह तो बस शुरुआत है..."

सीढ़ियों की मोड़ पर मेरी मुलाकात ट्रेड-यूनियनों के उपाध्यक्ष रियाजानोव से हुई—वह अपनी भूरी दाढ़ी चबा रहे थे और उनके चेहरे पर काली छाया थी। "यह सरासर पागलपन है—पागलपन है!" उन्होंने चिल्लाकर कहा। "यूरोपीय मजदूर वर्ग हिलने वाला नहीं है! समूचा रूस..." उन्होंने विक्षिप्त भाव से हाथ झटकारा और तेज़ी से नीचे उतर गये। रियाज़ानोव और कामेनेव दोनों ने विद्रोह का विरोध किया था और लेनिन के तीखे शब्द-बाणों से क्षत-विक्षत हुए थे...

पेत्रोग्राद सोवियत की यह बैठक बड़ी महत्वपूर्ण थी। सैनिक क्रान्तिकारी समिति की ओर से त्रोत्स्की ने घोषणा की कि अस्थायी सरकार का अस्तित्व समाप्त हो चुका है।

"जनता को धोखा देना पूंजीवादी सरकारों की चारित्रिक विशेषता है," त्रोत्स्की ने कहा। "हम, मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतें, एक ऐसा प्रयोग करने जा रहे हैं, जो इतिहास में अद्भुत और अद्वितीय है। हम एक ऐसी सत्ता स्थापित करने जा रहे हैं, जिसका एक ही उद्देश्य होगा—सैनिकों, मजदूरों और किसानों की जरूरतों को पूरा करना।"

विश्वव्यापी समाजवादी क्रान्ति की भविष्यवाणी करते हुए लेनिन प्रगट हुए थे और उनका तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया। ज़िनोव्येव कड़क रहे थे, "आज हमने अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा के प्रति अपने ऋण का शोध किया है, हमने युद्ध पर प्रचण्ड आघात किया है, और सभी साम्राज्यवादियों पर, विशेष रूप से जल्लाद विल्हेल्म पर, कुठाराघात किया है..."

और तब त्रोत्स्की ने बताया कि विद्रोह की विजय की घोषणा करते हुए मोर्चे पर तार भेजे गये हैं, परन्तु अभी तक कोई उत्तर नहीं आया है। कहा जाता है कि सेनायें पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने आ रही हैं–उनके पास एक प्रतिनिधिमण्डल भेजना होगा, ताकि उन्हें सब बात बतायी जा सके।

आवाजें–"आप सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस की इच्छा का पूर्वानुमान कर रहे हैं।"

त्रोत्स्की ने रुखाई से जवाब दिया, "पेत्रोग्राद के मजदूरों और सिपाहियों के विद्रोह ने सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस की इच्छा का पूर्वानुमान किया है।"

हम दरवाजे पर जमा शोरगुल करती भीड़ को ठेलते-ठालते विशाल सभा भवन के भीतर पहुंचे। उजले झाड़-फानूस के नीचे कतार की कतार सीटों में, दोनों ओर की खाली जगहों और दर्म्यानी रास्तों में ठसाठस भरे और हर खिड़की से और मंच के किनारे तक से पैर लटकाये बैठे हुए समूचे रूस के मजदूरों और सिपाहियों के प्रतिनिधि चुपचाप व्यग्र भाव में या बेजब्त उल्लास से सभापति की घंटी बजने का इन्तजार कर रहे थे। हॉल में सिवा बेनहाये-धोये मानव-शरीरों की गरमाई के, जिससे दम ही घुटता था, और कोई गरमाई न थी। जनसमूह के बीच से उठ कर सिगरेट के दूषित नीले धुएं का बादल बोझिल हवा में छाया हुआ था। कभी-कभी कोई नेता मंच पर आकर कहता कि साथी सिगरेट न पिएं, और तब पीने वाले और नहीं पीने वाले, सभी एक साथ आवाजें देते, "साथियो, आप लोग सिगरेट न पिएं," और उसी तरह कश लगाते रहते। ओबूखोव कारखाने के अराजकतावादी प्रतिनिधि पेत्रोव्स्की ने मेरे लिए अपनी बगल में जगह की। मैला-कुचैला, दाढ़ी बढ़ी हुई, वह सैनिक क्रान्तिकारी समिति में तीन रातों तक जाग कर काम करने से चूर था।

मंच पर पुरानी त्से-ई-काह् के नेता बैठे थे–वे आखिरी बार उन सरकश सोवियतों पर शासन कर रहे थे, जिन पर उन्होंने शुरुआती दिनों से ही शासन किया था, परन्तु जो अब उनके खिलाफ बगावत पर आमादा थीं। यह उस रूसी क्रान्ति के प्रथम चरण की अन्तिम घड़ी थी, जिसे

इन लोगों ने फूंक फूंक कर कदम रखते हुए बंधे हुए रास्ते में ले चलने की कोशिश की थी . उनके तीन सबसे बड़े चौधरी वहां न थे : केरेन्स्की, जो छोटे छोटे कस्बों में होते हुए मोर्चे की ओर भागे जा रहे थे, मगर ये क़स्बे भी उमड़ रहे थे और भरोसे लायक़ न रहे थे, बूढ़ा घाघ छेईद्ज़े, जो अवज्ञापूर्वक राजनीति से सन्यास ले स्वदेश जार्जिया के पहाड़ों में चले गये थे—तपेदिक में घुलने के लिए, और महामना त्सेरेतेली, छेईद्ज़े की तरह ही साधातिक रोग से पीड़ित, परन्तु फिर भी जो लौट कर हारे हुए ध्येय के लिए धाराप्रवाह बोलने और सुन्दर शब्दों की झड़ी लगाने वाले थे। ये तीनों वहां नहीं थे, मगर गोत्स थे, दान, लीबेर, बोग्दानोव, ब्रोइदो, फिलिप्पोव्स्की थे—चेहरे फक, आंखें गढ़ों में धंसी हुई, गुस्से से भरे। उनके नीचे हॉल में अखिल रूसी सोवियतों की दूसरी स्येज्द (कांग्रेस) उमड-घुमड़ रही थी, उफन रही थी। और उनके ऊपर सैनिक क्रान्तिकारी समिति शोला बनी बिजली की तेज़ी से काम कर रही थी—विद्रोह के सारे सूत्र उसके हाथ में थे और वह जो वार कर रही थी, उसका असर दूर तक पहुंचता था... रात के दस बजकर चालीस मिनट हो चुके थे।

फौजी डाक्टर की एक ढीली-ढाली, बेढंगी वर्दी पहने, फीके चेहरेवाले दान, जिनका सिर गंजा हो चला था, घंटी बजा रहे थे। हॉल में सन्नाटा छा गया, गहरा सन्नाटा, परन्तु दरवाज़े पर जमा लोगों की तकरार और हाथापाई से निस्तब्धता भंग हो रही थी...

"हमारे हाथ में सत्ता आ गयी है," उन्होंने मातमी ढंग से अपना भाषण शुरू किया और फिर क्षण भर रुक कर धीमी आवाज में कहा, "साथियो! सोवियतों की कांग्रेस की यह सभा ऐसी असाधारण परिस्थिति में और ऐसी असाधारण घड़ी में हो रही है कि आप इस बात को समझेंगे कि क्यों त्से-ई-काह आपके सामने राजनीतिक भाषण करना अनावश्यक समझती है। मेरी यह बात आपके लिए और भी साफ हो जायेगी, अगर आप यह याद करें कि मैं त्से-ई-काह का सदस्य हूं और ठीक इसी घड़ी शिशिर प्रासाद में हमारी पार्टी के साथियों पर गोलाबारी की जा रही है और वे त्से-ई-काह द्वारा उनके ऊपर डाली गयी जिम्मेदारियों

का पूरा करने के लिए अपने जीवन की आहुति दे रहे हैं।" (शोरगुल और हंगामा।)

'मैं मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के पहले अधिवेशन के उद्घाटन की घोषणा करता हूं!"

हाल में काफी हलचल और दौड़-भाग के बीच सभापतिमण्डल का चुनाव हुआ। *अवानेसोव ने एलान किया कि बोल्शेविकों, वामपंथी* समाजवादी-क्रान्तिकारियों तथा मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों की राय में यह फैसला किया गया है कि सभापतिमण्डल का चुनाव अनुपाती प्रतिनिधित्व के आधार पर हो। फौरन कई मेन्शेविक प्रतिनिधि उछल पड़े और प्रतिवाद करने लगे। एक दढ़ियल सिपाही ने चिल्ला कर उनसे कहा, *"याद रखिये, जब हम बोल्शेविक अल्पमत में थे, आपने हमारे* साथ क्या किया था!" चुनाव का परिणाम: बोल्शेविक १४, समाजवादी क्रान्तिकारी ७, मेन्शेविक ३ और अंतर्राष्ट्रीयतावादी (गोर्की का दल) १। दक्षिणपंथी तथा मध्यमार्गी समाजवादी-क्रान्तिकारियों की ओर से बोलते हुए गेन्देलमान ने कहा कि वे सभापतिमण्डल में भाग लेने से इनकार करते हैं, *मेन्शेविकों की ओर से ख़िनचूक ने भी यही बात कही।* मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों की ओर से कहा गया कि जब तक कुछ विशेष परिस्थितियों की जांच न कर ली जाये, वे भी सभापतिमण्डल में प्रवेश नहीं कर सकते। छिटफुट तालियां, और सीटियां। एक आवाज़: "गद्दारो, तुम अपने को समाजवादी कहते हो!" उक्रइनी प्रतिनिधिमण्डल *के एक सदस्य ने सभापतिमण्डल में जगह मांगी और उसे जगह दी गयी।* फिर पुरानी त्से-ई-काह के सदस्य मंच से नीचे उतर गये, और उनके स्थान पर त्रोत्स्की, कामेनेव, लुनाचार्स्की, श्रीमती कोल्लोन्ताई, नोगीन विराजमान हुए... प्रतिनिधिगण तालियां बजाते और गगनभेदी नारे लगाते उठ खड़े हुए। ये बोल्शेविक कितना ऊपर उठ गये थे! कहां, चार महीने भी *नहीं हुए, वे एक गुट* थे, जिन्हें हिकारत की निगाह से देखा जाता था,* जिनका पीछा किया जाता था, और कहां आज उन्होंने क्रान्ति की लहर

---

*देखिये सम्पादकीय टिप्पणी, पृष्ठ ४०१ – सं०

पर उठ कर यह सर्वोच्च स्थान, विशाल रूस के कर्णधारों का स्थान ग्रहण किया था!

कामेनेव ने कहा कि दिवस के कार्यक्रम की पहली मद थी, सत्ता का सगठन; दूसरी, युद्ध तथा शान्ति; और तीसरी, सविधान सभा। लोजोव्स्की ने उठ कर घोषणा की कि सभी दलों के ब्यूरो की राय से यह विचार किया गया है कि पहले पेत्रोग्राद सोवियत की रिपोर्ट पेश हो और उस पर बहस हो, फिर त्से-ई-काह के सदस्यों तथा विभिन्न पार्टियों के प्रतिनिधियों को बोलने के लिए आमन्त्रित किया जाये और अन्त में दिवस का कार्यक्रम लिया जाये।

लेकिन अचानक एक नयी आवाज सुनायी पड़ी—जन-कोलाहल से गहरी आवाज, लगातार आने वाली और बेचैन कर देने वाली आवाज—यह तोपों का धमाका था। लोग परेशानी से अंधेरी खिड़कियों की ओर देखने लगे और उन्हें जैसे बुख़ार चढ़ आया। मार्तोव ने बोलने की इजाजत मांगी और भारी, बैठी हुई आवाज में कहना शुरू किया, "गृहयुद्ध शुरू हो रहा है, साथियो! हमारे सामने पहला सवाल होना चाहिए इस सकट का शान्तिपूर्ण निपटारा। सिद्धान्त तथा राजनीति की दृष्टि से इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि गृहयुद्ध से कैसे बचा जाये। हमारे भाइयों को सड़कों पर गोलियों से भूना जा रहा है! इसी घड़ी, जब सोवियतों की कांग्रेस के उद्‌घाटन से पहले सत्ता का प्रश्न एक क्रान्तिकारी पार्टी द्वारा संगठित सैनिक षड्यन्त्र के जरिए हल किया जा रहा है..." क्षण भर के लिए शोरगुल के बीच उनकी आवाज सुनाई नही दे सकी। "हर क्रान्तिकारी पार्टी के लिए जरूरी है कि वह सचाई से आंखें चार करे! कांग्रेस के सामने पहला **वोप्रोस** (प्रश्न) सत्ता का प्रश्न है, और इस प्रश्न का अभी से सडकों पर शस्त्र-बल द्वारा निपटारा किया जा रहा है!.. हमें अवश्य ही एक ऐसी सत्ता स्थापित करनी चाहिए, जो सभी जनवादी तत्वों के लिए मान्य हो। अगर यह कांग्रेस क्रान्तिकारी जनवाद की आवाज होना चाहती है, तो वह हाथ पर हाथ रखे गृहयुद्ध की लपटों को फैलते हुए नहीं देख सकती, जिसके फलस्वरूप प्रतिक्रान्ति ख़तरनाक ढंग से भड़क सकती है... घटनाओं की शान्तिपूर्ण परिणति की संभावना एक संयुक्त जनवादी सत्ता की स्थापना मे निहित

है. हमारे लिए जरूरी है कि हम दूसरी समाजवादी पार्टियों तथा सगठनों से बातचीत करने के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल का चुनाव करें..."

खिड़कियों में तोप के धमाके की दबी हुई आवाज बराबर आ रही थी और कांग्रेस के प्रतिनिधि एक दूसरे पर चीख रहे थे इस प्रकार अन्धकार में तोप के धमाके के साथ, घृणा और भय और निर्भय साहस के साथ नये रूस का जन्म हो रहा था।

वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों और संयुक्त सामाजिक-जनवादियों ने मार्तोव के प्रस्ताव का समर्थन किया और उसे मान लिया गया। एक सिपाही ने बताया कि किसानों की अखिल रूसी सोवियतों ने कांग्रेस में अपने प्रतिनिधि भेजने से इनकार कर दिया था और उसने प्रस्ताव किया कि उन्हें औपचारिक रूप से आमन्त्रित करने के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल भेजा जाये। "किसानों की सोवियतों के कुछ प्रतिनिधि यहां मौजूद हैं," उसने कहा। "मैं प्रस्ताव करता हूं कि उन्हें वोट देने का अधिकार दिया जाये।" प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

कप्तान की वर्दी पहने खर्राश ने बड़े गुस्से से बोलने की इजाजत मांगी। उसने चिल्लाकर कहा, "जो सियासी मक्कार इस कांग्रेस पर हावी हैं, उन्होंने हमें बताया था कि हमें सत्ता के प्रश्न का निपटारा करना है—और उस प्रश्न का हमारी पीठ पीछे, कांग्रेस के शुरू होने से पहले ही निपटारा किया जा चुका है! शिशिर प्रासाद पर गोले बरसाये जा रहे हैं, और जिस राजनीतिक पार्टी ने ऐसा दुःसाहसिक कार्य करने की जोखिम उठायी है, वह इन गोलों को दाग कर अपनी मौत बुला रही है!" शोरगुल। खर्राश के बाद गार्रा* नामक एक प्रतिनिधि बोलने के लिए खड़े हुए: "यहां जब हम शान्ति के प्रस्तावों पर विचार कर रहे हैं, वहां सड़कों पर जंग छिड़ी हुई है... समाजवादी-क्रांतिकारी और मेन्शेविक इन घटनाओं में भाग लेने से इनकार करते हैं, और सभी सार्वजनिक शक्तियों से अपील करते हैं कि वे सत्ता पर अधिकार जमाने की चेष्टा का प्रतिरोध करें..." बारहवीं सेना का प्रतिनिधि और 'त्रुदोविक' दल का सदस्य कूचिन: "मुझे केवल सूचना देने के लिए यहां

---

*'प्राव्दा' की रिपोर्ट के अनुसार ये शब्द खर्राश के हैं।—सं०

पेत्रोग्राद की विबोर्ग बस्ती के 'नोबी लेसनर' कारखाने के लाल गार्ड।

भेजा गया है और मैं फौरन मोर्चे पर वापिस जा रहा हूं, जहां सभी सैनिक समितियों का मत है कि संविधान सभा के बुलाये जाने से केवल तीन सप्ताह पहले सोवियतों द्वारा सत्ता पर कब्जा करना सेना की पीठ में छुरा घोंपना है, यह जनता के खिलाफ एक अपराध है!" पुरजोर आवाजें, "झूठ! आप झूठ बोलते हैं!.." शोरगुल के बीच उनकी आवाज फिर सुनी गयी, "पेत्रोग्राद में जो दुःसाहसिकता हुई है, हमें चाहिये कि हम उसे समाप्त करें! मैं सभी प्रतिनिधियों का आह्वान करता हूं कि वे देश को और क्रांति को बचाने के लिए सभा का परित्याग करें!" जब कान के पर्दे फाड़ देनेवाले शोरगुल के बीच वह नीचे उतरे, लोग उनकी ओर इस तरह बढ़े, गोया वे उनके ऊपर टूट पड़ेंगे.. इसके बाद खिनचूक* नाम के एक भूरी बुच्ची दाढ़ी वाले अफसर ने बड़े मुलायम लहजे में समझाते हुए कहा: "मैं मोर्चे के प्रतिनिधियों की ओर से बोल रहा हूं। इस कांग्रेस में सेना को पर्याप्त प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं हुआ है। इतना ही नहीं, इस समय जब संविधान सभा के उद्घाटन में सिर्फ तीन हफ्ते ही रह गये हैं, सेना सोवियतों की इस कांग्रेस को आवश्यक नहीं मानती " उसके भाषण के बीच आवाजें और चीखें तेज होती गयीं और लोग और भी जोर जोर से पैर पटकने लगे। "सेना यह नहीं मानती कि सोवियतों की इस कांग्रेस को आवश्यक अधिकार प्राप्त है..." पूरे हॉल में सिपाही उठ कर खड़े होने लगे। उन्होंने चिल्ला कर पूछा, "आप किसकी ओर से बोल रहे हैं? आप किसके प्रतिनिधि हैं?"

"पांचवीं सेना, दूसरी एफ० रेजीमेंट, पहली एन० रेजीमेंट, तीसरी एस० राइफल्स की सोवियत की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति की ओर से..."

"आपको चुना कब गया था? आप अफसरों के प्रतिनिधि हैं, सिपाहियों के नहीं! सिपाही इसके बारे में क्या कहते हैं?" फब्तियां और सीटियां।

---

*सभी रिपोर्टों के अनुसार यह खूचिन के भाषण का पूरक है। –सं०

म [illegible] याग जो कुछ हुआ है और हो रहा है, उसमे [illegible] है और हम यह जरूरी समझते हैं कि शांति [illegible] उद्धार [illegible] सभी सत्ता शान्तिकामी शक्तियों का [illegible] किया जाय! मार्तो- [illegible] का परित्याग करेगा। [illegible] की जगह बाहर [illegible] पर है

"और, नीचे, आप जनरल स्टाफ की ओर से बोलते हैं, सेना की ओर से नहीं!"

मै सभी सच्चे सिपाहियों से अपील करता हू कि वे इस कांग्रेस से निकल जाये।

"कार्नीलोवपंथी! प्रतिक्रान्तिकारी! उकसावेबाज!" लोगों ने गालियां बरसानी शुरू कीं।

आगे तब मेन्शेविकों की ओर से खिनचूक ने एलान किया कि प्रश्न के शान्तिपूर्ण समाधान की एक ही संभावना है—अस्थायी सरकार के साथ एक ऐसे नये मन्त्रिमण्डल के गठन के लिए बातचीत शुरू करना, जिसे समाज की सभी श्रेणियों का समर्थन प्राप्त हो। वह कई मिनट तक बोल नहीं सके। और फिर अपनी आवाज बुलन्द करते हुए उन्होंने मेन्शेविकों की एक घोषणा को पढ़ा:

"चूकि बोल्शेविकों ने दूसरी पार्टियों और दलो से सलाह किये बगैर पेत्रोग्राद सोवियत की सहायता से एक सैनिक षड्यन्त्र रचा है, हमारे लिए कांग्रेस मे भाग लेना असम्भव हो गया है। हम इसलिए सभा त्याग करते है और दूसरे दलो को भी बुलावा देते है कि वे हमारा अनुसरण करे और परिस्थितियों पर विचार करने के लिए एक साथ बैठे।"

'गद्दार, भगोड़े!'

बीच बीच मे प्राय अविराम कोलाहल के ऊपर समाजवादी-क्रान्तिकारियों की ओर से बोलते हुए गेंदेलमान की आवाज सुनाई दे जाती—वह शिशिर प्रासाद पर बमबारी के विरुद्ध प्रतिवाद कर रहे थे... "हम इस प्रकार की अराजकता का विरोध करते है..."

वह मच से मुश्किल से ही उतरे होंगे कि एक नौजवान दुबला-पतला सिपाही, जिसकी आखे चमक रही थी, छलाग मारकर मंच के ऊपर चढ गया और उसने बड़े नाटकीय ढग से अपना हाथ उठा कर कहा:

"साथियो!" हॉल मे एकदम सन्नाटा छा गया। "मेरी **फमीलिया** (नाम) पेटेर्सन है और मै दूसरी लाटवियाई राइफल्स की ओर से बोल रहा हू। आपने सैनिक समितियो के दो प्रतिनिधियों के वक्तव्य सुने; **अगर ये वक्ता सेना के प्रतिनिधि होते**, तो इन वक्तव्यों का कुछ मूल्य हो सकता था .." जोर की तालिया। "**परन्तु वे सिपाहियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते!**" और फिर अपना घूसा दिखाते हुए उसने कहा, 'बारहवीं सेना बहुत दिनों से आग्रह कर रही है कि सोवियत तथा सैनिक समिति का फिर से चुनाव किया जाये, परन्तु आपकी अपनी त्से-ई-काह की ही तरह हमारी समिति ने भी सितम्बर के अन्त तक आम सिपाहियो के प्रतिनिधियो की मीटिंग बुलाने से इनकार किया, ताकि ये प्रतिक्रियावादी इस कांग्रेस के लिए अपने नकली प्रतिनिधि चुन सकें। मै आपसे कहता हूं, लाटवियाई सिपाहियों ने बारम्बार कहा है, 'हमे और प्रस्ताव नही चाहिये! हमे और बातचीत नही चाहिये! हम कथनी नही, करनी चाहते है! हमारे हाथ मे सत्ता आनी ही चाहिये!' इन प्रवचक प्रतिनिधियो को कांग्रेस छोड कर जाने दीजिये! सेना उनके साथ नही है!"

सभा भवन तालियों की गडगड़ाहट से हिल उठा। अधिवेशन की पहली घडी मे घटना-चक्र की तेजी से हतबुद्धि हो कर, तोपों के धमाकों से चौक कर प्रतिनिधियों ने कुछ हिचकिचाहट दिखाई। घटे भर तक कांग्रेस के मंच से उनके ऊपर हथौडे की एक चोट के बाद दूसरी चोट पडी थी, जिसने उन्हे सहत तो किया पर चुटीला भी किया। तब क्या वे अकेले है? क्या रूस उनके खिलाफ उठ रहा है? क्या यह सच है कि सेना पेत्रोग्राद पर चढाई कर रही है? परंतु फिर इस निर्मल दृष्टि वाले नौजवान सिपाही ने भाषण दिया और, जैसे अंधेरे मे बिजली कौध गई हो, उन्होंने देखा कि वह सच कह रहा है... **यह थी सिपाहियों की सच्ची आवाज**—लाखो वर्दीपोश मजदूर और किसान, जिनके बीच हलचल थी और उथल-पुथल थी, उन्ही जैसे लोग थे और उनके विचार और भावनायें भी उन्ही जैसी थी।

बोलने वालो मे और भी सिपाही... मोर्चे से आने वाले प्रतिनिधियो की ओर से ग्जेलश्चाक ने कहा कि इन प्रतिनिधियो ने चन्द वोटों

के बहुमत से ही सभा त्याग करने का फ़ैसला किया था और बोल्शेविक सदस्यों ने तो उस मतदान मे भाग भी नही लिया था, क्योंकि उनका मत था कि प्रतिनिधि गुटों के अनुसार नहीं, राजनीतिक पार्टियों के हिसाब से बटे। उन्होंने कहा, "मोर्चे के सैकड़ों प्रतिनिधि मतदान में सिपाहियों के भाग लिए बिना ही चुने जा रहे हैं, क्योंकि सैनिक समितिया आम सिपाहियों की सच्ची प्रतिनिधि नही रह गई हैं..." लुक्यानोव ने बुलन्द आवाज़ मे कहा कि गरशि और ख्रिनचूक जैसे अफ़सर इस कांग्रेस मे सेना का प्रतिनिधित्व नही कर सकते, वे केवल सर्वोच्च कमान का प्रतिनिधित्व कर सकते है। "खाइयों के सच्चे 'बाशिन्दे' दिलोजान से चाहते हैं कि सोवियतों के हाथों मे सत्ता का अन्तरण हो और वे इन सोवियतों से बड़ी आस लगाये हैं!.." धारा का रुख बदल रहा था।

इसके बाद यहूदी सामाजिक-जनवादियों के संगठन बुन्द की ओर से अब्रामोविच बोलने के लिए खड़े हुए – मोटे शीशे के नीचे उनकी आंखें चमक रही थीं और वह गुस्से मे कांप रहे थे।*

"पेत्रोग्राद मे इस समय जो कुछ हो रहा है, वह एक भीषण दुर्भाग्य है! हमारा बुन्द दल मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की घोषणा को स्वीकार करता है और वह कांग्रेस मे नही रह सकता।" फिर उन्होंने अपना हाथ उठा कर बुलन्द आवाज मे कहा, "रूसी सर्वहारा वर्ग के प्रति हमारा कर्तव्य हमे इस बात की इजाजत नही देता कि हम यहा बैठे रहे और अपने ऊपर इन अपराधों के लिए जिम्मेदारी ओढ़े। क्योंकि शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी बन्द नही हो रही है, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों तथा किसानों की सोवियत की कार्यकारिणी समिति के साथ मिलकर नगर दूमा ने अस्थायी सरकार के संग-संग मर मिटने का फैसला किया है। हम उनके साथ ही बाहर जा रहे हैं! हम निहत्थे ही आतंकवादियों की मशीनगनों के सामने अपना सीना खोल देंगे... हम इस कांग्रेस के सभी प्रतिनिधियों को बुलावा देते हैं.."
सीटियों, धमकियों, गालियों की ऐसी धुआंधार बौछार शुरू हुई कि उनकी

---

*जॉन रीड ने शायद दो भाषण – अब्रामोविच और एर्लिख के भाषण – गड्मड कर दिये हैं। – सं०

बात अधूरी ही रह गई। और जब एक साथ पचास प्रतिनिधि उठ कर लोगों को ठेलते-ठालते बाहर निकल गये, यह बौछार इतनी तेज़ हो गयी कि मालूम होता था आसमान फट पड़ेगा।

कामेनेव ने घंटी बजाई और कड़ककर कहा, "आप सब बैठे रहे, हम अपना काम जारी रखेंगे!" फिर त्रोत्स्की उठे – उनका चेहरा कठोर हो रहा था और उसकी आभा जैसे जाती रही थी – और उन्होंने मन्द्र, गम्भीर स्वर मे, शान्त, आवेशहीन घृणा व्यक्त करते हुए कहा, "ये सारे तथाकथित समाजवादी समझौतापरस्त, ये घबराये मेन्शेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी और बुन्द वाले – इन्हे जाने दीजिये! ये बस कूड़ा-कचरा है, जिन्हे इतिहास के कूड़ेखाने मे फेंक दिया जायेगा!"

बोल्शेविकों की ओर से रियाज़ानोव ने कहा कि नगर दूमा के अनुरोध पर सैनिक क्रांतिकारी समिति ने समझौते की बातचीत का प्रस्ताव करने के लिए शिशिर प्रासाद में एक प्रतिनिधिमण्डल भेजा है। "इस प्रकार हमने ख़ून-ख़राबा न होने देने के लिए अपनी भरसक सब कुछ किया है..."

हम जल्दी जल्दी वहां से निकले और क्षण भर के लिए उस कमरे के सामने रुके, जहां तार की खट-खट की आवाज़ के बीच सैनिक क्रांतिकारी समिति धुआंधार काम कर रही थी, जहा दौड़ते-हांफते हरकारे अन्दर जाते और बाहर की ओर भागते और जहा से कमिसार, जिनके हाथों मे ज़िन्दगी और मौत के अख़्तियार दिए हुए थे, शहर के कोने-कोने मे भेजे जा रहे थे। दरवाज़ा खुला और बासी हवा और सिगरेट के धुएं का एक झोंका बाहर आया। हमें भीतर की एक झलक मिली – कई बिखरे बालों वाले आदमी शेडदार बत्ती की रोशनी में एक नक्शे के ऊपर झुके हुए थे ... कामरेड योजेफोव-दुख्वीन्स्की नामक एक हंसमुख और घने सुनहरे बालों वाले नौजवान ने हमारे लिए पास बनाये।

जब हम सर्द रात मे बाहर निकले, स्मोल्नी के सामने की सारी ज़मीन जैसे मोटरों का एक भारी अड्डा बनी हुई थी, जहा गाड़ियां लगातार आ-जा रही थी। उनके शोर में भी दूर कही रह रह कर तोप के छूटने की आवाज सुनाई दे जाती। एक बहुत बडी ट्रक वहां खडी थी, उसका इजन शोर कर रहा था और पूरी ट्रक को हिलाये दे रहा

था। लोग उसमे बंडल उछाल रहे थे और दूसरे लोग, जिनके पास बन्दूके थी, उन्हे लोक रहे थे।

"आप लोग कहा जा रहे है?" मैंने चिल्ला कर पूछा।

"अन्दर शहर मे, चारों ओर–सभी जगह," एक नाटे कद के मजदूर ने बडे जोश से हाथ झटकारते और हंसते हुए कहा।

हमने अपने पास दिखाये; देखकर उन्होने कहा, "चले चलो! लेकिन वे शायद गोलियां चलायें।" हम अन्दर चढ़ गये। ड्राइवर ने खटाक से क्लच दबाया और वह भारी ट्रक एक जबरदस्त झटके के साथ आगे बढी; हम झटका खा कर पीछे उन लोगों पर गिरे, जो अभी अन्दर चढ रहे थे। गाड़ी चली, उस फाटक से निकलती हुई, जहां एक बडा अलाव जलाया गया था और फिर बाहरी फाटक से, जहां एक और अलाव जल रहा था। उसकी लाल रोशनी चारों ओर बन्दूकें लिए बैठे मजदूरो के चेहरो पर चमक रही थी। फिर गाड़ी हचकोले खाती और कभी इधर, कभी उधर झुकती पूरी रफ़्तार से सुवोरोव्स्की मार्ग से चली... एक आदमी ने जिस कागज़ मे बंडल लिपटा था उसे फाड़ डाला और दनादन हाथ हाथ भर पर्चे उठा कर उन्हे हवा मे उछालने लगा। हमने भी उसकी देखा-देखी यही किया। हम अंधेरी सड़क पर बेतहाशा भागे जा रहे थे और पीछे गाड़ी के साथ सफ़ेद पर्चों के दुमछल्ले हवा मे तैर रहे थे और चक्कर खा रहे थे। राह चलते लोग, जो इतनी रात गये इक्के-दुक्के आ जा रहे थे, उन्हें झुक कर उठा लेते। मोड़ो पर आग सेंकते हुए गश्ती सिपाही हाथ फैलाये उन्हे पकड़ने के लिए दौड़ पडते। कभी कभी सामने अंधेरे मे हथियारबन्द आदमियों की शक्लें नजर आती और वे बन्दूकें तानते हुए चिल्लाते "स्तोई!" (ठहर जाओ!) और हमारा ड्राइवर उत्तर मे कुछ अनबूझ बात कहता और हम घड़ घड़ करते आगे बढ जाते...

मैंने एक पर्चा उठाया और सड़क की एक झिलमिलाती हुई बत्ती की रोशनी में पढा:

रूस के नागरिकों के नाम

अस्थायी सरकार का तख्ता उलट दिया गया है। राज्य-सत्ता मजदूरो तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के अंग, सैनिक

क्रान्तिकारी समिति के हाथों में आ गयी है, जो पेत्रोग्राद सर्वहारा तथा गैरिसन की अगुआई कर रही है।

जिस ध्येय के लिए जनता संघर्ष कर रही थी – जनवादी शान्ति-सन्धि की अविलम्ब प्रस्तावना, भूमि पर जमींदारों के स्वामित्व का उन्मूलन, उत्पादन पर मज़दूरों का नियन्त्रण, सोवियत सरकार की स्थापना – वह ध्येय दृढ़ रूप से प्राप्त कर लिया गया है।

मजदूरों, सिपाहियों और किसानों की क्रान्ति जिन्दाबाद!

सैनिक क्रान्तिकारी समिति,

मजदूरों और सिपाहियों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत।

मेरी बगल में बैठा एक ऐंची आंख वाला आदमी, जिसका चेहरा मंगोलियाई था और जो काकेशियाई किस्म का बकरी की खाल का बिना आस्तीन का लबादा पहने था, बोला, "खबरदार! यहां हमेशा उकसावेबाज खिड़कियों से गोली चलाते हैं!" हम ज्नामेन्स्काया चौक में, जहां सुनसान अंधेरा था, मुड़े, त्रुबेत्स्कोई द्वारा बनाई गई बर्बर मूर्ति* की ओर से घूम कर नेव्स्की के प्रशस्त मार्ग पर आ गये। गाड़ी में तीन आदमी बन्दूकें लिये फायर करने के लिए तैयार खड़े, खिड़कियों की ओर देख रहे थे। हमारे पीछे लोग भागे आ रहे थे और पर्चे उठाने के लिए झुक रहे थे – उनके कारण सड़क पर काफी चहल-पहल हो गयी थी। अब तोप के धमाके सुनाई नहीं पड़ रहे थे, और जितना ही हम शहर के अन्दर और शिशिर प्रासाद के नजदीक पहुंचते गये, सड़कें उतनी ही ख़ामोश, उतनी ही वीरान दिखाई देती थीं। नगर दूमा का भवन ख़ूब जगमग था। उससे और आगे हम लोगों की एक क्षुब्ध भीड़ को और मल्लाहों की एक कतार को देख सकते थे। मल्लाहों ने गुस्से से चिल्ला कर हमें रुकने को कहा। गाड़ी धीमी हो गयी और हम उतर पड़े।

सामने एक आश्चर्यजनक दृश्य था। येकातेरीना नहर की मोड़ पर, एक आर्क-लैम्प के प्रकाश में नेव्स्की मार्ग के आर-पार हथियारबन्द मल्लाह पंक्तिबद्ध घेरा डाले खड़े थे और चार चार की कतार में खड़े

---

*जार अलेक्सान्द्र तृतीय की मूर्ति। – सं०

लोगों की एक भीड़ का रास्ता रोके हुए थे। करीब तीन-चार सौ लोग होंगे – लंबे कोट पहने साहब, सजी-धजी औरतें, अफ़सर – हर तरह के और हर हालत के लोग थे। हमने पहचाना, उनमें कांग्रेस के बहुत से प्रतिनिधि थे, मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रान्तिकारियों के नेता थे – किसानों की सोवियतों के दुबले-पतले लाल दाढ़ी वाले सभापति अव्क्सेन्त्येव, केरेन्स्की के प्रवक्ता सोरोकिन, ख़िनचूक, अब्रामोविच; और उन सब के आगे पेत्रोग्राद के मेयर, सफेद दाढ़ी वाले बूढ़े श्रेइदेर और अस्थायी सरकार में खाद्य-मन्त्री प्रोकोपोविच। मन्त्री महोदय को उसी दिन सुबह गिरफ़्तार किया गया था और फिर छोड़ दिया गया था। मेरी निगाह «Russian Daily News»* के रिपोर्टर माल्किन पर पड़ी। "शिशिर प्रासाद में मृत्यु का वरण करने जा रहे हैं," उसने हंसते हुए कहा। जुलूस रुका खड़ा था, लेकिन उसकी अगली क़तार से जोर जोर से बहस करने की आवाजें आ रही थीं। श्रेइदेर और प्रोकोपोविच एक लम्बे-तड़ंगे मल्लाह पर, जो टुकड़ी का नायक मालूम होता था, गरज-तड़प रहे थे।

"हम मांग करते हैं कि हमें जाने दिया जाये," उन्होंने चिल्ला कर कहा। "देखिये, ये साथी सोवियतों की कांग्रेस से आते हैं! उनके कार्डों पर नजर डालिये! हम शिशिर प्रासाद जा रहे हैं!"

मल्लाह स्पष्टतः उलझन में था। उसने अपनी बड़ी बड़ी उंगलियों से सिर खुजलाते हुए, भौंहें सिकोड़ते हुए और कुछ भुनभुनाते हुए कहा, "मुझे समिति का आदेश है कि किसी को भी शिशिर प्रासाद जाने न दिया जाये। फिर भी मैं स्मोल्नी टेलीफोन करने के लिये एक साथी को भेजता हूं..."

"हम आग्रह करते हैं कि हमें जाने दिया जाये! हमारे हाथ में हथियार नहीं है और आप चाहे हमें इजाज़त दें या न दें, हम जायेंगे जरूर!" बूढ़े श्रेइदेर ने अत्यन्त उत्तेजित होकर कहा।

"हमें हुक्म है..." मल्लाह ने चिढ़ कर दोहराया।

"अगर आप हमारे ऊपर गोलियां चलाना चाहते हैं, तो बेशक

---

* १९१७ में पेत्रोग्राद से निकलने वाला एक अंग्रेजी समाचारपत्र। – सं०

चलाइये ! लेकिन हम जायेंगे ज़रूर ! बढ़ो, साथियो !" सभी ओर से आवाज़े आईं। "अगर आप का हृदय इतना कठोर है कि आप रूसियो पर और अपने साथियों पर गोली [illegible] सकते हैं, तो ज़रूर चलाइये, हम मरने के लिये तैयार हैं! हम आपकी बन्दूकों के सामने अपना सीना खोल देने के लिये तैयार हैं!"

"नही," मल्लाह ने बिना टस से मस हुए कहा। "मैं आपको हरगिज़ जाने की इजाज़त नही दे सकता।"

"लेकिन अगर हम आगे बढ़ें, तो आप क्या करेंगे? क्या आप गोली चलायेंगे?"

"नही, मै उन लोगों पर गोली नही चलाऊंगा, जिनके हाथ में हथियार नहीं है। हम निहत्थे रूसियों पर गोली नही चलायेंगे..."

"हम ज़रूर जायेंगे! आप कर ही क्या सकते हैं?"

"हम कुछ करेंगे ही," मल्लाह ने जवाब दिया। लेकिन स्पष्टतः उसकी समझ में यह नही आ रहा था कि वह क्या करेगा। "हम आपको हरगिज जाने नही दे सकते। हम कुछ न कुछ करेंगे ही।"

"आप क्या करेंगे? आप क्या करेंगे?"

एक और मल्लाह गुस्से से भरा हुआ वहां आया। "हम आपकी मरम्मत करेंगे!" उसने ज़ोरदार लहजे मे कहा। "और ज़रूरत होने पर हम गोली भी चलायेंगे। आप घर जाइये और हमे छेड़िये नही!"

उसकी इस बात से लोग बेतरह चिढ़ कर चीखने-चिल्लाने लगे। प्रोकोपोविच वहा पड़ी हुई एक पेटी-वेटी जैसी चीज पर चढ गये थे और अपनी छतरी हिलाते हुए उन्होने एक भाषण दे डाला:

"साथियो और नागरिको," उन्होंने कहा। "हमारे ऊपर हाथ उठाया जा रहा है! हम यह गवारा नही कर सकते कि इन अनपढ़ गंवार लोगो के हाथ से हमारे जैसे निर्दोष आदमियों का ख़ून बहे! ये स्विचमैन..." ("स्विचमैन" से उनका क्या मतलब था, यह मैं आज तक समझ नही सका हूं) "...हमे इस सड़क पर गोलियों से भूनें, यह हमारे लिए अपमानजनक है। आइये, हम दूमा लौट जायें और इस बात पर विचार करे कि देश तथा क्रांति को बचाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है!"

इस पर जुलूस चुपचाप बड़े शोभनीय ढंग से पीछे मुड़ पड़ा और उसी तरह चार चार की कतार में नेव्स्की मार्ग पर बढ़ा। रक्षकों का ध्यान बट जाने से फायदा उठा कर हम चुपके से घेरे के भीतर घुस गये और शिशिर प्रासाद की ओर बढ़े।

उधर की ओर घुप अंधेरा था और वहां सख्त, तुले हुए सिपाहियों और लाल गार्डों के पिकेट-दलों को छोड़ कर कहीं कोई हरकत न थी। कजान गिरजाघर के सामने बीच सड़क में तीन इंच के मुंह वाला एक मैदानी तोप देखा जा सकता था, जो घरों की छतों के ऊपर अपना आखिरी गोला दागने के बाद उसके झटके से एक ओर को झुक गया था। हर दहलीज पर सिपाही खड़े धीरे धीरे बातें कर रहे थे और नीचे पुलिस पुल की ओर बड़े ध्यान से देख रहे थे। मैंने सुना, एक आदमी कह रहा था: "हो सकता है, हमने गलती ही की हो..." हर मोड़ पर गश्ती दस्ते आने जाने वालों को रोक रहे थे। इन दस्तों की सदस्यता बड़ी दिलचस्प थी, क्योंकि उनमें नियमित सैनिकों की कमान निरपवाद रूप से किसी न किसी लाल गार्ड के हाथ में थी... गोलाबारी बन्द हो चुकी थी।

हम मोस्कोया मार्ग पर पहुंचे ही थे कि एक आदमी ने चिल्ला कर कहा, "युंकरों ने खबर भेजी है – वे चाहते हैं कि हम जाकर उन्हें बाहर निकालें!" सिपाहियों के बीच हुक्म देने की आवाजें आने लगी और घुप अंधेरे में हमने देखा एक धुंधला-धुंधला जनसमूह आगे बढ़ रहा था। शस्त्रों की झनकार और पगध्वनि को छोड़ कर और कोई ध्वनि न थी। हम सबसे अगली पांतों के साथ कदम मिला कर चल दिये।

जैसे एक सियाह दरिया उमड़ पड़ा हो, हम पूरी सड़क को भरे हुए लाल मेहराबी दरवाजे से निकले – हमारी लबों पर कोई गीत नहीं था, न हंसी थी, न कोई जोश देने वाला नारा। जो आदमी ठीक मेरे सामने था, उसने आहिस्ता आवाज में कहा, "खबरदार, साथियो, उनका एतबार न कीजिये। वे जरूर गोली चलायेंगे!" खुली जगह में आकर हम दोहरे झुके और एक दूसरे से सटे-सटे दौड़ने लगे। अचानक हम अलेक्सान्द्र की लाट की बुर्जी के पीछे आकर रुक गये।

"उनके हाथ आरंभ से कितने मारे गये?" मैंने पूछा।

"मैं नहीं जानता, शायद दस ..."

कुछ मिनटों तक वहां सैकड़ों आदमी अफरा-तफरी में खड़े रहे, लेकिन उसके बाद यह सेना आश्वस्त सी हो कर और बिना कोई हुक्म मिले अचानक ही आगे बढ़ने लगी। अब शिशिर प्रासाद की सभी खिड़कियों से आनेवाली रोशनी में मैं देख सकता था कि सबसे आगे के दो या तीन सौ आदमी लाल गार्ड थे और उनमें सिपाही बस थोड़े से छिटफूट ही थे। लकड़ियों को जमा करके जो बैरिकेड बनाया गया था, हम उस पर चढ़ गये और जब हम दूसरी ओर नीचे कूदे, हम विजय के उल्लास से चिल्ला पड़े, क्योंकि हमारे पैरों के नीचे ढेर की ढेर बन्दूकें पड़ी थी, जिन्हे युंकरों ने फेंक दी थी। सदर फाटक के दोनो ओर दरवाजे पूरे के पूरे खुले हुए थे और उनसे निकल कर रोशनी बाहर फैल रही थी, लेकिन लकड़ियों के उस अम्बार से चूं तक की आवाज़ नही आ रही थी।

बेक़रार भीड़ के एक झोंके के साथ हम भी दायी ओर के दरवाजे से अन्दर पहुंच गये। यह दरवाज़ा एक बड़े बेआरास्ता मेहराबी कमरे मे खुलता था। यह था प्रासाद के पूर्वी खण्ड का तहखाना, जिससे कितने ही गलियारे निकले हुए थे और सीढ़िया ऊपर गई थी। ज़मीन पर कई बड़ी बड़ी पेटियां पड़ी हुई थी, जिन पर लाल गार्ड तथा सिपाही बेतहाशा टूट पड़े, उन्हें अपनी बन्दूकों के कुन्दो से तोड़ने लगे और उनके अन्दर से क़ालीन, पर्दे, कपड़े, चीनी की मिट्टी और शीशे के बर्तन निकालने लगे... एक आदमी अपने कंधे पर कांसे की एक दीवारगीर घड़ी उठाये बड़े शान से इतराता हुआ चल रहा था। एक दूसरे आदमी के हाथ शुतुर्मुर्ग के पंखों का एक गुच्छा लगा, जिसे उसने अपनी टोपी मे लगा लिया। लूट शुरू ही हो रही थी, जब किसी ने चिल्लाकर कहा, "साथियो! किसी चीज पर हाथ न लगाइये, किसी चीज़ को न उठाइये! यह सब जनता की सम्पत्ति है!" और फौरन बीस आवाज़ों ने इस बात को दोहराया, "बन्द करो! जो कुछ उठाया है, उसे वापिस रखो! किसी चीज़ को हाथ मत लगाओ! यह सब कुछ जनता की सम्पत्ति है!" कितने ही हाथों ने लूटमार शुरू करने वालों की गरदन नापी। जिन लोगो के पास दमिश्की वस्त्र या पर्दे थे, उनके हाथ से वे छीन लिये गये; दो आदमियों ने झपट कर कांसे की घड़ी ले ली।

जल्दी जल्दी और बेढंगे तरीके से ये चीजें पेटियों में वापिस डाल दी गईं और स्वयं-निर्दिष्ट प्रहरी चौकसी पर तैनात हो गये। यह सब कुछ बिलकुल ही अपने आप हो गया। गलियारों और सीढ़ियों से दूर होती हुई और हल्की पड़ती हुई आवाजें आ रही थी, "क्रांतिकारी अनुशासन! जनता की सम्पत्ति..."

हम पीछे मुडकर पश्चिमी खण्ड मे बायें दरवाजे की ओर बढ़े। वहां भी व्यवस्था स्थापित की जा रही थी। भीतरी दरवाजे से अपना सिर बाहर निकाल कर एक लाल गार्ड ने कड़ी आवाज मे कहा, "महल से बाहर निकलो! साथियो, हमें यह दिखा देना है कि हम चोर और लुटेरे नही हैं। जब तक कि हम संतरियों को तैनात नही कर लेते कमिसारों को छोड़ कर बाकी सभी महल से बाहर निकल जायें।"

दो लाल गार्ड, एक सिपाही और दूसरा अफ़सर, हाथ में रिवाल्वर लिये खड़े थे। उनके पीछे एक मेज़ के साथ एक दूसरा सिपाही हाथ में कागज और कलम लिये बैठा था। अन्दर दूर और नज़दीक सभी जगह एक ही आवाज गूज रही थी, "सब बाहर निकल जायें! सब बाहर जाये!" और सिपाही एक दूसरे को धक्का देते, एक दूसरे से कंधे रगडते, शिकायत करते, बहस करते दरवाजे से धडाधड़ बाहर निकलने लगे। जैसे ही एक आदमी दरवाज़े पर पहुंचता, उसे स्वयं-निर्दिष्ट समिति पकड लेती, उसकी जेबों को उलट देती और उसके कोट के नीचे देखती। जो भी चीज स्पष्टतः उसकी अपनी न होती, वह उससे छीन ली जाती, मेज के साथ बैठा आदमी उसे कागज मे दर्ज कर लेता और फिर उसे एक छोटे से कमरे में ले जाकर धर दिया जाता। तरह तरह की अजीबोग़रीब चीज़ें जब्त की गईं। छोटी छोटी मूर्तियां, दावाते, पलंगपोश जिन पर शाही गुम्फाक्षर काढे हुए थे, शमादान, एक छोटा सा तैल-चित्र, मेज़ी सोख्ते, सोने की मुठिया वाली तलवारें, साबुन की टिकिया, हर तरह के कपडे, कम्बल वगैरह। एक लाल गार्ड तीन बन्दूकें लिये आया, जिनमे दो युंकरों से छीनी गई थीं; एक दूसरे लाल गार्ड के हाथ में चार पोर्टफोलियो थे, जिनमे तहरीरी दस्तावेजें ठूस ठूस कर भरी हुई थीं। अपराधी या तो चिढ़ कर इन चीजों को हवाले करते या बड़ी

मासूमियत से बच्चों की तरह दलीलें देते। समिति के सदस्यों ने, सबके सब एक साथ बात करते हुए, उन्हें समझाया कि जो लोग जनता के ध्येय के लिये लड़ते हैं, उनके लिये चोरी करना शोभनीय नहीं है। उनकी बात का असर यह होता कि अक्सर जिन्हें पकड़ा गया था, वे रुख़ बदल कर बाकी साथियों की तलाशी लेने में मदद देने लगते।[3]

और फिर युंकरों की टोलियां आयी—तीन-तीन, चार-चार एक साथ। समिति उनके ऊपर बडे जोशोख़रोश से टूट पड़ी, और उनकी तलाशी लेते हुए फब्तियाँ कसती रही, "ये हैं साले उकसावेबाज़! कोर्नीलोवपंथी कहीं के! प्रतिक्रांतिकारी! जनता के हत्यारे!" लेकिन उन्हें कोई ज़रर नहीं पहुचायी गयी, हालांकि युंकर डरे और घबराये हुए थे। उनकी जेबें भी लूटी हुई छोटी-मोटी चीजों से भरी थीं, जिन्हें उसी मुहर्रिर ने बड़ी सावधानी से दर्ज किया और उस छोटे से कमरे में जमा कर दिया...युंकरों के पास जो हथियार थे, वे रखवा लिये गये। "अब फिर तुम जनता के ख़िलाफ़ हथियार उठोगे?" लोगों ने चिल्ला चिल्ला कर उनसे पूछा।

"नहीं, नहीं," युंकरों ने एक एक कर जवाब दिया। इसके बाद उन्हें छुट्टा छोड दिया गया।

हमने पूछा कि क्या हम अन्दर जा सकते है। समिति को निश्चय न था, परन्तु एक लंबे-तडंगे लाल गार्ड ने दृढ़ता से उत्तर दिया कि अन्दर जाना मना है। "बहरसूरत, तुम हो कौन?" उसने पूछा, "मुझे कैसे मालूम हो कि तुम सारे केरेन्स्की के आदमी नहीं हो?" (हम पांच थे, जिनमे दो औरतें भी थीं।)

"पजालस्ता, तोवारिश्ची! मेहरबानी करके रास्ता दीजिये, साथियो!" यह कहते हुए एक सिपाही और एक लाल गार्ड भीड़ को हटाते-बढ़ाते दरवाज़े पर आ गये। साथ में संगीनें लिये दूसरे गार्ड भी थे। उनके पीछे एक एक कर सिविलियन पोशाक में आधे दर्जन आदमी चल रहे थे। ये थे अस्थायी सरकार के सदस्य। पहले किशकिन आये, चेहरा खिंचा और बुझा हुआ; उनके पीछे रुतेनबेर्ग, निगाहें नीचे झुकी हुई मगर गुस्से में; उनके बाद तेरेश्चेन्को, चारों ओर चौकन्नी नज़र डालते हुए—उन्होंने हमारी ओर रुखाई से एकटक देखा... वे चुपचाप

वहा से निकल गये – किसी ने उन्हे कुछ कहा-सुना नही। विजयी विद्रोहियों ने उन्हे देखने के लिए भीड ज़रूर लगायी, लेकिन गुस्से से भुनभुनाने वाले दो-चार ही थे। हम बाद में मालूम हुआ कि सड़क पर लोग उन्हे नोच डालने पर आमादा थे और गोलियां भी चलायी गयीं, लेकिन सिपाहियो ने बाहिफाजत उन्हे पीटर-पाल किले मे पहुचा दिया...

इस बीच हम प्रासाद मे घुस गये – किसी ने हमे मना नही। अभी भी बहुत काफी लोग आ जा रहे थे, विशाल भवन के नये देखे गये भागो को ढूढा जा रहा था, युंकरों की रूपोश गैरिमनों की तलाश की जा रही थी, जिनका वास्तव मे अस्तित्व ही न था। हम ऊपर चढ़ गये और एक कमरे के बाद दूसरे कमरे मे घूमते रहे। प्रासाद के इस भाग मे दूसरी टुकडियों ने भी नेवा की ओर से प्रवेश किया था। विशाल राजकीय कक्षों के चित्र, मूर्तियां, परदे और कालीने ज्यो की त्यों थी। परन्तु कार्यालयों मे सभी मेजो और आलमारियों को छान डाला गया था और जमीन पर कागज़-पत्र बिखेर दिये गये थे। रिहायशी हिस्से मे चारपाइया नगी कर दी गयी थी और कपडे रखने की आलमारियो को खीच-खाच कर खोल डाला गया था। लूट की चीज़ों मे अगर कोई चीज सबसे कीमती समझी जाती थी, तो वह पहनने का कपड़ा थी, जिसकी मेहनतकशों को सख्त ज़रूरत थी। एक कमरे मे, जहा मेज-कुर्सिया जमा थीं, हमने दो सिपाहियो को चौका दिया, जो कुर्सियो की मोटी स्पेनी चमडे की गद्दियो को उधेड़ रहे थे। उन्होंने बताया कि वे उससे जूते बनवायेगे ..

प्रासाद के पुराने नौकर अपनी लाल, नीली और सुनहरी वर्दियां पहने हुए घबराये से खडे थे और अभ्यास-वश बार बार कह रहे थे, "आप वहा नहीं जा सकते, मालिक! वहा जाना मना है..." हम अन्दर घुमते घुमते आखिरकार स्वर्ण तथा मैलाकाइट कक्ष मे पहुचे, जहां लाल किमख्वाब के परदे लटक रहे थे। यहा पूरे दिन और रात मन्त्रिमण्डल की बैठक होती रही थी और यही प्रासाद के द्वेइत्सारों ने मन्त्रियों को लाल गार्डों के हवाले कर दिया था। हरे ऊनी कपड़े मे ढंकी लम्बी मेज वैसे ही पड़ी थी, जैसे उन्होंने उसे गिरफ्तार होने की घड़ी मे छोड़ा था।

हर ख़ाली कुर्सी के सामने क़लम और दावात और कागज़ था; कागजों पर कुछ न कुछ कार्रवाई करने की प्रारम्भिक योजनायें और घोषणाओ के कच्चे मसौदे घसीटे गये थे। उनमे से अधिकाश को काट दिया गया था, क्योंकि उनकी निरर्थकता स्पष्ट हो गयी थी, कागज़ का बाकी हिस्सा ज्यामितीय रेखाओ से भरा पड़ा था, जो खोये-खोये भाव से उस वक़्त खीची गयी थी, जब निराशा मे डूबा लेखक एक मन्त्री के बाद दूसरे मन्त्री को हवाई स्कीमों का प्रस्ताव करते सुन रहा था। मैंने घसीटा हुआ एक परचा उठाया, जिस पर कोनोवालोव के हाथ से लिखा हुआ था, "अस्थायी सरकार सभी वर्गों से समर्थन की अपील करती है..."

यह हरगिज भूलना नही चाहिए कि यद्यपि शिशिर प्रासाद पर घेरा डाल दिया गया था, सरकार का मोर्चे से और रूस के प्रान्तों से सम्पर्क पूरे वक़्त बना हुआ था। बोल्शेविकों ने युद्ध-मन्त्रालय पर सुबह-सुबह ही क़ब्ज़ा कर लिया था, परन्तु उन्हें यह नही मालूम था कि अटारी मे सैनिक तारघर काम कर रहा था, या यह कि एक प्राइवेट टेलीफ़ोन लाइन तारघर को शिशिर प्रासाद से जोड़ती थी। अटारी में बैठा एक नौजवान अफ़सर ढेरो अपीले और घोषणायें पूरे दिन देश भर में भेजता रहा था और जब उसने सुना कि शिशिर प्रासाद का पतन हो गया, उसने अपना हैट उठाया और चुपके से बाइत्मीनान इमारत से बाहर निकल गया...

हम अपने पर्यवेक्षण मे इतने तल्लीन थे कि बहुत देर तक हमारा ध्यान इस ओर नही गया कि हमारे चारों ओर जो सिपाही और लाल गार्ड थे, उनका रुख बदला हुआ है। जब हम एक कमरे से दूसरे कमरे मे जा रहे थे, एक छोटी सी टोली हमारा पीछा कर रही थी। जिस विशाल चित्रशाला मे हमने तीसरा पहर युंकरों के साथ बिताया था, वहां पहुंचते पहुंचते, हमारे पीछे लगभग एक सौ आदमियों की भीड़ जुट आयी थी। एक देव जैसा सिपाही हमारा रास्ता रोके खड़ा था, उसका चेहरा शक और गुस्से से सियाह हो रहा था।

"आप लोग कौन है ?" वह गुर्राया। "आप लोग यहां क्या कर रहे है ?' और लोग भी धीरे धीरे वहा जमा हो गये और हमारी ओर घूरते हुए बडबड करने लगे। मैंने एक आदमी को कहते सुना, "प्रोवोकातोरी!" (उकसावेबाज) "लुटेरे!" मैंने सैनिक क्रान्तिकारी समिति के पासो को दिखाया। सिपाही ने उन्हे इस तरह हाथ मे लिया, जैसे वे उसके छूने से मैले हो जायेंगे, उन्हे उलट-पुलट कर अनबूझ भाव से देखा। जाहिर था कि वह निपट निरक्षर था। उसने जमीन पर थूकते हुए उन्हे लौटा दिया। "बुमागी! कागजात!" उसने हिकारत से कहा। भीड घनी होने और हमारे गिर्द सिमटने लगी, जैसे गाय हाकते हुए किसी आदमी को मरकहे बैल घेर ले। मैंने देखा उनके पीछे एक अफसर निसहाय भाव से खडा था, और मैंने उसकी गुहार की। वह लोगो को हटाते-बढाते हमारी ओर आया।

"मै कमिसार हू," उसने मुझसे कहा। "आप कौन है? बात क्या है ?" और लोग अपने ऊपर जब्त कर इन्तजार करते रहे। मैंने अपने कागजात पेश किये। "आप लोग विदेशी है ?" अफसर ने फ़ासीसी भाषा मे जल्दी जल्दी बोलते हुए पूछा। "बहुत ही खतरनाक बात है..." और फिर वह हमारी दस्तावेजो को दिखाता हुआ भीड़ की ओर मुखातिब हुआ। "साथियो," उसने चिल्ला कर कहा। "ये लोग विदेशी साथी है—अमरीकी साथी। वे यहा इसलिए आये है कि अपने देशवासियो को सर्वहारा सेना के साहस और क्रान्तिकारी अनुशासन के बारे मे बता सके!"

"आप यह कैसे जानते है?" देव जैसे सिपाही ने कहा। "मेरी बात मानिये, ये उकसावेबाज है! वे कहते है कि वे सर्वहारा सेना का क्रान्तिकारी अनुशासन देखने के लिए आये है, परन्तु वे महल के अन्दर आजादी से घूम रहे है, और क्या पता उनकी जेबो मे लूट का माल भरा हो!"

"प्राविल्नो! ठीक बात है!" दूसरो ने हमारी ओर बढते हुए कहा।

"साथियो! साथियो!" अफसर ने उनसे अपील करते हुए कहा और उसके माथे पर पसीने की बूदे चमकने लगी। "मै सैनिक क्रान्तिकारी

समिति का कमिसार हूं। आप मेरा विश्वास करते हैं? तो मैं आप से कहता हूं कि ये पास उन्ही लोगों के दस्तख़त से जारी किये गये हैं, जिनके दस्तखत से मेरा पास।"

वह हमें लिये नीचे उतरा और हमें प्रासाद से होते हुए एक दरवाज़े से बाहर निकाला, जो नेवा नदी की घाट की ओर खुलता था। दरवाज़े के सामने वही समिति, लोगों की तलाशी लेती हुई... "आप लोग बाल बाल बचे हैं," वह मुंह का पसीना पोंछते हुए भुनभुनाया।

"औरतों की बटालियन का क्या हुआ?" हमने पूछा।

"ओह – औरतों का!" उसने हंसकर कहा। "वे सब पीछे के एक कमरे मे गठरी बनी बैठी थी। उनके बारे में क्या किया जाये, हमारे लिए यह फ़ैसला करना बड़ा मुश्किल था। उनमें बहुतेरी आपे से बाहर हो गयी थीं और बकने-झकने लगी थीं। अन्त में हम उन्हें मार्च कराते हुए फिनलैण्ड-स्टेशन ले गये और वहां उन्हें लेवाशोवो जाने वाली एक गाडी मे बैठा दिया, जहां उनका एक कैम्प है..."[4]

हम बाहर आये – सर्द रात बेचैन, घबराई हुई थी और उसमे अज्ञात सेनाओं के पदचापों की गूंज थी, गश्ती सिपाहियो की आवाज़ों की सनसनाहट थी। दरिया पार से, जहां पीटर-पाल का विशाल दुर्ग धुंधला-धुंधला नजर आ रहा था, एक फटी आवाज आयी... नीचे पटरी पर राजमहल की कार्निस से, जहा क्रूज़र 'अव्रोरा' के दो गोले गिरे थे, टूटा हुआ पलस्तर बिखरा पड़ा था। गोलाबारी से बस यही एक नुकसान हुआ था...*

सबेरे के तीन बज चुके थे। नेव्स्की मार्ग पर सड़क की सारी बत्तियां फिर जल रही थी, तोप हटा लिया गया था, और वहां युद्ध का

---

*यह बात सही नही है कि 'अव्रोरा' क्रूज़र ने दो गोले दाग़े थे। दर असल ७ नवंबर, १९१७ को पौने दस बजे रात मे 'अव्रोरा' ने एक खाली गोला दागा था, जिसका प्रयोजन था शिशिर प्रासाद पर धावा बोलने के लिए संकेत देना। वह नुकसान, जिसकी ओर जॉन रीड इशारा करते है, पीटर-पाल किले से गोलाबारी के कारण हुआ था। – सं०

कोई लक्षण था तो केवल यह कि लाल गार्ड और सिपाही अलाव के चारों ओर बैठे आग सेंक रहे थे। नगर शान्त था—सम्भवतः अपने पूरे इतिहास में यह कभी इतना शान्त न था। उस रात न तो कोई ठगी-बटमारी हुई, न एक भी चोरी।

लेकिन नगर दूमा का भवन प्रकाश से जगमग था। हम गैलरियों वाले अलेक्सान्द्र हॉल में गये, जिसकी दीवारों पर सुनहरे फ्रेमों में जड़े हुए और लाल कपड़े से ढंके हुए शाही शबीह टंगे हुए थे। करीब एक सौ लोग मंच के गिर्द जमा थे, जहां स्कोबेलेव बोल रहे थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि सार्वजनिक सुरक्षा समिति की सदस्य-संख्या बढ़ायी जानी चाहिए, ताकि सभी बोल्शेविक-विरोधी तत्वों को एक विशाल संगठन में एकजुट किया जा सके और उसे देश तथा क्रान्ति की उद्धार समिति का नाम दिया जाना चाहिए। हमारे देखते देखते यह उद्धार समिति गठित कर दी गयी—वही समिति, जो बोल्शेविकों की इतनी प्रबल शत्रु बन जाने वाली थी, और अगले सप्ताह में कभी तो अपने नाम से, जिससे उसकी जातिवदारी जाहिर होती थी, और कभी बिल्कुल गैरजानिबदार सार्वजनिक सुरक्षा समिति के नाम से सामने आने वाली थी...

दान, गोत्स और अव्क्सेन्त्येव वहां पर थे, कुछ विद्रोही सोवियत प्रतिनिधि, किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति के सदस्य, बूढ़े प्रोकोपोविच और यहां तक कि विनावेर और अन्य कैडेटों समेत जनतन्त्र की परिषद् के सदस्य भी वहां थे। लीबेर ने चिल्ला कर कहा कि सोवियतों की कांग्रेस एक जायज कांग्रेस न थी, कि पुरानी त्से-ई-काह पदच्युत नहीं हुई है... देश के नाम एक अपील का मसौदा तैयार किया गया।

हमने एक बग्घी-गाड़ी को आवाज दी। "कहां जाना है?" परन्तु जब हमने कहा, "स्मोल्नी" इज्वोज्चिक (कोचवान) ने सिर हिला कर कहा, "नेत! नहीं, भाई, मैं उस शैतानी जगह नहीं जाऊंगा..." घूमते घूमते थक कर चूर हो जाने के बाद ही हमें एक ऐसा कोचवान मिला, जो वहां जाने के लिए तैयार था—इसके लिए उसने तीस रूबल मांगे और हमें थोड़ा पहले ही उतार दिया।

स्मोल्नी भवन की खिड़कियों में अभी भी रोशनी थी। मोटरें बराबर आ जा रही थीं, और अभी भी धू धू कर जलते अलावों के चारों ओर एक-दूसरे से सटे बैठे सन्तरी हर आदमी से बड़े चाव से पूछते कि सबसे ताज़ा समाचार क्या है। भवन के गलियारे दौड़ते-भागते आदमियों से भरे हुए थे – मैले-कुचैले लोग, जिनकी आखें गढ़े मे धंसी हुई थीं। कई समिति-कक्षों मे लोग फर्श पर सो रहे थे, बगल मे उनकी बन्दूके पड़ी हुई थीं। सभा-त्याग करनेवाले प्रतिनिधियों के बावजूद, सभा मण्डप में लोग खचाखच भरे हुए थे – लग रहा था जैसे समुद्र गर्जन कर रहा है। जब हम अन्दर दाखिल हुए, कामेनेव गिरफ्तार मन्त्रियों की सूची पढ़ रहे थे। तेरेश्चेको का नाम लेते ही लोग खुशी से तालियां पीटने लगे और ठहाके लगाने लगे। रुतेनबेर्ग के नाम पर इतना जोश नहीं जाहिर किया गया। पालचीन्स्की का नाम लेते ही लोग थुड़ी थुड़ी करने लगे, लानतें भेजने और तालियां पीटने लगे... सभा मे घोषणा की गयी कि चुदनोव्स्की को शिशिर प्रासाद का कमिसार नियुक्त किया गया है।

इसी समय एक नाटकीय व्याघात उपस्थित हुआ। एक लम्बा-तड़ंगा दढ़ियल किसान, जो गुस्से से कांप रहा था, मच पर चढ़ आया और सभापति की मेज पर घूसा जमाते हुए बोला:

"हम समाजवादी-क्रान्तिकारी इसरार करते है कि शिशिर प्रासाद मे गिरफ्तार समाजवादी मन्त्रियों को फौरन रिहा किया जाये! साथियो! आपको मालूम है कि चार साथी, जिन्होंने अपनी जान पर खेल कर और अपनी आजादी को खतरे मे डालकर जार के निरंकुश शासन से सघर्ष किया, पीटर-पाल की जेल मे – आजादी के तारीखी मकबरे में – बन्द कर दिये गये है?" शोरगुल के बीच वह मेज पीटता रहा और चिल्लाता रहा। एक और प्रतिनिधि ऊपर चढ़ आया और उसकी बगल मे खड़ा हो गया। सभापतिमण्डल की ओर इशारा करते हुए उसने कहा:

"क्या क्रान्तिकारी जन-साधारण चुपचाप हाथ पर हाथ धरे बोल्शेविकों की ओखराना (खुफिया पुलिस) द्वारा अपने नेताओं की मिट्टी पलीद होते देखते रहेंगे?"

त्रोत्स्की ने लोगो को ख़ामोश होने का इशारा करते हुए कहा, "ये 'साथी' सट्टेबाज़ केरेन्स्की के साथ मिलकर सोवियतों को कुचल देने का षड्यन्त्र रचते हुए पकड़े गये हैं, क्या इनके साथ नर्मी के साथ पेश आने की कोई वजह है? १६ और १८ जुलाई के बाद उन्होंने हमारे प्रति बहुत सौजन्य नही दिखाया था!" उन्होंने उल्लसित स्वर में फिर कहा, "अब चूकि ओबोरोनत्सी (प्रतिरक्षावादी) और बुज़दिल चले गये हैं और क्रान्ति को बचाने और उसकी हिफ़ाज़त करने की पूरी जिम्मेदारी हमारे कन्धो पर आ पड़ी है, यह और भी जरूरी हो गया है कि हम काम करे और आराम को हराम समझें! हमने फ़ैसला किया है कि जान दे देगे, मगर घुटने नही टेकेंगे!"

उनके बाद त्सारस्कोये सेलो का एक कमिसार बोलने के लिए खड़ा हुआ। वह सरपट घोड़ा दौड़ाते अभी अभी वहा पहुंचा था। रास्ते की कीचड़ के छीटे उसके कपड़ो पर थे और वह हांफ रहा था। "त्सारस्कोये सेलो की गैरिसन पेत्रोग्राद के दरवाज़े पर चौकसी कर रही है, और वह सोवियतों की और सैनिक क्रान्तिकारी समिति की हिफ़ाज़त के लिए तैयार है!" बड़े ज़ोर की तालिया। "मोर्चे से भेजी गयी साइकल-कोर त्सारस्कोये सेलो पहुंच चुकी है, और कोर के सिपाही अब हमारे साथ हैं। वे सोवियतो की सत्ता को मानते हैं, वे ज़मीन फ़ौरन किसानों के हाथ में और उद्योगो का नियन्त्रण मज़दूरो के हाथ मे देने की जरूरत को मानते हैं। त्सारस्कोये सेलो मे तैनात साइकल सैनिको की पाचवी बटालियन हमारी है..."

इसके बाद तीसरी साइकिल बटालियन का एक प्रतिनिधि। उसने बताया—और जब वह बोल रहा था, लोगो का जोश दीवानगी की हद तक पहुच गया—कि किस प्रकार तीन दिन पहले साइकिल कोर को दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे से "पेत्रोग्राद की रक्षा" के लिए कूच करने का हुक्म दिया गया। लेकिन उन्होने भांप लिया कि दाल मे कुछ काला जरूर है। पेरेदोल्स्क के स्टेशन पर त्सारस्कोये सेलो से आनेवाले पांचवी बटालियन के प्रतिनिधि उनसे मिले। उनकी एक संयुक्त सभा हुई और सभा मे यह प्रगट हुआ कि "साइकिल सैनिको मे एक भी आदमी ऐसा न था, जो अपने भाइयो का खून बहाने या

पूंजीपतियों और जमींदारों की सरकार का समर्थन करने के लिए तैयार हो!"

मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों की ओर से बोलते हुए कापेलीन्स्की ने प्रस्ताव किया कि गृहयुद्ध के शान्तिपूर्ण निपटारे के लिए एक विशेष समिति गठित की जाये। "कोई शान्तिपूर्ण निपटारा नहीं हो सकता!" भीड़ ने गरज कर कहा। "निपटारा एक ही तरह से हो सकता है– हमारी विजय से!" यह प्रस्ताव प्रबल बहुमत से विफल हो गया और मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादी लोगों की हू हू और लू लू और गालियों की बौछार के बीच सभा त्याग कर चले गये। अब लोगों में कोई खौफ या दहशत न थी... मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों के जाते जाते, कामेनेव ने मंच से उन्हें ललकारते हुए कहा, "मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों का दावा है कि 'शान्तिपूर्ण निपटारे' का प्रश्न एक 'आपाती' प्रश्न बन गया है, लेकिन जब कांग्रेस से निकल जाने की इच्छा रखनेवाले गुटों ने अपने वक्तव्य देने चाहे, इन लोगों ने इसके लिए सदा काम-रोको प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया। जाहिर है," कामेनेव ने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा, "कि ये सभी गद्दार सभा त्याग करने का निश्चय पहले से ही कर चुके थे!"

सभा ने निश्चय किया कि गुटों के सभा-त्याग पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है और पूरे रूस के मजदूरों, सिपाहियों और किसानों के नाम अपील पर विचार करना शुरू किया जाये। अपील यूं है:

मजदूरों, सिपाहियों और किसानों के नाम

मजदूरों तथा सैनिकों की सोवियतों के प्रतिनिधियों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस शुरू हो गयी है। यह कांग्रेस सोवियतों के विशाल बहुमत का प्रतिनिधित्व करती है। उसमें अनेक किसान प्रतिनिधि भी मौजूद हैं। मजदूरों, सिपाहियों और किसानों के विशाल बहुमत का आधार ग्रहण करके, पेत्रोग्राद के मजदूरों और सिपाहियों के विजयी विद्रोह का आधार ग्रहण करके, कांग्रेस राज्य-सत्ता अपने हाथ में लेती है।

अस्थायी सरकार को गद्दी से उतार दिया गया है। अस्थायी सरकार के अधिकाश सदस्य गिरफ़्तार किये जा चुके हैं।

सोवियत सत्ता सभी राष्ट्रों से अविलम्ब एक जनवादी शान्ति-सन्धि सम्पन्न करने का, सभी मोर्चों पर अविलम्ब युद्ध-विराम सम्पन्न करने का तुरन्त ही प्रस्ताव करेगी। वह ज़मीदारों की ज़मीनों, शाही ज़मीनों और मठों की जमीनों के बिला मुआवज़ा भूमि समितियों के हाथ मे अन्तरण को सुनिश्चित बनायेगी, सिपाहियों के अधिकारों की रक्षा करेगी, सेना के पूर्ण जनवादीकरण को लागू करेगी, उत्पादन के ऊपर मजदूरों का नियन्त्रण स्थापित करेगी, उचित तिथि पर सविधान सभा का बुलाया जाना सुनिश्चित बनायेगी, शहरों के लिये रोटी और गावों के लिये सबसे आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई के लिये उपाय करेगी और रूस में रहने वाली सभी जातियो के लिये आत्मनिर्णय का वास्तविक अधिकार सुनिश्चित बनायेगी।

काग्रेस निश्चय करती है: समस्त स्थानीय सत्ता मजदूरों, सैनिकों तथा किसानो के प्रतिनिधियों की सोवियतों के हाथ मे अन्तरित की जायेगी। इन सोवियतो के लिये आवश्यक है कि वे क्रातिकारी सुव्यवस्था स्थापित करें।

काग्रेस खाइयो मे पड़े सिपाहियों का आह्वान करती है कि वे दृढ और सतर्क रहें। सोवियतों की कांग्रेस को पूरा विश्वास है कि क्रांतिकारी सेना को यह बख़ूबी मालूम है कि जब तक नयी सरकार एक जनवादी शान्ति-संधि को सम्पन्न नही कर लेती, जिसका वह सीधे सीधे सभी राष्ट्रों से प्रस्ताव करने वाली है, तब तक साम्राज्यवाद के हर हमले से क्रांति की हिफाजत किस प्रकार की जा सकती है। अधिग्रहण की तथा मिलकी वर्गों पर टैक्स लगाने की एक दृढ नीति के द्वारा नयी सरकार क्रांतिकारी सेना के लिये जो कुछ भी अपेक्षित है, उसको प्राप्त करने के लिये तथा सैनिक परिवारों की हालत को सुधारने के लिये भी सभी आवश्यक कदम उठायेगी।

कोर्नीलोवपंथी – केरेन्स्की, कलेदिन और दूसरे लोग – सेनाओं को पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने के लिए तैयार करने की कोशिश कर रहे हैं।

कई रेजीमेंटों ने, जिनको केरेन्स्की ने धोखे में डाल रखा था, विद्रोही जनता का पक्ष लिया है।

सिपाहियो! कोर्नीलोवपंथी केरेन्स्की का सक्रिय रूप से मुकाबला कीजिये! खबरदार रहिये!

रेल मजदूरो! पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने के लिये केरेन्स्की द्वारा भेजी जाने वाली सभी सैनिक रेलगाड़ियों को रोक लीजिये!

सिपाहियो, मजदूरो और क्लर्क-कर्मचारियो! क्रांति का तथा जनवादी शान्ति का भविष्य आपके ही हाथों में है!

इन्क़लाब जिन्दाबाद!

मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस। किसानों की सोवियतों के प्रतिनिधि *

सवेरे के ठीक पाच बज कर सत्तरह मिनट हुए थे, जब थकावट से चूर-चूर, लड़खडाते हुए क्रिलेन्को हाथ मे एक तार लिये मंच पर आये।

"साथियो! उत्तरी मोर्चे से। बारहवी सेना सोवियतों की कांग्रेस को अपना अभिवादन भेजती है और घोषणा करती है कि उन्होंने एक सैनिक क्रातिकारी समिति का गठन किया है, जिसने उत्तरी मोर्चे की कमान संभाल ली है!" कोलाहल, लोग विह्वल हो कर एक दूसरे से गले लगने लगे, उनकी आखें आंसुओं से गीली थी। "जनरल चेरेमीसोव ने समिति के अधिकार को मान लिया है। अस्थायी सरकार के कमिसार वोइतीन्स्की ने इस्तीफा दे दिया है!"

इस प्रकार लेनिन तथा पेत्रोग्राद के मजदूरों ने विद्रोह करने का निश्चय किया, पेत्रोग्राद सोवियत ने अस्थायी सरकार का तख्ता उलट दिया और इस उलट-पुलट को सोवियतों की कांग्रेस के सिर डाल दिया। अब उन्हें सारे रूस को अपनी ओर लाना था और फिर संसार को!

---

*अपीलकर्त्ताओं के रूप में "किसानो की सोवियतों के प्रतिनिधि" तब जोड़ दिया गया, जब किसानों के एक प्रतिनिधि ने इस आशय की घोषणा की।—सं०

क्या पेत्रोग्राद का अनुसरण कर पूरा रूस उठेगा? और दुनिया –दुनिया क्या करेगी? क्या दुनिया के लोग प्रत्युत्तर देंगे और उठेंगे? क्या एक विश्वव्यापी लाल लहर उठेगी?

यद्यपि सवेरे के छः बजे थे, फिर भी अंधेरा छाया हुआ था, रात अभी बाकी थी–ठंडी और बोझिल रात। बस एक हल्का और फीका प्रकाश निस्तब्ध सडकों पर चुपके चुपके फैल रहा था और उसके कारण संतरियों के अलाव की रोशनी मद्धिम पड़ रही थी–एक भयावह भोर का कुहासा रूस पर छा रहा था...

पाचवा अध्याय

तेज बढ़ाव

बृहस्पतिवार, ८ नवम्बर। जब पौ फटी, शहर में घोर उत्तेजना फैली हुई थी और ऐसा मालूम होता था, जैसे हर चीज उलट-पुलट गई हो। समूचा राष्ट्र एक जबरदस्त गरजते हुए तूफान के झोंकों मे इस तरह उठता जा रहा था, जैसे लहर पर लहर उठती है। ऊपर से देखने मे पूरी शान्ति थी। लाखो आदमी मुनासिब वक्त पर सोये थे और सुबह जल्दी ही उठ कर काम पर चले गये थे। पेत्रोग्राद मे ट्राम-गाड़िया दौड़ रही थी, दूकान और रेस्तोरा खुले हुए थे, थियेटर चल रहे थे और चित्रों की एक प्रदर्शनी का विज्ञापन किया गया था... सामान्य जीवन की जटिल दिनचर्या, जो युद्धकाल मे भी उकता देने वाली होती है, बदस्तूर चल रही थी। सामाजिक निकाय मे जो गजब की प्राणशक्ति है, जिस तरह वह घोर से घोर विपत्ति के सम्मुख भी टिका रहता है और उसका खाना-पीना, पहरना-ओढना, आमोद-प्रमोद, सब यथाक्रम चलता रहता है, उससे बढ़ कर अचरज की दूसरी बात नही है ...

केरेन्स्की के बारे में तरह तरह की अफवाहे उड़ रही थी। कहा जा रहा था कि उन्होंने मोर्चे को उभाड़ा है और एक बड़ी सेना लेकर राजधानी पर चढाई करने के लिए चले आ रहे है। 'वोल्या नरोदा' ने प्स्कोव में उनके द्वारा जारी किये गये एक प्रिकाज (आदेश) को प्रकाशित किया :

बोल्शेविकों की वहशियाना कोशिशों से जो गड़बड़ी पैदा हुई है, उसने देश को विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है, और यह परिस्थिति, हमारी पितृभूमि जिस भयानक परीक्षा की घड़ी से गुजर रही है, उसमें कामयाबी के साथ निकल पाने के लिए हममें प्रत्येक से हमारे समस्त संकल्प, साहस और निष्ठा की मांग करती है ...

जब तक एक नयी सरकार – अगर ऐसी सरकार बनायी जाती है – के गठन की घोषणा नहीं की जाती, हर आदमी को चाहिए कि वह अपनी जगह से न हिले और लहूलुहान रूस के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करे। यह अवश्य ही याद रखना है कि मौजूदा सैनिक संगठनों के साथ तनिक भी छेड़-छाड़ से दुश्मन के लिए रास्ता साफ हो सकता है और इस प्रकार भीषण, अमार्जनीय क्षति पहुंच सकती है। इसलिये यह बिल्कुल जरूरी है कि पूर्ण सुव्यवस्था सुनिश्चित कर के, सेना को नये आघातों से बचा कर और अफसरों और उनके मातहतों के बीच पूर्ण विश्वास बनाये रख कर सैनिकों के मनोबल को हर कीमत पर अक्षुण्ण रखा जाये। मैं देश की हिफाजत के नाम पर सभी प्रधान अधिकारियों और कमिसारों को आदेश देता हूं कि वे जब तक कि जनतन्त्र की अस्थायी सरकार अपनी मर्जी जाहिर नहीं करती है, अपने पदों को न छोड़ें, उसी प्रकार जैसे मैं स्वयं मुख्य सेनापति के अपने पद को संभाले हुए हूं ...

जवाब में सभी जगह दीवारों पर यह पोस्टर चिपकाया गया:

सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस की ओर से

"भूतपूर्व मन्त्री कोनोवालोव, किशकिन, तेरेश्चेन्को, माल्यान्तोविच, निकीतिन इत्यादि सैनिक क्रान्तिकारी समिति द्वारा गिरफ़्तार कर लिये गये हैं। केरेन्स्की भाग खड़े हुए हैं। सभी सैनिक संगठनों को आदेश दिया जाता है कि वे केरेन्स्की को फौरन गिरफ़्तार करने और उन्हें पेत्रोग्राद पहुंचाने के लिए जो भी कार्रवाइयां की जा सकती हैं, करें।

"केरेन्स्की को किसी प्रकार की सहायता देना राज्य के खिलाफ भीषण अपराध समझा जायेगा और ऐसी सहायता करनेवाले को दण्डित किया जायेगा।"

समस्त अवरोधों से मुक्त हो कर सैनिक क्रान्तिकारी समिति धुआंधार काम कर रही थी। समिति से आदेश, अपीलें और आज्ञप्तियां इस प्रकार निकल रही थी, जैसे एक बेतहाशा चक्कर काटते हुए अग्नि-पिण्ड से चिनगारियां छूटती रही हों[1] ... कोर्नीलोव को पेत्रोग्राद लाने का हुक्म दिया गया। अस्थायी सरकार द्वारा गिरफ़्तार किसानों की भूमि समितियों के सदस्यों की रिहाई का एलान किया गया। सेना में मृत्यु-दण्ड समाप्त कर दिया गया। सरकारी कर्मचारियों को आदेश दिया गया कि वे अपना काम जारी रखें और उन्हें चेतावनी दी गयी कि अगर उन्होंने ऐसा करने से इनकार किया, तो उन्हें कठोर दण्ड दिया जायेगा। एक आज्ञा द्वारा लूटमार, फसाद और सट्टेबाजी की मनाही की गयी और उसके उल्लंघन की सजा मौत घोषित की गयी। विभिन्न मन्त्रालयों में अस्थायी कमिसार नियुक्त किये गये: परराष्ट्र मन्त्रालय में – उरीत्स्की और त्रोत्स्की; गृह तथा न्याय मन्त्रालय में रीकोव; श्रम मन्त्रालय में श्ल्याप्निकोव; वित्त – मेन्जीन्स्की; जन-कल्याण – श्रीमती कोल्लोन्ताई; वाणिज्य, रेल परिवहन – रियाजानोव; नौसेना – नाविक कोरबिर; डाक-तार – स्पीरो; थियेटर – मुराव्योव; राजकीय मुद्रणालय – देरबिशेव; पेत्रोग्राद नगर – लेफ़्टिनेंट नेस्तेरोव; उत्तरी मोर्चा – पोजेर्न...*

सेना से सैनिक क्रान्तिकारी समितियां स्थापित करने के लिए अपील की गयी, रेल मजदूरों से सुव्यवस्था कायम रखने और विशेषतः नगरों और मोर्चों के लिए खाद्य के परिवहन में विलम्ब न होने देने के लिए... बदले में उन्हें वचन दिया गया कि उनके प्रतिनिधि रेल परिवहन मन्त्रालय में शामिल किये जायेंगे।

कज्जाक भाइयो, एक एलान में कहा गया था, आपको पेत्रोग्राद पर हमला करने के लिए उकसाया जा रहा है। वे आपको जबरदस्ती

---

*अस्थायी कमिसारों की नियुक्तियों का जो विवरण यहां दिया गया है, वह पूरी तरह सही नहीं है: परराष्ट्र मंत्रालय के लिए केवल उरीत्स्की की नियुक्ति की गयी थी; नौसेना मंत्रालय सभी बेड़ों के प्रतिनिधियों द्वारा सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस में निर्वाचित नौसैनिक क्रांतिकारी समिति के सुपुर्द किया गया था। – सं०

राजधानी के मजदूरों और सिपाहियों के साथ भिड़ा देना चाहते हैं। हमारे सामान्य शत्रु जमीदार और पूंजीपति जो कुछ कहते हैं, उस पर तनिक भी विश्वास न कीजिये।

रूस के सभी संगठित मजदूरों और सिपाहियों तथा जागरूक किसानों के प्रतिनिधि हमारी कांग्रेस में मौजूद हैं। कांग्रेस श्रमिक कज्जाकों को भी अपने बीच में देखना चाहती है। जमीदारों के और नृशंस निकोलाई के अनुचर, यमदूत सभाइयों के जनरल हमारे शत्रु हैं।

वे आप से कहते हैं कि सोवियतें कज्जाकों की जमीनों को जब्त कर लेना चाहती हैं। यह सरासर झूठ है। क्रान्ति केवल बड़े बड़े कज्जाक जमीदारों की जमीनों को जब्त करेगी और उन्हें जनता के हवाले करेगी।

कज्जाकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों को संगठित कीजिये! मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के साथ हाथ मिलाइये!

यमदूत सभाइयों को दिखा दीजिये कि आप जनता के प्रति गद्दार नहीं हैं, और आप हरगिज यह नहीं चाहते कि समूचा क्रान्तिकारी रूस आपको कोसे! ..

कज्जाक भाइयो, जनता के शत्रुओं की किसी भी आज्ञा का पालन न कीजिये। अपने प्रतिनिधियों को हमारे साथ बातचीत करने के लिए पेत्रोग्राद भेजिये ... पेत्रोग्राद गैरिसन के कज्जाकों ने अपनी लाज रखी है और उन्होंने जनता के शत्रुओं की आशाओं पर पानी फेर दिया है...

कज्जाक भाइयो, सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस आपकी ओर दोस्ती और भाईचारे का हाथ बढ़ाती है। समूचे रूस के सिपाहियों, मजदूरों और किसानों के साथ कज्जाकों का भाईचारा जिन्दाबाद!*

दूसरी ओर अंधाधुंध प्रचार—असंख्य घोषणायें दीवारों पर चिपकाई गयीं, और सभी जगह परचे बांटे गये। अखबार चीखते, पानी पी पीकर बोल्शेविकों को कोसते और बुरे अंजाम की पेशीनगोई करते। अब छापेखाने

---

*यह अपील मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी कांग्रेस की ओर से जारी की गई थी।—सं०

की लड़ाई बड़े ज़ोर से शुरू हुई – बाकी सभी हथियार सोवियतों के हाथ मे आ चुके थे।

सबसे पहले, देश तथा क्रान्ति की उद्धार समिति की अपील, जो पूरे रूस और यूरोप में प्रसारित की गयी:

रूसी जनतन्त्र के नागरिकों के नाम

७ नवम्बर को पेत्रोग्राद के बोल्शेविकों ने क्रान्तिकारी जन-साधारण की मर्जी के खिलाफ अस्थायी सरकार के कुछ सदस्यों को गिरफ़्तार करने, जनतन्त्र की परिषद् को भंग करने तथा एक अवैध सत्ता की घोषणा करने की मुजरिमाना हरकत की। बाहरी ख़तरे की सबसे नाजुक घड़ी मे क्रान्तिकारी रूस की सरकार के प्रति किया जाने वाला यह बलप्रयोग पितृभूमि के प्रति एक वर्णनातीत अपराध है।

बोल्शेविकों का विद्रोह राष्ट्रीय सुरक्षा के ध्येय पर एक सांघातिक आघात है और वह शान्ति की अभीप्सित घड़ी को बेअन्दाज़ दूर टाल देता है।

बोल्शेविकों ने जो गृहयुद्ध शुरू किया है, उसने देश क अराजकता तथा प्रतिक्रान्ति की विभीषिका का ग्रास बन जाने तथा उस संविधान सभा के विफल हो जाने का ख़तरा पैदा कर दिया है, जिसे अनिवार्यतः जनतन्त्रीय शासन पर मुहर लगानी है और जो ज़मीन पर जनता के हक को हमेशा के लिए उसके हाथ में सौंप देनेवाली है।

एकमात्र वैध शासन-सत्ता के नैरन्तर्य को अक्षुण्ण रखती हुई, ७ नवम्बर की रात में स्थापित देश तथा क्रान्ति की उद्धार समिति एक नयी अस्थायी सरकार कायम करने मे पहल करती है। जनवाद की शक्तियों का आधार ग्रहण कर यह सरकार देश को संविधान सभा की ओर अग्रसर करेगी और उसे अराजकता तथा प्रतिक्रान्ति से बचायेगी। नागरिको, उद्धार समिति आपका आह्वान करती है कि आप हिंसक सत्ता को मानने से इनकार कर दे। आप उसके आदेशो का पालन न करें!

देश तथा क्रान्ति की हिफ़ाजत के लिए उठ खड़े होइये!

उद्धार समिति का समर्थन कीजिये!

हस्ताक्षरित: रूसी जनतन्त्र की परिषद्, पेत्रोग्राद की नगर दूमा, त्से-ई-काह (पहली कांग्रेस), किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति, तथा स्वयं कांग्रेस के प्रतिनिधियों के बीच से मोर्चा-दल, समाजवादी-क्रान्तिकारियों, मेन्शेविकों, जन-समाजवादियों, संयुक्त सामाजिक-जनवादियों के गुट तथा 'येदीन्स्त्वो' दल।

इस अपील के बाद समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी, मेन्शेविक-ओबोरोन्त्सी (प्रतिरक्षावादियों) के, और फिर किसानों की सोवियतों के पोस्टर। केन्द्रीय सैनिक समिति, त्सेन्त्रोफ़्लोत (केन्द्रीय नौसैनिक समिति) के पोस्टर...

...अकाल पेत्रोग्राद को पीस डालेगा! (वे चीखते।) जर्मन सेनायें हमारी स्वतन्त्रता को रौंद डालेंगी। अगर हम सब–जागरूक मजदूर, सिपाही, नागरिक–एकताबद्ध नहीं होते, तो यमदूत सभाइयों द्वारा भड़काये गये दंगे-फसाद पूरे रूस में फैल जायेंगे...

बोल्शेविकों के वादों पर यकीन न कीजिये! तत्काल शान्ति का उनका वादा झूठा है! रोटी का वादा एक ढोंग है! और जमीन का वादा एक परी-कहानी है!..

सारे पोस्टर इसी ढंग के थे।

साथियो! आपको बड़ी बेरहमी और कमीनेपन के साथ धोखा दिया गया है! बोल्शेविकों ने अकेले ही सत्ता पर कब्जा कर लिया है... उन्होंने सोवियत में शामिल दूसरी समाजवादी पार्टियों से अपने षड्यन्त्र को छिपाया...

आपको भूमि और स्वतन्त्रता का वचन दिया गया है, परन्तु बोल्शेविकों ने जो अराजकता उत्पन्न की है, उससे प्रतिक्रांति को फायदा पहुंचेगा और वह आपको भूमि और स्वतन्त्रता दोनों से वंचित करेगी...

अखबारों में भी इसी तरह की वाही-तबाही बकी जा रही थी।

हमारा कर्तव्य यह है ('देलो नरोदा' ने लिखा) कि हम मजदूर वर्ग के साथ दगा करने वाले इन गद्दारों का पर्दाफाश करें। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी सभी शक्तियों को एकजुट करें और क्रांति के ध्येय की चौकसी करें।

पुरानी त्से-ई-काह् के नाम पर आख़िरी बोल बोलते हुए 'इज्वेस्तिया' ने भयानक प्रतिशोध की धमकी दी :

जहां तक सोवियतों की कांग्रेस का प्रश्न है, हम ज़ोर देकर कहते है कि सोवियतों की कोई कांग्रेस नहीं हुई है। हम ज़ोर देकर कहते है कि जो चीज हुई है, वह कांग्रेस नहीं, बोल्शेविक गुट की एक प्राइवेट कान्फ़ेंस थी। ऐसी सूरत में उन्हे त्से-ई-काह् के अधिकारों को रद्द करने का कोई हक नहीं है।

'नोवाया जीज्न' ने जहां एक ओर एक ऐसी नई सरकार की स्थापना की वकालत की, जो सभी समाजवादी पार्टियों को एकताबद्ध करेगी, वहीं उसने समाजवादी-क्रांतिकारियों और मेन्शेविकों की कांग्रेस से निकल आने के लिये कठोर आलोचना की, और इस बात की ओर सकेत किया कि बोल्शेविक विद्रोह का एक अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है, वह यह कि पूंजीपति वर्ग के साथ संश्रय के विषय में जो भ्रांतियां थीं, वे सब निरर्थक सिद्ध हुई है...

'राबोची पूत' ने लेनिन के समाचारपत्र 'प्राव्दा' के रूप में, जिसे जुलाई में बन्द कर दिया गया था, एक नया जीवन पाया। उसने रोष और विजयोल्लास से हुंकार किया :

मज़दूरो, सिपाहियो, किसानो! मार्च में आपने सामन्ती गुट के निरकुश शासन को एक ही वार में ढेर कर दिया। कल आपने पूंजीवादी गिरोह के निरकुश शासन को भी ढेर कर दिया...

अब हमारा पहला काम है पेत्रोग्राद के प्रवेश-मार्गों की रक्षा करना।

दूसरा काम है पेत्रोग्राद में प्रतिक्रांतिकारी तत्वों को निश्चित रूप से निरस्त्र करना।

और तीसरा काम है क्रांतिकारी सत्ता को निश्चित रूप से संगठित करना तथा लोकप्रिय कार्यक्रम के कार्यान्वयन को सुनिश्चित बनाना।

कैडेटों के और सामान्यतः पूंजीपति वर्ग के जो इने-गिने अखबार निकल रहे थे, उन्होंने इस सारे कांड के प्रति एक प्रकार का तटस्थ विद्रूपात्मक दृष्टिकोण अपनाया, मानो वे दूसरी पार्टियों से अवज्ञा के साथ कह रहे हों: "हमने आपसे क्या कहा था, याद है?" नगर दूमा तथा उद्धार समिति के इर्द-गिर्द प्रभावशाली कैडेट नेताओं को मंडराते हुए देखा जा सकता था। इसके अलावा पूंजीपति वर्ग ने कोई हरकत नहीं की, वह चुपचाप बैठा अवसर की घात में था—और यह अवसर बहुत दूर नहीं मालूम होता था। लेनिन, त्रोत्स्की, पेत्रोग्राद के मजदूरों और सीधे-सादे सिपाहियों को छोड़कर, यह बात शायद किसी के दिमाग में नहीं आई होगी कि बोल्शेविक तीन दिन से अधिक सत्तारूढ़ रह सकते हैं...

उसी दिन तीसरे पहर ऊंची छतवाले गोल निकोलाई हॉल में मैंने देखा कि नगर दूमा का लगातार अधिवेशन हो रहा था—एक तूफानी अधिवेशन—जिसके चारों ओर बोल्शेविक-विरोधी सभी शक्तियां एकत्र थीं। बूढ़े मेयर श्रेइदेर, जो अपने सफेद बालों और सफेद दाढ़ी के कारण बड़े तेजस्वी दिखाई देते थे, बता रहे थे कि किस प्रकार उन्होंने पिछली रात स्मोल्नी जाकर स्वायत्तशासी नगरपालिका की ओर से प्रतिवाद प्रगट किया। "समान, प्रत्यक्ष तथा गुप्त मतदान द्वारा निर्वाचित दूमा, जो नगर की एकमात्र वैधानिक सरकार है, नई सत्ता को मान्यता नहीं देगी," उन्होंने त्रोत्स्की से कहा था। और त्रोत्स्की ने जवाब दिया था, "इसका एक वैधानिक उपाय है—दूमा को भंग करके उस का फिर से चुनाव किया जा सकता है..." श्रेइदेर की इस रिपोर्ट पर भीषण कोलाहल मच गया।

दूमा को सम्बोधित करते हुए बूढ़े श्रेइदेर ने कहा, "अगर कोई संगीनों के जोर से हुकूमत करने वाली सरकार को मानता है, तो ऐसी सरकार हमारे यहां मौजूद है। परन्तु मैं उसी सरकार को जायज मानता हूं, जिसे जनता का बहुमत स्वीकार करे, न कि उसे जो अल्पमत द्वारा

К гражданам России.

७ नवम्बर, १९१७ को व्ला० इ० लेनिन द्वारा लिखी गई 'रूस के नागरिकों के नाम' अपील की पाडुलिपि।

От Военно-Революціоннаго Комитета при Петроградскомъ Совѣтѣ Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ.

Къ Гражданамъ Россіи.

Временное Правительство низложено. Государственная власть перешла въ руки органа Петроградскаго Совѣта Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ Военно-Революціоннаго Комитета, стоящаго во главѣ Петроградскаго пролетаріата и гарнизона.

Дѣло, за которое боролся народъ: немедленное предложеніе демократическаго мира, отмѣна помѣщичьей собственности на землю, рабочій контроль надъ производствомъ, созданіе Совѣтскаго Правительства — это дѣло обезпечено.

ДА ЗДРАВСТВУЕТЪ РЕВОЛЮЦІЯ РАБОЧИХЪ, СОЛДАТЪ И КРЕСТЬЯНЪ!

Военно-Революціонный Комитетъ при Петроградскомъ Совѣтѣ Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ.

25 октября 1917 г. 10 ч. утра.

सैनिक क्रांतिकारी समिति का पर्चा—'रूस के नागरिकों के नाम'।

सत्ता हड़प लिए जाने के कारण उत्पन्न हुई है।" उनकी इस बात प बोल्शेविकों को छोड कर बाकी सभी ज़ोर ज़ोर से तालिया पीटने लगे. शोर व हंगामे के बीच मेयर ने घोषणा की कि बोल्शेविक लोग अभी से बहुत से विभागों मे कमिसारों की नियुक्ति कर नगरपालिका के स्वायत्त अधिकारों का उल्लंघन कर रहे हैं।

बोल्शेविक वक्ता ने इस बात की कोशिश में कि लोग उसे सुन सके ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर कहा कि सोवियतों की कांग्रेस के निर्णय का अर्थ यह है कि समूचा रूस बोल्शेविको द्वारा उठाये गये कदम का समर्थन करता है। "आप लोग," उसने कड़क कर कहा, "आप लोग पेत्रोग्राद की जनता के सच्चे प्रतिनिधि नहीं है!" आवाजे – "ऐसा कहना हमारी तौहीन करना है, हमारी बेइज्जती करना है!" बूढ़े मेयर ने बड़े सौम्य भाव से बोल्शेविक वक्ता को याद दिलायी कि दूमा जनता के स्वतन्त्र से स्वतन्त्र मतदान द्वारा निर्वाचित हुई थी। "हा, हुई थी," बोल्शेविक वक्ता ने जवाब दिया। "लेकिन बहुत दिन पहले हुई थी, उसी तरह जैसे त्से-ई-काह, उसी तरह जैसे सैनिक समिति।" "सोवियतों की कोई नयी कांग्रेस नही हुई है!" जवाब मे वे चिल्लाये। "बोल्शेविक दल प्रतिक्रान्ति के इस अड्डे मे एक मिनट भी और ठहरने से इनकार करता है..." शोरगुल। "...और हम मांग करते है कि दूमा का फिर से चुनाव किया जाये..." इसके बाद बोल्शेविक सदन से निकल गये और उनके पीछे आवाज़ें लगती रही, "जर्मनी के दलाल! गद्दारो का नाश हो!"

बोल्शेविकों के चले जाने के बाद कैडेट शिंगारेव ने माग की कि नगरपालिका के जिन कर्मचारियों ने सैनिक क्रान्तिकारी समिति का कमिसार बनना मंजूर किया है, उन्हे पदच्युत किया जाये और उन्हें अपराधी घोषित किया जाये। श्रेइदेर फिर उठ खड़े हुए; उन्होने इस आशय का एक प्रस्ताव पेश किया कि दूमा उसे भंग करने की बोल्शेविको की धमकी के प्रति प्रतिवाद प्रगट करती है और जनता की एकमात्र वैधानिक प्रतिनिधि-सस्था होने के नाते वह हरगिज अपने स्थान का परित्याग नही करेगी।

बाहर, अलेक्सान्द्र हॉल मे भी भीड़ जुटी हुई थी; वहां उद्धार समिति की बैठक हो रही थी और स्कोबेलेव फिर बोल रहे थे। "आज

तक कभी क्रान्ति का भविष्य इतने संकट में नहीं पड़ा था," उन्होंने कहा। "रूसी राज्य के अस्तित्व के प्रश्न ने आज तक कभी इतनी चिन्ता उत्पन्न नहीं की थी। आज तक कभी इतिहास ने इतने कठोर और निरपाधि रूप में इस प्रश्न को उपस्थित नहीं किया था – रूस को जीना है या मिट जाना है। क्रान्ति के उद्धार की महान् वेला आ पहुंची है, और इस बात का अनुभव करते हुए हम देख रहे हैं कि क्रान्तिकारी जनवाद की सभी प्राणवान शक्तियां घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध हैं। उनके संगठित संकल्प द्वारा अभी से देश तथा क्रान्ति के उद्धार के लिए एक केन्द्र स्थापित किया जा चुका है..." स्कोबेलेव ने इसी ढर्रे पर और बहुत सी बातें कहीं, और अन्त में, "हम मरते दम तक अपने मोर्चे पर डटे रहेंगे!"

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच यह घोषणा की गयी कि रेल मजदूरों की यूनियन उद्धार समिति के साथ आ गयी है। जरा देर बाद डाक-तार कर्मचारी भी आ गये। और इसके बाद कुछ मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादी भी हॉल में दाखिल हुए, और उनका तालियों से स्वागत किया गया। रेल मजदूरों ने कहा कि वे बोल्शेविकों को नहीं मानते, उन्होंने समस्त रेल-उपकरण अपने हाथ में ले लिया है, और उसे किसी की बलादग्राही सत्ता के हवाले करने से इनकार करते हैं। तारकर्मचारियों के प्रतिनिधि ने कहा कि जब तक बोल्शेविक कमिसार तारघर में मौजूद है, आपरेटर अपने औजारों को हाथ नहीं लगायेंगे। डाकिये स्मोल्नी की डाक छुएंगे भी नहीं... स्मोल्नी के सारे टेलीफोन काट दिये गये थे। सभा को बड़े उल्लास के साथ बताया गया कि किस प्रकार उरीत्स्की गुप्त सन्धियों को मांगने के लिए विदेश मन्त्रालय गये थे और किस प्रकार नेरातोव* ने उन्हें वहां से बाहर निकलवा दिया। सारे सरकारी कर्मचारी काम ठप कर रहे थे...

यह एक लड़ाई थी – पहले से सोची-विचारी रूसी ढंग की लड़ाई, हड़तालों और तोड़-फोड़ द्वारा लड़ाई। हम वहां बैठे ही थे कि सभापति

---

*नेरातोव, अस्थायी सरकार में परराष्ट्र उप-मंत्री, भूतपूर्व जारशाही कूटनीतिज्ञ। – सं०

ने एक सूची पढ़ कर सुनायी, जिसमें उनको दी गयी ज़िम्मेदारियों के साथ कुछ लोगों के नाम थे। फ़लां आदमी मन्त्रालयों का दौरा करेगा, फ़लां बैंकों का; दस-बारह आदमियों के ज़िम्मे यह काम सौंपा गया कि वे बारिकों में जायें और सिपाहियों को समझायें कि वे तटस्थ रहें—"रूसी सिपाहियो, आप अपने भाइयों का ख़ून न बहाइये!" केरेन्स्की से मुलाक़ात और मशविरा करने के लिए एक शिष्टमण्डल नियुक्त किया गया; अन्य शिष्टमण्डलों को प्रान्तीय नगरों में इस प्रयोजन से भेजा गया कि वे वहां पर उद्धार समिति की शाखायें स्थापित करें और सभी बोल्शेविक-विरोधी तत्त्वों को एक सूत्र मे बांधें।

भीड़ बड़े जोश में थी। "ये बोल्शेविक बुद्धिजीवियों पर हुक्म चलायेंगे? ज़रा कोशिश करके देखें तो! हम उन्हें अच्छा मज़ा चखायेंगे!"

इस सभा में और सोवियतों की कांग्रेस में ज़मीन और आसमान का फ़र्क था। वहां फटेहाल सिपाहियों, मैले-कुचैले मज़दूरों, किसान [illegible] के विशाल जनसमुदाय थे—उन गरीब आदमियों के [illegible] थे, जो जीवन के कठोर, पाशविक संघर्ष में संतप्त और [illegible] थे। और यहां अव्क्सेन्त्येव, दान और लीबेर जैसे मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रान्तिकारी नेता, स्कोबेलेव और चेर्नोव जैसे भूतपूर्व समाजवादी मन्त्री, [illegible] शात्स्की और सजीले विनावेर जैसे कैडेटों के साथ, पत्रकारों, विद्यार्थियों और प्रायः सभी शिविरों के बुद्धिजीवियों के [illegible] थे। [illegible] की यह भीड़ अच्छा खाने-पीने और अच्छा [illegible] थी। मैंने इन लोगों में मुश्किल से तीन मज़दूर देखे होंगे... [illegible]

ख़बरें आयीं। बिख़ोव में कोर्नीलोव के [illegible] तेकीन्त्सी* ने पहरेदारों को मार कर उसे छुड़ा लिया था और वह [illegible] था। कलेदिन उत्तर की ओर बढ़ा चला आ रहा था... मास्को सोवियत ने एक सैनिक क्रांतिकारी समिति स्थापित कर दी थी और वह शस्त्रागार को अपने कब्ज़े मे लेने के लिए नगर के कमांडेंट से बातचीत कर रही थी, जिसमें मज़दूरों को हथियारों से लैस किया जा सके।

इन ख़बरों के साथ [illegible], [illegible] और [illegible]

---

*देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'।—[illegible]

बुरी तरह मिल गये थे कि ताज्जुब होता था। उदाहरण के लिए, एक होशियार नौजवान कैडेट ने, जो पहले मिल्युकोव का और फिर तेरेश्चेन्को का निजी सचिव था, हमें एक ओर ले जाकर शिशिर प्रासाद के पतन का पूरा हाल सुनाया।

"जर्मन और आस्ट्रियाई अफसर बोल्शेविकों की रहनुमाई कर रहे थे," उसने ज़ोर देकर कहा।

"ऐसी बात है?" हमने नम्रता से कहा, "आप कैसे जानते हैं?"

"मेरा एक दोस्त वहां था, उसने अपनी आंखों से देखा।"

"उसने यह कैसे समझा कि वे अफ़सर जर्मन थे?"

"इसलिए कि वे जर्मन वर्दियां पहने थे!"

इस तरह के सैकड़ों बेतुके किस्से थे, जिन्हें बोल्शेविक-विरोधी अख़बारों ने बड़ी संजीदगी से छापा था; और तो और, समाजवादी-क्रान्तिकारियों और मेन्शेविकों तक ने, सचाई के प्रति गंभीर निष्ठा जिनकी सदा से एक विशेषता रही है, उनमें विश्वास किया...

परन्तु इससे अधिक गंभीर बात यह थी कि बोल्शेविक हिंसा और आतंक की कहानियां फैलाई जा रही थीं। उदाहरण के लिए, यह कहा गया और छापा तक गया कि लाल गार्डों ने शिशिर प्रासाद को बुरी तरह लूटा ही नही था, वरन् उन्होंने पहले युंकरों से हथियार रखवा लिए और फिर उनका सफाया कर दिया और कई मन्त्रियों को बड़ी बेदर्दी से मार डाला था। जहां तक महिला सैनिकों का सवाल है, उनमे से अधिकाश के साथ बलात्कार किया गया। बहुतों ने तो जिन यन्त्रणाओं को उन्हें भुगतना पड़ा उनके कारण आत्महत्या कर ली... ये सारी कहानिया दूमा में उपस्थित पूरी भीड़ के गले के नीचे बड़ी आसानी से उतर गयी। इससे भी बुरी बात यह हुई कि युंकरों और महिला सैनिकों के मां-बाप ने इन ख़ौफनाक तफ़सीलवार किस्सों को, जिनके साथ अक्सर नामों की फ़ेहरिस्त भी होती थी, पढ़ा और रात होते होते क्षुब्ध, उत्तेजित नागरिकों की एक भीड़ दूमा में जुट आई...

एक उपलक्षक उदाहरण शाहज़ादा तुमानोव का है, जिनके बारे मे बहुत से अख़बारों में ख़बर छपी कि उनकी लाश मोइका नहर में तैरती हुई पायी गयी। थोड़ी ही देर बाद उनके परिवार के लोगों ने

इस समाचार का खण्डन किया और बताया कि दर असल उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया है। फिर अख़बारों ने कहा कि लाश तुमानोव की नहीं, जनरल देनीसोव की थी। लेकिन जब जनरल भी जीते-जागते पाये गये, तब हमने जांच-पड़ताल की और हमें किसी भी लाश के कहीं भी पाये जाने का पता नहीं लग सका...

जब हम दूमा-भवन से निकले, दो बाल स्वयंसेवक भवन के बाहर की विशाल भीड़ के बीच परचे[2] बांट रहे थे। दुकानदारों, व्यापारियों, दफ़्तर-कर्मचारियों और चिनोव्निकों (क्लर्कों) की यह भीड़ दूमा-भवन के सामने पूरे नेव्स्की मार्ग को घेरकर खड़ी थी। एक परचे में लिखा था :

नगर दूमा की ओर से

नगर दूमा ने २६ अक्तूबर को अपने अधिवेशन में उस दिन की घटनाओं को देखते हुए यह आज्ञप्ति जारी की: वह निजी घरों की अलंघनीयता घोषित करती है और आवास-समितियों की मारफ़त पेत्रोग्राद नगर की जनता का आह्वान करती है कि वह निजी घरों में बलात् प्रवेश करने की सभी कोशिशों को निर्णायक रूप से विफल कर दे और नागरिकों की आत्मरक्षा के हित में शस्त्र-प्रयोग करने से भी न हिचकिचाये।

लितेइनी की मोड़ पर पांच-छः लाल गार्डों और दो मल्लाहों ने एक पत्र-विक्रेता को घेर लिया था और मांग कर रहे थे कि वह मेन्शेविक पत्र 'राबोचाया गज़ेता' (मज़दूर अख़बार) की अपनी प्रतियों को उनके हवाले कर दे। एक मल्लाह को अपने स्टाल से जबर्दस्ती अख़बार उठाते देख वह अपना घूंसा दिखाते हुए उसके ऊपर बरस पड़ा। एक क्रुद्ध भीड़ इकट्ठी हो गई थी और गश्ती दस्ते को गालियां दे रही थी। एक नाटे कद का मजदूर लोगों को और पत्र-विक्रेता को धैर्यपूर्वक समझाते हुए बार-बार कह रहा था, "इस अख़बार में केरेन्स्की की घोषणा छपी है, जिसमें कहा गया है कि हमने कितने ही रूसियों को ठिकाने लगा दिया है। इस बात से ख़ून-ख़राबा ही होगा..."

स्मोल्नी मे इतनी उत्तेजना कभी देखी नही गयी—यह थी उत्तेजना की चरम पराकाष्ठा। अंधेरे गलियारो मे वे ही दौड़ते-भागते आदमी, बन्दूके लिये मजदूरो के दस्ते, भारी ठसाठस भरे पोर्टफ़ोलियो लिये परेशान नेता, जो मित्रो तथा सहायकों से घिरे हुए बहस करते, समझाते और हुक्म सुनाते एक-ओर या दूसरी ओर भागे जा रहे थे। ये लोग जिन्हे अपनी सुध-बुध न थी, जिन्हे अपने तन-बदन का होश न था, जो एक झपकी सोये बिना रात रात काम करके अतिमानवीय श्रम के जीते-जागते उदाहरण बने हुए थे, मैले-कुचैले, दाढ़ी बढ़ी हुई, आंखें जलती हुई—ये लोग अपने प्रचंड उत्साह के बल पर अपने निश्चित लक्ष्य की ओर उद्दाम वेग से धावमान थे। उनके लिए अभी कितना काम पड़ा हुआ था! सरकारी मशीनरी अपने हाथ में लेना, नगर में व्यवस्था स्थापित करना, गैरिसन को वफ़ादार बनाये रखना, दूमा से और उद्धार समिति से संघर्ष करना, जर्मनों को घुसने न देना, केरेन्स्की से लड़ने की तैयारी करना, यहां जो घटनायें हुई है, उनकी सूचना प्रान्तों में पहुंचाना और अर्खगेल्स्क से लेकर व्लादिवोस्तोक तक, पूरे देश में धुआंधार प्रचार करना... हालत यह थी कि सरकार और नगरपालिका के कर्मचारी कमिसारों का हुक्म मानने से इनकार कर रहे थे, डाक-तार कर्मचारी उन्हें संचार की सुविधायें देने से इनकार कर रहे थे, रेल कर्मचारी रेल-गाड़ियो के लिए उनकी अपीलो को निष्ठुर होकर अनसुनी कर रहे थे। केरेन्स्की बढ़ते आ रहे थे, गैरिसन पर पूरा पूरा भरोसा नही किया जा सकता था, कज़्ज़ाक मौके का इन्तज़ार कर रहे थे... बोल्शेविकों के खिलाफ संगठित पूंजीपति वर्ग ही नही था, बल्कि वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों, मुट्ठी भर मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों और सामाजिक-जनवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावादियो को छोड़कर—और ये लोग भी डावांडोल थे और यह निश्चय नही कर पा रहे थे कि बोल्शेविकों का साथ दें या नहीं—इन्हें छोड़कर बाकी सभी समाजवादी पार्टियां उनके खिलाफ थीं। यह सच है कि मजदूर और सैनिक जन-समुदाय उनके साथ थे; जहां तक किसानों का सवाल था, यह पता न था कि ऊंट किस करवट बैठेगा; बोल्शेविकों का राजनीतिक दल ऐसा न था कि उसमें अनुभवी और शिक्षित लोगों की भरमार हो...

सामने सीढ़ियों से रियाजानोव ऊपर आ रहे थे और कुछ घबराये से और कुछ मजाकिया लहजे में कह रहे थे कि वह वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री है, परन्तु वह व्यवसाय के बारे में क ख ग भी नही जानते। ऊपर रेस्तोरां में एक सज्ज[illegible] ब[illegible] की खाल का लबादा पहने अकेले एक कोने मे बैठे थे; जो कपड़े [illegible] पहने हुए थे, उन्हीं में वह—मैं कहने जा रहा था—"सोये थे," परन्तु जाहिर था कि वह सोये ही नही थे। उनकी दाढ़ी तीन दिन से नही बनी थी। वह चिन्तित मुद्रा मे बैठे एक मैले लिफाफे पर कोई हिसाब लगा रहे थे और बीच बीच मे अपनी पेंसिल चबाते जाते थे। यह थे वित्त-कमिसार मेन्जीन्स्की, जिनकी इस पद के लिए एकमात्र योग्यता यह थी कि वह कभी एक फ्रांसीसी बैंक में क्लर्क रह चुके थे... और सैनिक क्रांतिकारी समिति के कार्यालय से नीचे तेज क़दमों से जाते हुए और चलते चलते कागज़ के टुकड़ों पर कुछ घसीटते हुए ये चार आदमी—ये वे कमिसार थे, जिन्हें रूस के चारों कोने भेजा जा रहा था कि वे क्रांति की ख़बर पहुंचायें, लोगों से बहस करें या लड़ें और इसके लिए जो भी तर्क या हथियार उनके हाथ लगें, उनका इस्तेमाल करें...

कांग्रेस एक बजे शुरू होने वाली थी और विशाल सभा-भवन बहुत पहले ही भर गया था, परन्तु सात बजे तक सभापतिमण्डल का ही पता न था... बोल्शेविक दल और वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी दल अपने अपने कक्षों में मीटिंग कर रहे थे। तीसरे पहर पूरे वक़्त लेनिन और त्रोत्स्की ने समझौता करने का विरोध किया था। बोल्शेविकों का एक काफी बड़ा भाग झुक जाने के पक्ष में था, ताकि सभी समाजवादी पार्टियों को लेकर एक संयुक्त सरकार का गठन किया जा सके। "हम अकेले कब तक ठहर सकते हैं!" इन लोगों ने कहा। "विरोध पक्ष अत्यन्त प्रबल है। हमारे पास आदमी नहीं हैं। हम जनता से कट जायेंगे और सब चौपट हो जायेगा।" कामेनेव, रियाज़ानोव वग़ैरह इसी प्रकार तर्क कर रहे थे।

परन्तु लेनिन, और उनके साथ त्रोत्स्की, चट्टान की तरह दृढ़ और अविचल रहे। "समझौतापरस्त हमारे कार्यक्रम को स्वीकार कर लें और

फिर वेशक वे मंत्रिमंडल में आ सकते हैं! हम जौ भर भी हटने के लिए तैयार नही हैं। अगर यहां पर ऐसे साथी हैं, जिनमें इतना साहस और संकल्प नही है कि वे जोखिम उठायें, जिस तरह हम उठाने के लिए तैयार हैं, तो वे भी वाकी कायरों और मिलापकारियों के साथ कांग्रेस को छोड़कर चले जायें। हम मजदूरों और सिपाहियों के समर्थन से अपने क़दम वढ़ाते जायेंगे।"

सात वजकर पांच मिनट पर वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों का संदेश आया कि वे सैनिक क्रांतिकारी समिति से इस्तीफ़ा नही देंगे।

"देखा!" लेनिन ने कहा। "वे हमारे पीछे आ रहे हैं!"

जरा देर वाद, जव हम विशाल सभा-भवन की प्रेस गैलरी में बैठे थे, पूंजीवादी अख़बारों के लिए लिखने वाले एक अराजकतावादी सज्जन ने मुझसे कहा कि हम क्यों न वाहर चलें और पता लगायें कि सभापतिमण्डल का क्या हुआ। हमने जाकर देखा त्से-ई-काह के कार्यालय मे कोई न था, न ही पेत्रोग्राद सोवियत के ब्यूरो में कोई था। हम दोनो स्मोल्नी-भवन के एक कक्ष से दूसरे कक्ष मे घूमते रहे, परन्तु मालूम होता था कि किसी को भी इस वात का जरा सा भी अन्दाजा नही था कि कांग्रेस का निर्देशक निकाय कहां है। चलते चलते मेरे साथी ने मुझे अपने पुराने क्रांतिकारी क्रिया-कलाप के वारे में, फ़्रांस मे अपने निर्वासन के दीर्घ और सुखद काल के बारे में वताया... जहां तक बोल्शेविकों का प्रश्न है, उन्होंने मेरे ऊपर विश्वास करके मुझे अपने मन की बात बतायी, वे निहायत मामूली किस्म के लोग हैं—उजड्ड और गंवार, जिन्हें सौंदर्य तथा कला की भावना छू तक नहीं गयी है। यह अराजकतावादी सज्जन रूसी बुद्धिजीवियों का एक सच्चा नमूना थे... इस प्रकार वात करते करते वह मुझे लेकर अन्ततः सत्रह नम्बर के कमरे के सामने आये, जहां सैनिक क्रांतिकारी समिति का कार्यालय था। लोग बेतहाशा दौड़-भाग रहे थे और वह इस तमाम आपाधापी के बीच मजे से खड़े थे। इतने में दरवाजा खुला और बग़ैर बिल्ले की वर्दी पहने एक ठिंगना चौड़े-चकले चेहरे वाला आदमी झपट कर बाहर निकला। पहली नजर में ऐसा लगा कि वह मुस्करा रहा है, लेकिन दूसरी ही नजर ने बता दिया कि दर असल वह

मुस्करा नही रहा है, वल्कि बेहद थकान से उसकी खीसें निकल आयी हैं। यह थे क्रिलेन्को।

मेरे साथी, जो देखने में एक बहुत शाइस्ता, सजीले जवान थे, ख़ुशी से चीख़ उठे और आगे बढ़े।

"निकोलाई वसील्येविच," उन्होने अपना हाथ बढाते हुए कहा। "आप मुझे भूल तो नही गये हैं, कामरेड? हम दोनों जेल में एक साथ थे।"

क्रिलेन्को ने बड़ी कोशिश से अपनी दृष्टि और अपने ध्यान को एकाग्र किया और फिर उन्हें सिर से पैर तक अत्यन्त मैत्रीपूर्ण भाव से देखते हुए जवाब दिया, "नही, भूलूंगा क्यों? आप हैं स०... ज्द्रास्त-वूइते! (नमस्कार!)" वे एक दूसरे के गले लग गये। "तुम इस हंगामे में क्या कर रहे हो?" क्रिलेन्को ने हाथ से चारो ओर इशारा करते हुए कहा।

"ओह, मैं तो बस एक तमाशबीन हूं! आप, मालूम होता है, ख़ूब कामयाब हुए हैं।"

"हा," क्रिलेन्को ने साग्रह कहा, "सर्वहारा क्रान्ति ख़ूब कामयाब हुई है।" और फिर हंस कर, "लेकिन—लेकिन शायद हम दोबारा जेल मे मिलेंगे!"

जब हम फिर गलियारे में निकले, मेरे साथी ने दोबारा अपना वृत्तान्त शुरू किया। "आप जानते हैं, मैं क्रोपोतकिन का अनुयायी हूं। हमारी दृष्टि में क्रांति एकदम असफल हुई है। वह जन-साधारण मे देशभक्ति का भाव जाग्रत करने में असमर्थ रही है। बेशक, इससे यही साबित होता है कि जनता अभी क्रान्ति के लिए तैयार नही है..."

ठीक आठ बजकर चालीस मिनट हुए थे, जब तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सभापतिमंडल के सदस्यों ने प्रवेश किया। उनमे लेनिन—महान् लेनिन भी थे। नाटा कद, गठा हुआ शरीर, भारी सिर—गंजा, उभरा हुआ और मजबूती से गर्दन पर बैठा हुआ। छोटी छोटी आंखें, चिपटी सी नाक, काफ़ी बड़ा, फैला हुआ मुंह और भारी ठुड्डी; दाढ़ी

फिलहाल सफाचट, लेकिन पहले के और बाद के वर्षों की उनकी मशहूर दाढ़ी अभी से उगने लगी थी। पुराने कपड़े पहने हुए, जिनमे पतलून उनके क़द को देखते हुए खासकर लम्बी थी। चेहरे-मोहरे से वह जनता के आराध्य नही लगते थे, फिर भी उन्हें जितना प्रेम और सम्मान मिला, उतना इतिहास में विरले ही नेताओं को मिला होगा। एक विलक्षण जन-नेता, जो केवल अपनी बुद्धि के बल पर नेता बने थे। तबीयत में न रंगीनी न लताफत, न ही कोई ऐसी स्वभावगत विलक्षणता, जो मन को आकर्षित करती। वह दृढ, अविचल तथा अनासक्त आदमी थे, परन्तु उनमें गहन विचारों को सीधे-सादे शब्दों में समझाने की और किसी भी ठोस परिस्थिति को विश्लेषित करने की अपूर्व क्षमता थी। और उनमें सूक्ष्मदर्शिता के साथ साथ बौद्धिक साहसिकता कूट कूट कर भरी थी।

कामेनेव सैनिक क्रांतिकारी समिति की कार्रवाइयों के बारे में रिपोर्ट पेश कर रहे थे: सेना मे मृत्यु-दण्ड समाप्त कर दिया गया है, प्रचार-स्वातन्त्र्य को फिर से पुनःस्थापित किया गया है और राजनीतिक अपराधों के लिए गिरफ़्तार अफसरों और सिपाहियों को रिहा कर दिया गया है, केरेन्स्की को गिरफ़्तार करने का और निजी गोदामों में जमा अनाज की जब्ती का हुक्म जारी किया गया है... बड़े जोर की तालियां।

बुंद का प्रतिनिधि फिर बोलने के लिए खड़ा हुआ—बोल्शेविकों के कट्टर रुख का नतीजा यह होगा कि क्रान्ति कुचल दी जायेगी। इसलिए बुंद-प्रतिनिधि कांग्रेस में भाग लेने से इनकार करते हैं। हाल से आवाजें, "हमने तो समझा था कि आप लोग कल रात ही निकल गये! आप लोग कितने बार सभा त्याग करेंगे?"

इसके बाद मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों के प्रतिनिधि। आवाजें, "हैं! आप अभी यहा मौजूद है?" वक्ता ने सफाई देते हुए कहा कि सभी मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों ने कांग्रेस का [illegible] नही किया है, कुछ चले गये और बाकी कांग्रेस मे भाग लेने [illegible]

"हम समझते है, [illegible] सोवियतों [illegible] करना क्रान्ति के लिए घातक [illegible] सम्भवत: [illegible]" बीच मे आवाजें, शोर।" [illegible] हम [illegible] है कि कांग्रेस में मौजूद [illegible] के [illegible]

और भी लोग बोले, परन्तु प्रगटतः किसी क्रम से नहीं। दोन प्रदेश के खान मजदूरों के एक प्रतिनिधि ने मांग की कि कांग्रेस कलेदिन के ख़िलाफ कार्रवाई करे, जो राजधानी को होनेवाली कोयले और अनाज की सप्लाई की लाइन को काट सकता है। मोर्चे से अभी अभी पहुंचने वाले कई सिपाहियों ने कांग्रेस को अपनी अपनी रेजीमेंटों का उत्साहपूर्ण अभिवादन-संदेश दिया... और बाद में लेनिन बोलने के लिए खड़े हुए। मिनटों तक तालियों की गड़गड़ाहट होती रही, लेकिन वह जाहिरा उससे बेख़बर लोगों के खामोश हो जाने का इन्तजार करते हुए खड़े रहे—अपने सामने रीडिंग-स्टैंड को पकड़े, वह अपनी छोटी छोटी, मिचमिचाती आंखों से भीड़ को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देख रहे थे। जब तालियां बंद हुईं, उन्होंने निहायत सादगी से बस इतना ही कहा, "अब हम समाजवादी व्यवस्था का निर्माण शुरू करेंगे!" और फिर जनसमुद्र का वही प्रचण्ड गर्जन।

"पहला काम है शान्ति सम्पन्न करने के लिए अमली कार्रवाई करना... हम सोवियत शर्तों के आधार पर सभी युद्धरत देशों की जनता से शांति का प्रस्ताव करेंगे। ये शर्तें हैं बग़ैर संयोजनों के, बग़ैर हरजानों के और जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ शान्ति। साथ ही, अपने वादे के मुताबिक हम गुप्त संधियों को प्रकाशित करेंगे और उन्हें रद्द करेंगे... युद्ध और शांति का प्रश्न इतना स्पष्ट है कि मेरा ख़्याल है कि मैं बिना किसी प्रस्तावना के सभी युद्धरत देशों के जनों के नाम घोषणा के मसौदे को पढ़ सकता हूं..."

जब वह बोल रहे थे, उनका चौड़ा मुंह पूरा खुला था और उस पर जैसे हंसी खेल रही थी। उनकी आवाज़ भारी थी, मगर सुनने में बुरी नहीं थी—लगता था कि सालों तक बोलते रहने से यह आवाज़ सख़्त हो गयी हो। वह एक ही लहजे में बोलते रहे और सुनने वाले को यह महसूस होता था कि वह हमेशा, हमेशा ऐसे ही बोलते रह सकते हैं और उनकी आवाज़ कभी भी बंद होनेवाली नहीं है... अपनी बात पर जोर देना होता, तो वह बस ज़रा सा आगे की ओर झुक जाते। न अंगविक्षेप, न भावभंगी। और उनके सामने एक हज़ार सीधे-सादे लोगों के एकाग्र मुखड़े श्रद्धा और भक्ति से उनकी ओर उठे हुए थे।

छः तथा सात नवम्बर की क्रांति द्वारा स्थापित और मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों पर आधारित, यह मजदूर तथा किसान सरकार सभी युद्धरत जनों तथा उनकी सरकारों से प्रस्ताव करती है कि वे एक न्याय्य तथा जनवादी शांति-संधि के लिए अविलंब वार्ता आरम्भ करें।

न्याय्य तथा जनवादी शान्ति से – जिसकी सभी युद्धरत देशों के युद्ध से थके-मांदे और नंगे-बूचे मजदूरों तथा मेहनतकश वर्गों का विशाल बहुमत आकांक्षा रखता है, जिसकी जारशाही राजतंत्र को धराशायी करने के बाद से रूसी मजदूर और किसान बराबर, स्पष्ट तथा निरपेक्ष रूप से मांग करते रहे हैं – सरकार का तात्पर्य वह शान्ति है, जो बग़ैर संयोजन किये (अर्थात् बग़ैर विदेशी प्रदेशों को अधीन बनाये, बग़ैर दूसरी जातियों का बलात् संयोजन किये) और बग़ैर हरजाना लिये अविलम्ब सम्पन्न की जाये।

रूस की सरकार सभी युद्धरत जनों से प्रस्ताव करती है कि सभी देशों तथा सभी जातियों की जनता की अधिकृत सभाओं द्वारा ऐसी शांति की सभी शर्तों का निश्चित रूप से अनुसमर्थन होने से पहले वे ऐसी शांति के उद्देश्य से तुरत, तनिक सा भी विलंब किये बिना, वार्ता आरंभ करने का निर्णायक कदम उठाने के लिए अपनी तत्परता प्रगट कर अविलम्ब ऐसी शांति सम्पन्न करें।

सामान्यतः जनवादी अधिकारों की और विशेषतः मेहनतकश वर्गों के अधिकारों की धारणा के अनुरूप ही, संयोजन अथवा विदेशी प्रदेश के अधीनीकरण से सरकार का तात्पर्य किसी छोटी और कमजोर जाति का उसकी मरज़ी और स्वीकृति की स्वैच्छिक, स्पष्ट तथा ठीक ठीक अभिव्यक्ति के बिना, एक विशाल और शक्तिशाली राज्य के साथ मिलाया जाना है, चाहे ऐसा बलात् संयोजन किसी भी घड़ी में सम्पन्न क्यों न किया गया हो, चाहे बलात् संयोजित किये जाने वाले अथवा अन्य राज्य की सीमाओं के भीतर रखे जाने वाले राष्ट्र की सभ्यता का स्तर कुछ भी क्यों न हो और चाहे वह राष्ट्र यूरोप में हो या समुद्र पार के दूर देशों में।

यदि एक राष्ट्र अन्य राज्य की सीमाओं के भीतर बलात् रखा जाता है ; यदि उसके द्वारा व्यक्त इच्छा के बावजूद (इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह इच्छा समाचारपत्रों, जन-सभाओं, राजनीतिक पार्टियों के निर्णयों द्वारा व्यक्त हुई है अथवा राष्ट्रीय उत्पीड़न के विरुद्ध उपद्रव तथा विद्रोह द्वारा) उस राष्ट्र को संयोजन करने वाले अथवा संयोजन की इच्छा रखने वाले अथवा सामान्यतः अधिक शक्तिशाली राष्ट्र की सेनाओं के पूरी तरह हटा लिये जाने के बाद, उसके ऊपर जरा सा भी दबाव डाले बिना, स्वतन्त्र मतदान द्वारा अपने राष्ट्रीय तथा राजनीतिक संगठन का रूप निश्चित करने का अधिकार नहीं दिया जाता, तो ऐसे राष्ट्र का मिलाया जाना संयोजन है, अर्थात् अधीनीकरण है और हिंसात्मक कार्य है।

सरकार की दृष्टि में इस लड़ाई को इस गरज से जारी रखना कि शक्तिशाली तथा समृद्ध राष्ट्र दुर्बल तथा विजित जातियों को आपस मे बांट सकें, मानवता के विरुद्ध जघन्यतम अपराध है। और सरकार उपरोक्त शर्तों पर, जो निरपवाद रूप से सभी जातियों के लिए समान रूप से न्यायपूर्ण है, शांति-संधि संपन्न करने के अपने निर्णय की पूरी गभीरता से घोषणा करती है, जिसके द्वारा युद्ध को समाप्त किया जायेगा।

इसके साथ ही सरकार यह भी घोषणा करती है कि वह शान्ति की उपरोक्त शर्तों को अन्तिम चुनौती के रूप मे नहीं पेश कर रही है, दूसरे शब्दों में वह शान्ति की किन्हीं दूसरी शर्तों पर भी विचार करने को तैयार है, परन्तु वह केवल इस पर आग्रह करती है कि कोई भी युद्धरत राष्ट्र यथाशीघ्र उन्हें प्रस्तुत करे और यह कि शान्ति के सुझावों में बिल्कुल स्पष्टता हो और किसी प्रकार की गोलमोल बातें या गोपनीयता न हो।

सरकार गुप्त कूटनीति को समाप्त करती है और वह समस्त वार्ता को जनता की नजर के सामने खुले तौर पर चलाने के अपने दृढ निश्चय को पूरे देश के सामने प्रगट करती है। मार्च से लेकर ७ नवंबर, १९१७ तक जमींदारों और पूंजीपतियों की सरकार ने जिन गुप्त संधियों को अनुमोदित अथवा सपन्न किया है, सरकार उन सब का पूर्ण अविकल प्रकाशन तत्काल आरम्भ करेगी। सरकार गुप्त सधियों की सभी धाराओं

को, जिनका उद्देश्य अधिकांशतः रूसी पूंजीपतियों के लिए सुविधायें तथा विशेषाधिकार प्राप्त करना है अथवा रूसी साम्राज्यवादियों के संयोजनों को क़ायम रखना या बढ़ाना है, फ़ौरन बिना किसी बातचीत के रद्द करती है।

सभी सरकारों तथा सभी जनों में शांति-संधि के लिए सार्वजनिक वार्ता करने का प्रस्ताव करती हुई सरकार घोषणा करती है कि वह ऐसी वार्ता डाक-तार के द्वारा अथवा विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों की वार्ता द्वारा अथवा इन प्रतिनिधियों के एक सम्मेलन में चलाने के लिए तैयार है। ऐसी वार्ता सुविधाजनक रूप से हो सके, इसके लिए सरकार तटस्थ देशों में अपने अधिकृत प्रतिनिधि नियुक्त करती है:

सरकार सभी युद्धरत देशों की सरकारों तथा जनों से प्रस्ताव करती है कि वे अविलम्ब युद्ध-विराम समझौता सम्पन्न करें और साथ ही यह सुझाव देती है कि यह युद्ध-विराम कम से कम तीन महीने के लिए होना चाहिए, जिस अवधि में निरपवाद रूप से युद्ध में खिंच आये या उसमें भाग लेने के लिए विवश सभी राष्ट्रों और जातियों के प्रतिनिधियों के बीच न केवल आवश्यक प्रारंभिक वार्ता ही पूर्णतः संभव है, बल्कि शान्ति की शर्तों को निश्चित रूप से स्वीकार करने के उद्देश्य से सभी देशों की जनता के प्रतिनिधियों की अधिकृत सभायें भी बख़ूबी बुलायी जा सकती हैं।

सभी युद्धरत देशों की सरकारों तथा जनों से शान्ति का यह प्रस्ताव करती हुई रूस की अस्थायी मजदूर तथा किसान सरकार उन तीन राष्ट्रों– इंग्लैंड, फ़्रांस और जर्मनी–के वर्ग-चेतन मजदूरों का विशेष रूप से सम्बोधन करती है, जो मानवता के सबसे उन्नत राष्ट्र हैं और जो वर्तमान युद्ध में भाग लेने वाले राष्ट्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

इन देशों के मजदूरों ने प्रगति तथा समाजवाद के ध्येय की बहुत बड़ी सेवा की है। इंग्लैंड में चार्टिस्ट आन्दोलन, फ़्रांसीसी सर्वहारा द्वारा सम्पन्न विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्त्व की क्रान्तियों का पूरा सिलसिला और अन्ततः जर्मनी में असाधारण कानूनों के खिलाफ ऐतिहासिक संघर्ष, जो सारी दुनिया के मजदूरों के लिए दीर्घकालीन दृढ संघर्ष का एक उदाहरण है, और जर्मन सर्वहाराओं के प्रबल संगठनों की स्थापना–ये सारी शानदार मिसालें, सर्वहारा वीरता के ये नमूने, इतिहास की ये

स्मरणीय घटनायें हमारे लिए इस बात की पक्की गारंटी है कि इन देशों के मजदूरों के ऊपर मानवता को युद्ध की विभिषिकाओं तथा उसके परिणामों से मुक्त करने का जो कार्यभार आ पड़ा है वे उसे समझेंगे, कि ये मजदूर प्रबल, निर्णायक तथा सतत संघर्ष के द्वारा शान्ति के ध्येय को, और साथ ही समस्त दासता तथा समस्त शोषण से शोषित श्रमिक जन-साधारण की मुक्ति के ध्येय को सफलतापूर्वक पूरा करने में हमारी सहायता करेंगे।

जब तालियों की गड़गड़ाहट शान्त हुई, लेनिन ने फिर बोलना शुरू किया :

"हम प्रस्ताव करते हैं कि कांग्रेस इस घोषणा का अनुसमर्थन करे। हम जनता का सम्बोधन करते हैं और सरकारों का भी, क्योंकि यदि हमारी घोषणा युद्धरत देशों की जनता के नाम ही हो, तो उससे शान्ति-सन्धि सम्पन्न करने में विलंब हो सकता है। युद्ध-विराम काल में शान्ति-सन्धि की जो शर्तें विवृत की जायेंगी, संविधान सभा उनका अनुसमर्थन करेगी। युद्ध-विराम की अवधि तीन महीना निश्चित करने मे हमारी मंशा यह है कि इस ख़ून-ख़राबे और मारकाट के बाद जनता को यथासंभव अधिक से अधिक विराम मिल सके और उसे अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करने के लिए प्रचुर समय मिल सके। साम्राज्यवादी सरकारें हमारे इस शान्ति-प्रस्ताव का विरोध करेंगी—हमें इसके बारे में कोई मुग़ालता नही है। परन्तु हम आशा करते हैं कि सभी युद्धरत देशों मे क्रान्ति जल्द ही भड़क उठेंगी, यही कारण है कि हम फ़्रांस, इंग्लैंड और जर्मनी के मजदूरों का विशेष रूप से सम्बोधन करते हैं..."

उन्होंने अपना भाषण इन शब्दों के साथ ख़त्म किया, "छः तथा सात नवम्बर की क्रान्ति ने समाजवादी क्रान्ति के युग का सूत्रपात किया है... शान्ति तथा समाजवाद के नाम पर मजदूर आन्दोलन जीतेगा और अपने भवितव्य को चरितार्थ करेगा..."

इन शब्दों मे एक ऐसी अद्भुत निष्कम्प शक्ति थी, जो प्राणों को आलोड़ित करती थी। इसे आसानी से समझा जा सकता है कि क्यों जब लेनिन बोलते थे, लोग उनकी बात पर विश्वास करते थे ...

लोगों ने हाथ उठाकर यह तुरंत फ़ैसला कर दिया कि केवल राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को ही प्रस्ताव पर बोलने की इजाजत दी जानी चाहिए, और हर भाषणकर्ता के लिए पन्द्रह मिनट का समय बाध देना चाहिए।

सबसे पहले वामपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों की ओर से करेलिन बोले: "हमारे दल को घोषणा के मज़मून में संशोधन पेश करने का कोई मौका नही मिला है। घोषणा बोल्शेविकों की निजी दस्तावेज़ है। फिर भी हम उसके पक्ष मे वोट देंगे, क्योंकि हम उसकी भावना से सहमत है..."

सामाजिक-जनवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों की ओर से क्रामारोव उठे। लबा कद, कधे कुछ झुके हुए, आंखें समीप-दर्शी—यह थे क्रामारोव, जो आने वाले दिनों मे विरोध पक्ष के विदूषक के रूप में शोहरत हासिल करने वाले थे। उन्होंने कहा कि सभी समाजवादी पार्टियों द्वारा बनायी गयी सरकार ही एक ऐसा महत्त्वपूर्ण कदम उठाने का अधिकार रख सकती है। अगर एक सयुक्त समाजवादी मंत्रिमंडल बनाया जाये, तो उनका दल समूचे कार्यक्रम का समर्थन करेगा, नही तो वह उसके एक भाग का ही समर्थन करेगा। जहा तक घोषणा का प्रश्न है, अंतर्राष्ट्रीयतावादी उसकी मुख्य बातो से पूरी तरह सहमत है...

और तब उत्तरोत्तर बढते हुए उत्साह के बीच एक वक्ता के बाद दूसरा वक्ता बोला: उक्रइनी सामाजिक-जनवाद की ओर से—समर्थन; लिथुआनियाई सामाजिक-जनवाद की ओर से—समर्थन; जन-समाजवादी—समर्थन; पोलिश सामाजिक-जनवाद—समर्थन; पोलिश समाजवादी—समर्थन, परन्तु उनकी दृष्टि में संयुक्त समाजवादी मंत्रिमण्डल अधिक श्रेयस्कर होगा; लाटवियाई सामाजिक-जनवाद—समर्थन ... इन आदमियों में जैसे कोई ज्योति जग गयी थी। एक ने "आसन्न विश्व-शान्ति, जिसके हम अगले दस्ते है," की बात की; दूसरे ने उस "नये भ्रातृत्वपूर्ण युग" की बात की, "जब संसार के सभी जन एक परिवार जैसे हो जायेंगे..." एक प्रतिनिधि ने व्यक्तिगत रूप से बोलने की अनुमति मागी। "घोषणा में एक अतर्विरोध है," उसने कहा। "पहले आप बगैर सयोजनो और हरजानों के शान्ति का प्रस्ताव करते है और

फिर आप कहते हैं कि आप शान्ति के सभी प्रस्तावों पर विचार करेंगे। विचार करने का अर्थ है ग्रहण करना..."

लेनिन उठ खड़े हुए। "हम न्याय्य शान्ति चाहते हैं, पर हम क्रान्तिकारी युद्ध से घबराते नहीं... साम्राज्यवादी सरकारें संभवतः हमारी अपील का उत्तर नहीं देंगी, परन्तु हम कोई अल्टीमेटम नहीं जारी करेंगे, जिसे ठुकरा देना आसान होगा... अगर जर्मन सर्वहारा यह समझ ले कि हम शान्ति के सभी प्रस्तावों पर विचार करने के लिए तैयार हैं, तो शायद यह बारूद में चिनगारी का काम करे—और जर्मनी में क्रांति भड़क उठे...

"हम शान्ति की सभी शर्तों पर ग़ौर करने के लिए राजी हैं, मगर इसका मतलब यह नहीं है कि हम उन शर्तों को मंजूर भी कर लेंगे .. अपनी कुछ शर्तों के लिए हम अंत तक लड़ेंगे, लेकिन हो सकता है कि दूसरी शर्तों की ख़ातिर हम लड़ाई चलाते जाना असंभव पायेंगे... सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम लड़ाई ख़त्म करना चाहते हैं..."

ठीक दस बजकर पैंतीस मिनट पर कामेनेव ने कहा कि जो लोग घोषणा के पक्ष में हैं, वे अपने कार्ड दिखायें। केवल एक प्रतिनिधि ने विरोध में अपना हाथ उठाने की जुर्रत की, लेकिन इस पर चारों ओर लोगों में इतना गुस्सा भड़क उठा कि उसने भी अपना हाथ जल्दी से नीचे कर लिया... घोषणा सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गयी।

सहसा हम सब एक ही सहज प्रेरणा के वशीभूत होकर उठ खड़े हुए और 'इंटरनेशनल' का मुक्त, निर्बाध, आरोही स्वर हमारे कंठों से फूट निकला। एक पुराना, खिचड़ी बालों वाला सिपाही बच्चे की तरह फूट-फूट कर रो पड़ा। अलेक्सान्द्रा कोल्लोन्ताई ने जल्दी से अपने आंसुओं को रोका। एक हजार कंठों से निकली यह प्रबल ध्वनि सभा-भवन में तरंगित होकर खिड़कियों-दरवाजों से बाहर निकली और ऊपर उठती गयी, ऊपर उठती गयी और निभृत आकाश में व्याप्त हो गयी। "लड़ाई ख़त्म हो गयी! लड़ाई ख़त्म हो गयी!" मेरे पास खड़े एक नौजवान मजदूर ने कहा, जिसका चेहरा चमक रहा था। और जब यह गान समाप्त हो गया और हम वहां निस्तब्ध खोये से खड़े थे, हॉल के पीछे से किसी ने आवाज दी, "साथियो, हम उन लोगों की याद करें,

इसी के लिए ही वे वहां पड़े रहे हैं, मार्च के शहीद, मार्स मैदान के अपने ठण्डे बिरादराना कब्रगाह में पड़े रहे हैं; इसी के लिए हजारों आदमियों ने जेलों में, कालापानी मे और साइबेरिया की खानों में अपनी जानें दीं। आज वह क्रांति आयी है, हालांकि वह उस तरह नही आयी है, जैसा वे सोचते थे या जैसा बुद्धिजीवी चाहते थे, लेकिन वह आयी है–कठोर और शक्तिशाली, फारमूलो की धज्जिया उड़ाती हुई और कोरी भावुकता को तर्क करती हुई। यह है **सच्ची, वास्तविक...**

लेनिन भूमि संबंधी आज्ञप्ति को पढ रहे थे :

(१) भूमि का समस्त निजी स्वामित्व बिला मुआविजा फ़ौरन खत्म किया जाता है।

(२) जमीदारों की सभी ज़मीने, शाही जमीनें, मठों और गिरजाघरों की जमीने, मय तमाम मवेशियो के और औज़ारो के, मय तमाम इमारतों और लवाजमात के, जब तक कि संविधान सभा का अधिवेशन नही होता तब तक के लिए जिला भूमि समिनियों तथा किसानो के प्रतिनिधियों की उयेज्द सोवियतों के हाथ में अन्तरित की जाती है।

(३) ज़ब्त की हुई सम्पत्ति को, जो आज से समस्त जनता की सम्पत्ति है, अगर कोई भी नुकसान पहुचाया जाता है, तो उसे गंभीर अपराध माना जायेगा और वह क्रांतिकारी न्यायाधिकरणों द्वारा दंडनीय होगा। जमीदारो की जमीनो पर कब्ज़ा करते समय किसानो के प्रतिनिधियो की उयेज्द सोवियते पूरी कड़ाई से सुव्यवस्था कायम रखने के लिए, जमीन के टुकड़ों की लम्बाई-चौडाई निश्चित करने के लिए और यह निश्चित करने के लिए कि कौन से टुकडे जब्ती क़ानून के अन्तर्गत आते हैं, जब्त की हुई तमाम जायदाद की फेहरिस्त बनाने के लिए और जनता के हाथो मे अन्तरित की जाने वाली समस्त कृषि-सम्पत्ति की, मय इमारतो, मवेशियो, औज़ारो और उपज के संचयो के, कठोरतम क्रांतिकारी सुरक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठायेंगी।

(४) जब तक कि संविधान सभा भूमि-सुधारों का अंतिम स्वरूप निश्चित न करे, तब तक इन महत्त्वपूर्ण भूमि-सुधारों को पूरा करने का काम निम्नलिखित किसान के **नकाज**[3] (निर्देश-पत्र) द्वारा निर्देशित होगा,

जिन्होंने आज़ादी के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया!" और इस प्रकार हमने शोकगान 'शवयात्रा' गाना शुरू किया, जिसका स्वर धीमा और उदास होते हुए भी विजयपूर्ण था। यह था दिल को हिला देने वाला एक ठेठ रूसी गाना। कुछ भी हो, 'इन्टरनेशनल' का राग विदेशी ही ठहरा, परन्तु 'शवयात्रा' में उस विशाल जनता के प्राणों की गूंज थी, जिसके प्रतिनिधि इस हॉल में बैठे थे और अपने धुंधले धुंधले मानस-चित्र के आधार पर नये रूस का सृजन कर रहे थे—और शायद और भी ज़्यादा...

'शवयात्रा' की पंक्तियां:

तुमने जन-स्वातन्त्र्य के लिए, जनसम्मान के लिए
प्राणघाती युद्ध में अपने प्राणों को आहुति दी...
तुमने अपना जीवन बलिदान दिया
और अपना सब कुछ होम कर दिया।
तुमने बंदीगृह में नरक की यातनायें भोगी
तुम जंजीरों से बंधे कालापानी गये...
तुमने इन जंजीरों को ढोया
और उफ भी नही किया।
क्योंकि तुम अपने दुःखी भाइयों की आवाज़ को
अनसुनी नही कर सकते थे।
क्योंकि तुम्हारा विश्वास था कि न्याय की शक्ति
खड्ग की शक्ति से बड़ी है...
समय आयेगा जब तुम्हारा अर्पित जीवन रंग लायेगा
वह समय आने ही वाला है;
अत्याचार ढहेगा और जनता उठेगी—स्वतन्त्र और महान्।
अलविदा, भाइयो! तुमने अपने लिये महान् पथ चुना।
तुम्हारे पदचिह्नों पर एक नयी सेना चल रही है,
जुल्म सहने और मर मिटने के लिए तैयार...
अलविदा, भाइयो! तुमने अपने लिये महान् पथ चुना।
हम तुम्हारी समाधि पर शपथ उठाते हैं,
हम संघर्ष करेंगे, आज़ादी के लिए और जनता की खुशी के लिए...

इसी के लिए ही वे वहां पड़े रहे हैं, मार्च के शहीद, मार्स मैदान के अपने ठण्डे बिरादराना क़ब्रगाह मे पडे रहे है; इसी के लिए हजारो आदमियों ने जेलों में, कालापानी में और साइबेरिया की खानों में अपनी जानें दी। आज वह क्रांति आयी है, हालांकि वह उस तरह नही आयी है, जैसा वे सोचते थे या जैसा बुद्धिजीवी चाहते थे, लेकिन वह आयी है – कठोर और शक्तिशाली, फारमूलों की धज्जिया उड़ाती हुई और कोरी भावुकता को तर्क करती हुई। यह है **सच्ची, वास्तविक...**

लेनिन भूमि संबंधी आज्ञप्ति को पढ़ रहे थे:

(१) भूमि का समस्त निजी स्वामित्व बिला मुआविजा फौरन खत्म किया जाता है।

(२) जमीदारों की सभी जमीने, शाही जमीनें, मठों और गिरजाघरो की जमीनें, मय तमाम मवेशियो के और औजारों के, मय तमाम इमारतों और लवाजमात के, जब तक कि संविधान सभा का अधिवेशन नही होता तब तक के लिए जिला भूमि समितियो तथा किसानों के प्रतिनिधियो की उयेज्द सोवियतों के हाथ में अन्तरित की जाती है।

(३) जब्त की हुई सम्पत्ति को, जो आज से समस्त जनता की सम्पत्ति है, अगर कोई भी नुकसान पहुंचाया जाता है, तो उसे गंभीर अपराध माना जायेगा और वह क्रांतिकारी न्यायाधिकरणों द्वारा दंडनीय होगा। जमीदारो की जमीनों पर कब्जा करते समय किसानो के प्रतिनिधियों की उयेज्द सोवियते पूरी कड़ाई से सुव्यवस्था कायम रखने के लिए, जमीन के टुकड़ों की लम्बाई-चौडाई निश्चित करने के लिए और यह निश्चित करने के लिए कि कौन से टुकड़े जब्ती कानून के अन्तर्गत आते है, जब्त की हुई तमाम जायदाद की फेहरिस्त बनाने के लिए और जनता के हाथो मे अन्तरित की जाने वाली समस्त कृषि-सम्पत्ति की, मय इमारतो, मवेशियों, औजारो और उपज के संचयों के, कठोरतम क्रांतिकारी सुरक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठायेंगी।

(४) जब तक कि संविधान सभा भूमि-सुधारों का अंतिम स्वरूप निश्चित न करे, तब तक इन महत्त्वपूर्ण भूमि-सुधारो को पूरा करने का काम निम्नलिखित किसान के **नकाज़**[3] (निर्देश-पत्र) द्वारा निर्देशित होगा,

जो २४२ स्थानीय किसान-नकाज़ों के आधार पर 'किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियत के समाचार' ('इज़्वेस्तिया') के सम्पादक-मण्डल द्वारा तैयार किया गया है और उक्त 'इज़्वेस्तिया' के अंक ८८ में प्रकाशित किया गया है (पेत्रोग्राद, अंक ८८, १९ अगस्त, १९१७)।

किसानों और कज़्ज़ाकों की जमीनों को जब्त नही किया जायेगा।

आज्ञप्ति की व्याख्या करते हुए लेनिन ने कहा, "यह भूतपूर्व मन्त्री चेर्नोव की योजना नही है, जिन्होंने 'एक ढांचा तैयार करने' की बात की थी और ऊपर से सुधार सम्पन्न करने की चेष्टा की थी। भूमि के बंटवारे के सवालों का फ़ैसला नीचे से, गावों में होगा, किसी किसान को कितनी जमीन मिलेगी, यह स्थान विशेष पर निर्भर होगा...

"अस्थायी सरकार के अन्तर्गत पोमेश्चिकों (जमीदारों) ने भूमि समितियों के आदेशो को मानने से साफ इनकार कर दिया था – उन भूमि समितियों के आदेशों को, जिन्हें ल्वोव ने आकल्पित किया था, शिंगारेव ने जन्म दिया था और जिनका केरेन्स्की ने शासन-प्रबन्ध किया था!"

इसके पहले कि बहस शुरू हो, एक आदमी बड़ी तेजी से भीड़ को चीरता हुआ मंच पर चढ़ आया। यह किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति के सदस्य प्यानिख़ थे। वह बिलकुल आपे से बाहर हो रहे थे।

उन्होंने गोया भीड़ पर पत्थर फेंकते हुए कहा, "किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतों की कार्यकारिणी समिति अपने साथियों, मन्त्री सलाज़किन तथा मास्लोव की गिरफ़्तारी के प्रति प्रतिवाद प्रगट करती है! हम उनकी फौरन रिहाई की माग करते हैं! वे इस समय पीटर-पाल किले में बंद हैं। इसके बारे में फौरन कारंवाई करनी होगी! एक मिनट की भी देर नही की जा सकती!"

उनके बाद एक और आदमी बोलने के लिए खड़ा हुआ, एक सिपाही, जिसकी दाढ़ी अस्त-व्यस्त हो रही थी और आंखें चमक रही थीं। "आप यहां मजे में बैठे किसानों को जमीन देने की बात कर रहे हैं, और साथ ही अत्याचारियों और बलात्ग्राहियों की तरह उन्हीं किसानों के चुने हुए प्रतिनिधियों पर जुल्म ढा रहे हैं!" और फिर उसने अपना

घूंसा दिखाते हुए कहा, "याद रखिये, अगर उनका बाल भी बांका हुआ, तो बग़ावत की आग भड़क उठेगी!" भीड़ में जैसे खलबली मच गयी — लोगों में उलझन के साथ बेचैनी थी।

और फिर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ त्रोत्स्की उठे, शांत, जहर के बुझे, अपनी ताक़त का एहसास करते हुए। "कल सैनिक क्रांतिकारी समिति ने सिद्धान्त रूप से निश्चित किया कि समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मेन्शेविक मंत्रिगण — मास्लोव, सलाज़किन, ग्वोज़देव और माल्यान्तोविच — ये छोड़ दिये जायें। अगर वे अभी भी पीटर-पाल क़िले में हैं, तो इसका कारण केवल यह है कि हमारे सिर पर बहुत सा काम पड़ा हुआ है और हमें उन्हें बाहर निकालने की फ़ुर्सत नहीं मिली... लेकिन जब तक कोर्नीलोव-कांड के समय केरेन्स्की की विश्वासघातपूर्ण कार्रवाइयों में उनका हाथ कहां तक है, इसकी हम जांच न कर लें, तब तक उन्हें अपने घरों में गिरफ़्तार रखा जायेगा!"

प्यानिख़ ने चिल्लाकर कहा, "यहां जैसी बातें हम देख रहे हैं वैसी कभी किसी क्रांति के दौरान नहीं हुई हैं!"

"आप ग़लती पर हैं," त्रोत्स्की ने जवाब दिया। "ऐसी बातें हमारी क्रांति में भी देखी गयी हैं। जुलाई के दिनों में हमारे सैकड़ों साथी गिरफ़्तार कर लिये गये थे... जब कामरेड कोल्लोन्ताई को डाक्टर की हिदायत पर जेल से रिहा किया गया, अव्क्सेन्त्येव ने उनके घर के दरवाज़े पर ज़ार की ख़ुफ़िया पुलिस के दो भूतपूर्व एजेन्टों को तैनात कर दिया!" त्रोत्स्की के उत्तर से किसानों की बोलती बन्द हो गयी और वे बड़बड़ाते हुए, लोगों की फ़ब्तियों और फ़िकरों का निशाना बने, मंच से नीचे उतर गये।

वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों के प्रतिनिधि ने भूमि संबंधी आज्ञप्ति पर भाषण किया। सिद्धान्त रूप में उससे सहमत होते हुए भी उन्होंने कहा कि उनका दल जब तक बातचीत और बहस न हो ले इस प्रश्न पर मतदान नहीं करेगा। उन्होंने आग्रह किया कि किसानों की सोवियतों से परामर्श करना चाहिए...

मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों ने भी साग्रह कहा कि वे इस प्रश्न पर अपनी पार्टी की अंतरंग सभा में विचार करेंगे।

इसके बाद किसानो के अराजकतावादी पक्ष, पराकाष्ठावादियों के एक नेता ने भाषण किया: "हमे उस राजनीतिक पार्टी को सम्मान देना होगा, जो पहले ही दिन बगैर लफ़्फ़ाज़ी किये और लेक्चर झाड़े इस प्रकार का कार्य सम्पन्न करती है!"

मंच पर एक ठेठ किसान बोलने के लिए खड़ा हुआ; वेषभूषा ठेठ किसानों जैसी–लम्बे बाल, भारी बूट और चमड़े का कोट। सभी ओर झुक कर अभिवादन प्रगट करते हुए उसने कहा, "मैं आपका भला चाहता हूं, साथियो और नागरिको। बाहर कुछ कैडेट विचरण कर रहे है। आपने हमारे समाजवादी किसानों को तो गिरफ़्तार कर लिया, उन्हे क्यों नही गिरफ़्तार करते?"

यह भाषण जैसे नक्कारे पर चोट था, जिसने कितने ही उत्तेजित किसानों को बोलने के लिए खड़ा किया, और वे ठीक उसी तरह बोले, जिस तरह पिछली रात सिपाही बोले थे। ये थे गांवों के सच्चे सर्वहारा...

"अव्क्सेन्त्येव और उनकी मंडली जैसे हमारी कार्यकारिणी समिति के जिन सदस्यों के बारे में हमने सोचा था कि वे किसानों के रक्षक हैं, वे भक्षक निकले–वे भी कैडेट ही है! उन्हें भी गिरफ्तार करो! उन्हें पकड़ लो!"

एक दूसरा वक्ता, "ये प्यानिख जैसे, अव्क्सेन्त्येव जैसे लोग कौन हैं? उन्हे भला किसान कौन कहेगा! वे करते-धरते कुछ नही, सिर्फ़ अपनी उंगलियां चटकाते है!"

भीड ने किस कदर तालियां बजाई–उसने पहचाना कि ये किसान हमारे ही भाई है!

वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने प्रस्ताव किया कि सभा आधे घंटे के लिए विसर्जित की जाये। जिस घड़ी प्रतिनिधि बाहर निकल रहे थे, लेनिन ने अपने स्थान पर उठ कर कहा:

"हमें एक मिनट भी जाया नही करना है, साथियो! यह ख़बर, जो रूस के लिए इतने महत्व की है, कल सुबह अख़बारों में ज़रूर छप जानी चाहिये! इसमें देर न हो!"

और उत्तेजित तर्क-वितर्क, वाद-विवाद तथा पदचाप की सम्मिलित ध्वनि के बीच सैनिक क्रान्तिकारी समिति के एक दूत का कठिन स्वर सुना

जा सकता था, "पन्द्रह प्रचारक सत्रह नम्बर के कमरे मे एक दम पहुंच जायें, उन्हें मोर्चे पर जाना है! .. "

लगभग ढाई घटे बाद छिट-फुट करके प्रतिनिधि वापिस आये, सभापतिमण्डल ने अपना आसन ग्रहण किया और अधिवेशन पुन. आरम्भ हुआ। एक रेजीमेंट के बाद दूसरी रेजीमेंट के तार पढ़कर सुनाये गये, जिनमें उन्होंने सैनिक क्रातिकारी समिति के प्रति अपनी वफादारी का एलान किया था।

धीरे धीरे मीटिंग में तेजी आयी। मैकेदोनियाई मोर्चे पर रूसी सेनाओ के एक प्रतिनिधि ने वहा की परिस्थिति के बारे में तल्ख़ बयान दिया। "हम वहां पर दुश्मन से उतने परेशान नहीं है, जितने अपने 'मित्र-राष्ट्रों' की दोस्ती से," उसने कहा। दसवी और बारहवी सेनाओं के प्रतिनिधियों ने, जो जल्दी जल्दी चल कर अभी वहां पहुचे थे, कहा "हम अपनी पूरी शक्ति से आपका समर्थन करते है!" एक किसान सिपाही ने "गद्दार समाजवादियों मास्लोव और सलाजकिन" की रिहाई के खिलाफ प्रतिवाद प्रगट किया और कहा कि जहां तक किसानो की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति का प्रश्न है, उसे पूरे का पूरा गिरफ़्तार कर लेना चाहिए! ये थी इंकलाब की सच्ची आवाजे... फारस में रूसी सेना के एक प्रतिनिधि ने एलान किया कि उसे सेना की ओर से हिदायत दी गयी है कि वह समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ मे अन्तरित की जाने की माग करे... एक उक्रइनी अफसर ने अपनी मातृभाषा मे बोलते हुए कहा: "इस संकट में राष्ट्रवाद के लिए कोई जगह नही है... सभी देशों का सर्वहारा अधिनायकत्व जिंदाबाद!" उदात्त तथा उत्तेजनापूर्ण भावनाओ का एक ऐसा ज्वार उठा, ऐसा वाक्-प्रवाह कि स्पष्ट था, अब रूस कभी भी मौन, निःस्वर नही होगा।

कामेनेव ने कहा कि बोल्शेविक-विरोधी शक्तियां सभी जगह उपद्रव भडकाने की कोशिश कर रही है और उन्होंने रूस की सभी सोवियतों के नाम कांग्रेस की अपील को पढ़ कर सुनाया:

कुछ किसानो के प्रतिनिधियों समेत मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतो की अखिल रूसी कांग्रेस सभी स्थानीय सोवियतों

का आह्वान करती है कि वे समस्त प्रतिक्रांतिकारी कारंवाइयों, यहूदी-विरोधी और सभी दूसरे दंगा-फसादों का, चाहे वे कैसे भी क्यों न हों, मुकाबला करने के लिए फौरन जोरदार क़दम उठायें। मजदूरों, किसानों और सिपाहियों की क्रांति की इज्जत का तकाज़ा है कि किसी भी तरह का दंगा-फ़साद बर्दाश्त न किया जाये।

पेत्रोग्राद के लाल गार्ड, क्रांतिकारी गैरिसन और मल्लाहों ने राजधानी में पूर्ण सुव्यवस्था क़ायम रखी है।

मज़दूरो, सिपाहियो और किसानो, आपको सभी जगह पेत्रोग्राद के मजदूरों और सिपाहियों की मिसाल पर चलना चाहिए।

साथी सिपाहियो और कज़्ज़ाको, सच्ची क्रांतिकारी सुव्यवस्था को सुनिश्चित बनाने का कार्यभार आपके कंधों पर आ पड़ा है। समूचे क्रांतिकारी रूस की और समूची दुनिया की निगाहें आपके ऊपर लगी हुई हैं...

रात के दो बजे भूमि-सम्बन्धी आज्ञप्ति पर वोट लिया गया और उसके ख़िलाफ़ केवल एक वोट पड़ा। किसान प्रतिनिधि फूले नही समा रहे थे... इस प्रकार बोल्शेविक लोग दुविधा और विरोध का अतिक्रमण कर, अप्रतिहत गति से आगे बढ़े—रूस में ये ही लोग ऐसे थे, जिनके पास एक निश्चित, व्यावहारिक कार्यक्रम था, जबकि दूसरे लोग पूरे आठ महीनों से सिर्फ बातें बघार रहे थे।

अब एक सिपाही बोलने के लिए खड़ा हुआ—दुबला, फटेहाल, बोलने मे होशियार। उसने नकाज़* की उस धारा का विरोध किया, जिसके अनुसार फौजी भगोड़ों को गांवों में भूमि के वितरण में हिस्सा पाने से वंचित किया गया था। शुरू शुरू में उस पर आवाजें कसी गई और शोर किया गया, लेकिन आख़िरकार उसकी सीधी-सादी और पुरअसर तकरीर ने रंग दिखाया और लोग ख़ामोश उसे सुनने लगे। "सिपाही को उसकी मरज़ी के ख़िलाफ़ खाइयों की मारकाट में झोंक दिया गया, जिसे आपने ख़ुद शांति की आज्ञप्ति मे बेमानी ही नही, खौफ़नाक भी कहा

---

*इशारा उस 'नकाज़' (निर्देश पत्र) की ओर है, जिसे कांग्रेस ने भूमि-संबधी आज्ञप्ति के साथ ही साथ स्वीकृत किया था।—सं०

है, और उसने अमन और आजादी की उम्मीद से क्रांति का स्वागत किया। अमन? केरेन्स्की की सरकार ने उसे मजबूर किया कि वह फिर मरने और मारने के लिए गैलीशिया में जाये; अमन की उसकी पुकारों को तेरेश्चेंको ने हंस कर उड़ा दिया... और आजादी? केरेन्स्की के तहत उसने देखा कि उसकी समितियों का दमन किया जा रहा है, उसके अख़बारों को उसके पास पहुंचने नहीं दिया जा रहा है, उसकी पार्टी के वक्ताओं को जेल में डाला जा रहा है... घर का हाल यह था कि उसके गांव में जमींदार भूमि समितियों को अंगूठा दिखा कर उसके साथियों को जेलों में बंद कर रहे थे... पेत्रोग्राद में जर्मनों के साथ सांठ-गांठ करके पूंजीपति वर्ग सेना के लिए खाद्य तथा गोला-बारूद की सप्लाई को तोड़-फोड़ के जरिए चौपट कर रहा था... सिपाही के पैर में जूते न थे, बदन पर कपड़े न थे... तब फिर किसने उसे सेना से भागने पर मजबूर किया? केरेन्स्की की सरकार ने, जिसे आपने उलट दिया है!" जब उसका भाषण ख़त्म हुआ, लोगों ने तारीफ में तालियां बजायीं।

लेकिन एक दूसरे सिपाही ने फटकार सुनायी: "भगोड़ापन जैसी गंदी हरकत केरेन्स्की की सरकार की आड़ लेकर छिपायी नहीं जा सकती! भगोड़े, जो अपने साथियों को अकेले खाइयों में मरने के लिए छोड़कर घर भाग जाते हैं, नीच हैं, कमीने हैं! हर भगोड़ा गद्दार है और उसे सज़ा देनी चाहिए..." शोर, आवाजें, "दोवोल्नो!" (बस करो)। "तीशे!" (चुप रहो)। कामेनेव ने जल्दी से उठकर प्रस्ताव किया कि इस मामले को फ़ैसले के लिए सरकार के सुपुर्द कर दिया जाये[4]।

रात के ढाई बजे कामेनेव ने सरकार की स्थापना से संबंधित आज्ञप्ति को पढ़कर सुनाया। हॉल में सन्नाटा छा गया।

संविधान सभा का अधिवेशन होने तक, किसानों और मजदूरों की एक अस्थायी सरकार स्थापित की जाती है, जिसे जन-कमिसार परिषद्[5] का नाम दिया जायेगा।

राजकीय क्रियाकलाप के विभिन्न क्षेत्रों का प्रशासन आयोगों के सुपुर्द किया जायेगा, जिन्हें इस प्रकार गठित किया जायेगा कि श्रमिक

स्त्री-पुरुषों के, मल्लाहों, सिपाहियों, किसानों तथा दफ्तर-कर्मचारियों
जन-संगठनों के साथ घनिष्ठ रूप से मिलकर कांग्रेस द्वारा घोषित कार्य
को क्रियान्वित करना सुनिश्चित हो सके। शासन-सत्ता इन आयोगों
अध्यक्षों के एक मंडल में अर्थात् जन-कमिसार परिषद् में निहित
जाती है।

मजदूरों, किसानों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों
अखिल रूसी कांग्रेस तथा उसकी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति जन-कमि
के क्रियाकलाप का नियन्त्रण करेगी और उन्हें उन्हें बदल देने का
अधिकार प्राप्त होगा।

खामोशी अभी भी बरकरार थी, लेकिन जब वह कमिसारों
सूची पढ़ने लगे, हर नाम पर, विशेषतः लेनिन और त्रोत्स्की के न
पर बड़े जोर की तालियां बजीं।

परिषद् के अध्यक्ष. व्लादीमिर उल्यानोव (लेनिन);
गृह मंत्री: अ० इ० रीकोव;
कृषि मंत्री: व्ला० पा० मिल्यूतिन;
श्रम मंत्री: अ० ग० श्ल्याप्निकोव;
सैनिक तथा नौसैनिक मामले: व्ला० अ० ओव्सेयेंको (अन्तोनोव
नि० व० क्रिलेंको तथा पा० ये० दिबेंको की एक समिति;
वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री: वी० पा० नोगीन;
सार्वजनिक शिक्षा मंत्री: अ० व० लुनाचार्स्की;
वित्त मंत्री: इ० इ० स्क्वोर्त्सोव (स्तेपानोव);
परराष्ट्र मंत्री: ले० द० ब्रोन्स्तीन (त्रोत्स्की);
न्याय मंत्री: ग० इ० ओप्पोकोव (लोमोव)
रसद मंत्री: इ० अ० तेओदोरोविच;
डाक तार मंत्री: न० प० आवीलोव (
जातियों के लिए सभापति: जो० वि०
रेल मंत्री: बाद में नियुक्त होगी।

सभा-भवन में दीवारो के पास सगीनें खडी थी, प्रतिनिधियो के बीच में भी संगीनें चमक रही थी। सैनिक क्रान्तिकारी समिति सभी को हथियारों से लैस कर रही थी—बोल्शेविज्म केरेन्स्की से, जिसकी रणदुन्दुभि की आवाज़ दखनैया-पछुआ हवा के साथ आ रही थी, निर्णायक युद्ध करने के लिए शस्त्र धारण कर रहा था... इस बीच कोई घर नही गया, उल्टे सैकड़ों नवागन्तुक भीतर घुस आये और फलस्वरूप वह विशाल कक्ष सिपाहियो और मजदूरों से ठसाठस भर गया; उनके चेहरों पर काठिन्य था और वे घंटों वहां खडे रहे—अनथक और एकाग्र। हवा मे सिगरेट का धुआ भरा था, उसमे लोगो की सांसो की घुटन थी, मैले-कुचैले कपड़ों और पसीने की गन्ध थी।

'नोवाया जीज्न' पत्र मे काम करने वाले आवीलोव सामाजिक-जनवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावादियो और बचे-खुचे मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों की ओर से बोल रहे थे। भड़कीला लबा कोट पहने आवीलोव, जिनके चेहरे से तरुणाई और बुद्धिमत्ता झलकती थी, वहा कुछ अजनबी से दिखाई दे रहे थे।

"हमे अपने आप से पूछना होगा कि हम किधर जा रहे है... संयुक्त सरकार जितनी आसानी से उलट दी गयी, उसका कारण जनवाद के वामपक्ष की शक्ति नही है, उसका कारण केवल यह है कि सरकार जनता को शांति तथा रोटी देने मे समर्थ सिद्ध नही हुई। और वामपक्ष भी तभी सत्तारूढ बना रह सकता है, जब वह इन प्रश्नों को हल कर ले...

"क्या वह जनता को रोटी दे सकता है? अनाज की तंगी है। किसानों का बहुमत आपका साथ नही देगा, क्योकि आप उन्हे वे मशीनें नही दे सकते, जिनकी उन्हे ज़रूरत है। ईंधन तथा दूसरी जरूरियात को मुहैया करना लगभग असंभव हो गया है...

"जहां तक शांति का प्रश्न है, यह और भी टेढ़ी खीर होगी। मित्र-राष्ट्रो ने स्कोबेलेव से बात करने से इनकार कर दिया। वे आपके हाथो शांति-सम्मेलन का प्रस्ताव कभी भी स्वीकार करने वाले नही है। आपको न लंदन और पेरिस मे मान्यता दी जायेगी, न बर्लिन मे...

स्त्री-पुरुषों के, मल्लाहों, सिपाहियों, किसानों तथा दफ्तर-कर्मचारियों के जन-संगठनों के साथ घनिष्ठ रूप से मिलकर कांग्रेस द्वारा घोषित कार्यक्रम को क्रियान्वित करना सुनिश्चित हो सके। शासन-सत्ता इन आयोगों के अध्यक्षों के एक मंडल में अर्थात् जन-कमिसार परिषद् में निविष्ट की जाती है।

मजदूरों, किसानों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस तथा उसकी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति जन-कमिसारों के क्रियाकलाप का नियन्त्रण करेंगी और उन्हें उन्हें बदल देने का भी अधिकार प्राप्त होगा।

खामोशी अभी भी बरकरार थी, लेकिन जब वह कमिसारों की सूची पढ़ने लगे, हर नाम पर, विशेषतः लेनिन और त्रोत्स्की के नामों पर बड़े जोर की तालियां बजीं।

परिषद् के अध्यक्ष : ब्लादीमिर उल्यानोव (लेनिन);

गृह मंत्री : अ० इ० रीकोव;

कृषि मंत्री : ब्ला० पा० मिल्यूतिन;

श्रम मंत्री : अ० ग० श्ल्याप्निकोव;

सैनिक तथा नौसैनिक मामले : ब्ला० अ० ओव्सेयेंको (अन्तोनोव), नि० व० क्रिलेंको तथा पा० ये० दिबेंको की एक समिति;

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री : वी० पा० नोगीन;

सार्वजनिक शिक्षा मंत्री : अ० व० लुनाचार्स्की;

वित्त मंत्री : इ० इ० स्क्वोर्त्सोव (स्तेपानोव);

परराष्ट्र मंत्री : ले० द० ब्रोन्सतीन (त्रोत्स्की);

न्याय मंत्री : ग० इ० ओप्पोकोव (लोमोव);

खाद्य मंत्री : इ० अ० तेओदोरोविच;

डाक-तार मंत्री : न० प० आवीलोव (ग्लेबोव);

जातियों के लिए सभापति : जो० वि० द्जुगाश्वीली (स्तालिन);

रेल मंत्री : बाद में नियुक्ति होगी।

जनवादी दलों की रजामंदी से ऐसी सरकार गठित करने के लिये एक कार्यकारिणी समिति नियुक्त करती है।

उपस्थित जनता के क्रांतिकारी विजयोल्लास के बावजूद आवीलोव की शांत, धैर्यपूर्ण तर्कना ने उसे हिला दिया था। उनका भाषण ख़त्म होते होते आवाजें और सीटियां बन्द हो गयी और कुछ लोगों ने तो तालियां भी बजायी।

आवीलोव के बाद वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से, मारीया स्पिरिदोनोवा की पार्टी की ओर से, क्रांतिकारी किसानों का प्रतिनिधित्व* करनेवाली उस पार्टी की ओर से, जो बोल्शेविकों का अनुसरण करने वाली प्रायः अकेली ही पार्टी थी, करेलिन बोलने के लिये खड़े हुए, तरुण, निर्भय और साहसी करेलिन, जिनकी सच्चाई और ईमानदारी में किसी को भी सन्देह न हो सकता था।

"हमारी पार्टी ने जन-कमिसार परिषद् में शामिल होने से इनकार कर दिया है, क्योंकि हम क्रांतिकारी सेना के उस भाग से, जिसने कांग्रेस का परित्याग किया है, अपने को सदा के लिये अलग कर लेना नही चाहते। यह अलगाव हमारे लिये बोल्शेविकों तथा दूसरे जनवादी दलो के बीच मध्यस्थता करना असंभव बना देगा... और यह मध्यस्थता ही इस समय हमारा प्रधान कर्तव्य है। हम संयुक्त समाजवादी सरकार के सिवाय और किसी सरकार का समर्थन नही कर सकते...

"इसके अलावा हम बोल्शेविकों के अत्याचारपूर्ण व्यवहार के प्रति अपना प्रतिवाद प्रगट करते हैं। हमारे कमिसारों को उनके पदों से बलपूर्वक हटा दिया गया है। कल ही हमारे एकमात्र मुखपत्र 'ज्नाम्या त्रुदा' (श्रम-पताका) के प्रकाशन पर रोक लगा दी गयी...

"नगर दूमा आपका मुकाबला करने के लिये एक शक्तिशाली देश तथा क्रांति की उद्धार समिति स्थापित कर रही है। आप अभी से विलग

---

* क्रांतिकारी किसानों का केवल एक भाग ही वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारियों का अनुगमन करता था। —सं०

"आप मित्र-राष्ट्रों के सर्वहारा वर्ग की कारगर मदद का भरोसा नही कर सकते, क्योंकि अधिकाश देशों में वह क्रांतिकारी संघर्ष से अभी भी बहुत दूर है। याद रखिये, मित्र-राष्ट्रों का जनवाद स्टाकहोम सम्मेलन बुलाने तक में असमर्थ रहा है। जहां तक जर्मन सामाजिक-जनवादियो का सवाल है, मैंने अभी स्टाकहोम सम्मेलन मे हमारे एक प्रतिनिधि कामरेड गोल्देनवेर्ग से बात की है। उन्हें घोर वामपंथियों के एक प्रतिनिधि ने बताया कि जर्मनी मे युद्धकाल में क्रांति असंभव है..." लोगों ने तावडतोड आवाजें देना और शोर मचाना शुरू किया, लेकिन उसकी परवाह न कर आवीलोव ने अपना भाषण जारी रखा।

"रूस का विलगाव अनिवार्य है चाहे रूसी सेना जर्मनों द्वारा पराजित होगी या रूस को बलि चढ़ा कर आस्ट्रियाई-जर्मन संश्रय और फ़ासीसी-ब्रिटिश संश्रय के बीच किसी प्रकार तोड़-जोड़ कर शाति स्थापित होगी, या फिर जर्मनी के साथ पृथक् शाति-संधि सम्पन्न होगी।

"मुझे अभी अभी मालूम हुआ है कि मित्र-राष्ट्रों के राजदूत यहां से जाने की तैयारी कर रहे हैं और यह कि रूस के सभी नगरों मे देश तथा क्राति की उद्धार समितियां स्थापित की जा रही हैं...

"अकेली कोई भी पार्टी इन भीषण कठिनाइयो से पार नही पा सकती। समाजवादी संयुक्त सरकार का समर्थन करनेवाला जनता का बहुमत ही क्राति को सम्पन्न कर सकता है..."

इसके बाद आवीलोव ने दोनों दलो के प्रस्ताव को पढ़ा:

यह मानते हुए कि क्राति की उपलब्धियो को सुरक्षित रखने के लिये मजदूरों, सैनिको तथा किसानो के प्रतिनिधियों की सोवियतों मे संगठित क्रातिकारी जनवाद पर आधारित एक सरकार का अविलम्ब गठन अपरिहार्य है, और यह भी मानते हुए कि यथाशीघ्र शाति स्थापित करना, भूमि समितियों के हाथों में भूमि अन्तरित करना, औद्योगिक उत्पादन का नियन्त्रण संगठित करना तथा निश्चित तिथि पर संविधान सभा को बुलाना इस सरकार के कार्यभार होंगे, कांग्रेस उसमें भाग लेनेवाले

सदस्यों की गिरफ़्तारी का आदेश दिया, हमने किसानो को चुना! हमारी क्रांति इतिहास की क्लासिकल क्रांति मानी जायेगी...

"वे हमारे ऊपर इलज़ाम लगाते हैं कि हमने दूसरी जनवादी पार्टियो के साथ समझौता नहीं होने दिया है। लेकिन क्या इसके लिये हम दोषी हैं? या क्या, जैसा करेलिन ने कहा, दोष इस बात का है कि कोई "गलतफ़हमी" हो गई? नही, साथियो, जब क्रांति की पूरी ज्वार में एक पार्टी, जिसके चारों ओर बारूद का धुआं अभी भी चक्कर काट रहा है, आती है और कहती है, 'यह है सत्ता, इसे अपने हाथ में लीजिये!' और जिन लोगो को यह सत्ता अर्पित की जाती है वे शत्रु की ओर चले जाते हैं, तो यह गलतफ़हमी की बात नही है... यह निर्मम युद्ध की घोषणा है। इस युद्ध की घोषणा हम लोगो ने नहीं की है...

"अगर हम 'अलग' रहे, तो आवीलोव शांति के हमारे प्रयासो के विफल हो जाने का ख़तरा हमे दिखाते हैं। मैं फिर कहता हूं, मेरी समझ में यह बात नही आती कि स्कोबेलेव के साथ, यहा तक कि तेरेश्चेंको के साथ संश्रय स्थापित करने से हमें शांति प्राप्त करने मे सहूलियत कैसे हो सकती है! आवीलोव रूस को बलि पर चढ़ा कर शांति स्थापित करने का हौवा हमें दिखाते हैं। इसके जवाब में मेरा कहना यह है कि अगर यूरोप पर साम्राज्यवादी पूंजीपति वर्ग का शासन बना रहा, तो किसी भी सूरत में क्रांतिकारी रूस का विनाश निश्चित है...

"हमारे सामने दो ही विकल्प हैं! या तो रूसी क्रांति यूरोप में भी क्रांतिकारी आन्दोलन को जन्म देगी, या यूरोपीय शक्तियां रूसी क्रांति का काम तमाम कर देंगी!"

लोगो ने जिहादी जोश के साथ बड़े जोरो से तालियां पीटकर उनके भाषण का स्वागत किया; वे इस भावना से दीप्त थे कि उन्होंने ऐसा करने का साहस किया था और मानवजाति के हितों की रक्षा करने का बीड़ा उठाया था। और उसी घड़ी से विद्रोही जन-साधारण के समस्त क्रिया-कलाप में एक ऐसा दृढ निश्चयपूर्ण तथा सचेत भाव आ गया, जो फिर कभी लुप्त नही हुआ।

परन्तु दूसरी ओर भी ख़म ठोंककर लड़ने की तैयारी हो रही थी। कामेनेव ने रेल मजदूर यूनियन के एक प्रतिनिधि को बोलने की इजाज़त

हो गये हैं और आपकी सरकार को किसी भी दूसरे जनवादी दल का समर्थन प्राप्त नही है. ."

इसके बाद त्रोत्स्की आत्मविश्वास तथा अधिकार के भाव से बोलने के लिये खड़े हुए। उनके मुंह पर व्यंग्य का भाव, प्रायः विद्रूप की हंसी खेल रही थी। उन्होंने पुरजोर आवाज में भाषण किया और भीड़ प्रत्यक्षतः उनकी ओर खिंची।

"हमारी पार्टी के अलग हो जाने के ख़तरे के बारे मे ये ख़्यालात कोई नये नही है। विद्रोह के ठीक पहले हमारी घातक पराजय की भविष्यवाणी की गयी थी। उस समय सभी हमारे ख़िलाफ थे; सैनिक क्रातिकारी समिति मे वामपथी समाजवादी-क्रातिकारियों का एक दल ही हमारे साथ था। तब यह कैसे हुआ कि हम प्रायः रक्तपात के बिना ही सरकार का तख़्ता उलट सके? .. यह एक ऐसी सचाई है, जो इस बात को निहायत पुरअसर तरीके से साबित कर देती है कि हम जनता से विलग नहीं हुए थे। वास्तव में बिलगाव अस्थायी सरकार का हुआ था; बिलगाव उन जनवादी पार्टियों का हुआ था और अभी भी है, जो हमारे खिलाफ मुहिम चला रही हैं, वे ही सर्वहारा वर्ग से सदा के लिये कट गयी है!

"वे संश्रय की आवश्यकता की बात करते हैं। संश्रय एक ही प्रकार का हो सकता है – मजदूरों, सिपाहियों और गरीब किसानों का संश्रय और हमारी पार्टी को ही ऐसा संश्रय सम्पन्न करने का गौरव प्राप्त हुआ है... आवीलोव ने जब संश्रय की बात की, तो उनका अभिप्राय किस प्रकार के संश्रय से था? क्या उन लोगो के साथ सश्रय, जिन्होंने जनता मे गद्दारी करने वाली सरकार का समर्थन किया था? संश्रय से सदा शक्ति नही प्राप्त होती। उदाहरण के लिये अगर दान और अव्क्सेन्त्येव हमारी पातों मे होते, तो क्या हम विद्रोह का सगठन कर सकते थे?"
हसी के ठहाके।

"अव्क्सेन्त्येव ने जनता को रोटी नही दी। क्या ओबोरोन्त्सों (प्रतिरक्षावादियों) के साथ सश्रय स्थापित करने से ज्यादा रोटी मिलती? किसानो और अव्क्सेन्त्येव के बीच, जिन्होंने भूमि समितियों के

सदस्यों की गिरफ़्तारी का आदेश दिया, हमने किसानों को चुना! हमारी क्रांति इतिहास की क्लासिकल क्रांति मानी जायेगी...

"वे हमारे ऊपर इलजाम लगाते हैं कि हमने दूसरी जनवादी पार्टियों के साथ समझौता नहीं होने दिया है। लेकिन क्या इसके लिये हम दोषी हैं? या क्या, जैसा करेलिन ने कहा, दोष इस बात का है कि कोई "गलतफ़हमी" हो गई? नहीं, साथियो, जब क्रांति की पूरी ज्वार में एक पार्टी, जिसके चारों ओर बारूद का धुआं अभी भी चक्कर काट रहा है, आती है और कहती है, 'यह है सत्ता, इसे अपने हाथ में लीजिये!' और जिन लोगों को यह सत्ता अर्पित की जाती है वे शत्रु की ओर चले जाते हैं, तो यह गलतफ़हमी की बात नहीं है... यह निर्मम युद्ध की घोषणा है। इस युद्ध की घोषणा हम लोगों ने नहीं की है...

"अगर हम 'अलग' रहे, तो आवीलोव शांति के हमारे प्रयासों के विफल हो जाने का ख़तरा हमें दिखाते हैं। मैं फिर कहता हूं, मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि स्कोबेलेव के साथ, यहां तक कि तेरेश्चेंको के साथ संश्रय स्थापित करने से हमें शांति प्राप्त करने में सहूलियत कैसे हो सकती है! आवीलोव रूस को बलि पर चढ़ा कर शांति स्थापित करने का हौवा हमें दिखाते हैं। इसके जवाब में मेरा कहना यह है कि अगर यूरोप पर साम्राज्यवादी पूंजीपति वर्ग का शासन बना रहा, तो किसी भी सूरत में क्रांतिकारी रूस का विनाश निश्चित है...

"हमारे सामने दो ही विकल्प हैं! या तो रूसी क्रांति यूरोप में भी क्रांतिकारी आन्दोलन को जन्म देगी, या यूरोपीय शक्तियां रूसी क्रांति का काम तमाम कर देंगी!"

लोगों ने जिहादी जोश के साथ बड़े ज़ोरों से तालियां पीटकर उनके भाषण का स्वागत किया; वे इस भावना से दीप्त थे कि उन्होंने ऐसा करने का साहस किया था और मानवजाति के हितों की रक्षा करने का बीड़ा उठाया था। और उसी घड़ी से विद्रोही जन-साधारण के समस्त क्रिया-कलाप में एक ऐसा दृढ़ निश्चयपूर्ण तथा सचेत भाव आ गया, जो फिर कभी लुप्त नहीं हुआ।

परन्तु दूसरी ओर भी खम ठोंककर लड़ने की तैयारी हो रही थी। कामेनेव ने रेल मजदूर यूनियन के एक प्रतिनिधि को बोलने की इजाज़त

दी, कट्टर शत्रुता का भाव लिये सख्त चेहरे का एक ठिंगना सा आदमी, जिसने सभा पर मानो एक बम फेंक कर उसे चौंका दिया :

"रूस के सबसे प्रबल संगठन के नाम पर मैं मांग करता हूं कि मुझे बोलने का हक दिया जाये और मैं आपसे कहता हूं : **विक्जेल*** ने मुझे यह जिम्मेदारी दी है कि मैं सत्ता के संघटन के बारे में यूनियन के निर्णय को आप पर प्रगट करूं। अगर बोल्शेविक लोग रूस के सभी जनवादी अशकों से अपने को विलग कर लेने पर अड़े रहते हैं, तो हमारी केन्द्रीय समिति उनका समर्थन करने से बिल्कुल इनकार करती है!" पूरे सभा-भवन में बेहद खलबली मच गयी।

"१६०५ में और कोर्नीलोव-कांड के दिनों में रेल मजदूर क्रांति के सर्वश्रेष्ठ रक्षकों में थे। परंतु आपने हमें अपनी कांग्रेस में आमंत्रित नही किया..." आवाजें : "हमने नही, पुरानी त्से-ई-काह ने नही किया!" इन आवाजों पर कान न देकर भाषणकर्ता ने आगे कहा, "हम इस कांग्रेस को वैध नही मानते। मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों के निकल जाने के बाद से यहा पर नियमानुसार कोरम नही रह गया है... यूनियन पुरानी त्से-ई-काह का समर्थन करती है और घोषणा करती है कि कांग्रेस को नयी समिति चुनने का कोई अधिकार नही है...

"राज्य-सत्ता समस्त क्रांतिकारी जनवाद के अधिकृत निकायों के प्रति उत्तरदायी समाजवादी तथा क्रांतिकारी सत्ता होनी चाहिये। जब तक ऐसी सत्ता का संघटन न हो, रेल मजदूर यूनियन प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं को पेत्रोग्राद पहुंचाने से इनकार करती है और साथ ही **विक्जेल** की रजामंदी के बगैर किसी भी हुक्म की तामील की मनाही करती है। **विक्जेल** रूस के समस्त रेल-प्रशासन को अपने हाथों में लेती है।"

अंत में लोग इस तरह उसके ऊपर बरस पड़े और गालियों की बौछार करने लगे कि उसको सुनना मुश्किल हो गया। लेकिन थी यह एक करारी चोट—सभापतिमंडल के सदस्यों के चेहरे पर चिंता का जो

---

* **विक्जेल**—अखिल रूसी रेल मजदूर यूनियन की कार्यकारिणी समिति। —सं०

'अव्रोरा' क्रूज़र, १६१८
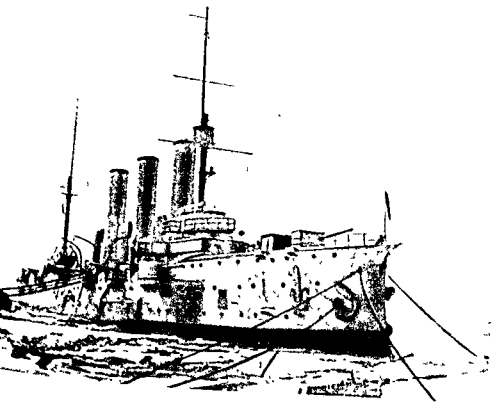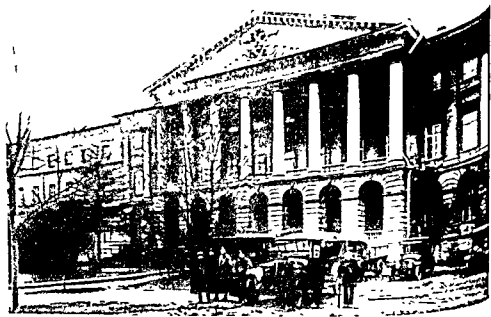
क्रांति का केन्द्र—स्मोल्नी भवन

भाव प्रगट हुआ, उससे यह स्पष्ट था। लेकिन कामेनेव ने जवाब में बस इतना ही कहा कि कांग्रेस के वैध होने के बारे मे कोई सदेह नही हो सकता, क्योंकि मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियो के अलग हो जाने के बावजूद भी पुरानी त्से-ई-काह द्वारा निर्धारित कोरम से भी ज्यादा लोग मौजूद है...

इसके बाद सरकार के बारे मे मतदान हुआ और जन-कमिसार परिषद् विशाल बहुमत से सत्तारूढ़ हुई...

नयी त्से-ई-काह के, रूसी जनतन्त्र की नयी ससद के चुनाव मे कुल पन्द्रह मिनट लगे। त्रोत्स्की ने उसकी सदस्यता घोषित की: कुल एक सौ सदस्य, जिनमे सत्तर बोल्शेविक थे... जहा तक किसानों और बहिर्गामी दलों का प्रश्न था, नये निकाय मे उनके लिये स्थान सुरक्षित रखा गया। "हम मन्त्रिमंडल मे उन सभी पार्टियों और दलों का स्वागत करते है, जो हमारे कार्यक्रम को अपनाने के लिये तैयार है," त्रोत्स्की ने अंत में कहा।

इसके बाद सोवियतो की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस समाप्त कर दी गई, ताकि उसके प्रतिनिधि रूस के कोने कोने मे अपने घरों मे जल्दी से पहुंच सके और जनता को इन महान् घटनाओ के बारे मे बता सके...

जब हम बाहर निकले और हमने उन ट्राम-गाड़ियों के कंडक्टरों और ड्राइवरो को जगाया, जो ट्राम-मजदूर यूनियन के निर्देश पर सोवियत सदस्यों को अपने घर पहुंचाने के लिये स्मोल्नी भवन के बाहर बराबर इंतजार करती रहती थी, करीब सात बजे थे। मैंने सोचा, ठसाठस भरी ट्राम-गाडी में वह उल्लास नही है, जो पिछली रात दिखायी पड़ा था। बहुतेरे चेहरों पर चिंता की छाया थी; वे शायद अपने आप से कह रहे थे, "अब मालिक हम है, हम अपनी मर्जी को कैसे चलायेंगे?"

जब हम अपने घर पहुंचे, हमें अंधेरे मे नागरिकों के एक हथियारबंद दस्ते ने टोका और हमारी अच्छी तरह तलाशी ली। दूमा की घोषणा का असर होने लगा था...

मकानदारनी को हमारे अन्दर आने की आहट लगी और वह गुलाबी रेशमी चादर ओढे लड़खड़ाती हुई बाहर आयी।

"आवास-समिति ने फिर कहा है कि बाकी लोगों के साथ आप भी अपनी बारी से पहरे की ड्यूटी दें," उसने कहा।

"क्यों, क्या बात है? पहरे की ड्यूटी क्यों लगायी गयी है?"

"मकान की औरतों और बच्चो की हिफाज़त करने के लिए।"

"लेकिन किससे?"

"चोरों और हत्यारों से।"

"लेकिन, मान लीजिये, सैनिक क्रांतिकारी समिति का कोई कमिसार हथियारों के लिये तलाशी लेने आये, तो?"

"ओह, वे तो यह कहेंगे ही कि वे कमिसार हैं... और फिर बात एक ही है, उनमें फ़र्क़ ही क्या है?"

मैंने निहायत संजीदगी के साथ कहा कि अमरीकी दूतावास ने अमरीकी नागरिकों को हथियार लेकर चलने से मना कर दिया है, खासतर ऐसी जगहों मे जहा रूसी बुद्धिजीवी लोग रहते हों...

छठा अध्याय

उद्धार समिति

शुक्रवार, ९ नवंबर...

नोवोचेर्कास्क, ८ नवंबर

बोल्शेविकों के विद्रोह को तथा अस्थायी सरकार को उलट देने और पेत्रोग्राद में सत्ता हथियाने की उनकी कोशिशों को देखती हुई... कज़्जाक सरकार घोषणा करती है कि उसकी दृष्टि में ये हरकतें मुजरिमाना हैं और बिल्कुल ही अस्वीकार्य हैं। फलस्वरूप कज़्जाक लोग अस्थायी सरकार का, जो एक संयुक्त सरकार है, पूरी तरह समर्थन करेंगे। इन परिस्थितियों के कारण, जब तक अस्थायी सरकार पुनः सत्तारूढ़ नहीं होती और रूस में सुव्यवस्था पुन.स्थापित नहीं होती, मैं ७ नवंबर की तारीख से, जहां तक दोन-प्रदेश का संबंध है, समस्त सत्ता अपने हाथ में लेता हूं।

हस्ताक्षर – आतामान कलेदिन
कज़्जाक सेनाओं की
सरकार के अध्यक्ष

गातचिना में जारी किया गया मंत्रि-सभापति केरेन्स्की का प्रिकाज़ (आदेश):

मैं, अस्थायी सरकार का मन्त्रि-सभापति तथा रूसी जनतंत्र की समस्त सेनाओं का मुख्य सेनापति, घोषणा करता हूं कि मोर्चे की जो रेजीमेंटें पितृभूमि के प्रति वफादार रही हैं, उन सब की कमान मेरे हाथ में है।

मैं पेत्रोग्राद के सैनिक हलके के उन सभी सैनिकों को, जिन्होंने गलती से या बेवकूफी से देश के साथ और क्रांति के साथ गद्दारी करने वालों की अपील पर कान दिया है, हुक्म करता हूं कि वे अविलंब अपनी ड्यूटी पर वापस चले जायें।

यह आदेश सभी रेजीमेंटों, बटालियनों और स्क्वाड्रनों में पढ़ा जायेगा।

हस्ताक्षर – अस्थायी सरकार के मंत्रि सभापति तथा मुख्य सेनापति
अ० फ० केरेन्स्की

उत्तरी मोर्चे की कमान जिस जनरल के हाथ में थी, उसके नाम केरेन्स्की का तार:

वफादार रेजीमेंटों ने बिना खून बहाये ही गातचिना पर कब्ज़ा कर लिया है। क्रोंश्तादत के मल्लाहों के तथा सेम्योनोव्स्की और इज़माइलोव्स्की रेजीमेंटों के दस्तों ने बगैर मुकाबला किये हथियार डाल दिये और सरकारी सेना के साथ मिल गये।

मैं सभी नामांकित टुकड़ियों को आदेश देता हूं कि वे जितनी तेज़ी से हो सके आगे बढ़ें। सैनिक क्रांतिकारी समिति ने अपने सैनिकों को पीछे हटने का हुक्म दिया है ...

पेत्रोग्राद से करीब तीस किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित गातचिना का नगर पिछली रात हाथ से निकल गया था। केरेन्स्की के तार में जिन दो रेजीमेंटों का ज़िक्र था, जब उनके नेतृत्वहीन दस्ते – मगर मल्लाहों के दस्ते नहीं – गातचिना के पास भटक रहे थे, कज़्ज़ाकों ने उन्हें सचमुच घेर लिया था और उनसे हथियार रखवा लिये थे। लेकिन यह बात सच नहीं थी कि वे सरकारी सेना से मिल गये थे। जिस घड़ी यह तार भेजा जा रहा था, उसी घड़ी, ये सिपाही – हैरान, परेशान

ग्रौर शर्मिंदा — झुंड के झुंड स्मोल्नी पहुंचे हुए थे ग्रौर सफ़ाई देने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें बिल्कुल यह ख़्याल नही था कि कज्जाक इतने नज़दीक हैं... उन्होंने कज्जाकों को समझाने की कोशिश भी की थी...

ऐसा लगता था कि क्रांतिकारी मोर्चे पर सिपाही बेहद उलझन मे पड़े हुए हैं। दक्षिण की ग्रोर जो छोटे छोटे शहर थे, उन सभी की गैरिसनों में बुरी तरह फूट पड़ गयी थी ग्रौर वे दो गुटों में — या तीन में — बंट गयी थी। चोटी के ग्रफसर यह सोच कर केरेन्स्की की ग्रोर थे कि जब तक कोई ग्रौर मजबूत ग्रादमी नज़र नही ग्राता, चलो, केरेन्स्की ही सही। साधारण सिपाहियों का बहुमत सोवियतो के साथ था ग्रौर बाक़ी लोग दुर्भाग्यवश डावाडोल थे।

ऐसी स्थिति में सैनिक क्रांतिकारी समिति ने हडवडी मे नियमित सेना के एक महत्वाकांक्षी कप्तान मुराव्योव* को पेत्रोग्राद की रक्षा के लिए नियुक्त किया ग्रौर पेत्रोग्राद की कमान उनके हाथ मे सौंप दी। यह वही मुराव्योव थे, जिन्होंने गर्मियों में 'शहीदी टुकडियों' का सगठन किया था ग्रौर जिन्होने सरकार को यह सलाह दी थी कि "वह बोल्शेविकों के प्रति बहुत ही नरम है। उनका बिल्कुल ही सफाया कर देना चाहिये।" मुराव्योव फौजी साचे मे ढले हुए ग्रादमी थे, जो शक्ति ग्रौर साहस की सराहना करते थे ग्रौर शायद ईमानदारी के साथ करते थे...

जब सुबह मैं घर से निकला, मैंने देखा मेरे दरवाजे के पास ही सैनिक क्रांतिकारी समिति के दो नये ग्रादेश-पत्र चिपकाये गये हैं, जिनमें यह निर्देश दिया गया था कि सभी दूकाने हस्ब मामूल खुलें ग्रौर सभी खाली कमरे ग्रौर फ़्लैट समिति के उपयोग के लिए सुलभ बनाये जाये...

छत्तीस घंटों से बोल्शेविकों का न तो रूस के प्रांतों से सपर्क रह गया था, न बाहरी दुनिया से। रेल तथा तार कर्मचारी उनकी सूचनाग्रों ग्रौर सदेशों को भेजने से इनकार कर रहे थे। डाकिये उनकी डाक को हाथ लगाने से इनकार कर रहे थे। बस त्सारस्कोये सेलो में सरकारी रेडियो काम कर रहा था ग्रौर ग्राध-ग्राध घंटे पर ग्राकाश मे चारों

*वास्तव मे मुराव्योव लफ़्टीनेंट-कर्नल थे। — सं०

दिशाओं में समाचार-बुलेटिनें तथा घोषणायें प्रसारित कर रहा था। स्मोल्नी के कमिसार नगर दूमा के कमिसारों से रेस लगाए हुए भागती हुई रेल-गाडियों पर पृथ्वी की आधी दूरी नापते। प्रचार-सामग्री से लदे दो हवाई जहाज़ मोर्चे की ओर उडे...

लेकिन विद्रोह की लहर रूस के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक जिस तेजी से फैल रही थी, वह किसी भी मानवीय संचार-साधन के लिए संभव न थी। हेल्सिंगफोर्स की सोवियत ने समर्थन के प्रस्ताव पास किये। कीयेव के बोल्शेविकों ने शस्त्रागार और तारघर पर कब्जा कर लिया, लेकिन थोडी ही देर के लिये। वहां जो कज़्ज़ाक-कांग्रेस हो रही थी, उसके प्रतिनिधियों ने उन्हें खदेड़ दिया। कज़ान में स्थापित सैनिक क्रांतिकारी समिति ने स्थानीय गैरिसन के स्टाफ तथा अस्थायी सरकार के कमिसार को गिरफ़्तार कर लिया। साइबेरिया के सुदूर क्रास्नोयार्स्क से खबर आयी कि नगरपालिका का प्रशासन सोवियतों के हाथ में आ गया है। मास्को में, जहां एक ओर चर्मकारों की ज़बर्दस्त हड़ताल से और दूसरी ओर आम तालाबंदी की धमकी से परिस्थिति अधिक गंभीर हो गयी थी, सोवियतों ने विशाल बहुमत से पेत्रोग्राद में बोल्शेविकों की कार्रवाई का समर्थन करने का निश्चय किया... वहां अभी से एक सैनिक क्रांतिकारी समिति काम करने लगी थी।

हर जगह वही बात हो रही थी। मामूली सिपाहियों और औद्योगिक मज़दूरों ने विशाल बहुमत से सोवियतों का समर्थन किया। अफसर, युंकर और निम्न-पूंजीपति सामान्यतः सरकार की ओर थे और उन्हीं की तरह पूंजीवादी कैडेट तथा "नरम" समाजवादी पार्टियां भी सरकार की तरफ़दार थीं। सभी शहरों में देश तथा क्रांति की उद्धार समितियां बन रही थीं और गृहयुद्ध के लिए हथियारों से लैस हो रही थीं...

विशाल रूस विघटित और चूर-चूर हो रहा था। यह प्रक्रिया १९०५ में ही शुरू हुई थी; मार्च की क्रांति ने उसे गति दी थी और यह नयी व्यवस्था का एक प्रकार से पूर्वाभास देकर पुरानी व्यवस्था के खोखले ढांचे को ही बस कायम रखकर समाप्त हो गयी थी। लेकिन अब बोल्शेविकों ने एक रात में ही उसे फूंक कर उड़ा दिया था, जैसे कोई

धुएं को उड़ा दे। पुराना क्रम विलुप्त हो गया था। आदिम उत्ताप मे मानव-समाज पिघल गया था और प्रचड वड़वानल से वर्ग-संघर्ष की, कठोर, निर्मम वर्ग-सघर्ष की लपटे उठ रही थी – और नये पिंडों का जन्म हो रहा था, जिनकी नर्म परत धीरे धीरे ठडी हो कर बैठ रही थी...

पेत्रोग्राद मे सोलह मंत्रालय हड़ताल पर थे, जिनके अगुआ श्रम तथा खाद्य मंत्रालय थे। ये ही दो मंत्रालय ऐसे थे, जिन्हे अगस्त की पूर्ण समाजवादी* सरकार ने स्थापित किया था।

अगर इनसान ने कभी भी अपने को अकेला पाया है, तो जाहिरा उस उदास और ठिठुरती हुई सुवह को "मुट्ठी भर बोल्शेविक" प्रत्यक्षत अकेले थे और उनके चारों ओर आंधिया वह रही थी।[1] जान पर नौवत आयी हुई देखकर सैनिक क्रातिकारी समिति ने प्राणरक्षा की खातिर दुश्मन पर चोट की। «De l'audace, encore de l'audace, et toujours de l'audace...»** तड़के पाच वजे लाल गार्ड नगर-प्रशासन के छापेखाने मे घुस गये, उन्होंने दूमा की अपील व प्रतिवाद की हजारो प्रतियों को जब्त कर लिया और नगरपालिका के आधिकारिक मुखपत्र, 'वेस्तनिक गोरोद्स्कोवो सामोउप्राव्लेनिया' (नगरपालिका स्वशासन बुलेटिन) को बंद कर दिया। सभी पूजीवादी अखबारों को, यहा तक कि पुरानी त्सी-ई-काह के अखबार 'गोलोस सोल्दाता' को भी छपते छपते मशीन से उतार लिया गया। 'गोलोस सोल्दाता' फिर भी निकला – 'सोल्दात्स्की गोलोस' के नाम से उसकी एक लाख प्रतिया छपी। क्रुद्ध गर्जन करते हुए उसने ललकारा :

जिन लोगों ने रात मे विश्वासघातपूर्ण प्रहार किया, जिन लोगों ने अखबारों को बंद किया, वे देश को बहुत दिनों तक धोखे में नही रख

---

* मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों से बनी। – सं०

** "हिम्मत से काम लो, एक बार फिर हिम्मत से काम लो, और हमेशा हिम्मत से काम लो!" दान्तों के प्रसिद्ध उद्गार। दान्तों ने ये शब्द २ सितंबर १७९२ को फ़्रांसीसी विधान-सभा में युद्ध के खतरे के और प्रशा तथा आस्ट्रिया के प्रतिक्रांतिकारी संश्रय के आक्रमण से क्रांति की रक्षा करने की आवश्यकता के बारे मे बोलते हुए कहे थे। – सं०

सकेंगे। देश जानेगा कि सचाई क्या है! वह आप को समझेगा, बोल्शेविक महानुभावो! हम देखेंगे! ..

जब हम ढलती दुपहरिया में नेव्स्की मार्ग पर जा रहे थे, दूमा-भवन के सामने का पूरा रास्ता लोगों से खचाखच भरा था। जहां-तहां संगीनें लिये लाल गार्ड और मल्लाह खड़े थे – एक एक के गिर्द एक एक सौ की भीड़ रही होगी – घूसा दिखाते, गालियां देते और धमकाते हुए क्लर्कों, विद्यार्थियों, दूकानदारों, चिनोव्निकों (सरकारी कर्मचारियों) की भीड़। सीढ़ियों पर बाल-स्वयसेवक और अफसर 'सोल्दात्स्की गोलोस' की प्रतियां बांट रहे थे। एक मजदूर, जो अपनी बांह में लाल फीता लगाये और हाथ मे तमचा लिये था, सीढ़ियों के नीचे क्रुद्ध भीड़ के बीच खड़ा गुस्से से और घबराहट से भी कांप रहा था – वह भीड़ से डपट कर कह रहा था कि अखबारो की प्रतिया उसके हवाले की जायें... मैं समझता हूं, इतिहास मे कभी भी इस किस्म की बात नही हुई होगी। एक ओर विजयी विद्रोह का प्रतिनिधित्व करने वाले मुट्ठी भर मजदूर और मामूली सिपाही – हाथों में हथियार लिए हुए और बेहद परेशानी मे पड़े हुए, और दूसरी ओर एक उत्तेजित भीड़ – जैसी भीड़ दोपहर को फिफ्थ एवेन्यू* की पटरी पर नजर आती है – मुह चिढाती, पानी पी पीकर कोसती और चीखती हुई: "गद्दारो! उकसावेबाजो! ओप्रीच्निको**!"

दूमा-भवन के दरवाजों पर विद्यार्थी और अफसर पहरा दे रहे थे। उन्होंने अपनी बांहों में सफेद पट्टियां लगा रखी थी, जिन पर लाल अक्षरों मे अंकित था: "सार्वजनिक सुरक्षा समिति की मिलिशिया"। आधा दर्जन बाल-स्वयंसेवक दौड़-भाग रहे थे। ऊपर पूरे भवन में खलबली मची हुई थी। कप्तान गोम्बेर्ग सीढ़ियों से उतर रहे थे। "वे दूमा को भंग करने जा रहे हैं," उन्होंने कहा। "बोल्शेविक कमिसार मेयर के साथ बैठा हुआ है।" जिस वक्त हम ऊपर पहुंचे, रियाजानोव तेजी से बाहर निकले। वह यह मांग करने के लिए आये थे कि दूमा जन-कमिसार परिषद को अंगीकार करे, लेकिन मेयर ने साफ इनकार कर दिया था।

---

*न्यू-यार्क की एक सड़क, जहा धनी लोग रहते है। – सं०

**जार इवान भयानक के अंग-रक्षक, १६ वीं शताब्दी। – सं०

दूमा के कार्यालयों मे कोलाहल मचा हुआ था। हाथ के इशारे करते, दौड़ते-भागते, चीखते-चिल्लाते लोगों की भीड़ – सरकारी कर्मचारी, बुद्धिजीवी, पत्रकार, विदेशी संवाददाता, फ़्रांसीसी और अंग्रेज अफ़सर... नगर-इंजीनियर ने उनकी ओर इशारा करते हुए विजयपूर्ण भाव से कहा, "दूतावास अब दूमा को ही एकमात्र सत्ता मानते हैं। ये बोल्शेविक लुटेरे और हत्यारे अब बस चंद घंटों के मेहमान हैं! सारा रूस हमारी ओर आ रहा है..."

अलेक्सान्द्र हॉल मे उद्धार समिति की एक विराट् सभा हो रही थी। फ़िलिप्पोव्स्की सदारत कर रहे थे और मंच पर फिर वही स्कोबेलेव इस बात की रिपोर्ट दे रहे थे कि कौनसे नये संगठन समिति मे शामिल हुए हैं। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने गिनाया: किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति, पुरानी त्से-ई-काह, केंद्रीय सैनिक समिति, त्सेन्त्रोफ़्लोत, सोवियतों की कांग्रेस के मेन्शेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मोर्चे के दल के प्रतिनिधि, मेन्शेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी और जन-समाजवादी पार्टियों की केंद्रीय समितियां, "येदीन्स्त्वो" दल, किसान-संघ, सहकारी समितियां, ज़ेम्सत्वो, नगरपालिकायें, डाक-तार यूनियन, विक्ज़ेल, रूसी जनतंत्र की परिषद्, यूनियनों की यूनियन*, व्यापारियों और कारख़ानेदारों का संघ...

"...सोवियत सत्ता जनवादी सत्ता नहीं है, वह अधिनायकत्व है – सर्वहारा का अधिनायकत्व नहीं, सर्वहारा के ख़िलाफ़ अधिनायकत्व। जिन लोगों ने भी क्रांतिकारी उत्साह का अनुभव किया है या अनुभव करना जानते हैं, उन्हे इस समय क्रांति की रक्षा के लिए जरूर हाथ मिलाना चाहिए...

"आज की समस्या यही नहीं है कि ग़ैरज़िम्मेदार लफ़्फ़ाज़ों और बड़बोलों को सीधा कर दिया जाये; प्रतिक्रांति से संघर्ष करना भी आज की समस्या है... अगर ये अफ़वाहें कि प्रांतों मे कुछ जनरल घटनाक्रम से लाभ उठा कर अपने अलग मंसूबे लेकर पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने की कोशिश कर रहे हैं सही है, तो यह इस बात का एक और सबूत है कि

---

* देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – जॉ० री०

हमें जनवादी सरकार के लिए एक ठोस आधार प्रस्तुत करना होगा। वरना वामपथियों के उपद्रव के बाद दक्षिणपथियों के उपद्रव शुरू हो जायेंगे...

"पेत्रोग्राद की गैरिसन इस बात के प्रति उदासीन नहीं रह सकती कि 'गोलोस सोल्दाता' को खरीदने वाले नागरिक और 'रावोचाया गजेता' को बेचने वाले लडके सडको पर गिरफ़्तार किये जा रहे है...

"प्रस्तावो की घडी बीत चुकी है... जिन लोगों को क्राति मे विश्वास नही रह गया है, वे अलग हो जाये... एक सयुक्त सत्ता को स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम क्राति को पुन:प्रतिष्ठित करे ..

"आइये, हम यह शपथ उठाये कि या तो हम क्राति की रक्षा करेगे, नही तो जान दे देगे!"

सब के सब तालिया पीटते उठ खडे हुए। उनकी आखें चमक रही थीं। लेकिन उनमे कही पर एक भी सर्वहारा नजर नही आ रहा था...

इसके बाद वाइनश्तेइन बोले:

"यह आवश्यक है कि हम शात रहे और तब तक अपना हाथ रोके रहे, जब तक कि जनमत उद्धार समिति के समर्थन मे प्रबल रूप से एकजुट न हो जाये—तब हम बचाव करना छोडकर हमला शुरू कर सकते है!"

विक्जेल-प्रतिनिधि ने घोषणा की कि उसका सगठन नयी सरकार का गठन करने मे पहल कर रहा है और अभी से उसके प्रतिनिधि इस मामले मे स्मोल्नी के साथ बातचीत कर रहे है... बोल्शेविकों को नयी सरकार में शामिल किया जाये या नही? इस सवाल को लेकर गरमागरम बहस छिड गई। मार्तोव ने उन्हे शामिल करने के लिए वकालत की। उन्होंने कहा कि कुछ भी हो, बोल्शेविक एक महत्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी का प्रतिनिधित्व करते है। इस प्रश्न पर लोगो मे बडा मतभेद था—दक्षिणपथी मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रातिकारी और साथ ही जन-समाजवादी, सहकारी समितिया तथा पूजीवादी प्रशक बोल्शेविको के शामिल किये जाने के घोर विरोधी थे...

एक वक्ता ने कहा, "उन्होंने रूस के साथ गद्दारी की है। उन्होंने

गृहयुद्ध शुरू किया है और जर्मनों के लिए मोर्चा खोल दिया है। बोल्शेविकों को सख्ती से कुचल देना होगा. . ."

स्कोबेलेव बोल्शेविकों और कैडेटों दोनों को मंत्रिमंडल से अलग रखने के पक्ष में थे।

हमारी बातचीत एक तरुण समाजवादी-क्रांतिकारी से हुई, जिसने बोल्शेविकों के साथ उस रात जनवादी सम्मेलन का परित्याग किया था, जब त्सेरेतेली और दूसरे समझौतापरस्तों ने रूस के जनवादी तत्वों पर जबर्दस्ती समझौते की नीति थोप दी थी।

"आप यहां?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

उसकी आंखों में बिजली कौंध गयी। "जी हां!" उसने तेजी से कहा। "मैंने अपनी पार्टी के साथ बुधवार की रात को कांग्रेस का परित्याग किया। मैंने बीस सालों से अपनी जान इसलिए जोखिम मे नही डाली है कि आज मैं जाहिल लोगों के अत्याचारों को सहन करूं। उनके तरीके बर्दाश्त के क़ाबिल नही हैं। लेकिन उन्होंने अपने हिसाब में किसानों का ध्यान नही रखा है... जब किसान उठेंगे, वे मिनटों में 'टें' बोल देंगे।"

"लेकिन किसान—किसान क्या सचमुच उठेंगे? क्या भूमि-संबंधी आज्ञप्ति किसानों के सवाल का निपटारा नहीं कर देती? वे इससे ज्यादा और क्या चाह सकते हैं?"

"ओह, भूमि-संबंधी आज्ञप्ति!" उसने गुस्से से कहा। "आप जानते हैं यह भूमि-संबंधी आज्ञप्ति क्या चीज़ है? यह **हमारी** आज्ञप्ति है—यह समाजवादी-क्रांतिकारियों का कार्यक्रम है, पूरा का पूरा! मेरी पार्टी ने स्वयं किसानों की इच्छाओं का बडी सावधानी से पता लगाने और संग्रह करने के बाद इस नीति को निर्धारित किया था। बोल्शेविकों का उसे हथिया लेना—यह सरासर अंधेर है..."

"लेकिन अगर यह आपकी अपनी नीति है, तो फिर आप एतराज क्यों करते हैं? अगर वही किसानों की मर्ज़ी है, तो वे भला उसका विरोध क्यों करेंगे?"

"आप नही समझते! किसान फौरन यह भांप लेंगे कि यह आज्ञप्ति एक तिकड़म है, कि इन ठगों ने समाजवादी-क्रांतिकारी कार्यक्रम को चुरा लिया है, समझा आपने?"

मैंने पूछा कि क्या यह सही है कि कलेदिन उत्तर की ओर अपनी सेना लिये मार्च कर रहे है।

उसने स्वीकृति मे सिर हिलाया और एक प्रकार के कटु, तिक्त संतोष के भाव से हाथो को मलता हुआ बोला, "हां, अब आप देख सकते है कि इन बोल्शेविकों ने क्या कर डाला है। उन्होंने हमारे ख़िलाफ़ प्रति-क्राति को उभाड़ा है। क्राति लुट गयी है, जी हां, क्राति लुट गयी है।"

"लेकिन क्या आप क्राति को बचायेंगे नही?"

"बेशक बचायेंगे – अपने ख़ून का आख़िरी कतरा देकर बचायेंगे। लेकिन हम किसी भी सूरत मे बोल्शेविकों के साथ सहयोग नही करेंगे..."

"फिर भी अगर कलेदिन पेत्रोग्राद पर चढाई करते है और बोल्शेविक नगर की रक्षा करते है, तो क्या आप उनके साथ हाथ नही मिलायेंगे?"

"बेशक नही। नगर की रक्षा हम भी करेंगे, लेकिन हम बोल्शेविकों का समर्थन नही करेंगे। अगर कलेदिन क्राति का दुश्मन है, तो बोल्शेविक उसके कुछ कम दुश्मन नही है।"

"लेकिन दोनो में चुनना हो, तो आप किसे चुनेंगे – कलेदिन को या बोल्शेविकों को?"

"यह ऐसा सवाल नही है, जिस पर बहस की जाये!" उसने अधीर होकर कहा। "मै आपसे फिर कहता हूं, क्रांति लुट गयी है, और इसके लिए बोल्शेविक दोषी है। लेकिन सुनिये, हम क्यों इन बातो की चर्चा करे? केरेन्स्की आ रहे है... परसों हम हमला शुरु कर देंगे... स्मोल्नी ने अभी से हमारे पास अपने प्रतिनिधि भेजे है और हमें एक नयी सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया है। वे मुट्ठी मे है – वे बिल्कुल नपुंसक है... हम उनके साथ हाथ नही मिलायेंगे..."

बाहर गोली चलने की आवाज आयी। हम दौड़कर खिड़कियों के पास गये। भीड़ के ताने-तिशनों से आख़िरकार झुंझलाकर एक लाल गार्ड ने गोली चला दी थी, जिससे एक नौजवान लड़की के हाथ में चोट लग गयी थी। हम ऊपर से उसे एक बग्घी-गाड़ी में बैठाये जाते देख सकते थे। गाड़ी के चारों ओर उत्तेजित लोगों की एक भीड़ थी, जिनकी चीख़-पुकार ऊपर हमारे कानो तक पहुंच रही थी। हम अभी उधर देख ही रहे थे कि यकायक एक बख्तरबन्द मोटर-गाड़ी मिखाइलोव्स्की मार्ग के मोड़ पर दिखायी दी –

की शपथ ग्रहण की थी, उलट नही दी गयी है, बल्कि बलात् उस भवन से बाहर निकाल दी गयी है, जहा उसकी बैठकें हुआ करती थीं। फिर भी यह सरकार अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा रखने वाली मोर्चे की सेनाओं की सहायता से, उस कज्ज़ाक-परिषद् की सहायता से, जिसने अपनी कमान के तहत सभी कज्ज़ाको को एकजुट किया है, और जिसने कज्ज़ाक पांतों मे व्याप्त मनोबल से शक्ति ग्रहण कर और रूसी जनता की इच्छा का अनुसरण कर देश की सेवा करने का बीड़ा उठाया है, जैसे उसके पूर्वजों ने १६१२ की अशात घड़ी मे उसकी सेवा की थी, जब कि दोन के कज्ज़ाकों ने स्वीडनियो, पोलो और लिथुआनियाइयों से घिरे हुए मास्को को मुक्त किया था–[यह सरकार, आपकी सरकार अभी भी क़ायम है...]*

कर्त्तव्यपरायण सेना इन अपराधियो को नफ़रत और हिक़ारत की नज़र से देखती है। लूटमार और तहज़ीबसोज़ी की उनकी हरकते, उनके जुर्म, जर्मनो की नज़र से रूस को देखने की उनकी आदत, उस रूस को जिसने घायल होते हुए भी अभी तक अपने घुटने नही टेके है–इन सबने उन्हे समूची जनता से दूर कर दिया है।

नागरिको, सिपाहियो, पेत्रोग्राद की गैरिसन के बहादुर कज्ज़ाको, आप अपने प्रतिनिधियो को मेरे पास भेजें, ताकि मुझे मालूम हो सके कि कौन देश के प्रति गद्दार है और कौन नही, ताकि बेक़सूर इन्सानों का ख़ून न बहने पाये।

प्रायः इसी समय कानोकान खबर फैल गयी कि लाल गार्डों ने दूमा-भवन को घेर लिया है। उनका एक अफ़सर बाह में लाल फीता लगाये अन्दर घुस आया और कहा कि उसे मेयर से मिलना है। थोड़ी देर बाद वह वापिस चला गया और बूढ़े श्रेइदेर लाल-पीले होते हुए अपने कार्यालय से बाहर निकले।

"दूमा का एक विशेष अधिवेशन! तुरत इसी वक़्त!" उन्होंने चिल्लाकर कहा।

---

*कोष्ठकों के भीतर के ये शब्द अखबारी रिपोर्टों में नहीं पाये जाते।–सं०

बड़े हॉल में जो सभा चल रही थी, वह स्थगित कर दी गयी।
"दूमा के सभी सदस्य विशेष अधिवेशन के लिए प्रस्थान करें!"

"मामला क्या है?"

"मैं नहीं जानता... वे शायद हमें गिरफ्तार करने जा रहे हैं... दूमा को भंग करने जा रहे हैं... दूमा के सदस्यों को ऐन दूमा की ड्योढ़ी पर हिरासत में लेते हैं।" लोग उत्तेजित होकर इसी प्रकार की टीका-टिप्पणी कर रहे थे।

निकोलाई हॉल में मुश्किल से इतनी जगह थी कि खड़ा हुआ जा सके। मेयर ने घोषणा की कि दूमा-भवन के सभी दरवाजों पर सैनिक तैनात हैं, वे न किसी को अन्दर आने दे रहे हैं, न बाहर जाने और एक कमिसार ने आकर नगर दूमा को भंग करने और उसके सदस्यों को गिरफ्तार करने की धमकी दी है। इस घोषणा के उत्तर में सदस्यों की ओर यहां तक की [illegible]कों की जोशीली तकरीरों की एक बाढ़ सी आ गई। उन्होंने कहा: ऐसी कोई सत्ता नहीं है, जो स्वतंत्र रूप से निर्वाचित नगर-प्रशासन को [illegible] कर सके; मेयर तथा दूमा के सभी सदस्यों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता [अ]नुल्लंघनीय है; जालिमों, उकसावेबाजों और जर्मन दलालों को कभी भी [मा]न्यता नहीं दी जानी चाहिए; जहां तक दूमा को भंग करने की इन [ध]मकियों का सवाल है, जरा ये कोशिश करके तो देखें – वे हमारी लाशों [प]र पांव रखकर ही इस सदन पर कब्जा कर सकेंगे, जहां हम प्राचीन [रो]म के सेनेटरों की तरह मर्यादा और आत्मसम्मान के साथ गोथों के आने [की] प्रतीक्षा कर रहे हैं..."

घेरावदी के लिए कोई ग्रादेश नही दिया गया है ग्रौर दूमा-भवन से सैनिक हटा लिये जायेंगे...

जव हम सीढियो से नीचे उतर रहे थे, रियाजानोव बड़ी तेजी से सामने के दरवाज़े से घुसे – वह बड़े उत्तेजित थे।

"क्या ग्राप दूमा को भग करने जा रहे है?" मैने पूछा।

"ईश्वर के लिए, नही," उन्होंने उत्तर दिया। "यह सब एक गलतफहमी है। मैने ग्राज सुवह मेयर से कहा है कि दूमा को छेड़ा नही जायेगा..."

वाहर नेव्स्की मार्ग पर शाम के गहरे होते हुए धुधलके मे साइकल-सवारो की एक लम्बी दोहरी कतार चली ग्रा रही थी – वन्दूके उनके कधो से लटकी हुई। जव वे रुके, भीड़ वहा धंस पड़ी ग्रौर लोगों ने सवालो की एक झड़ी लगा दी।

"ग्राप लोग कौन है? कहां से ग्राते है?" एक वूढ़े मोटे-ताज़े ग्रादमी ने, जिसके मुह से सिगार लगा हुग्रा था, पूछा।

"हम वारहवी सेना के साइकल-सवार है ग्रौर मोर्चे से ग्रा रहे है। हम कमवख़्त पूजीपतियो के खिलाफ सोवियतो का समर्थन करने ग्रा रहे हैं!"

"ग्रोह, यह वात है!" लोग गुस्से से चीख पड़े। "ये वोल्शेविक जल्लाद है! वोल्शेविक कज़ाक है!"

चमडे का कोट पहने नाटे कद का एक ग्रफसर भागा भागा सीढियो से उतरा। "गैरिसन का रुख वदला रहा है!" उसने मेरे कान मे फुसफुसा कर कहा। "यह वोल्शेविको के खातमे की शुरूग्रात है। ग्राप देखना चाहते है, धारा का रुख़ किस तरह वदल रहा है? ग्राइये, मेरे साथ ग्राइये!" वह मिखाइलोव्स्की मार्ग की ग्रोर लपका ग्रौर हम उसके पीछे चल पड़े।

"यह कौन सी रेजीमेंट है?"

"ब्रोनेवोकों की..." सचमुच यहा परिस्थिति विपद्जनक थी। ब्रोनेवीक वख्तरवद मोटर-गाडिया थे ग्रौर परिस्थिति की कुंजी उन्ही के हाथ मे थी। जिसके हाथ म ब्रोनेवीक हो, उसके हाथ मे समझिये पूरा शहर है। "उद्धार समिति के तथा दूमा के कमिसारो ने उनसे वात की है। इस समय यह फैसला करने के लिए एक मीटिंग हो रही है कि..."

"क्या फ़ैसला करने के लिए? कि वे किस की तरफ़ लड़ेंगे?"

"नहीं, भाई, इस तरह थोड़े ही काम साधा जा सकता है। वे ोल्शेविकों के ख़िलाफ़ कभी हथियार नहीं उठायेंगे! वे तटस्थ रहने के पक्ष मतदान देंगे और फिर घुड़सवार और कज़्ज़ाक..."

मिखाइलोव्स्की अश्वारोहण पाठशाला के विशाल भवन के किवाड़ ढ़ बाये हुए थे। दो संतरियों ने हमें रोकने की कोशिश की, लेकिन उनकी ्वाह न कर और उनकी क्रुद्ध आपत्तियों को अनसुनी कर हम फ़र्राटे अंदर घुस गये। अंदर विशाल हॉल में बिल्कुल ऊपर छत के पास केवल ़ आर्क-बत्ती मंद मंद जल रही थी। हॉल के ऊंचे चौकोर खंभे और ार की क़तार खिड़कियां अंधेरे में जैसे खो गयी थीं। वहां खड़ी बख़्तरबंद ड़ियों की भयावह आकृतियां धुंधली धुंधली दिखायी दे रही थीं। एक ़ी सबसे अलग हॉल के बीचोंबीच, ऐन आर्क-बत्ती के नीचे, खड़ी थी, ्र उसके चारों ओर भूरी वर्दियां पहने क़रीब दो हज़ार सिपाही जमा जो उस वसीह शाही इमारत में खो से गये थे। लगभग एक दर्जन ामी – अफ़सर, सैनिक समितियों के सभापति तथा वक्ता – गाड़ी के ऊपर ा थे और बीच के टरेट में खड़ा एक सैनिक बोल रहा था। यह ख़ानजोनोव था, जो पिछली गर्मियों में होनेवाली बख़्तरबन्द टुकड़ियों अखिल रूसी कांग्रेस का अध्यक्ष था। चमड़े का कोट पहने, जिस पर टेंट का बब्बा लगा था, सुंदर छरहरे बदन का यह आदमी तटस्थता समर्थन में धाराप्रवाह बोल रहा था।

"रूसियों के लिए अपने ही रूसी भाइयों को मारना एक खौफ़नाक

सुनने में बड़ी समझदारी की बात थी—विशाल हॉल गगनभेदी नारों से और तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

एक सिपाही बोलने के लिये ऊपर चढ़ गया—चेहरे पर तनाव, रंग उड़ा हुआ। "साथियो," उसने पुरजोर आवाज़ में कहा, "मैं रूमानिया के मोर्चे से आप सबको यह जरूरी संदेश देने के लिये आया हूं: शांति होनी ही चाहिये और फ़ौरन होनी चाहिये! जो भी हमें यह शांति प्रदान कर सकता है, चाहे वह बोल्शेविक पार्टी हो या यह नई सरकार हो, हम उसके पीछे चलेंगे। शांति! मोर्चे पर हम लोग अब लड़ते रहने में असमर्थ हैं। हम न जर्मनों से लड़ सकते हैं, न रूसियों से..." यह कह कर वह नीचे कूद पड़ा और क्षुब्ध, उत्तेजित भीड़ जैसे दर्द से कराह उठी, लेकिन जब उसके बाद एक मेन्शेविक प्रतिरक्षावादी ने उठकर यह कहने की कोशिश की कि लड़ाई को तब तक लड़ते जाना होगा, जब तक कि मित्र-राष्ट्र विजयी नही हो जाते, भीड़ जैसे गुस्से से भड़क उठी।

"आप बिल्कुल केरेन्स्की की तरह बात कर रहे हैं!" एक आदमी ने कर्कश स्वर में कहा।

दूमा के एक प्रतिनिधि ने तटस्थता के लिये दलीलें पेश की। सिपाहियों ने उसे सुना जरूर, लेकिन बुड़बुड़ाते हुए; वे यह महसूस कर रहे थे कि बोलने वाला उनके लिए पराया है। वे निश्चल भाव से बोलनेवाले की ओर टकटकी बाधे देख रहे थे—उनकी दृष्टि मे भयावह स्थिरता थी—सोचने की कोशिश मे उनके माथे पर बल पड़े हुए थे, और पसीने की बूंदें भी चमक रही थीं। ये आदमी क्या थे, देव थे, उनकी आखें निर्दोष बच्चों की तरह निश्छल और स्वच्छ थी और चेहरे प्राचीन महाकाव्यों के शूरवीरों की तरह...

अब एक उनका अपना आदमी—एक बोल्शेविक—बोल रहा था, गुस्से और नफरत से भरा हुआ। उसकी बात उन्हें दूसरों से ज्यादा नही भायी। उस समय उनका मिजाज कुछ और ही था। इस घड़ी वे विचारो के साधारण प्रवाह से निकल कर और उसके ऊपर उठ कर रूस के, समाजवाद के, ससार के बारे में सोच रहे थे, मानो क्रांति जीयेगी या मरेगी इसका दारोमदार उन्ही पर हो...

एक के बाद एक, कितने ही भाषणकर्ता आये और उन सब ने तनाव

भरी खामोशी, तारीफ़ में तालियों की गड़गड़ाहट या क्रुद्ध गर्जन के बीच एक ही सवाल के बारे में बहस की: हमें उठना चाहिए या नहीं? ख़ानजोनोव फिर बोला, बड़ी सहानुभूति से समझाने की कोशिश करता हुआ। लेकिन वह शांति की चाहे जितनी ढिंढोरी पीटे, वह अफसर ठहरा, **ओबोरोनेत्स** (प्रतिरक्षावादी) ठहरा। इसके बाद वासील्येव्स्की ओस्त्रोव का एक मजदूर आया, जिसका उन्होंने इस प्रश्न के साथ स्वागत किया, "मजदूर भाई, क्या **आप** हमें शांति प्रदान करने जा रहे हैं?" हमारे पास कुछ आदमियों ने, जिनमें बहुतेरे अफ़सर थे, एक गुट बना रखा था और जब भी कोई तटस्थता की वकालत करता, वे तालियां बजाते। वे बार बार आवाज उठाते, "ख़ानजोनोव! ख़ानजोनोव!" और जब बोल्शेविक बोलने की कोशिश करते, वे सीटियां बजा कर उनका अपमान करते।

यकायक गाड़ी के ऊपर जमा सैनिक समितियों के आदमी तथा अफसर किसी चीज के बारे में बड़े जोर जोर से हाथ हिला हिला कर बहस करने लगे। श्रोताओं ने चिल्ला कर पूछा कि माजरा क्या है। वह सारा जन-समुदाय आलोड़ित और तरंगित हो उठा। एक सिपाही ने, जिसे एक अफ़सर रोकने की कोशिश कर रहा था, अपने को छुड़ाते हुए और हाथ झटकारते हुए कहा:

"साथियो, कामरेड क्रिलेन्को यहां मौजूद हैं और आपसे बात करना चाहते हैं।" हॉल में हल्ला मच गया—एक साथ ही तालियां, सीटियां और कड़ी आवाजें: "**प्रोसिम! प्रोसिम! दोलोई!** बोलिये! बोलिये! मुर्दाबाद!" इस सारे हल्ले-गुल्ले के बीच सैनिक मामलों के जन-कमिसार गाड़ी पर चढ़ गये—अगर सामने और पीछे से कुछ हाथ उनको सहारा दे रहे थे, तो कुछ उन्हें धकेल भी रहे थे। गाड़ी पर चढ़ कर उन्होंने क्षण भर सांस ली और फिर रेडियेटर पर जाकर खड़े हो गये और अपने दोनों हाथ कमर पर रख कर मुस्कराते हुए चारों ओर देखने लगे—एक ठिंगने आदमी, जिनकी टांगें उनके शरीर के मुक़ाबिले छोटी थीं, नंगे सिर, बग़ैर बिल्लों-झब्बों की वर्दी पहने हुए।

मेरे पास जो गिरोह था, उसने बेतहाशा चीख़ना शुरू किया, "ख़ानजोनोव! हम ख़ानजोनोव को चाहते हैं! क्रिलेन्को मुर्दाबाद! ग़द्दार क्रिलेन्को मुर्दाबाद! बंद करो!" पूरे हॉल में खलबली मच गयी और बेहद

शोर-गुल होने लगा। और फिर जैसे बर्फ की एक चट्टान धसकती है और टूट पड़ती है, वैसे ही कुछ लंबे-तड़ंगे काली भौंहों वाले आदमी भीड़ को ठलते-ठालते उधर झपटे, जहां हम खड़े थे।

"कौन साला हमारी मीटिंग को तोड़ रहा है?" उन्होंने कड़क कर कहा। "यहां कौन सीटी बजा रहा है?" वहां जो गिरोह इकट्ठा हुआ था, वह बिना रू-रिआयत के तितर-बितर कर दिया गया और वह ऐसा बिखरा कि फिर नहीं जुट सका...

"साथी सिपाहियो!" क्रिलेन्को ने शुरू किया – उनकी आवाज थकान से भारी थी। "मुझे अफ़सोस है कि मैं आपसे ठीक से बात नहीं कर सकता, मैं चार रातों से सोया नहीं हूं...

"मुझे आपको यह बताने की जरूरत नहीं है कि मैं एक सिपाही हूं। मुझे आपको यह बताने की जरूरत नहीं है कि मैं शांति चाहता हूं। जो बात मुझे कहनी है, वह यह है कि बोलशेविक पार्टी ने, जिसने आपकी सहायता से और उन सभी दूसरे बहादुर साथियों की सहायता से, जिन्होंने रक्त-लोलुप पूंजीपति वर्ग की सत्ता को सदा के लिए धराशायी कर दिया है, मजदूरों और सिपाहियों की क्रांति को सफलतापूर्वक संपन्न किया है, सभी जनों से शांति का प्रस्ताव करने का वचन दिया था – और यह वचन पूरा किया गया है – आज ही पूरा किया गया है!" तालियों की गड़गड़ाहट।

"आपसे तटस्थ रहने को कहा गया है, आपसे कहा गया है कि आप तटस्थ रहें और युंकर और शहीदी टुकड़ियां, जो कभी भी तटस्थ नहीं हो सकती, हमें सड़कों पर गोलियों से भूनें और केरेन्स्की को या शायद उसी गिरोह के किसी दूसरे डाकू को पेत्रोग्राद वापस लायें। कलेदिन दोन की ओर से मार्च कर रहे हैं। केरेन्स्की मोर्चे की ओर से आ रहे हैं। कोर्निलोव अगस्त की अपनी कोशिश को दुहराने के लिए तेकीन्सों को उभाड़ रहे हैं। ये सारे मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी, जो आज आपसे गृहयुद्ध न होने देने के लिए अपील कर रहे हैं, उन्होंने अगर गृहयुद्ध के द्वारा – उस गृहयुद्ध के द्वारा, जो जुलाई से लगातार चल रहा है और जिसमें वे बराबर पूंजीपति वर्ग की ओर रहे हैं, जैसे वे आज हैं – सत्ता अपने हाथ में नहीं रखी, तो कैसे रखी?

"अगर आपने एक इरादा बना लिया है, तो मैं आपको कैसे क़ायल

कर सकता हूं? लेकिन सवाल बहुत साफ है। एक ओर केरेन्स्की, कलेदिन और कोर्नीलोव हैं, मेन्शेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी, कैडेट, दूमाएं तथा अफ़सर हैं... वे हमसे कहते हैं कि उनके [illegible] बड़े अच्छे हैं। दूसरी ओर मजदूर, सिपाही और मल्लाह हैं, गरीब से गरीब किसान हैं। सरकार आपके हाथ मे है। मालिक आप हैं। विशाल रूस आज आपके अधिकार मे है। क्या आप यह अधिकार लौटा देंगे?"

क्रिलेन्को जब बोल रहे थे, स्पष्ट था कि वह केवल अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर खड़े हैं, और जैसे जैसे वह बोलते गये, उनकी थकी, बैठी हुई आवाज के बावजूद उनके शब्दो के अदर जो गहरी सच्ची भावना थी, वह प्रगट होती गयी। भाषण ख़त्म करते ही वह लडखड़ाये और अगर सौ हाथो ने उन्हें सहारा देकर नीचे न उतारा होता, तो शायद वह गिर ही पड़ते। जिस मेघ-गर्जन से उनके भाषण का स्वागत किया गया वह उस विशाल, धुधले हॉल के कोने कोने से प्रतिध्वनित हो उठा।

ख़ानजोनोव ने फिर बोलने की कोशिश की, लेकिन लोगों ने चीख़ना शुरू किया, "वोट लो! वोट लो!" आख़िरकार उनकी मर्ज़ी के सामने झुकते हुए, उसने अपना प्रस्ताव पढ़ कर सुनाया: बख़्तरबन्द टुकड़ी सैनिक क्रातिकारी समिति से अपने प्रतिनिधि को वापस बुलाती है, और इस गृहयुद्ध में अपनी तटस्थता की घोषणा करती है। जो लोग इस प्रस्ताव का समर्थन करते हैं, वे दायी ओर चले जायें और जो विरोध, वे बायी ओर। क्षण भर की दुविधा और निस्तब्ध प्रतीक्षा के बाद भीड़ तेज से तेज़तर बायी ओर उमड़ने लगी; लोग एक दूसरे के ऊपर गिरते-पड़ते बेतहाशा उधर ही दौड़े। मद्धिम प्रकाश मे सैकड़ों लबे-तड़गे सिपाहियों का एक विशाल जनपुज एक साथ एक ओर से दूसरी ओर—बायी ओर—हो गया। हमारे करीब पचास आदमी, जो प्रस्ताव का समर्थन करने पर तुले हुए थे, अकेले पड़ गये और जिस समय गगनभेदी जयघोष से ऐसा लगता था कि छत फट पड़ेगी, उन्होंने पीछे की ओर रुख़ किया और तेज़ कदमों से हॉल से बाहर निकल गये—उनमें से कुछ तो क्राति के क्षेत्र से भी बाहर निकल गये...

कल्पना कीजिये कि यह कशमकश जो इस हॉल में हुई शहर की हर बारिक मे, हल्के मे, पूरे मोर्चे पर, समूचे रूस मे दोहरायी गयी। कल्पना

कीजिये कि क्रिलेन्को जैसे कई कई रात के जगे लोग रेजीमेंटो का रुख़ देख रहे हैं, एक जगह से दूसरी जगह दौड़ रहे हैं, बहस कर रहे हैं और कहीं डरा-धमका रहे हैं, तो कहीं चिरौरी-बिनती भी कर रहे हैं। और फिर कल्पना कीजिये कि यही बात हर मजदूर यूनियन की हर स्थानीय शाखा में, कारख़ानों में, गांवों में और दूर तक फैले हुए रूसी बेड़ों के जंगी जहाज़ों में दोहरायी गयी। क़यास कीजिये कि इस विशाल देश के एक छोर से दूसरे छोर तक सभी जगह लाखों रूसी लोग—मजदूर, किसान, सिपाही और मल्लाह—भाषणकर्ताओं की ओर नजर गड़ाये देख रहे हैं और एकाग्र भाव से उनकी बात को समझने की और यह तय करने की कोशिश कर रहे हैं कि अपने लिये कौन सा रास्ता चुनें और फिर अन्त में इस प्रकार सर्वसम्मति से एक फ़ैसला कर रहे हैं। ऐसी ही थी रूसी क्रांति...

उधर स्मोल्नी में नयी जन-कमिसार परिषद् चुप नहीं बैठी थी। उसकी पहली आज्ञप्ति, जिसे उसी रात हजारों की संख्या में शहर भर में बंटवा देना था और भारी भारी बंडलों में हर रेलगाड़ी में दक्षिण और पूर्व की ओर रवाना करना था, छप रही थी:

किसान प्रतिनिधियों की शिरकत से मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा निर्वाचित रूसी जनतन्त्र की सरकार के नाम पर जन-कमिसार परिषद् आज्ञप्ति करती है कि:

१. संविधान सभा के चुनाव निश्चित तिथि पर, अर्थात १२ नवबर को सम्पन्न किये जायेंगे।

२. सभी चुनाव आयोगों, स्थानीय स्वशासन निकायों, मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों तथा मोर्चे के सैनिक संगठनों को चाहिये कि वे नियत तिथि पर स्वतंत्र तथा नियमित चुनावों को सुनिश्चित बनाने के लिये पूरा प्रयत्न करें।

रूसी जनतंत्र की सरकार के नाम पर

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्लादीमिर उल्यानोव-लेनिन

नगर दूमा भवन में दूमा की मीटिंग बड़े ज़ोर-शोर से चल रही थी। जब हम ग्रन्दर घुसे जनतंत्र की परिषद् के एक सदस्य बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि परिषद् अपने को भंग बिल्कुल नहीं समझती, वह केवल यह समझती है कि जब तक उसे एक नया सभा-भवन उपलब्ध न हो, वह अपने क्रिया-कलाप को जारी रखने में असमर्थ है। इस बीच उसकी प्रवर-समिति ने सामूहिक रूप से उद्धार समिति में प्रवेश करने का निश्चय किया है... प्रसंगवश, इतिहास में रूसी जनतंत्र की परिषद् का इसके बाद कभी भी ज़िक्र नहीं मिलता...

इसके बाद मंत्रालयों, विक्जेल, डाक-तार यूनियन के प्रतिनिधि बदस्तूर एक के बाद एक वहां ग्राये ग्रौर उन्होंने सौवें मर्तबा अपने इस संकल्प को दोहराया कि वे बोल्शेविक बलाद्ग्राहियों के लिये हरगिज़ काम नहीं करेंगे। एक युंकर ने, जो शिशिर प्रासाद में मौजूद था, अपनी और अपने साथियों की वीरता की और लाल गार्डों के अपमानजनक व्यवहार की एक घोर अतिरंजित कथा सुनायी – और लोगों ने इन सारे क़िस्से-कहानियों पर ग्राख मूंद कर विश्वास कर लिया। किसी ने समाजवादी-क्रांतिकारी अख़बार 'नरोद' में छपी एक रिपोर्ट को पढ़ कर सुनाया, जिसमें यह कहा गया था कि शिशिर प्रासाद को जो क्षति पहुंचायी गयी है, उसे पूरा करने में पचास करोड़ रूबल ख़र्च होंगे और जिसमें वहां होने वाली लूट-मार और तोड़-फोड़ का विशद वर्णन था।

बीच बीच में संदेशवाहक टेलीफ़ोन से प्राप्त होने वाले समाचारों को लेकर वहा आते। चार समाजवादी मंत्रियों को क़ैद से रिहा कर दिया गया है। क्रिलेन्को ने पीटर-पाल क़िले में जाकर एडमिरल वेर्देरेव्स्की से कहा कि नौ-मंत्रालय परित्यक्त है और उनसे अनुरोध किया कि वह रूस की ख़ातिर जन-कमिसार परिषद् के तहत मंत्रालय का भार संभालें, और बूढ़े नाविक ने उनकी बात मान ली। केरेंस्की गातचिना से उत्तर की ओर बढ़ रहे हैं और बोल्शेविक गैरिसनें उनका मुकाबला न कर पीछे हट रही है। स्मोल्नी ने एक और आज्ञप्ति जारी की है, जिसके द्वारा खाद्य-संभरण के मामले में नगर दूमाओं के अधिकारों को बढ़ा दिया गया था।

यह अंतिम बात एक ऐसी धृष्ठता मालूम पड़ी कि लोगों का गुस्सा भड़क उठा। यह लेनिन, बलाद्ग्राही और अत्याचारी लेनिन, जिसके कमिसारों ने नगरपालिका की मोटर-गाड़ियों पर क़ब्ज़ा कर लिया था, नगरपालिका के गोदामों में प्रवेश किया था, और संभरण-समितियों के काम में तथा खाद्य के वितरण में हस्तक्षेप किया था,—इस लेनिन की ऐसी जुर्रत कि वह स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वायत्त नगर-प्रशासन के अधिकारों की सीमा बांधे! एक दूमा-सदस्य ने अपना घूसा दिखाते हुए प्रस्ताव किया कि अगर बोल्शेविक संभरण-समितियों के काम में दस्तंदाजी करने की जुर्रत करें, तो नगर को खाद्य की सप्लाई बंद की जाये... एक दूसरे सदस्य ने, जो विशेष संभरण-समिति के प्रतिनिधि थे, खबर दी कि खाद्य-स्थिति अत्यन्त गंभीर है और उन्होंने मांग की कि दूमा अपने दूतों को बाहर दौड़ाये, ताकि अनाज की गाड़ियां जल्दी से जल्दी पेत्रोग्राद लायी जा सकें।

देदोनेन्को ने नाटकीय ढंग से घोषणा की कि गैरिसन डावाडोल हो रही है। सेम्योनोव्स्की रेजीमेंट ने अभी से फ़ैसला कर लिया है कि वह समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की ही आज्ञा का पालन करेगी। नेवा नदी की टारपीडो-नावों के मल्लाह भी डावाडोल हैं। फ़ौरन सात सदस्यों को प्रचार-कार्य जारी रखने के लिये नियुक्त किया गया...

इसके बाद बूढ़े मेयर मंच पर बोलने के लिये खड़े हुए: "साथियो और नागरिको! मुझे अभी अभी मालूम हुआ है कि पीटर-पाल क़िले के क़ैदी ख़तरे में हैं। बोल्शेविक रक्षकों ने पाव्लोव्स्क स्कूल के चौदह युंकरों को नंगा करके उन्हें मारा-पीटा है। उनमें से एक पागल हो गया है। वे क़ानून को ताक पर रखकर मंत्रियों को भी भुरता बना देने की धमकी दे रहे हैं!" मेयर का यह कहना नहीं था कि क्रोध और घृणा का जैसे एक ज्वार आ गया। वह उस वक़्त और भी उग्र हो गया, जब भूरे कपड़े पहने हुए नाटे कद की एक ठिंगनी सी औरत ने बोलने की इजाज़त मांगी और कठोर स्वर में, जिसमें लोहे की खनक थी, बोलने लगी। यह थी पुरानी तपी हुई क्रांतिकारी महिला तथा दूमा की बोल्शेविक सदस्य वेरा स्लूत्स्काया।

Коммисаръ
Главнаго Управленія домовъ заключенія
„6" Нояб. 1917 г.
№ 221
Петроградъ Смольный Институтъ; комн. № 56.

ПРОПУСКЪ

Представителю Американскихъ Соціалистическихъ газетъ Джону Риду, во всѣ мѣста заключенія гг. Петрограда и Кронштата, для общаго ознакомленія положенія заключенныхъ и широкаго общественнаго освѣдомленія въ цѣляхъ прекращенія газетной травли противъ демократіи.-

Коммиссаръ [signature]
Секретарь [signature]

सभी जेलो में बेरोकटोक जाने के लिए जॉन रीड को दिया गया पास

"यह सरासर झूठ है और उकसावा है!" उन्होंने गालियों की बौछार की परवाह न करके कहा। "मज़दूरों और किसानों की सरकार, जिसने मृत्यु-दंड समाप्त कर दिया है, ऐसी हरकतों की इजाज़त नही दे सकती। हम मांग करते हैं कि इस रिपोर्ट की फौरन जाच की जाये। अगर उसमे कोई सचाई है, तो सरकार ज़रूर ज़ोरदार क़दम उठायेगी!"

सभी पार्टियों के सदस्यों को लेकर फौरन एक आयोग की नियुक्ति की गयी और मामले की तहक़ीक़ात के लिये यह आयोग मेयर के साथ पीटर-पाल किले के लिये रवाना हुआ। हम उनके पीछे पीछे निकल ही रहे थे कि हमने देखा, दूमा केरेन्स्की के साथ मुलाक़ात के लिये एक दूसरा आयोग नियुक्त कर रही थी और उसे यह ज़िम्मेदारी सौंप रही थी कि जब केरेन्स्की राजधानी मे प्रवेश करें, यह आयोग उनसे मिल कर इस बात की कोशिश करे कि शहर में ख़ून-ख़राबा न होने पाये...

जब हम क़िले पहुचे और हमने फाटक पर संतरियों को चकमा दे कर अन्दर प्रवेश किया, रात आधी गुज़र चुकी थी। हम गिरजाघर की ओर इक्की-दुक्की बिजली की बत्तियो के मद्धिम प्रकाश मे आगे बढ़े। यही, इसी गिरजाघर मे सुन्दर स्वर्ण कलश और घंटे के नीचे, जिस पर

हर रोज़ ऐन दोपहर को पहले की ही तरह अभी भी बोजे त्सार्या ह्रानी* की धुन वजती रही थी, ज़ारों की क़ब्रें थीं... इस समय वहा बिल्कुल सन्नाटा था; अधिकांश खिड़कियों में रोशनी तक न थी। अंधेरे में चलते चलते हम किसी वक़्त किसी सडे-मुस्टंडे से टकरा जाते, जो हमारे सवालों का हस्वमामूल एक ही जवाव देता, "या न्ये ज़्नायू" (मुझे नही मालूम)।

बायी ओर त्रुबेत्स्कोई बुर्ज की धुंधली धुंधली आकृति दिखायी दे रही थी–वही बुर्ज, जो क़ैदियों के लिए जीते जी क़ब्र था, जहां ज़ारशाही ज़माने में आज़ादी की लड़ाई के कितने ही शहीदों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा या अपनी बुद्धि से, जहां अपने वक़्त अस्थायी सरकार ने ज़ारशाही मंत्रियों को बंद कर दिया था और अब बोल्शेविकों ने अस्थायी सरकार के मंत्रियों को बंद किया था।

एक मल्लाह ने हमें बड़े मैत्रीपूर्ण भाव से टकसाल के पास एक छोटे से घर में पहुंचाया, जहा कमांडेंट का दफ़्तर था। एक गर्म कमरे मे, जिसमे धुआ भरा हुआ था, आधा दर्जन लाल गार्ड, मल्लाह और सिपाही बैठे हुए थे। पास ही समावार से पानी के खदबदाने की सुखद ध्वनि आ रही थी। उन्होंने बड़े हार्दिक भाव से हमारा स्वागत किया और चाय पिला कर हमारी ख़ातिर की। कमांडेंट मौजूद न थे, वह नगर दूमा से आये "साबोताज्निकों" (तोड़-फोड़ करने वालों) के आयोग के साथ थे, जिनका कहना था कि युंकरों का कत्ले-आम किया जा रहा है। यहां लोगो को इस बात पर बेहद हंसी आ रही थी। कमरे में एक तरफ़ नाटे क़द और गजी खोपड़ी वाले एक साहब, जिन्हें देखने से मालूम होता था कि उन्होंने अपने दिन ऐयाशी मे बिताये हैं, एक सूट और क़ीमती फर कोट पहने बैठे थे। वह अपनी मूछें चबा रहे थे और अपने चारों ओर चूहादानी मे फसे चूहे की तरह सहमी नज़र से देख रहे थे। उन्हें अभी अभी गिरफ़्तार किया गया था। किसी ने उनकी ओर उड़ती हुई नज़र से देखकर

---

*ईश्वर ज़ार की रक्षा करे। यह एक ग़लती है: पीटर-पाल का घटा "कोल स्लावेन..." (गौरव है आपका...) की धुन बजाता था। –सं०

कहा कि वह मंत्री-वंत्री कुछ है... मालूम होता था नाटे ग्रादमी ने उसकी बात सुनी नही। ज़ाहिर था कि वह बेहद डरे हुए ग्रौर घबराये हुए थे, हालांकि कमरे में मौजूद लोगों ने उन्हें कोई नाराजगी नही दिखायी थी।

मैंने उनके पास जा कर उनसे फ़ासीसी में बात की। "काउंट तोल्स्तोई," उन्होंने ग्रौपचारिक रूप से झुककर ग्रपना परिचय दिया। "मेरी समझ मे नही ग्राता कि मुझे क्यों गिरफ़्तार किया गया है। मैं ग्रपने घर के रास्ते मे त्रोइत्स्की पुल को पार कर रहा था कि इनमे से... इनमे से... दो ग्रादमियों ने मुझे पकड़ लिया। बेशक मैं ग्रस्थायी सरकार का कमिसार था ग्रौर मुझे मुख्य सैनिक कार्यालय के साथ लगा दिया गया था, लेकिन मैं किसी भी माने मे मत्रिमंडल का सदस्य नहीं था..."

"उसे जाने दो..." एक मल्लाह ने कहा। "वह कोई ख़तरनाक ग्रादमी नही मालूम होता..."

"नही," जो सिपाही उसे गिरफ़्तार कर के यहा लाया था, उसने कहा। "पहले हमें कमाडेंट से पूछना होगा।"

"ग्रोह, कमांडेंट!" मल्लाह ने मजाक उड़ाया। "तुमने क्रांति काहे के लिए की? इसीलिए कि ग्रफसरों का हुक्म बजाते रहो?"

पाव्लोव्स्की रेजीमेंट का एक प्रापोरश्चीक बता रहा था कि विद्रोह कैसे शुरू हुग्रा। "छः तारीख़ की रात को हमारी रेजीमेंट की ड्यूटी मुख्य सैनिक कार्यालय में लगी थी। मैं ग्रपने कुछ साथियों के साथ पहरे पर तैनात था। जिस कमरे मे जनरल स्टाफ की बैठक हो रही थी, उसमें इवान पाव्लोविच ग्रौर एक ग्रौर ग्रादमी, जिसका नाम मुझे याद नहीं ग्रा रहा है, पर्दों के पीछे छिप गये ग्रौर उन्होने कितनी ही बातें सुनी। उदाहरण के लिए, उन्होने सुना कि गातचिना के युंकरों को रातो रात पेत्रोग्राद ग्राने ग्रौर कज़्ज़ाकों को सुबह मार्च करने के लिए तैयार रहने का हुक्म दिया जा रहा था... उनकी योजना थी कि शहर के ख़ास ख़ास नाकों पर सवेरा होने से पहले ही क़ब्ज़ा कर लिया जाये। फिर पुलों के भी खोलने की बात थी। लेकिन जब वे स्मोल्नी भवन पर घेरा डालने की बात करने लगे, इवान पाव्लोविच से रहा न गया। ठीक उसी समय काफ़ी लोग वहा ग्रा जा रहे थे—उन्हीं मे मिल कर वह चुपके

से निकल आया और नीचे गारद-घर में आ गया। दूसरा साथी उनकी बात सुनने के लिये, जितनी भी वह सुन सकता था, वहां रह गया।

"मुझे पहले से ही शुबहा था कि कोई न कोई गुल जरूर खिलाया जा रहा है। अफ़सरों से लदी मोटर-गाड़ियां बराबर आ रही थी और सभी मंत्री वहां मौजूद थे। इवान पाव्लोविच ने जो कुछ अपने कानों सुना था, मुझे बताया। उस वक़्त रात के ढाई बजे थे। रेजीमेंट-समिति के मंत्री वहां मौजूद थे। हमने सारा क़िस्सा उन्हें सुनाया और पूछा कि क्या करना चाहिए।

"'आने-जाने वाले सभी आदमियों को गिरफ़्तार कर लो,' उन्होंने कहा। लिहाज़ा हमने ऐसा ही करना शुरू किया। घंटा भर के अंदर ही हमने कुछ अफ़सरों और दो मंत्रियों को पकड़ कर सीधे स्मोल्नी भिजवा दिया। लेकिन सैनिक क्रांतिकारी समिति इसके लिए तैयार न थी। उनकी समझ में नहीं आया कि वे क्या करें। थोड़ी ही देर बाद हमारे पास हुक्म आया कि हम हर आदमी को छोड़ दें और अब किसी को न पकड़ें। फिर हम भागे भागे काले कोस स्मोल्नी गये और मेरा ख़्याल है घंटे भर की माथापच्ची के बाद कहीं जा कर उनके जेहन में यह बात आयी कि यह दरअसल एक लड़ाई है। जब हम वापिस यहां पहुंचे पांच बज चुके थे और चिड़ियां हाथ से निकल चुकी थी। कुछ तो फिर भी फंस ही गयीं। गैरिसन पूरी की पूरी निकल पड़ी थी..."

वासील्येव्स्की ओस्त्रोव के एक लाल गार्ड ने बड़े विस्तार से बताया कि विद्रोह के दिन उसके हलक़े में क्या हुआ। "वहां हमारे पास मशीनगनें न थी, और न वे हमें स्मोल्नी से मिल सकती थी," उसने मुस्कराते हुए कहा। "वार्ड दूमा की उप्रावा (केंद्रीय ब्यूरो) के सदस्य कामरेड जालकिन्द को अचानक याद आया कि उप्रावा के सभा कक्ष में एक मशीनगन पड़ी है, जो जर्मनों से छीनी गयी थी। लिहाज़ा वह और मैं और एक और साथी वहां पहुंचे। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी लोग वहां मीटिंग कर रहे थे। हमने आव देखा न ताव, दरवाज़ा खोल कर सीधे अंदर घुस गये। हम तीन थे और वे बारह या पंद्रह रहे होंगे, सब के सब एक मेज के चारों ओर बैठे हुए। जब उन्होंने हमें देखा, उन्हें जैसे सांप सूंघ गया।

उनकी बोलती बंद हो गयी और वे बस हमारा मुंह देखते रह गये। हम बेसाख़्ता कमरे की दूसरी जानिब गये, मशीनगन के हिस्सों को अलग किया, एक हिस्सा कामरेड ज़ालकिन्द ने उठाया, दूसरा मैंने और हम उन्हें कंधे पर लादे बाहर निकल आये और एक भी आदमी ने चू तक नहीं किया!"

"तुम जानते हो शिशिर प्रासाद पर कैसे क़ब्ज़ा किया गया?" एक तीसरे आदमी ने, एक मल्लाह ने पूछा। "क़रीब ग्यारह बजे हमें पता चला कि नेवा की तरफ वाले हिस्से में युंकर मौजूद नहीं हैं। लिहाज़ा हम दरवाज़े तोड़ कर अंदर घुस गये और एक एक या दो दो, चार चार कर के सीढ़ियों से चुपचाप ऊपर चढ़ गये। जब हम ऊपर पहुंचे, युंकरों ने हमें रोका और हमारी बदूकें छीन लीं। लेकिन थोड़े थोड़े करके हमारे साथी बराबर आते ही रहे, जब तक कि हमारी तादाद उनसे ज्यादा न हो गयी। फिर क्या था, हमने बाज़ी पलट दी और युंकरों से उनकी बंदूकें रखवा लीं..."

ठीक उसी समय कमांडेंट ने प्रवेश किया—एक हंसमुख नौजवान गैर-कमीशनयाफ़्ता अफ़सर, जिसका एक हाथ गले की पट्टी से लटका हुआ था और आंखों के नीचे कई कई रात जगते रहने से काली रेखायें उभर आयी थीं। उसकी निगाह पहले क़ैदी पर पड़ी, जो फौरन अपनी सफ़ाई देने लगा।

"जी हां," कमांडेंट ने उसकी बात काट कर कहा। "आप उसी समिति के मेंबर थे न, जिसने बुधवार को तीसरे पहर जनरल स्टाफ़ को हमारे हवाले करने से इनकार किया था। बहरहाल, हमें आपकी जरूरत नहीं है। माफ़ कीजिए, नागरिक..." उसने दरवाज़ा खोल कर काउंट तोल्स्तोई को इशारा किया कि वह बराय मेहरबानी तशरीफ़ ले जायें। कई और लोगों ने, ख़ास कर लाल गार्डों ने भुनभुना कर अपना प्रतिवाद प्रगट किया और मल्लाह ने विजय के भाव से कहा, "देखा! मैंने क्या कहा था?"

अब दो सिपाही कमांडेंट की ओर मुख़ातिब हुए। क़िले की गैरिसन ने प्रतिवाद प्रगट करने के लिये उन दो आदमियों की एक समिति चुनी थी। उन्होंने कहा कि ऐसे वक़्त जब पेट भर खाना मिलना दुश्वार था,

क़ैदियों को वही ख़ुराक दी जा रही थी, जो रक्षकों को। "प्रतिक्रांतिकारियों के साथ इतना अच्छा सलूक क्यों किया जाये?"

"साथियो, हम क्रांतिकारी हैं, लुटेरे नहीं," कमांडेंट ने जवाब दिया। अब वह हमारी ओर मुड़ा। हमने कहा कि शहर में अफ़वाहें उड़ रही हैं कि युंकरों को मारा-पीटा जा रहा है और मन्त्रियों की जान भी ख़तरे में है। "क्या हमें क़ैदियों से मिलने दिया जा सकता है, ताकि हम दुनिया के सामने साबित कर सकें कि..."

"नहीं," नौजवान सैनिक ने खीझ कर कहा। "मैं दोबारा क़ैदियों की नींद में ख़लल नहीं डाल सकता। मुझे अभी अभी मजबूरन उन्हें जगाना पड़ा—उन्होंने बिल्कुल यही समझा कि उन्हें जहन्नुम रसीद किया जाने वाला है... बहरहाल ज्यादातर युंकरों को छोड़ ही दिया गया है और बाक़ी कल छोड़ दिये जायेंगे।" उसने यकायक दूसरी ओर रुख़ किया।

"तब क्या हम दूमा आयोग से बात कर सकते हैं?"

कमांडेंट ने, जो अपने लिए गिलास में चाय ढाल रहा था, सिर हिलाकर स्वीकृति दी। "वे अभी भी बाहर हॉल में हैं," उसने बेपरवाही से कहा।

और सचमुच एक चिराग की मद्धिम रोशनी में हमने देखा, वे दरवाज़े के ठीक बाहर मेयर को घेरे खड़े हैं और उत्तेजित स्वर में बातें कर रहे हैं।

"मेयर महोदय," मैंने कहा, "हम अमरीकी संवाददाता हैं। क्या आप हमें कृपा कर आधिकारिक रूप से बतायेंगे कि आप की जांच-पड़ताल का क्या नतीजा निकला?"

वह हमारी ओर मुख़ातिब हुए—उनके चेहरे पर वही श्रद्धेय, गौरवास्पद भाव था।

"उन रिपोर्टों में कोई सचाई नहीं है," उन्होंने आहिस्ता लहजे में कहा। "जब मन्त्रिगण यहां लाये जा रहे थे, उस समय जो घटनायें हुईं, उन्हें छोड़ दें, तो उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया गया है। जहां तक युंकरों का प्रश्न है, किसी का बाल भी बांका नहीं हुआ है..."

नेव्स्की मार्ग पर रात के तीसरे पहर के निस्तब्ध धुंधलके में सिपाहियों की क़तार पर क़तार चुपचाप चली जा रही थी – वे केरेन्स्की से लड़ने जा रहे थे। अंधेरे उपमार्गों पर बग़ैर बत्ती के मोटरें दौड़ रही थी। किसानों की सोवियत के सदर दफ़्तर, फ़ोन्तान्का छः में, नेव्स्की मार्ग के एक विशाल भवन के एक फ़्लैट में और **इंजीनेर्नो ज़ामोक** (इंजीनियरों का स्कूल) में गुप-चुप कार्रवाइयां हो रही थी। दूमा भवन जगमगा रहा था...

स्मोल्नी संस्थान में सैनिक क्रांतिकारी समिति शोला बनी हुई थी और एक अतिभारित डाइनामो की तरह बेतहाशा काम कर रही थी...

सड़कों पर राह चलते नागरिक एक दूसरे को रोक कर पूछते :
"क्यों भाई, सुना है, कज़्ज़ाक ग्राने वाले हैं?"
"नही..."
"ताज़ा ख़बर क्या है?"
"मैं नही जानता। ग्रापको मालूम है केरेन्स्की कहा है?"
"लोगों का कहना है कि पेत्रोग्राद से कुल ग्राठ वेर्स्ता दूर... क्या यह सच है कि वोल्शेविकों ने भाग कर क्रूज़र 'ग्रव्रोरा' मे शरण ली है?"
"कहते तो यही है..."
दीवारों पर पोस्टर ग्रौर इने-गिने ग्रख़बार; ग्रपीलों, फटकारो, ग्राज्ञप्तियों की भरमार...
एक बड़े भारी पोस्टर मे किसानो की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति का घोषणापत्र छपा था, जिसमे बहुत सी वाही-तबाही बकी गयी थी :

...वे (वोल्शेविक) यह कहने की जुर्रत करते हैं कि उन्हे किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतो का समर्थन प्राप्त है ग्रौर यह कि वे किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की ग्रोर से बोल रहे हैं...
रूस का समूचा मज़दूर वर्ग जान ले कि यह सरासर **झूठ** है, कि **किसानों के प्रतिनिधियों की ग्रखिल रूसी सोवियतों की कार्यकारिणी समिति** के रूप में **सारे मेहनतकश किसान** इस बात का क्रोधपूर्वक खंडन करते है कि संगठित किसान वर्ग ने मेहनतकश वर्गों की इच्छा के इस ग्रपराधपूर्ण उल्लंघन में किसी भी प्रकार से योगदान दिया है...

समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की सैनिक शाखा ने घोषणा की :

वोल्शेविकों का विक्षिप्त प्रयास ध्वस्त होने को ही है। गैरिसन के ग्रंदर फूट पड़ गई है... मंत्रालयों के कर्मचारी हड़ताल पर हैं ग्रौर रोटी ग्रौर भी दुर्लभ हो गयी है। मुट्ठी भर वोल्शेविको को छोड़कर सभी दल काग्रेस से निकल ग्राये हैं। वोल्शेविक ग्रकेले पड़ गये हैं...

16-2360

हम सभी समझदार अंशकों से अपील करते हैं कि वे देश तथा क्रांति की उद्धार समिति के चारों ओर एकत्र हों और इस बात की गंभीर तैयारी करें कि केन्द्रीय समिति का आह्वान होते ही कमर कस कर...

जनतंत्र की परिषद् ने एक परचा निकाल कर अपनी शिकायतें पेश कीं:

संगीनों के सामने मजबूर होकर जनतंत्र की परिषद् विसर्जित होने और अस्थायी रूप से अपनी सभा स्थगित करने के लिए बाध्य हुई है।

बलाद्ग्राहियों ने लबों पर "आजादी और समाजवाद" का नारा लेकर निरंकुश हिंसापूर्ण शासन स्थापित किया है। उन्होंने अस्थायी सरकार के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया है, अख़बारों को बंद कर दिया है और छापाखानों पर क़ब्ज़ा कर दिया है... यह जरूरी है कि इस सत्ता को जनता तथा क्रांति का शत्रु समझा जाये; यह जरूरी है कि उससे संघर्ष किया जाये और उसे गिराया जाये...

जब तक जनतंत्र की परिषद् अपना काम फिर से शुरू नहीं करती, वह रूसी जनतंत्र के नागरिकों को आमंत्रित करती है कि वे देश तथा क्रांति की स्थानीय उद्धार समितियों के गिर्द एकजुट हों। ये समितियां बोल्शेविकों की सरकार को उलटने और एक ऐसी सरकार की स्थापना करने का कार्य संगठित कर रही हैं, जो देश को संविधान सभा की ओर अग्रसर करने में समर्थ होगी।

'देलो नरोदा' ने लिखा:

क्रांति का अर्थ है समस्त जनता का विद्रोह... परंतु हम यहां क्या देखते हैं? लेनिन और त्रोत्स्की द्वारा ठगे और बुद्धू बनाये गये बेचारे मुट्ठी भर बेवकूफों को, बस...उनकी आज्ञप्तियां और अपीलें ऐतिहासिक विचित्र-वस्तु संग्रहालय की शोभा ही बढ़ा सकती हैं...

जन-समाजवादियों के अख़बार 'नरोद्नोये स्लोवो' (जनवाणी) ने भी अपना तीर छोड़ा:

"मजदूरों और किसानों की सरकार?" यह सचाई नहीं, किसी अफ़ीमची की सनक है। रूस में या मित्र-राष्ट्रों में, यहां तक कि शत्रु-देशों में भी एक भी आदमी इस "सरकार" को मान्यता देने वाला नहीं है...

पूंजीवादी अख़बार फ़िलहाल ग़ायब हो गये थे...

'प्राव्दा' ने नयी त्से-ई-काह् के, जो अब रूसी सोवियत जनतंत्र की संसद बन गयी थी, पहले अधिवेशन की एक रिपोर्ट छापी। अधिवेशन में कृषि-कमिसार मिल्यूतिन ने कहा कि किसानों की कार्यकारिणी समिति ने १३ दिसम्बर को अखिल रूसी किसान कांग्रेस बुलायी है।

"लेकिन हम तब तक इंतज़ार नहीं कर सकते," उन्होंने कहा। "हमारे लिए किसानों का समर्थन पाना जरूरी है। मेरा प्रस्ताव है कि हम किसानों की कांग्रेस बुलायें और फ़ौरन ही बुलायें..." वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने सहमति प्रगट की। रूस के किसानों के नाम अपील का एक मसौदा जल्दी जल्दी तैयार किया गया और इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए पांच आदमियों की एक समिति निर्वाचित की गई।

भूमि-वितरण की विशद योजना का प्रश्न तथा उद्योग पर मजदूरों के नियन्त्रण का प्रश्न तब तक के लिए मुल्तवी कर दिया गया, जब तक कि इन प्रश्नों का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञ अपनी रिपोर्ट न दें।

तीन आज्ञप्तियां[1] पढ़ी गयी और स्वीकृत की गयी: पहली, लेनिन की 'समाचारपत्रों के लिए सामान्य नियमावली', जिसके द्वारा यह आदेश दिया गया कि उन सभी अख़बारों को बंद किया जाये, जो नयी सरकार के प्रति प्रतिरोध और आज्ञाभंग के भाव को उभाड़ते है, अपराधपूर्ण कार्रवाइयों के लिए उकसावा देते हैं, या जान-बूझकर ख़बरों को तोड़ते-मरोड़ते हैं। दूसरी, मकानों के किरायों के अधिस्थगन संबंधी आज्ञप्ति और तीसरी, मजदूर मिलिशिया की स्थापना संबंधी। कई हुक्मनामे भी पढ़े गये; एक के द्वारा नगर दूमा को यह अधिकार दिया गया कि वह सभी ख़ाली मकानों और फ़्लैटों को अपने अधिकार में ले ले। दूसरा हुक्म यह था कि रेलवे स्टेशनों पर माल-गाड़ियों के डिब्बों का सामान उतारा जाये, ताकि आवश्यक वस्तुओं का शीघ्रतर वितरण हो सके और इंजनों और डिब्बों को, जिनकी बेहद जरूरत थी, दूसरी जगह काम के लिए ख़ाली किया जा सके...

16*

दो घंटे बाद किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति पूरे रूस मे निम्नलिखित तार प्रसारित कर रही थी :

"किसानों की अखिल रूसी काग्रेस के लिए संगठन-ब्यूरो" कहा जाने वाला बोल्शेविकों का मनमाना संगठन किसानों की सभी सोवियतों को आमन्त्रित कर रहा है कि वे अपने प्रतिनिधियों को पेत्रोग्राद मे होने वाली काग्रेस के लिए भेजें...

किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति घोषणा करती है कि पहले ही की तरह आज भी उसका यह विचार है कि इस घड़ी प्रांतों से उन शक्तियों को हटा लेना ख़तरनाक होगा, जो सविधान सभा के चुनावों की तैयारी के लिए वहा जरूरी है, जिस सभा के द्वारा ही मजदूर वर्ग तथा देश का कल्याण हो सकता है। हम किसानों की काग्रेस के लिए निर्धारित तिथि की पुष्टि करते हैं—यह तिथि है १३ दिसम्बर।

दूमा के अंदर सर्वत्र उत्तेजना फैली हुई थी, अफसर आ-जा रहे थे और मेयर महोदय उद्धार समिति के नेताओ के साथ सलाह-मशविरा कर रहे थे। एक सभासद केरेन्स्की की घोषणा की एक प्रति लिये दौड़ा दौड़ा आया, जिसे सैकड़ों की तादाद मे नेव्स्की मार्ग के ऊपर नीचे नीचे उड़ने वाले एक हवाई जहाज़ द्वारा गिराया गया था। घोषणा मे सभी बागियों और सरकशों को भयानक दंड देने की धमकी दी गई थी और सिपाहियों को हुक्म दिया गया था कि वे अपने हथियार डाल दें और फौरन मार्स मैदान में इकट्ठे हो।

हमें बताया गया कि मन्त्रि-सभापति ने त्सारस्कोये सेलो पर कब्जा कर लिया है और वह पेत्रोग्राद से पाच मील दूर पहुच चुके थे। वह कल ही—कुछ घंटों में ही—नगर मे प्रवेश करेंगे। कहा गया कि उनके कज्जाकों के साथ जिन सोवियत टुकड़ियों का सामना हुआ, वे अस्थायी सरकार की ओर चली जा रही हैं। चेर्नोव बीच में कही पर थे, वह "तटस्थ" सैनिकों को लेकर एक सेना सगठित करने का प्रयास कर रहे थे, ताकि गृहयुद्ध को रोका जा सके।

यूनियनों को छिन्न-भिन्न कर दिया है और उनकी सेनायें उत्तर की ओर बढ़ रही हैं...

रेल मज़दूरों के एक प्रतिनिधि ने कहा: "कल हमने रूस के कोने कोने एक तार भेजा, जिसमें हमने यह मांग की कि राजनीतिक पार्टियों के बीच युद्ध तत्काल बंद हो और इस बात का आग्रह प्रगट किया कि एक संयुक्त समाजवादी सरकार की स्थापना की जाये, नहीं तो हम कल रात से हड़ताल पर चले जायेंगे... सुबह इस प्रश्न का निबटारा करने के लिए सभी दलों की एक मीटिंग होगी। ऐसा लगता है कि बोल्शेविक समझौते के लिए उत्सुक हैं..."

"वे भला तब तक चल भी सकेंगे!" मोटे-ताज़े लाल टमाटर जैसे नगर इंजीनियर ने हंसते हुए कहा...

जब हम स्मोल्नी पहुंचे – ख़ाली होना तो दूर वहां और भी भीड़-भड़क्का था – झुंड के झुंड मज़दूर और सिपाही अंदर-बाहर दौड़ रहे थे और सभी जगह संतरियों की दोहरी चौकी तैनात थी। जब हम वहां पहुंचे, हमारी मुलाक़ात पूंजीवादी तथा "नरम" समाजवादी अख़बारों के रिपोर्टरों से हुई।

'वोल्या नरोदा' का एक रिपोर्टर चीख़ा, "उन्होंने हमें गर्दनिया देकर बाहर कर दिया! बोन्च-ब्रुयेविच नीचे प्रेस-ब्यूरो में तशरीफ़ ले आये और उन्होंने कहा कि हम चले जाये! कहा कि हम जासूस हैं!" वे सबके सब एक साथ बोलने लगे: "तौहीन! अंधेरगर्दी! प्रेस-स्वातंत्र्य का अपहरण!"

लॉबी में बड़ी बड़ी मेज़ों पर सैनिक क्रांतिकारी समिति की अपीलों, घोषणाओं और आदेशों के ढेर लगे थे। मज़दूर और सिपाही उनके भारी भारी बंडल उठाये, जिनके बोझ से वे दबे जा रहे थे, बाहर जा रहे थे। वहां मोटरें उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। एक बानगी यहां दी जाती है:

कठघरे में!

इस संकटकाल में, जिससे रूसी जन-साधारण गुज़र रहे हैं, मेन्शेविकों तथा उनके अनुयायियों ने और दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने

मजदूर वर्ग के साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने कोर्नीलोव, केरेन्स्की और साविन्कोव की ओर स्थान ग्रहण किया है...

वे गद्दार केरेन्स्की के आदेशों को छाप रहे हैं और उस भगोडे की काल्पनिक जीतों की बिल्कुल हास्यास्पद अफ़वाहें फैलाकर शहर में दहशत पैदा कर रहे हैं...

नागरिको! इन झूठे अफ़वाहों पर विश्वास मत कीजिये। कोई भी शक्ति जन-क्रांति को हरा नहीं सकती...केरेन्स्की और उनके अनुयायियों का एक ही भवितव्य है, उन्हे शीघ्र ही उचित दंड दिया जायेगा...

हम उन्हें कठघरे मे खड़ा कर रहे हैं। हम उन्हें उन मज़दूरों सिपाहियों, मल्लाहों और किसानों की क्रोधाग्नि को समर्पित कर रहे हैं, जिन्हें वे पुरानी जंजीरों में फिर से जकड़ना चाहते हैं। वे अपने शरीर से कभी भी जनता की घृणा तथा अवज्ञा का कलंक मिटा नहीं सकेंगे।

जनता से दगा करनेवाले इन गद्दारों को हजार लानतें और बद्दुआयें!

सैनिक क्रातिकारी समिति का दफ़्तर एक और बड़ी जगह में – सबसे ऊपर की मज़िल पर १७ नंबर के कमरे मे – कायम हो गया था। लाल गार्ड दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे। अंदर, रेलिंग के सामने जो थोडी सी जगह थी, वह सुंदर वेश-भूषा वाले व्यक्तियों से भरी थी, जो बाहर से चाहे जितने सभ्रात हों, अंदर से जहर के बुझे थे। ये वे बुर्जुआ लोग थे, जो अपनी मोटरों के लिए परमिट या शहर से रवानगी के लिए पासपोर्ट चाहते थे। उनमें कितने ही विदेशी थे... बिल शातोव और पेटेर्स ड्यूटी दे रहे थे। उन्होंने अपना सारा काम छोड़कर हमें ताज़ा बुलेटिनें पढ़कर सुनायी:

१७९ वीं रिज़र्व रेजीमेंट सर्वसम्मति से समर्थन जताती है। पुतीलोव-घाट के पांच हज़ार कुली नयी सरकार का अभिनदन करते हैं। 'ट्रेड-यूनियनों की केंद्रीय समिति – उत्साहपूर्ण समर्थन। रेवेल की गैरिसन तथा स्क्वाड्रन ने सहयोग स्थापित करने के लिए और सैनिकों को भेजने के लिए सैनिक

क्रांतिकारी समितियों का निर्वाचन किया है। प्स्कोव और मीन्स्क सैनिक क्रातिकारी समितियो के अधिकार में हैं।· त्सारीत्सिन, रोस्तोव-ग्रान-दोन, प्यातिगोर्स्क, सेवास्तोपोल की सोवियतें अभिवादन-संदेश भेजती हैं... फ़िनलैंडी डिवीजन, पांचवी तथा बारहवी सेनाओं की नयी समितिया वफादारी का एलान करती है...

मास्को से कोई पक्की ख़बर नही मिली है। सैनिक क्रातिकारी समिति के सैनिकों ने शहर के नाकों पर कब्जा कर लिया है। क्रेमलिन में तैनात दो कंपनिया सोवियतों की ओर हो गयी है, परंतु शस्त्रागार कर्नल रियाब्त्सेव और उनके युंकरों के हाथ मे है। सैनिक क्रातिकारी समिति ने मजदूरों को लैस करने के लिए हथियार मागे और रियाब्त्सेव ने आज सुबह तक समिति के साथ बातचीत चलायी और फिर यकायक उन्होने अल्टीमेटम की शक्ल मे हुक्म दिया कि सोवियत सैनिक समर्पण करे और समिति को भंग किया जाये। वहा लड़ाई शुरू हो गयी है...

पेत्रोग्राद मे सैनिक स्टाफ़ ने चू भी नही किया और स्मोल्नी के कमिसारो की आज्ञा का अविलंब पालन किया। त्सेन्त्रोफ़्लोत ने इनकार किया, लेकिन इस पर दिबेंको ने क्रोश्तादत के मल्लाहों की एक कंपनी को लेकर चढाई की, और बाल्टिक सागर तथा काले सागर के युद्धपोतो के समर्थन से एक नया त्सेन्त्रोफ़्लोत स्थापित किया गया...

इन सुखद समाचारों से जो आश्वासन उत्पन्न होता था, उसके बावजूद वातावरण मे एक प्रकार की आशंका, भय और घबराहट की भावना व्याप्त थी। केरेन्स्की के कज्ज़ाक तेजी से बढ़े आ रहे थे– उनके पास तोपखाना भी था। कारख़ाना समितियों के मंत्री स्क्रिप्निक ने, जिनके चेहरे पर चिंता की गहरी रेखायें थीं और रग उड़ा हुआ था, मुझे विश्वास दिलाया कि केरेन्स्की के पास कज्ज़ाकों का पूरा एक कोर है और फिर उन्होंने तेज होकर भैरव स्वर में कहा, "हम मरते दम तक उनसे लड़ेंगे!" पेत्रोव्स्की ने क्लात भाव से हसकर टीका की, "कल शायद हमें सोने को मिले–लंबी नींद सोने को! .." लाल दाढ़ी वाले लोजोव्स्की ने, जिनका चेहरा मुरझा हुआ और गाल पिचके हुए थे, कहा, "हमारे लिए भला क्या उम्मीद हो सकती है? बिल्कुल अकेले... प्रशिक्षित सैनिकों के ख़िलाफ़ एक भीड़!"

पेत्रोग्राद से दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम की ओर केरेन्स्की के सामने सोवियतों के पैर उखड़ गये थे। गातचिना, पाव्लोव्स्क, त्सारस्कोये सेलो की गैरिसनों में फूट पड़ गयी थी – आधे लोगों ने तटस्थ रहने के पक्ष में वोट दिये, और आधे, बग़ैर अफ़सरों के, पीछे राजधानी की ओर अस्त-व्यस्त भागे।

उधर सभा-कक्षों में बुलेटिनें चिपकाई जा रही थीं :

क्रास्नोये सेलो से, १० नवंबर, ८ बजे प्रातः।

सभी स्टाफ़ सेनापतियों, मुख्य सेनापतियों, सेनापतियों को, सर्वत्र, सबको सूचना के लिए।

भूतपूर्व मंत्री केरेन्स्की ने जान-बूझकर सभी जगह सभी को इस आशय का एक झूठा तार भेजा है कि क्रांतिकारी पेत्रोग्राद के सैनिकों ने स्वेच्छा से हथियार डाल दिये हैं और भूतपूर्व सरकार, ग़द्दार सरकार की सेनाओं में शामिल हो गये हैं, कि सैनिक क्रांतिकारी समिति ने अपने सिपाहियों को पीछे हटने का आदेश दिया है। स्वतंत्र जनता की सेना पीठ नहीं दिखाती, न ही वह अपने घुटने टेकती है।

हमारे सिपाहियों ने गातचिना को इसलिए छोड़ा कि उनके और उनके गुमराह भाइयों – कज़्ज़ाकों – के बीच ख़ून-ख़राबा न होने पाये और इसलिए भी कि वे एक अधिक सुविधाजनक स्थिति को ग्रहण कर सकें, जो इस समय इतनी अधिक शक्तिशाली है कि अगर केरेन्स्की और उनके मुसलेह साथी अपनी सेनाओं को दस गुना बढ़ा सकें, तो भी चिंता की कोई बात नहीं है। हमारे सैनिकों का मनोबल ख़ूब अच्छा है।

पेत्रोग्राद में पूरी शांति है।

पेत्रोग्राद तथा पेत्रोग्राद के हलक़े के रक्षा-अध्यक्ष
लेफ़्टीनेंट-कर्नल मुराव्योव

जब हम सैनिक क्रांतिकारी समिति के दफ़्तर से रुख़सत हो रहे थे, अन्तोनोव हाथ में कागज का एक पुर्जा लिये आये – उन्हें देखने से ऐसा लगता था, जैसे वह सीधे कब्र से उठे चले आ रहे हों।

"इसे रवाना करना है," उन्होंने कहा।

मजदूरों के प्रतिनिधियों की सभी वार्ड-सोवियतों तथा कारख़ाना समितियों के नाम

आदेश

केरेन्स्की के कोर्नीलोवपंथी गिरोहों ने राजधानी के प्रवेशमार्गों के लिए खतरा पैदा कर दिया है। जनता के और उसकी उपलब्धियों के विरुद्ध प्रतिक्रांतिकारी प्रयास को निर्ममता से कुचल देने के लिए सभी आवश्यक आदेश जारी किये गये हैं।

क्रांति की सेना तथा लाल गार्ड को इस बात की अपेक्षा है कि मज़दूर तुरत उनकी ओर सहारे का हाथ बढ़ायें।

हम वार्ड-सोवियतों और कारख़ाना समितियों को आदेश देते हैं:

१) खाइयां खोदने, बैरिकेड तैयार करने, कंटीले तारों की बाड़ खड़ी करने के लिए जितने भी ज़्यादा मज़दूर भेजे जा सकें, भेजे जायें।

२) जहां भी इसके लिए कारख़ानों में काम बंद करना ज़रूरी हो, ऐसा अविलंब किया जाये।

३) जितने भी मामूली और कंटीले तार मिल सकें, उन्हें मुहैया किया जाये और खाइयां खोदने और बैरिकेड खड़ा करने के लिए जो औज़ार मिलें, उन्हें भी इकट्ठा किया जाये।

४) जितने भी अस्त्र-शस्त्र उपलब्ध हो सकें, ले लिये जायें।

५) कठोर से कठोर अनुशासन का पालन किया जाये और हर आदमी क्रांतिकारी सेना का समस्त साधनों से समर्थन करने के लिए अवश्य प्रस्तुत रहे।

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के सभापति

जन-कमिसार लेव त्रोत्स्की

सैनिक क्रान्तिकारी समिति के सभापति

मुख्य सेनापति पोद्वोइस्की

जब हम बाहर धुंध और कुहासे में निकले, नगर के चतुर्दिक कारख़ानों के भोंपू बज रहे थे और उनकी परुष, कर्कश तथा व्याकुल ध्वनि

एक प्रकार से अलौकिक घटनाओं का पूर्वाभास देती थी। दसियों हजार कमकर—मर्द और औरतें—बाहर निकल पड़े थे। दुकान वालियों और चालों से बस्तियों हजार मटमैले और मैले-कुचैले लोग झुंड के झुंड टिड्डी दलों की तरह निकल पड़े थे। लाल पेत्रोग्राद खतरे में था! कज्जाक आ रहे थे! दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर से लोग तंग गलियों से होकर मोस्कोव्स्काया द्वार की ओर बढ़ रहे थे, बन्दूकें, फरसे-कुल्हाड़े, तार के बंडल लिये मर्द, औरतें और बच्चे, अपने काम करने के कपड़ों के ऊपर कारतूस की पेटियां डाले हुए... एक पूरा शहर इस तरह अपने आप बाहर निकल पड़ा हो, आज तक कभी भी ऐसा देखा नहीं गया! ऐसा लगता था, जैसे एक जन-समुद्र उमड़ पड़ा हो—सिपाहियों के दस्ते, तोपें, ट्रकें, छकड़ा-गाड़ियां, सब के सब उसी धारा में बहे जा रहे थे। क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग मजदूरों और किसानों के जनतंत्र की राजधानी को अपनी छाती ठोंक कर बचाने पर तुला हुआ था!

स्मोल्नी भवन के फाटक के बाहर एक मोटर-गाड़ी खड़ी थी, जिसके मडगार्ड का सहारा लेकर बेढंगे ढीले-ढाले ओवरकोट की जेबों में हाथ डाले एक दुबला-पतला आदमी खड़ा था। उसकी लाल आंखों पर मोटा चश्मा चढ़ा था, जिसकी वजह से वे और भी बड़ी दिखायी देती थीं। वह बोलता था, तो सप्रयास जैसे उसके लिए बोलना एक कठिन परिश्रम हो। पास ही एक लंबा-तड़ंगा दढ़ियल मल्लाह, जिसकी आंखें किशोर बालक की तरह स्वच्छ और पारदर्शक थीं, बेचैनी से चहलकदमी कर रहा था और एक बहुत बड़े नीले इस्पात के तमंचे से, जिसे वह अपने हाथ से क्षण भर के लिए भी अलग नहीं कर रहा था, अन्यमनस्क भाव से खिलवाड़ कर रहा था। ये अन्तोनोव और दिबेन्को थे।

कुछ सिपाही दो फौजी साइकलों को मोटर-गाड़ी के पायदान के साथ बांधने की कोशिश कर रहे थे, जिसपर ड्राइवर उग्र प्रतिवाद कर रहा था। गाड़ी के एनेमल पर खरोंच लग जायेगी, उसने कहा। यह सच है कि वह बोल्शेविक है और गाड़ी किसी पूंजीपति से जब्त की हुई है। यह भी सच है कि साइकलें अर्दलियों के इस्तेमाल के लिए थीं, फिर भी अपने पेशे में ड्राइवर को जो अभिमान था, वह इन साइकलों से आहत हो रहा था... लिहाजा साइकलों को छोड़ दिया गया...

युद्ध तथा नौसेना के जन-कमिसार क्रांतिकारी मोर्चे के – यह मोर्चा जहां भी हो – मुग्राइने के लिए जा रहे थे। क्या हम भी साथ जा सकते हैं? नही, क़तई नही। मोटर मे सिर्फ़ पांच ग्रादमियों के लिए जगह है, दो कमिसार, दो ग्रर्दली, एक ड्राइवर। ताहम मेरे परिचित एक रूसी सज्जन, जिन्हे मै तुसीश्का कहूंगा, गाड़ी के ग्रंदर चुपचाप बैठ गये ग्रौर कोई भी तर्क उन्हें हिला न सका – वह वहा मजे से बैठे रहे...

तुसीश्का ने इस यात्रा की जो कहानी मुझे सुनायी, मुझे उसमे शक करने की कोई वजह दिखायी नही देती। जब वे सुवोरोव्स्की मार्ग से जा रहे थे, किसी ने खाने-पीने की बात उठायी। हो सकता है उन्हें एक ऐसे इलाके मे तीन-चार दिन बिताना पड़े, जहा रसद-पानी का माकूल इतज़ाम न हो। गाड़ी रोक ली गयी। लेकिन पैसे? युद्ध-कमिसार ने ग्रपनी जेबों को उलट डाला – उनमे एक फूटी कौड़ी भी न मिली। नौसेना-कमिसार भी बिल्कुल दिवालिया निकले। ड्राइवर के पास भी एक टका न था। लिहाजा तुसीश्का ने ही खाने-पीने का सामान ख़रीदा...

जैसे ही वे नेव्स्की मार्ग में मुड़े, एक टायर बोल गया।

"ग्रब क्या किया जाये?" ग्रन्तोनोव ने पूछा।

"दूसरी गाड़ी ज़ब्त कर लो!" दिवेन्को ने ग्रपना रिवाल्वर घुमाते हुए सुझाव दिया। ग्रन्तोनोव ने सड़क के बीचोंबीच खड़े होकर उधर से गुज़रने वाली एक गाड़ी को रुकने का इशारा किया।

"मुझे यह गाड़ी चाहिए," ग्रन्तोनोव ने कहा।

"ग्रापको यह गाड़ी नही मिलेगी," सिपाही ने जवाब दिया।

"तुम जानते हो, मै कौन हूं?" ग्रन्तोनोव ने ग्रपनी जेब से एक पर्चा निकालते हुए कहा, जिस पर लिखा हुग्रा था कि उन्हे रूसी जनतंत्र की सभी सेनाग्रों का मुख्य सेनापति नियुक्त किया जाता है ग्रौर यह कि हर ग्रादमी को बिना चू भी किये उनकी ग्राज्ञा का पालन करना चाहिए।

"ग्राप मुजस्सिम शैतान भी हों, तो क्या हुग्रा! मेरे ठेंगे से!" सिपाही ने गरम होकर कहा। "यह गाड़ी पहली मशीनगन रेजीमेंट की है ग्रौर हम उसमें गोला-बारूद ले जा रहे हैं। ग्राप हरगिज इसे पा नही सकते..."

उसी वक़्त एक पुरानी भुरभुस टैक्सी-गाड़ी के ग्रा जाने से यह मुश्किल हल हो गई। टैक्सी के बानेट पर इटालवी झंडा लगा हुग्रा था (ग्रशान्ति-

काल में प्राइवेट गाड़ियां विदेशी दूतावासों के नाम रजिस्टर की जाती थीं, ताकि वे जब्ती से महफ़ूज़ रहें)। गाड़ी के अंदर से क़ीमती फ़र-कोट पहने एक मोटे-ताज़े सज्जन बिला मुलाहज़ा नीचे उतार दिये गये और उसमें सवार होकर निरीक्षण-दल आगे बढ़ा।

वहां से क़रीब दस मील दूर नार्वस्काया ज़ास्तावा पहुंचकर अन्तोनोव ने लाल गार्डों के कमांडर को तलब किया। उन्हें शहर के बिल्कुल एक छोर पर ले जाया गया, जहां कई सौ मज़दूर खाइयां खोदकर कज़्ज़ाकों के आने का इंतज़ार कर रहे थे।

"यहां सब ठीक-ठाक है, कामरेड?" अन्तोनोव ने पूछा।

"सब चाक-चौबन्द है, कामरेड," कमांडर ने जवाब दिया। "सैनिकों में बड़ा उत्साह है... बस एक चीज़ की कसर है – हमारे पास गोला-बारूद नहीं है..."

"स्मोल्नी में दो अरब कारतूस पड़े हुए हैं," अन्तोनोव ने कहा। "ठहरिये, मैं आपको आर्डर लिखे देता हूं।" उन्होंने अपनी जेबों में हाथ डाला। "क्या किसी के पास काग़ज़ है?"

काग़ज़ न दिवेन्को के पास था और न अर्दलियों के पास। लाचारी दर्जे वुसीश्का को अपनी नोटबुक बढ़ानी पड़ी।

"कम्बख़्त, मेरे पास पेंसिल भी नहीं है!" अन्तोनोव ने खीझकर कहा। "किसी के पास पेंसिल है?" कहने की जरूरत नहीं, कि अगर इस मजमे में किसी के पास पेंसिल थी, तो वुसीश्का के पास...

हम लोग, जो पीछे रह गये थे, त्सारस्कोये सेलो स्टेशन की ओर बढ़े। जब हम नेव्स्की मार्ग से जा रहे थे, हमने देखा कि लाल गार्ड मार्च कर रहे हैं। सबके सब हथियारों से लैस थे, गो कुछ के पास संगीनें थीं और कुछ के नहीं। जैसा जाड़ों में होता है, दिन के तीसरे पहर ही शाम का झुटपुटा होने लगा था। ये गार्ड चार चार की बे-तरतीब कतार में ठंड में, पानी और कीचड़ में सीना ताने मार्च कर रहे थे, उनके साथ न बैंडबाजा था, न भेरी-तुरही। एक लाल झंडा, जिस पर सुनहरे पर भोंडे अक्षरों में अंकित था, "शांति! भूमि!" उनके ऊपर लहरा रहा था। ये सारे गार्ड जवानी में पैर रख ही रहे थे। उनके चेहरों पर ऐसा भाव

था कि वे मर-मिटने के लिए तैयार हैं... पटरी पर जमा भीड़ उन्हें कुछ दहशत और कुछ हिकारत से देख रही थी। वह ख़ामोश थी, मगर उसकी ख़ामोशी मे नफ़रत का जज्बा था।

रेलवे स्टेशन पर किसी को भी इस बात का पता न था कि केरेन्स्की कहा पर है, या लड़ाई का मोर्चा कहां पर है। रेल-गाड़ियां त्सारस्कोये सेलो से आगे नही जा रही थी...

हमारे डिब्बे मे देहातियों की भरमार थी, जो सामान के बंडल लादे और शाम के अख़बार लिये घर लौट रहे थे। बातचीत का एक ही विषय था – बोल्शेविको का विद्रोह। लेकिन इस बातचीत के अलावा ऐसी कोई बात नही थी, जिससे यह महसूस हो कि गृहयुद्ध विशाल रूस को दो खंडो में बाट रहा है, या यह कि रेल-गाड़ी सीधे लड़ाई के इलाक़े मे जा रही है। खिड़की से बाहर तेज़ी से घिरते हुए अधेरे मे हम झुड के झुड सिपाहियों को देख सकते थे, जो कीचड़-भरी सड़क से शहर की ओर जा रहे थे और जो आपस मे बहस करते हुए अपने हाथो को झटका दे रहे थे। हमने बड़े बड़े अलावों की रोशनी मे देखा, सैनिको से खचाखच भरी एक माल-गाड़ी साइडिग मे खड़ी थी। युद्ध के बस ये ही लक्षण थे। हमारे पीछे क्षितिज-रेखा पर शहर की बत्तियों का प्रकाश मद्धिम होता हुआ रात के अधेरे मे खो गया था। दूर-परिसर मे एक ट्राम-गाड़ी रेंग रही थी...

त्सारस्कोये सेलो स्टेशन शान्त था, लेकिन जहा-तहा सिपाहियो के छोटे-छोटे झुड खडे थे, वे आपस मे धीरे धीरे बात कर रहे थे और चिंतित भाव से गातचिना की ओर रेल की खाली पटरी पर निगाह दौड़ा रहे थे। कुछ सिपाहियो से मैंने पूछा कि वे किस तरफ़ है। एक ने जवाब दिया, "भई, हम ठीक ठीक नही जानते कि कौन सही है, कौन गलत.... इसमें शक नहीं कि केरेन्स्की उकसावेबाज है, लेकिन रूसी रूसियों पर गोली चलायें, इसे हम अच्छा नही समझते।"

स्टेशन कमाडेंट के दफ़्तर में एक लहीम-शहीम, हंसमुख दढ़ियल सिपाही, अदना सिपाही, रेजीमेंट-समिति का लाल बिल्ला लगाये खड़ा था। स्मोल्नी ने हमें जो प्रत्यय-पत्र मिला था, उसका तुरत असर हुआ। स्पष्टतः यह सिपाही सोवियतों का पक्षधर था, परतु वह उलझन में पड़ा हुआ था।

"अभी दो घंटा पहले लाल गार्ड यहां थे, लेकिन फिर वे चले गये। एक कमिसार सुबह यहा तशरीफ ले आये थे, लेकिन जब कज्जाक पहुंचे, तो वह वापिस पेत्रोग्राद चले गये।"

"तो क्या कज्जाक यहां मौजूद हैं?"

उसने अफ़सोस के साथ सिर हिला कर सकेत किया कि हां, है। "यहां लड़ाई हुई है। कज्जाक तड़के ही यहां पहुचे। उन्होने हमारे दो-तीन सौ आदमियों को पकड़ लिया और क़रीब पच्चीस का सफ़ाया कर डाला।"

"कज्जाक कहां पर है?"

"भई, वे यहां तक पहुंचे नही। मै ठीक नही जानता कि वे कहा हैं। शायद उधर की ओर..." उसने अपने हाथ से पश्चिम की ओर अस्पष्ट सकेत करते हुए कहा।

हमने स्टेशन के रेस्तोरां मे खाना खाया – खाना वड़ा अच्छा था, पेत्रोग्राद में जैसा खाना मिल सकता था, उससे वेहतर और सस्ता भी। हमारे पास ही एक फ़ासीसी अफ़सर वैठा था, जो अभी अभी गातचिना से पैदल यहा पहुंचा था। गातचिना मे पूरी शाति है, उसने वताया। शहर केरेन्स्की के हाथ में है। "ये रूसी भी ख़ूब हैं!" उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। "वे अपना सानी नही रखते! अच्छा गृहयुद्ध है यह! जिसमे युद्ध नही है, वाकी सब कुछ है!"

हम शहर की ओर चल दिये। ऐन स्टेशन के फाटक पर दो सिपाही सगीनें लिये खड़े थे, और उनके चारों ओर क़रीव एक सौ व्यापारियों, सरकारी कर्मचारियों और विद्यार्थियों की भीड़ थी, जो उन पर तर्कों और शब्दवाणों की धुआधार बौछार कर रहे थे। उन वच्चों की तरह जिन्हें बेवजह डाटा गया हो, ये सिपाही आकुल और आहत भाव से उनकी ओर देख रहे थे।

विद्यार्थियों की वर्दी पहने लम्बे कद का एक नौजवान, जिसके चेहरे पर एक प्रकार का उद्धत भाव था, सबसे आगे बढ़कर चोट कर रहा था। उसने उद्दंडता से कहा, "मेरा ख़्याल है आप इस वात को समझते हैं कि अपने ही भाइयों के ख़िलाफ़ हथियार उठाकर आप अपने को हत्यारों और गद्दारों के हाथ का खिलौना बना रहे हैं?"

"भाई, आप नही समझते," सिपाही ने गंभीरता से उत्तर

दिया। "देखिये न, समाज के दो वर्ग है–सर्वहारा और पूजीपति। हम..."

"मै इन वाहियात बातो को बखूबी जानता हूं!" विद्यार्थी ने ढिठाई से उसकी बात काट कर कहा। "आप जैसे कुछ मूढ़, गंवार किसानों ने किसी को चार नारे लगाते हुए सुन लिया और बस लगे आप लोग तोतो की तरह रट लगाने। उनका मतलब क्या है, यह आप खाक-पत्थर कुछ नही समझते!" लोग उसकी बात पर हस पड़े। "मै मार्क्सवादी विद्यार्थी हू, और मै आपको बताता हूं कि आप जिस चीज के लिये लड़ रहे हैं वह कतई समाजवाद नही है। वह सरासर अराजकता है, जिससे बस जर्मनो का उल्लू सीधा होता है!"

"जी हा, मै जानता हू," सिपाही ने जवाब दिया और उसके माथे पर पसीने की बूदें चमक रही थी। "मै सहज ही देख सकता हूं कि आप पढे-लिखे आदमी है और मै ठहरा सीधा-सादा आदमी। फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि..."

विद्यार्थी ने फिर बड़ी हिकारत से उसकी बात काटते हुए कहा, "मेरा ख्याल है आप समझते है, लेनिन सचमुच सर्वहारा वर्ग के बड़े भारी दोस्त है?"

"हा, मै समझता हूं," सिपाही ने आहत भाव से उत्तर दिया।

"तो मेरे दोस्त, क्या आप जानते है कि लेनिन को एक बद गाड़ी मे जर्मनी होकर यहा भेजा गया था? क्या आप जानते है कि लेनिन ने जर्मनो मे पैसा लिया है?"

"भई, मै इन सब बातों के बारे मे कुछ भी नही जानता," सिपाही ने हठपूर्वक कहा, "लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि लेनिन वही बात कहते है, जो मै और मेरे जैसे सभी सीधे-सादे आदमी सुनना पसद करते है। अब यही लीजिये, समाज के अदर दो वर्ग है, पूजीपति और सर्वहारा..."

"आप है बिल्कुल सिड़ी! आपको मालूम है, मेरे दोस्त, कि मैंने क्रांतिकारी कार्रवाइयों के लिये श्लिसेलबुर्ग मे दो साल काटे है। उस समय, जब आप क्रांतिकारियों पर गोली चला रहे थे और अला[illegible] 'ईश्वर जार को बचाये!' मेरा नाम [illegible] गेओर्गियेविच [illegible] कभी भी मेरे बारे मे न[illegible]

№ 208.
Пятница,
27 октября 1917 г.

ИЗВѢСТІЯ

ЦѢНА:
въ Петроградѣ 15 к.
на ст. жел. д. 18 к.

Центральнаго Исполнительнаго Комитета

И ПЕТРОГРАДСКАГО СОВѢТА

РАБОЧИХЪ и СОЛДАТСКИХЪ ДЕПУТАТОВЪ

Адресъ конторы: Лиговка, Гусевъ пер., д. № 6. Телефонъ № 218 41
Адресъ редакціи: Смольный Институтъ, 2-й этажъ, комната № 144. Телефонъ № 3б-39

Декретъ о мирѣ,

принятый единогласно на засѣданіи Всероссійскаго Съѣзда Совѣтовъ Рабочихъ, Солдатскихъ и Крестьянскихъ Депутатовъ 26 октября 1917 г.

'इज्वेस्तिया' (२७ अक्तूबर, १९१७) में शान्ति की आज्ञप्ति।

'क्रांति सम्पन्न हुई है' (व० अ० सेरोव के चित्र, 'लेनिन द्वारा सोवियत सत्ता की घोषणा' से)।

की जेबों में हाथ डाले घूम रहा था, उसने हमें सिर से पैर तक संदेह की दृष्टि से देखा। "दो दिन पहले सोवियत दफ़्तर यहा से चला गया," उसने बताया। "कहां ?." उसने अपने कधे सिकोड़ कर जवाब दिया, "न्ये जनायू" (मुझे नही मालूम)।

जरा दूर आगे बढ़कर एक बड़ी इमारत थी, रोशनी से जगमग। अदर से खटाखट हथौड़ा चलने की आवाज़ आ रही थी। हम असमजस मे खड़े थे कि इतने मे एक सिपाही और एक मल्लाह हाथ में हाथ दिये उधर निकले। स्मोल्नी का अपना पास दिखाते हुए मैंने उनसे पूछा, "आप क्या सोवियतों की ओर है ?" उन्होने जवाब नही दिया, बल्कि घबराये से एक-दूसरे का मुह देखने लगे।

मल्लाह ने इमारत की ओर इशारा करके पूछा, "अंदर क्या हो रहा है ?"

"मै नही जानता।"

सिपाही ने हिचकिचाते हुए अपना हाथ बढ़ाकर एक पल्ला ज़रा सा खोला। अदर एक बड़े हॉल में, जिसे झडियों और वंदनवार से सजाया गया था, कुर्सियों की क़तारें लगाई जा रही थी और एक स्टेज बनाया जा रहा था।

एक मोटी-ताज़ी औरत, जिसके हाथ मे हथौड़ा था और मुह मे कीले दबी हुई थी, बाहर निकली। "आप क्या चाहते है ?" उसने पूछा।

"आज क्या यहा कोई शो होने जा रहा है ?" मल्लाह ने भर्राई हुई आवाज़ मे पूछा।

"इतवार की रात को यहा प्राइवेट शो होगा – ड्रामे होंगे," औरत ने सख़्त लहजे में जवाब दिया, "इस वक़्त यहा से चले जाओ।"

हमने सिपाही और मल्लाह से बातचीत करने की कोशिश की, लेकिन वे परेशान और घबराये हुए लगते थे, और हमसे बात न करके वे अंधेरे मे गायब हो गये।

दूर दूर तक फैले अंधेरे बागों के किनारे किनारे टहलते हुए हम शाही महलों की ओर बढ़े। इन बागों के विचित्र मण्डप और सजावटी पुल रात मे धुधले धुधले से दिखाई दे रहे थे और उनके फव्वारों से पानी के छींटे हलके हलके छूट रहे थे। एक जगह, जहा एक नकली गुफा मे एक अजीबोग़रीब आहनी हंस के मुह से बराबर पानी की धार निकल रही थी,

हमें एकाएक महसूस हुआ कि कोई हमें देख रहा है। सिर ऊपर उठाते ही हमारी निगाहें आधे दर्जन लम्बे-तड़ंगे हथियारबंद सिपाहियों की शक और गुस्सा भरी निगाहों से मिलीं – वे एक हरे-भरे लान में खड़े नीचे हमारी ओर कड़ी नजर से देख रहे थे। मैं ऊपर चढ़ कर उनके पास चला गया। "आप लोग कौन हैं?" मैंने पूछा।

"हम यहां की गारद के सिपाही हैं," एक ने जवाब दिया। वे सब बड़े उदास और खिन्न दिखाई दे रहे थे, और वास्तव में हफ़्तों से चलने वाली रात-दिन की बहस और तक़रार से वे बुरी तरह ऊब चुके थे।

"आप केरेन्स्की के सिपाही हैं या सोवियतों के?"

वे क्षण भर व्यग्र भाव से एक-दूसरे का मुंह देखते रहे, एक लमहे तक ख़ामोशी रही और फिर उसी सिपाही ने जवाब दिया, "हम तटस्थ हैं।"

सदर मुकाम का पता पूछते हुए हम लोग विशाल येकातेरीना प्रासाद के तोरण-द्वार से निकल कर प्रासाद के प्रांगण में आ गये। प्रासाद के एक गोलाकार खंड के एक दरवाजे के बाहर खड़े संतरी ने बताया कि कमांडेंट अंदर तशरीफ़ रखते हैं।

एक जार्जियाई ढंग के बने ख़ूबसूरत काफ़ूरी कमरे में, जिसे एक दोहरे आतिशदान ने दो ग़ैर-बराबर हिस्सों में बांट दिया था, अफ़सरों की एक मंडली खड़ी बातचीत कर रही थी। उनके चेहरों का रंग उड़ा हुआ था और वे परेशान नज़र आते थे। जाहिर था कि वे कई रातों से सोये नहीं थे। उनमें एक अधेड़ सा आदमी था, जिसकी दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो चुके थे और जिसकी वर्दी पर तमगों की भरमार थी। हमें बताया गया कि वह कर्नल है, और हमने उसे अपने बोल्शेविकों के दिये काग़ज़ात दिखाये।

उसने अचकचा कर नर्मी से पूछा, "आप लोग यहां जिन्दा पहुंच कैसे गये? इस वक़्त तो सड़कों पर निकलना अपनी जान को जोखिम में डालना है। त्सारस्कोये सेलो में बेतरह राजनीतिक उत्तेजना फैली हुई है। आज सुबह ही यहां लड़ाई हुई है और कल सुबह फिर होने वाली है। आठ बजे केरेन्स्की शहर में दाख़िल होने वाले हैं।"

"कज़्ज़ाक सिपाही किस जगह हैं?"

"उधर करीब एक मील दूर," उसने हाथ का इशारा किया।

"और आप उनके हमले से शहर को बचायेंगे?"

17*

"ग्रो, नही भाई, नही," उसने मुस्करा कर कहा। "हम केरेन्स्की के लिये ही तो शहर पर कब्जा किये हुए हैं।" यह सुनना नही था कि हमारा दिल बैठ गया, क्योंकि हमारे पासों में साफ साफ़ लिखा हुग्रा था कि हम पक्के क्रातिकारी हैं। कर्नल ने खास कर कहा, "ग्रापके इन पासों के बारे मे मैं कहना चाहता हू कि ग्रगर कही ग्राप पकड़े गये, तो ग्रापकी जान पर ग्रा बनेगी। इसलिये ग्रगर ग्राप लड़ाई देखना ही चाहते हैं, तो मैं ग्रादेश दूगा कि ग्रफ़सरो के मेस मे ग्रापको कमरे दिये जायें ग्रौर ग्रगर ग्राप सुबह सात बजे फिर यहा ग्रायें, तो मैं ग्रापको नये पास दूगा।"

"इसका मतलब है ग्राप केरेन्स्की की ग्रोर हैं," हमने कहा।

कर्नल ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया, "ठीक केरेन्स्की की ग्रोर तो नही। बात यह है कि गैरिसन के ग्रधिकाश सिपाही बोल्शेविक हैं ग्रौर ग्राज लड़ाई के बाद वे सब पेत्रोग्राद की ग्रोर चले गये ग्रौर ग्रपने साथ तोपखाना भी लेते गये। ग्राप चाहें तो कह सकते हैं कि केरेन्स्की की ग्रोर एक भी सिपाही नही है। लेकिन यह बात जरूर है कि कुछ सिपाही किसी भी सूरत मे लड़ना नही चाहते। ग्रफ़सर जितने हैं सब केरेन्स्की की सेना मे शामिल हो गये हैं, या बस चम्पत हो गये हैं। हू, ग्राप देखते हैं न, हम कितनी कठिन स्थिति मे हैं..."

हमें इस बात का यक़ीन नही था कि यहां सचमुच लड़ाई होगी... कर्नल ने सौजन्य से ग्रपने ग्रर्दली को स्टेशन तक हमारे साथ कर दिया। ग्रर्दली दक्षिण मे बेसाराबिया का रहने वाला था ग्रौर उसके मा-बाप फ़ासीसी थे, जो ग्राकर बेसाराबिया मे बस गये थे। रास्ते भर वह यही कहता रहा, "मुझे न ख़तरे की परवाह है, न मुसीबतों की। मुझे ग्रगर फ़िक्र है, तो सिर्फ़ इस बात की कि मुझे ग्रपनी मा से जुदा हुए इतने दिन—पूरे तीन साल—हो गये..."

जब हमारी गाड़ी ठंड ग्रौर ग्रधेरे मे पेत्रोग्राद की ग्रोर भागी जा रही थी, मैंने खिड़की से बाहर झाका ग्रौर मुझे ग्रलावों की रोशनी में जोर जोर से हाथ हिला कर बात करते हुए, दल के दल सिपाहियों की ग्रौर चौराहों पर एक साथ ठहरी हुई झुड की झुड बख़्तरबद गाड़ियों की भी झलक मिली, जिनके ड्राइवर गाड़ियों की टरेट से गर्दन निकाल कर एक-दूसरे को ग्रावाजें दे रहे थे...

उस प्रशान्त, क्षुब्ध रात्रि मे, उजाड मैदानों मे उलझन मे पड़े नेतृत्वहीन सिपाहियों और लाल गार्डो के बदहवास झुंड एक दूसरे से टकराते घूम रहे थे। सैनिक क्रान्तिकारी समिति के कमिसार एक दल से दूसरे दल के पास दौड़ रहे थे और किसी प्रकार नगर की रक्षा सगठित करने का प्रयास कर रहे थे।

वापिस शहर पहुंच कर हमने देखा, नेव्स्की मार्ग पर उत्तेजित लोगों की भीड़ उमड़ रही थी – कुछ लोग गोल बाधे ऊपर की ओर जा रहे थे, तो कुछ नीचे आ रहे थे। हवा मे सनसनी थी। वार्सा रेलवे स्टेशन से दूर कही गोलाबारी होने की आवाज़ सुनी जा सकती थी। युंकर स्कूलो मे बड़ी सरगर्मी थी। दूमा के सदस्य एक बारिक से दूसरी बारिक जा रहे थे, वे सिपाहियों के साथ बहस करते, उन्हे समझाते-बुझाते और बोल्शेविक हिंसा की भयानक कथाये सुनाते – शिशिर प्रासाद में युंकरों का क़त्ले-आम, महिला सैनिकों के साथ बलात्कार, दूमा-भवन के सामने एक लड़की पर गोली का चलाया जाना, शाहज़ादा तुमानोव की हत्या... दूमा-भवन के अलेक्सान्द्र हॉल मे उद्धार समिति का विशेष अधिवेशन हो रहा था। कमिसार दौड़-भाग रहे थे, कोई लपका हुआ चला आ रहा था, तो कोई जा रहा था... स्मोल्नी से जिन पत्रकारो को निकाल दिया गया था, वे यहां मौजूद थे और बड़े जोश में थे। त्सारस्कोये सेलो के हालात के बारे मे हमने उन्हे जो रिपोर्ट दी, उस पर उन्हे एतबार न आया। खूब! सभी जानते है कि त्सारस्कोये सेलो केरेन्स्की के हाथ मे है और अब कज़्ज़ाक सिपाही पूल्कोवो मे पहुंच गये है। सबेरे रेलवे स्टेशन पर केरेन्स्की की अगवानी के लिये एक समिति का निर्वाचन किया जा रहा था...

एक पत्रकार ने कड़ी ताकीद करते हुए कि किसी के कान में इस बात की भनक न पड़े, मुझे गुप-चुप बताया कि आज आधी रात को प्रतिक्रांति शुरू होने वाली है। उसने मुझे दो घोषणाये दिखायी – एक में, जो गोत्स और पोल्कोवनिकोव के दस्तखत से जारी की गयी थी, युंकर स्कूलो, अस्पतालों में स्वास्थ्यलाभ करते हुए सिपाहियों और सेंट जार्ज के शूरवीरो को आदेश दिया गया था कि वे लड़ाई के लिए तैयार हो जायें और उद्धार समिति के आदेशो की प्रतीक्षा करें। दूसरी, स्वयं उद्धार समिति द्वारा जारी की गयी घोषणा मे लिखा था:

पेत्रोग्राद की आबादी के नाम!

साथियो, मज़दूरो, सिपाहियो तथा क्रांतिकारी पेत्रोग्राद के नागरिको!

बोल्शेविक लोग जहां मोर्चे पर शांति के लिए अपील कर रहे हैं, वहीं पिछाये में गृहयुद्ध भड़का रहे हैं।

उनकी भड़काने वाली अपीलों पर कान मत दीजिये!

खाइयां मत खोदिये!

ग़द्दारों के बैरिकेडों का नाश हो!

अपने हथियार डाल दीजिये!

सिपाहियो, अपनी बारिकों में वापस चले जाइये!

पेत्रोग्राद में जो लड़ाई शुरू हुई है, उसका मतलब है क्रांति की मौत!

स्वतंत्रता, भूमि तथा शांति के नाम पर देश तथा क्रांति की उद्धार समिति के गिर्द एकजुट होइये!

जब हम दूमा से लौट रहे थे, हमने देखा लाल गार्डों की एक कंपनी अंधेरी सूनी सड़क पर मार्च करती हुई आ रही है— उनके मुंह पर एक कठोर भाव था, और वे लड़ने-मरने के लिए तैयार थे। वे एक दर्जन क़ैदियों को साथ लिये जा रहे थे—ये कज्जाक-परिषद् की स्थानीय शाखा के सदस्य थे, जिन्हें अपने सदर दफ़्तर में प्रतिक्रांतिकारी षड्यंत्र रचते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया था...

एक सिपाही, जिसके साथ एक बर्तन में लेई लिये एक छोटा सा लड़का था, एक बड़ा सा भड़कीला पोस्टर चिपका रहा था:

वर्तमान आदेश द्वारा यह एलान किया जाता है कि पेत्रोग्राद शहर और शहर के आस-पास के इलाके मुहासिरे की स्थिति में हैं। जब तक आगे और आदेश न दिये जायें, सड़कों पर और सामान्यतः खुली जगहों में सभाओं और जमावड़ों की मनाही की जाती है।

सैनिक क्रांतिकारी समिति के अध्यक्ष

न० पोद्वोइस्की

जब हम घर लौट रहे थे, हवा में तरह तरह की आवाज़ें गूज रही थीं – मोटर का भोंपू, चीखें, दूर कहीं गोली छूटने की आवाज़। शहर जाग रहा था – क्षुब्ध और बेचैन।

सवेरे तड़के युंकरों की एक कम्पनी सेम्योनोव्स्की रेजीमेंट के सिपाहियों का वेश धारण कर टेलीफोन एक्सचेंज पर ठीक पहरा बदलने के वक़्त आयी। उन्होंने बोल्शेविक संकेत-शब्द दिया और बग़ैर किसी तरह का शक पैदा किये एक्सचेंज पर क़ब्ज़ा कर लिया। ज़रा देर बाद अन्तोनोव मुआयने के अपने दौरे के सिलसिले में वहां आये। उन्हें गिरफ़्तार कर के एक छोटी सी कोठरी में डाल दिया गया। जब कुमक आयी, उसका गोलियों की बौछार से स्वागत किया गया। कई सिपाही मारे गये।

प्रतिक्रांति शुरू हो गयी थी...

आठवां अध्याय

प्रतिक्रान्ति

दूसरे दिन इतवार पड़ता था और तारीख ग्यारह। कज़्ज़ाकों ने सुबह ही त्सारस्कोये सेलो में प्रवेश किया – केरेन्स्की[1] स्वयं एक सफ़ेद घोड़े पर सवार थे। उनके स्वागत मे गिरजाघरों के घंटे टनटना रहे थे। शहर के बाहर एक छोटी सी पहाड़ी की चोटी से सुनहरी मीनारे और रग-बिरंगे गुबद देखे जा सकते थे, एक बीहड़ मैदान मे दूर दूर तक बेतरतीब फैली हुई राजधानी की धुंधली-धुंधली आकृति नजर आ रही थी। उससे और दूर फ़िनलैंड की खाड़ी का इस्पाती रग झलक रहा था।

लड़ाई तो नही हुई, लेकिन केरेन्स्की ने एक भयंकर भूल की। सात बजे सुबह उन्होंने दूसरी त्सारस्कोये सेलो राइफ़ल्स को सदेश भेजा कि वे अपने हथियार डाल दें। सिपाहियों ने जवाब दिया कि वे तटस्थ रहेंगे, लेकिन हथियार नही डालेंगे। केरेन्स्की ने उन्हे इस हुक्म की तामील के लिए दस मिनट का वक़्त दिया। सिपाहियों का गुस्सा भड़क उठा। आठ महीनों से उन्होंने अपनी समिति को छोड़ कर किसी के हुक्म [illegible] नही की थी और अब फिर वही ज़ारशाही के जमाने का [illegible] मिनट ही बीते होंगे कि कज़्ज़ा[illegible] ने बारिक प[illegible] कर दी। आठ आदमी मारे [illegible] से त्सारस्को[illegible] सिपाही न रह गये...

सवेरे उठने के साथ ही पेत्रोग्राद के लोगों के कानों में गोलियां छूटने की ग्रौर मार्च करते हुए सिपाहियों के भयानक पदचाप की आवाज आयी। आकाश कुहासाच्छन्न था ग्रौर ठंडी हवा बर्फबारी का आभास दे रही थी। तड़के युंकरों के बड़े बड़े दस्तों ने सैनिक होटल और तारघर पर कब्ज़ा कर लिया था, लेकिन उन्हें वापस ले लिया गया था, हालांकि इसके लिए बहुत सा ख़ून बहाना पड़ा था। टेलीफ़ोन पर मल्लाहों ने घेरा डाल दिया था, जो मोर्स्कांया मार्ग के बीचोंबीच पीपों, बक्सों ग्रौर टीन की चादरों के बैरीकेड के पीछे से, या गोरोखोवाया तथा सेंट इसाक चौक की मोड़ पर छिप कर वहां से गोलियां चला रहे थे ग्रौर किसी भी हिलती हुई चीज को ग्रपना निशाना बना रहे थे। कभी कभी रेड क्रास का झंडा लगाने एक मोटर-गाड़ी ग्रंदर जाती ग्रौर बाहर आती। मल्लाहों ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की...

एल्बर्ट रीस विलियम्स* टेलीफ़ोन एक्सचेंज में थे। जब रेड क्रास की गाड़ी ज़ाहिरा घायलों से भरी बाहर निकली, वह भी उसमें थे। शहर में इधर-उधर चक्कर लगाने के बाद गाड़ी टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होकर प्रतिक्रांति के केंद्र मिख़ाइलोव्स्की युंकर स्कूल पहुंची। स्कूल के अहाते में मौजूद एक फ्रांसीसी ग्रफ़सर प्रत्यक्षतः इन कार्रवाइयों का संचालन कर रहा था... इसी तरीके से गोला-बारूद ग्रौर दूसरा सामान टेलीफ़ोन एक्सचेंज पहुंचाया जा रहा था। बीसों ऐसी ऐंबुलेंस-गाड़ियां युंकरों के लिए संदेश ग्रौर गोला-बारूद पहुंचाने का काम कर रही थीं।

युंकरों के हाथ में पांच–छः बख़्तरबंद गाड़ियां थीं, जो दर असल ब्रिटिश बख़्तरबंद गाड़ी डिवीज़न की गाड़ियां थीं जिसे विघटित कर दिया गया था। जिस समय लुइसे ब्रयान्त** सेंट इसाक के चौक से गुज़र

---

*एल्बर्ट रीस विलियम्स जॉन रीड के मित्र थे और अमरीका के सार्वजनिक जीवन में एक प्रगतिशील कार्यकर्ता के रूप में विख्यात थे। वह पत्रकार थे और उन्होंने सोवियत संघ में समाजवाद के लिए होने वाले संघर्ष के बारे में कई पुस्तकों की रचना की। –सं०

**लुइसे ब्रयान्त (१८९०–१९३६) – ग्रमरीकी लेखिका, जॉन रीड की पत्नी तथा साथी। –सं०

रहा था। यहां तक कि सिनेमाघर भी भरे थे और तसवीरें दिखायी जा रही थी, बस बाहर की सभी बत्तियां गुल कर दी गयी थी। ट्राम-गाड़ियां बदस्तूर चल रही थी। टेलीफ़ोन भी सारे काम कर रहे थे। 'सेन्टर' फ़ोन करने पर, गोली चलने की आवाज़ टेलीफ़ोन मे साफ़ सुनी जा सकती थी... स्मोल्नी के टेलीफोन काट दिये गये थे, लेकिन दूमा और उद्धार समिति का सभी युंकर स्कूलों से और त्सारस्कोये सेलो में केरेन्स्की से संपर्क बराबर बना हुआ था।

सुबह सात बजे सिपाहियों, मल्लाहों और लाल गार्डों का एक गश्ती दस्ता व्लादीमिर युंकर स्कूल आया। उन्होंने युंकरों को हथियार डालने के लिए बीस मिनट का समय दिया। युंकरों ने इस अल्टीमेटम को ठुकरा दिया। घंटा भर बाद युंकरों ने मार्च करने की तैयारी की, लेकिन ग्रेबेत्सकाया सड़क और बोल्शोई मार्ग की मोड़ से गोलियों की ऐसी जबर्दस्त बौछार आयी कि उन्हें पीछे हटना पड़ा। सोवियत सिपाहियों ने इमारत को घेर लिया और फ़ायर करना शुरू किया। दो बक़्तरबंद गाड़िया, जिनकी मशीनगनों से लगातार गोलिया छूट रही थी, चक्कर काट रही थी। युंकरों ने फ़ोन कर के मदद मांगी। कज़्ज़ाकों ने जवाब दिया कि वे उनकी मदद के लिए आने की हिम्मत नहीं कर सकते, क्योंकि मल्लाहों के एक बड़े दस्ते ने, जिनके पास दो तोपें भी थी, उनकी बारिकों पर घेरा डाल दिया था। पाव्लोव्स्क स्कूल को भी घेर लिया गया था। मिख़ाइलोव्स्क के अधिकांश युंकर सड़कों पर लड़ रहे थे...

साढ़े ग्यारह बजे दिन को वहां पर तीन मैदानी तोपें लायी गयी। जब दोबारा समर्पण करने की माग की गयी, युंकरों ने सफ़ेद झंडी लिये समर्पण-प्रस्ताव लाने वाले दो सोवियत प्रतिनिधियों को गोली मार कर इस माग का उत्तर दिया। अब क्या था – जबर्दस्त गोलाबारी शुरू हो गयी। स्कूल की दीवारों की ईंटें बिखरने लगी, और उनमें बड़ी बड़ी दरारें पड़ गयी। युंकरों ने जान पर खेल कर बचाव करने की कोशिश की। आक्रतिकारी लाल गार्डों की एक लहर के बाद दूसरी लहर गरजती हुई उठती, लेकिन वे सब गोलियों से भूने जाकर ढेर हो जाते... त्सारस्कोये सेलो से केरेन्स्की ने फोन पर कहा कि सैनिक क्रांतिकारी समिति से किसी प्रकार की वार्ता न की जाये।

रही थी, एक गाडी ऐडमिराल्टी भवन की तरफ से ग्रायी। गाड़ी टेलीफोन एक्सचेंज की ग्रोर जा रही थी, लेकिन गोगोल सड़क की मोड़ पर, जहा ग्रयान्त खडी थी, उसके ठीक सामने, गाड़ी के इंजन ने जवाब दे दिया। कुछ मल्लाहों ने, जो लकड़ियों के एक ग्रवार के पीछे घात लगाये छिपे हुए थे, गोली चलानी शुरू की। गाड़ी की टरेट के ग्रंदर मशीनगन ने जुंबिश खायी ग्रौर बिना किसी भेदभाव के लकड़ियों पर ग्रौर ग्रास-पास की भीड पर गोलियो की बौछार की। जिस मेहराबी दरवाज़े मे लुइसे ग्रयान्त खडी थी, वहा सात ग्रादमियों की लाशें तड़पती नजर ग्रायी; उनमे दो छोटे छोटे बच्चे भी थे। ग्रचानक मल्लाह चिल्लाते हुए उछल पड़े ग्रौर सीधे उस ग्राग की बौछार मे पिल पड़े। उन्होंने उस विकराल "दानव" को घेर लिया ग्रौर चीखते हुए गाड़ी की मोखो मे ग्रपनी संगीने धसा दीं, निकाली ग्रौर फिर धंसा दी, बार बार निकाली ग्रौर धंसायी। ड्राइवर ने जख्मी होने का बहाना किया ग्रौर उन्होने उसे छोड़ दिया – वह दौडता दौडता दूमा पहुचा, ग्रौर बोल्शेविक पाशविकता की कहानियो में एक नयी कहानी जुड़ गयी... मारे जानेवाले लोगों मे एक ब्रिटिश ग्रफ़सर भी था...

बाद मे ग्रखबारों मे एक फ़ासीसी ग्रफसर के बारे मे खबर छपी, जो युंकरों की एक बख़्तरबद गाड़ी मे पकड़ा गया था ग्रौर पीटर-पाल किले मे भेज दिया गया था। फ़ासीसी दूतावास ने तत्काल इस समाचार का खंडन किया, परतु एक नगर सभासद ने बताया कि उन्होंने स्वय इस ग्रफसर को जेल से छुड़वाया था।

मित्र-राष्ट्रों के दूतावासों का ग्रौपचारिक दृष्टिकोण जो भी हो, व्यक्तिगत रूप से फ़ासीसी ग्रौर ग्रंगरेज़ ग्रफसर इन दिनों बड़े सक्रिय थे – इस हद तक कि वे उद्धार समिति के कार्यकारी ग्रधिवेशनो मे परामर्श तक देने के लिए ग्राते थे।

पूरे दिन शहर की हर बस्ती ग्रौर मुहल्ले में युंकरों ग्रौर लाल गार्डों के बीच मुठभेडें होती रहीं, बख़्तरबंद गाड़ियों की लड़ाइया होती रहीं। दूर हों या नजदीक सभी जगह गोलियों की बौछार की, छिटपुट गोलिया चलने की ग्रावाज़ या मशीनगनों की कड़-कड़, चड़-चड़ सुनी जा सकती थी। दूकानों के लोहू-कपाट बद थे, लेकिन इसके बावजूद कारोबार चल

रहा था। यहां तक कि सिनेमाघर भी भरे थे और तसवीरें दिखायी जा रही थी, बस बाहर की सभी वत्तियां गुल कर दी गयी थी। ट्राम-गाड़ियां बदस्तूर चल रही थीं। टेलीफ़ोन भी सारे काम कर रहे थे। 'सेन्टर' फ़ोन करने पर, गोली चलने की आवाज़ टेलीफ़ोन में साफ़ सुनी जा सकती थी... स्मोल्नी के टेलीफ़ोन काट दिये गये थे, लेकिन दूमा और उद्धार समिति का सभी युंकर स्कूलों से और त्सारस्कोये सेलो में केरेन्स्की से संपर्क बराबर बना हुआ था।

सुबह सात बजे सिपाहियों, मल्लाहों और लाल गार्डों का एक गश्ती दस्ता व्लादीमिर युंकर स्कूल आया। उन्होने युंकरों को हथियार डालने के लिए बीस मिनट का समय दिया। युंकरों ने इस अल्टीमेटम को ठुकरा दिया। घंटा भर बाद युंकरों ने मार्च करने की तैयारी की, लेकिन ग्रेबेत्सकाया सड़क और बोल्शोई मार्ग की मोड़ से गोलियों की ऐसी ज़बर्दस्त बौछार आयी कि उन्हें पीछे हटना पड़ा। सोवियत सिपाहियों ने इमारत को घेर लिया और फ़ायर करना शुरू किया। दो बख़्तरबंद गाड़िया, जिनकी मशीनगनों से लगातार गोलियां छूट रही थी, चक्कर काट रही थीं। युंकरों ने फ़ोन कर के मदद मांगी। कज़्ज़ाकों ने जवाब दिया कि वे उनकी मदद के लिए आने की हिम्मत नहीं कर सकते, क्योकि मल्लाहों के एक बड़े दस्ते ने, जिनके पास दो तोपें भी थी, उनकी बारिकों पर घेरा डाल दिया था। पाव्लोव्स्क स्कूल को भी घेर लिया गया था। मिख़ाइलोव्स्क के अधिकाश युंकर सड़कों पर लड़ रहे थे...

साढ़े ग्यारह बजे दिन को वहां पर तीन मैदानी तोपें लायी गयी। जब दोबारा समर्पण करने की माग की गयी, युंकरों ने सफ़ेद झंडी लिये समर्पण-प्रस्ताव लाने वाले दो सोवियत प्रतिनिधियों को गोली मार कर इस माग का उत्तर दिया। अब क्या था – ज़बर्दस्त गोलाबारी शुरू हो गयी। स्कूल की दीवारों की ईंटें बिखरने लगीं, और उनमे बड़ी बड़ी दरारें पड़ गयी। युंकरों ने जान पर खेल कर बचाव करने की कोशिश की। क्रांतिकारी लाल गार्डों की एक लहर के बाद दूसरी लहर गरजती हुई उठती, लेकिन वे सब गोलियों से भूने जाकर ढेर हो जाते... त्सारस्कोये सेलो से केरेन्स्की ने फोन पर कहा कि सैनिक क्रांतिकारी समिति से किसी प्रकार की वार्ता न की जाये।

रही थी, एक गाडी ऐडमिराल्टी भवन की तरफ से ग्रायी। गाड़ी टेलीफ़ोन एक्सचेंज की ग्रोर जा रही थी, लेकिन गोगोल सड़क की मोड़ पर, जहा ग्रयान्त खडी थी, उसके ठीक सामने, गाडी के इजन ने जवाब दे दिया। कुछ मल्लाहों ने, जो लकड़ियो के एक ग्रंबार के पीछे घात लगाये छिपे हुए थे, गोली चलानी शुरू की। गाड़ी की टरेट के ग्रदर मशीनगन ने जुंबिश खायी ग्रौर बिना किसी भेदभाव के लकडियो पर ग्रौर ग्रास-पास की भीड पर गोलियों की बौछार की। जिस मेहराबी दरवाज़े मे लुइसे ग्रयान्त खडी थी, वहा सात ग्रादमियो की लाशे तडपती नज़र ग्रायी; उनमे दो छोटे छोटे बच्चे भी थे। ग्रचानक मल्लाह चिल्लाते हुए उछल पड़े ग्रौर सीधे उस ग्राग की बौछार मे पिल पडे। उन्होने उस विकराल "दानव" को घेर लिया ग्रौर चीखते हुए गाड़ी की मोखों मे ग्रपनी सगीनें धसा दी, निकाली ग्रौर फिर धसा दी, बार बार निकाली ग्रौर धसायी। ड्राइवर ने ज़ख्मी होने का बहाना किया ग्रौर उन्होने उसे छोड़ दिया—वह दौडता दौडता दूमा पहुचा, ग्रौर बोल्शेविक पाशविकता की कहानियो मे एक नयी कहानी जुड गयी... मारे जानेवाले लोगों मे एक ब्रिटिश ग्रफसर भी था...

बाद मे ग्रखबारों मे एक फ़ासीसी ग्रफसर के बारे मे ख़बर छपी, जो युंकरों की एक बकतरबद गाडी मे पकड़ा गया था ग्रौर पीटर-पाल किले मे भेज दिया गया था। फ़ासीसी दूतावास ने तत्काल इस समाचार का खडन किया, परंतु एक नगर सभासद ने बताया कि उन्होंने स्वय इस ग्रफसर को जेल से छुड़वाया था।

मित्र-राष्ट्रों के दूतावासों का ग्रौपचारिक दृष्टिकोण जो भी हो, व्यक्तिगत रूप मे फ़ासीसी ग्रौर ग्रगरेज ग्रफसर इन दिनों बड़े सक्रिय थे—इस हद तक कि वे उद्धार समिति के कार्यकारी ग्रधिवेशनों में परामर्श तक देने के लिए ग्राते थे।

पूरे दिन शहर की हर बस्ती ग्रौर मुहल्ले मे युंकरों ग्रौर लाल गार्डों के बीच मुठभेड़ें होती रहीं, बख्तरबद गाड़ियों की लडाइया होती रहीं। दूर हो या नज़दीक सभी जगह गोलियों की बौछार की, छिटपुट गोलिया चलने की ग्रावाज या मशीनगनों की कड़-कड़, तड़-तड़ सुनी जा सकती थी। दूकानों के लोह-कपाट बद थे, लेकिन इसके बावजूद कारोबार चल

रहा था। यहां तक कि सिनेमाघर भी भरे थे और तसवीरें दिखायी जा रही थीं, बस बाहर की सभी बत्तियां गुल कर दी गयी थी। ट्राम-गाड़ियां बदस्तूर चल रही थीं। टेलीफ़ोन भी सारे काम कर रहे थे। 'सेन्टर' फ़ोन करने पर, गोली चलने की आवाज़ टेलीफ़ोन में साफ़ सुनी जा सकती थी... स्मोल्नी के टेलीफ़ोन काट दिये गये थे, लेकिन दूमा और उद्धार समिति का सभी युंकर स्कूलों से और त्सारस्कोये सेलो में केरेन्स्की से संपर्क बराबर बना हुआ था।

सुबह सात बजे सिपाहियों, मल्लाहों और लाल गार्डों का एक गश्ती दस्ता व्लादीमिर युंकर स्कूल आया। उन्होंने युंकरों को हथियार डालने के लिए बीस मिनट का समय दिया। युंकरों ने इस अल्टीमेटम को ठुकरा दिया। घंटा भर बाद युंकरों ने मार्च करने की तैयारी की, लेकिन ग्रेबेत्सकाया सड़क और बोल्शोई मार्ग की मोड़ से गोलियों की ऐसी ज़बर्दस्त बौछार आयी कि उन्हे पीछे हटना पड़ा। सोवियत सिपाहियों ने इमारत को घेर लिया और फ़ायर करना शुरू किया। दो बख़्तरबंद गाड़िया, जिनकी मशीनगनों से लगातार गोलिया छूट रही थीं, चक्कर काट रही थी। युंकरों ने फ़ोन कर के मदद मागी। कज़ज़ाकों ने जवाब दिया कि वे उनकी मदद के लिए आने की हिम्मत नही कर सकते, क्योंकि मल्लाहो के एक बड़े दस्ते ने, जिनके पास दो तोपें भी थी, उनकी बारिकों पर घेरा डाल दिया था। पाव्लोव्स्क स्कूल को भी घेर लिया गया था। मिख़ाइलोव्स्क के अधिकांश युंकर सड़कों पर लड़ रहे थे...

साढ़े ग्यारह बजे दिन को वहां पर तीन मैदानी तोपें लायी गयी। जब दोबारा समर्पण करने की मांग की गयी, युंकरों ने सफ़ेद झंडी लिये समर्पण-प्रस्ताव लाने वाले दो सोवियत प्रतिनिधियों को गोली मार कर इस मांग का उत्तर दिया। अब क्या था—ज़बर्दस्त गोलाबारी शुरू हो गयी। स्कूल की दीवारों की ईंटें बिखरने लगी, और उनमे बड़ी बड़ी दरारें पड़ गयी। युंकरों ने जान पर खेल कर बचाव करने की कोशिश की। आक्रांतिकारी लाल गार्डों की एक लहर के बाद दूसरी लहर गरजती हुई उठती, लेकिन वे सब गोलियों से भूने जाकर ढेर हो जाते... त्सारस्कोये सेलो से केरेन्स्की ने फ़ोन पर कहा कि सैनिक क्रांतिकारी समिति से किसी प्रकार की वार्ता न की जाये।

अपनी हार और अपने साथियो की लाशों के ढेर लग जाने से एकदम पागल होकर सोवियत सिपाहियों ने उस इमारत पर, जिसकी ईंट ईंट अभी से बिखर रही थी, ऐसी भयंकर गोलाबारी की कि मालूम होता था उस पर गोलिया नही, लाल दहकते हुए अगारे और पिघला हुआ लोहा बरस रहा है। खुद उनके अपने अफसर इस भयंकर गोलाबारी को रोक नही सकते थे। किरीलोव नामक स्मोल्नी के एक कमिसार ने उसे रोकने की कोशिश की, जिससे सिपाही इतने बिगड खडे हुए कि किरीलोव को अपनी जान बचाना मुश्किल हो गया। लाल गार्डो का खून खौल उठा था।

दिन के ढाई बजे युंकरों ने सफेद झंडा फहराया ; उन्होने कहा कि अगर उन्हे हिफाजत की गारटी दी जाये, तो वे हथियार डालने को तैयार है। यह गारटी दी गई। हजारों सिपाही और लाल गार्ड चीखते-चिल्लाते खिडकियो, दरवाज़ो और टूटी दीवारों से भीतर पिल पड़े। इसके पहले कि कोई कुछ कर सके, पाच युंकरों को मार मार कर भुर्ता बना दिया गया और उन्हे सगीने भोक दी गई। बाकी करीब दो सौ युंकरों को छोटे छोटे दलो मे बाट कर, ताकि उनकी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित न हो, सिपाहियो की निगरानी मे पीटर-पाल किले मे पहुंचाया गया। रास्ते मे भीड एक दल के ऊपर टूट पडी—आठ और युंकर मारे गये... इस लडाई मे एक सौ से ज्यादा लाल गार्ड और सिपाही खेत रहे...

दो घटे बाद दूमा को टेलीफोन से खबर मिली कि सोवियत विजेता **इंजीनेरनी जामोक**—इंजीनियरों के स्कूल—की ओर बढ़े आ रहे हैं। फौरन दूमा के एक दर्जन सदस्य उनके बीच उद्धार समिति की सबसे ताजा घोषणा बाटने के लिये निकल पड़े। उनमे से कई नही लौटे... बाकी सभी युंकर स्कूलो ने बगैर मुकाबला किये हथियार डाल दिये और युंकरों को बाहिफाजत पीटर-पाल किले मे और क्रोंश्तादत पहुंचाया गया...

टेलीफोन-एक्सचेज ने तीसरे पहर ही कहीं जाकर, जब वहा पर एक बोल्शेविक बख्तरबद गाड़ी पहुची और मल्लाहों ने उस पर धावा बोला, समर्पण किया। अदर एक्सचेज की डरी हुई लड़किया हाय-तोबा मचाये हुए थी, वे मारे घबराहट के कभी इधर दौडती, तो कभी उधर। युंकरों ने अपनी वर्दियो से सारे बिल्ले वगैरह, जिनसे उनकी पहचान हो सके, नोच डाले, एक ने विलियम्स से कहा कि अगर वह मेहरबानी करके थोड़ी देर

के लिये अपना ओवरकोट उसे दे दे, ताकि वह अपना भेष बदल सके, तो वह बदले मे कुछ भी देने को तैयार है... "ये हमे बोटी बोटी काट डालेगे! वे हमे जिंदा न छोड़ेगे!" युंकर चीख़ रहे थे। उनके इस डर की वजह थी—उनमे से बहुतों ने शिशिर प्रासाद मे वचन दिया था कि वे फिर कभी जनता के विरुद्ध शस्त्र धारण नहीं करेंगे। विलियम्स ने कहा कि अगर अन्तोनोव को छोड़ दिया जाये, तो वह बीच मे पड़ने के लिये तैयार हैं। ऐसा तुरत किया गया। विजयी मल्लाहों के सामने, जो अपने बहुत से साथियों के मारे जाने की वजह से आपे से बाहर हो रहे थे, अन्तोनोव और विलियम्स ने भाषण दिये... और एक बार फिर युंकरों को छोड़ दिया गया... सिवाय उन चंद बदनसीबों के, जिन्होंने अपनी घबराहट मे छतों से कूद कर भाग निकलने की कोशिश की या जो ऊपर बरसाती मे छिप गये थे, जिन्हे जब उनका पता चला नीचे सड़क मे उछाल दिया गया।

थके-मादे, ख़ून से लथपथ परन्तु विजयी मल्लाह और मज़दूर झुंड के झुंड एक्सचेज के स्विचबोर्ड-कक्ष मे घुस पड़े और वहा पर इतनी सारी ख़ूबसूरत लड़कियों को देख कर वे बेचारे अचकचा कर भौचक्के से खड़े रह गये। एक भी लड़की का बाल बाका नही हुआ, एक की भी तौहीन नही की गई। वे डरी-सहमी कोने-अतरो में गठरी सी बनी खड़ी थी, लेकिन जब उन्होंने देखा कि उन्हे कोई ख़तरा नही है, उन्होने अपने दिल का गुबार निकालना शुरू किया। "छिः, गदे, गंवार लोग! बेवकूफ!.." मल्लाह और लाल गार्ड असमजस मे पड़े खड़े थे। "गधे! जानवर।" लड़किया अपने कोट और हैट पहनती हुई चीखी। थोड़ी देर पहले, जब उन्होने अपने उत्साही तरुण रक्षको, युंकरों की ओर, जिनमे बहुतेरे अभिजात परिवारों से आते थे और जो उनके प्रिय ज़ार की हुकूमत को फिर से क़ायम करने के लिये लड़ रहे थे, कारतूस बढ़ाये थे और उनके ज़ख़्मों की मरहम-पट्टी की थी, तो उन्होने रोमानी भावनाओं का अनुभव किया था! ये लोग तो बस मामूली मज़दूर और किसान थे... "गंवार लोग..."

सैनिक क्रातिकारी समिति के कमिसार वौने विश्न्याक ने लड़कियों को समझाने की कोशिश की कि वे एक्सचेंज न छोड़े। वह विनय की मूर्ति बने हुए थे। "आप लोगो के साथ बहुत बुरा सलूक किया गया है," उन्होंने कहा। "टेलीफोन-व्यवस्था नगर दूमा के हाथ मे थी। आपको महीने

मे साठ रूवल मिलते थे और दस दस घंटा या इससे भी ज्यादा काम करना पड़ता था... अब से ये सारी बातें वदल दी जायेंगी। सरकार का इरादा है कि एक्सचेंज डाक-तार मत्रालय के मातहत कर दिया जाये। आपकी तनख़ाह फ़ौरन बढ़ा कर डेढ़ सौ रूबल कर दी जायेगी और काम के घंटे घटा दिये जायेंगे। मजदूर वर्ग की सदस्य होने के नाते आपको ख़ुश होना चाहिये..."

मज़दूर वर्ग की सदस्य! ख़ूब! क्या विश्न्याक का मतलब यह है कि इन... इन जानवरों और हमारे बीच कोई चीज़ समान हो सकती है? हम यहा रह कर काम करें? नही, हरगिज़ नही! वे हमे एक हज़ार रूबल दें, तो भी नही!.. मगरूर और बुग्ज़ से भरी लड़कियां झनक कर वहा से चली गई...

एक्स्चेज के साधारण कर्मचारियो, लाइनमैन और मज़दूरों ने काम नही छोड़ा। लेकिन स्विच-बोर्डो को चालू करना था—टेलीफोन एक ज़रूरी चीज़ है... वहा बस गिनती के छः आपरेटर थे। लोगों से कहा गया कि वालंटियरों की तरह काम करने के लिये अपने नाम दें। क़रीब एक सौ आदमियो—मल्लाहों, सिपाहियों और मजदूरों—ने अपने नाम दिये। छः लड़किया, लोगों को हिदायते और मदद देती हुई, डाटती-फटकारती हुई, उनके बीच दौड़ दौड़ कर काम कर रही थी... इस प्रकार एक्सचेंज लगड़ाते लंगड़ाते फिर चलने लग गया और टेलीफोन के तारो में धीरे धीरे फिर ज़िंदा हरकत होने लगी। पहला काम यह था कि स्मोल्नी को बारिकों और कारख़ानो से मिलाया जाये; दूसरा दूमा और युंकर स्कूलो के टेलीफोन काट दिये जाये... दिन ढलने को आ रहा था, जब यह ख़बर शहर मे फैल गयी और सैकड़ों पूजीवादियों ने फोन पर चीखना शुरू किया, "बेवकूफो! शैतानो! तुम दो रोज के मेहमान हो! आने दो कज्ज़ाकों को, तब तुम देखना!"

शाम का झुटपुटा अभी से घिर रहा था। नेव्स्की मार्ग पर, जहा तेज़ ठंडी हवा चल रही थी, और शायद ही कोई आदमी कही नज़र आता था, कज़ान गिरजाघर के सामने एक भीड़ इकट्ठी हो गई थी—थोड़े से मज़दूर, मुट्ठी भर सिपाही और वाकी दुकानदार, क्लर्क और उनके जैसे लोग। उनके बीच वही पुरानी कभी न ख़त्म होने वाली बहस छिड़ी हुई थी।

"लेकिन लेनिन जर्मनी को सुलह करने के लिए तैयार नही कर सकते!" एक ने तेज लहजे मे कहा।

एक उग्र तरुण सैनिक ने उत्तर दिया, "इसमे गलती किसकी है? तुम्हारे कम्बख्त पूजीशाह केरेन्स्की की! केरेन्स्की जहन्नुम मे जाये, हम उसे नही चाहते! हम लेनिन को चाहते हैं..."

दूमा-भवन के बाहर बांह में सफेद फीता बाधे एक अफ़सर जोर से बडबड़ाता हुआ दीवार पर लगे पोस्टरों को फाड़ रहा था। एक पोस्टर मे लिखा था:

पेत्रोग्राद की आबादी के नाम!

इस खतरनाक घड़ी मे, जब नगर दूमा को आबादी को शात रखने के लिये सभी उपायो का उपयोग करना चाहिये, उसके लिये रोटी और दूसरी जरूरियात को सुनिश्चित बनाना चाहिये, दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रातिकारियो और कैडेटों ने अपने कर्तव्य का ध्यान छोड़कर दूमा को एक प्रतिक्रातिकारी सभा में बदल दिया है और वे कोर्नीलोव–केरेन्स्की की विजय मे सुविधा पहुंचाने की गरज से आबादी के एक भाग को शेष भागों के खिलाफ उभाड़ने की कोशिश कर रहे हैं। अपना कर्तव्य पालन करने के बजाय इन दक्षिणपथी समाजवादी-क्रातिकारियों और कैडेटो ने दूमा को मजदूरों, सैनिकों तथा किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियतो पर, तथा शाति, रोटी और आजादी वाली क्रातिकारी सरकार पर राजनीतिक प्रकार के आक्रमण के लिए एक अखाडा बना दिया है।

पेत्रोग्राद के नागरिको! आपके द्वारा निर्वाचित नगरपालिका के हम बोल्शेविक सभासद आपको यह जताना चाहते है कि दक्षिणपथी समाजवादी-क्रातिकारी और कैडेट प्रतिक्रातिकारी कार्रवाइयों मे लगे हुए हैं, और वे अपने कर्तव्य का ध्यान छोड़ कर आबादी को अकाल और गृहयुद्ध के मुह मे डाल रहे हैं। हम लोग, जिन्हे १८३००० वोटों से चुना गया है, अपना यह कर्तव्य समझते है कि दूमा मे जो कुछ हो रहा ह, उसकी ओर अपने चुनावकर्ताओ का ध्यान दिलाये और यह घोषणा करे कि उसका अनिवार्यत: जो भयंकर परिणाम होगा, उसके लिये हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है...

दूर कही अभी भी बीच बीच मे गोली चलने की आवाज़ आ रही थी, लेकिन कुल मिलाकर शहर ख़ामोश और ठडा पड़ा हुआ था। जैसे अभी अभी जिस भयकर दारे ने उसके अजर-पजर को झिझोड़ दिया है, उससे वह बेदम होकर पड़ गया हो।

निकोलाई हाल मे दूमा का अधिवेशन समाप्त हो रहा था। कट्टर जगजू दूमा भी किंचित स्तम्भित रह गयी थी। एक के बाद एक उसके कमिसारो ने खबर दी—टेलीफोन-एक्सचेज पर कब्ज़ा कर लिया गया, सडको पर लड़ाई हो रही है, व्लादीमिर स्कूल हाथ से चला गया... त्रूप्प ने कहा, "निरकुश हिसा के विरुद्ध सघर्प मे दूमा निश्चय ही जनवाद की ओर है, परन्तु कुछ भी हो, कोई भी पक्ष जीते, दूमा सदैव शारीरिक *यत्रणा और अवैध वध का विरोध करेगी* . "

कैडेट कोनोव्स्की उठे—लबे-तड़गे बूढ़े आदमी, चेहरा सख्त। कठोर स्वर मे बोले, "जब क़ानूनी सरकार की सेना पेत्रोग्राद पहुचेगी, वह इन विद्रोहियो को गोलियो से भून देगी, और यह निश्चय ही अवैध वध नही होगा!" सदन के हर भाग ने, यहा तक कि उनकी अपनी पार्टी के लोगो ने कोनोव्स्की की इस बात पर एतराज जाहिर किया।

दूमा के अदर दुविधा, शका और विषाद का वातावरण था। प्रतिक्राति कुचली जा रही थी। समाजवादी-क्रातिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अपने नेताओ मे *अविश्वास प्रगट किया था; पार्टी पर वामपक्ष हावी हो* गया था। अव्क्सेन्त्येव ने इस्तीफा दे दिया था। एक सदेशवाहक ने बताया कि जो स्वागत समिति रेलवे स्टेशन पर केरेन्स्की से मुलाकात करने के लिये भेजी गई थी, उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। सड़को पर दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर दूर कही तोपो के धमाको की दबी हुई आवाज़ आ रही थी। केरेन्स्की का अभी भी पता न था...

उस दिन तीन ही अख़बार निकले थे—'प्राव्दा', 'देलो नरोदा' और 'नोवाया जीज़्न'। तीनो मे एक नई "सयुक्त" सरकार के विषय मे बहुत कुछ कहा गया था। समाजवादी-क्रान्तिकारी अख़बार ने माग की थी कि एक ऐसा मत्रिमडल बनाया जाये, जिसमे न तो कैडेट हो और न ही बोल्शेविक। गोर्की का स्वर आशापूर्ण था; स्मोल्नी ने रियायते दी थी। एक विशुद्ध समाजवादी सरकार आकार ग्रहण कर रही थी—पूजीपति

वर्ग को छोड़कर उसमें सभी तत्व शामिल होंगे। जहा तक 'प्राव्दा' का प्रश्न है, उसने विद्रूप के स्वर में कहा:

हमें ऐसी राजनीतिक पार्टियों के साथ संश्रय की बात पर हंसी आती है, जिनके सर्वप्रमुख सदस्य सदिग्ध प्रतिष्ठा के कुछ पत्रकार हैं। हमारा "संश्रय" सर्वहारा वर्ग की पार्टी का क्रांतिकारी सेना और ग़रीब किसानों के साथ "संश्रय" है...

दीवारों पर विक्ज़ेल की एक दंभपूर्ण घोषणा लगी थी, जिसमें यह धमकी दी गई थी कि अगर दोनों पक्ष समझौता नही करते, तो रेल मजदूर हड़ताल पर चले जायेंगे। घोषणा मे डींग मारी गई थी:

इस दंगा-फ़साद पर काबू पाने वाले, देश को तबाही से बचानेवाले बोल्शेविक नही होंगे, उद्धार समिति और केरेन्स्की के सैनिक नही होंगे बल्कि हम होंगे, हमारी रेल मजदूर यूनियन होगी...

लाल गार्ड रेलवे जैसी जटिल व्यवस्था को सभालने में असमर्थ हैं; जहां तक अस्थायी सरकार का सम्बन्ध है, वह शासन-सूत्र अपने हाथ में रखने मे असमर्थ सिद्ध हुई है...

जब तक कोई दल ऐसी सरकार द्वारा अधिकृत रूप से कार्य न करे... जिसका आधार समस्त जनवाद का विश्वास है, हम उसे अपनी सेवायें देने से इंकार करेंगे...

स्मोल्नी संघर्परत अक्षय्य मानवता की निस्सीम प्राणशक्ति से स्पदित था।

ट्रेड-यूनियनों के सदर दफ़्तर में लोजोव्स्की ने मेरा परिचय निकोलाई रेलवे लाइन के मजदूरों के एक प्रतिनिधि के साथ कराया, जिसने मुझे बताया कि रेल मजदूर बड़ी बड़ी जन-सभायें करके अपने नेताओं के रवैये की निंदा कर रहे हैं।

जोश में आ मेज़ पर हाथ मारते हुए उसने कहा, "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में हो! हमारी केन्द्रीय समिति के ओबोरोन्त्सी

(प्रतिरक्षावादी) कोर्नीलोव की गोटी बैठा रहे हैं। उन्होंने अपना एक प्रतिनिधि-मडल स्ताव्का (सदर मुकाम) भेजा, लेकिन हमने उन्हें मिन्स्क मे गिरफ़्तार कर लिया... हमारी शाखा ने अखिल रूसी सम्मेलन की माग की है, लेकिन वे उसे बुलाने से इकार कर रहे हैं..."

यहा भी वही स्थिति थी, जो सोवियतो और सैनिक समितियों में थी। पूरे रूस मे विभिन्न जनवादी सगठन एक के वाद एक टूट रहे थे और बदल रहे थे। सहकारी समितियों में अन्दरूनी झगड़ों की वजह से फूट पड़ गई थी; किसान कार्यकारिणी समिति की बैठकों में ज़ोर की बहस-तकरार छिड़ी हुई थी। यहां तक कि कज़्ज़ाकों के बीच भी बेचैनी थी...

स्मोल्नी भवन की सबसे ऊपर की मज़िल पर सैनिक क्रातिकारी समिति धुआधार काम कर रही थी—वह बिना ढील दिये चोट पर चोट कर रही थी। वह एक ऐसी भयानक मशीन बनी हुई थी, जिसमें ताज़गी से और स्फूर्ति से भरे लोग, दिन हो रात हो, रात हो दिन हो, अपने आपको झोक देते और जब वे उसमे से निकलते, वे बेदम होते, थक कर बिल्कुल चूर, मैले-कुचैले, आवाज़ भारी और बैठी हुई, और वे वही फ़र्श पर लुढ़क जाते और सो रहते... उद्धार समिति को ग़ैरकानूनी क़रार दिया गया था। ढेर की ढेर नई घोषणायें[2] फ़र्श पर बिखरी पड़ी थी:

...षड्यन्त्रकारियो ने, जिन्हें गैरिसन या मज़दूर वर्ग के बीच कोई समर्थन प्राप्त नही है, सबसे ज्यादा अपने आक्रमण की आकस्मिकता का भरोसा किया। लाल गार्ड दल के एक सिपाही की, जिसका नाम घोषित किया जायेगा, सतर्कता की बदौलत सब-लेफ़्टिनेंट ब्लागोन्रावोव को उनकी योजना का सुराग लग गया। उद्धार समिति षड्यन्त्र का केन्द्र बनी हुई थी। उनके सैनिकों की कमान कर्नल पोल्कोवनिकोव के हाथ में थी और हुक्मनामों पर अस्थायी सरकार के भूतपूर्व सदस्य उन्ही गोत्स के दस्तख़त थे, जिन्हे हलफ़िया बयान देने पर कैद से रिहा कर दिया गया था...

इन बातों की ओर पेत्रोग्राद की जनता का ध्यान दिलाती हुई सैनिक क्रातिकारी समिति उन सभी आदमियो की गिरफ़्तारी का आदेश देती है, जिनका इस षड्यन्त्र मे हाथ है। उन पर क्रातिकारी न्यायाधिकरण के सम्मुख मुक़दमा चलाया जायेगा...

मास्को से ख़बर आई कि युंकरों और कज्जाकों ने क्रेमलिन को घेर लिया और सोवियत सैनिकों को हथियार डालने का हुक्म दिया। सोवियत सैनिकों ने इसे मंजूर कर लिया और जब वे क्रेमलिन से बाहर निकल रहे थे, युंकर उन पर टूट पड़े और उन्हें गोलियों से भून डाला गया। बोल्शेविकों की छोटी छोटी टुकड़ियों को टेलीफ़ोन एक्सचेंज और तारघर से खदेड़ दिया गया। उस समय नगर-केन्द्र युंकरों के हाथ में था... लेकिन उनके चारों ओर सोवियत सिपाही एकजुट हो रहे थे। सड़कों की लड़ाई धीरे धीरे ज़ोर पकड़ रही थी। समझौते की सारी कोशिशें बेकार हो गई थीं... सोवियत की ओर गैरिसन के दस हजार सिपाही और मुट्ठी भर लाल गार्ड थे, सरकार की ओर छः हजार युंकर, ढाई हजार कज्जाक और दो हजार सफ़ेद गार्ड थे।

पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक हो रही थी और साथ के कक्ष में नई त्से-ई-काह उन आज्ञप्तियों और आदेशों पर विचार कर रही थी, जो लगातार जन-कमिसार परिषद् से, जिसका अधिवेशन ऊपर के एक कमरे में हो रहा था, भेजे जा रहे थे[3]। निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार किया गया: आदेशों की मंजूरी और प्रकाशन की व्यवस्था, मजदूरों के लिए आठ घंटों के कार्य-दिवस का आदेश और लुनाचार्स्की का "सार्वजनिक-शिक्षा की व्यवस्था का आधार"। इन दोनों मीटिंगों में केवल दो-तीन सौ आदमी रहे होंगे, जिनमें से अधिकांश हथियारों से लैस थे। स्मोल्नी में एक तरह से पूरा सन्नाटा था, बस कुछ रक्षक खिड़कियों पर मशीनगनें बैठा रहे थे, जहां से इमारत के दोनों बाजू की जगह को देखा जा सकता था।

त्से-ई-काह की सभा में विक्ज़ेल का एक प्रतिनिधि कह रहा था:

"हम दोनों में से किसी भी पक्ष के दलों का परिवहन करने से इंकार करते हैं... हमने केरेन्स्की के पास उन्हें यह सूचना देने के लिये एक शिष्टमंडल भेजा है कि अगर उन्होंने पेत्रोग्राद की ओर अपना बढ़ाव जारी रखा, तो हम उनकी संचार-लाइनों को काट देंगे..."

उसने एक नई सरकार की स्थापना के हेतु सभी समाजवादी पार्टियों के एक सम्मेलन के लिये अपनी हस्ब मामूल दलील दी...

कामेनेव ने सतर्क भाव से उत्तर दिया, उन्होंने कहा कि बोल्शेविक बड़ी ख़ुशी से सम्मेलन में भाग लेंगे। लेकिन मुख्य बात ऐसी सरकार

का गठन नहीं है, वरन उसके द्वारा सोवियतों की कांग्रेस के कार्यक्रम की स्वीकृति है... त्से-ई-काह् ने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों तथा सामाजिक-जनवादी अंतर्राष्ट्रीयतावादियों द्वारा की गई एक घोषणा पर विचार किया था और सम्मेलन में सानुपातिक प्रतिनिधित्व के प्रस्ताव को स्वीकार किया था। यहां तक कि उसने सैनिक समितियों तथा किसानों की सोवियतों के प्रतिनिधियों को भी शामिल कर लेना मंजूर कर लिया था...

बड़े हॉल में त्रोत्स्की उस दिन की घटनाओं को बयान कर रहे थे। उन्होंने कहा :

"हमने व्लादीमिर स्कूल के युंकरों को समर्पण करने का अवसर दिया। हम रक्तपात के बिना मामले का निपटारा करना चाहते थे। लेकिन अब चूंकि रक्तपात हुआ है, हमारे लिए एक ही रास्ता रह गया है-निर्मम संघर्ष का रास्ता। यह सोचना कि हम किसी और तरीके से जीत सकते हैं बचकानापन होगा... यह घड़ी एक निर्णायक घड़ी है। यह बिल्कुल जरूरी है कि हर आदमी सैनिक क्रांतिकारी समिति के साथ सहयोग करे और जहां भी कंटीले तारों, बेंज़िन, बन्दूकों के स्टोर हों, उनकी समिति को ख़बर दे... हमने सत्ता पर अधिकार किया है, अब हमें उसे अपने हाथ में रखना है!"

मेन्शेविक इयोफे ने अपनी पार्टी की घोषणा पढ़नी चाही, लेकिन त्रोत्स्की ने "उसूलों की बहस" के लिये इजाजत नहीं दी।

उन्होंने चिल्ला कर कहा, "अब हमारी बहसें सड़कों पर होंगी। निर्णायक क़दम उठा लिया गया है। जो कुछ हो रहा है, उसके लिये हम सब ज़िम्मेदारी लेते हैं, व्यक्तिगत रूप से मैं लेता हूं..."

मोर्चे से आने वाले, गातचिना से आने वाले सिपाहियों ने अपनी कहानियां सुनायी। शहीदी बटालियन, ४८१ वीं तोपख़ाना बटालियन के एक सिपाही ने कहा, "जब खाइयों में पड़े सिपाही इस ख़बर को पायेंगे, वे बोल उठेंगे, 'यह हमारी ही सरकार है!'" पीटरहोफ के एक युंकर ने कहा कि अपने दो साथियों के साथ उसने सोवियतों के ख़िलाफ़ मुहिम में शामिल होने से इनकार कर दिया था, और जब शिशिर प्रासाद का बचाव करने वाले उसके साथी वहां से लौटे, उन्होंने उसे अपना कमिसार

एक लड़की मंच पर आई—कपड़ों से लदी-फंदी, फ़ैशन पर जान देने वाली लड़कियां, जिनके चेहरों पर मांस न था और जूतों के तल्ले चटके हुए थे। पेत्रोग्राद के "भद्र लोगों"—अफ़सरों, रईसों, सियासी दुनिया में मशहूर बड़े बड़े लीडरों—की तालियों से ख़ुशी से बाग बाग होती हुई एक लड़की के बाद दूसरी लड़की ने वहां आकर मजदूरों के हाथों भुगती हुई अपनी मुसीबतों को बयान किया और जो कुछ भी प्राचीन था, परम्परागत था और शक्तिशाली था, उसके प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा की...

निकोलाई हॉल में दूमा का फिर अधिवेशन हो रहा था। मेयर ने आशापूर्ण भाव से कहा कि पेत्रोग्राद की रेजीमेंटें अपनी हरक़तों पर शर्मिंदा हैं। प्रचार-कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा था... दूतों का आना-जाना लगा हुआ था—वे बोल्शेविकों की दहशतनाक हरक़तों की रिपोर्ट देते, युंकरों की जान बचाने के लिए बीच में पड़ते और बड़ी सरगर्मी से तहक़ीक़ात करते...

त्रूप्प ने कहा, "बोल्शेविकों के ऊपर संगीनों से नही, नैतिक बल से विजय पाई जायेगी..."

उधर क्रांतिकारी मोर्चे का हाल बिल्कुल ही अच्छा हो, यह बात न थी। दुश्मन मोर्चे पर बख़्तरबंद रेलगाड़िया, जिन पर तोपें चढ़ी हुई थी, ले आया था। सोवियत सेना, जिसमे अधिकांशतः नौसिखुये लाल गार्ड ही थे, बग़ैर अफ़सरों के थी और उसके पास कोई निश्चित योजना भी न थी। उसमें केवल पांच हज़ार नियमित सैनिक शामिल हुए थे। गैरिसन के बाक़ी सिपाही या तो युंकर-विद्रोह को दबाने में और शहर की हिफ़ाज़त करने में लगे हुए थे, या फिर वे अनिश्चित भाव से हाथ पर हाथ धरे बैठे हुए थे। रात को दस बजे लेनिन ने शहर की रेजीमेंटों के प्रतिनिधियों की एक सभा में भाषण किया—सभा ने प्रबल बहुमत से लड़ाई के हक़ में फ़ैसला किया और बहैसियत जनरल स्टाफ़ के काम करने के लिये पांच आदमियों की एक समिति निर्वाचित की। दूसरे दिन भोर में ही युद्ध-सज्जित रेजीमेंटें अपनी बारिकों से निकल पड़ी... घर लौटते हुए मैंने उन्हें गुजरते हुए देखा था—वे विजित नगर की सूनी सड़कों से पुराने तपे हुए सिपाहियों की बंधी हुई चाल से क़दम से क़दम बिल्कुल मिलाये हुए चली जा रही थी...

उसी समय सदोवाया मार्ग पर विक्जेल के सदर दफ़्तर में एक नयी सरकार की स्थापना के लिये सभी समाजवादी पार्टियों की कांफ्रेंस हो रही थी। मध्यमार्गी मेन्शेविकों की ग्रोर से बोलते हुए अब्रामोविच ने कहा कि जो हो गया वह हो गया, उसे भूल जाना चाहिये ग्रौर यह नही समझना चाहिये कि किसी की जीत हुई है या किसी की हार... इस बात से सभी वामपंथी पार्टियां सहमत थीं। दक्षिणपथी मेन्शेविकों की ग्रोर से बोलते हुए दान ने लड़ाई बंद करने के लिए बोल्शेविकों से निम्नलिखित शर्तों का प्रस्ताव किया: लाल गार्ड निरस्त्र किये जायें ग्रौर पेत्रोग्राद की गैरिसन को दूमा के अधीन किया जाये; केरेन्स्की के सिपाही न एक भी गोली चलायें ग्रौर न एक भी ग्रादमी को गिरफ़्तार करें; **बोल्शेविकों को छोड़ कर** बाक़ी सभी समाजवादी पार्टियों को लेकर एक मंत्रिमंडल बनाया जाये। स्मोल्नी की ग्रोर से रियाज़ानोव ग्रौर कामेनेव ने एलान किया कि सभी पार्टियों का एक संयुक्त मंत्रिमंडल उनके लिये स्वीकार्य है, परन्तु उन्होंने दान के प्रस्तावों के प्रति प्रतिवाद प्रगट किया। समाजवादी-क्रांतिकारी एकमत न थे; परन्तु किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ग्रौर जन-समाजवादियों ने बोल्शेविकों को शामिल करने से साफ़ इनकार कर दिया... तल्ख़ बहस ग्रौर तकरार के बाद एक व्यवहार्य योजना बनाने के लिए एक ग्रायोग का चुनाव किया गया...

ग्रायोग के ग्रंदर उस दिन पूरी रात ग्रौर दूसरे दिन ग्रौर दूसरी रात को भी झगड़ा होता रहा। एक बार पहले, ९ नवम्बर को मार्तोव ग्रौर गोर्की के नेतृत्व में समझौते की इसी तरह की कोशिश हुई थी। परन्तु केरेन्स्की के ग्रागमन ग्रौर उद्धार समिति की कार्रवाइयों के फलस्वरूप दक्षिणपंथी मेन्शेविकों, समाजवादी-क्रांतिकारियों ग्रौर जन-समाजवादियों ने यकायक ग्रपना हाथ खींच लिया था। ग्रब वे युंकर-विद्रोह के दमन से ग्रातंकित थे...

सोमवार १२ नवम्बर का दिन बड़े शशोपंज का दिन था। समूचे रूस की निगाहें पेत्रोग्राद से बाहर उस धूसर मैदान पर लगी हुई थीं, जहां पुरानी सत्ता की समस्त उपलब्ध शक्ति नयी ग्रज्ञात सत्ता की ग्रसंगठित शक्ति के ख़िलाफ़ जुटी हुई थी। मास्को में सुलह का एलान किया गया

था ; राजधानी में क्या फ़ैसला होता है, इसका इंतज़ार करते हुए दोनों पक्ष बातचीत कर रहे थे। इसी समय सोवियतों की कांग्रेस के प्रतिनिधि क्रांति का ज्वलंत संदेश लिये हुए, बेतहाशा भागती हुई रेलगाड़ियों में सवार होकर एशिया के दूर से दूर भागों में अपने घरों में पहुंच रहे थे। राजधानी में जो चमत्कार हुआ था, उसका समाचार पूरे देश में उसी तरह फैल रहा था, जैसे पानी में पत्थर फेंकने से लहरें फैलती जाती हैं, और इस समाचार से शहर और कस्बे और दूर दूर के गांव आलोड़ित और मथित हो रहे थे, विपर्यस्त और विभक्त हो रहे थे—एक ओर सोवियतें और सैनिक क्रांतिकारी समितियां, दूसरी ओर दूमायें, ज़ेम्सत्वो और सरकारी कमिसार; एक ओर लाल गार्ड, दूसरी ओर सफ़ेद। सड़कों पर लड़ाइयां और गर्मागर्म भाषण... इस कशमकश का क्या नतीजा होगा, यह इस बात पर मुनहसर था कि पेत्रोग्राद से क्या ख़बर आती है...

स्मोल्नी लगभग खाली था, लेकिन दूमा में उसी तरह भीड़-भाड़ और हंगामा था। बूढ़े मेयर अपने उसी शिष्ट भाव से बोल्शेविक सभासदों की अपील के प्रति प्रतिवाद कर रहे थे।

"दूमा प्रतिक्रांति का अड्डा नहीं है," उन्होंने बड़े जोश से कहा। "दूमा राजनीतिक पार्टियों के मौजूदा संघर्ष में कोई हिस्सा नहीं ले रही है। परन्तु ऐसे समय, जब देश में कोई वैध सत्ता नहीं है, सुव्यवस्था का एक ही केन्द्र रह गया है— नगरपालिका का स्वायत्त शासन। अमन पसंद आबादी इस हक़ीक़त को मानती है ; विदेशी दूतावास उन्हीं दस्तावेज़ों को मानते हैं, जिन पर नगर के मेयर के दस्तख़त हों। नगरपालिका का स्वायत्त शासन ही एकमात्र ऐसा निकाय है, जो नागरिकों के हितों की रक्षा करने में समर्थ है —यूरोपीय दिमाग़ सिर्फ़ इसी स्थिति को स्वीकार्य मानते हैं। नगर-प्रशासन उन सभी संगठनों को आश्रय देने के लिये कर्तव्यबद्ध है, जो ऐसे आश्रय से लाभ उठाने की इच्छा रखते हैं, और इसलिये दूमा अपने भवन के अंदर किसी भी अख़बार के वितरण को रोक नहीं सकती। हमारा कार्यक्षेत्र फैल रहा है, और यह आवश्यक है कि हमें काम करने की पूरी छूट दी जाये और दोनों ही पक्ष हमारे अधिकारों का लिहाज़ करें...

"हम बिल्कुल ही तटस्थ हैं। जब युंकरों ने टेलीफ़ोन एक्सचेंज पर

क़ब्ज़ा कर लिया था, कर्नल पोल्कोवनिकोव ने हुक्म दिया कि स्मोल्नी के टेलीफ़ोन काट दिये जायें, परन्तु मैंने प्रतिवाद किया और ये टेलीफ़ोन काम करते रहे..."

इस बात पर बोल्शेविक बेंचों से विद्रूप की हसी आयी और दक्षिणपंथी बेंचों से लानतें भेजी गयीं।

श्रेइदेर कहते गये, "और फिर भी वे समझते हैं कि हम प्रतिक्रांतिकारी हैं, और वे हमारे ख़िलाफ जनता से रिपोर्ट करते हैं। वे हमसे हमारी आख़िरी मोटर-गाड़िया छीन कर हमे परिवहन के साधनों से वचित कर रहे हैं। अगर नगर में अकाल पडा, तो इसमें हमारा कोई दोष न होगा। प्रतिवाद करना निरर्थक है..."

नगर-बोर्ड के बोल्शेविक सदस्य कोबोज़ेव ने इस बात में संदेह प्रगट किया कि सैनिक क्रातिकारी समिति ने नगरपालिका की गाड़ियों को अपने अधिकार में ले लिया है। अगर यह बात सच भी हो, तो शायद किसी अनधिकृत व्यक्ति ने नागहानी की सूरत में ऐसा किया होगा।

कोबोज़ेव ने आगे कहा, "मेयर महोदय कहते हैं कि हमें हरगिज़ दूमा को राजनीतिक सभा में नही बदलना चाहिये, लेकिन यहां मेन्शेविक या समाजवादी-क्रातिकारी सज्जन जो भी कहते हैं, वह सिवाय पार्टी प्रचार के और कुछ नही है। ऐन दूमा के दरवाज़े पर वे बगावत के लिये भड़काने वाले अपने ग़ैरकानूनी अख़बार 'ईस्क्रा' (चिंनगारी), 'सोल्दात्स्की गोलोस' और 'रबोचाया गाज़ेता' बाटते हैं। अगर हम बोल्शेविक भी अपने अख़बार यहां पर बाटने लगें, तो? लेकिन हम ऐसा नही करेंगे, क्योंकि हम दूमा का सम्मान करते हैं। हमने नगरपालिका के स्वायत्त-शासन पर हमला नही किया है और न ही हम ऐसा करेंगे। लेकिन आपने आबादी के नाम एक अपील शाया की है और हमे भी ऐसा करने का हक़ है..."

उनके बाद कैडेट शिंगारेव बोलने के लिये खड़े हुए। उन्होंने कहा कि उन लोगों के साथ कोई मेल नही बैठ सकता, जिन्हें बाक़ायदा अभ्यारोपण के लिये एटार्नी जनरल के सामने लाया जा सकता है और जिन पर राजद्रोह के अपराध के लिये लाजिमी तौर पर मुक़द्दमा चलाया जाना चाहिये... उन्होंने दोबारा यह प्रस्ताव किया कि बोल्शेविक सदस्य दूमा से निकाले जायें। परन्तु यह प्रस्ताव अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर

दिया गया, क्योंकि इन सदस्यों के ख़िलाफ़ कोई व्यक्तिगत आरोप न थे और वे नगरपालिका-प्रशासन में सक्रिय भाग ले रहे थे।

इसके बाद दो मेन्शेविक अंतर्राष्ट्रीयतावादियों ने उठ कर कहा कि बोल्शेविक सभासदों की अपील प्रत्यक्षतः दगा-फ़साद के लिये भड़कावा है। पिन्केविच ने कहा, "अगर जो भी बोल्शेविकों के ख़िलाफ है, वह प्रतिक्रांतिकारी है, तो मैं नहीं जानता कि क्रांति और अराजकता में क्या अंतर है... बोल्शेविक निरंकुश जन-साधारण की गरमजोशी का भरोसा कर रहे हैं; हमें सिवाय नैतिक बल के और किसी चीज़ का भरोसा नहीं है। हम दोनों पक्षों के दंगा-फ़साद और हिंसा के प्रति प्रतिवाद करेंगे, क्योंकि हमारा काम शांतिपूर्ण हल ढूंढ़ निकालना है।"

नज़ार्येव ने कहा, "सड़कों पर 'कठघरे में' शीर्षक से जो नोटिस चिपकायी गयी है, जिसमें जनता का मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों का नाश करने के लिये आह्वान किया गया है, एक ऐसा अपराध है, जिसे आप बोल्शेविक लोग धो नहीं सकेंगे। ऐसी घोषणा से आप जिस चीज़ की तैयारी कर रहे हैं, उसके लिए कल की भीषण घटनायें एक प्रस्तावना भर हैं... मैंने हमेशा दूसरी पार्टियों से आपकी सुलह-मसालहत कराने की कोशिश की है, लेकिन इस वक़्त मेरे दिल में आपके लिये हिकारत के सिवा और कुछ नहीं है!"

यह सुनना नहीं था कि बोल्शेविक सभासद उछल पड़े और उन्होंने बड़े गुस्से से इस बात का विरोध किया। दूसरी ओर से लोग हाथ हिला हिला कर और गला फाड़ कर चिल्लाने लगे और उन पर लानतों की बौछार करने लगे...

हॉल के बाहर मेरी मुठभेड़ नगर इंजीनियर, मेन्शेविक गोम्बेर्ग और तीन-चार रिपोर्टरों से हो गयी। वे सब के सब बड़े जोश में थे।

"देखा!" उन्होंने कहा। "ये गीदड़ हमसे कितना डरते हैं! उनकी यह जुर्रत नहीं हुई कि दूमा सदस्यों को गिरफ़्तार करें! सैनिक क्रांतिकारी समिति की यह हिम्मत नहीं है कि इस भवन में अपना कमिसार भेजे। अरे, आज ही सदोवाया मार्ग की मोड़ पर मैंने देखा, एक लाल गार्ड एक लड़के को 'सोल्दात्स्को गोलोस' बेचने से रोकने की कोशिश कर रहा था। लड़के ने उसका मुंह चिढ़ाते हुए ठिठो-लियाँ की। फ़ौरन ही एक

भीड़ वहां जुट गयी और लोगों ने उस ठग का वही भुरकुस निकाल देना चाहा। भाई अब बस चंद घंटों की बात है। अगर केरेन्स्की न आयें, तो भी इन लोगों के पास सरकार चलाने के लिये आदमी नहीं होंगे। बिल्कुल बेतुकी बात है! सुना है स्मोल्नी में वे आपस में ही लड़-झगड़ रहे हैं!"

मेरे एक समाजवादी-क्रांतिकारी दोस्त ने मुझे अलग ले जा कर कहा, "मुझे मालूम है उद्धार समिति कहां छिपी हुई है। क्या आप चलकर उनसे बात करना चाहते हैं?"

झुटपुटा हो गया था। शहर की ज़िन्दगी फिर बदस्तूर चलने लगी थी – दुकानें खुली थीं, बत्तियां जल रही थीं और सड़कों पर ख़ासी भीड़-भाड़ थी, लोग धीरे धीरे बहस-मुबाहिसा करते चल रहे थे...

हम ८६, नेव्स्की मार्ग पर आकर एक गलियारे से निकल कर एक ऐसे अहाते में आ गये, जिसके चारों ओर ऊंची रिहायशी इमारतें थीं। मेरे दोस्त ने २२६ नम्बर के एक फ्लैट पर एक ख़ास अंदाज़ से दस्तक दी। भीतर से धक्कम-धक्का और ठेला-ठेल की आवाज़ आई, अंदर का एक दरवाज़ा खटाक से बंद हुआ, फिर बाहर का दरवाज़ा ज़रा-सा खुला और उसमें एक स्त्री का चेहरा दिखाई पड़ा। एक लमहे तक ग़ौर से देखने के बाद वह हमें अंदर ले गई – वह एक अधेड़ उम्र की स्त्री थी, जिसका चेहरा शांत, निर्विकार था। उसने छूटते ही कहा, "किरील, सब ठीक है!" खाने के कमरे में, जहां मेज़ पर एक समावार 'खद-खद' कर रहा था और डबल-रोटी और मछलियों से भरी रकाबियां पड़ी थीं, एक वर्दीपोश आदमी पर्दों के पीछे से निकला और मज़दूरों के कपड़े पहने हुए एक दूसरा आदमी एक छोटे से कमरे से निकला। उन्हें एक अमरीकी रिपोर्टर से मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। उन्होंने काफ़ी रस लेते हुए कहा कि अगर बोल्शेविकों ने उन्हें पकड़ लिया, तो उन्हें ज़रूर गोली मार दी जायेगी। वे अपना नाम बताने के लिये तैयार नहीं थे, लेकिन दोनों ही समाजवादी-क्रांतिकारी थे...

मैंने उनसे पूछा, "आप अपने अख़बारों में ऐसी झूठी ख़बरें क्यों छापते हैं?"

वर्दीपोश अफ़सर ने इस बात पर नाराज़ हुए बिना जवाब दिया, "हां, मैं जानता हूं। लेकिन हम क्या कर सकते हैं?" उसने अपने कंधों

को जुम्बिश दी। "आपको मानना होगा कि हमारे लिये यह ज़रूरी है कि हम लोगों के अन्दर एक ख़ास तरह का मिजाज पैदा करें..."

दूसरे आदमी ने बीच में ही टोंक कर कहा, "यह बोल्शेविकों का दुस्साहस मात्र है। उनके बीच कोई बुद्धिजीवी नहीं हैं... मंत्रालय काम करने के लिये तैयार नहीं होंगे... रूस एक शहर ही नहीं, एक पूरा देश है... यह समझते हुए कि वे चंद रोज से ज्यादा अपने पैर टिकाये नहीं रह सकते, हमने फैसला किया है कि हम उनके विरोध की सबसे प्रबल शक्ति की, केरेन्स्की की सहायता करेंगे और सुव्यवस्था पुन:स्थापित करने मे मदद पहुंचायेंगे।"

"बहुत अच्छी बात है," मैंने कहा, "लेकिन आप लोग कैडेटों के साथ हाथ क्यों मिला रहे हैं?"

नकली मजदूर ने निष्कपट मुसकरा कर कहा, "सच कहा जाये, तो बात यह है कि इस घड़ी जन-साधारण बोल्शेविकों के पीछे हैं। इस समय हमारे पीछे कोई नहीं है। हम थोड़े से भी सिपाहियों को जुटा नहीं सकते। हमे हथियार भी सुलभ नहीं हैं... एक हद तक बोल्शेविकों की बात सही है; इस घड़ी रूस में दो ही पार्टियां ऐसी हैं, जिनमें कुछ ताक़त है—बोल्शेविक और प्रतिक्रियावादी, जो सब के सब कैडेटों का दामन पकड़े हुए हैं। कैडेट सोचते हैं कि वे हमारा इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन दर असल हम कैडेटों का इस्तेमाल कर रहे हैं। जब हम बोल्शेविकों को चकनाचूर कर लेंगे, हम कैडेटों की ख़बर लेंगे..."

"क्या बोल्शेविकों को नयी सरकार में लिया जायेगा?"

उसने अपना सिर खुजलाते हुए कहा: "यह एक समस्या है। कहने की जरूरत नहीं कि अगर उन्हें नहीं लिया जाता, तो वे शायद फिर यही काड दुहरायें। बहरसूरत संविधान सभा में, यानी अगर संविधान सभा होती है, उन्हें शक्ति-संतुलन अपने हाथ में रखने का मौक़ा मिलेगा।"

"और फिर इसके साथ ही," समाजवादी-क्रांतिकारी अफसर ने कहा, "नये मंत्रिमंडल में कैडेटों को भी शामिल करने का सवाल पैदा होता है, और उन्हीं कारणों से होता है। आप जानते हैं, कैडेट सचमुच संविधान सभा नहीं चाहते—अगर इस समय बोल्शेविकों को मटियामेट किया जा सकता है, तो बिल्कुल ही नहीं चाहते।" उसने अपना सिर

हिलाया। "हम रूसियों के लिये राजनीति एक बला है। राजनीति आप अमरीकी लोगों की घुट्टी में पड़ी है—आप आजीवन इस खेल को खेलते रहे हैं। लेकिन हम? आप जानते ही हैं, हमें कुल साल भर ही तो हुआ!"

"केरेन्स्की के बारे में आपका क्या ख़याल है?" मैंने पूछा।

"ओह, अस्थायी सरकार के सारे पाप केरेन्स्की के सिर हैं," दूसरे आदमी ने जवाब दिया। "केरेन्स्की ने ख़ुद हमें पूंजीपति वर्ग के साथ संश्रय मंजूर करने के लिए मजबूर किया। अगर उन्होंने इस्तीफ़ा दिया होता, जैसा करने की उन्होंने धमकी दी थी, तो इसका अर्थ होता संविधान सभा के केवल सोलह हफ़्ते पहले मन्त्रिमंडल का एक नया संकट, और हम इस संकट से बचना चाहते थे।"

"लेकिन बहरसूरत बात तो वही हुई, क्यों?"

"जी हां, लेकिन हमें क्या मालूम था कि ऐसा होगा। उन लोगों ने, केरेन्स्की और अव्क्सेन्त्येव जैसे लोगों ने हमे चकमा दिया। गोत्स कुछ अधिक उग्र विचारों के हैं। लेकिन सच्चे क्रांतिकारी चेर्नोव हैं और मैं उनके साथ हूं... यही देखिये, लेनिन ने आज ही संदेश भिजवाया है कि अगर चेर्नोव मंत्रिमंडल में प्रवेश करें, तो उन्हें कोई आपत्ति न होगी।

"हम भी केरेन्स्की सरकार से छुटकारा पाना चाहते थे, लेकिन हमने यह बेहतर समझा कि संविधान सभा का इंतज़ार किया जाये... जब यह मामला शुरू हुआ, मैं बोलशेविकों के साथ था, लेकिन मेरी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने सर्वसम्मति से बोलशेविकों का साथ देने के ख़िलाफ़ फ़ैसला किया—फिर मैं भला क्या कर सकता था? सवाल पार्टी के अनुशासन का था...

"बोलशेविक सरकार हफ़्ता भर के अंदर ही टुकड़े टुकड़े हो जायेगी। अगर समाजवादी-क्रांतिकारी बस अलग खड़े होकर इंतज़ार कर सकें, तो सरकार उनकी झोली में आ टपकेगी। लेकिन अगर हम हफ़्ता भर इंतज़ार करें, तो देश में इतनी अधिक विशृंखलता फैल जायेगी कि जर्मन साम्राज्यवादी जीत जायेंगे। इसी लिये बावजूद इस बात के कि सिपाहियों की केवल दो रेजीमेंटों ने हमारा समर्थन करने का वचन दिया, हमने अपना विद्रोह शुरू कर दिया और अब वे भी हमारे ख़िलाफ़ हो गये हैं... अब हमारे साथ केवल युंकर ही बच रहे हैं..."

"लेकिन कज्ज़ाक–वे आपके साथ नही है?"

अफ़सर ने ठंडी सास लेकर कहा, "वे तो अपनी जगह से हिले भी नही। पहले उन्होने कहा कि अगर पैदल सिपाही उनकी पुश्त मे हों, तो वे मैदान में आयेगे। फिर यह कहा कि उनके आदमी केरेन्स्की के साथ है और वे अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहे हैं... उन्होने यह भी कहा कि कज्ज़ाकों पर हमेशा यह इल्ज़ाम लगाया गया कि वे जनवाद के पुश्तैनी दुश्मन है... उनकी आख़िरी बात थी, 'बोल्शेविकों ने वादा किया है कि वे हमारी ज़मीनों को नही छीनेगे, लिहाज़ा हम तटस्थ ही रहेंगे।'"

जब यह बातचीत हो रही थी, लोग बराबर आ-जा रहे थे–उनमे से अधिकाश अफ़सर थे, लेकिन उन्होंने अपनी वर्दियों से बिल्ले नोच डाले थे। हम उन्हें बरोठे में देख सकते थे और उनकी आहिस्ता मगर पुरजोश बातचीत की भनक भी हमारे कानो में पड़ रही थी। कभी कभी आधे सरकाये हुए पर्दों से हमें एक दरवाज़े की झलक मिलती, जो गुसलख़ाने मे खुलता था, जहां कर्नल की वर्दी पहने दोहरे शरीर का एक अफ़सर आराम से कमोड पर बैठा अपने घुटनों पर एक पैड रखे कुछ लिख रहा था। मैंने पहचाना यह पेत्रोग्राद के भूतपूर्व कमाडेंट कर्नल पोल्कोवनिकोव थे, जिनकी गिरफ़्तारी के लिये सैनिक क्रातिकारी समिति मुंहमागा इनाम दे सकती थी।

"हमारा कार्यक्रम?" अफ़सर ने कहा। "यह है हमारा कार्यक्रम: भूमि भूमि समितियों के हवाले की जाये। मजदूरों को उद्योग के नियन्त्रण मे पूरा प्रतिनिधित्व दिया जाये। शाति का बेशक एक ज़ोरदार प्रोग्राम हो, लेकिन वैसा अल्टीमेटम नहीं, जैसा बोल्शेविकों ने दुनिया को दे डाला है। बोल्शेविकों ने जन-साधारण से जो वादे किये हैं, वे उन्हें बाहर तो क्या–देश के अदर भी पूरा नही कर सकते। हम उन्हें करने नहीं देंगे... उन्होंने किसानों का समर्थन पाने के लिये हमारा भूमि-कार्यक्रम चुरा लिया। यह सरासर बेइमानी है। अगर उन्होंने संविधान सभा के लिये इंतज़ार किया होता..."

"संविधान सभा की बात बेसूद है!" दूसरे अफ़सर ने उसकी बात काट कर कहा। "अगर बोल्शेविक यहा पर समाजवादी राज्य क़ायम करना चाहते है, तो हम उनके साथ मिलकर किसी भी सूरत मे काम नहीं कर

सकते! केरेन्स्की ने एक भयंकर भूल की। उन्होंने जनतन्त्र की परिषद् में यह एलान कर कि उन्होंने बोल्शेविकों की गिरफ़्तारी का हुक्म दिया है अपना इरादा उनके ऊपर ज़ाहिर कर दिया..."

"लेकिन इस वक़्त आप क्या करने का इरादा कर रहे हैं?" मैंने पूछा।

दोनों आदमी एक दूसरे का मुंह देखते रह गये। एक ने कहा, "चंद दिनों के अंदर ही आपको मालूम हो जायेगा। अगर मोर्चे के काफ़ी सिपाही हमारी ओर होते हैं, तो हम बोल्शेविकों के साथ समझौता नहीं करेंगे। नहीं तो हमें शायद समझौता करने के लिये मजबूर होना पड़े..."

वहां से फिर नेव्स्की मार्ग पर आकर हम उछल कर एक ट्राम-गाड़ी में चढ़ गये, जो लोगों से ठसाठस भरी थी और जिसके पावदान बोझ से झुक गये थे और ज़मीन के साथ रगड़ खाते थे। गाड़ी चींटी की चाल से चलती, चीख़ती-कराहती स्मोल्नी का लम्बा फ़ासला तय कर रही थी।

जब हम वहां पहुंचे, साफ़-सुथरे, छोटे क़द के और दुबले-पतले मेश्कोव्स्की चिंतित भाव से नीचे उतर रहे थे। उन्होंने हमें बताया कि मंत्रालयों की हड़ताल अपना रंग दिखा रही थी। उदाहरण के लिए, जन-कमिसार परिषद् ने गुप्त संधियों के प्रकाशन का वादा किया था। लेकिन ये संधियां जिस कर्मचारी के चार्ज में हैं वह, नेरातोव, ग़ायब हो गया है और अपने साथ दस्तावेज़ों को भी लेता गया है। कहा जाता है कि ये दस्तावेज़ें ब्रिटिश दूतावास में छिपा दी गई हैं...

लेकिन इन सबसे बुरी चीज बैंकों की हड़ताल थी। "रुपये-पैसे के बिना हम बिल्कुल लाचार है," मेन्जीन्स्की ने कहा। "रेल मजदूरों, डाक-तार कर्मचारियों की तनख़ाहें देनी हैं, मगर कैसे दी जायें... बैंक बंद हैं और जिस राजकीय बैंक के हाथ में परिस्थिति की कुंजी है, वह भी बंद है। रूस में सभी बैंक-क्लर्कों को काम ठप कर देने के लिए घूस दी गयी है...

"लेकिन लेनिन ने हुक्म जारी किया है कि राजकीय बैंक के तहख़ानों के दरवाज़ों को डाइनेमाइट से उड़ा दिया जाये और अभी अभी एक आज्ञप्ति निकली है, जिसमें प्राइवेट बैंकों को कल ही खुलने का हुक्म दिया गया है, नहीं तो हम उन्हें ख़ुद-ब-ख़ुद खोल डालेंगे!"

"लेकिन कज्ज़ाक – वे

अफसर ने ठंडी सांस

भी नही। पहले उन्होंने कहा
तो वे मैदान में आयेंगे। फिर
हैं और वे अपना कर्त्तव्य पू
कज्ज़ाकों पर हमेशा यह इल्ज़ा
दुश्मन हैं... उनकी आख़िरी द
वे हमारी जमीनों को नहीं छी

जब यह बातचीत हो
उनमें से अधिकाश अफ़सर थे, ले
डाले थे। हम उन्हें वरोठे में दे
पुरजोश वातचीत की भनक भी ह
आधे सरकाये हुए पर्दों से हमें
गुस्लख़ाने में खुलता था, जहां क
अफ़सर आराम से कमोड पर बैठा
रहा था। मैंने पहचाना यह
पोल्कोवनिकोव थे, जिनकी गिरफ़्त
मुंहमांगा इनाम दे सकती थी।

"हमारा कार्यक्रम?" अफ़सर
भूमि भूमि समितियों के हवाले की
में पूरा प्रतिनिधित्व दिया जाये।
हो, लेकिन वैसा अल्टीमेटम नहीं,
है। बोल्शेविकों ने जन-साधारण से
बवा-देश के अदर भी पूरा नही
उन्होंने किसानों का समर्थन पाने के
यह सरासर बेइमानी है। मगर उन्हें
होता..."

"सविधान सभा की बात के
काट कर कहा। "मगर बोल्शेविक
चाहते हैं, तो हम उनके साथ मिल

मसे बस तीन बहुत छोटी सी बाते चाहते हैं: १. हम सत्ता का परित्याग करे; २. सिपाहियों को लड़ाई चलाते जाने पर आमादा करे; ३. किसानों को ज़मीन की बात भूल जाने के लिये तैयार करें..."

लेनिन दो मिनट के लिये वहां आये – समाजवादी-क्रांतिकारियों के आरोपों का उत्तर देने के लिये।

"वे हमारे ऊपर यह आरोप लगाते है कि हमने उनके भूमि-कार्यक्रम को चुरा लिया है..." उन्होंने कहा, "अगर ऐसी बात है, तो हम उनके सामने सिर झुकाते हैं। हमारे लिये यह कार्यक्रम काफ़ी अच्छा है..."

इस प्रकार मीटिंग बड़े जोरशोर से चलती रही – एक नेता के बाद दूसरा नेता आता और लोगो को ब्योरे के साथ समझाता, जोश दिलाता और बहस करता; एक सिपाही के बाद दूसरा सिपाही, एक मजदूर के बाद दूसरा मजदूर खड़ा होता और अपने दिल का गुबार निकालता, अपने मन की बात सुनाता... सुनने वाले लोग बराबर बदलते रहते – कुछ जाते, तो उनकी जगह कुछ नये आ जाते। वक्तन्-फवक्तन् लोग आते और चीखते – फला या फला दस्ते के लोगों को मोर्चे पर जाना है। दूसरे ख़लास हुए या जख़्मी हुए, या हथियारों और साज-सामान के लिये स्मोल्नी आये सिपाही झुड के झुड भीतर आते...

तीन बजे थे और रात ढलने को आ रही थी, जब सभा-मंडल से चलते हुए हमने देखा कि सैनिक क्रांतिकारी समिति के अधिकारी गोल्त्समान बेतहाशा दौड़ते हुए वहां आये – उनके चेहरे पर अपूर्व दीप्ति थी।

"सब कुछ ठीक है," उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हुए बड़े जोश से कहा। "मोर्चे से तार आया है, केरेन्स्की को चकनाचूर कर दिया गया! यह देखिये!"

उन्होंने हमारी ओर एक पुर्ज़ा बढ़ाया, जिस पर पेंसिल से जल्दी जल्दी कुछ घसीट कर लिखा गया था, और फिर यह देख कर कि हम उसे पढ़ने में असमर्थ हैं, उन्होंने जोर से धाराप्रवाह पढ़ना शुरू किया:

पूल्कोवो, सैनिक स्टाफ, रात २.१० बजे।

३०–३१ अक्तूबर की रात इतिहास में सदैव अंकित रहेगी। क्रांति की राजधानी के खिलाफ़ प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं को लेकर धावा बोलने

पेत्रोग्राद सोवियत की मीटिंग पूरे जोर पर थी, वहां हथियारबंद लोग भरे हुए थे, और त्रोत्स्की रिपोर्ट दे रहे थे:

"कज्जाक क्रास्नोये सेलो से पीछे हट रहे हैं" (जोर की उल्लासपूर्ण तालियां), "लेकिन लड़ाई अभी शुरू ही हो रही है। पूल्कोवो में ज़बरदस्त लड़ाई हो रही है। जितने भी सैनिक दस्ते मिल सकें, उन्हें जल्द से जल्द वहां भेज देना चाहिये...

"मास्को की ख़बर अच्छी नहीं है। क्रेमलिन युंकरों के हाथ में है और मज़दूरों के पास हथियारों की कमी है। वहां क्या फ़ैसला होता है, यह पेत्रोग्राद पर मुनहसर है।

"मोर्चे पर शांति तथा भूमि की आज्ञप्तियां बड़ा जोश पैदा कर रही हैं। केरेन्स्की खाइयों में पेत्रोग्राद के बारे में मनगढ़ंत क़िस्से फैला रहे हैं कि पेत्रोग्राद जल रहा है और ख़ून से नहा रहा है, कि औरतें और बच्चे बोलशेविकों के हाथों मारे जा रहे हैं। लेकिन कोई उनकी बात मानता नहीं...

"'ओलेग', 'अव्रोरा' और 'रेस्पूब्लिका' नामक क्रूज़र-पोत नेवा में लंगर डाले हुए हैं, उनकी तोपें नगर के प्रवेश-मार्गों की ओर सीधी कर दी गई हैं..."

"आप वहां लाल गार्डों के बीच क्यों नहीं जाते?" एक कर्कश आवाज आई।

"मैं जा ही रहा हूं!" त्रोत्स्की ने जवाब दिया और मंच से उतर आये। उनका चेहरा हस्ब मामूल से कुछ ज्यादा ज़र्द था। वह उत्साही मित्रों से घिरे हुए कमरे से जल्दी जल्दी बाहर निकल गये, जहां एक मोटर-गाड़ी उनका इंतज़ार कर रही थी।

उनके बाद कामेनेव बोले और उन्होंने मेल-मिलाप सम्मेलन की कार्रवाइयों का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि मेन्शेविकों ने युद्ध-विराम के लिए जो शर्तें पेश की थीं, उन्हें हिकारत के साथ ठुकरा दिया गया है। रेल मज़दूर यूनियन की शाखाओं तक ने ऐसे प्रस्ताव के ख़िलाफ़ वोट दिया है...

"अब जब हमने सत्ता पर अधिकार कर लिया है और अप्रतिहत गति से पूरे रूस को सर कर रहे हैं," उन्होंने ज़ोर देकर कहा, "वे

मसे बस तीन बहुत छोटी सी बातें चाहते हैं : १. हम सत्ता का परित्याग करें ; २. सिपाहियों को लड़ाई चलाते जाने पर आमादा करें ; ३. किसानों को ज़मीन की बात भूल जाने के लिये तैयार करें..."

लेनिन दो मिनट के लिये वहां आये – समाजवादी-क्रांतिकारियों के आक्षेपों का उत्तर देने के लिये।

"वे हमारे ऊपर यह आरोप लगाते हैं कि हमने उनके भूमि-कार्यक्रम को चुरा लिया है..." उन्होंने कहा, "अगर ऐसी बात है, तो हम उनके सामने सिर झुकाते हैं। हमारे लिये यह कार्यक्रम काफ़ी अच्छा है..."

इस प्रकार मीटिंग बड़े ज़ोरशोर से चलती रही – एक नेता के बाद दूसरा नेता आता और लोगों को ब्योरे के साथ समझाता, जोश दिलाता और बहस करता ; एक सिपाही के बाद दूसरा सिपाही, एक मजदूर के बाद दूसरा मजदूर खड़ा होता और अपने दिल का गुबार निकालता, अपने मन की बात सुनाता... सुनने वाले लोग बराबर बदलते रहते – कुछ जाते, तो उनकी जगह कुछ नये आ जाते। वक़्तन्-फ़वक़्तन् लोग आते और चीखते – फ़लां या फ़लां दस्ते के लोगों को मोर्चे पर जाना है। दूसरे ख़लास हुए या ज़ख़्मी हुए, या हथियारों और साज-सामान के लिये स्मोल्नी आये सिपाही झुंड के झुंड भीतर आते...

तीन बजे थे और रात ढलने को आ रही थी, जब सभा-मंडल से चलते हुए हमने देखा कि सैनिक क्रांतिकारी समिति के अधिकारी गोल्त्समान बेतहाशा दौड़ते हुए वहां आये – उनके चेहरे पर अपूर्व दीप्ति थी।

"सब कुछ ठीक है," उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हुए बड़े जोश में कहा। "मोर्चे से तार आया है, केरेन्स्की को चकनाचूर कर दिया गया! यह देखिये!"

उन्होंने हमारी ओर एक पुर्ज़ा बढ़ाया, जिस पर पेंसिल से जल्दी जल्दी कुछ घसीट कर लिखा गया था, और फिर यह देख कर कि हम उसे पढ़ने में असमर्थ हैं, उन्होंने ज़ोर से धाराप्रवाह पढ़ना शुरू किया :

पुल्कोवो, सैनिक स्टाफ़, रात २.१० बजे।

३०-३१ अक्तूबर की रात इतिहास में सदैव अंकित रहेगी। क्रांति की राजधानी के ख़िलाफ़ प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं को लेकर धावा बोलने

की केरेन्स्की की कोशिश निर्णायक रूप से विफल कर दी गई है। केरेन्स्की पीछे हट रहे है और हम आगे बढ़ रहे है। पेत्रोग्राद के सिपाहियों, मल्लाहों और मजदूरो ने दिखा दिया है कि वे हाथ मे हथियार लेकर जनवाद की इच्छा और प्रभुता को लागू कर सकते है और करेगे। पूंजीपति वर्ग ने क्रातिकारी सेना को विलग करने का प्रयत्न किया। केरेन्स्की ने कज्जाको की शक्ति से उसे खडित करने का प्रयत्न किया। दोनों योजनायें दयनीय रूप से विफल हुईं।

मजदूर तथा किसान जनवाद की प्रभुता के महान् विचार ने सेना की पातो को एकजुट किया और उसके सकल्प को दृढ़ बनाया। आज से पूरे देश को इस बात का विश्वास हो जायेगा कि सोवियतों की सत्ता कोई क्षणिक सत्ता नही है, वरन् वह एक अटल वास्तविकता है... केरेन्स्की की हार जमीदारों की, पूजीपतियों की और सामान्यतः कोर्नीलोवपथियों की हार है। केरेन्स्की की हार जनता के शांतिपूर्ण, स्वतत्र जीवन, भूमि, रोटी और सत्ता के अधिकार पर मुहर लगा देती है। अपने वीरत्वपूर्ण प्रहार मे पूल्कोवो-दस्ते ने मजदूरों और किसानों की क्राति के ध्येय को प्रबल किया है। अब पीछे की ओर लौटा नही जा सकता। हमारे सामने सघर्ष है, बाधायें है, कुर्बानिया है, परन्तु हमारा रास्ता साफ है और हमारी विजय निश्चित है।

क्रातिकारी रूस तथा सोवियत सत्ता कर्नल वाल्डेन की कमान मे लड़ने वाले पूल्कोवो-दस्ते पर गर्व कर सकती है। युद्ध मे वीरगति पाने वाले सैनिक अमर है! क्राति के योद्धा, जनता के प्रति निष्ठा रखनेवाले सैनिक और अफसर गौरवान्वित है!

क्रातिकारी समाजवादी रूस, जनता का रूस जिन्दाबाद!

परिषद् की ओर से

ले० त्रोत्स्की, जन-कमिसार

ज्नामेन्स्की चौक मे गाड़ी मे बैठे पर जाते हुए हमने निकोलाई रेलवे-स्टेशन के सामने एक असाधारण प्रकार की भीड़ देखी। कई हजार मल्लाह, जिनके बीच सगीनें चमक रही थी, वहा इकट्ठे थे।

स्टेशन की सीढ़ियों पर खड़ा विक्जेल का एक सदस्य उनसे विनम्रता से कह रहा था :

"साथियो, हम आपको मास्को नहीं ले जा सकते। हम तटस्थ हैं। हम किसी भी पक्ष के सैनिकों को नहीं ले जाते। हम आपको मास्को नहीं ले जा सकते, जहां अभी से भयानक गृहयुद्ध छिड़ा हुआ है..."

चौक में भरी उत्तेजित भीड़ उस आदमी पर बरस पड़ी। मल्लाह आगे बढ़ने लगे। यकायक स्टेशन का एक दूसरा फाटक खुल गया, उसमें दो या तीन ब्रेकमेन, एक फायरमैन और एकाध और आदमी खड़े थे।

"इधर आइये, साथियो!" उनमें से एक ने चिल्ला कर कहा। "हम आपको मास्को ले चलेंगे या ब्लादीवोस्तोक या आप जहां भी चाहें वहां! इन्कलाब जिन्दाबाद!"

नौवां अध्याय

विजय

पहला आदेश

पूल्कोवो-दस्ते के सिपाहियों के नाम

१३ नवंबर १६१७, सवेरे ६.३८ बजे

सख़्त लड़ाई के बाद पूल्कोवो-दस्ते के सिपाहियों ने प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं को बिल्कुल ही खदेड़ दिया; वे अपने स्थानों से अस्त-व्यस्त भाग खड़ी हुईं और त्सारस्कोये सेलो की आड़ में पाव्लोव्स्क द्वितीय और गातचिना की ओर पीछे हटीं।

हमारे आगे बढ़े हुए दस्तों ने त्सारस्कोये सेलो के उत्तर-पूर्वी छोर और अलेक्सान्द्रोव्स्काया स्टेशन पर कब्जा कर लिया। कोलपिनो का दस्ता हमारी बायीं ओर था और क्रास्नोये सेलो का दस्ता दायीं ओर।

मैंने पूल्कोवो की सेना को आदेश दिया कि वह त्सारस्कोये सेलो पर कब्जा कर ले, उसके प्रवेश-मार्गों की, ख़ास तौर पर गातचिना की ओर के मार्ग की मोर्चाबंदी करे।

मैंने यह भी आदेश दिया कि वह आगे बढ़ कर पाव्लोव्स्कोये पर कब्जा कर ले, उसके दक्षिण की ओर मोर्चाबंदी करे और द्नो स्टेशन तक रेलवे लाइन अपने हाथ में कर ले।

सैनिकों के लिए आवश्यक है कि उन्होंने जिन स्थानों पर क़ब्ज़ा किया है, उनको खाइयां खोद कर और बचाव की ऐसी दूसरी तामीरें कर सुदृढ़ करने के लिए सभी उपाय करें।

उनके लिए आवश्यक है कि वे कोलपिनो और क्रास्नोये सेलो के दस्तों के साथ और पेत्रोग्राद की रक्षा के लिए नियुक्त मुख्य सेनापति के स्टाफ़ के साथ भी घनिष्ठ संपर्क स्थापित करें।

हस्ताक्षरित,

केरेन्स्की की प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं के ख़िलाफ़ लड़ने वाली सभी सेनाओं के मुख्य सेनापति,

लेफ़्टीनेंट-कर्नल मुराव्योव

मंगलवार, सुबह। लेकिन यह हो क्या गया? अभी दो ही रोज पहले पेत्रोग्राद के इर्द-गिर्द नेतृत्वहीन सिपाहियों के झुंड के झुंड बेमक़सद, बेसरोसामान घूम रहे थे – उनके पास रसद-पानी न था, तोपें न थीं, न कोई योजना ही थी। अनुशासनहीन लाल गार्डों और वग़ैर अफ़सरों के सिपाहियों के इस विसंगठित समुदाय को किस चीज ने एक सूत्र में बांध कर उसे एक सेना का रूप दिया था, जो स्वयं अपने निर्वाचित हाई कमान की वशानुवर्ती थी और जो इतनी तपी हुई थी कि तोपों और कज़ाक घुड़सवारों के हमले का मुकाबला कर सकी और उसे चूर चूर कर सकी?[1]

विद्रोही जनता में कुछ ऐसा गुण है कि वह पुरानी सैनिक नज़ीरों को बरतरफ़ कर देती है। इस संबंध में फ़्रांसीसी क्रांति की फटेहाल सेनाओं को – वाल्मी और वेइसेमबुर्ग* की विजयी सेनाओं को – भुलाया नहीं जा सकता। सोवियत सेनाओं के ख़िलाफ़ युंकरों, कज़ाकों, ज़मींदारों, अमीरज़ादों, यमदूत सभाइयों का भारी जमाव था – ज़ार का नया अवतार हो रहा था, ज़ारशाही की खुफ़िया पुलिस ओख़राना की और साइबेरिया में जेल और काला पानी की बेड़ियां फिर गढ़ी जा रही थीं। ऊपर से

---

* २० सितम्बर १७९२ को हुई वाल्मी की ऐतिहासिक लड़ाई में फ़्रांस की क्रांतिकारी सेना के वालंटियर दस्तों ने प्रशियाई सैनिक टुकड़ियों को, जो पेरिस की ओर बढ़ रही थीं, हरा दिया और उन्हें पीछे हटने पर ॥

जर्मनों का सर्वव्यापी, भीषण खतरा था... कार्लाइल के शब्दों में, विजय का अर्थ था "अनंत देवत्व तथा स्वर्णयुग!"

इतवार की रात सैनिक क्रांतिकारी समिति के कमिसार लड़ाई के मैदान से निराश लौट रहे थे। पेत्रोग्राद की गैरिसन ने अपनी पांच आदमियों की—दो अफ़सरों और तीन सिपाहियों की—समिति, अपना सैनिक स्टाफ़ निर्वाचित किया, जिनके बारे में साधिकार यह घोषणा की गयी कि वे प्रतिक्रांति के कलुष से सर्वथा मुक्त हैं। कमान भूतपूर्व प्रतिरक्षावादी कर्नल मुराव्योव के हाथ में थी, जिनकी कारगुज़ारी के बारे में शक न था, लेकिन फिर भी जिनके ऊपर कड़ी नज़र रखना जरूरी था।* कोलपिनो में, ओबूख़ोवो में, पूल्कोवो और क्रास्नोये सेलो में अस्थायी सैनिक दस्तो का गठन किया गया, और जैसे जैसे भटके हुए सिपाही चारों ओर से आ आकर इन दस्तों में शामिल होने लगे, उनका आकार बढ़ने लगा। सिपाही, मल्लाह, लाल गार्ड, रेजीमेंटों के हिस्से, पैदल सिपाही, घुड़सवार और तोपख़ाने—ये सब आकर इन दस्तों में मिल गये थे। उनमे कुछ बख़्तरबंद गाड़ियां भी शामिल हो गई थीं।

पौ फटी और केरेन्स्की के कज़्ज़ाकों की गश्ती टुकड़ियों के साथ इन सिपाहियों का सामना हुआ। छिटफुट गोलियां चली और आत्मसमर्पण करने को कहा गया। बीहड़ मैदान में ठंडी ख़ामोश हवा में लड़ाई की आवाज़ गूंजने लगी और यह आवाज़ अपने छोटे छोटे अलावों के चारों ओर बैठे इंतज़ार करते हुए झुंड के झुंड घुमतू सिपाहियों के कानों में पड़ी... अच्छा, तो लड़ाई शुरू हो रही है! और ये सिपाही लड़ाई के मैदान की तरफ़

किया। १७९४ में वेड्सेमबुर्ग की लड़ाई में फ़ासीसी क्रांतिकारी सेना ने, जिसकी कमान वास्तव में सेंट-जुस्त के हाथ में थी, आस्ट्रियाई सेना को चूर कर दिया और उसे फ़ास की सीमाओं से पीछे खदेड़ दिया।—सं०

* मुराव्योव ढुलमुल राजनीतिक विचारों के व्यक्ति थे। सोवियतों की ओर आने से पहले उन्होंने "विजय पर्यंत युद्ध" के नारे का समर्थन किया। कोर्नीलोव विद्रोह के दौरान उन्होंने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के साथ साठ-गाठ की। बाद में वह सोवियत सत्ता के शत्रुओं की ओर हो गये।—सं०

वढ़े। सीधे राजमार्गों से आ रहे मजदूरों ने अपने कदम बढ़ाये... इस प्रकार आक्रमण के प्रत्येक बिंदु पर क्रुद्ध मानवों के झुंड अपने आप बटुर गये, जहां पहुंचते ही कमिसारों ने उनका स्वागत किया, उन्हें ख़ास ख़ास जगहों में तैनात किया और बताया कि उन्हें क्या काम करना है। यह उनकी अपनी लड़ाई थी, अपनी दुनिया के लिये उनकी लड़ाई और जिन अफ़सरों के हाथ में कमान थी, वे उन्हीं के द्वारा चुने गये थे। इस घड़ी असंख्य इच्छायें एकाकार होकर एक इच्छा मे बदल गयी थी।

इस लड़ाई में जिन लोगों ने भाग लिया, उन्होंने मुझे बताया कि किस प्रकार मल्लाह तब तक दनादन गोलियां चलाते रहे, जब तक कि उनके कारतूस चुक नही गये और फिर वे दुश्मन के ऊपर एकबारगी टूट पडे; किस प्रकार मामूली मज़दूर, जिन्हें लड़ाई का कोई इल्म न था, हमला करते हुए कज़्ज़ाक घुड़सवारों पर झपटे, उन्हें उनके घोड़ों से खीचकर नीचे गिरा दिया; किस प्रकार अनाम जनता के दल के दल घुप्प अंधेरे मे रणक्षेत्र के चतुर्दिक जुट कर तूफ़ान की तरह उठे और शत्रु के ऊपर छा गये... सोमवार को आधी रात होते होते कज़्ज़ाकों के पैर उखड़ गये और वे अपना तोपख़ाना पीछे छोड़कर भाग खड़े हुए। सर्वहारा सेना दूर तक फैले हुए ऊबड़-खाबड़ मोर्चे पर आगे बढ़ी और देखते देखते त्सारस्कोये सेलो में उमड़ पड़ी। दुश्मन को इतना भी मौका न मिला कि वह उस वृहत् सरकारी रेडियो स्टेशन को नष्ट कर सके, जिससे इस समय स्मोल्नी के कमिसार दुनिया को ललकार ललकार कर अपनी 'विजय-गाथा, अपनी प्रशस्तियां प्रसारित कर रहे थे...

सभी मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के नाम

१२ नवम्बर को त्सारस्कोये सेलो के पास ख़ूरेज़ लड़ाई में क्रांतिकारी सेना ने केरेन्स्की और कोर्नीलोव की प्रतिक्रांतिकारी सेना को हरा दिया। क्रांतिकारी सरकार के नाम पर मैं सभी रेजीमेंटों को आदेश देता हूं कि वे क्रांतिकारी जनवाद के शत्रुओं पर हमला बोल दें और केरेन्स्की को गिरफ़्तार करने के लिये सभी उपाय करें और ऐसे किसी भी

दुस्साहसिक कार्य का विरोध भी करे, जिससे क्रांति की उपलब्धियां और सर्वहारा की विजय खतरे में पड़ सकती हो।

क्रांतिकारी सेना जिन्दाबाद!

मुराल्योव

प्रांतों से खबरें...

सेवास्तोपोल में स्थानीय सोवियत ने शासन-सूत्र अपने हाथ में ले लिया है, बन्दरगाह में मौजूद जंगी जहाजों के मल्लाहों की एक विशाल सभा ने अपने अफसरों को मजबूर किया कि वे उनके साथ कदम मिला कर नयी सरकार के प्रति निष्ठा की शपथ लें। नीजनी नोवगोरोद नगर सोवियत के हाथ में है। कज़ान से खबर आयी कि वहां सड़कों पर लड़ाई हो रही है—एक ओर बोल्शेविक गैरिसन, दूसरी ओर युंकर लोग और एक तोपखाना ब्रिगेड...

मास्को में फिर घमासान लड़ाई छिड़ गयी थी। क्रेमलिन और नगर के मध्य भाग पर युंकरों और सफेद गार्डों का क़ब्ज़ा था, जिनपर सैनिक क्रांतिकारी समिति के सिपाही चारों ओर से छापा मार रहे थे। सोवियत तोपखाना स्कोबेलेव चौक में बैठाया गया था और वहां से नगर दूमा-भवन, कलक्टरी तथा मेट्रोपोल होटल पर गोलाबारी की जा रही थी। त्वेरस्काया तथा निकीत्स्काया सड़कों के पत्थर खाइयों और बैरिकेडों के लिए उखाड़ डाले गये थे। बड़े बड़े बैंकों और कोठियों वाली जगहों पर मशीनगनों से गोलियों की बौछार की जा रही थी। बत्तियां गुल थीं, टेलीफोन काम नहीं कर रहे थे। शहर की आबादी का पूंजीवादी हिस्सा तहख़ानों में छिप गया था... ताजा समाचार-बुलेटिन के अनुसार सैनिक क्रांतिकारी समिति ने सार्वजनिक सुरक्षा समिति * को अल्टीमेटम देकर मांग की थी कि वे क्रेमलिन छोड़ दें, नहीं तो उस पर गोलाबारी की जायेगी।

---

* **सार्वजनिक सुरक्षा समिति** – नवम्बर, १९१७ में मास्को में प्रतिक्रांति का केन्द्र। – सं०

"क्रेमलिन पर गोलाबारी? भला उनकी जुर्रत भी होगी!" साधारण नागरिक ने कहा।

वोलोग्दा से दूर साइबेरिया में चिता तक, प्स्कोव से काले सागर तटवर्ती सेवास्तोपोल तक, बड़े बड़े शहरों में और छोटे छोटे गांवों में भी गृहयुद्ध की आग भड़क उठी। हज़ारों कारखानों, गाव-समुदायों, रेजीमेंटों, सेनाओं, समुद्र में संतरण कर रहे जहाज़ों के अभिनदन-संदेश, जनता की सरकार के लिए अभिनंदन-सदेश पेत्रोग्राद पहुचने लगे।

नोवोचेर्कास्क से क़ज़्ज़ाक सरकार ने केरेन्स्की को तार दिया, **"कज़्ज़ाक सैनिक सरकार अस्थायी सरकार को और जनतंत्र की परिषद् के सदस्यों को बुलावा भेजती है कि अगर संभव हो, तो वे नोवोचेर्कास्क चले आयें, जहां हम मिल-जुल कर बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ संघर्ष संगठित कर सकते हैं।"**

फिनलैंड में भी हलचल शुरू हो गयी थी। हेलसिंगफोर्स की सोवियत और **त्सेन्त्रोबाल्त** (बाल्टिक बेड़े की केन्द्रीय समिति) ने सयुक्त रूप से घेराबंदी का एलान किया था और कहा था कि बोल्शेविक सेनाओं के साथ किसी तरह की छेड़-छाड़ करने की कोशिश को और सोवियत के आदेशों के प्रति समस्त सशस्त्र प्रतिरोध को सख्ती के साथ कुचल दिया जायेगा। इसके साथ ही, फिनलैंड की रेल मजदूर यूनियन ने एक देशव्यापी हड़ताल बुलायी, ताकि समाजवादी संसद ने, जिसे केरेन्स्की ने भंग कर दिया था, जून १९१७ में जो कानून स्वीकृत किये थे, उन्हें कार्यान्वित किया जा सके...

सुबह तड़के ही निकल कर मैं स्मोल्नी पहुचा। बाहरी फाटक से घुस कर जब मैं लकड़ी की बनी लंबी पटरी से जा रहा था, मैंने देखा शांत, निस्तब्ध, धूमिल आकाश से बर्फ़ की नर्म पंखुड़ियां हल्के हल्के झर रही हैं। यह मौसम की पहली बर्फ थी। दरवाज़े पर खड़े सिपाही की बत्तीसी खिल गयी। वह ख़ुशी से चीख़ पड़ा, "बर्फ़! सेहतबख़्श बर्फ!" अंदर लंबे लंबे धुंधले हॉलों में और मनहूस कमरों में सन्नाटा छाया हुआ था। इतनी बड़ी इमारत में तिनका भी नहीं हिल रहा था। और फिर एक गहरी अजीब-सी आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। चारों ओर नज़र दौड़ा कर मैंने देखा, हर जगह, फ़र्श पर, दीवारों के साथ लोग सोये पड़े हैं। रूक्ष, कठोर, मैले-

कुचैले लोग, मजदूर और सिपाही, कीचड़ में सने, अकेले या झुंड के झुंड, घोड़ा बेच कर सो रहे थे – अपने से बिलकुल बेख़बर! कुछ ने अपने ज़ख्मों पर पट्टियों की जगह गूदड़-गादड़ बांध रखे थे, जिन पर ख़ून के धब्बे थे। बन्दूक़ें और कारतूस की पेटियां चारों तरफ़ बिखरी पड़ी थीं... यह थी विजयी सर्वहारा सेना!

ऊपर रेस्तोरां में इतने आदमी पड़े हुए थे कि उनके बीच से निकलना मुश्किल था। हवा में घुटन थी। धुआंच्छन्न खिड़कियों से मद्धिम रोशनी आ रही थी। एक पुराना दवा-पिचका समावार काउंटर पर रखा हुआ था – बिलकुल ठंडा – और पास में बहुत से गिलास जिनमें चाय पी गयी थी पड़े थे। नज़दीक ही सैनिक क्रांतिकारी समिति की ताज़ी बुलेटिन की एक कापी उल्टी पड़ी थी, और उस पर किसी की टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट थी। दर असल यह किसी सिपाही ने फ़र्श पर लुढ़क कर सो जाने से पहले अपने उन साथियों की यादगार में लिखा था, जो केरेन्स्की के ख़िलाफ़ लड़ाई में खेत रहे थे। रोशनाई जगह जगह फैली हुई थी, शायद लिखते हुए कुछ आंसू टपक पड़े थे...

अलेक्सेई विनोग्रादोव	द० लेस्रोन्स्की
द० मोस्क्वीन	द० प्रेओब्राजेन्स्की
स० स्तोलबिकोव	व० लाइदान्स्की
अ० वोस्क्रेसेन्स्की	मि० बेर्चिकोव

ये आदमी १५ नवंबर, १९१६ को सेना में भर्ती किये गये थे। उनमें से केवल तीन बचे हैं –

मिख़ाईल बेर्चिकोव
अलेक्सेई वोस्क्रेसेन्स्की
द्मीत्री लेस्रोन्स्की

सोओ, वीरो, चैन की नींद सोओ
तुमने, हमारे प्यारो, सुख और अनन्त शान्ति अर्जित की है।
अपनी क़ब्र की मिट्टी के नीचे

तुमने अपनी पांतों को एकजुट किया है।
सोश्रो नागरिको!

केवल सैनिक क्रांतिकारी समिति अभी भी काम कर रही थी, उसके लिये नीद हराम थी। भीतरी कमरे से निकलते हुए स्क्रिप्निक ने कहा कि गोत्स को गिरफ़्तार कर लिया गया है, लेकिन अव्वसेन्त्येव की तरह उन्होंने भी इस बात से साफ़ इनकार किया कि उन्होंने उद्धार समिति की घोषणा पर हस्ताक्षर किया था। ख़ुद उद्धार समिति ने गैरिसन के नाम अपनी अपील को रद्द कर दिया। स्क्रिप्निक ने बताया कि शहर की रेजीमेंटो में अभी भी अशान्ति थी, मसलन् वोलीन्स्की रेजीमेंट ने केरेन्स्की के ख़िलाफ़ हथियार उठाने से इनकार कर दिया था।

चेर्नोव के नेतृत्व में "तटस्थ" सैनिको के कई दस्ते गातचिना मे मौजूद थे और वे केरेन्स्की को इसके लिये कायल करने की कोशिश कर रहे थे कि वह पेत्रोग्राद पर अपना हमला बद करें।

स्क्रिप्निक ने हंसकर कहा, "अब किसी के 'तटस्थ' रहने का सवाल नही रह गया है। हमारी जीत हुई है!" उसके तीखे दढ़ियल चेहरे पर ऐसी रोशनी थी, गोया उसे इलहाम हासिल हुआ हो। "मोर्चे से साठ से ज्यादा प्रतिनिधि यहां पहुंचे हैं और उन्होंने हमें, रूमानियाई मोर्चे के सिपाहियों को छोड़कर, जिनकी कोई ख़बर नही मिली है, बाकी सभी सेनाओं के समर्थन का आश्वासन दिया है। सैनिक समितियो ने पेत्रोग्राद से पहुंचने वाले समाचारों को दबाने की कोशिश की है, परंतु अब हमने सदेशवाहकों की एक नियमित व्यवस्था स्थापित कर ली है..."

नीचे सामने के हॉल में, नयी सरकार की स्थापना के लिये होने वाले सम्मेलन के रात भर के अधिवेशन से थक कर चूर, मगर फिर भी ख़ुश कामेनेव प्रवेश कर ही रहे थे। उन्होंने मुझे बताया, "समाजवादी-क्रातिकारी अब हमें नयी सरकार मे शामिल करने का रुझान रखते है। दक्षिणपथी दल क्रातिकारी अदालतों से घबराये हुए हैं। वे मारे दहशत के यह माग कर रहे हैं कि वे तभी आगे बातचीत करेंगे, जब हम इन अदालतो को भग कर दें... हमने विक्जेल के एक यकरंगी समाजवादी मन्त्रिमडल कायम करने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और अब वे अपने इस

प्रस्ताव को विस्तृत रूप दे रहे हैं। आप देखते है ये सारी बातें हमारी विजय मे पैदा होती है। जब हम दबे हुए थे, वे हमें किसी भी क़ीमत पर लेने के लिये तैयार नही थे, लेकिन अब सभी इस हक़ में हैं कि सोवियतों के साथ किसी न किसी तरह का समझौता होना चाहिये... हमे जिस चीज़ की जरूरत है, वह है वास्तव में निर्णायक विजय। केरेन्स्की युद्ध-विराम चाहते हैं, परंतु उन्हें समर्पण करना होगा..."[2]

यह था बोल्शेविक नेताओं का मिजाज*। जब एक विदेशी पत्रकार ने त्रोत्स्की से पूछा कि क्या वह दुनिया को कोई बयान देना चाहेंगे, उन्होंने जवाब दिया: "इस घड़ी अगर हम कोई बयान दे सकते हैं, तो वही जो हम अपनी तोपो के दहानों से दे रहे हैं!"

---

*११ नवम्बर को विक्जेल – अखिल रूसी रेल मज़दूर यूनियन की कार्यकारिणी समिति – ने, जो नवम्बर क्रांति के बाद सोवियत-विरोधी क्रिया-कलाप का एक मुख्य केन्द्र बन गई थी, एक प्रस्ताव पास किया, जिसमे सभी "समाजवादी" पार्टियों की एक सरकार की माग की गयी थी। लेनिन तथा केन्द्रीय समिति ने परिकल्पना की थी कि विक्जेल के साथ वार्ता "युद्ध के लिए एक कूटनीतिक पर्दे" का काम देगी। परन्तु कामेनेव और सोकोलनिकोव ने, जिन्होने इस वार्ता में बोल्शेविकों का प्रतिनिधित्व किया, लेनिन तथा केन्द्रीय समिति के निर्देशो का उल्लंघन कर विक्जेल की मागों को मान लिया और सरकार के अन्दर प्रतिक्रान्तिकारी मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टियो के प्रतिनिधियों को शामिल करना मंज़ूर कर लिया।

१५ नवम्बर को केन्द्रीय समिति ने लेनिन के सुझाव पर एक प्रस्ताव स्वीकृत किया, जिसके द्वारा इन पार्टियों के साथ समझौते की नीति को ठुकरा दिया गया। प्रस्ताव में इस बात पर बल दिया गया था कि "सोवियत सत्ता के नारे का परित्याग किये बिना ख़ालिस बोल्शेविक सरकार की नीति को छोड़ देना असम्भव है," क्योंकि सोवियतों की अखिल रूसी काग्रेस ने इसी सरकार के हाथ मे सत्ता सुपुर्द की है। इस प्रकार रीड द्वारा उद्धृत कामेनेव के शब्द सभी बोल्शेविको की नही, केन्द्रीय समिति के अन्दर केवल उस छोटे से अवसरवादी दल की भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जिसकी दृष्टि मे रूस मे समाजवादी क्रान्ति असम्भव थी। – सं०

परन्तु विजय के इस उल्लास के भीतर ही भीतर वास्तविक चिंता का एक भाव भी छिपा हुआ था – वह चिंता थी वित्त के प्रश्न को लेकर। बैंक-कर्मचारी यूनियन ने सैनिक क्रांतिकारी समिति के आदेशानुसार बैंकों को खोलना तो दूर बाक़ायदा एक मीटिंग करके हड़ताल की घोषणा कर दी थी। स्मोल्नी ने राजकीय बैंक से साढ़े तीन करोड़ रूबल की मांग की थी, लेकिन कैशियर ने ख़ज़ाने में ताला लगा दिया था और वह सिर्फ़ अस्थायी सरकार के प्रतिनिधियों को रुपया दे रहा था। प्रतिक्रियावादी राजकीय बैंक का अपने एक राजनीतिक अस्त्र के रूप में उपयोग कर रहे थे। उदाहरण के लिये, जब विक्जेल ने सरकारी रेल कर्मचारियों की तनख़्वाहों की अदायगी के लिये पैसा मांगा, तो उसे स्मोल्नी का रास्ता दिखाया गया, उससे कहा गया, जाओ स्मोल्नी मे मांगो...

मैं नये कमिसार से मुलाकात करने राजकीय बैंक गया। पेत्रोविच नामक तांबाई रंग के बालों वाले यह सज्जन उक्राइनी बोल्शेविक थे। हड़ताली क्लर्क बैंक को जिस अस्त-व्यस्त स्थिति में छोड गये थे, वह उसे ठीक करने और व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे। उस विशाल भवन के सभी कार्यालयों में वालंटियर मज़दूर, सिपाही और मल्लाह अजीब उलझन और परेशानी की मुद्रा में बडे बड़े खातों पर झुके हुए थे। गाढ़े मानसिक परिश्रम से उन्हें दांतों पसीना आ रहा था और प्राण गले तक आ गये थे।

दूमा-भवन में ख़ासी भीड थी। नयी सरकार को अभी भी बाज़ औक़ात चुनौती दी जा रही थी, लेकिन बाज़ औक़ात ही। केन्द्रीय भूमि समिति ने किसानों से अपील करते हुए उन्हें आदेश दिया था कि वे सोवियतों की कांग्रेस द्वारा स्वीकृत भूमि-आज्ञप्ति को न मानें, क्योंकि उससे उलझाव पैदा होगा और गृहयुद्ध भड़केगा। मेयर श्रेइदेर ने घोषणा की कि बोल्शेविक विद्रोह के कारण संविधान सभा के चुनावों को अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर देना पड़ेगा। गृहयुद्ध की उग्रता और भीषणता से स्तंभित सभी आदमियों के मन में दो ख़ास सवाल थे – पहला, रक्तपात बंद करने का सवाल[3] और दूसरा, नयी सरकार की स्थापना करने का। अब "बोल्शेविकों को नेस्तनाबूद करने" की बातचीत बन्द हो चुकी थी। जन-समाजवादियों और किसानों की सोवियतों को छोड़कर शायद ही

कोई बोल्शेविकों को सरकार में शामिल करने की बात कर रहा था। यहां तक कि स्मोल्नी के सबसे कट्टर शत्रु स्ताव्का (सदर मुकाम) में स्थापित केन्द्रीय सैनिक समिति ने सोकोल्निकोव से फ़ोन किया: "अगर नये मंत्रिमंडल का गठन करने के लिए बोल्शेविकों के साथ समझौता क़ायम करना ज़रूरी है, तो हम उन्हें मंत्रिमंडल में अल्पमत में शामिल करने के लिये राज़ी हैं।"

'प्राव्दा' ने केरेन्स्की की "मानव-प्रेमी भावनाओं" की ओर विद्रूप के भाव से ध्यान आकर्षित करते हुए उद्धार समिति के नाम उनके संदेश को प्रकाशित किया:

उद्धार समिति तथा उसके गिर्द एकजुट सभी जनवादी संगठनों के प्रस्तावों के मुताबिक मैंने विद्रोहियों के ख़िलाफ़ हर तरह की फ़ौजी कार्रवाई बंद कर दी है। समिति के एक प्रतिनिधि को समझौते की बातचीत के लिये भेजा गया है। निरर्थक रक्तपात को रोकने के लिये आप सभी तरह के उपाय करें।

विक्जेल ने रूस के कोने कोने में इस आशय का तार भेजा:

समझौते की आवश्यकता को माननेवाले युद्धरत पक्षों के प्रतिनिधियों के साथ रेल-मज़दूर यूनियन का जो सम्मेलन हुआ है, वह गृहयुद्ध में, विशेषतः जब वह क्रान्तिकारी जनवाद के विभिन्न दलों के बीच चलाया जा रहा हो, राजनीतिक आतंक के इस्तेमाल के प्रति प्रबल प्रतिवाद प्रकट करता है और घोषणा करता है कि राजनीतिक आतंक, वह चाहे जिस भी रूप में हो, नयी सरकार स्थापित करने के लिये समझौते की बातचीत के विचार का ही खंडन है...

सम्मेलन* ने अपने शिष्टमंडलों को मोर्चे के लिए, गातचिना के लिये रवाना किया। सम्मेलन में ऐसा लगता था कि सभी बातें अंतिम रूप

---

* इशारा "मेल-मिलाप सम्मेलन" – एक नई सरकार बनाने के लिए सम्मेलन – की ओर है। – सं०

एक पुराने सिपाही ने मुझे अपनी बांहों में भर कर चूमा। किसी ने लकड़ी की एक चम्मच पेश की और उनके साथ मैं भी बैठ गया। एक और टब वहा लाया गया, उसमें काशा (दलिया) लबालब भरा था, साथ में एक बहुत बडी काली डबल-रोटी थी और चायदानिया तो खैर थी ही। फ़ौरन हर आदमी ने मुझसे अमरीका के बारे मे सवाल पूछना शुरू किया। क्या यह सच है कि एक आजाद देश के लोग अपने वोटों को पैसों के लिए बेच देते है? अगर यह बात है, तो वे अपनी जरूरते कैसे पूरी करवा सकते हैं? "टैमिनी"* के बारे म आपको क्या कहना है? क्या यह सच है कि एक आज़ाद देश में मुट्ठी भर लोग अपना गुट बना कर एक पूरे शहर पर हावी हो सकते हैं और उसे अपने ज़ाती फ़ायदे के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं? लोग इस चीज को कैसे बर्दाश्त करते है? रूस मे जार के जमाने मे भी ऐसी बाते नही हो सकती थी। यह सच है कि यहा घूस का बाजार हमेशा गर्म था, लेकिन एक पूरे शहर को, जिसमें इतने सारे लोग रहते हों, ख़रीदना और बेचना! और वह भी एक आज़ाद देश मे! क्या वहा लोगो म क्रातिकारी भावना नदारद है? मैंने उन्हे समझाने की कोशिश की कि मेरे देश मे लोग कानून के जरिये रद्दोबदल लाने की कोशिश करते हैं।

बक्लानोव नामक एक नौजवान सार्जेंट ने, जो फ़ासीसी बोलता था, अपना सिर हिला कर कहा, "बेशक, लेकिन आपके यहा अत्यधिक विकसित पूजीपति वर्ग मौजूद है, क्यो? अगर ऐसा है, तो यह वर्ग ज़रूर विधान सभाओं और अदालतों पर हावी होगा। फिर लोग हालात को कैसे बदल सकते है? मै आपके देश को नही जानता, लिहाजा आप मुझे कायल कर सकते हैं, फिर भी मुझे यह बात अविश्वसनीय मालूम होती है..."

मैंने कहा कि मैं त्सारस्कोये सेलो जा रहा हू। "मैं भी चलूगा," बक्लानोव ने यकायक कहा। "और मैं भी... और मैं भी..." वहां

---

*"टैमिनी" या "टैमिनी हॉल", न्यू-यार्क मे अमरीकी डेमाक्रेटिक पार्टी का सदर दफ़्तर, जो उन दिनो हुए भडाफोड़ के बाद भ्रष्टाचार तथा अपराध का प्रतीक बन गया। -सं०
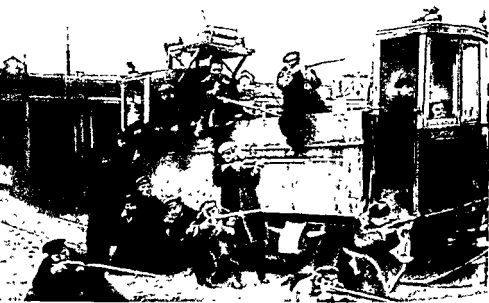
वक़्तरबन्द ट्राम-गाड़ी, जिसे मास्को के ज़ामोस्क्वोरेच्ये इलाके मे नवम्वर की लड़ाई मे इस्तेमाल किया गया था।

ने कहा। और फिर तो सब के सब तुरन्त त्सारस्कोये सेलो जाने का फ़ैसला कर बैठे।

ठीक उसी वक़्त दरवाज़े पर दस्तक हुई। दरवाज़ा खुला तो चौखट पर एक कर्नल की शक्ल नज़र आयी। उसे देख कर उठा तो कोई भी नहीं, लेकिन सभी ने ऊंची आवाज़ में अभिवादन जताया। "मैं अंदर आ सकता हूं?" कर्नल ने पूछा। "प्रोसिम! प्रोसिम!" (बेशक, बेशक) उन्होंने सहर्ष कहा। कर्नल मुस्कुराते हुए अंदर आये—लंबा कद, बदन पर एक चमड़े का लबादा, जिस पर सुनहरी जरी का काम था। "मेरा ख़्याल है मैंने आप लोगों को यह कहते हुए सुना कि आप त्सारस्कोये सेलो जा रहे हैं," कर्नल ने कहा, "क्या मैं भी आपके साथ चल सकता हूं?"

वक्लानोव ने सोचते हुए जवाब दिया, "मैं नहीं समझता कि आज यहां हमें कुछ करना है। अच्छी बात है, कामरेड, आप बड़ी ख़ुशी से हमारे साथ चलिये।" कर्नल ने उन्हें धन्यवाद जताया और अपने लिए गिलास में चाय ढालते हुए बैठ गये।

वक्लानोव ने कर्नल के अभिमान को ठेस पहुंचाने के भय से मेरे कान में कहा: "बात यह कि मैं समिति का अध्यक्ष हूं। सिवाय लड़ाई के वक़्त, जब हम कमान कर्नल के हाथ में सौंप देते हैं, बटालियन पूरी तरह हमारे अख़्तियार में है। लड़ाई के मैदान में उनके हुक्म की तामील ज़रूरी है, लेकिन वह हमारे प्रति पूरी तरह उत्तरदायी हैं। बारिकों के अन्दर बिना हमारी इजाज़त के वह कोई कार्रवाई नहीं कर सकते। आप उन्हें हमारा कार्यकारी अफ़सर कह सकते हैं..."

हमें हथियार—बंदूकें और तमंचे—दिये गये। "मालूम है, रास्ते में कज़्ज़ाकों से मुठभेड़ हो सकती है,"—और हम सब ऐम्बुलेंस-गाड़ी में लद गये। मोर्चे के लिए अख़बारों के तीन बड़े बड़े बंडल भी उसमें लाद दिये गये। गाड़ी सीधे लितेइनी की सड़क से और फिर जागोरोद्नी मार्ग से धड़ धड़ करती हुई चली। मेरी बगल में लेफ़्टीनेंट का बिल्ला लगाये एक नौजवान बैठा था। ऐसा लगता था कि वह यूरोप की सभी भाषाओं को समान रूप से धड़ल्ले से बोलता है। वह बटालियन समिति का एक सदस्य था।

"मैं बोल्शेविक नहीं हूं," उसने मुझे विश्वास दिलाते हुए आग्रहपूर्वक कहा। "मेरा परिवार बड़े पुराने और अभिजात परिवारों में से है। मैं खुद – आप चाहें तो कह सकते हैं कि मैं कैडेट हूं..."

"लेकिन कैसे.. " मैं अचरजा कर पूछने लगा था कि उसने कहा:

"हां, मैं समिति का सदस्य हूं। मैं अपने राजनीतिक विचारों को छिपाता नहीं हूं, लेकिन दूसरों को कोई एतराज नहीं है, क्योंकि वे जानते हैं कि मैं बहुमत की इच्छा का विरोध करने का हामी नहीं हूं... फिर भी मैंने मौजूदा गृहयुद्ध में कोई भी भाग लेने से इनकार किया है, क्योंकि मैं अपने रूसी भाइयों के ऊपर तलवार उठाने का हामी नहीं हूं..."

"उकसावेबाज! कोर्नीलोवपंथी!" पास के दूसरे आदमी ने हंसते हुए उसके कंधे पर हाथ मार कर कहा...

मोस्कोव्स्की द्वार के विशाल सियाहीमायल पत्थर से बने मेहराब के नीचे से निकल कर, जिस पर सुनहरे चित्राक्षर, भारी-भरकम शाही उकाब और जारों के नाम खुदे हुए थे, हम प्रशस्त राजमार्ग पर दौड़ने लगे, जिसके सलेटी रंग में मौसम की पहली हल्की बर्फ़ की सफ़ेदी मिल गयी थी। सड़क पर लाल गार्डों का रेला चला आ रहा था – गाते-बजाते और शोर मचाते वे क्रान्तिकारी मोर्चे की ओर पैदल चले जा रहे थे। दूसरी ओर से लोग, जिनके मुंह सूखे हुए और कपड़े कीचड़ में सने हुए थे, लौट रहे थे। उनमें अधिकांश लड़के मालूम होते थे। औरतें जा रही थीं – कुछ फावड़ा-कुदाल लिये, कुछ बंदूकें और कारतूस की पेटियां लिये और कुछ अपनी बांहों पर रेड क्रास का फीता लगाये – झुग्गी-झोंपड़ियों की औरतें, जो मेहनत करते करते छीज गयी थीं और जिनकी कमर झुक गयी थी। सिपाहियों के दस्ते बेतरतीब चलते हुए और लाल गार्डों को मुहब्बत भरी आवाजें देते हुए; रूक्ष, कठोर मल्लाह; अपने मां-बाप के लिए खाने के छोटे छोटे पैकेट लिये हुए लड़के – ये सब आ रहे थे या जा रहे थे। पथरीली सड़क पर चार अंगुल कीचड़ होगी, जिसमें बर्फ़ की सफ़ेदी मिल गयी थी – उसमें पैर धसाते लोग चले जा रहे थे। गोला-बारूद की पेटियों के साथ टन टन करती दक्षिण की ओर जाती तोपें; हथियारबंद लोगों से खचाखच भरी दोनों ओर जा रही ट्रकें; लड़ाई के मैदान से लौटती घायलों से भरी ऐंबुलेंस-गाड़ियां – हम इन सबको पीछे

छोड़ कर आगे बढ़ गये। एक बार चू-चू करता एक देहाती छकडा भी नजर आया, जिसमे एक विवर्ण-मुख नौजवान अपने पेट के ऊपर, जो भुरकुस हो गया था, झुका हुआ था और लगातार एक से स्वर मे चीख-कराह रहा था। दोनो ओर खेतो मे औरते और बूढे आदमी खाइया खोद रहे थे और कटीले तार लगा रहे थे।

पीछे उत्तर की ओर बादल सहसा, जैसे एक चमत्कार हो गया हो, फट गये और पीला, मुरझाया हुआ सूरज निकल आया। सपाट, कीचड भरे मैदान के उस पार पेत्रोग्राद चमक रहा था। दायी ओर सफेद, सुनहरे और रंगीन गुंवद और मीनारे ; बायी ओर ऊची ऊंची, काला धुआ उगलती हुई चिमनियां। दूर फिनलैंड के ऊपर आसमान में उमडते-घुमडते बादल। हमारे दोनो बाजू गिरजाघर, मठ... कभी कभी कोई भिक्षु सडक पर लहराती, बल खाती सर्वहारा सेना को देखता नजर आ जाता था।

पूल्कोवो मे सड़क एक तिमुहानी में मिल गयी थी ; वहा एक बहुत बडी भीड़ के बीच हम रुक गये। वहा, जहा तीनो ओर से रेले चले आ रहे थे, भारी जमघट लगा हुआ था — दोस्त बड़े जोश के साथ मिलते, एक-दूसरे को बधाइया देते और एक-दूसरे को लड़ाई का हाल सुनाते। ऐन तिमुहानी पर इमारतों की एक क़तार थी, जिन पर गोलियो के निशान थे। आधे मील की दूरी मे लोगों के पैरों के नीचे मिट्टी बुरी तरह रौंदी गयी थी, जैसे आटा गूधा जाता है। यहा घमासान लड़ाई हुई थी... पास ही कज़्ज़ाको के बिना सवारो के घोड़े भूखे चक्कर काट रहे थे, क्योकि मैदानों की घास बहुत पहले ही मर चुकी थी। बिल्कुल हमारे सामने ही एक लाल गार्ड एक घोड़े पर चढ़ने की अटपटी कोशिश कर रहा था, वह बार बार गिरता और फिर चढ़ने की कोशिश करता। एक हजार सीधे-सादे लोग उसे देख कर बच्चो की तरह आनद ले रहे थे।

बायी ओर की सड़क, जिससे बचे-खुचे कज़्ज़ाक भाग निकले थे, एक पहाड़ी के ऊपर आबाद एक छोटे से गाव को जाती थी, जहा से नीचे दूर दूर तक फैले हुए धूसर मैदान का, शात, निस्तब्ध समुद्र की तरह जस्तई मैदान का बड़ा सुदर दृश्य मिलता था — ऊपर काले काले बादल उमड़-घुमड़ रहे थे, और नीचे सड़को पर उस शाही शहर के हलक से निकले हुए हज़ारो नागरिकों का हुजूम था। दूर बायी ओर क्रास्नोये सेलो

की पहाडी थी, जहा शाही गार्ड के ग्रीष्म ग्रावास का परेड-मैदान था और साथ मे शाही डेयरी भी थी। बीच की दूरी में सपाट मैदान था, जिसकी एकरसता को अगर कोई चीज़ भंग करती थी, तो वह थी चहारदीवारी से घिरे हुए मठ और विहार, इक्के-दुक्के कारखाने और कुछ बड़ी बड़ी इमारतें, जिनके अहातों में झाड़-झंखाड़ भरे थे—ये थे अनाथालय और आश्रम....

उस बीहड़ पहाड़ी पर मोटर चढ़ाते हुए ड्राइवर ने कहा, "यह देखिए, यहा वेरा स्लूत्स्काया मारी गयी—जी हां, दूमा की बोल्शेविक सदस्य वेरा स्लूत्स्काया। आज सुबह की ही तो बात है। वह एक मोटर मे थी—साथ में जालकिन्द और एक साथी और थे। लड़ाई में मोहलत का एलान किया गया था, और वे मोर्चे की खाइयों की तरफ़ जा रहे थे। वे हंस हंस कर बात कर रहे थे कि यकायक जिस बख़्तरबंद रेल-गाड़ी मे केरेन्स्की ख़ुद सफ़र कर रहे थे, उसमें किसी ने मोटर को देखा और उस पर एक गोला दाग़ दिया। गोला वेरा स्लूत्स्काया को लगा और वह मारी गयी..."

इस प्रकार हम त्सारस्कोये सेलो पहुंचे, जहां सर्वहारा सेना के गर्वस्फीत शूरवीर भीड़ लगाये हुए थे। जिस महल में सोवियत की मीटिंग हुई थी, वहां ख़ूब चहल-पहल थी। सहन में लाल गार्डों और मल्लाहों की भीड़ थी, दरवाज़ों पर संतरी खड़े थे और दूतों तथा कमिसारों की आवा-जाही बराबर लगी हुई थी। सोवियत सभा-कक्ष में समावार रख दिया गया था और पचास-साठ मजदूर, सिपाही, मल्लाह और अफ़सर चारों ओर खड़े चाय की चुसकियां ले रहे थे और जोर जोर से बातें कर रहे थे। एक कोने मे दो मजदूर एक साइक्लो मशीन को चलाने की कोशिश कर रहे थे। बीच की मेज़ पर विशालकाय दिवेंको एक नक़्शे के ऊपर झुके हुए थे और लाल तथा नीली पेंसिलों मे सेनाओं की स्थितियों को अंकित कर रहे थे। हमेशा की तरह इस वक़्त भी उनके खाली हाथ में नीले इस्पात का बड़ा तमंचा था। जरा देर बाद ही वह टाइपराइटर के सामने बैठ गये और एक ही उंगली से खट-खट टाइप करने लगे। जरा जरा देर बाद रुक कर वह तमंचा उठा लेते और उसे बड़े प्रेम से हाथ में घुमाने लगते।

दीवार के साथ एक सोफा पडा था, जिस पर एक नौजवान मजदूर लेटा हुआ था। दो लाल गार्ड उसकी सेवा-सुश्रूषा मे लगे हुए थे, लेकिन

बाक़ी लोग उधर ध्यान नहीं दे रहे थे। गोली ने उसकी छाती में सूराख़ कर दिया था ; दिल की हर धड़कन के साथ ताजा खून उसके कपड़ों में छलक पड़ता। उसकी आखें बंद थीं, और दढ़ियल चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई थी, उसकी सास अभी भी धीमी धीमी चल रही थी और हर सास के साथ आवाज़ आ रही थी—"मीर बूदित! मीर बूदित!" (शांति आनेवाली है! शांति आनेवाली है!)

जब हम अंदर घुसे, दिबेंको ने सिर उठा कर हमारी ओर देखा, और फिर बक्लानोव से कहा, "कामरेड, क्या आप कमांडेंट के सदर दफ़्तर का चार्ज लेंगे? ठहरिये, मैं आपके लिए प्रत्यय-पत्र लिख दूं।" वह टाइपराइटर के सामने बैठकर धीरे धीरे एक अक्षर के बाद दूसरे अक्षर पर उंगली मारने लगे।

त्सारस्कोये सेलो के नये कमांडेंट के साथ मैं येकातेरीना प्रासाद के लिए रवाना हो गया। बक्लानोव बड़ा उत्तेजित था, वह यह महसूस कर रहा था कि उसे एक बड़ी ज़िम्मेदारी दी गई है। उसी काफ़ूरी सजावटी कमरे में कई लाल गार्ड कौतूहल से चीज़ों को गौर से देख रहे थे और मेरा पुराना दोस्त कर्नल खिड़की के पास खड़ा अपनी मूछें चबा रहा था। वह मुझसे इस प्रकार से मिला, जैसे उसे उसका बहुत दिनों का खोया हुआ भाई मिल गया हो। दरवाज़े के पास एक मेज़ के साथ बेसाराबिया का रहने वाला फ़्रांसीसी भी बैठा था। बोल्शेविकों ने उसे हुक्म दिया था कि वह वहीं रहे और अपना काम करता रहे।

"मैं भला करता ही क्या?" वह भुनभुनाया। "मेरे जैसे आदमी कमीनी भीड़ की नादिरशाही को फ़ितरी तौर पर कितना भी नापसंद क्यों न करें, वे ऐसी लड़ाई में किसी भी ओर से लड़ नहीं सकते... मुझे सिर्फ़ एक ही अफ़सोस है, कि मैं बेसाराबिया में अपनी मां से इतना दूर हूं!"

बक्लानोव औपचारिक रूप से कमांडेंट से चार्ज ले रहा था। "यह लीजिये, मेज की दराज़ों की चाबियां," कर्नल ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा।

एक लाल गार्ड ने बीच में टोक कर कड़े स्वर में पूछा, "रुपया कहां है?" कर्नल जैसे ताज्जुब में आकर बोला, "रुपया, रुपया? आपका मतलब शायद सदूकची से है। यह लीजिये, बिलकुल वैसी ही, जैसी मैंने उसे

ग्राज से तीन दिन पहले पाया था। चाबियां?" कर्नल ने ग्रपने कंधे को जुंबिश दी। "चाबियां मेरे पास नहीं है।"

लाल गार्ड ने उसकी खिल्ली उड़ाते हुए इस ग्रदाज में कहा, जैसे उसे सब कुछ मालूम है "क्यों होगी! ग्रापकी सहूलियत जो ठहरी!"

"ग्राइये, हम सदूकची को खोल डाले," वस्लानोव ने कहा, "लाना भाई एक हथौडा। यह हमारे एक ग्रमरीकी साथी हैं, वही सदूकची को तोड डालें ग्रौर जो भी उन्हें उसके भीतर मिले, उसे दर्ज कर ले।"

मैंने हथौडा चलाया। लकडी की सदूकची खाली थी।

"हमें इसे गिरफ्तार कर लेना चाहिए," लाल गार्ड ने गुस्से ग्रौर नफरत से कहा। "यह केरेन्स्की का ग्रादमी है। इसने पैसे चुरा लिये हैं ग्रौर उन्हें केरेन्स्की को दे डाला है।"

वस्लानोव उसे गिरफ्तार नहीं करना चाहता था। "नही, नही," उसने कहा। "पहले जो कोर्नीलोवपथी यहा था, उसने यह काम किया होगा। यह दोषी नही है।"

"ग्राप नही जानते, यह पूरा शैतान है," लाल गार्ड ने तेज लहजे में कहा। "मै कहता हू, यह केरेन्स्की का ग्रादमी है। ग्रगर ग्राप इसे गिरफ्तार नही करेंगे, तो हम करेंगे। हम उसे पेत्रोग्राद ले जायेंगे ग्रौर पीटर-पाल किले मे बद कर देंगे। उसकी वही जगह है!" दूसरे लाल गार्डों ने भी गुर्राते हुए उसकी हा मे हा मिलायी। कर्नल हमारी ग्रोर दयनीय दृष्टि से देखते हुए ले जाया गया ..

उस महल के सामने, जहा सोवियत का सदर दफ्तर था, एक ट्रक खडी थी ग्रौर मोर्चे के लिए रवाना होने को थी। एक लम्बे-तड़ंगे मजदूर के नेतृत्व मे ग्राधा दर्जन लाल गार्ड, चंद मल्लाह ग्रौर दो-एक सिपाही ट्रक के ग्रंदर चढ गये ग्रौर उन्होंने मुझे ग्रावाज लगाई कि मैं भी उनके साथ चला चलू। सदर दफ्तर से कई लाल गार्ड निकले, वे प्रुबित से भरे छोटे छोटे नालीदार लोहे के बम हाथ मे लिये थे ग्रौर उसके बोझ से लडखडा कर चल रहे थे। कहते है कि प्रुबित डाइनेमाइट से दस गुना ग्रधिक विस्फोटक ग्रौर पाच गुना जल्दी भडक उठने वाला होता है। बमों को ट्रक के ग्रदर डाल दिया गया, फिर एक तीन इंच के मुह वाली तोप

उसमें लाद दी गई और उसे ट्रक के पीछे की ओर रस्सियों और तार से बांध दिया गया।

हमने ज़ोर की एक दहाड़ मारी और चल दिये – कहने की जरूरत नहीं कि बड़ी तेज रफ्तार में चले। ट्रक झोंक में कभी दायीं ओर होती, तो कभी बायीं ओर। जुम्बिश खाकर तोप का कभी एक पहिया ऊपर उठ जाता, कभी दूसरा। पुबित के बम हमारे पैरों के नीचे गाड़ी भर में लुढ़कते-फिरते और उसकी दीवार के साथ बड़ी ज़ोर से टकराते।

लंबे-तड़ंगे लाल गार्ड ने, जिसका नाम ब्लादीमिर निकोलायेविच था, अमरीका के बारे में सवालों की झड़ी लगा दी। "अमरीका लड़ाई में क्यों शामिल हुआ? क्या अमरीकी मजदूर पूंजीपतियों का तख्ता उलटने के लिए तैयार हैं? मूनी* वाले मामले में अब क्या स्थिति है? क्या वे बर्कमैन** को सान-फ़ासिस्को के हवाले कर देंगे?" और इसी तरह के दूसरे सवाल, जिनका जवाब देना मुश्किल था। वह चिल्ला चिल्ला कर बोल रहा था, ताकि गाड़ी के शोरगुल के बीच उसे सुना जा सके और हम एक दूसरे को थामे हुए थे और साथ साथ झोंके खा रहे थे, और हमारे इर्द-गिर्द पुबित के बम लुढ़क रहे थे।

कभी कभी कोई गश्ती दस्ता हमें रोकने की कोशिश करता। सिपाही सड़क पर दौड़ कर हमारे सामने आ जाते और चिल्लाते "स्तोइ!" (ठहर जाओ!) और अपनी बन्दूकें सीधी करते।

हम उनकी बात पर ध्यान नहीं देते। "जहन्नुम में जाओ!" लाल गार्ड

---

*टाम मूनी – अमरीका के मजदूर आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने वाले एक स्मेल्टर, जिसे २२ जुलाई, १९१६ को सान-फ़ासिस्को नगर की परेड में बम फेंकने का झूठा इलज़ाम लगा कर मौत की सजा दी गई। जनता के दबाव के कारण प्रेजिडेंट को इस मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा और मौत की सजा आजीवन कारावास में बदल दी गई। यद्यपि बाद में यह पूरी तरह प्रमाणित हो गया कि टाम मूनी निर्दोष था, उसे बीस साल जेल में काटने पड़े और उसे तभी छोड़ा गया, जब रूज़वेल्ट अमरीका के प्रेजिडेंट हुए। – सं०

**बर्कमैन पर टाम मूनी के साथ ही मुकदमा चलाया गया था। – सं०

चिल्लाते। "हम हैं लाल गार्ड! हम किसी के लिये रुकने वाले नहीं हैं!" और हम बड़े रोब से धड़धड़ाते हुए निकल जाते। और उसी शोर-गुल में ब्लादीमिर निकोलायेविच गला फाड़ कर चिल्लाते—पनामा नहर के अंतर्राष्ट्रीयकरण के बारे में और दूसरी ऐसी ही बातों के बारे में बात करते...

करीब पाच मील जाने के बाद हमने देखा कि मल्लाहों का एक जत्था वापिस लौट रहा था और हमने गाड़ी धीमी कर दी।

"मोर्चा कहां है, भाइयो?"

सबसे आगे जो मल्लाह था उसने रुककर अपना माथा खुजलाते हुए कहा, "आज सुबह तो वह यहा से लगभग आधा मील दूर था। लेकिन इस वक़्त तो कमबख्त वह कही भी नजर नही आता। हम चलते गये, चलते गये, लेकिन मोर्चे का कही पता न था।"

वे भी गाड़ी में चढ आये और हम आगे बढ़े। हम क़रीब एक मील गये होगे कि ब्लादीमिर निकोलायेविच के कान खड़े हो गये, उन्होंने ध्यान से सुना और ड्राइवर को रुकने को कहा।

"सुनते हो? गोली चलने की आवाज!" उन्होंने कहा। क्षण भर निस्तब्ध शाति और फिर जरा आगे बाई ओर दनादन तीन गोलियों के छूटने की आवाज। जहा हम ठहरे थे, सडक के किनारे घना जगल था। हम अत्यंत उत्तेजित भाव से फुसफुसा कर बात करते चीटी की चाल से आगे बढ़ते गये, जब तक कि गाडी क़रीब करीब उस जगह के सामने नही आ गई, जहा से गोलियां छूटी थी। हर आदमी ने अपनी बदूक उठाई और हम नीचे उतर कर फैल गये और दबे कदमों से जंगल के अंदर घुस गये।

इसी बीच दो साथियो ने तोप को खोल लिया था और उस समय तक घुमाते रहे, जब तक कि वह हमारी पीठ की ओर सीधी न हो गई।

जगल के अंदर निस्तब्ध शाति थी। पेड़ो की पत्तिया झड़ चुकी थीं और शरद की रुग्ण निस्तेज धूप में ऐसा लगता था कि उनके तनों पर मुर्दनी छाई हुई है। सिवाय जगल के तल्ड्यों की बर्फ के, जो हमारे पैरों के दबाव से काप रही थी, कहीं पर एक पत्ता भी नहीं खड़क रहा था। मन में हुआ, कहीं दुश्मन घात में तो नही बैठा है?

हम बिना किसी दुर्घटना के तब तक आगे बढ़ते गये, जब तक कि हम जगल के एक बहुत घने भाग में नही पहुच गये। उस ओर,

जहा पेड़ो को काट कर थोड़ी सी जगह साफ कर ली गई थी, तीन सिपाही हमारी ओर से बिल्कुल बेख़बर एक छोटे से अलाव के चारों ओर बैठे थे।

व्लादीमिर निकोलायेविच ने आगे बढ कर अभिवादन जताया, "ज़्द्रास्त्वुइते, साथियो!" उनके पीछे एक तोप, बीस बन्दूके और गाड़ी भर गुबित के बम एक इशारे पर छूटने के लिए तैयार थे। तीनों सिपाही उछल पड़े।

"यहां कैसी गोली चल रही थी?"

एक सिपाही ने इतमीनान की सास लेते हुए कहा, "कुछ नही, कामरेड, हम बस ख़रगोश का शिकार कर रहे थे. ."

दिन की खुली, उजली धूप मे हमारी गाड़ी रोमानोव की ओर बढी। पहले चौराहे पर दो सिपाही दौड़ कर हमारे सामने आ गये और उन्होने अपनी बन्दूकों मे इशारा किया। हमने गाड़ी धीमी की और रुक गये।

"आपके पास कहा है, साथियो!"

लाल गार्डों ने बड़ा हल्ला मचाया। "अजी, हम लाल गार्ड हैं, हमे पास-वास की ज़रूरत नही है... ड्राइवर, आगे बढ़ो, उनकी परवाह मत करो!"

लेकिन एक मल्लाह ने एतराज़ किया, "यह चीज़ ग़लत है, साथियो। हमारे लिये क्रातिकारी अनुशासन ज़रूरी है। मान लीजिये, कुछ प्रति-क्रातिकारी ट्रक मे चढ़ कर आये और बोले 'हमे पासों की ज़रूरत नही है' तो फिर? आख़िर यहा के साथी आपको जानते तो नही हैं।"

इस पर एक ख़ासी बहस छिड़ गई। एक एक करके मल्लाहों और सिपाहियों ने पहले मल्लाह की हा मे हा मिलाई। हर लाल गार्ड ने भुनभुनाते हुए अपनी गदी बुमागा (कागज) निकाली। मेरे पास के सिवा, जो स्मोल्नी में क्रातिकारी सैनिक स्टाफ़ द्वारा जारी किया गया था, बाक़ी सभी कागज एक ही ढग के थे। संतरियों ने कहा कि मुझे उनके साथ जाना होगा। लाल गार्डों ने घोर आपत्ति प्रगट की, लेकिन जिस मल्लाह ने पहले-पहल बात की थी, उसने आग्रहपूर्वक कहा, "हम जानते हैं कि यह साथी सच्चे साथी है। परन्तु समिति के कुछ आदेश हैं, जिनका उल्लघन हरगिज नहीं किया जा सकता। यही तो क्रातिकारी अनुशासन है..."

मेरी वजह से कोई परेशानी न पैदा हो, इस ख़्याल से मैं ट्रक से नीचे उतर आया और मेरे देखते देखते वह साथियों की अलविदा के साथ सड़क की मोड पर गायब हो गयी। सिपाहियों ने आपस मे मिनट भर सलाह-मशविरा किया और फिर मुझे ले जा कर एक दीवार के साथ खड़ा कर दिया। बिजली की तरह मेरे मन मे यह बात कौंध गई: वे मुझे शूट करने जा रहे हैं!

ИСПОЛНИТЕЛЬНЫЙ КОМИТЕТ
ПЕТРОГРАДСКОГО СОВЕТА
РАБОЧИХЪ и СОЛДАТСКИХ
ДЕПУТАТОВЪ
Военный Отделъ

28 Октября 191 г.
26/1435

УДОСТОВѢРЕНІЕ.

Настоящее удостовѣреніе дано представите Американской Соціалъ - демократіи Интернаціоналисту товарищу ДЖОНУ РИДЪ въ томъ, Военно - Революціонный Комитетъ Петербургскаг Совѣта Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ пред - ставнеѣъ имъ права свободнаго проѣзда по всѣм Сѣверному фронту въ цѣляхъ освѣдомленія нашихъ Американскихъ товарищей интернаціоналистовъ съ событіями въ Россіи.

Председатель:

Секретарь

उत्तरी मोर्चे की यात्रा करने के लिए जॉन रीड को दिया गया पास

तीनों दिशाओं में चिड़िया का एक पून भी दिखायी नही दे रहा था। बस बग़ल की सड़क से चौथाई मील दूर एक ढाचा – लकडी के एक बेढगे मकान से जो धुआ निकल रहा था, वही जीवन का एकमात्र चिह्न था।

दोनों सिपाही सडक पर पहुचे ही होंगे कि मैं घबराया हुआ उनके पीछे दौड़ा।

"लेकिन, साथियो, देखिये, यह सैनिक क्रातिकारी समिति की मुहर है!"

उन्होंने अनबूझ भाव से एकटक मेरे पास की ओर देखा और फिर एक दूसरे की ओर।

"भाई, हम पढ़ नहीं सकते," एक ने कुछ चिढ़कर कहा। "लेकिन यह पास औरों से अलग है।"

मैंने उसकी कुहनी पकडते हुए कहा, "आइये, हम उधर उस घर की ओर चले। वेशक वहा कोई न कोई इसे पढ सकेगा।" वे हिचकिचा रहे थे। "नही," एक ने कहा। दूसरा मुझे सिर से पाव तक देख कर भुनभुनाया, "क्यो नही? आख़िरकार एक बेकसूर आदमी को मारना भारी अपराध है।"

हमने मकान के सामने के दरवाजे पर जाकर दस्तक दी। एक मोटी ठिगनी सी औरत ने दरवाजा खोला और घबराकर पीछे हट गई। उसने लडखड़ाई हुई आवाज मे कहा, "मैं उनके बारे मे कुछ नही जानती! मैं उनके बारे म कुछ नही जानती!" एक संतरी ने उसकी ओर मेरा पास बढ़ाया। वह डर के मारे फिर चीख पडी। "कुछ नही, इसे बस पढ़ दीजिये, कामरेड।" उसने कापते हाथों से पुर्जा लिया और जल्दी जल्दी पढ डाला

इस पास के वाहक, जॉन रीड, अमरीकी सामाजिक-जनवाद के एक प्रतिनिधि हैं, एक अन्तर्राष्ट्रीयतावादी हैं...

सड़क पर वापिस आकर दोनों सिपाहियों ने फिर आपस में मशविरा किया। "हमें आपको रेजीमेंट समिति के पास ले जाना होगा," उन्होंने कहा। हम शाम के तेज़ी से गहरे होते हुए झुटपुटे में कीचड़ भरी सड़क से मन मन भर के पैर रखते चले। कभी कभी सिपाहियों का कोई दस्ता रास्ते में मिल जाता। वे हमें रोक लेते और मुझे क्रुद्ध दृष्टि से

घूरते हुए एक दूसरे के हाथ में मेरे पास को देते और इस बात को लेकर गर्मागर्म बहस करते कि ग्राया मुझे गोली मार देनी चाहिये या नहीं...

जब हम दूसरी त्सारस्कोये सेलो राइफिल्स की बारिकों में पहुंचे, अंधेरा घिर ग्राया था। सड़क के किनारे नीची छत की इमारतें, एक दूसरी से सटी सटी, बेढंगे तरीके से फैली हुई थीं। फाटक पर शिथिल भाव से खड़े कुछ सिपाहियों ने बड़े उत्सुक भाव से पूछना शुरू कर दिया, "जासूस है? उकसावेबाज है?" हम घुमावदार सीढ़ियों से चढ़ कर एक बहुत बड़े हॉल में ग्रा गये, जो सामान से खाली था ग्रौर जिसके बीच में एक बहुत बड़ी भट्ठी जल रही थी। फर्श पर कतार की कतार चारपाइयां बिछी हुई थीं, जिन पर लगभग एक हजार सिपाही ताश खेल रहे थे, बातचीत कर रहे थे, गा-बजा रहे थे या बस सोये पड़े थे। छत में, जहां केरेन्स्की का गोला गिरा था, एक बेढंगा सूराख़ था...

मैं ड्योढ़ी में खड़ा था ग्रौर यकायक हॉल में सन्नाटा छा गया ग्रौर सिपाहियों के झुंड मेरी ग्रोर मुड़ कर मुझे घूरने लगे, ग्रौर फिर ग्रचानक वे उठ खड़े हुए ग्रौर पहले धीरे धीरे ग्रौर फिर तेज़ी से चिल्लाते हुए मेरी ग्रोर लपके। उनके चेहरे नफरत से सियाह हो रहे थे। "साथियो, साथियो," मेरे साथ के एक संतरी ने चिल्ला कर कहा, "समिति, समिति को बुलाइये!" भीड़ ठहर गई ग्रौर लोग भुनभुनाते हुए मुझे घेर कर खड़े हो गये। उनको ठेलता-ठालता एक दुबला-पतला नौजवान सामने ग्राया, जिसने ग्रपनी बांह पर एक लाल फीता बांध रखा था।

"यह कौन है?" उसने कड़ी ग्रावाज़ में पूछा। गार्डों ने सारा मामला उसे समझाया। "लाग्रो, कागज मेरे हाथ में दो।" उसने मेरी ग्रोर तेज़ नजर से देखते हुए उसे ध्यान से पढ़ा। फिर वह मुस्करा पड़ा ग्रौर मुझे पास वापिस देता हुग्रा बोला, "साथियो, यह ग्रमरीका के एक साथी हैं। मैं समिति का ग्रध्यक्ष हूं ग्रौर ग्रापका रेजीमेंट में स्वागत करता हूं..." यकायक भीड़ से एक गूंज उठी, जो ग्रभिवादन के तुमुल स्वर में बदल गयी। वे मुझसे हाथ मिलाने के लिए बढ़े।

"ग्रापने खाना तो नहीं खाया होगा? यहां हम खा चुके हैं। ग्राप ग्रफसरों के मेस में जायें, वहां ग्रापको ग्रपनी भाषा बोलने वाले कुछ लोग मिलेंगे..."

वह मुझे लिए सहन पार कर एक दूसरी इमारत के दरवाजे पर पहुंचा। वहा लेफ़्टीनेंट की वर्दी पहने एक नौजवान, जो देखने मे रईसजादा मालूम होता था, उसी वक़्त अंदर दाखिल हो रहा था। अध्यक्ष ने उससे मेरी मुलाकात कराई और हाथ मिला कर वापिस चला गया।

लेफ़्टीनेंट ने सुन्दर फ़ासीसी बोलते हुए कहा, "मैं स्तेपान गेओर्गियेविच मोरोव्स्की हूं और मैं आपकी खिदमत मे हाजिर हूं।"

सजे-सजाये प्रवेश-कक्ष से एक आरायशी सीढ़ी ऊपर चली गई थी, जिस पर चमकते हुए झाड़-फ़ानूसो की रोशनी पड़ रही थी। ऊपर की मजिल पर एक हॉल था, जिसके दरवाज़े बिलियर्ड खेलने, ताश खेलने के कमरो और लाइब्रेरी में खुलते थे। हम खाने के कमरे मे दाखिल हुए, जिसके बीच मे एक लंबी मेज लगी थी और उसके चारो ओर करीब बीस अफसर अपनी पूरी वर्दिया पहने, सोने और चादी की मुठियो वाली तलवारे बाधे और शाही तमग़ों को लगाये हुए बैठे थे। जब मैं घुसा, सबके सब शिष्टाचार से उठ खड़े हुए और उन्होने मेरे लिए कर्नल की बगल मे जगह की। वह एक लहीम-शहीम रोबीले चेहरे का आदमी था, जिसकी दाढ़ी भूरी थी। अर्दली सधे हाथो से खाना परस रहे थे। वातावरण वही था, जो यूरोप में किसी भी अफ़सरी मेस का हो सकता है। तो फिर कहा थी क्रांति?

"आप बोल्शेविक तो नही हैं?" मैंने मोरोव्स्की से पूछा।

मेज के गिर्द बैठे लोग मुस्करा पड़े। लेकिन मैंने यह भी लक्ष्य किया कि एक-दो आदमी नजर बचा कर अर्दली की ओर देख रहे थे।

"नही," मेरे दोस्त ने जवाब दिया। "इस रेजीमेंट मे सिर्फ़ एक ही बोल्शेविक अफसर है, और इस रात वह पेत्रोग्राद मे है। कर्नल मेन्शेविक है, और उधर बैठे कप्तान ख़ेर्लोव कैडेट हैं। मैं ख़ुद दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी हूं... मुझे कहना चाहिये कि सेना के अधिकाश अफसर बोल्शेविक नही है, लेकिन मेरी तरह वे भी जनवाद में विश्वास करते हैं, वे विश्वास करते हैं कि उन्हे आम सिपाहियों की इच्छा का पालन जरूर करना चाहिये..."

खाना ख़त्म होने के बाद नक़्शे लाये गये और कर्नल ने उन्हे मेज़ पर फैला दिया। बाकी लोग भी नक़्शे के ऊपर झुक गये।

कर्नल ने नक्शे पर पेंसिल के निशानों की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह देखिये, आज सुबह हमारे मोर्चे यहां पर थे। व्लादीमिर किरीलोविच, आपकी कम्पनी कहां पर है?"

कप्तान गेलोव ने नक्शे में एक स्थल की ओर संकेत करते हुए उत्तर दिया, "हमें जो हुक्म दिया गया था, उसके मुताबिक हमने इस सड़क के किनारे की जगह पर कब्जा कर लिया। पांच बजे करमाविन ने मुझसे चार्ज लिया।"

ठीक उसी वक्त दरवाजा खुला और एक सिपाही के साथ रेजीमेंट समिति के अध्यक्ष अंदर आये। कर्नल के पीछे जो लोग खड़े थे, वे भी उनके साथ नक्शे को देखने लगे।

"ठीक है," कर्नल ने कहा, "हमारे क्षेत्र में कज्ज़ाक दस किलोमीटर पीछे हट गये हैं। मेरे ख्याल में आगे बढ़ कर मोर्चाबंदी करना ज़रूरी नहीं है। आप साहबान आज की रात मौजूदा मोर्चों को संभालेंगे और उन्हें मजबूत करने के लिए..."

रेजीमेंट समिति के अध्यक्ष ने बात काटते हुए फ़रमाया, "आपकी इजाज़त से मैं कुछ कहना चाहता हूं। हुक्म यह है कि पूरी तेज़ी के साथ आगे बढ़ा जाये और सुबह गातचिना के उत्तर में कज्ज़ाकों से लोहा लेने की तैयारी की जाये। उन्हें ज़बरदस्त शिकस्त देना ज़रूरी है। आप कृपा कर उचित व्यवस्था करें।"

क्षण भर सन्नाटा रहा। कर्नल ने दोबारा नक्शे पर झुककर भिन्न स्वर में कहा, "अच्छी बात है, स्तेपान गेओर्गियेविच, आप कृपा कर..." नक्शे पर एक नीली पेंसिल से जल्दी जल्दी निशान लगाते हुए उन्होंने अपने हुक्म दिये और साथ ही साथ एक सार्जेंट शार्टहैंड में उन्हें दर्ज करता गया। फिर सार्जेंट वहां से चला गया और दस मिनट बाद कर्नल के हुक्म को टाइप करके मय एक कार्बन कापी के ले आया। समिति के अध्यक्ष ने एक कापी अपने सामने रख कर नक्शे का ध्यान से अध्ययन किया।

"ठीक है," उन्होंने उठते हुए कहा और कार्बन कापी चौपत मोड़ कर अपनी जेब में डाली। फिर उन्होंने दूसरी प्रति पर हस्ताक्षर किये, अपनी जेब से गोल सील निकाल कर उस पर मोहर लगाई और उसे कर्नल के हाथ में दे दिया।

यह थी क्रांति!

मैं रेजीमेंट की स्टाफ-गाड़ी में बैठ कर स्मोल्नी के सोवियत प्रासाद में वापिस लौटा। अभी भी वहां लाल गार्ड मजदूरों, सिपाहियों और मल्लाहों का आना-जाना लगा हुआ था; अभी भी वहां ट्रकों, बख्तरबंद गाड़ियों की रेल-पेल थी, वैसे ही दरवाज़े पर बदस्तूर तोप थी और नयी, निराली विजय के उल्लास में उद्घोष और अट्टहास गूंज रहा था। आधे दर्जन लाल गार्ड अपने बीच में एक पादरी को लिये हुए भीड़ को ठेलते हुए अंदर घुस रहे थे। उन्होंने कहा कि यह फादर इवान है, जिन्होंने कज्जाकों को, जब वे शहर में दाखिल हुए, अपना आशीर्वाद दिया था। बाद में मैंने सुना कि उन्हें गोली मार दी गई. .[4]

दिबेंको उसी वक़्त वहां से निकल रहे थे और लगातार आदेश पर आदेश दिये जा रहे थे। उनके हाथ में वही भारी तमचा था। सड़क के किनारे एक मोटर-गाड़ी खड़ी थी, जिसका इंजन दौड़ रहा था। वह पीछे की सीट में अकेले ही बैठ गये और केरेन्स्की को जीतने के लिए गातचिना के लिए रवाना हो गये।

रात होते होते वह शहर के बाहरी हिस्से में पहुंचे और वहां गाड़ी से उतर कर पैदल ही आगे बढ़े। दिबेंको ने कज्जाकों से क्या कहा, कोई नहीं जानता, लेकिन हकीकत यह है कि जनरल क्रास्नोव और उनके स्टाफ और कई हज़ार कज्जाकों ने हथियार डाल दिये और केरेन्स्की को भी ऐसा ही करने की राय दी।[5]

जहां तक केरेन्स्की का सवाल है, १४ नवम्बर की सुबह जनरल क्रास्नोव ने जो बयान दिया, उसे मैं यहां छाप रहा हूं:

"गातचिना, १४ नवम्बर, १९१७। आज क़रीब तीन बजे (सुबह) मुख्य सेनापति (केरेन्स्की) ने मुझे तलब किया। वह बहुत उत्तेजित और बहुत घबराये हुए थे।

" 'जनरल,' उन्होंने मुझसे कहा, 'आपने मुझे धोखा दिया। आपके कज्जाकों ने यह साफ एलान किया है कि वे मुझे गिरफ़्तार करके मल्लाहों के हवाले कर देंगे।'

" 'जी हां,' मैंने जवाब दिया, 'इस क़िस्म की बातचीत सुनने में आयी है। मैं जानता हूं कि आपके लिए कहीं भी किसी को हमदर्दी नहीं है।'

"'लेकिन अफसर भी वही बात कह रहे हैं।'

"'जी हां, अफसर ही आप से सबसे ज्यादा नफ़ा हैं।'

"'फिर मैं क्या करूं? मुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिये!'

"'अगर आप सम्माननीय-व्यक्ति हैं, तो आपको चाहिये कि आप फ़ौरन हाथ में सफ़ेद झंडी लेकर पेत्रोग्राद जायें, सैनिक क्रांतिकारी समिति के सामने हाजिर हों और अस्थायी सरकार के अध्यक्ष की हैसियत से उनके साथ बातचीत शुरू करें।'

"'अच्छी बात है। मैं ऐसा ही करूंगा, जनरल।'

"'मैं आपको एक रक्षक-दल दूंगा और यह भी मांग करूंगा कि एक मल्लाह आपके साथ जाये।'

"'नहीं नहीं, मल्लाह नहीं। क्या यह सच है कि दिबेंको यहां पर मौजूद है? आप जानते हैं?'

"'मैं नहीं जानता दिबेंको कौन है।'

"'वह मेरा दुश्मन है।'

"'इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। अगर आपने भारी बाजी लगाई है, तो आपको यह जानना ही चाहिये कि अवसर का उपयोग कैसे किया जाये।'

"'हां, मैं आज रात ही रवाना हो जाऊंगा।'

"'रात में क्यों? इसका मतलब होगा भागना। आप खुल्लमखुल्ला इतमीनान से जाइये, ताकि हर आदमी देख सके कि आप भाग नहीं रहे हैं।'

"'अच्छी बात है। लेकिन आप मुझे जरूर ऐसे रक्षक दीजिये, जिन पर मैं भरोसा कर सकूं।'

"'ठीक है।'

"मैं बाहर निकल आया और मैंने दोन की दसवीं रेजीमेंट के कज्जाक रूसाकोव को बुलाया और उसे हुक्म दिया कि वह मुख्य सेनापति के साथ जाने के लिए दस कज्जाकों को चुन ले। आधा घंटा बाद कज्जाकों ने आकर मुझे बताया कि केरेन्स्की अपने मुकाम में नहीं है, कि वह भाग गये हैं।

"मैंने ख़तरे का बिगुल बजवाया और हुक्म दिया कि उनकी तलाश की जाये। मेरा ख़्याल था कि वह गातचिना से बाहर नहीं जा सके होंगे। लेकिन उनका पता न चल सका..."

और इस प्रकार केरेन्स्की मल्लाह की वर्दी में छिप कर अकेले भाग निकले। अगर रूसी जन-साधारण के बीच उनकी कुछ साख बची थी, तो वह इस हरकत से बिल्कुल ही जाती रही...

मैं एक ट्रक की सामने की सीट में बैठ कर पेत्रोग्राद वापिस लौटा, जिसे एक मजदूर चला रहा था और जिसमें लाल गार्ड भरे हुए थे। ट्रक की बत्तिया गुल थी, क्योंकि हमारे पास मिट्टी का तेल न था। सड़क पर घर लौटती हुई सर्वहारा सेना का और उनकी जगह लेने के लिए उमड़ने वाले नये रिज़र्व सैनिकों का रेला था। रात के अधेरे मे हमारी ट्रक जैसी बड़ी बड़ी ट्रकें, क़तार की कतार तोपें और छकड़ा-गाड़िया धुधली धुधली दिखाई दे रही थीं। हमारी ही तरह सब की सब बगैर रोशनी के थी। हमारी गाड़ी हड़हड़ाती हुई बेतहाशा दौड़ रही थी और टक्करों से बचने के लिए, जो मालूम होता था लग कर ही रहेंगी, झटके से कभी दाईं ओर मुड़ती, तो कभी बाई ओर और दूसरी गाड़ियो के साथ रगड़ खाती आगे बढ़ जाती। पीछे से पैदल मुसाफिर कोसते और गालिया देते।

राजधानी, जो दिन के मुकाबले रात मे कही ज्यादा ख़ूबसूरत नज़र आ रही थी, क्षितिज पर धनुषाकार फैली हुई थी और उसकी बत्तियां चमक रही थी। ऐसा मालूम होता था, जैसे बीहड़ मैदान में किसी ने हीरा-मोती के ढेर जमा कर दिये हों।

पुराने मजदूर ने, जिसका एक हाथ गाड़ी की स्टियरिंग पर था, दूसरे हाथ को घुमाते हुए दूर चमकती राजधानी की ओर बड़े उल्लासपूर्ण भाव से इशारा किया।

"मेरा पेत्रोग्राद!" वह चीख़ उठा और उसका चेहरा चमक रहा था। "मेरा! सारा का सारा मेरा!"

दसवां अध्याय

मास्को

सैनिक क्रांतिकारी समिति अपनी विजय के बाद हाथ पर हाथ धरे नही बैठी रही, बल्कि वह तावड़तोड़ चोट पर चोट करती गई:

१४ नवम्बर।

सभी सेनाओं, कोरों, डिवीजनों, रेजीमेंटों की समितियों, सभी मजदूरो, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के नाम, सभी जनो के नाम, सभी के नाम।

कज्जाकों, युंकरों, सिपाहियों, मल्लाहों और मजदूरों के बीच हुए समझौते के मुताबिक यह फ़ैसला किया गया है कि अलेक्सान्द्र प़्योदोरोविच केरेन्स्की को जनता के एक न्यायाधिकरण के सम्मुख आरोप के लिए बुलाया जाये। हम मांग करते हैं कि केरेन्स्की को गिरफ़्तार किया जाये और उन्हें निम्नलिखित संगठनों के नाम पर आदेश दिया जाये कि वह अविलम्ब पेत्रोग्राद आये और न्यायाधिकरण के सामने हाजिर हों।

हस्ताक्षरित, उसूरी घुड़सवार सेना की पहली डिवीजन के कज्जाक; पेत्रोग्राद क्षेत्र के छापामार दस्ते की युंकर समिति; पांचवीं सेना का प्रतिनिधि।

जन-कमिसार दिबेंको

यात्रियों ने भयानक कथायें सुनायी – हज़ारों मारे गये हैं; त्वेरस्काया और कुज़्नेत्स्की मोस्त जल रहे हैं, वसीली ब्लाजेन्नी का गिरजा आग की लपटों में स्वाहा हो गया है; उस्पेन्स्की गिरजाघर ढह गया है; क्रेमलिन का स्पास्स्की द्वार भहरा पड़ा है, दूमा-भवन जल कर राख हो चुका है।[1]

बोल्शेविकों ने अभी तक जो कुछ भी किया था, उसकी तुलना किसी भी प्रकार पवित्र रूस के केंद्र में हुए इस भयानक कुफ़्र के साथ नही की जा सकती थी। पवित्र, प्रावोस्लाव गिरजे पर गोले बरसाती हुई और रूसी राष्ट्र के पवित्र उपासना गृह को धूल में मिलाती हुई तोपों के धमाके श्रद्धालुओं के कान में पड़े...

१५ नवम्बर को जन-शिक्षा-कमिसार लुनाचार्स्की जन-कमिसार परिषद् के अधिवेशन में रो पड़े और यह कहते हुए कमरे से बाहर निकल गये, "मैं इस चीज को बर्दाश्त नही कर सकता! मैं सौदर्य तथा परम्परा के इस भयंकर विनाश को सहन नही कर सकता..."

उसी दिन तीसरे पहर अखबारों में उनकी इस्तीफ़े की चिट्ठी छपी:

मुझे मास्को से आने वाले लोगों ने वहा की घटनाओं के बारे में अभी अभी बताया है।

वसीली ब्लाजेन्नी के गिरजे पर और उस्पेंस्की गिरजे पर गोलाबारी की गई है। क्रेमलिन पर, जहा पेत्रोग्राद तथा मास्को की सबसे महत्वपूर्ण कला-निधियां संचित हैं, गोलाबारी हो रही है। हज़ारों आदमी हताहत हुए हैं।

यह भयानक संघर्ष पाशविक नृशंसता की पराकाष्ठा पर पहुंच गया है।

अब बाक़ी क्या बचा है? इससे ज्यादा और क्या हो सकता है?

मैं इसे बर्दाश्त नही कर सकता। मेरा प्याला लबरेज़ हो चुका है। मैं इन विभीषिकाओं को सहन करने में असमर्थ हूं। जो विचार मुझे पागल बनाये दे रहे हैं, वे जब बराबर कौंच रहे हों, काम करना असंभव है!

यही वजह है कि मैं जन-कमिसार परिषद् से बरतरफ हो रहा हूं।

मैं अपने इस निर्णय की गंभीरता को समझता हूं, परतु मैं अब और सहन नही कर सकता...[2]

उसी दिन क्रेमलिन में मौजूद सफ़ेद गार्डों और युंकरों ने हथियार डाल दिये और उन्हें सही-सलामत बाहर जाने दिया गया। उनके और बोल्शेविकों के बीच जो शांति-संधि हुई, वह नीचे दी जाती है:

१. सार्वजनिक सुरक्षा समिति का अस्तित्व समाप्त किया जाता है।

२. सफ़ेद गार्ड अपने हथियार रखते हैं और अपने संगठन को भंग करते हैं। अफ़सर अपनी तलवारें और नियमानुमोदित दूसरे छोटे हथियार रख सकते हैं। सैनिक स्कूलों में वही हथियार छोड़े जायेंगे, जो शिक्षण के लिए आवश्यक हैं। बाक़ी सभी हथियार युंकरों द्वारा समर्पित किये जायेंगे। सैनिक क्रांतिकारी समिति व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा सुरक्षा की गारंटी देती है।

३. दूसरी धारा में उल्लिखित निरस्त्रीकरण के प्रश्न का निपटारा करने के लिए शांतिवार्ता में भाग लेने वाले सभी संगठनों के प्रतिनिधियों को लेकर एक विशेष आयोग नियुक्त किया जाता है।

४. इस शान्ति-संधि पर हस्ताक्षर होते ही दोनों पक्ष अविलंब लड़ाई बन्द करने तथा समस्त सैनिक गतिविधि रोक देने के लिए आदेश देंगे और इस आदेश की यथासमय पूर्ति के लिए कार्रवाई करेंगे।

५. संधि पर हस्ताक्षर होने पर दोनों पक्षों द्वारा गिरफ़्तार किये गये सभी क़ैदियों को रिहा कर दिया जायेगा...

दो दिनों से शहर बोल्शेविकों के हाथ में था। भयभीत नागरिक तहख़ानों से निकल रहे थे और अपने साथियों की लाशों को ढूढ़ रहे थे। बैरिकेड हटा दिये गये थे। फिर भी मास्को के विध्वंस की कहानियां घटने की जगह और भी अतिरंजित होकर फैलती जा रही थी... वहां से आने वाली इन भयानक रिपोर्टों के असर से ही हमने मास्को जाने का फ़ैसला किया।

कुछ भी हो, पेत्रोग्राद दो सौ साल से शासन का केन्द्र होते हुए भी अभी भी एक कृत्रिम नगर था। मास्को है असली रूस, रूस जैसा वह अतीत में था और जैसा वह भविष्य में होगा। मास्को में हमें क्रांति के बारे में रूसी जनता की सच्ची भावना का पता लगेगा। वहां पर जीवन अधिक तीव्र है।

यात्रियों ने भयानक कथायें सुनायीं – हजारों मारे गये हैं; त्वेरस्काया और कुज़्नेत्स्की मोस्त जल रहे हैं, वसीली ब्लाजेन्नी का गिरजा आग की लपटों में स्वाहा हो गया है; उस्पेंस्की गिरजाघर ढह गया है; क्रेमलिन का स्पास्स्की द्वार भहरा पड़ा है, दूमा-भवन जल कर राख हो चुका है।[1]

बोल्शेविकों ने अभी तक जो कुछ भी किया था, उसकी तुलना किसी भी प्रकार पवित्र रूस के केंद्र में हुए इस भयानक कुफ़्र के साथ नहीं की जा सकती थी। पवित्र, प्रावोस्लाव गिरजे पर गोले बरसाती हुई और रूसी राष्ट्र के पवित्र उपासना गृह को धूल में मिलाती हुई तोपों के धमाके श्रद्धालुओं के कान में पड़े...

१५ नवम्बर को जन-शिक्षा-कमिसार लुनाचार्स्की जन-कमिसार परिषद् के अधिवेशन में रो पड़े और यह कहते हुए कमरे से बाहर निकल गये, "मैं इस चीज़ को बर्दाश्त नहीं कर सकता! मैं सौंदर्य तथा परम्परा के इस भयंकर विनाश को सहन नहीं कर सकता..."

उसी दिन तीसरे पहर अखबारों में उनकी इस्तीफ़े की चिट्ठी छपी:

मुझे मास्को से आने वाले लोगों ने वहां की घटनाओं के बारे में अभी अभी बताया है।

वसीली ब्लाजेन्नी के गिरजे पर और उस्पेंस्की गिरजे पर गोलाबारी की गई है। क्रेमलिन पर, जहां पेत्रोग्राद तथा मास्को की सबसे महत्वपूर्ण कला-निधियां संचित हैं, गोलाबारी हो रही है। हजारों आदमी हताहत हुए हैं।

यह भयानक संघर्ष पाशविक नृशंसता की पराकाष्ठा पर पहुंच गया है।

अब बाकी क्या बचा है? इससे ज्यादा और क्या हो सकता है?

मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरा प्याला लबरेज़ हो चुका है। मैं इन विभीषिकाओं को सहन करने में असमर्थ हूं। जो विचार मुझे पागल बनाये दे रहे हैं, वे जब बराबर कोंच रहे हों, काम करना असंभव है!

यही वजह है कि मैं जन-कमिसार परिषद् से बरतरफ हो रहा हूं।

मैं अपने इस निर्णय की गंभीरता को समझता हूं, परंतु मैं अब और सहन नहीं कर सकता...[2]

उसी दिन क्रेमलिन में मौजूद सफ़ेद गार्डों और युंकरों ने हथियार डाल दिये और उन्हें सही-सलामत बाहर जाने दिया गया। उनके और बोल्शेविकों के बीच जो शांति-संधि हुई, वह नीचे दी जाती है:

१. सार्वजनिक सुरक्षा समिति का अस्तित्व समाप्त किया जाता है।

२. सफ़ेद गार्ड अपने हथियार रखते हैं और अपने संगठन को भंग करते हैं। अफ़सर अपनी तलवारें और नियमानुमोदित दूसरे छोटे हथियार रख सकते हैं। सैनिक स्कूलों में वही हथियार छोड़े जायेंगे, जो शिक्षण के लिए आवश्यक हैं। बाक़ी सभी हथियार युंकरों द्वारा समर्पित किये जायेंगे। सैनिक क्रांतिकारी समिति व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा सुरक्षा की गारंटी देती है।

३. दूसरी धारा में उल्लिखित निरस्त्रीकरण के प्रश्न का निपटारा करने के लिए शांतिवार्ता में भाग लेने वाले सभी संगठनों के प्रतिनिधियों को लेकर एक विशेष आयोग नियुक्त किया जाता है।

४. इस शान्ति-संधि पर हस्ताक्षर होते ही दोनों पक्ष अविलंब लड़ाई बन्द करने तथा समस्त सैनिक गतिविधि रोक देने के लिए आदेश देंगे और इस आदेश की यथासमय पूर्ति के लिए कार्रवाई करेंगे।

५. संधि पर हस्ताक्षर होने पर दोनों पक्षों द्वारा गिरफ़्तार किये गये सभी क़ैदियों को रिहा कर दिया जायेगा...

दो दिनों से शहर बोल्शेविकों के हाथ में था। भयभीत नागरिक तहख़ानों से निकल रहे थे और अपने साथियों की लाशों को ढूंढ़ रहे थे। बैरिकेड हटा दिये गये थे। फिर भी मास्को के विध्वंस की कहानियां घटने की जगह और भी अतिरंजित होकर फैलती जा रही थीं... वहां से आने वाली इन भयानक रिपोर्टों के असर से ही हमने मास्को जाने का फ़ैसला किया।

कुछ भी हो, पेत्रोग्राद दो सौ साल से शासन का केन्द्र होते हुए भी अभी भी एक कृत्रिम नगर था। मास्को है असली रूस, रूस जैसा वह अतीत में था और जैसा वह भविष्य में होगा। मास्को में हमें क्रांति के बारे में रूसी जनता की सच्ची भावना का पता लगेगा। वहां पर जीवन अधिक तीव्र है।

पिछले एक सप्ताह से आम रेल मजदूरों की सहायता से पेत्रोग्राद की सैनिक क्रांतिकारी समिति ने निकोलाई रेलवे लाइन पर क़ब्ज़ा कर रखा था और वह उस लाइन पर दक्षिण-पूर्व की ओर मल्लाहों और लाल गार्डों से भरी रेल-गाड़ी पर रेल-गाड़ी दौड़ा रही थी... हमें स्मोलनी से पास मिले थे, जिनके बिना कोई भी राजधानी से बाहर नही जा सकता था... जब गाड़ी पीछे की ओर चलती हुई स्टेशन में आकर ठहर गई, मैले-कुचैले सिपाहियों की एक भीड़, जो अपने हाथों में खाने-पीने की चीजों की बोरिया लिए हुए थे, दरवाज़ों-खिड़कियों पर टूट पड़ी; उन्होंने खिड़कियों के शीशे तोड डाले और वे सभी डिब्बों में इस तरह भर गये, कि सीटें तो क्या रास्तों मे भी तिल धरने की जगह न रह गयी, यहां तक कि कुछ गाडी की छत पर भी चढ़ गये। हममें से तीन बड़ी मुश्किल से एक डिब्बे में घुस गये, लेकिन क़रीब उसी वक़्त बीसेक सिपाही अंदर घुसने लगे, जब कि वहा सिर्फ चार आदमियों के लिए जगह थी। हमने उनके साथ बहस की, आपत्ति प्रगट की और कंडक्टर ने भी हमारा समर्थन किया, लेकिन सब बेसूद, सिपाहियो ने हमारी बात को हंसी में उड़ा दिया। वे इन सारे बुर्जुई (पूजीपतियों) के आराम की फ़िक्र क्यों करें? हमने स्मोल्नी के अपने पास दिखाये और सिपाहियों का रुख़ फौरन बदल गया।

"मान जाइये, साथियो," एक ने चिल्ला कर कहा। "ये अमरीकी **तोवारिश्ची** (साथी) हैं। ये लोग तीस हजार **वेर्स्ता** से हमारी क्रांति को देखने आये हैं और स्वभावतः थके हुए है..."

नम्र और मैत्रीपूर्ण भाव से क्षमा मागते हुए सिपाही जाने लगे। जरा देर बाद आवाज़ आई, वे जबरदस्ती एक डिब्बे मे घुस रहे थे, जिसमें दो मोटे-ताज़े सुन्दर वेश-भूषा वाले रूसी जमे हुए थे; उन्होंने कंडक्टर को घूस दी थी और भीतर से दरवाजा बंद कर लिया था।

शाम को करीब सात बजे गाड़ी स्टेशन से बाहर निकली—एक बहुत बड़ी गाड़ी, जिसे एक छोटा सा कमजोर इंजन खींच रहा था, जिसमें कोयले की जगह लकड़ी जलाई जा रही थी। गाड़ी धीमी रफ़्तार से जगह जगह रुकती, लड़खड़ाती चली जा रही थी। छत पर बैठे सिपाही अपने पैरों से ताल देकर गावों के करुण, शोकपूर्ण गीत गा रहे थे। अंदर कॅरीडोर

में, जहां ऐसी ठसाठस भीड़ थी कि बीच से निकलना मुश्किल था, पूरी रात गर्मागर्म बहसें होती रहीं। आदत और दस्तूर के मुताबिक कभी कभी कंडक्टर टिकट देखने के लिए वहा आता, लेकिन हमारे जैसे दो-चार आदमियों को छोड़ कर टिकट नदारद थे। आध घंटे तक फ़ज़ूल बहस और तकरार करने के बाद वह निराश भाव से अपने हाथ को झटकारता हुआ वहा से चला गया। हवा में बदबू और धुआ भरा हुआ था और बेतरह घुटन थी। अगर खिड़कियों के शीशे टूटे न होते, तो जरूर रात में हमारा दम घुट गया होता।

सुबह कई घंटे 'लेट' चलते हुए, हमने खिड़कियों से देखा – बाहर एक बर्फ़ की दुनिया फैली हुई थी। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। दोपहर के करीब एक किसान औरत डिब्बे में आई, जिसके हाथ में डबल-रोटी की एक टोकरी थी और क़हवे के नाम पर किसी नीमगर्म पेय का एक बड़ा भारी टीन था। इसके बाद से अंधेरा होने तक बस एक ही चीज़ – ठसाठस भरी, हचकोले खाती और जगह-जगह रुकती हुई गाड़ी और यदा-कदा कोई स्टेशन, जहां भूखी भीड़ रेस्तोरां पर टूट पड़ती और जो भी थोड़ा-बहुत सामान वहां मिलता, उसे सफाचट कर जाती... इन्हीं में से एक स्टेशन पर मैं नोगीन और रीकोव से टकरा गया, जो जन-कमिसार परिषद् से बरतरफ़ हो गये थे और अपनी सोवियत के सामने शिकायतें पेश करने के लिए मास्को वापिस लौट रहे थे।* वहां से जरा दूरी पर भूरी दाढ़ी वाले नाटे कद के बुखारिन खड़े थे, जिनकी आखों से एक तरह की दीवानगी झलकती थी। "यह लेनिन से भी अधिक वामपंथी हैं," लोग उनके बारे में कहते...

स्टेशन के घंटे पर तीसरी चोट हुई और हम गाड़ी की तरफ दौड़े और घुस कर अंदर गाड़ी के जनसंकुल और कोलाहलपूर्ण भीड़ से एक एक कदम मुश्किल से चलते हुए अपनी जगह पहुंचे... यह एक ख़ुशमिजाज भीड़ थी, जो सफर की तकलीफों को पुरमज़ाक सब्र के साथ झेल रही थी और जो पेत्रोग्राद की परिस्थिति से लेकर ब्रिटिश ट्रेड-यूनियन व्यवस्था तक दुनिया की सभी चीजों के बारे में कभी न ख़त्म होने वाली बहस कर

---

*देखिये अध्याय ११। – जॉ० री०

रही थी और गाड़ी मे जो चंद बुर्जुई (पूंजीपति) थे उनके साथ रार मचाये हुई थी। मास्को पहुंचने से पहले प्रायः हर डिब्बे ने खाद्य सामग्री को प्राप्त करने और उसका वितरण करने के लिए एक समिति का निर्वाचन कर लिया था; ये समितिया राजनीतिक दलों में बंट गईं, जो बुनियादी सिद्धांतों को लेकर आपस मे झगड़ा करने लगे...

मास्को का स्टेशन सूना पड़ा था। हम अपने वापसी टिकटों का प्रबन्ध करने के लिए कमिसार के कार्यालय मे गये। लेफ़्टीनेंट की वर्दी पहने हुए एक नौजवान आदमी मुह पर खीझ का भाव लिए वहां बैठा था—यह था कमिसार। जब हमने स्मोल्नी के अपने कागजात उसे दिखाये, उसका गुस्सा भड़क उठा। उसने कहा कि वह बोल्शेविक नही है, वह सार्वजनिक सुरक्षा समिति का प्रतिनिधि है... यह एक मिसाली वाक़या था—शहर पर कब्जा करने की आम हड़बड़ी मे विजेताओं को मुख्य रेलवे स्टेशन का ही ध्यान न रहा था...

बाहर एक भी बग्घी-गाड़ी नजर नही आ रही थी। लेकिन वहा से थोड़ी ही दूरी पर एक इज़्वोज़चिक (कोचवान) भद्दी रूइदार बंडी पहने अपनी छोटी-सी स्लेज के बाक्स पर बैठे बैठे ऊंघ रहा था। हमने उससे पूछा, "बीच शहर चलने का क्या लोगे, भाई?"

उसने अपना माथा खुजलाते हुए कहा, "आप श्रीमानों को किसी भी होटल में कमरा नही मिलेगा। लेकिन सौ रूबल दीजिये, तो मैं आपको घुमा दूं..." क्रान्ति से पहले उतनी दूर जाने के सिर्फ दो रूबल लगते थे! हमने एतराज किया, लेकिन उसने अपने कंधों को जुम्बिश देकर कहा, "जनाब, आजकल स्लेज चलाना मामूली बात नहीं है। उसके लिए गज भर की छाती चाहिये।" हम किसी भी तरह उसे पचास रूबल से नीचे नहीं उतार सके... जब हम निस्तब्ध धुधली बर्फीली सड़कों पर स्लेज-गाड़ी से भागे जा रहे थे, उसने छः दिन की लड़ाई के अपने रोमांचकारी अनुभव को बयान किया: "स्लेज-गाड़ी चला रहा हूं या किसी मोड़ पर मुसाफिर का इन्तजार कर रहा हू और यकायक बड़े जोर का धमाका! एक गोला यहां छूट रहा है तो एक वहां और फिर तड़कड़ तड़कड़ मशीनगन चलने की आवाज... चारों ओर धांय धांय गोलियां छूट रही हैं... मैं घोड़ा दौड़ा देता हू और एक अच्छी सुनसान सड़क पर पहुंचकर रुक जाता

हूं, जरा देर ऊंघता हूं और फिर वही धमाका—एक और गोला फटता है—फिर वही कड़कड़... शैतान के बच्चे! शैतान के बच्चे!!"

बीच शहर में बर्फ़ से भरी सड़कों पर हंगामे के बाद की ख़ामोशी छाई हुई थी गोया शहर भारी बीमारी के बाद निढाल पड़ा हो। चंद आर्क-बत्तियां ही जल रही थीं और इक्के-दुक्के आदमी राह चलते नजर आ रहे थे। मैदानों से बर्फ़ानी हवा बह रही थी, जो बदन को तीर की तरह लगती थी। हम सबसे पहले जिस होटल में घुसे, उसके दफ़्तर में दो मोमबत्तियां जल रही थीं।

"जी हां, हमारे पास कुछ बहुत ही आरामदेह कमरे हैं, लेकिन उनकी खिड़कियों के शीशे उड़ गये हैं। अगर गोस्पोदीन (श्रीमान) को थोड़ी सी ताज़ी हवा खाने में एतराज न हो..."

त्वेरस्काया मार्ग पर दुकानों की खिड़कियां चकनाचूर हो गई थीं; सड़क पर गोलियों के निशान थे और जहां-तहां उखड़े हुए पत्थर पड़े थे। हम एक के बाद दूसरे होटल में गये। वे सभी भरे हुए थे, या उनके मालिक अभी भी इतने डरे हुए थे कि वे बस इतना ही अपने मुंह से निकाल सके, "नहीं, भाई, नहीं, हमारे यहां जगह नहीं है, बिल्कुल जगह नहीं है!" मुख्य सड़कों पर, जहां बड़े बड़े बैंक और कोठियां थीं, बोल्शेविक तोपख़ाने ने आयें-बायें देखे बिना ज़बरदस्त गोलाबारी की थी। जैसा एक सोवियत अधिकारी ने मुझे बताया, "जब भी हमें यह मालूम न होता कि युंकर और सफ़ेद गार्ड कहां हैं, हम उनकी 'पासबुकों' पर गोले दागते..."

अन्ततोगत्वा 'नत्सिओनाल' होटल में, जो एक ख़ासा बड़ा होटल था, हमें जगह दी गई, कारण, हम विदेशी थे और सैनिक क्रांतिकारी समिति ने उन जगहों की रक्षा का वचन दिया था, जहां विदेशी रहते हैं... सबसे ऊपर की मंज़िल पर मैनेजर ने हमें वे जगहें दिखाईं, जहां कई खिड़कियां गोलियों से चकनाचूर हो गई थीं। कल्पना में बोल्शेविकों को अपना घूसा दिखाते हुए उसने कहा, "जानवर कहीं के! लेकिन ठहरो! उनके दिन पूरे होने ही वाले हैं! दो-चार दिनों के अंदर ही इस हास्यास्पद सरकार का पतन होगा और फिर हम उन्हें मजा चखायेंगे!.."

हमने एक शाकाहारी भोजनालय में खाना खाया, जिसका नाम बड़ा दिलचस्प था: 'मैं किसी को खाता नहीं' और जिसकी दीवारों पर तोल्स्तोई

की तसवीरें लगी थी। खाना खाते ही हम फिर सड़कों पर निकल पड़े।

मास्को सोवियत का सदर दफ़्तर ठीक स्कोबेलेव चौक पर एक शानदार सफेद इमारत में था—एक महल, जो भूतपूर्व गवर्नर-जनरल का आवास था। फाटक पर लाल गार्ड पहरा दे रहे थे। चौड़ी आरास्ता सीढ़ी से, जिसकी दीवारें समिति की सभाओं तथा राजनीतिक पार्टियों के भाषणों की सूचनाओं से भरी हुई थीं, चढ़ कर हम एक के बाद एक कई आलीशान पेश-कमरों से गुज़रे, जिनमें सुनहरे फ़्रेमों में जड़ी और लाल कपड़े से ढंकी तसवीरें टंगी हुई थी, और फिर हम सुनहरी कार्निसों वाले भव्य राजकीय स्वागत-कक्ष में पहुंचे, जिसमें बिल्लौरी के ख़ूबसूरत झाड़-फ़ानूस लगे हुए थे। वहा धीमी आवाज़ों की एक हल्की सी गूंज के साथ बीसेक सिलाई मशीनों की घर्र घर्र की आवाज मिल गई थी। लाल और काले कपड़े के सूती थान खुले हुए थे और वे जगह जगह बल खाते लकड़ी के फ़र्श और मेज़ों के ऊपर फैले हुए थे। मेज़ों के साथ करीब पचास कटाई और सिलाई करती हुई औरतें क्रांतिकारी शहीदों की शवयात्रा के लिए फरहरे और झंडे तैयार कर रही थी। इन स्त्रियों के चेहरे जीवन की कठिन दाह से झुलस गये थे और उनमें स्निग्धता शेष न रही थी। इस समय वे निस्तब्ध भाव से काम कर रही थी और उनमें बहुतों की आखें रोते रोते लाल हो गई थी... लाल सेना के बहुत से आदमी मारे गये थे।

एक कोने मे मेज के साथ दढियल रोगोव बैठे थे—देखने में बुद्धिमान, चश्मा लगाये और मजदूरों की काली जैकेट पहने हुए। उन्होंने हमें आमन्त्रित किया कि हम दूसरे दिन शवयात्रा मे केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के साथ साथ चलें...

"समाजवादी-क्रांतिकारियों और मेन्शेविकों को कुछ भी सिखाना असंभव है!" उन्होंने तेजी से कहा। "वे अपनी आदत से मजबूर हैं और समझौता किये बिना मान नही सकते। ज़रा सोचिये, उन्होंने प्रस्ताव किया कि हम युंकरों के साथ मिल कर जनाज़े निकाले!"

हॉल की दूसरी ओर से सिपाहियों वाला फटा पुराना कोट पहने और शाप्का (टोपी) लगाये एक आदमी वहा आया, जिसका चेहरा मेरे लिये परिचित था। मैंने पहचाना, यह मेल्निचान्स्की था। उसे बायोने, न्यू

जेरसी (अमरीका) में स्टैण्डर्ड आयल कम्पनी की जबरदस्त हड़ताल के जमाने में मैं घड़ीसाज़ जार्ज मेल्चर के नाम से जानता था। उसने मुझे बताया कि अब वह मास्को धातुकर्मी यूनियन का मंत्री और लड़ाई के दौरान सैनिक क्रांतिकारी समिति का एक कमिसार था।

"मेरा हाल देखिये!" उसने अपने फटे-पुराने कपड़ों की ओर इशारा करके कहा। "जब पहली बार युंकर क्रेमलिन में आये, मैं वहां अपने जवानों के साथ था। उन्होंने मुझे तहखाने मे बंद कर दिया और मेरा ओवरकोट, रुपया-पैसा, मेरी घड़ी और यहा तक कि मेरी अंगूठी भी उड़ा दी। अब मेरे पास पहनने के लिए बस यही रह गया है!"

उसने मुझे उस छः दिन की खूनी लड़ाई के बारे में बहुत सी बातें बताई, जिसने मास्को को दो हिस्सो मे बांट दिया था। पेत्रोग्राद के विपरीत मास्को मे नगर दूमा ने युंकरों और सफेद गार्डों की कमान संभाली थी। मेयर रूदनेव और दूमा के सभापति मीनोर महोदय ने सार्वजनिक सुरक्षा समिति की तथा सैनिको की कार्यवाहियों का संचालन किया था। नगर का कमांडेंट, रियाब्त्सेव जनवादी प्रवृत्तियो का व्यक्ति था और वह सैनिक क्रातिकारी समिति की मुखालफत करते हिचकिचा रहा था, लेकिन दूमा ने उसे मजबूर कर दिया था... क्रेमलिन पर कब्जा करने का आग्रह मेयर ने ही किया था। "वहा वे आपके ऊपर गोले दागने की जुर्रत कभी नही करेंगे," उन्होने कहा था...

गैरिसन की एक रेजीमेंट से, जो लंबी निष्क्रियता के कारण बिल्कुल पस्तहिम्मत हो चुकी थी, दोनो पक्षों ने सहायता मांगी। रेजीमेंट ने यह फ़ैसला करने के लिये कि वह क्या क़दम उठाये, एक मीटिंग की और यह फ़ैसला किया कि रेजीमेंट तटस्थ रहे और अपनी मौजूदा कार्रवाइयों को चलाती जाये – ये कार्रवाइया थी सूरजमुखी के बीज और लाइटर बेचना!

"लेकिन सबसे बुरी बात यह थी," मेल्निचान्स्की ने आगे कहा, "कि हमें लड़ते लड़ते ही अपने को सगठित भी करना पड़ा। दूसरा पक्ष जानता था कि उसे क्या चाहिए, लेकिन हमारे यहा सिपाहियों की अपनी सोवियत थी और मजदूरों की अपनी... मुख्य सेनापति कौन होगा, इस बात को लेकर ऐसी तू-तू मैं-मैं हुई कि पूछो मत। कई रेजीमेंटों ने कई कई दिन तक बहस करने के बाद ही कही जाकर कुछ करने का फ़ैसला किया।

ग्रौर जब ग्रफसरों ने एकाएक हमारा साथ छोड़ दिया, हमें ग्रादेश देने वाला कोई न रहा; हमारी युद्ध-कमान ही नदारद थी..."

उसने उन दिनों की छोटी छोटी घटनाग्रों का बड़ा सजीव वर्णन किया। एक दिन, जब ग्रासमान धुधला-धुधला था ग्रौर काफ़ी सर्दी थी, वह निकीत्स्काया मार्ग की मोड़ पर खड़ा था, जहा मशीनगन की गोलियों की बौछार हो रही थी। मोड़ पर छोटे छोटे लड़कों की एक भीड़ जमा थी-सड़कों पर ग्रावारा फिरने वाले लड़के, जो पहले ग्रख़बार बेचा करते थे। धृष्ठ, दुस्साहसी, उत्तेजित, जैसे उन्हें खेलने के लिए एक नया खेल मिल गया हो, वे बौछार धीमी होने का इंतज़ार करते ग्रौर फिर दौड़ कर सड़क पार करने की कोशिश करते... उनमें बहुतेरे मारे गये, लेकिन बाकी एक ग्रोर से दूसरी ग्रोर दौड़ लगाते रहे, हंसते, खिलखिलाते, एक दूसरे को ललकारते...

शाम को काफ़ी देर से मैं द्वोरियान्सकोये सोब्रानिये – ग्रभिजातों के क्लब – मे गया, जहा मास्को के बोल्शेविक मिलने वाले थे ग्रौर जन-कमिसार परिषद् का परित्याग करके ग्राये हुए नोगीन, रीकोव इत्यादि की रिपोर्ट पर विचार करने वाले थे।

सभा एक थियेटर मे हुई, जहा पुराने ज़ारशाही ज़माने में ग्रमेचर खिलाड़ी सब से ताजा फ़ासीसी प्रहसन का ग्रफसरों ग्रौर भड़कीले कपड़े पहने हुए महिलाग्रों के सामने ग्रभिनय किया करते थे।

सभा में सबसे पहले बुद्धिजीवी लोग इकट्ठे हुए, जो नगर-केन्द्र के समीप रहते थे। नोगीन बोले ग्रौर यह स्पष्ट था कि ग्रधिकांश श्रोता उनका समर्थन करते हैं। मजदूर देर से पहुंचे, क्योंकि मजदूर बस्तिया शहर के बाहरी हिस्सों मे थी ग्रौर ट्राम-गाड़िया चल नही रही थी। लेकिन ग्राधी रात के क़रीब वे दस दस, बीस बीस कर के सीढ़ियो पर जमा होने लगे – मोटे, खुरदरे कपड़े पहने, सीधे-सादे लोग, जो ग्रभी ग्रभी मोर्चे से लौटे थे, जहा पूरे एक सप्ताह तक उन्होने दानवों की तरह युद्ध किया था ग्रौर ग्रपने चारों ग्रोर ग्रपने साथियो को धराशायी होते देखा था।

सभा ग्रौपचारिक रूप से शुरू हुई ही थी कि गुस्से से चिल्लाते ग्रौर मज़ाक़ उड़ाते लोग नोगीन के ऊपर बरस पड़े। उन्होने समझाने की, तर्क करने की कोशिश की, लेकिन सब बेकार। वे उनकी बात को सुनने के लिए

ही तैयार नही थे। इन लोगों ने जन-कमिसार परिषद् का परित्याग किया था। जिस वक़्त लड़ाई की आग ज़ोर से धधक रही थी, वे मोर्चे से भाग खड़े हुए थे। जहा तक पूजीवादी अख़बारों का सवाल था, यहा कोई पूंजीवादी अख़बार न थे। यहां तक कि नगर दूमा भी भंग कर दी गई थी। रौद्रमूर्ति बुख़ारिन बोलने के लिये खडे हुए। उनकी बात कील-काटे से दुरुस्त थी और आवाज़ ऐसी थी, जैसे पैनी छुरी, जो अंदर घुंप जाती थी, निकलती थी और फिर घुप जाती थी... वे उनकी बात को सुन रहे थे और उनकी आखें चमक रही थीं। जन-कमिसार परिषद् की कार्रवाई का समर्थन करने का प्रस्ताव विशाल बहुमत से पास किया गया। यह थी मास्को की आवाज...[3.4]

रात बहुत काफ़ी गुज़र चुकी थी, जब हम सूनी सड़कों को पार करते हुए इबेरियाई दरवाज़े से निकल कर क्रेमलिन के सामने विशाल लाल चौक में आये। अंधेरे में वसीली ब्लजेन्नी का गिरजा अद्भुत और विचित्र लग रहा था, उसके रंग-बिरंगे सजावटी लहरियादार गुंबद धुंधले धुधले चमक रहे थे। कही कोई बरबादी के निशान न थे... चौक के एक ओर क्रेमलिन की सियाह बुर्जियां और दीवारें खड़ी थीं। ऊंची दीवारों पर अलावों की लाल रोशनी झिलमिला रही थी, लेकिन अलाव देखें नही जा सकते थे। चौक के दूसरी ओर से लोगों के बोलने की और फरसा-कुदाल चलने की आवाज़ें आ रही थीं। चौक पार कर हम उधर गये।

क्रेमलिन की दीवार के साथ मिट्टी और कंकड-पत्थर के अंबार लगे हुए थे, जिन पर चढ़ कर हमने देखा, नीचे दो बड़े लंबे-चौड़े गड्ढे खोदे जा रहे थे – दस-पन्द्रह फ़ुट गहरे और पचास गज़ लबे। उनमे सैकड़ों सिपाही और मज़दूर बड़े बड़े अलावों की रोशनी में खुदाई कर रहे थे।

एक नौजवान विद्यार्थी ने हमसे जर्मन में बात की। "यह बिरादराना क़ब्र है," उसने हमे समझाया। "कल हम यहा क्रांति के लिए अपनी ज़िंदगी क़ुर्बान करने वाले पाच सौ सर्वहाराओं को दफ़नायेंगे।"

वह हमें नीचे गड्ढे में ले गया। फरसे-कुदाल बड़ी तेजी से चल रहे थे और मिट्टी के स्तूप और भी तेज़ी से उठते जा रहे थे। किसी के लबों पर आवाज न थी। ऊपर आसमान सितारों से भरा हुआ था और कदीम शाही क्रेमलिन की दीवार बेअंदाज ऊंची नजर आ रही थी।

"इस पाक जगह मे," विद्यार्थी ने कहा, "जो पूरे रूस में सबसे ज्यादा पाक-साफ़ है, हम अपने पाकीजा साथियों को दफनायेंगे। यहां जहां पर ज़ारों के मजार हैं, हमारा ज़ार–जनता–सोयेगी..." उसका एक हाथ स्लिंग से लटका था। उसे लड़ाई मे गोली लगी थी। अपनी चोट की ओर देखते हुए उसने कहा, "आप विदेशी लोग हम रूसियों को हिकारत की निगाह से देखते हैं, क्योंकि हमने इतने दिनों तक मध्ययुगीन राजतन्त्र को बर्दाश्त किया। लेकिन हमने यह देखा कि ससार मे जार ही अकेला अत्याचारी नही है। पूंजीवाद उससे भी गया-बीता है। और संसार के सभी देशों मे पूंजीवाद की तूती बोलती है... रूसी क्रांतिकारी कार्यनीति सबसे अच्छी कार्यनीति है..."

जब हम वहा से चले, मजदूर, जो थक कर चूर हो गये थे और सर्दी के बावजूद पसीने से नहाये हुए थे, भारी क़दम रखते बाहर निकलने लगे। लाल चौक की दूसरी ओर से कुछ धुधली सी आकृतियां जल्दी जल्दी उधर बढ़ी आ रही थीं। ये दूसरी पाली के लोग थे, जो झुंड के झुंड गड्ढों मे उतर गये और फरसे-कुदाल उठा कर चुपचाप खोदने लगे...

इस प्रकार पूरी रात आम जनता के बीच से आने वाले इन वालंटियरों ने बारी बारी से एक दूसरे का स्थान ग्रहण करते हुए काम किया–खुदाई उसी प्रचंड वेग से चलती रही, अविराम और अनवरत। और जब सुबह की ठंडी रोशनी ने बर्फ़ से ढके सफ़ेद विशाल लाल चौक से कुहासे का झीना पर्दा हटा लिया, लोगों ने देखा, "बिरादराना कब्र" के मुंह बाये सियाह गड्ढे पूरी तरह खोदे जा चुके हैं।

हम सूरज निकलने से पहले ही उठे और जल्दी जल्दी पैर बढ़ाते अंधेरी सड़कों से हो कर स्कोबेलेव चौक पहुचे। इतना बड़ा शहर लेकिन कहीं चिड़िया का पूत भी दिखाई नही दे रहा था। बस दूर और नज़दीक, सभी जगह एक हल्का सा मर्मर स्वर था, जैसा उस वक़्त होता है, जब निस्तब्धता को भंग कर हवा चलने ही वाली होती है। भोर के धुंधलके में सोवियत के सदर दफ़्तर के सामने मर्दों और औरतों की एक छोटी सी भीड़ जमा थी, जिनके हाथ मे स्वर्णाक्षरों से अंकित लाल पताकायें थीं– ये थे मास्को सोवियत की कार्यकारिणी समिति के सदस्य। रोशनी फैली और धीरे धीरे दूर कहीं वह मर्मर ध्वनि गहरी हुई और तेज हुई और फिर

वह गंभीर मंद्र स्वर में बदल गई। शहर उठ रहा था। हम त्वेरस्काया मार्ग से चले—झंडे हमारे सिर के ऊपर फहरा रहे थे। रास्ते में जो छोटे छोटे गिरजे थे, वे बंद थे और उनमे रोशनी गुल थी उसी तरह, जैसे माता मरियम का इवेरियाई गिरजा बंद था, वह गिरजा, जहा हर नया जार क्रेमलिन मे राज्याभिषेक होने से पहले आकर शीश नवाता था और जो रात हो या दिन हमेशा खुला रहता था, जहा हमेशा भीड़-भड़क्का और चहल-पहल रहती थी और जो श्रद्धालुओं की मोमबत्तियों के प्रकाश में झिलमिलाती हुई प्रतिमाओ के सोने-चांदी और जवाहिरात की चकाचौंध से जगमग रहता था। कहते है कि जब मास्को मे नेपोलियन आया था, तब से आज तक के समय मे ये मोमबत्तियां पहली बार गुल हुई थी।

पवित्र प्रावोस्लाव चर्च ने मास्को से, जो क्रेमलिन पर गोलाबारी करने वाले कुटिल, श्रद्धाहीन जनों का अड्डा बना हुआ था, अपना वरद हस्त खीच लिया था। गिरजाघरो मे अंधेरा और सन्नाटा था। पादरी ग़ायब हो गये थे। लाल शहीदों की अंत्येष्टि-क्रिया के लिए पादरी मौजूद न थे। काफ़िरों की क़ब्रों पर न दुआयें की गई, न मर्सिया पढ़ा गया, न और कोई मज़हबी रस्म पूरी की गई। निकट भविष्य में मास्को के धर्माध्यक्ष तीख़ोन सोवियतों का धर्मबहिष्कार करने वाले थे...

गिरजाघरों की तरह दुकाने भी बंद थी और मिल्की वर्गों के लोग अपने घरों के अंदर ही थे, लेकिन इसकी वजह कुछ और थी। यह जनता का दिवस था, जिसके आगमन की ध्वनि समुद्र के प्रचंड गर्जन की तरह गूज रही थी...

अभी से इवेरियाई दरवाज़े से एक रेला चला आ रहा था। विशाल लाल चौक में हज़ारों नरमुंड देखे जा सकते थे। मैंने ग़ौर किया कि जब भीड़ इवेरियाई गिरजे के सामने से गुज़री, जहा से जाने वाला हर आदमी हमेशा नतमस्तक होकर क्रूस का चिह्न बनाता था, उसने जैसे गिरजे को लक्ष्य ही नही किया...

क्रेमलिन की दीवार के पास जो घनी भीड़ जमा थी, हम ठेलते-ठालते उसके बीच से निकल कर मिट्टी के एक स्तूप पर खड़े हो गये। अभी से कई आदमी वहा पहुंच गये थे; उनमें मुरानोव नामक सिपाही भी

था, जिसे मास्को का कमांडेंट चुना गया था। एक लंबा-तड़ंगा, सीधा-सादा दढ़ियल आदमी, जिसके चेहरे से कोमलता टपकती थी।

लाल चौक जाने वाले सभी सड़कों से रेले चले आ रहे थे – हज़ारों आदमी, जिनको देखने से मालूम होता था कि वे सब ग़रीब और मेहनतकश लोग हैं। 'इंटरनेशनल' की धुन बजाता हुआ एक फ़ौजी बैंड मार्च करता हुआ आया, और जैसे हवा के असर से समुद्र में लहरें उठती और फैलती हैं, यह धुन – मद्र और गभीर – अपने-आप जन-समुद्र के बीच फैल गयी: हर आदमी के लबों पर वही गाना। क्रेमलिन की दीवार से बड़े बड़े झंडे नीचे की ओर लटके हुए थे – लाल झंडे, जिन की सुर्ख़ ज़मीन पर बड़े बड़े सुनहले और सफेद अक्षरों में अकित था: "विश्व समाजवादी क्रांति की पहली लड़ाई के शहीदों को" और "संसार के मज़दूरों का भाईचारा – ज़िंदाबाद!"

लाल चौक में तेज़ सर्द हवा बह रही थी और उसकी वजह से नीचे झुके हुए झंडे उठ-उठ जाते थे। अब शहर को दूर की बस्तियों से विभिन्न कारखानों के मज़दूर अपने मृत साथियों को लिये हुए पहुंचने लगे थे। हम देख सकते थे, वे इवेरियाई दरवाज़े से चले आ रहे थे – हम उनके सुर्ख़ झंडों को और उनके साथ फ़ीके लाल – ख़ून की तरह लाल – ताबूतों को देख सकते थे। ये ताबूत भोंडे अनगढ़ क़िस्म के संदूक थे, जिनकी लकड़ी पर रदा भी न किया गया था और जिन पर लाल रंग पोत दिया गया था। उसी तरह अनगढ़ अपरिष्कृत लोग उन्हें अपने कंधों पर उठाये थे – उनकी आंखों से आंसू जारी थे और उनके पीछे औरतें रोती-कलपती या मौन, यंत्रवत चल रही थीं – चेहरे फक और उनपर मुर्दनी छायी हुई। कुछ ताबूत खुले हुए थे और पीछे के लोग उनके ढक्कन लिये चल रहे थे। कुछ सुनहरे या रुपहले गोटो से टंके कपड़ों से ढके थे या उनके ऊपर सिपाही की टोपी कील से जड़ दी गयी थी। बेढंगे नकली फूलों की कितनी ही मालायें वहां थीं...

मातमी जुलूस भीड़ के बीच से रास्ता बनाता उधर आ रहा था, जिधर हम खड़े थे। इवेरियाई दरवाज़े से एक अनवरत क्रम में झंडे बढ़े आ रहे थे – हल्के से हल्के से लेकर गहरे से गहरे लाल रंग के झंडे – जिन पर सुनहरे और रुपहले अक्षर अकित थे और जिनसे काले क्रेप के

मातमी फ़ीते लटके हुए थे। उनमें कुछ अराजकतावादियों के भी झंडे थे, सफ़ेद अक्षरों से अंकित काले झंडे। फौजी बैंड 'क्रांतिकारी शवयात्रा' की धुन बजा रहा था, और चौक में नंगे सिर खड़ी तमाम भीड़ वही गाना गा रही थी और वही जुलूस के लोग भारी और रुलाई आने से रुंधी हुई आवाज़ में गा रहे थे...

मिल मज़दूरों के बीच में सिपाहियों की कंपनियां अपने ताबूत लिये चल रही थी, घुड़सवारों के स्क्वाड्रन सलामी देते हुए, और तोपख़ाने के बैटरी-दस्ते भी चल रहे थे, जिनकी तोपों के मुंह लाल और काले कपड़े से ढके हुए थे – लगता था अब उनके मुंह कभी न खुलेंगे। उनके फरहरों पर लिखा था: "तीसरा इंटरनेशनल ज़िंदाबाद!" या "हम सच्ची, सामान्य, जनवादी शांति चाहते हैं!"

जुलूस अपने ताबूतों को लिये हुए धीरे धीरे क़ब्र के पास पहुंचा और जो लोग ताबूत लिये चल रहे थे, वे अपना बोझ उठाये मिट्टी के ढूहों पर चढ गये और गड्ढों में उतर गये। उनमें बहुत सी स्त्रियां भी थीं – मज़बूत, चौड़ी-चकली मजदूर स्त्रियां। ताबूतों के पीछे दूसरी स्त्रियां थीं, भग्नहृदय युवतियां या वृद्धायें, जिनके मुंह पर झुर्रियां पड़ी थीं और जो घायल हिरणी की तरह अस्फुट स्वर में कराह रही थीं। ये स्त्रियां अपने पतियों या पुत्रों के पीछे बिरादराना क़ब्र में जाने की कोशिश करतीं और जब दयालु हाथ उन्हें रोक लेते, वे चीख़ पड़तीं। गरीब लोग एक-दूसरे से कितना प्यार करते हैं!

जुलूस का सिलसिला सारे दिन जारी रहा – वे इबेरियाई दरवाज़े की ओर से चौक में प्रवेश करते और निकोल्स्काया मार्ग से निकलते – जुलूस क्या था, लाल फरहरों का एक दरिया था, जिन पर आशा के, भाईचारे के, विस्मयकारी भविष्यवाणियों के शब्द अंकित थे। पृष्ठभूमि में पचास हज़ार आदमी चल रहे थे, जिन पर दुनिया के मज़दूरों की निगाहें थीं और जिन पर इन मज़दूरों के वंशजों की निगाहें सदा के लिए लगी रहनी थीं...

एक एक करके पांच सौ ताबूत गड्ढों में उतारे गये। शाम का झुटपुटा होने लगा, लेकिन झंडे अभी भी चले आ रहे थे – झुके हुए और लहराते हुए। फ़ौजी बैंड अभी भी 'शवयात्रा' की धुन बजा रहा था

विशाल भीड वही गाना गा रही थी। कब्र के ऊपर ठुठ पेड़ों की शाखों मे मालाये लटक रही थी; लगता था उन पेड़ो मे अद्‌भुत पचरगी फूल खिल गये है। दो सौ आदमी फरसे लेकर कब्र में मिट्टी डालने लगे। ताबूतों पर भुरभुरी मिट्टी के बिखेरे जाने की आवाज करुण जन-गायन के बीच भी सुनी जा सकती थी...

बत्तिया जलायी गयी। धीरे धीरे करके आखिरी झडे और फरहरे गुजर गये और कराहती और आहे भरती हुई आखिरी औरतें तीव्र, भावपूर्ण, विह्वल दृष्टि से पीछे की ओर देखती हुई निकल गयी। विशाल चौक मे सर्वहारा-जनो की जो ज्वार आयी थी, वह धीरे धीरे लौट गयी...

सहसा मुझे अनुभूति हुई कि धर्म-परायण रूसी जनता को अब इस बात की जरूरत न रही कि पादरी और पुरोहित उसके स्वर्गारोहण के लिए प्रार्थना करे। वह अब पृथ्वी पर ही एक स्वर्ग का निर्माण कर रही थी, जो किसी भी स्वर्ग से अधिक उज्ज्वल है और जिसके लिए अपने प्राणो की आहूति देना एक गौरव की बात है...

ग्यारहवां अध्याय

सत्ता पर अधिकार[1]

रूस की जातियों के अधिकारों की घोषणा[2]

... इस साल जून में सोवियतों की पहली कांग्रेस ने रूस की जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार की घोषणा की।

पिछले नवम्बर में सोवियतों की दूसरी कांग्रेस ने रूस की जातियों के इस असंक्राम्य अधिकार की और भी निर्णायक तथा निश्चित रूप से पुष्टि की।

इन कांग्रेसों की इच्छा को कार्यान्वित करती हुई, जन-कमिसार परिषद् ने निर्णय किया है कि वह जातियों के प्रश्न के संबंध में अपने क्रिया-कलाप के आधार रूप में निम्नलिखित सिद्धांतों को स्थापित करे:

(१) रूस की जातियों की समानता तथा प्रभुसत्ता।

(२) रूस की जातियों का, विलग होने तथा स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की हद तक भी, स्वतंत्र आत्मनिर्णय का अधिकार।

(३) समस्त राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय-धार्मिक विशेषाधिकारों और प्रतिबंधों का उन्मूलन।

(४) रूस के राज्यक्षेत्र में निवास करने वाली अल्पसंख्यक जातियों तथा जातीय दलों का उन्मुक्त विकास।

जाति-संबंधी एक आयोग स्थापित करने के फ़ौरन बाद तत्संबंधी आज्ञप्तियां तैयार की जायेंगी।

रूसी जनतंत्र के नाम पर

जातियों के लिए जन-कमिसार
जोजेफ़ दजुगाशवीली-स्तालिन
जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

कीयेव में स्थापित केंद्रीय रादा ने फ़ौरन उक्रइना को स्वाधीन जनतंत्र घोषित कर दिया; हेल्सिंगफ़ोर्स की सेनेट की मारफ़त फ़िनलैंड की सरकार ने भी ऐसा ही किया। साइबेरिया और काकेशिया में भी स्वतंत्र "सरकारें" बरपा हो गई। पोलैंड की मुख्य सैनिक समिति ने जल्दी जल्दी रूसी सेना के पोलिश सिपाहियों को इकट्ठा किया, उनकी समितियों को भंग कर दिया और लौह-अनुशासन स्थापित किया...

इन सभी "सरकारों" और "आंदोलनों" में दो विशेषतायें समान थीं: उनकी बागडोर मिलकी वर्गों के हाथ में थी और वे बोल्शेविज्म से दहशत खाते थे और नफ़रत करते थे...

विस्मयकारी परिवर्तन से उत्पन्न होनेवाली विशृंखलता के बीच जन-कमिसार परिषद् अनवरत रूप से समाजवादी व्यवस्था का ढांचा तैयार करती जा रही थी। सामाजिक बीमा तथा मजदूरों के नियन्त्रण के बारे में आज्ञप्तियां, वोलोस्त भूमि समितियों के लिए नियमावली, दर्जों और उपाधियों का उन्मूलन, अदालतों की पुरानी व्यवस्था का उन्मूलन और उसकी जगह अवामी अदालतों की स्थापना...[3]

एक सेना के बाद दूसरी सेना, एक बेड़े के बाद दूसरे बेड़े ने "जनता की नयी सरकार का सहर्ष अभिनंदन करने के लिए" अपने शिष्टमंडल भेजे।

एक दिन स्मोल्नी भवन के सामने मैंने एक फ़टेहाल रेजीमेंट को देखा, जो अभी अभी खाइयों से लौटी थी। स्मोल्नी के बड़े बड़े फाटकों के सामने ये सिपाही – दुबले-पतले, चेहरे ज़र्द – क़तार बांधे खड़े थे और स्मोल्नी भवन की ओर इस प्रकार देख रहे थे, जैसे ईश्वर स्वयं उसमें निवास करता हो। कुछ सिपाहियों ने हंसते हुए दरवाजे के शाही उकाबों की ओर इशारा किया... लाल गार्ड वहां पहरा देने के लिए आये। सभी सिपाही मुड़कर

उनकी ओर कुतूहल के भाव से देखने लगे, गोया उन्होंने उनके बारे में सुन तो रखा है, मगर पहले कभी देखा नहीं। सद्भावनापूर्ण भाव से हंसते हुए वे अपनी लाइनों से निकल आते और कुछ मज़ाक़ में और कुछ तारीफ़ में बातें करते हुए लाल गार्डों की पीठ ठोंकते...

अस्थायी सरकार का अस्तित्व समाप्त हो चुका था। १५ नवम्बर को राजधानी के सभी गिरजाघरों में पादरियों ने उसके लिए दुआ करना बंद कर दिया था। लेकिन, जैसा ख़ुद लेनिन ने अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति की एक बैठक में कहा, यह "सत्ता पर अधिकार करने की शुरुआत भर" थी। हथियारों से वंचित होकर विरोध-पक्ष, जिसका देश के आर्थिक जीवन पर अभी भी शिकंजा था, विसंगठन संगठित करने में और संयोजित रूप से कार्य करने की असाधारण रूसी योग्यता के साथ सोवियतों के रास्ते में रोड़े अटकाने, उन्हें पंगु बनाने और उनकी साख मिटाने में जुट गया।

बैंकों तथा कोठियों के रुपये-पैसे से चलने वाली सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल भली भांति संगठित की गई थी। सरकारी मशीनरी को अपने हाथ में लेने के बोल्शेविकों के प्रत्येक उपक्रम का प्रतिरोध किया गया।

त्रोत्स्की विदेश मंत्रालय में गये। मंत्रालय के कर्मचारियों ने उन्हें मानने से इनकार किया, अंदर से दरवाज़े बंद कर लिये और जब दरवाज़े ज़बरदस्ती खोले गये, उन्होंने इस्तीफ़े दे दिये। त्रोत्स्की ने मंत्रालय के अभिलेखागार की चाबियां मांगी; ये चाबियां तभी दी गईं, जब ताले तोड़ने के लिए मिस्त्री बुलाये गये। और तब इस बात का पता चला कि भूतपूर्व सहायक परराष्ट्र-मंत्री नेरातोव गुप्त संधियों को लेकर ग़ायब हो गये थे...

श्ल्याप्निकोव ने श्रम मंत्रालय पर अधिकार स्थापित करने की कोशिश की। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था, लेकिन भीतर आतिशदानों में आग सुलगाने के लिए कोई आदमी मौजूद न था। वहां सैंकड़ों कर्मचारी मौजूद थे, लेकिन उनमें एक भी यह बताने के लिए तैयार न था कि मंत्री का अपना कक्ष कहां है...

अलेक्सान्द्रा कोल्लोन्ताई, जिन्हें १३ नवम्बर को जन-कल्याण -- अनुदानों तथा जन-कल्याण संस्थानों के विभाग -- की कमिसार नियुक्त किया था, जब अपने मंत्रालय में पहुंचीं, तो चालीस को छोड़कर ८

कर्मचारियों ने हड़ताल करके उनका स्वागत किया। बड़े बड़े शहरों के ग़रीब-गुरबा पर, खैरात से चलने वाली संस्थाओं के लोगों पर पहाड़ टूट पड़ा: झुंड के झुंड भूखों मरते लूले-लंगड़े लोगों और यतीमों को, जिनके चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं, मंत्रालय में भीड़ लग गई। उनकी दुर्गति देखकर कोल्लोन्ताई को रोना आ गया और उन्होंने हड़तालियों को तब तक के लिए गिरफ़्तार कर लिया, जब तक कि वे कार्यालयों और सेफ़ की चाबियां उनके हवाले न कर दें। लेकिन जब उन्हें चाबियां मिलीं, तब इस बात का पता चला कि भूतपूर्व मंत्री काउन्टेस पानिना सारा रुपया-पैसा लेकर चली गई थी, जिसे उन्होंने संविधान सभा के हुक्म के बग़ैर लौटाने से इनकार किया।[4]

कृषि मंत्रालय, खाद्य मंत्रालय, वित्त मंत्रालय में भी इसी प्रकार की घटनायें हुईं। जब मंत्रालयों के कर्मचारियों को हुक्म दिया गया कि वे या तो काम पर वापिस लौटें या अपनी नौकरियों और पेंशनों से हाथ धोयें, वे या तो लौटे नहीं या लौटे तो भीतर से तोड़-फोड़ करने के लिए लौटे... सोवियत सरकार नये कर्मचारियों की भर्ती कहां से करती—प्रायः सारे बुद्धिजीवी लोग बोल्शेविकों के विरोधी थे...

निजी बैंक बंद थे और बंद रहने पर तुले हुए थे, लेकिन सट्टेबाज़ों के लिए पीछे का चोर दरवाज़ा खुला हुआ था। जब बोल्शेविक कमिसारों ने बैंकों में प्रवेश किया, क्लर्कों ने बही-खातों को छिपा दिया, ख़ज़ाने का रुपया-पैसा कहीं और हटा दिया और ख़ुद गायब हो गये। तहख़ानों और मिंट में काम करने वाले क्लर्कों को छोड़ कर राजकीय बैंक के सभी कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी, लेकिन इन क्लर्कों ने भी स्मोल्नी की सभी मांगों को ठुकरा दिया, मगर गुपचुप उद्धार समिति तथा नगर दूमा को बड़ी बड़ी रक़में अदा कीं।

लाल गार्डों के एक दस्ते को साथ लेकर एक कमिसार सरकारी ख़र्च के लिए बड़ी रक़मों की अदायगी के लिए बाक़ायदा ताक़ीद करने के लिए दो बार राजकीय बैंक आया। जब वह पहली बार आया, नगर दूमा के सदस्य और मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी नेता वहां ख़ासी बड़ी तादाद में मौजूद थे और उन्होंने इस कार्रवाई के भयानक परिणामों के बारे में इतनी गंभीरता से बात की कि बेचारा कमिसार घबरा गया। दूसरी बार वह एक वारंट लेकर आया, जिसे उसने बाक़ायदा पढ़ना शुरू

ने ग्राबादी से सरकारी ग्राज्ञप्तियों की उपेक्षा करने की ग्रपील करते हुए देश भर में ग्रपने सदेश भेजे थे। मित्र-राष्ट्रों के दूतावास या तो उदासीन भाव से तटस्थ थे, या खुल्लमखुल्ला विरोधी...

विरोध-पक्ष के समाचारपत्र, जो एक दिन बंद किये जाते ग्रौर दूसरे दिन सुबह नये नामों से निकलते, नई हुकूमत का बुरी तरह मज़ाक़ उड़ा रहे थे।[5] 'नोवाया जीज़्न' तक ने कहा कि यह सरकार "वाचालता तथा नपुसकता का एक संयोजन" है।

दिन-ब-दिन (उसने कहा) जन-कमिसारो की सरकार छोटी छोटी बातो के चक्कर मे फंसती जा रही है। सत्ता पर सहज ही ग्रधिकार स्थापित कर... बोल्शेविक उसका उपयोग करने मे ग्रसमर्थ हैं।

वे सरकार की मौजूदा मशीनरी को चलाने मे ग्रसमर्थ हैं, इसके साथ ही वे एक ऐसी नई मशीनरी स्थापित करने मे ग्रसमर्थ हैं, जो समाजवादी प्रयोगकर्ताग्रों के सिद्धातो के ग्रनुसार सहज ग्रौर निर्विघ्न रूप से काम करे।

ग्रभी थोडे ही दिन पहले बोल्शेविकों के पास इतने ग्रादमी न थे कि वे ग्रपनी बढ़ती हुई पार्टी को चला सके–जो काम सबसे ग्रधिक भाषणकर्त्ताग्रो ग्रौर लेखकों का है; तब फिर उन्हे प्रशासन के विविध तथा जटिल कामों को सम्पन्न करने के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति कहा से मिलेगे?

नई सरकार कार्रवाइया करती है ग्रौर धमकिया देती है, देश मे ग्राज्ञप्तियों की झड़ी लगाती है, जिनमे हर ग्राज्ञप्ति पिछली ग्राज्ञप्ति से ग्रधिक उग्र ग्रौर "समाजवादी" है। परंतु कागजी समाजवाद की इस नुमाइश मे–जो संभवत: हमारे वंशजों को स्तंभित करने के लिए ग्राकल्पित की गयी है–ग्राज की तात्कालिक समस्याग्रों को हल करने की न तो इच्छा दिखाई देती है ग्रौर न सामर्थ्य ही!

उधर नई सरकार की स्थापना के लिए विक्जेल द्वारा ग्रायोजित सम्मेलन दिन-रात चल रहा था। नई सरकार का ग्राधार क्या होगा, इसके बारे मे दोनो पक्ष सिद्धाततः सहमत हो चुके थे। इस समय जन-परिषद् की सदस्यता पर विचार किया जा रहा था। प्रधान मंत्री के लिए चेर्नोव

के साथ मंत्रिमंडल को अस्थायी रूप से चुना जा चुका था। बोल्शेविकों को प्रवल अल्पमत मे स्वीकार किया गया था, परंतु लेनिन और त्रोत्स्की स्वीकार्य न थे। मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टियो की केंद्रीय समितियो और किसानो की सोवियतो की कार्यकारिणी समिति ने फ़ैसला किया था कि यद्यपि वे बोल्शेविकों की "अपराधपूर्ण राजनीति" का अविचल रूप से विरोध करते हैं, वे "इस गरज़ से कि भाई भाई का ख़ून वहाना वंद करे" जन-परिषद् में उनके शामिल होने का विरोध नही करेंगे।

परंतु केरेन्स्की के पलायन तथा सभी जगह सोवियतो की विस्मयकारी सफलता से परिस्थिति वदल गयी। १६ तारीख़ को त्से-ई-काह की एक मीटिंग मे वामपंथी समाजवादी-क्रातिकारियो ने आग्रहपूर्वक कहा कि वोल्शेविक दूसरी समाजवादी पार्टियों के साथ मिलकर एक सयुक्त सरकार बनायें, नहीं तो वे सैनिक क्रातिकारी समिति तथा त्से-ई-काह, दोनों से निकल जायंगे। माल्किन ने कहा, "मास्को से, जहा हमारे साथी वैरिकेडो के दोनों ओर खेत हो रहे हैं, जो समाचार आया है, उसने हमे एक वार फिर सत्ता के गठन के प्रश्न को उठाने के लिए विवश किया है। यह प्रश्न उठाना हमारा अधिकार ही नही, वरन कर्त्तव्य भी है... हमने यहा स्मोल्नी संस्थान के भवन में बोल्शेविकों के साथ वैठने का और इस मंच से बोलने का अधिकार अर्जित किया है। अगर आप समझौता करने से इनकार करते हैं, तो हमें भीषण आतरिक पार्टी-संघर्ष के बाद मजवूर होकर बाहर खुल्लमखुल्ला लड़ाई के मैदान मे उतरना होगा... हमें जनवादी अंशकों से एक स्वीकार्य समझौते की शर्तो का प्रस्ताव करना होगा .."

इस अल्टीमेटम पर विचार करने के लिए वैठक थोड़ी देर के लिए स्थगित कर दी गई, जिसके वाद वोल्शेविक प्रस्ताव लेकर वहा लौटे। कामेनेव ने इस प्रस्ताव को पढ़ा:

त्से-ई-काह की दृष्टि मे उन सभी समाजवादी पार्टियों के प्रतिनिधियों का मंत्रिमंडल मे शामिल होना ज़रूरी है, जो मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों में शामिल है और जो सात नवम्बर की क्रान्ति की उपलब्धियों को अर्थात् सोवियतों की सरकार की स्थापना को, शांति, भूमि तथा उद्योग पर मजदूरों के नियंत्रण-संबंधी आज्ञप्तियों को और

मजदूर वर्ग को हथियारबंद करने को मानते हैं। अतएव त्से-ई-काह मंत्रिमंडल के गठन के बारे में सोवियतों की सभी पार्टियों से वार्ता का प्रस्ताव करने का फैसला करती है और इस वार्ता के आधार के लिए निम्नलिखित शर्तों का आग्रह करती है:

मंत्रिमंडल त्से-ई-काह के प्रति उत्तरदायी होगी। त्से-ई-काह की सदस्य-संख्या बढ़ाकर १५० कर दी जायेगी। मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के इन १५० प्रतिनिधियों के अतिरिक्त उसमें किसानों के प्रतिनिधियों की प्रांतीय सोवियतों के ७५ प्रतिनिधि, सेना तथा नौसेना के मोर्चे के संगठनों के ८० प्रतिनिधि, ट्रेड-यूनियनों के ४० प्रतिनिधि (विभिन्न अखिल रूसी यूनियनों के, उनके महत्व के अनुसार, २५ प्रतिनिधि, विक्जेल के १० तथा डाक-तार मजदूरों के ५ प्रतिनिधि) और पेत्रोग्राद नगर दूमा के समाजवादी दलों के ५० प्रतिनिधि लिये जायें। यह आवश्यक है कि मंत्रिमंडल में कम से कम आधे पोर्टफोलियो बोल्शेविकों के लिए आरक्षित रखे जायें। श्रम, गृह तथा विदेश मंत्रालय बोल्शेविकों को दिये जायें। यह भी आवश्यक है कि पेत्रोग्राद तथा मास्को की गैरिसनों की कमान मास्को तथा पेत्रोग्राद की सोवियतों के हाथ में ही रहे।

सरकार समूचे रूस के मजदूरों को बाक़ायदा हथियारबंद करने का बीड़ा उठाती है।

मंत्रिमंडल के लिए लेनिन और त्रोत्स्की की नामज़दगी के लिए आग्रह करने का फैसला किया जाता है।

प्रस्ताव का स्पष्टीकरण करते हुए कामेनेव ने कहा: "सम्मेलन ने जिस तथाकथित 'जन-परिषद्' का प्रस्ताव किया है, उसमें लगभग ४२० सदस्य होंगे, जिनमें लगभग १५० बोल्शेविक होंगे। इसके अलावा उसमें प्रतिक्रांतिकारी पुरानी त्से-ई-काह के प्रतिनिधि होंगे, नगर दूमाओं द्वारा निर्वाचित १०० सदस्य – सब के सब कोर्नीलोवपंथी – होंगे, किसानों की सोवियतों के १०० प्रतिनिधि होंगे, जो अव्क्सेन्त्येव द्वारा नियुक्त होंगे और पुरानी सैनिक समितियों के ८० प्रतिनिधि होंगे, जो अब आम सिपाहियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

"हम पुरानी त्से-ई-काह् को और नगर दूमाओं के प्रतिनिधियों को शामिल करने से इनकार करते हैं। किसानों की सोवियतों के प्रतिनिधि किसानों की कांग्रेस द्वारा चुने जायेंगे, जिसे हमने बुलाया है और जो इसके साथ ही एक नयी कार्यकारिणी समिति का चुनाव करेगी। लेनिन और त्रोत्स्की को अलग रखने का प्रस्ताव हमारी पार्टी का शिरश्छेद करने का प्रस्ताव है और हम उसको स्वीकार नही करते। और अंत में हम किसी भी परिस्थिति में 'जन-परिषद्' को आवश्यक नही समझते। सोवियतों का दरवाजा सभी समाजवादी पार्टियों के लिए खुला हुआ है और जन-साधारण के बीच उनका जितना वास्तविक प्रभाव है, उसके अनुसार त्से-ई-काह् में उन्हें प्रतिनिधित्व प्राप्त है..."

वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से करेलिन ने घोषणा की कि उनकी पार्टी बोल्शेविकों के प्रस्ताव के पक्ष मे वोट देगी, परंतु किसानों के प्रतिनिधित्व जैसी कुछ तफसीलो के मामले मे उसे उसका संशोधन करने का अधिकार होगा, और उसकी माग है कि कृषि मत्रालय वामपंथी समाजवादी-क्रातिकारियों के लिए आरक्षित रहे। उनकी यह मांग मान ली गयी...

बाद में पेत्रोग्राद सोवियत की एक मीटिंग में त्रोत्स्की ने नयी सरकार के गठन के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए कहा:

"मै इसके बारे मे कुछ नही जानता। मै वार्ता मे भाग नही ले रहा हूं... मगर मैं नही समझता कि इस वार्ता का बहुत अधिक महत्त्व है..."

इस रात सम्मेलन का वातावरण अत्यंत अशात रहा। नगर दूमा के प्रतिनिधि सम्मेलन से अलग हो गये...

परंतु स्वयं स्मोल्नी मे बोल्शेविक पार्टी की पातो में लेनिन की नीति के प्रति प्रबल विरोध उत्पन्न हो रहा था। १७ नवंबर को रात को स्मोल्नी भवन का बड़ा हॉल त्से-ई-काह् की मीटिंग के लिए ठसाठस भरा हुआ था— ऐसा लगता था कि कुछ न कुछ होने वाला है।

बोल्शेविक लारिन ने कहा कि सविधान सभा के चुनावों की घड़ी नजदीक आ रही है और इसलिए अब वक़्त आ गया है कि "राजनीतिक आतंक" समाप्त किया जाये।

"प्रेस-स्वातंत्र्य के खिलाफ़ जो कार्रवाइया की गयी हैं, उन्हें बदलना चाहिए। संघर्ष के दौरान उनके लिए जो भी कारण रहा हो, अब उनके लिए कोई बहाना नही रह गया है। समाचारपत्रों की स्वतंत्रता अक्षुण्ण रहनी चाहिये। हा, अगर वे बलवा या बग़ावत के लिए उकसाते हों, तो दूसरी बात है।"

अपनी ही पार्टी के लोगों की आवाज़ों—हू-हू, लू-लू—की बौछार के बीच लारिन ने निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किया :

जन-कमिसार परिषद् की प्रेस-संबंधी आज्ञप्ति रद्द की जाती है।

राजनीतिक दमन की कार्रवाइया एक विशेष न्यायाधिकरण के निर्णय के अधीन ही की जा सकती हैं [जो त्से-ई-काह द्वारा उसमें प्रतिनिधित्व-प्राप्त विभिन्न पार्टियो की शक्ति के अनुपात में निर्वाचित किया जायेगा]*। इस न्यायाधिकरण को यह भी अधिकार प्राप्त होगा कि जो दमनकारी कार्रवाइया की जा चुकी हैं वह उन पर पुनर्विचार करे।

इस प्रस्ताव का तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया, न केवल वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों द्वारा बल्कि कुछ बोल्शेविकों द्वारा भी।

लेनिनपंथियों की ओर से अवानेसोव ने जल्दी से प्रस्ताव किया कि प्रेस का सवाल तब तक के लिए मुल्तवी कर दिया जाये, जब तक कि समाजवादी पार्टियों के बीच कोई समझौता न हो जाये। प्रस्ताव विशाल बहुमत से गिर गया।

"इस समय जो क्रांति संपन्न की जा रही है," अवानेसोव ने कहा, "उसने निजी स्वामित्व पर चोट करने में हिचकिचाहट नही दिखाई है। और हमें निजी स्वामित्व के रूप में ही प्रेस के प्रश्न की परीक्षा करनी है..."

इसके बाद उन्होंने बोल्शेविक पार्टी का आधिकारिक प्रस्ताव पढ़ा :

---

*कोष्टकों के भीतर जो शब्द हैं, वे केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के कार्य-विवरण में नही पाये जाते।—सं०

पूजीवादी अख़बारो का दमन विद्रोह के सिलसिले मे विशुद्ध सैनिक आवश्यकताओं द्वारा ही आदिष्ट नहीं हुआ था, वह प्रतिक्रांतिकारी कार्रवाइयों को रोकने के लिए ही जरूरी नही था, बल्कि वह प्रेस के सबध में एक नई शासन-प्रणाली की स्थापना की ओर संक्रमण के एक क़दम के रूप मे भी जरूरी था – एक ऐसी शासन-प्रणाली की ओर, जिसके अन्तर्गत छापाख़ानों और काग़ज के गोदामों के पूजीपति मालिक जनमत के सर्वशक्तिमान तथा एकमात्र निर्माता नही हो सकते।

हमें और आगे बढ़कर निजी छापाख़ानो और काग़ज की सप्लाई पर भी अवश्य ही कब्ज़ा कर लेना चाहिये, जिन्हें राजधानी और प्रांतों, दोनों मे, सोवियतों की सपत्ति बना देनी चाहिये, ताकि राजनीतिक पार्टियां और दल छापे की सुविधाओं का, जिन विचारों का वे प्रतिनिधित्व करते हैं, उनकी वास्तविक शक्ति के अनुपात मे – दूसरे शब्दों मे, अपने मतदाताओं की संख्या के अनुपात में – उपयोग कर सकें।

तथाकथित "प्रेस-स्वातंत्र्य" की पुन.स्थापना, पूजीपतियो को – लोगों के दिमाग़ मे जहर भरने वालो को – छापाख़ाने और काग़ज सीधे सीधे लौटा देना, यह पूंजी की मर्ज़ी के सामने अस्वीकार्य समर्पण होगा, यह क्रांति की एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि को तिलाजलि देना होगा; दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसा क़दम होगा, जिसका चरित्र निर्विवाद रूप से प्रतिक्रांतिकारी होगा।

उपरोक्त आधार ग्रहण कर त्से-ई-काह उन सभी प्रस्तावों को बिल्कुल ठुकरा देती है, जिनका उद्देश्य है प्रेस के क्षेत्र में पुरानी व्यवस्था की पुन.स्थापना, और वह इस प्रश्न पर टुटपुजिया पूर्वाग्रहो द्वारा अथवा प्रतिक्रांतिकारी पूजीपति वर्ग के स्वार्थो के सम्मुख प्रत्यक्ष समर्पण द्वारा आदिष्ट आडबरपूर्ण दावों और अल्टीमेटमों के ख़िलाफ जन-कमिसार परिषद् के दृष्टिकोण का असदिग्ध रूप से समर्थन करती है।

जब यह प्रस्ताव पढ़ा जा रहा था, बीच बीच में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी फ़ब्तिया कस रहे थे और विद्रोही बोल्शेविकों का गुस्सा भड़क रहा था। करेलिन ने उठकर प्रतिवाद प्रगट किया: "तीन सप्ताह पहले बोल्शेविक प्रेस-स्वातंत्र्य के बड़े उत्साही रक्षक बने हुए थे... यह एक

वात है कि इस प्रस्ताव में जो तर्क दिये गये है, वे जारशाही व्यवस्था के यमदूत सभाइयो ग्रौर सेसरों के दृष्टिकोण का ग्राभास देते हैं—क्योंकि वे भी 'लोगो के दिमाग़ मे जहर भरने वालों' की वात करते थे।"

त्रोत्स्की ने प्रस्ताव के पक्ष में विस्तार से भाषण दिया। उन्होंने कहा कि गृहयुद्ध के दौरान प्रेस एक चीज है ग्रौर विजय के वाद दूसरी। "गृहयुद्ध के दौरान वलप्रयोग का ग्रधिकार केवल उत्पीड़ितों को है..." (ग्रावाजें: "ग्रादमखोर! इस समय कौन उत्पीड़ित है?")

"हम ग्रपने विरोधियों को ग्रभी तक जीत नही सके हैं ग्रौर उनके हाथो मे ग्रख़वारों का होना हथियारों का होना है। ऐसी स्थिति मे इन ग्रख़वारो को वद करना ग्रपनी हिफ़ाजत के लिए एक विल्कुल जायज कदम उठाना है..." इसके वाद विजय के पश्चात् प्रेस के प्रश्न को लेते हुए त्रोत्स्की ने कहा:

"प्रेस-स्वातंत्र्य के प्रश्न के प्रति समाजवादियों का रुख़ वही होना चाहिये, जो व्यापार-स्वातंत्र्य के प्रति... रूस मे जो जनवादी शासन स्थापित किया जा रहा है, उसका तकाजा है कि उद्योग पर निजी स्वामित्व के ग्राधिपत्य की ही तरह प्रेस पर भी निजी स्वामित्व के ग्राधिपत्य का उन्मूलन किया जाये... सोवियतो की सत्ता को चाहिये कि वह सभी छापाख़ानो को जब्त कर ले।" (ग्रावाजें: "'प्राव्दा' के छापाख़ाने को जब्त कर लीजिये!")

"प्रेस पर पूजीपति वर्ग की इजारेदारी ख़त्म होनी चाहिये। नहीं तो हमारे लिए सत्ता हाथ मे लेना फिजूल है! नागरिको के हर समुदाय के लिए छापाख़ाने ग्रौर काग़ज की सप्लाई सुलभ्य होनी चाहिये... छापाख़ाने ग्रौर कागज सवसे पहले मजदूरों ग्रौर किसानों की सपत्ति हे ग्रौर उनके वाद ही ग्रल्पसंख्यक पूजीवादी पार्टियों की... सोवियतो के हाथ मे सत्ता का ग्रन्तरण हो जाने से जीवन-यापन की ग्राधारभूत ग्रवस्थाग्रों मे ग्रामूल रूपातर घटित होगा ग्रौर यह रूपातर ग्रनिवार्यत: प्रेस के क्षेत्र मे भी प्रत्यक्ष होगा... यदि हम वैंकों का राष्ट्रीयकरण करने जा रहे है, तो क्या हम वैंकपतियों की पत्रिकाग्रों को सहन कर सकते हैं? पुरानी व्यवस्था का मिटना जरूरी है, यह चीज हमेशा के लिए गाठ मे वाध लेनी चाहिये..." तालिया ग्रौर क्रुद्ध ग्रावाजें।

की संपत्ति होनी चाहिये और उन्हें समाजवादी पार्टियों के बीच ठीक उनके मतदाताओं की संख्या के अनुपात में बांट देना चाहिये..."

इसके बाद प्रस्ताव पर मतदान लिया गया। लारिन तथा वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों का प्रस्ताव गिर गया। उसके समर्थन में २२ और विरोध मे ३१ वोट पड़े।* लेनिन का प्रस्ताव २४ के खिलाफ ३४ वोटों से स्वीकृत हुआ। अल्पसंख्यकों मे बोल्शेविक पार्टी के रियाज़ानोव और लोज़ोव्स्की भी थे, जिन्होने घोषणा की कि उनके लिए प्रेस-स्वातंत्र्य पर किसी भी प्रकार के प्रतिबंध के पक्ष मे वोट देना असंभव है।

इस पर वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने कहा कि वहां जो कुछ भी किया जा रहा है, वे अब उसके लिए उत्तरदायित्व ग्रहण नही कर सकते और वे सैनिक क्रांतिकारी समिति से तथा कार्यकारी उत्तरदायित्व के सभी पदों से हट गये।

जन-कमिसार परिषद् के पांच सदस्यों—नोगीन, रीकोव, मिल्यूतिन, तेओदोरोविच और श्ल्याप्निकोव—ने परिषद् से इस्तीफ़ा देते हुए बयान दिया :

हम एक ऐसी समाजवादी सरकार के पक्ष में है, जिसमे सोवियतों की सभी पार्टियां शामिल हों। हमारा मत है कि ऐसी सरकार की स्थापना से ही मजदूर वर्ग तथा क्रांतिकारी सेना के वीरत्वपूर्ण संघर्ष के परिणामों को सुनिश्चित बनाना संभव हो सकता है। इसे छोड़ कर एक ही रास्ता रह जाता है: राजनीतिक आतंक के ज़रिये एक ख़ालिस बोल्शेविक सरकार का गठन। जन-कमिसार परिषद् ने यही रास्ता अख़्तियार किया है। हम इस रास्ते पर नही चल सकते, न चलेगे। हम देखते है कि इस रास्ते पर चलने का प्रत्यक्ष परिणाम होगा अनेक सर्वहारा संगठनों का राजनीतिक जीवन से निष्कासन, अनुत्तरदायी शासन-व्यवस्था की स्थापना, क्रांति का और देश का विनाश। हम ऐसी नीति के लिए जिम्मेदारी नहीं ले सकते

---

*ये संख्यायें सही नहीं हैं। लारिन तथा वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के प्रस्ताव के विपक्ष में २५ और पक्ष में २० वोट दिये गये थे। —सं०

ग्रौर हम त्से-ई-काह् के सामने जन-कमिसारों के रूप में ग्रपने पद को तिलांजलि देते हैं।

कुछ ग्रौर कमिसारों ने पदत्याग किये बिना इस घोषणा पर हस्ताक्षर किये। ये थे रियाज़ानोव, प्रेस-विभाग के देरबिशेव, सरकारी छापाख़ाने के ग्रर्बूज़ोव, लाल गार्ड के युरेन्योव, श्रम-कमिसारियत के फ़्योदोरोव तथा ग्राज्ञप्ति-विस्तरण विभाग के मंत्री लारिन।

इसके साथ ही कामेनेव, रीकोव, मिल्यूतिन, ज़िनोव्येव ग्रौर नोगीन ने बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति की सदस्यता से इस्तीफ़ा दिया ग्रौर इसके कारणो पर प्रकाश डालते हुए एक सार्वजनिक वक्तव्य में कहा:

...ग्रगर ग्रौर ख़ून बहाया जाना रोकना है, ग्रासन्न ग्रकाल ग्रौर कलेदिनपथियों द्वारा क्रांति के विनाश को रोकना है, उचित समय पर संविधान सभा को बुलाना सुनिश्चित बनाना है ग्रौर सोवियतों की कांग्रेस द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम को कारगर तरीके से लागू करना है, तो ऐसी सरकार का गठन (जिसमें सोवियतों की सभी पार्टियां शामिल हों) ग्रपरिहार्य है... हम केंद्रीय समिति की उस घातक नीति के लिए ज़िम्मेदारी नही ले सकते, जो सर्वहारा वर्ग तथा सैनिकों के विशाल बहुमत की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ चलाई जा रही है। ये सर्वहारा ग्रौर सैनिक इस बात के लिए उत्सुक हैं कि विभिन्न जनवादी राजनीतिक पार्टियों के बीच ख़ूंरेज़ी जल्द से जल्द बंद हो... हम केंद्रीय समिति के सदस्यों के रूप में ग्रपने पद को तिलांजलि देते हैं, ताकि हम मजदूर तथा सैनिक जन-समुदायों के सामने ग्रपनी राय को खुल्लमखुल्ला जाहिर कर सकें।

हम जीत की घड़ी मे केंद्रीय समिति को छोड़ रहे हैं; ऐसे वक़्त, जब कि केंद्रीय समिति के मुखियो की नीति हमें विजय के परिणामों की हानि तथा सर्वहारा के दमन की ग्रोर ले जा रही है हम चुपचाप हाथ पर हाथ धरे बैठे नही रह सकते...

मज़दूर जन-समुदायों में, गैरिसन के सिपाहियों में खलबली मच गई ग्रौर वे ग्रपने शिष्टमंडलों को स्मोल्नी मे ग्रौर नई सरकार को स्थापना के

लिए होनेवाले सम्मेलन में भेजने लगे, जहां बोल्शेविकों की पातों के टूटने से बेहद खुशी फैल गई।

परन्तु लेनिनपंथियों ने क्षण भर भी विलम्ब किये बिना मुहतोड़ उत्तर दिया। श्ल्याप्निकोव और तेग्रोदोगेविच पार्टी-अनुशासन के सम्मुख झुकते हुए अपने पदों पर वापिस चले गये। त्से-ई-काह के अध्यक्ष के रूप में कामेनेव के अधिकार छीन लिए गये और उनके स्थान पर स्वेर्दलोव चुने गये। जिनोव्येव को पेत्रोग्राद सोवियत के अध्यक्ष पद से हटा दिया गया। सात तारीख़ की सुबह 'प्राव्दा' में रूस की जनता के नाम एक प्रचंड घोषणा छपी, जिसे लेनिन ने स्वयं लिखा था और जिसे लाखों प्रतियों में छाप कर सभी जगह दीवारों पर चिपका दिया गया और देश भर में फैलाया गया।*

सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में बोल्शेविक पार्टी का बहुमत स्थापित हुआ। इसलिए इस पार्टी द्वारा बनायी गयी सरकार ही सोवियत सरकार हो सकती है। यह सर्वविदित है कि नयी सरकार की स्थापना के तथा सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के सम्मुख नयी सरकार की सदस्य-सूची पेश करने से चंद घंटे पहले बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति ने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी दल के तीन सर्वप्रमुख सदस्यों, साथी कम्कोव, साथी स्पीरो तथा साथी करेलिन को अपनी बैठक में आमंत्रित किया और उनसे नयी सरकार में भाग लेने का निवेदन किया। हमें बेहद अफसोस है कि आमंत्रित साथियों ने इनकार कर दिया। हम समझते हैं कि क्रांतिकारियों और मजदूर वर्ग के हिमायतियों के लिए यह इनकार अस्वीकार्य है। हम किसी भी वक्त वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों को मंत्रिमंडल में शामिल करने के लिए तैयार हैं, परंतु हम घोषणा करते हैं

---

*इशारा उस अपील की ओर है, जिसे लेनिन ने १८-१९ नवम्बर, १९१७ को लिखा था और 'प्राव्दा' ने २० नवम्बर को प्रकाशित किया था। अपील 'रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति की ओर से पार्टी के सभी सदस्यों तथा रूस के सभी मेहनतकश वर्गों के नाम' शीर्षक से प्रकाशित की गई थी।—सं०

कि सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस के बहुमत की पार्टी होने के नाते हम सरकार बनाने के लिए जनता के सामने अधिकारसंपन्न हैं और कर्तव्यबद्ध है...

... साथियो! हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति के तथा जन-कमिसार परिषद् के कई सदस्यो ने, कामेनेव, जिनोव्येव, नोगीन, रीकोव, मिल्यूतिन तथा कतिपय और व्यक्तियो ने कल, १७ नवबर को, हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति का परित्याग किया और अतिम तीन ने जन-कमिसार परिषद् का परित्याग किया...

हमारा साथ छोडने वाले इन साथियो ने भगोड़ों की तरह काम किया है, क्योकि उन्होंने, जो पद उन्हे सौपे गये थे, उन्हे ही नही छोड़ा है, वरन् उन्होंने हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति के इस प्रत्यक्ष निर्देश का भी उल्लंघन किया है कि वे पदत्याग करने से पहले पेत्रोग्राद तथा मास्को के पार्टी-संगठनों के निर्णयो की प्रतीक्षा करे। हम इस भगोड़ेपन की निर्णायक रूप से निंदा करते हैं। हमें इस बात का दृढ़ विश्वास है कि हमारी पार्टी मे शामिल या उससे हमदर्दी रखने वाले सभी चेतन मजदूर, सिपाही और किसान इन भगोड़ो के रवैये की निंदा करेंगे...

याद रखिये, साथियो, कि पेत्रोग्राद मे विद्रोह होने से पहले ही इन भगोड़ो मे से दो, कामेनेव और जिनोव्येव, २३ अक्तूबर, १९१७ को हुई केंद्रीय समिति की निर्णायक बैठक मे विद्रोह के खिलाफ़ वोट देकर, भगोड़ो और हड़ताल-तोड़को के रूप मे प्रगट हुए थे, और केन्द्रीय समिति द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत किये जाने के बाद भी उन्होंने पार्टी-कार्यकर्ताओं के सामने अपना आदोलन जारी रखा... परंतु जन-साधारण की प्रचंड गति के सम्मुख तथा मास्को में, पेत्रोग्राद में, मोर्चे पर, खाइयो मे, गावों मे लाखों-लाख मजदूरों, सिपाहियो और किसानों के महान् शौर्य और पराक्रम के सम्मुख ये भगोड़े इस तरह तितर-बितर हो गये, जैसे रेल-गाड़ी के सामने लकड़ी का बुरादा तितर-बितर हो जाता है...

जिन लोगो मे निष्ठा नही है, जिनमे दुविधा और हिचकिचाहट है, जो अपने को पूजीपति वर्ग द्वारा भयभीत होने देते है, या जो इस वर्ग के खुले या छिपे साथी-सघातियों की चीख़-पुकार के सामने झुक जाते हैं

उन्हें लानत है! पेत्रोग्राद, मास्को और शेष रूस के जन-साधारण में नाम को भी हिचकिचाहट नहीं है...

...हम बुद्धिजीवियों के उन छोटे छोटे दलों के अल्टीमेटमों के सामने नही झुकेंगे, जिनके पीछे जन-साधारण नही है और जिनका समर्थन वस्तुतः कोर्नीलोवपंथी, साविंकोवपंथी, युंकर इत्यादि ही करते है...

समूचे देश ने इस घोषणा का जो प्रत्युत्तर दिया, वह गर्म हवा के एक तेज झोंके की तरह था। विद्रोहियों को "मजदूर तथा सैनिक जन-समुदायों के सामने खुल्लमखुल्ला अपनी राय जाहिर करने" का मौका कभी भी न मिल सका। "भगोड़ों" के प्रति जनता के प्रचंड क्रोध की उत्ताल तरंग स्मोल्नी-ई-काह के चारों ओर उफन उठी। कई कई दिन तक स्मोल्नी में मोर्चे से, वोल्गा प्रदेश से, पेत्रोग्राद के कारखानों से आने वाले क्रुद्ध शिष्टमंडलों और समितियों की भीड़ लगी रही। "सरकार छोड़ने की उनकी जुर्रत कैसे हुई? क्या पूंजीपति वर्ग ने क्राति का नाश करने के लिए उन्हें घूस दी थी? उन्हें वापिस लौटना होगा और केंद्रीय समिति के फैसलों को मानना होगा!"

केवल पेत्रोग्राद की गैरिसन अभी भी दुविधा में पड़ी हुई थी। २४ नवम्बर को सिपाहियों की एक बहुत बड़ी सभा हुई, जिसमे सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों ने भाषण दिये। लेनिन की नीति का विशाल बहुमत से समर्थन किया गया और वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों से कहा गया कि उन्हें मंत्रिमंडल में जरूर शामिल होना चाहिए...[6]

मेन्शेविकों ने आखिरी चुनौती देते हुए माग की कि सभी मंत्रियों और युंकरों को रिहा किया जाये, सभी अखबारों को पूरी आजादी दी जाये, लाल गार्डों के हथियार रखवा लिये जाये और गैरिसन की कमान दूमा के सुपुर्द की जाये। स्मोल्नी ने जवाब दिया कि सभी समाजवादी मंत्री और इने-गिने लोगो को छोड़ कर बाकी सभी युंकर पहले ही छोड़ दिये गये है, कि पूंजीवादी अखबारों को छोड़ कर बाक़ी सभी अखबारों को आजादी हासिल है, कि सेना की कमान सोवियत के हाथ में ही रहेगी... १६ तारीख़ को नई सरकार की स्थापना के लिए होने वाला सम्मेलन छिन्न-

भिन्न हो गया और विरोध-पक्ष के नेता एक एक करके मोगिल्योव खिसक गये, जहा जनरल स्टाफ की छत्रछाया में वे आख़िरी दम तक एक सरकार के बाद दूसरी सरकार बनाते रहे...

इस बीच बोल्शेविक विक्जेल के प्रभाव की जड़ काट रहे थे। पेत्रोग्राद सोवियत ने सभी रेल मजदूरों से अपील की कि वे विक्जेल को अपने अधिकारों का समर्पण करने के लिए मजबूर करें। १५ तारीख़ को त्से-ई-काह ने किसानों के मामले में अपनी कार्य-पद्धति को दोहराते हुए पहली दिसंबर के लिए रेल मज़दूरों की एक अखिल रूसी कांग्रेस बुलाई। विक्जेल ने तुरंत अपनी अलग कांग्रेस दो हफ़्ते बाद के लिए बुलाई। १६ नवम्बर को विक्जेल के सदस्यों ने त्से-ई-काह में अपने स्थानों को ग्रहण किया। २ दिसंबर की रात को अखिल रूसी रेल मजदूर कांग्रेस के उद्घाटन-अधिवेशन में त्से-ई-काह ने औपचारिक रूप से रेल-परिवहन मंत्री का पद विक्जेल को देने का प्रस्ताव किया, जिसे स्वीकार कर लिया गया...

सत्ता का प्रश्न निपटा लेने के बाद बोल्शेविकों ने व्यावहारिक प्रशासन की समस्याओं पर ध्यान दिया। सबसे पहले नगर का, देश का, सेना का पेट भरना था। मल्लाहों और लाल गार्डों के दस्तों ने गोदामों, रेलवे-स्टेशनों के माल-घरों, यहा तक कि नहरों के बजड़ों की तलाशिया ली, चोरबाज़ारियों के हज़ारों पूद* अनाज का पता लगाया और उसे ज़ब्त कर लिया। प्रांतों में दूत भेजे गये, जहा उन्होंने भूमि समितियों की सहायता से बड़े बड़े आढ़तियों के गोदामों पर क़ब्ज़ा कर लिया। हथियारों से अच्छी तरह लैस मल्लाहों के दल, पांच पांच हज़ार की टोलियों में, दक्षिण की ओर साइबेरिया की ओर भेजे गये और इन घुमन्तू दलों को आदेश दिया गया कि जो शहर अभी भी सफ़ेद गार्डों के हाथ में हैं, वे उन पर क़ब्ज़ा कर लें, वहा सुव्यवस्था स्थापित करें और खाद्य संग्रह करें। साइ-बेरिया-पार रेलवे लाइन पर सवारी गाड़िया दो हफ़्ते के लिए बंद कर दी गई और कारख़ाना समितियों द्वारा जुटाई गई कपड़े की गाटों और लोहे की छड़ों से लदी तेरह गाड़िया, जिनमें हर गाड़ी एक कमिसार के ज़िम्मे की गई, साइबेरियाई किसानों के साथ अनाज और आलू के बदले बदले

*एक पूद ३६ पौंड के बराबर होता है।—सं०

और लोहे का विनिमय करने की गरज से पूरब की ओर भेजी गईं..

ईंधन की समस्या विकट हो गई, क्योंकि दोन प्रदेश की कोयला-खानें कलेदिन के हाथ में थीं। स्मोल्नी ने थिएटरों, दुकानों और रेस्तोरानों की बिजली काट दी, ट्राम-गाड़ियों की संख्या घटा दी और टाल वालों की निजी लकड़ी की टालों को जब्त कर लिया... जब कोयले के अभाव में पेत्रोग्राद के कारखाने बंद होने वाले थे, बाल्टिक बेड़े के मल्लाहों ने अपने जंगी जहाजों की कोयला-कोठरियों से दो लाख पूड कोयला निकाल कर मजदूरों के हवाले कर दिया ..

नवम्बर के अन्त में "शराबियों के दंगे-फसाद"[7] – शराब के तहख़ानों का लूटा जाना – शुरू हुए। सबसे पहले शिशिर प्रासाद के तहख़ाने लूटे गये। सड़कों पर कई दिन तक शराब में धुत सिपाही घूमते रहे... इन दंगों में प्रत्यक्षतः प्रतिक्रान्तिकारियों का हाथ था, जिन्होंने रेजीमेंटों में शराब के गोदामों का पता देने वाले नक़्शे बंटवाये थे। स्मोल्नी के कमिसारों ने पहले तो समझाने-बुझाने और मनाने की कोशिश की, लेकिन जब इससे बढ़ती हुई अव्यवस्था की रोकथाम न हो सकी, सिपाहियों और लाल गार्डों के बीच जम कर लड़ाइयां हुईं... आख़िरकार सैनिक क्रांतिकारी समिति ने मशीनगनों से लैस मल्लाहों के दस्तों को भेजा, जिन्होंने बिना रू-रियायत किये दंगाइयों पर गोली चलाई और बहुतों का सफ़ाया कर दिया। कार्यकारी आदेश के अनुसार फरसा-कुदाल लिए दलों ने शराब के तहख़ानों पर धावा बोला और बोतलों को चकनाचूर कर दिया, या उन्हें डाइनामाइट से उड़ा दिया...

पुरानी मिलिशिया की जगह लाल गार्डों की टुकड़ियां, जिनमें अच्छा अनुशासन था और जिन्हें अच्छी तनख़ाह दी जाती थी, वार्ड-सोवियतों के सदर दफ़्तरों के सामने रात-दिन पहरा दे रही थीं। शहर की सभी बस्तियों में छोटे-मोटे अपराधों का मुकाबला करने के लिए मजदूरों और सैनिकों द्वारा निर्वाचित क्रांतिकारी न्यायाधिकरण स्थापित किये गये...

बड़े बड़े होटल, जहां सट्टेबाजों का रोजगार अभी भी चमका हुआ था, लाल गार्डों द्वारा घेर लिए गये और सट्टेबाज़ों को जेल में डाल दिया गया...[8]

सजग और संदेहपूर्ण, नगर के मजदूर वर्ग ने अपने को एक बृहत् गुप्तचर-व्यवस्था के रूप में सगठित किया, जो नौकरों के ज़रिये पूंजीवादी परिवारों का भेद लेती और जो भी खबरें मिलती, उनकी रिपोर्ट सैनिक क्रांतिकारी समिति को देती। समिति ने तावड़तोड़ घन की चोट पर चोट की। इसी प्रकार उस राजतंत्रवादी षड्यंत्र का पता लगा, जिसके नेता भूतपूर्व दूमा-सदस्य पुरिश्केविच और नवाबजादों और अफ़सरों का एक दल था, जिन्होंने अफ़सरों की बगावत की एक योजना बनाई थी और कलेदिन को पेत्रोग्राद आने का न्योता देते हुए एक चिट्ठी लिखी थी...[9] इसी प्रकार पेत्रोग्राद के कैडेटों के षड्यंत्र का पता लगा, जो कलेदिन को रुपया-पैसा और नये रंगरूट भेज रहे थे।

नेरातोव के भागने से जनता के अंदर जो गुस्सा भड़क उठा था, उससे घबरा कर वह लौट आये और उन्होंने गुप्त संधियों को त्रोत्स्की के हवाले कर दिया। त्रोत्स्की ने उन्हें ससार को स्तंभित करते हुए 'प्राव्दा' में छापना शुरू कर दिया...

एक आज्ञप्ति द्वारा विज्ञापनों पर आधिकारिक सरकारी समाचारपत्र की इजारेदारी कायम करके समाचारपत्रों पर एक नया प्रतिबंध लगा दिया गया।[10] इस पर दूसरे सभी समाचारपत्रों ने प्रतिवाद-स्वरूप प्रकाशन स्थगित कर दिया अथवा उन्होंने कानून का उल्लंघन किया और उन्हें बंद कर दिया गया... तीन सप्ताह बाद ही कहीं जाकर उन्होंने अंततोगत्वा आज्ञप्ति को स्वीकार किया।

मंत्रालयों की हड़ताल अभी भी जारी थी, पुराने अधिकारियों का तोड़-फोड़ अभी भी जारी था, सामान्य आर्थिक जीवन अभी भी ठप था। स्मोल्नी के पीछे विशाल असगठित जन-समुदायों का ही संकल्प था; जन-कमिसार परिषद् उन्हीं से मतलब रखती थी और अपने शत्रुओं के खिलाफ जन-संघर्ष का निर्देशन करती थी।[11] सीधे-सादे शब्दों में लिखी गई और समूचे रूस में फैलाई गई, अभिव्यंजनापूर्ण घोषणाओं[12] में लेनिन ने क्रांति का तात्पर्य समझाया, जनता से आग्रह किया कि वह सत्ता अपने हाथ में ले, मिल्की वर्गों के प्रतिरोध को बलपूर्वक चूर चूर कर दे और सरकारी संस्थानों पर बलपूर्वक अधिकार स्थापित करे। क्रांतिकारी व्यवस्था! क्रांतिकारी अनुशासन! कड़ा हिसाब और कठोर नियंत्रण! हड़तालें ख़त्म हो! मटरगश्ती बंद हो!

२० नवंबर को सैनिक क्रांतिकारी समिति ने चेतावनी दी:

धनी वर्ग सोवियतों की सत्ता का – मजदूरों, सिपाहियों और किसानों की सरकार का – विरोध करते हैं। उनके हमदर्द सरकार तथा दूमा के कर्मचारियों के काम को ठप करते हैं, बैंकों में हड़ताल भड़काते हैं, रेल-परिवहन तथा डाक-तार संचार में बाधा डालने की कोशिश करते हैं...

हम उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे आग की लपटों के साथ खेल रहे हैं। देश तथा सेना के लिए अकाल का ख़तरा पैदा हो गया है। उसका मुकाबला करने के लिए सभी सेवाओं का नियमित रूप से काम करना ज़रूरी है। देश तथा सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति को सुनिश्चित बनाने के लिए मजदूरों और किसानों की सरकार सभी उपाय कर रही है। इन उपायों **का विरोध जनता के प्रति एक अपराध है।** हम धनी वर्गों और उनके हमदर्दों को चेतावनी देते हैं कि वे अगर अपने तोड़-फोड़ को और खाद्य-परिवहन के ठप करने के अपने उकसावे को बंद नहीं करते, तो **सबसे पहले उन्हीं को भुगतना पड़ेगा। उनसे रोटी पाने का हक छीन लिया जायेगा। उनके पास जो रिज़र्व सप्लाई है, वह उनसे ले ली जायेगी। प्रमुख अपराधियों की सम्पत्ति ज़ब्त कर ली जायेगी।**

जो लोग आग की लपटों के साथ खेल रहे हैं, उन्हें आगाह करके हमने अपना फ़र्ज़ अदा किया है।

हमें यकीन है कि अगर निर्णायक कार्रवाई करना ज़रूरी हुआ, तो हमें सभी मजदूरों[13], सिपाहियों और किसानों का ठोस समर्थन मिलेगा।

२२ नवंबर को शहर की दीवारों पर सभी जगह एक पर्चा, **'असाधारण सूचना'**, चिपकाया गया:

जन-कमिसार परिषद् को उत्तरी मोर्चे के सैनिक स्टाफ़ का एक ज़रूरी तार मिला है...

"अब और देर हरगिज नहीं होनी चाहिये; सेना को भूखों मरने मत दीजिये। उत्तरी मोर्चे की सेनाओं को आज कई दिनों से रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं मिला है और दो-तीन दिन के अंदर उनके पास सूखी

डबलरोटी भी नहीं रह जायेगी, जो उन्हें रिजर्व सप्लाई से, जिसमें अभी तक हाथ नहीं लगाया गया था, थोड़ा-थोड़ा कर दी जा रही है... मोर्चे के सभी भागों के प्रतिनिधि अभी से कह रहे हैं कि सेना के एक हिस्से को मोर्चे से पीछे ले जाना जरूरी हो गया है; वे यह पहले से ही देख रहे हैं कि अगले चंद दिनों में भूखों मरते, खाइयों में तीन साल की लड़ाई से तबाह, फटेहाल, नंगेपैर और बीमार, अमानवीय कष्टों से विभ्रांत सिपाहियों की जोरों की भगदड़ शुरू हो जायेगी।"

सैनिक क्रांतिकारी समिति इस बात की ओर पेत्रोग्राद की गैरिसन और पेत्रोग्राद के मजदूरों का ध्यान दिलाती है। मोर्चे की परिस्थिति जरूरी से जरूरी और निर्णायक से निर्णायक कार्रवाइयों की मांग करती है... इधर सरकारी संस्थानों, बैंकों, रेलों, डाक और तार के ऊपर के कर्मचारी हड़ताल पर हैं और मोर्चे पर रसद-पानी पहुंचाने के सरकार के काम में रुकावट डाल रहे हैं... हर घंटे की देर का मतलब हो सकता है हजारों सिपाहियों की जिंदगियों से हाथ धोना। प्रतिक्रांतिकारी कर्मचारी मोर्चे के अपने भूखों मरते हुए भाइयों के प्रति अपराधी हैं, ऐसे अपराधी, जिनमें बेईमानी कूट कूट कर भरी हुई है।

सैनिक क्रांतिकारी समिति इन अपराधियों को अंतिम चेतावनी देती है। उनके द्वारा तनिक भी प्रतिरोध अथवा विरोध होने की सूरत में, उनके खिलाफ जो कार्रवाइयां की जायेंगी, वे उतनी ही कठोर होंगी, जितना कि उनका अपराध गंभीर है...

आम मजदूरों और सिपाहियों में भयंकर प्रतिक्रिया हुई—उनमें प्रचंड क्रोध की एक लहर उठी, जो बड़ी तेजी से समूचे रूस में फैल गई। राजधानी में सरकारी अहलकारों और बैंक-कर्मचारियों ने, प्रतिवाद करते हुए, अपना बचाव करते हुए सैकड़ों घोषणायें और अपीलें[15] निकालीं, जिनमें से एक यहां दी जाती है...

सभी नागरिकों की सूचना के लिए
राजकीय बैंक बंद है! क्यों बंद है?

क्योंकि राजकीय बैंक के खिलाफ बोल्शेविकों की हिंसा ने हमारे लिए काम करना असंभव बना दिया है। जन-कमिसारों ने पहला काम यह किया कि एक करोड़ रूबल की मांग की और २७ नवंबर को उन्होंने

ढाई करोड़ रूबल की मांग की, बिना यह जताये कि इस पैसे को किस तरह खर्च किया जायेगा।

...हम कर्मचारी जनता की सम्पत्ति की लूट-खसोट में हिस्सा नहीं ले सकते। हमने काम बंद कर दिया।

नागरिको! राजकीय बैंक का रुपया आपका रुपया है, जनता का रुपया है, वह आपकी मेहनत की, आपके खून-पसीने की कमाई है। नागरिको! जनता की सम्पत्ति को लूट-खसोट से और हमें हिंसा से बचाइये, और हम तुरंत काम पर वापिस चले जायेंगे।

राजकीय बैंक के कर्मचारी

खाद्य मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, विशेष संभरण समिति ने इस आशय की घोषणायें निकालीं कि सैनिक क्रांतिकारी समिति ने कर्मचारियों के लिए काम करना असंभव बना दिया है, उन्होंने जनता से अपील की कि स्मोल्नी के खिलाफ उनकी हिमायत करे... परंतु समाज पर हावी मजदूर और सिपाही ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया। जनता के मन में यह बात मजबूती के साथ बैठ गई थी कि ये कर्मचारी तोड़-फोड़ कर रहे हैं, सेना को भूखों मार रहे हैं, जनता को भूखों मार रहे हैं... रोटी के लिए लंबी लंबी लाइनों में, जो पहले की ही तरह बर्फीली सड़कों पर लगी हुई थीं, सरकार को दोषी नहीं ठहराया जा रहा था, जैसा कि केरेन्स्की के जमाने में हुआ करता था, वरन् चिनोव्निकों को, तोड़-फोड़ करने वाले कर्मचारियों को दोषी ठहराया जा रहा था; क्योंकि यह सरकार उनकी अपनी सरकार थी, सोवियतें उनकी अपनी सोवियतें थीं और मंत्रालयों के कर्मचारी इस सत्ता के खिलाफ थे...

दूमा और उसका जुझारू अंग, उद्धार समिति, इस सारे विरोध का केंद्र बनी हुई थी; वह जन-कमिसार परिषद् की सभी आज्ञप्तियों के प्रति प्रतिवाद प्रगट कर रही थी, सोवियत सरकार को मान्यता न देने के पक्ष में बारबार मतदान कर रही थी, और मोगिल्योव में स्थापित नई प्रतिक्रांतिकारी "सरकार" के साथ खुल्लमखुल्ला सहयोग कर रही थी... उदाहरण के लिए १७ नवंबर को उद्धार समिति ने "सभी नगरपालिका-प्रशासनों, जेम्स्त्वोओं और किसानों, मजदूरों, सिपाहियों तथा दूसरे

नागरिकों के सभी जनवादी तथा क्रांतिकारी संगठनों" के नाम निम्नलिखित शब्दों में अपील जारी की :

बोल्शेविकों की सरकार को न मानिये और उसके ख़िलाफ़ संघर्ष कीजिये।

देश तथा क्रांति की स्थानीय उद्धार समितियां स्थापित कीजिये, जो अखिल रूसी उद्धार समिति को उसके सम्मुख उपस्थित कार्यभारों को पूरा करने में मदद देने के लिए समस्त जनवादी शक्तियों को एकजुट करेंगी..

इस बीच पेत्रोग्राद में संविधान सभा के लिए होने वाले चुनावों[13] में बोल्शेविकों का बहुमत स्थापित हो गया, जिससे मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों तक को कहना पड़ा कि दूमा का चुनाव फिर से होना चाहिए, क्योंकि वह अब पेत्रोग्राद की आबादी के राजनीतिक स्वरूप को प्रगट नहीं करती... इसके साथ ही मज़दूर-संगठनों, सैनिक टुकड़ियों, आस-पास के गांवों के किसानों तक ने दूमा के पास प्रस्ताव पर प्रस्ताव भेजने शुरू कर दिये, जिनमें उन्होंने दूमा को "प्रतिक्रांतिकारी, कोर्नीलोवपंथी" आदि कहते हुए मांग की कि वह अपने को भंग करे। दूमा के अंतिम दिन, जब नगरपालिका कर्मचारी पर्याप्त निर्वाह-योग्य तनख़ाहों की मांग कर रहे थे और हड़ताल पर जाने की धमकी दे रहे थे, बड़ी हलचल और उथल-पुथल के दिन थे...

२३ तारीख़ को सैनिक क्रांतिकारी समिति की एक औपचारिक आज्ञप्ति द्वारा उद्धार समिति को भंग कर दिया गया। २९ तारीख़ को जन-कमिसार परिषद् ने पेत्रोग्राद नगर दूमा को भंग करने और उसका फिर से चुनाव करने का आदेश दिया :

इस बात को देखते हुए कि २ सितंबर को निर्वाचित पेत्रोग्राद की केंद्रीय दूमा... पेत्रोग्राद की जनता के मिज़ाज और उसकी आकांक्षाओं के साथ बिल्कुल मेल न रख पा कर, उसका प्रतिनिधित्व करने का अधिकार निश्चित रूप से खो बैठी है... और इस बात को भी देखते हुए कि यद्यपि दूमा में बहुमत रखने वाले अधिकारियों का कोई राजनीतिक समर्थन नहीं रह गया है, ये मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों की इच्छा का

प्रतिक्रांतिकारी प्रकार से प्रतिरोध करने के लिए और सरकार के सामान्य काम में तोड़-फोड़ करने और अड़चन डालने के लिए अभी भी अपने विशेषाधिकारों का उपयोग कर रहे हैं, जन-कमिसार परिषद् राजधानी की जनता को इसके लिए आमंत्रित करना अपना कर्तव्य समझती है कि वह नगरपालिका के शासन-निकाय की नीति के संबंध में अपना फ़ैसला सुनाये।

इस हेतु जन-कमिसार परिषद् फ़ैसला करती है:

(१) नगर दूमा विसर्जित की जायें। दूमा का विसर्जन ३० नवंबर १९१७ से लागू हो।

(२) वर्तमान दूमा द्वारा निर्वाचित अथवा नियुक्त सभी कर्मचारी, जब तक कि नयी दूमा के प्रतिनिधि उनका स्थान ग्रहण न करें, अपने पदों पर क़ायम रहें और जो जिम्मेदारियां उन्हें सौंपी गयी हैं, उन्हें पूरी करते रहें।

(३) नगरपालिका के सभी कर्मचारी अपने कर्तव्यों का पालन करते रहेंगे। जो कर्मचारी अपनी इच्छा से काम छोड़ेंगे, उन्हें बर्ख़ास्त समझा जायेगा।

(४) पेत्रोग्राद की नगर दूमा के नये चुनावों के लिए ९ दिसंबर, १९१७ की तिथि निश्चित की जाती है...

(५) पेत्रोग्राद की नगर दूमा ११ दिसंबर, १९१७ को दो बजे एकत्रित होगी।

(६) जो लोग इस आज्ञप्ति का उल्लंघन करेंगे या जानबूझ कर नगरपालिका की सम्पत्ति को क्षति पहुंचायेंगे, उन्हें फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया जायेगा और क्रांतिकारी न्यायाधिकरणों के सामने लाया जायेगा...

इस आज्ञप्ति की परवाह न कर दूमा की सभा की गयी और उसमें इस आशय के प्रस्ताव पास किये गये कि दूमा "अपने ख़ून के आख़िरी क़तरे से अपनी स्थिति की रक्षा करेगी" और आबादी से लाचारी दर्जे अपील की गयी कि वह "अपने निर्वाचित नगर-प्रशासन" को बचाये। लेकिन इस अपील का कोई असर नहीं हुआ, लोग या तो उदासीन थे या विरोधी। ३० तारीख़ को मेयर श्रेडेर तथा कई दूमा-सदस्य गिरफ़्तार किये गये और पूछ-ताछ करने के बाद छोड़ दिये गये। उस दिन और उसके

दूसरे दिन दूमा की बैठक होती रही, हालांकि लाल गार्ड और मल्लाह अक्सर आकर उसमें बाधा डालते और बड़ी नर्मी से सभा को विसर्जित करने का अनुरोध करते। २ दिसंबर की बैठक में जब एक सदस्य बोल रहे थे, कुछ मल्लाहों के साथ एक अफ़सर ने निकोलाई हॉल में प्रवेश किया, सदस्यों को आदेश दिया कि वे चले जायें, नहीं तो उनके साथ जबरदस्ती की जायेगी। अंतिम क्षण तक प्रतिवाद करते हुए पर अन्ततः "हिंसा के सामने झुकते हुए" उन्होंने वहां से प्रस्थान किया।

नयी दूमा, जो दस दिन बाद चुनी गयी और जिसके चुनावों में "नरम" समाजवादियों ने वोट देने से इनकार किया, प्रायः पूर्णतः बोल्शेविक थी...[16]

ख़तरनाक विरोध के अभी भी कई केन्द्र बाकी थे, जैसे उक्रइना और फ़िनलैंड के "जनतंत्र", जो निश्चित रूप से सोवियत-विरोधी प्रवृत्तियां प्रगट कर रहे थे। हेल्सिंगफोर्स और कीयेव दोनों स्थानों में सरकारें भरोसे लायक सैनिकों को इकट्ठा कर रही थीं, और बोल्शेविज्म को कुचलने तथा रूसी सैनिकों को निरस्त्र और निष्कासित करने की मुहिम शुरू कर रही थीं। उक्रइनी रादा ने पूरे दक्षिणी रूस की कमान अपने हाथ में ले ली थी और वह कलेदिन को कुमक और रसद-पानी भेज रही थी। फ़िनलैंड और उक्रइना दोनों की सरकारें जर्मनों के साथ गुप्त वार्ता प्रारंभ कर रही थीं; मित्र-राष्ट्रों की सरकारों ने उन्हें अविलंब मान्यता प्रदान की, और सोवियत रूस पर आक्रमण के लिए प्रतिक्रांतिकारी केन्द्रों की स्थापना करने के निमित्त मिल्की वर्गों के साथ साठ-गांठ कर वे उन्हें बड़ी बड़ी रक़में उधार दे रही थीं। अन्त में जब बोल्शेविकों ने इन दोनों देशों को जीत लिया, पराजित पूंजीपति वर्ग ने उन्हें पुनः सत्तारूढ़ करने के लिए जर्मनों को बुलाया...

परंतु सोवियत सरकार के लिए जो सबसे भयानक ख़तरा था, वह अन्दरूनी था और उसकी दो शक्लें थीं – कलेदिन आन्दोलन और मोगिल्योव का सैनिक स्टाफ़, जहां जनरल दुख़ोनिन ने कमान अपने हाथ में ले ली थी।

कज्जाकों के ख़िलाफ़ जंग में "सर्वविद्यमान" मुराव्योव को सेनापति नियुक्त किया गया। कारख़ानों के मजदूरों को भर्ती कर लाल सेना का गठन किया गया। सैकड़ों प्रचारकों को दोन प्रदेश में भेजा गया। जन-

प्रतिक्रांतिकारी प्रकार से प्रतिरोध करने के लिए और सरकार के सामान्य काम में तोड़-फोड़ करने और अड़चन डालने के लिए अभी भी अपने विशेषाधिकारों का उपयोग कर रहे है, जन-कमिसार परिषद् राजधानी की जनता को इसके लिए आमंत्रित करना अपना कर्तव्य समझती है कि वह नगरपालिका के शासन-निकाय की नीति के संबंध में अपना फ़ैसला सुनायें।

इस हेतु जन-कमिसार परिषद् फैसला करती है:

(१) नगर दूमा विसर्जित की जाये। दूमा का विसर्जन ३० नवबर १९१७ से लागू हो।

(२) वर्तमान दूमा द्वारा निर्वाचित अथवा नियुक्त सभी कर्मचारी, जब तक कि नयी दूमा के प्रतिनिधि उनका स्थान ग्रहण न करे, अपने पदों पर कायम रहें और जो जिम्मेदारियां उन्हें सौंपी गयी हैं, उन्हे पूरी करते रहें।

(३) नगरपालिका के सभी कर्मचारी अपने कर्तव्यों का पालन करते रहेंगे। जो कर्मचारी अपनी इच्छा से काम छोड़ेंगे, उन्हें बर्ख़ास्त समझा जायेगा।

(४) पेत्रोग्राद की नगर दूमा के नये चुनावों के लिए ९ दिसबर, १९१७ की तिथि निश्चित की जाती है...

(५) पेत्रोग्राद की नगर दूमा ११ दिसबर, १९१७ को दो बजे एकत्रित होगी। .

(६) जो लोग इस आज्ञप्ति का उल्लघन करेंगे या जानबूझ कर नगरपालिका की सम्पत्ति को क्षति पहुंचायेंगे, उन्हे फौरन गिरफ़्तार कर लिया जायेगा और क्रांतिकारी न्यायाधिकरणों के सामने लाया जायेगा.

इस आज्ञप्ति की परवाह न कर दूमा की सभा में इस आशय के प्रस्ताव पास किये गये कि दूमा "अपने . क़तरे से अपनी स्थिति की रक्षा करेगी" और आबादी से ‹ अपील की गयी कि वह "अपने निर्वाचित नगर-प्रशासन" को लेकिन इस अपील का कोई असर नही हुआ, लोग या तो विरोधी। ३० तारीख़ को मेयर श्रेइदेर तथा कई दूमा-सदस्य . गये और पूछ-ताछ करने के बाद छोड़ दिये गये। उस दिन और

दूसरे दिन दूमा की बैठक होती रही, हालांकि लाल गार्ड और मल्लाह अक्सर आकर उसमें बाधा डालते और बडी नर्मी से सभा को विमर्जित करने का अनुरोध करते। २ दिसंबर की बैठक मे जब एक सदस्य बोल रहे थे, कुछ मल्लाहों के साथ एक अफ़सर ने निकोलाई हॉल में प्रवेश किया, सदस्यों को आदेश दिया कि वे चले जायें, नहीं तो उनके साथ जबरदस्ती की जायेगी। अंतिम क्षण तक प्रतिवाद करते हुए पर अन्ततः "हिंसा के सामने झुकते हुए" उन्होंने वहां से प्रस्थान किया।

नयी दूमा, जो दस दिन बाद चुनी गयी और जिसके चुनावों में "नरम" समाजवादियों ने वोट देने से इनकार किया, प्रायः पूर्णतः बोल्शेविक थी...[16]

खतरनाक विरोध के अभी भी कई केन्द्र बाक़ी थे, जैसे उक्रइना और फिनलैंड के "जनतंत्र", जो निश्चित रूप से सोवियत-विरोधी प्रवृत्तियां प्रगट कर रहे थे। हेल्सिंगफोर्स और कीयेव दोनों स्थानों मे सरकारें भरोसे लायक सैनिकों को इकट्ठा कर रही थी, और बोल्शेविज़्म को कुचलने तथा रूसी सैनिको को निरस्त्र और निष्कासित करने की मुहिम शुरू कर रही थीं। उक्रइनी रादा ने पूरे दक्षिणी रूस की कमान अपने हाथ मे ले ली थी और वह कलेदिन को कुमक और रसद-पानी भेज रही थी। फ़िनलैंड और उक्रइना दोनों की सरकारें जर्मनों के साथ गुप्त वार्ता आरंभ कर रही थी; मित्र-राष्ट्रों की सरकारों ने उन्हे अविलंब मान्यता प्रदान की, और सोवियत रूस पर आक्रमण के लिए प्रतिक्रांतिकारी केन्द्रों की स्थापना करने के निमित्त मिल्की वर्गों के साथ साठ-गांठ कर वे उन्हे बड़ी बड़ी रक़में उधार दे रही थी। अन्त मे जब बोल्शेविकों ने इन दोनों देशों को जीत लिया, पराजित पूजीपति वर्ग ने उन्हे पुनः सत्तारूढ़ करने के लिए जर्मनों को बुलाया...

परंतु सोवियत सरकार के लिए जो सबसे भयानक ख़तरा था, वह अन्दरूनी था और उसकी दो शक्ले थी—कलेदिन आंदोलन और मोगिल्योव का सैनिक स्टाफ़, जहा जनरल दुखोनिन ने कमान अपने हाथ मे ले ली थी।

कज़ाकों के खिलाफ़ जंग मे "सर्वविद्यमान" मुराव्योव को सेनापति नियुक्त किया गया। कारख़ानों के मज़दूरों को भर्ती कर लाल सेना का गठन किया गया। सैकड़ों प्रचारकों को दोन प्रदेश में भेजा गया। जन-

कमिसार परिषद् ने कज्ज़ाकों के नाम एक घोषणा[17] जारी की, जिसमें यह समझाया गया था कि सोवियत सत्ता क्या चीज़ है और किस प्रकार मिल्की वर्ग, चिनोव्निक, ज़मीदार, बैंकर और उनके साथी-संघाती, कज्ज़ाक नवाबज़ादे, ज़मीदार और जनरल क्रांति को नष्ट करने की और जनता द्वारा अपनी जायदाद की ज़ब्ती को रोकने की कोशिश कर रहे हैं।

२७ नववर को कज्ज़ाकों का एक शिष्टमंडल त्रोत्स्की और लेनिन से मुलाकात करने स्मोल्नी आया। उन्होंने पूछा कि क्या यह सच है कि सोवियत सरकार कज्ज़ाक ज़मीनों को रूस के किसानों के बीच बाटने का इरादा रखती है? "नही," त्रोत्स्की ने उत्तर दिया। कज्ज़ाकों ने थोड़ी देर विचार करने के बाद फिर पूछा, "अच्छी बात है, लेकिन क्या सोवियत सरकार बड़े बड़े कज्ज़ाक ज़मीदारों की रियासती ज़मीनों को ज़ब्त करने और उन्हें मेहनतकश कज्ज़ाकों के बीच बाटने का इरादा रखती है?" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए लेनिन ने कहा, "यह फ़ैसला आपको ही करना है। मेहनतकश कज्ज़ाक जो भी क़दम उठाते हैं, हम उसका समर्थन करेंगे... शुरू मे सबसे अच्छी बात होगी कज्ज़ाक सोवियतों की स्थापना करना। आपको त्से-ई-काह् मे प्रतिनिधित्व दिया जायेगा और फिर यह सरकार आपकी भी सरकार बन जायेगी..."

सोच-विचार मे पड़े कज्ज़ाक वहा से चले गये। दो हफ़्ते बाद जनरल कलेदिन से मिलने के लिए उनके सैनिकों का एक शिष्टमंडल आया। उन्होंने कलेदिन से पूछा, "क्या आप कज्ज़ाक ज़मीदारों की बड़ी बड़ी रियासतों को मेहनतकश कज्ज़ाकों के बीच बाटने का वादा करेंगे?"

"मेरे जीते जी ऐसा नही हो सकता!" कलेदिन ने तड़ाक से उत्तर दिया। एक महीना बाद यह पा कर कि उनकी सेना उनके देखते देखते काफ़ूर हो गई, कलेदिन ने तमचे की नली माथे से लगा कर घोड़ा दबा दिया। कज्ज़ाक आन्दोलन समाप्त हो गया...

उधर मोगिल्योव मे पुरानी त्से-ई-काह् के सदस्यों, अव्क्सेन्त्येव से लेकर चेर्नोव तक "नरम" समाजवादी नेताओं, पुरानी सैनिक समितियों के सक्रिय अध्यक्षों तथा प्रतिक्रियावादी अफ़सरों का भारी जमावड़ा हुआ था। सैनिक स्ताफ़ ने जन-कमिसार परिषद् को मान्यता देने मे बराबर इनकार किया।

उसने अपने गिर्द शहीदी टुकड़ियों, सेंट जार्ज के शूरवीरों और मोर्चे के कज्ज़ाकों को एकजुट किया था और वह मित्र-राष्ट्रों के सैनिक अटैचियों के साथ तथा कलेदिन के आंदोलन के और उक्रइनी रादा के साथ घनिष्ठ तथा गुप्त रूप से संपर्क बनाये हुए था...

आठवीं नवंबर की शांति-आज्ञप्ति का, जिसमें सोवियतों की कांग्रेस द्वारा सामान्य युद्ध-विराम का प्रस्ताव पेश किया गया था, मित्र-राष्ट्रों की सरकारों ने कोई उत्तर नहीं दिया।

२० नवंबर को त्रोत्स्की ने इन राष्ट्रों के राजदूतों को एक पत्र भेजा :[18]

राजदूत महोदय, मुझे आपको यह सूचना देने का सम्मान प्राप्त है कि... सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस ने ८ नवंबर को जन-कमिसार परिषद् के रूप में रूसी जनतंत्र की एक नयी सरकार का गठन किया। इस सरकार के अध्यक्ष व्लादीमिर इल्यीच लेनिन हैं। विदेशी मामलों के जन-कमिसार के रूप में विदेशी मामलों का निर्देशन मुझे सौंपा गया है...

युद्ध-विराम तथा संयोजनों और हरजानों के बगैर तथा जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार पर आधारित एक जनवादी शांति-संधि के लिए अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा अनुमोदित प्रस्ताव के मजमून की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुए मुझे आप से यह अनुरोध करने का सम्मान प्राप्त है कि आप इस दस्तावेज़ को सभी मोर्चों पर अविलंब युद्ध-विराम तथा अविलंब शांति-वार्ता शुरू करने के एक औपचारिक प्रस्ताव के रूप में ग्रहण करें, जिस प्रस्ताव को रूसी जनतंत्र की अधिकृत सरकार एक साथ सभी युद्धरत जनों और उनकी सरकारों के सामने उपस्थित करती है।

राजदूत महोदय, कृपया अपनी जनता के प्रति सोवियत सरकार के सम्मान के गंभीर आश्वासन को स्वीकार करें। इस बेमिसाल मार-काट से श्रांत-क्लांत अन्य सभी जनों के समान ही आपकी जनता भी शांति की कामना किये बिना नहीं रह सकती...

उसी रात जन-कमिसार परिषद् ने जनरल दुख़ोनिन को तार भेजा:

...जन-कमिसार परिषद् यह ज़रूरी समझती है कि शत्रु तथा मित्र, सभी शक्तियों से अविलंब युद्ध-विराम का औपचारिक रूप से प्रस्ताव किया जाये। विदेशी मामलों के कमिसार ने पेत्रोग्राद में मित्र-शक्तियों के प्रतिनिधियों के पास इस निर्णय के अनुरूप एक घोषणा भेजी है।

नागरिक सेनापति, जन-कमिसार परिषद् आपको आदेश देती है... कि आप शत्रु-पक्ष के सैनिक अधिकारियों से अविलंब युद्ध बंद करने और शांति स्थापित करने के लिए वार्ता आरंभ करने का प्रस्ताव करें। इन प्रारंभिक वार्ताओं को चलाने का जिम्मा आपको देते हुए, जन-कमिसार परिषद् आपको आदेश देती है:

(१) शत्रु-सेनाओं के प्रतिनिधियों के साथ प्रारंभिक वार्ता चलाने के लिए जो भी क़दम उठाया जाये, उसकी परिषद् को अविलंब सीधे तार द्वारा सूचना दी जाये।

(२) जन-कमिसार परिषद् के अनुमोदन के बिना युद्ध-विराम समझौते पर दस्तख़त न किये जायें।

मित्र-राष्ट्रों के राजदूतों ने त्रोत्स्की के पत्र का अवज्ञापूर्ण मौन से स्वागत किया, और साथ ही अख़बारों मे बुग्ज और हिकारत से भरे गुमनाम इंटरव्यू भी प्रकाशित हुए। दुख़ोनिन को दिये जानेवाले आदेश को खुल्लमखुल्ला राजद्रोह कहा गया...

जहां तक दुख़ोनिन का संबंध है, ऐसा लगता था कि उनके कानों पर जूं भी नहीं रेंगी है। २२ नवंबर की रात को उनसे टेलीफ़ोन पर बातचीत की गयी और पूछा गया कि क्या वह उन्हें जो हुक्म दिया गया है, उसकी तामील करने का इरादा रखते हैं। दुख़ोनिन ने कहा कि वह असमर्थ हैं। वह उसी सरकार के हुक्म की तामील कर सकते हैं, जिसे "सेना तथा देश का समर्थन प्राप्त हो।"

इस पर उन्हें तुरत मुख्य सेनापति के पद से बर्खास्त कर दिया गया और उनकी जगह क्रिलेंको को नियुक्त किया गया। जन-साधारण से अपील करने की अपनी कार्यनीति के अनुसार लेनिन ने सभी रेजीमेंटों, डिवीज़नों

और कोरों की समितियों के नाम, सेना तथा नौसेना के सभी सिपाहियों और मल्लाहों के नाम एक रेडियो-संदेश भेजा, जिसके द्वारा उन्होंने उन्हें दुख़ोनिन के इनकार की सूचना दी और आदेश दिया कि "मोर्चे की रेजीमेंटें शत्रु के दस्तों के साथ बातचीत शुरू करने के लिए अपने प्रतिनिधि चुनें..."

२३ तारीख़ को मित्र-राष्ट्रों के सैनिक अटैचियों ने अपनी अपनी सरकार की हिदायत पर दुख़ोनिन के पास एक पत्र भेजा, जिसमें गंभीर चेतावनी दी गयी थी कि वह "एंटेंट की शक्तियों के बीच संपन्न संधियों की शर्तों का उल्लंघन न करें"। पत्र में आगे कहा गया था कि अगर जर्मनी के साथ एक पृथक् युद्ध-विराम समझौता संपन्न किया जाता है, तो उसका रूस के लिए "अत्यंत गंभीर परिणाम होगा"। दुख़ोनिन ने तुरंत इस पत्र को सभी सैनिक समितियों के पास भेज दिया...

दूसरे दिन सुबह त्रोत्स्की ने सैनिकों के नाम एक और अपील जारी की, जिसमें उन्होंने कहा कि मित्र-राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का पत्र रूस के अंदरूनी मामलों में घोर हस्तक्षेप है और "रूसी सेना तथा रूसी जनता को ज़ार द्वारा संपन्न संधियों का पालन कर लड़ाई जारी रखने के लिए धमकियों से मजबूर करने" की एक नंगी कोशिश भी है...

स्मोल्नी ने घोषणा पर घोषणा[19] जारी की, जिनमें दुख़ोनिन और उनके साथ के प्रतिक्रियावादी अफ़सरों की लानत-मलामत की गयी थी, मोगिल्योव में जुटे हुए प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञों को आड़े हाथों लिया गया था और एक हज़ार मील में फैले हुए मोर्चे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लाखों क्रुद्ध, संदेहपूर्ण सैनिकों को उभाड़ा गया था। इसके साथ ही जोशीले मल्लाहों के तीन दस्तों को साथ लेकर क्रिलेंको प्रतिशोध की प्रचंड धमकियां देते हुए[20] स्ताव्का – सदर मुकाम – के लिए रवाना हुए, और सभी जगह सिपाहियों ने बड़े उल्लास से उनका स्वागत किया। क्रिलेंको की यह यात्रा एक विजय-यात्रा बन गयी। केंद्रीय सैनिक समिति ने दुख़ोनिन के समर्थन में एक घोषणा जारी की, और फ़ौरन दस हज़ार सिपाहियों ने मोगिल्योव पर चढ़ाई कर दी...

२ दिसंबर को मोगिल्योव की गैरिसन ने बग़ावत की, शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया, दुख़ोनिन और सैनिक समिति के सदस्यों को गिरफ़्तार कर लिया और वह विजयी लाल पताका को फहराती हुई नये मुख्य सेनापति

का स्वागत करने को निकल पड़ीं। दूसरे दिन सुबह क्रिलेंको ने मोगिल्योव में प्रवेश किया और देखा कि रेल-गाड़ी के जिस डिब्बे में दुख़ोनिन को बंद कर दिया गया था, उसके चारों ओर एक बौखलायी हुई भीड़ जमा थी। क्रिलेंको ने एक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने सिपाहियों से अनुरोध किया कि वे दुख़ोनिन पर हाथ न छोड़ें, क्योंकि उन्हें पेत्रोग्राद ले जा कर क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के सामने पेश करना है। क्रिलेंको के भाषण ख़त्म करते ही यकायक दुख़ोनिन ख़ुद खिड़की के सामने आ गये, जैसे वह भीड़ के सामने बोलना चाहते हों। लोग वहशियाना जोश के साथ चिल्लाते हुए उनके डिब्बे की ओर बढ़े, बूढ़े जनरल के ऊपर टूट पड़े, उन्हें गाड़ी से बाहर निकाल लाये और वहीं प्लैटफ़ार्म पर मारते मारते उनका भुरकुस निकाल डाला...

स्ताव्का का विद्रोह इस प्रकार समाप्त हुआ...

रूस में विरोधी सैनिक शक्ति के अंतिम महत्त्वपूर्ण गढ़ के पतन से प्रचुर शक्ति अर्जित कर, सोवियत सरकार ने विश्वासपूर्ण भाव से राज्य-प्रशासन का संगठन करना आरंभ किया। बहुत से पुराने राज्य-कर्मचारी उसके झंडे के नीचे आ गये और दूसरी पार्टियों के बहुत से सदस्यों ने सरकारी पद ग्रहण किये। परंतु सरकारी कर्मचारियों की तनख़ाहों के बारे में जो आज्ञप्ति जारी की गयी, जिसके द्वारा जन-कमिसारों की तनख़ाहें – सबसे ऊंची तनख़ाहें – पांच सौ रूबल (क़रीब पचास डालर) माहवार मुक़र्रर की गयी, वह धन की आकांक्षा रखनेवालों के लिए एक अंकुश थी। यूनियनों की यूनियन के नेतृत्व में सरकारी कर्मचारियों की जो हड़ताल चल रही थी, वह टूट गयी; जो वित्तीय तथा वाणिज्यिक हल्क़े उसका समर्थन कर रहे थे, उन्होंने उससे अपना हाथ खींच लिया। बैंकों के क्लर्क काम पर वापिस चले आये...

बैंकों के राष्ट्रीयकरण की आज्ञप्ति, सर्वोच्च राष्ट्रीय अर्थ-परिषद् की स्थापना, गांवों में भूमि-संबंधी आज्ञप्ति के व्यावहारिक क्रियान्वयन, सेना के जनवादी पुनःसंगठन तथा जीवन तथा प्रशासन के सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तनों के साथ – इन सारे क़दमों के साथ, जो मज़दूर, सैनिक और किसान जन-समुदायों के संकल्प की बदौलत ही कारगर तौर पर उठाये जा सके – बहुत सी ग़लतियों और विघ्न-बाधाओं के बीच सर्वहारा रूस को धीरे धीरे ढाला जाने लगा।

वारहवां अध्याय

किसानों की कांग्रेस

१८ नवम्बर को मौसम की पहली वर्फ गिरी। सुबह जब हम उठे, हमने देखा खिड़कियों की सिलों पर सफेद ढेर जमा थे और बर्फ़ के फूहे इस बुरी तरह झर रहे थे कि चार गज आगे देखना भी असंभव था। पिछले दिनों की कीचड़ ख़त्म ही गई थी, और जैसे पलक भाजते ही धुंधला धुंधला शहर सफ़ेद लक़दक़ चमकने लगा था। अपने रूईदार कपड़े पहने कोचवानों के सहित बग्घी-गाड़ियां स्लेज-गाड़ियों में बदल गई और ऊंची-नीची सड़कों पर बेतहाशा भागने लगी—कोचवानों की दाढ़ियों में वर्फ जम गई थी और वे कड़ी पड़ गई थी... क्रांति के बावजूद, इस बात के बावजूद कि समूचे रूस ने एक अज्ञात तथा भयानक भविष्य में, जिसकी ओर ताकते भी सिर चकराता था, छलांग लगाई थी, शहर में वर्फ के गिरने से ख़ुशी की एक लहर दौड़ गई। जिसे देखो, उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी। लोग ख़ुशी के मारे सड़कों पर दौड़ पड़े और हंसते-खिलखिलाते हाथ बढ़ा कर गिरती हुई बर्फ़ की नरम पंखुड़ियों को लोकने लगे। सारी धूसरता, मलिनता छिप गयी। केवल सुनहरी और रंग-बिरंगी मीनारें और गुंबद सफ़ेद बर्फ़ के बीच से चमक रहे थे—उनकी विदेशीय चमक-दमक और भी बढ़ गई थी।

दोपहर को सूरज भी निकल आया, मलिन और निस्तेज। बरसाती महीनों की सर्दी और गठिया ख़त्म हो गई, शहर की जिंदगी में एक नयी रौनक आ गई और ख़ुद क्रांति की रफ़्तार तेज हो गई...

एक शाम को मैं स्मोल्नी भवन के सामने सड़क के दूसरी ग्रोर एक त्राकतीर यानी एक तरह के ढाबे में बैठा था – नीची छत की एक शोरगुल वाली जगह, जिसे "टाम चाचा की कुटिया" कहते थे ग्रौर जहां लाल गार्ड ग्रक्सर ग्राते थे। इस समय भी वे वहां भरे हुए थे ग्रौर छोटी छोटी मेजों के चारों ग्रोर, जिन पर मैले मेजपोश पड़े थे ग्रौर बड़ी बड़ी चीनी मिट्टी की चायदानियां रखी हुई थीं, भीड़ लगाये हुए थे। उनकी सिगरेटों का गंदा धुग्रां वहां बुरी तरह भरा हुग्रा था। परेशान वेटर "**सिचास! सिचास!** ग्रभी! ग्रभी! मिनट भर में!" कहते हुए इधर-उधर दौड़ रहे थे।

एक कोने में कप्तान की वर्दी में एक ग्रादमी इस मजमे के सामने लेक्चर झाड़ रहा था, लेकिन लोग मिनट मिनट पर उसका मुह पकड़ रहे थे।

"तुम हत्यारों से कुछ कम थोड़े ही हो!" उसने चिल्ला कर कहा। "सड़कों पर ग्रपने ही रूसी भाइयों पर गोली चलाते हो!"

"हमने कब ऐसा किया?" एक मजदूर ने पूछा।

"पिछले इतवार को किया, जब युंकरों ने..."

"ग्रच्छा तो क्या उन्होंने हमारे ऊपर गोली नहीं चलाई?" एक ग्रादमी ने स्लिंग में डाली हुई ग्रपनी बांह दिखाते हुए कहा। "यह देखिये, वे शैतान ग्रपनी एक यादगार मेरे पास छोड़ गये हैं!"

कप्तान ने गला फाड़ कर चिल्लाते हुए कहा, "ग्रापको तटस्थ रहना चाहिये था! ग्रापको बहर-सूरत तटस्थ रहना चाहिये था! क़ानूनी सरकार को उलटने वाले ग्राप कौन होते हैं? लेनिन कौन है? जर्मनों का एक..."

"ग्रौर ग्राप कौन हैं? प्रतिक्रांतिकारी! उक्सावेबाज!" वे उसके ऊपर बरस पड़े।

जब शोरगुल जरा कम हुग्रा ग्रौर कप्तान की बात फिर सुनी जा सकती थी, उसने उठते हुए कहा, "ग्रच्छी बात है! ग्राप ग्रपने को रूस की जनता कहते हैं, लेकिन ग्राप रूस की जनता नहीं हैं। रूस की जनता **किसान** है। जरा ठहरिये, जब तक कि किसान..."

"हां, ठीक है," उन्होंने तेज लहजे में जवाब दिया। "ठहरिये ग्रौर देखिये कि किसान क्या कहते हैं। किसान क्या कहेंगे, हम जानते हैं... क्या वे भी हमारी ही तरह मेहनत-मशक़्क़त करने वाले लोग नहीं हैं?"

अन्ततोगत्वा सब कुछ किसानों पर ही निर्भर था। किसान राजनी
दृष्टि से पिछड़े हुए जरूर थे, लेकिन उनके अपने ख़ास ख़्यालात थे
वे रूस की जनता के ८० प्रतिशत से भी अधिक भाग थे। किसानो
बीच बोल्शेविकों के अनुयायी अपेक्षाकृत कम थे, और रूस में औद्यो
मज़दूरों का स्थायी अधिनायकत्व असंभव था... किसानों की परंपरा
पार्टी समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी थी; इस समय जितनी पार्टियां सोवि
सरकार का समर्थन कर रही थीं, उनमें वामपंथी समाजवादी-क्रांतिका
ही तर्कसंगत रूप से किसानों के नेतृत्व के उत्तराधिकारी थे, वे इस सम
संगठित नगर-सर्वहारा की अनुकंपा पर जी रहे थे और उन्हें किसानों
समर्थन की बेतरह ज़रूरत थी...

इस बीच स्मोल्नी ने किसानों को भुलाया नहीं था। भूमि-आज्ञप्ति
के बाद नयी त्से-ई-काह ने जो सबसे पहले क़दम उठाये, उनमें किसानों व
सोवियतों की कार्यकारिणी समिति की उपेक्षा कर किसानों की एक कांग्रे
बुलाना भी एक क़दम था। चंद रोज़ बाद वोलोस्त (परगना) की भूमि
समितियों के लिए विस्तृत नियमावली जारी की गई, जिसके बाद लेनिन
के 'किसानों के नाम पत्र'[1] प्रकाशित किये गये, जिनमें सीधे-सादे शब्द
में बोल्शेविक क्रांति तथा नई सत्ता की व्याख्या की गई थी; १६ नवम
को लेनिन और मिल्यूतिन ने 'प्रांतों में भेजे जाने वाले दूतों को निर्देश
प्रकाशित किया। सोवियत सरकार ने हज़ारों ऐसे दूतों को गांवों में भेजा था।

१. जिस प्रांत के लिए वह अधिकृत है, वहां पहुंचने पर दूत को
चाहिये कि वह मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों
की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक बुलाये, जिसमें वह कृषि-संबंधी
कानून के संबंध में रिपोर्ट दे और फिर यह प्रस्ताव करे कि सोवियतों का
एक पूर्ण सम्मिलित अधिवेशन बुलाया जाये..

२. उसके लिए आवश्यक है कि वह प्रांत में कृषि-समस्या के सभी
पहलुओं का अध्ययन करे।

(क) क्या ज़मींदारों की ज़मीनें ले ली गई हैं और अगर ली गई हैं,
तो किन हलकों में?

(ख) ज़ब्त की हुई ज़मीन का इंतज़ाम कौन कर रहा है, भूतपूर्व
मालिक, अथवा भूमि समिति?

(ग) खेती की मशीनों और मवेशियों के बारे में क्या किया गया है?

३. क्या किसानों द्वारा जोती जाने वाली भूमि मे बढ़ती हुई है?

४. इस समय जितनी भूमि जोती जा रही है, वह सरकार द्वारा निश्चित औसत न्यूनतम भूमि की माता से कितनी कम या ज्यादा है और किन मानों में भिन्न है?

५. दूत को अवश्य ही इस बात का आग्रह करना चाहिए कि भूमि प्राप्त कर लेने के बाद किसानों के लिए यह आवश्यक है कि वे जल्द से जल्द जोती जाने वाली भूमि में वृद्धि करें और अकाल से बचने के एकमात्र साधन के रूप में शहरों में जल्द से जल्द अनाज पहुंचायें।

६. ज़मीदारों के हाथ से भूमि समितियों तथा सोवियतों द्वारा नियुक्त इस प्रकार के दूसरे निकायों के हाथों में भूमि के अन्तरण के लिये कौन सी कारंवाइयां की गयी हैं या करने की योजना बनाई गई है?

७. यह वांछनीय है कि सुनियोजित तथा सुव्यवस्थित ज़मीदारियों का प्रबंध कुशल कृषि-विज्ञानियो की देख-रेख में सोवियतों द्वारा किया जाये, जिनमें उन ज़मीदारियों में नियमित रूप से मज़दूरी करने वाले लोग शामिल हों।

गांवों में सभी जगह ज़िंदगी उबाल खा रही थी, जिसका कारण भूमि-आज्ञप्ति का विद्युत-प्रभाव ही नहीं था, बल्कि यह भी था कि हज़ारों क्रांतिकारी विचारों के किसान सैनिक मोर्चे से लौट रहे थे... इन आदमियों ने किसानों की कांग्रेस बुलाये जाने का विशेष रूप से स्वागत किया।

जिस प्रकार पुरानी त्से-ई-काह ने मज़दूरों तथा सैनिकों की सोवियतों की दूसरी कांग्रेस को रोकने की कोशिश की थी, उसी प्रकार किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ने स्मोल्नी द्वारा बुलायी जाने वाली किसान कांग्रेस को न होने देने के लिए बहुत हाथ-पैर मारा और पुरानी त्से-ई-काह की ही तरह यह देख कर कि उसका विरोध व्यर्थ है, उसने बदहवास होकर तार पर तार भेजना शुरू किया, जिनमे यह आज्ञा की गयी थी कि अनुदार प्रतिनिधि ही चुने जायें। किसानों के बीच यह ख़बर तक फैला दी गई कि कांग्रेस मोगिल्योव में होगी, और कुछ प्रतिनिधि वहां पहुंच भी गये। परंतु २३ नवंबर तक क़रीब ४०० प्रतिनिधि पेत्रोग्राद मे जुट गये थे और पार्टी की अन्तरंग सभायें शुरू हो गई थी...

कांग्रेस का पहला अधिवेशन दूमा भवन के अलेक्सान्द्र हॉल में हुआ और पहले मतदान ने यह प्रगट कर दिया कि आधे से अधिक प्रतिनिधि वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी थे, जबकि मात्र पांचवां भाग बोल्शेविकों के इशारे पर चलता था और चौथाई दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के। शेष प्रतिनिधि केवल एक सूत्र से बंधे थे—पुरानी कार्यकारिणी समिति का विरोध, जिस पर अव्क्सेन्त्येव, चाइकोव्स्की और पेशेख़ोनोव हावी थे...

विशाल सभा-भवन लोगों से खचाखच भरा था; लगातार इतना शोर हो रहा था कि मालूम होता था जैसे दीवारें तक हिल जायेंगी। गहरी दिल के भीतर जमा कटुता ने प्रतिनिधियों को क्रुद्ध दलों में बांट दिया था। दक्षिण पक्ष में अफसरों के झब्बों वाली छिटफुट वर्दियां थी और पुराने ज्यादा मालदार किसानो के बुजुर्ग दढ़ियल चेहरे थे; मध्य पक्ष मे मुट्ठीभर किसान, छोटे अफसर और कुछ सिपाही थे; वाम पक्ष मे प्रायः सभी प्रतिनिधि मामूली सिपाहियों की वर्दियों में थे। ये नई पीढ़ी के लोग थे, जो फ़ौज में नौकरी कर रहे थे... गैलरियों में मजदूरों की भीड़ थी—रूस में मजदूर इस बात को भूले नही है कि वे कभी किसान थे...

पुरानी त्से-ई-काह् के विपरीत अधिवेशन का उद्घाटन करती हुई कार्यकारिणी समिति ने कांग्रेस को आधिकारिक कांग्रेस के रूप मे स्वीकार नही किया। आधिकारिक कांग्रेस १३ दिसंबर के लिए बुलाई गई थी। एक ओर जोर की तालियों और दूसरी ओर क्रुद्ध चीत्कारों के बीच अध्यक्ष ने घोषणा की कि यह सभा कांग्रेस नही, मात्र असाधारण सम्मेलन थी... परंतु शीघ्र ही "असाधारण सम्मेलन" ने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की नेता मारीया स्पिरिदोनोवा को सभापति चुनकर कार्यकारिणी समिति के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रगट कर दिया।

पहले दिन अधिकांश समय इस बात को लेकर उग्र विवाद होता रहा कि क्या वोलोस्त सोवियतों के प्रतिनिधि भी शामिल किये जायेंगे, या केवल प्रांतीय निकायों के प्रतिनिधि शामिल किये जायेंगे। मजदूरों तथा सैनिकों की कांग्रेस की ही तरह यहा भी विशाल बहुमत ने व्यापकतम प्रतिनिधित्व के पक्ष में फ़ैसला किया, जिस पर पुरानी कार्यकारिणी समिति ने सभा का परित्याग कर दिया...

यह जाहिर होते देर न लगी कि अधिकांश प्रतिनिधि जन-कमिसारों

की सरकार के विरोधी थे। बोल्शेविकों की ओर से जिनोव्येव ने बोलने की कोशिश की, मगर उन्हें हू-हू, तू-तू कर चुप कर दिया गया और जब वह मंच से नीचे उतर रहे थे, हंसी के टहाकों के बीच आवाजें सुनी गईं, "जन-कमिसार का मुह काला!"

प्रांतों के एक प्रतिनिधि नाजार्येव ने तेज लहजे में कहा, "हम वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी इस तथाकथित मजदूरों और किसानों की सरकार को, जब तक कि उसमें किसानो के प्रतिनिधि मौजूद न हों, मानने से इनकार करते हैं। इस समय वह मजदूरों का अधिनायकत्व छोड़ कुछ नही है... हम आग्रहपूर्वक माग करते है कि एक ऐसी नई सरकार बनाई जाये, जो सारे जनवादी अंशकों का प्रतिनिधित्व करती हो!"

प्रतिक्रियावादी प्रतिनिधियों ने बड़ी चतुराई से इस भावना का पोषण किया और बोल्शेविक प्रतिनिधियों के प्रतिवादों के बावजूद कहा कि जन-कमिसार परिषद् या तो काग्रेस को अपनी मुट्ठी मे रखना चाहती है, या उसे शस्त्र-बल से भंग कर देना चाहती है। किसान इस घोषणा को सुन कर बौखला उठे...

तीसरे दिन यकायक लेनिन मंच पर आये। दस मिनट तक ऐसी चीख-पुकार होती रही कि लगता था लोग पागल हो गये हों। "लेनिन मुर्दावाद!" लोग चिल्लाये। "हम आपके किसी भी जन-कमिसार को सुनने के लिये तैयार नही हैं। हम आपकी सरकार को नही मानते!"

लेनिन दोनों हाथों से मेज को पकड़े शात, निर्विकार, निश्चल खड़े रहे, उनकी छोटी छोटी आंखें मंच के नीचे जो हगामा मचा हुआ था, उसका विचारपूर्ण भाव से निरीक्षण कर रही थी। अन्ततः सभा के दक्षिण पक्ष को छोड़कर, यह प्रदर्शन अपने आप थोड़ा शांत हुआ।

"मैं यहां पर जन-कमिसार परिषद् के सदस्य के नाते नही आया हूं," लेनिन ने कहा और फिर क्षण भर कोलाहल शात होने की प्रतीक्षा की, "बल्कि मैं इस काग्रेस के लिये बाकायदा निर्वाचित बोल्शेविक दल के सदस्य के नाते आया हूं।" और उन्होंने हाथ मे अपना परिचय-पत्र लेकर सब को दिखाया।

"फिर भी," उन्होने शात, निष्कंप स्वर ने आगे कहा, "इस बात से कोई इनकार नही कर सकता कि बोल्शेविक पार्टी ने रूस की मौजूदा —

सरकार बनाई है..." उन्हें क्षण भर फिर रुकना पड़ा, "लिहाज़ा व्यवहारतः बात एक ही है..." इस बात पर दक्षिणपंथियों ने ऐसा शोर मचाया कि कान के पर्दे फट जायें, परंतु मध्य तथा वाम पक्ष के लोग सुनने के लिए उत्सुक थे और उन्होंने लोगों को चुप कराया।

लेनिन का तर्क बहुत ही सीधा-सादा था। "किसानो, आप लोग, जिनके हाथों में हमने पोमेश्चिकों की ज़मीनों को दिया है, मुझे साफ़ साफ़ बतायें, क्या अब आप मजदूरों को उद्योग पर अपना नियंत्रण स्थापित करने से रोकना चाहते हैं? यह एक वर्ग-युद्ध है। कहने की ज़रूरत नहीं कि पोमेश्चिक किसानों का विरोध करते हैं और कारख़ानेदार मज़दूरों का। क्या आप सर्वहारा की पांतों में फूट पड़ने देंगे? आप किसका पक्ष ग्रहण करेंगे?

"हम बोल्शेविक सर्वहारा की पार्टी हैं—किसान सर्वहारा की और औद्योगिक सर्वहारा की भी। हम बोल्शेविक सोवियतों के रक्षक हैं—किसानों की सोवियतों के और मज़दूरों तथा सैनिकों की सोवियतों के भी। मौजूदा सरकार सोवियतों की सरकार है; हमने न केवल किसानों की सोवियतों को उस सरकार में शामिल होने के लिये न्योता दिया है, हमने वामपथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के प्रतिनिधियों को भी जन-कमिसार परिषद् में शामिल होने के लिये न्योता दिया है...

"सोवियतें जनता का—कारख़ानों और खानों के मज़दूरों का, खेतों के मज़दूरों का—अत्यंत पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करती हैं। जो भी सोवियतों को मटियामेट करने की कोशिश करता है, वह जनवाद-विरोधी तथा प्रतिक्रांतिकारी क़दम उठाने के लिये क़सूरवार है। दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी साथियो! —और कैडेट श्रीमानो! मैं आपको चेतावनी देता हूं कि अगर संविधान सभा सोवियतों को मिटाने की कोशिश करती है, तो हम उसे कभी भी ऐसा करने नहीं देंगे!"

२५ नवंबर को तीसरे पहर कार्यकारिणी समिति के बुलावे पर चेर्नोव मोगिल्योव से भागे भागे आये। दो ही महीने पहले समझा जाता था कि वह घोर *क्रांतिकारी* हैं और वह *किसानों के बीच* अत्यधिक लोकप्रिय थे, परंतु अब उन्हीं को वाम पक्ष की ओर कांग्रेस के ख़तरनाक रुझान को

रोकने के लिये बुलाया गया था। पेत्रोग्राद पहुंचते ही चेर्नोव को गिरफ़्तार कर लिया गया और स्मोल्नी ले जाया गया, जहा थोड़ी देर की बातचीत के बाद उन्हें छोड़ दिया गया।

आते ही चेर्नोव ने सबसे पहले कार्यकारिणी समिति को कांग्रेस का परित्याग करने के लिये बुरी तरह फटकारा। समिति ने कांग्रेस में वापिस जाना मजूर कर लिया, और चेर्नोव ने अधिकाश प्रतिनिधियों की ज़ोरदार तालियों के और बोल्शेविकों की आवाज़ों और फब्तियों के बीच सभा-भवन में प्रवेश किया।

"साथियो! मैं बाहर था। मैंने पश्चिमी मोर्चे की सेनाओं के किसान प्रतिनिधियों की एक काग्रेस बुलाने के प्रश्न पर विचार करने के लिये आयोजित बारहवी सेना के एक सम्मेलन मे भाग लिया, और यहां जो विद्रोह घटित हुआ है उसके बारे में मेरी जानकारी बहुत ही कम है..."

जिनोव्येव ने उठकर आवाज़ दी, "जी हां, आप ज़रा यूं ही थोडी देर के लिए बाहर चले गये थे!" भयानक कोलाहल, आवाज़ें: "बोल्शेविकों का नाश हो!"

चेर्नोव ने आगे कहा, "यह इलज़ाम कि मैंने सेना लेकर पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने में मदद की बेबुनियाद है, सरासर झूठ है। कौन है, जो यह इलज़ाम लगाता है? ज़रा मुझे बताइये तो!"

जिनोव्येव: "'इज़्वेस्तिया' और 'देलो नरोदा'—आपके अपने अख़बार—वे ही ऐसा कहते हैं!"

छोटी छोटी आखों, घुघराले बालों और भूरी दाढ़ी वाले चेर्नोव का चौड़ा-चकला चेहरा तमतमा आया, लेकिन उन्होने अपने ऊपर ज़ब्त किया और भाषण जारी रखा, "मैं फिर कहता हूं, यहा जो कुछ हुआ है, उसके बारे में मैं वस्तुतः कुछ नही जानता और मैंने किसी सेना की रहनुमाई नही की, सिवाय इस सेना के (उन्होने किसान प्रतिनिधियों की ओर इशारा किया), जिसे यहा पर लाने के लिए अधिकाशतः मैं ही ज़िम्मेदार हूं!" हंसी, और आवाज़ें: "शाबाश!"

"पेत्रोग्राद वापिस आने पर मैं स्मोल्नी गया। वहा मेरे ख़िलाफ़ ऐसा कोई इलज़ाम नही लगाया गया... मैंने वहां थोड़ी देर बातचीत की और

चला आया – बस इतनी सी बात है! है कोई माई का लाल यहां पर, जो मेरे खिलाफ़ यह इलज़ाम लगाये?"

इस पर ऐसा शोर मचा कि पूछो मत। बोल्शेविक और कुछ वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी भी एक साथ उठ खड़े हुए और सबके सब घूंसा दिखाते हुए चीख़ने-चिल्लाने लगे। बाक़ी लोगों ने चिल्ला कर उन्हें बैठा देने की कोशिश की।

"यह अधिवेशन नहीं है, अंधेरगर्दी है!" चेर्नोव ने चिल्लाकर कहा, और वह हॉल से बाहर निकल गये। शोर-गुल और हंगामे की वजह से सभा स्थगित कर दी गई...

इस बीच कार्यकारिणी समिति की कांग्रेस में क्या स्थिति है, यह प्रश्न सभी के दिमाग को उलझन में डाले हुए था। सभा को "असाधारण सम्मेलन" का नाम देकर यह योजना बनाई गई थी कि कार्यकारिणी समिति के पुनर्निर्वाचन को रोका जाये। लेकिन यह योजना एक दुधारी तलवार बन गई। वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने फ़ैसला किया कि अगर कांग्रेस का कार्यकारिणी समिति पर कोई ज़ोर नहीं है, तो कार्यकारिणी समिति का भी कांग्रेस पर कोई ज़ोर नहीं हो सकता। २५ नवंबर को सभा ने फ़ैसला किया कि कार्यकारिणी समिति के अधिकार असाधारण सम्मेलन द्वारा ग्रहण किये जायें, जिसमे समिति के वे ही सदस्य वोट दे सकेंगे, जो बाकायदा प्रतिनिधि निर्वाचित हुए हैं...

दूसरे दिन, बोल्शेविकों के उग्र विरोध के बावजूद प्रस्ताव में एक संशोधन किया गया, जिसके द्वारा कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों को, चाहे वे निर्वाचित प्रतिनिधि हों अथवा नहीं, सभा में बोलने और वोट देने का अधिकार दिया गया।

२७ तारीख़ को भूमि की समस्या पर बहस हुई, जिसने बोल्शेविकों और वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के कृषि-कार्यक्रमों के अंतर को स्पष्ट कर दिया।

वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से बोलते हुए कचीन्स्की ने भूमि-समस्या के क्रांतिकालीन इतिहास की एक रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि किसानों की सोवियतों की पहली कांग्रेस ने ज़मींदारों की

ज़मीनों को अविलंब भूमि समितियों के हवाले करने के पक्ष में एक स्पष्ट प्रस्ताव औपचारिक रूप से स्वीकृत किया था। परंतु क्रांति के निर्देशकों ने तथा मंत्रिमंडल में मौजूद पूंजीवादियों ने आग्रह किया कि जब तक संविधान सभा बुलाई नहीं जाती, इस प्रश्न का निपटारा नहीं किया जा सकता... क्रांति का दूसरा दौर, "समझौते" का दौर तब शुरू हुआ, जब चेर्नोव ने मंत्रिमंडल में प्रवेश किया। किसानों को यकीन हो गया कि अब भूमि-समस्या को अमली तौर हल करना शुरू किया जायेगा। परंतु पहली किसान कांग्रेस के आदेशात्मक निर्णय के बावजूद कार्यकारिणी समिति के प्रतिक्रियावादियों और समझौतापरस्तों ने कोई कदम उठाने नहीं दिया। इस नीति के फलस्वरूप गांवों में जगह जगह उपद्रव हुए, जो वास्तव में किसानों के अधैर्य तथा उनकी क्रियाशीलता के दमन की प्रतिक्रिया की स्वाभाविक अभिव्यक्ति थे। किसानों ने क्रांति के अर्थ को ठीक ठीक समझा – उन्होंने कथनी को करनी में बदल देना चाहा...

"हाल की घटनाओं का अर्थ," भाषणकर्ता ने आगे कहा, "साधारण उपद्रव अथवा 'बोल्शेविक दुःसाहसिकता' नहीं है, इसके विपरीत वास्तविक जन-विद्रोह है, जिसका समूचे देश ने सहानुभूतिपूर्ण रूप से स्वागत किया है...

"बोल्शेविकों ने सामान्यतः भूमि-समस्या के प्रति सही रुख अपनाया, परंतु किसानों को यह सलाह देकर कि वे बलात् भूमि पर कब्ज़ा करें उन्होंने एक भयंकर भूल की... शुरू के दिनों से ही बोल्शेविकों ने कहना शुरू किया कि किसानों को "क्रांतिकारी जन-संघर्ष द्वारा" भूमि पर कब्ज़ा कर लेना चाहिए। यह अराजकता है, और कुछ नहीं। भूमि संगठित रूप से हाथ में ली जा सकती है... बोल्शेविकों के लिए महत्वपूर्ण बात यह थी कि क्रांति की समस्यायें जल्दी से जल्दी हल कर ली जायें, परंतु ये समस्यायें किस प्रकार हल की जायें, इसमें उन्हें दिलचस्पी न थी...

"सोवियतों की कांग्रेस की भूमि-संबंधी आज्ञप्ति मूलतः किसानों की पहली कांग्रेस के निर्णयों से भिन्न नहीं है। तब फिर नई सरकार ने उस कांग्रेस द्वारा निरूपित कार्यनीति का अनुसरण क्यों नहीं किया? क्योंकि जन-कमिसार परिषद् भूमि की समस्या को जल्द से जल्द निपटाना चाहती थी, ताकि संविधान सभा के लिए कुछ करने को न रह जाये...

"परंतु सरकार ने यह भी देखा कि ग्रमली क़दम उठाना ज़रूरी है, लिहाजा उसने बिना ग्रागा-पीछा देखे भूमि समितियों के लिए नियमावली स्वीकृत की ग्रौर इस प्रकार एक विचित्र परिस्थिति उत्पन्न हो गई, क्योंकि जहां जन-कमिसार परिषद् ने भूमि के निजी स्वामित्व का उन्मूलन किया, वहीं भूमि समितियों के लिए सूत्रबद्ध नियमावली निजी स्वामित्व पर ग्राधारित है... बहरहाल इससे कोई नुकसान नहीं हुग्रा है, क्योंकि भूमि समितियां सोवियत ग्राज्ञप्तियों की ग्रोर ध्यान नहीं दे रही हैं, बल्कि स्वयं ग्रपने व्यावहारिक निर्णयों को कार्यान्वित कर रही हैं–उन निर्णयों को, जो किसानों के विशाल बहुमत की इच्छा पर ग्राधारित हैं...

"ये भूमि समितियां भूमि-समस्या को वैधानिक रूप से हल करने की कोशिश नहीं कर रही हैं, क्योंकि यह केवल संविधान सभा के ग्रख़्तियार की बात है... परंतु क्या संविधान सभा रूसी किसानों की मर्ज़ी पर चलना चाहेगी? इसके बारे में हमें इत्मीनान नहीं हो सकता... हमें सिर्फ़ इस बात का इत्मीनान हो सकता है कि ग्रब किसानों का क्रांतिकारी संकल्प जाग्रत हो उठा है ग्रौर संविधान सभा को विवश होकर भूमि की समस्या का निपटारा उसी प्रकार करना होगा, जिस प्रकार किसान चाहते हैं... संविधान सभा जनता की मर्ज़ी की ग्रवहेलना करने की जुर्रत नहीं करेगी..."

इसके बाद लेनिन बोले ग्रौर लोगों ने उन्हें एकाग्र ग्रौर तल्लीन भाव से सुना। "इस घड़ी हम भूमि की समस्या को ही नहीं, सामाजिक क्रांति की समस्या को भी हल करने की कोशिश कर रहे हैं–न केवल यहां, रूस में, बल्कि सारी दुनिया में। भूमि की समस्या सामाजिक क्रांति की दूसरी समस्याग्रों से विलग रूप में सुलझाई नहीं जा सकती... उदाहरण के लिए, बड़ी ज़मींदारियों की ज़ब्ती से भड़क कर रूसी ज़मींदार ही नहीं, विदेशी पूंजी भी प्रतिरोध करेगी, जिसके साथ, बैंकों के माध्यम से, बड़ी ज़मींदारियां जुड़ी हुई हैं...

"रूस में भूमि-स्वामित्व उत्पीड़न का [illegible] हुग्रा है ग्रौर किसानों द्वारा भूमि [illegible] हमारी क्रांति [illegible] क़दम है। परंतु इस क़दम [illegible] से ग्रलग [illegible] जिन दौरों से होकर [illegible] पड़ा है, [illegible] ज़ाहिर हो जाती है [illegible]

कि उन्होने उस समय समझौते की नीति का विरोध नही किया, क्योंकि उन्होंने इस सिद्धात को ग्रहण किया था कि जन-साधारण की चेतना अभी तक पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुई है...

"**यदि समाजवाद तभी संपन्न किया जा सकता है, जब समस्त जनता का बौद्धिक विकास उसकी अनुमति दे, तो हम कम से कम पांच सौ वर्षों तक समाजवाद का दर्शन नहीं कर सकेंगे...** समाजवादी राजनीतिक पार्टी – यह मजदूर वर्ग का हिरावल है; उसे अपने को हरगिज़ इस बात की इजाज़त नही देनी चाहिए कि वह साधारण जनो की अशिक्षा के कारण अपने क़दम रोक ले, बल्कि उसे अनिवार्यतः जन-साधारण का नेतृत्व करना चाहिए और इसके लिए सोवियतों का क्रातिकारी पेशक़दमी करनेवाले निकायों के रूप मे इस्तेमाल करना चाहिए... परंतु यदि वामपंथी समाजवादी-क्रातिकारी साथी ढुलमुलयक़ीनों का नेतृत्व करना चाहते हैं, तो पहले उन्हें ख़ुद ढुलमुलाना बंद करना चाहिए...

"पिछली जुलाई में ग्राम जनता और 'समझौतापरस्तों' के बीच खुल्लमखुल्ला एक के बाद एक कई सबंध-विच्छेद हुए; लेकिन आज नवंबर में वामपंथी समाजवादी-क्रातिकारी अभी भी अपने हाथ अव्क्सेन्त्येव की ओर बढ़ा रहे है, जो जनता को अपनी कानी उगली पर नचाने की कोशिश कर रहे हैं... यदि समझौते की नीति चलती रहती है, तो क्रांति का लोप हो जायेगा। पूजीपति वर्ग के साथ कोई समझौता संभव नही है; यह जरूरी है कि उसकी शक्ति बिल्कुल चूर चूर कर दी जाये...

"हम बोल्शेविकों ने अपना भूमि-संबंधी कार्यक्रम बदला नही है; हमने भूमि के निजी स्वामित्व के उन्मूलन का परित्याग नही किया है, न ही ऐसा करने का विचार रखते है। हमने भूमि समितियों के लिए नियमावली – यह नियमावली बिल्कुल ही निजी स्वामित्व पर आधारित नहीं है – इसलिए स्वीकृत की है कि हम जन-इच्छा को उसी प्रकार संपन्न करना चाहते हैं, जिस प्रकार जनता ने ख़ुद करने का निर्णय किया है, ताकि समाजवादी क्राति के लिए संघर्ष करने वाले सभी अंशकों का संश्रय और भी अधिक घनिष्ठ हो सके।

"हम वामपंथी समाजवादी-क्रातिकारियों को उस संश्रय मे सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित करते हैं, परन्तु हम साथ ही यह भी आग्रह करने

है कि वे पीछे मुड मुड़कर देखना वंद करें और अपनी पार्टी के समझौतापरस्तों के साथ अपना नाता तोड़े...

"जहा तक संविधान सभा का संबंध है, यह सच है कि, जैसा पिछले वक्ता ने कहा है, सविधान सभा का कार्य जन-साधारण के क्रातिकारी संकल्प पर निर्भर होगा। मैं कहता हूं, 'उस क्रातिकारी संकल्प का भरोसा कीजिये, परंतु अपनी बंदूक को मत भूलिये!'"

इसके बाद लेनिन ने बोल्शेविक प्रस्ताव को पढ़ा:

किसानों की काग्रेस मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी काग्रेस द्वारा स्वीकृत तथा रूसी जनतन्त्र की मजदूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार की हैसियत से जन-कमिसार परिषद् द्वारा प्रकाशित ८ नवंबर की भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति का पूर्ण समर्थन करती है। किसानों की कांग्रेस... सभी किसानों को आमंत्रित करती है कि वे सर्वसम्मति से इस क़ानून का समर्थन करें और उसे ख़ुद ही अविलंब लागू करें; इसके साथ कांग्रेस किसानों को इसके लिए आमंत्रित करती है कि वे जिम्मेदारी के पदों और स्थानों पर केवल उन्ही व्यक्तियों को नियुक्त करें, जिन्होने, अपनी कथनी द्वारा ही नही, अपनी करनी द्वारा भी शोषित किसान-मजदूरों के हितो के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा को, बड़े बड़े जमीदारों, पूजीपतियों, उनके हिमायतियों और हवालियों-मवालियों के समस्त प्रतिरोध के खिलाफ इन हितों की रक्षा करने की अपनी इच्छा और सामर्थ्य को प्रमाणित किया हो...

इसके साथ ही किसानों की कांग्रेस अपना यह विश्वास प्रगट करती है कि जो कार्यभार भूमि-आज्ञप्ति के अग है, उन सबका पूर्ण क्रियान्वयन ७ नवंबर, १९१७ को शुरू हुई मजदूरों की समाजवादी क्राति की विजय द्वारा ही सफल हो सकता है; क्योंकि समाजवादी क्राति ही किसान श्रमिकों के हाथ में बिला मुआवजा भूमि का निश्चित अंतरण कर सकती है, समाजवादी क्राति ही आदर्श फार्मों को जब्त कर उन्हे किसान-कम्यूनों के हवाले कर सकती है, बड़े बड़े जमींदारो के हाथों मे खेती की जो मशीनें हैं उन्हें जब्त कर सकती है, उजरती गुलामी के संपूर्ण उन्मूलन द्वारा खेतिहर मजदूरों के हितों का संरक्षण तथा खेती और उद्योग की पैदावार

का रूस के सभी भागों में नियमित तथा व्यवस्थित वितरण, बैंकों पर कब्जा (जिसके बिना निजी स्वामित्व के उन्मूलन के बाद समस्त जनता द्वारा भूमि पर अधिकार असंभव होगा) और राज्य द्वारा मजदूरों की प्रत्येक प्रकार से सहायता निष्पन्न कर सकती है...

इन्ही कारणों से किसानों की काग्रेस एक समाजवादी क्रांति के रूप में ७ नवंबर की क्रांति का पूर्ण समर्थन करती है और बिना किसी हिचकिचाहट के, जो भी परिवर्तन आवश्यक हों, उनके साथ रूसी जनतंत्र के समाजवादी रूपातरण को कार्यान्वित करने का अपना अविचल संकल्प प्रगट करती है।

सभी उन्नत देशों के औद्योगिक मजदूर वर्ग के साथ, सर्वहारा के साथ किसान श्रमिकों की घनिष्ट एकता समाजवादी क्रांति की विजय की अनिवार्य शर्त है, जिस क्रांति के द्वारा ही भूमि-संबंधी आज्ञप्ति की स्थायी सफलता तथा उसका पूर्ण क्रियान्वयन सुनिश्चित बनाया जा सकता है। अब से रूसी जनतंत्र में नीचे से ऊपर तक राज्य का समस्त संगठन तथा प्रशासन अवश्य ही इस एकता पर आधारित होना चाहिए। पूंजीपति वर्ग के साथ मेल-मिलाप – पूंजीवादी राजनीति के मुखियों के साथ अनुभव की कसौटी पर गर्हित सिद्ध होने वाले मेल-मिलाप – की नीति की ओर लौटने की प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष, प्रगट अथवा प्रच्छन्न सभी कोशिशों को चूर चूर करती हुई यह एकता ही समूचे संसार में समाजवाद की विजय को सुनिश्चित बना सकती है...

कार्यकारिणी समिति के प्रतिक्रियावादियों में अब इतना साहस न रहा कि वे सभा को अपना मुंह दिखाते। लेकिन चेर्नोव ने विनम्र तथा आकर्षक निष्पक्षता के साथ कई मरतबा भाषण किया। उन्हें मंच पर आकर बैठने के लिए आमंत्रित किया गया... काग्रेस की दूसरी रात को सभापति के हाथ में एक गुमनाम पुर्जा दिया गया, जिसमें अनुरोध किया गया था कि चेर्नोव को आनरेरी अध्यक्ष बनाया जाये। उस्तीनोव ने इस पुर्जे को पढ़ कर सुनाया। ज़िनोव्येव ने फौरन उठकर बुलंद आवाज़ में कहा कि यह पुरानी कार्यकारिणी समिति की सम्मेलन पर क़ब्जा करने की एक तिकड़म है। मिनट भर में दोनों ओर के लोग आग-बबूला होकर हाथ हिला हिलाकर

चीखने-चिल्लाने लगे – सभा-भवन क्या था, क्रुद्ध, फूत्कारता, गरजता जन-सागर था... फिर भी चेर्नोव अभी भी बहुत लोकप्रिय बने हुए थे।

भूमि की समस्या तथा लेनिन के प्रस्ताव पर जो गरमागरम और धुग्राधार बहसें हुईं, उनमें बोल्शेविक दल दो बार सभा त्याग करते करते रुक गया – दोनों बार उनके नेताओं ने उन्हें रोका... ऐसा लगता था कि कांग्रेस में बुरी तरह खिंच पैदा हो गयी है।

लेकिन हममें से किसी को नहीं मालूम था कि स्मोल्नी में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों और बोल्शेविकों के बीच गुप्त वार्ता चल रही थी। शुरू शुरू में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने मांग की कि सभी समाजवादी पार्टियों को लेकर, चाहे ये पार्टियां सोवियतों में शामिल हों या न हों, एक सरकार बनायी जाये, जो एक जन-परिषद् के प्रति उत्तरदायी हो; इस परिषद् में मजदूरों तथा सैनिकों के संगठन तथा किसानों के संगठन के प्रतिनिधियों की संख्या बराबर हो और शेष प्रतिनिधि नगर दूमाओं तथा ज़ेम्सत्वोओं के हों; लेनिन तथा त्रोत्स्की को मंत्रिमंडल से बाहर रखा जाये और सैनिक क्रांतिकारी समिति तथा दूसरे दमनकारी निकायों को भंग कर दिया जाये।

बुधवार, २८ नवंबर की सुबह, रात भर की बेतरह कशमकश और खींचा-तानी के बाद एक समझौता हुआ। १०८ सदस्यों की त्से-ई-काह को इस प्रकार बढ़ाया जायेगा: उसमें किसानों की कांग्रेस के सानुपातिक रूप से चुने १०८ प्रतिनिधि शामिल किये जायेंगे, सेना तथा नौसेना से सीधे सीधे चुने गये १०० प्रतिनिधि, ट्रेड-यूनियनों के ५० प्रतिनिधि (सामान्य यूनियनों से ३५, रेल मजदूरों के १० तथा डाक-तार मजदूरों के ५) शामिल किये जायेंगे। दूमा तथा ज़ेम्सत्वोओं को बरतरफ़ कर दिया गया। लेनिन तथा त्रोत्स्की मंत्रिमंडल में बने रहेंगे और सैनिक क्रांतिकारी समिति काम करती रहेगी।

अब कांग्रेस के अधिवेशन स्थानांतरित होकर नंबर छः, फ़ोन्तान्का मार्ग पर शाही लॉ कालेज भवन में, जहां किसानों की सोवियत का सदर दफ़्तर था, होने लगे थे। बुधवार को तीसरे पहर वहां बड़े हॉल में प्रतिनिधियों का जमावड़ा हुआ। पुरानी कार्यकारिणी समिति कांग्रेस से अलग हो गयी थी और वह उसी भवन के एक दूसरे कक्ष में भगोड़े प्रतिनिधियों

तथा सैनिक समितियों के प्रतिनिधियो को लेकर अपना अलग अवशिष्ट सम्मेलन कर रही थी।

चेर्नोव, कार्यवाहियो पर सतर्क दृष्टि लगाये, कभी एक सभा में जाते, कभी दूसरी। उन्हें मालूम था कि बोल्शेविकों के साथ समझौता करने पर विचार किया जा रहा है, मगर उन्हें यह नही मालूम था कि यह समझौता संपन्न किया जा चुका है।

अवशिष्ट सम्मेलन मे बोलते हुए उन्होंने कहा, "इस वक्त जब सभी इस हक में है कि एक विशुद्ध समाजवादी सरकार बनायी जाये, बहुत से लोग पहले मंत्रिमंडल को भूल गये है, जो सयुक्त मंत्रिमंडल नहीं था और जिसमे एक ही समाजवादी था – केरेन्स्की। यह एक ऐसी सरकार थी, जो अपने वक्त में अत्यधिक लोकप्रिय थी। अब लोग केरेन्स्की को दोषी ठहराते है – वे यह भूल जाते है कि उन्हें सोवियतों ने ही नही, जन-साधारण ने भी सत्तारूढ किया था....

"केरेन्स्की के प्रति जनमत क्यों बदला? जंगली जातियों के लोग देवताओं को प्रतिष्ठापित करते हैं और उनसे प्रार्थना करते है, परंतु यदि उनकी कोई प्रार्थना सुनी नही गयी, तो उन्हे दंड भी देते हैं... यही बात इस घड़ी हो रही है... कल केरेन्स्की, आज लेनिन और त्रोत्स्की; कल कोई और...

"हमने केरेन्स्की और बोल्शेविको दोनों से प्रस्ताव किया है कि वे सत्ता का परित्याग करें। केरेन्स्की ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है – जिस जगह वह छिपे हुए है, वहां से आज ही उन्होने यह एलान किया है कि उन्होने प्रधान मत्री के पद से इस्तीफा दे दिया है। परंतु बोल्शेविक सत्ता अपने हाथ मे रखना चाहते है और यह नही जानते कि उसका इस्तेमाल किस प्रकार किया जाये...

"बोल्शेविक चाहे सफल हों या असफल, इससे रूस का भाग्य बदलने वाला नही है। रूस के गावों के लोग भली भाति समझते हैं कि उन्हे क्या चाहिए और वे अपनी कार्रवाइयां कर रहे हैं... अंत में ये गांव ही हमे बचायेंगे..."

इस बीच बड़े हॉल मे उस्तीनोव ने घोषणा की थी कि स्मोल्नी तथा किसानों की कांग्रेस के बीच समझौता हो गया है। प्रतिनिधियों ने इस

घोषणा का उन्मत्त उल्लास से स्वागत किया। यकायक चेर्नोव वहां तशरीफ ले आये और उन्होने बोलने की इजाज़त मागी।

"मेरा ख़्याल है," उन्होने शुरू किया, "कि किसानों की कांग्रेस तथा स्मोल्नी के बीच समझौता संपन्न किया जा रहा है। यह देखते हुए कि किसानों की सोवियतों की असली कांग्रेस अगले सप्ताह से पहले नहीं होने वाली है, यह समझौता गैरकानूनी होगा...

"इसके अलावा मैं आपको अभी से आगाह करना चाहता हूं कि बोल्शेविक आपकी मांगों को कभी स्वीकार नहीं करेंगे..."

इस पर हंसी के ऐसे ठहाके लगे कि उनके भाषण का क्रम टूट गया। परिस्थिति को समझ कर, वह मंच से उतर आये और हॉल से बाहर निकल गये और अपने साथ अपनी लोकप्रियता भी लेते गये।

बृहस्पतिवार, २६ नवंबर को, जब दिन ढलने को आ रहा था, कांग्रेस का असाधारण अधिवेशन शुरू हुआ। सभा में उछाह-उत्सव का वातावरण था; हर चेहरा खिला हुआ था... सभा के सामने जो बाकी काम था, उसे जल्दी जल्दी निबटाया गया, और फिर समाजवादी-क्रांतिकारियों के वाम पक्ष के वयोवृद्ध पुरोहित, नातान्सोन ने अश्रुविगलित, प्रकंपित स्वर में मज़दूरों तथा सैनिकों की सोवियतों के साथ किसानों की सोवियतों के "मिलन" के बारे में अपनी रिपोर्ट पढ़ी। रिपोर्ट के दौरान जब भी "मिलन" शब्द आता, लोग हुलस कर तालियां बजाने लगते... अंत में उस्तीनोव ने घोषणा की कि लाल गार्ड के प्रतिनिधियों के साथ स्मोल्नी का एक शिष्टमंडल वहां आया है। उसका बड़े ज़ोर से तालियां बजाकर स्वागत किया गया। एक के बाद एक, एक मजदूर, एक सिपाही और एक मल्लाह ने मंच पर आकर उनका अभिनंदन किया।

इसके बाद अमरीकी समाजवादी लेबर पार्टी के प्रतिनिधि बोरीस रेइनश्तेइन बोले। उन्होंने कहा: "किसानों की कांग्रेस तथा मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के सम्मिलन का दिन क्रांति का एक महान् पर्व है, जिसका महामन्द्र स्वर समूचे संसार में—पेरिस में, लंदन में और समुद्र पार न्यू-यार्क में—ध्वनित-प्रतिध्वनित होगा। यह सम्मिलन सभी मेहनतकशों के दिलों में ख़ुशी भर देगा।

"एक महान् विचार की विजय हुई है। पश्चिम और अमरीका रूस से, रूसी सर्वहारा से, जबरदस्त उम्मीदें लगाये हुए हैं... संसार का सर्वहारा रूसी क्रांति की प्रतीक्षा कर रहा है, उसकी महान् सिद्धियों और उपलब्धियों की प्रतीक्षा कर रहा है, जो प्राप्त की जा रही हैं..."

त्से-ई-काह के अध्यक्ष स्वेर्दलोव ने उनका अभिनंदन किया। "गृहयुद्ध का अंत चिरजीवी हो! जनवादी एकता ज़िंदाबाद!" के नारे लगाते किसानों की भीड़ बाहर निकल गयी।

अंधेरा घिर आया था और जमी हुई बर्फ पर चंद्रमा और सितारों की मद्धिम रोशनी चमक रही थी। नदी के किनारे पाव्लोव्स्की रेजीमेंट के सिपाही मार्च करने के लिए पूर्ण पंक्तिबद्ध खड़े थे: रेजीमेंट के बैंड ने 'मर्सेइयेज़' की धुन बजाना शुरू कर दिया। सिपाहियों के गगनभेदी नारों के बीच किसानों ने अखिल रूसी किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति के महान् लाल झंडे को फहराते हुए पंक्तिबद्ध होना शुरू किया। झंडे पर सुनहरे अक्षरों मे ताज़ा कढ़ाई की गयी थी: "क्रांतिकारी तथा मेहनतकश जन-समुदायों की एकता ज़िंदाबाद!" इसके पीछे दूसरे झंडे थे – वार्ड सोवियतों के झंडे और पुतीलोव कारख़ाने का झंडा, जिस पर लिखा था: "हम सभी जनों के बीच भाईचारा कायम करने के लिए इस झंडे के सामने शीश नवाते हैं!"

कहीं से जलती हुई मशालें निकल आयीं; रात के अंधेरे मे उनकी नारंगी रोशनी बर्फ के पहलों पर पड़ती हुई सहस्रगुना होकर प्रतिबिंबित हो रही थी। जब यह गाती-बजाती भीड़ फ़ोन्तान्का के किनारे दोनों ओर की पटरियों पर मौन, स्तंभित खड़े लोगों के बीच से चली, ये धुआं उगलती मशालें ऊपर ऊपर लहरा रही थीं।

"क्रांतिकारी सेना – ज़िंदाबाद! लाल गार्ड – ज़िंदाबाद! किसान – ज़िंदाबाद!"

इस प्रकार इस विशाल जुलूस ने – जिसमे बराबर नये लोग शामिल होते गये और स्वर्णाक्षरों से अंकित नये नये लाल झंडे लहराते गये – शहर का चक्कर लगाया। दो बूढ़े किसान, जिनकी कमर मेहनत-मशक़्क़त करते करते झुक गयी थी, हाथ में हाथ दिये चल रहे थे, उनके चेहरे बच्चों जैसी ख़ुशी से चमक रहे थे।

घोषणा का उन्मत्त उल्लास से स्वागत किया। यकायक चेर्नोव वहा तशरीफ ले आये और उन्होने बोलने की इजाजत मांगी।

"मेरा ख्याल है," उन्होंने शुरू किया, "कि किसानों की काग्रेस तथा स्मोल्नी के बीच समझौता संपन्न किया जा रहा है। यह देखते हुए कि किसानों की सोवियतो की असली काग्रेस अगले सप्ताह से पहले नही होने वाली है, यह समझौता गैरकानूनी होगा...

"इसके अलावा मैं आपको अभी से आगाह करना चाहता हूं कि बोल्शेविक आपकी मांगों को कभी स्वीकार नही करेंगे..."

इस पर हंसी के ऐसे ठहाके लगे कि उनके भाषण का क्रम टूट गया। परिस्थिति को समझ कर, वह मंच से उतर आये और हॉल से बाहर निकल गये और अपने साथ अपनी लोकप्रियता भी लेते गये।

वृहस्पतिवार, २६ नवंबर को, जब दिन ढलने को आ रहा था, काग्रेस का असाधारण अधिवेशन शुरू हुआ। सभा में उछाह-उत्सव का वातावरण था; हर चेहरा खिला हुआ था... सभा के सामने जो बाकी काम था, उसे जल्दी जल्दी निबटाया गया, और फिर समाजवादी-क्रातिकारियो के वाम पक्ष के वयोवृद्ध पुरोहित, नातान्सोन ने अश्रुविगलित, प्रकपित स्वर मे मजदूरों तथा सैनिकों की सोवियतो के साथ किसानों की सोवियतो के "मिलन" के बारे में अपनी रिपोर्ट पढ़ी। रिपोर्ट के दौरान जब भी "मिलन" शब्द आता, लोग हुलस कर तालिया बजाने लगते... अंत मे उस्तीनोव ने घोषणा की कि लाल गार्ड के प्रतिनिधियो के साथ स्मोल्नी का एक शिष्टमंडल वहा आया है। उसका बड़े ज़ोर से तालिया बजाकर स्वागत किया गया। एक के बाद एक, एक मजदूर, एक सिपाही और एक मल्लाह ने मंच पर आकर उनका अभिनंदन किया।

इसके बाद अमरीकी समाजवादी लेबर पार्टी के प्रतिनिधि बोरीस रेइनश्तेइन बोले। उन्होने कहा: "किसानो की काग्रेस तथा मजदूरों तथा सैनिको के प्रतिनिधियों की सोवियतो के सम्मिलन का दिन क्राति का एक महान् पर्व है, जिसका महामंद्र स्वर समूचे ससार मे–पेरिस मे, लदन में और समुद्र पार न्यूयार्क मे–ध्वनित-प्रतिध्वनित होगा। यह सम्मिलन सभी मेहनतकशों के दिलों में ख़ुशी भर देगा।

"एक महान् विचार की विजय हुई है। पश्चिम और अमरीका रूस में, रूसी सर्वहारा में, जबरदस्त उम्मीदें लगाये हुए हैं... संसार का सर्वहारा रूसी क्रांति की प्रतीक्षा कर रहा है, उसकी महान् सिद्धियों और उपलब्धियों की प्रतीक्षा कर रहा है, जो प्राप्त की जा रही हैं..."

त्से-ई-काह के अध्यक्ष स्वेर्दलोव ने उनका अभिनंदन किया। "गृहयुद्ध का अंत चिरंजीवी हो! जनवादी एकता जिंदाबाद!" के नारे लगाते किसानों की भीड़ बाहर निकल गयी।

अंधेरा घिर आया था और जमी हुई बर्फ़ पर चंद्रमा और सितारों की मद्धिम रोशनी चमक रही थी। नदी के किनारे पाव्लोव्स्की रेजीमेंट के सिपाही मार्च करने के लिए पूर्ण पंक्तिबद्ध खड़े थे: रेजीमेंट के बैंड ने 'मर्सेइयेज' की धुन बजाना शुरू कर दिया। सिपाहियों के गगनभेदी नारों के बीच किसानों ने अखिल रूसी किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति के महान् लाल झंडे को फहराते हुए पंक्तिबद्ध होना शुरू किया। झंडे पर सुनहरे अक्षरों में ताजा कढ़ाई की गयी थी: "क्रांतिकारी तथा मेहनतकश जन-समुदायों की एकता जिंदाबाद!" इसके पीछे दूसरे झंडे थे–वार्ड सोवियतों के झंडे और पुतीलोव कारख़ाने का झंडा, जिस पर लिखा था: "हम सभी जनों के बीच भाईचारा क़ायम करने के लिए इस झंडे के सामने शीश नवाते हैं!"

कहीं से जलती हुई मशालें निकल आयीं; रात के अंधेरे में उनकी नारंगी रोशनी बर्फ़ के पहलों पर पड़ती हुई सहस्रगुना होकर प्रतिबिंबित हो रही थी। जब यह गाती-बजाती भीड़ फ़ोन्तान्का के किनारे दोनों ओर की पटरियों पर मौन, स्तंभित खड़े लोगों के बीच से चली, ये धुआं उगलती मशालें ऊपर ऊपर लहरा रही थीं।

"क्रांतिकारी सेना–जिंदाबाद! लाल गार्ड–जिंदाबाद! किसान–जिंदाबाद!"

इस प्रकार इस विशाल जुलूस ने–जिसमें बराबर नये लोग शामिल होते गये और स्वर्णाक्षरों से अंकित नये नये लाल झंडे लहराते गये–शहर का चक्कर लगाया। दो बूढ़े किसान, जिनकी कमर मेहनत-मशक़्क़त करते करते झुक गयी थी, हाथ में हाथ दिये चल रहे थे, उनके चेहरे बच्चों जैसी ख़ुशी से चमक रहे थे।

"अरे, भाई, अब देखना है, वे हमारी जमीनों को हमारे हाथ से वापस कैसे लेते हैं!" एक ने कहा।

स्मोल्नी भवन के पास सड़क के दोनों ओर लाल गार्ड क़तार बांधे खड़े थे और खुशी से फूले नहीं समा रहे थे।

दूसरे बूढ़े किसान ने अपने साथी से कहा, "भाई, मैं थका नहीं हूं, पूरे रास्ते मुझे ऐसा लगा कि मैं चल नहीं रहा हूं, उड़ान भर रहा हूं!"

स्मोल्नी भवन की सीढ़ियों पर करीब सौ मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधि जमा थे, उनका फरहरा पीछे मेहराबी दरवाजों के बीच से आती हुई रोशनी की वजह से छाया-चित्र सा दिखाई दे रहा था। वे बेतहाशा नीचे दौडे, जैसे एक झोंका आया हो, उन्होंने किसानों को अपनी बाहों में भर लिया और उन्हें गले लगा लिया। जैसे बिजली कड़कती है वैसे ही हुंकारता हुआ जुलूस बडे फाटक से अंदर घुस कर सीढ़ियों पर उमड़ा।

बड़े काफूरी हॉल मे त्से-ई-काह, और उसके साथ समूची पेत्रोग्राद सोवियत तथा एक हजार दर्शक ऐसे उदात्त गंभीर भाव से प्रतीक्षा कर रहे थे, जो इतिहास की महान् जागरण की वेला में ही प्रगट होता है।

जिनोव्येव ने घोषणा की कि किसानों की कांग्रेस के साथ समझौता हो गया है। घोषणा का तालियों की गड़गडाहट से स्वागत किया गया और जब कारिडोर से बैंड की आवाज आई और जुलूस का आगे का हिस्सा अंदर आया, यह गड़गड़ाहट और भी प्रचंड हो उठी। मंच पर सभापतिमंडल के सदस्य उठे और उन्होंने किसानों के सभापतिमंडल के सदस्यों का आलिंगन करते हुए उनके लिए जगह बनाई। उनके पीछे सफेद दीवार पर उस खाली चौखटे के ऊपर, जिसमें जड़ी जार की तसवीर फाड़ डाली गई थी, दोनों झंडे एक दूसरे के साथ आड़े-तिरछे लगा दिये गये...

और तब "विजयपूर्ण अधिवेशन" आरंभ हुआ। स्वागत में स्वेर्दलोव ने दो शब्द कहे और फिर पूरे रूस में सर्वाधिक प्रिय और सर्वाधिक शक्तिशाली महिला, मारीया स्पिरिदोनोवा बोलने के लिए खड़ी हुई—दुबली-पतली, जर्द चेहरा, आंखों पर चश्मा, बाल सीधे-सादे ढंग से संवारे हुए, वजा-क़ता वही, जो न्यू. इंगलैंड की अध्यापिका की होती है। उन्होंने कहा:

"...रूस के मजदूरों के सम्मुख ऐसे क्षितिज उन्मुक्त हुए हैं,

जिनसे इतिहास अभी तक अपरिचित था... अतीत में मजदूरो के सभी आदोलनो की पराजय हुई। परन्तु वर्त्तमान आदोलन अतर्राष्ट्रीय है और इसी लिए वह अपराजेय है। संसार मे ऐसी कोई शक्ति नही है, जो क्राति की ज्योति को बुझा सके। पुराना संसार ढह रहा है और नया ससार बनने लगा है..."

इसके बाद त्रोत्स्की, ओजपूर्ण, आग्नेय: "साथी किसानो, मै आपका स्वागत करता हूं! आप यहा मेहमानो की तरह नही, इस घर के स्वामियो की तरह आते है, जो घर रूसी क्राति का हृत्पिड है। आज इस भवन मे लाखों-लाख श्रमिको का संकल्प केन्द्रीभूत है... आज रूसी भूमि का एक ही स्वामी है—मज़दूरों, सिपाहियो और किसानो का एका..."

उन्होने कटु व्यंग्य और विद्रूप के भाव से मित्र-राष्ट्रो के कूटनीतिज्ञो की चर्चा की, जिन्होंने उस समय तक युद्ध-विराम के लिए रूस के निमत्रण को अवज्ञापूर्वक ठुकरा दिया था, जिसे मध्य यूरोपीय शक्तियो ने स्वीकार कर लिया था।

"यह युद्ध एक नई मानवता को जन्म देगा... इस भवन मे हम सभी देशों के मज़दूरों को वचन देते है कि हम अपने क्रातिकारी मोर्चे को कभी नही छोड़ेगे। अगर हम टूटेगे, तो अपने झडे की रक्षा करते हुए ही टूटेगे..."

त्रोत्स्की के बाद क्रिलेंको ने आकर मोर्चे की परिस्थिति के बारे मे समझाया, जहा दुखोनिन जन-कमिसार परिषद् का मुकाबला करने की तैयारी कर रहे थे। "दुख़ोनिन और उनके साथी यह भली भाति समझ ले कि जो लोग शाति के रास्ते मे रोड़ा अटकाते है, उनके साथ हम नरमी मे पेश आने वाले नही है!"

दिबेंको ने नौसेना की ओर से सभा को अभिवादन जताया और विक्जेल के सदस्य क्रुशीस्की ने कहा, "इस घडी से, जब सभी सच्चे समाजवादियों की एकता संपन्न हो गई है, रेल मजदूरो की समूची सेना अपने को पूर्णतः क्रांतिकारी जनवाद के अधीन करती है!" इसके बाद अश्रुविगलित लुनाचार्स्की बोले, वामपंथी समाजवादी-क्रातिकारियों की ओर से प्रोश्यान बोले और अत मे संयुक्त सामाजिक जनवादी-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों, जिनमे मार्तोव और गोर्की के दलो के सदस्य शामिल थे, की ओर से बोलते हुए सहाराश्वीलि ने कहा:

"हम बोल्शेविकों की कट्टर नीति के कारण त्से-ई-काह से अलग हुए, ताकि हम उन्हें सारे क्रान्तिकारी जनवादी अंशों की एकता को सपन्न करने के हेतु छूट देने के लिए मजबूर कर सकें। अब क्योंकि यह एकता स्थापित हो गई है, इसलिए हम त्से-ई-काह मे फिर अपना स्थान ग्रहण करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते है... हम ज़ोर देकर कहते है कि जो लोग त्से-ई-काह से निकल आये है, उन सबको अब वापिस आ जाना चाहिए।"

किसानो की कांग्रेस के सभापतिमंडल के एक वयोवृद्ध तेजस्वी किसान, स्ताश्कोव ने चारो ओर मुड कर शीश नवाया और फिर कहा, "मैं रूस के नव-जीवन तथा नव-स्वतंत्रता की दीक्षा पर आपका अभिनदन करता हू।"

पोलिश सामाजिक-जनवाद की ओर से ग्रोन्स्की; कारखाना समितियों की ओर से स्क्रिप्निक; सलोनिकी में रूसी सिपाहियो की ओर से त्रीफोनोव; और दूसरे कितने ही लोग, जिनका सिलसिला खत्म होने को नही आ रहा था, भरे दिल मे बोले और खूब बोले, क्योंकि आज उनका मनोरथ पूर्ण हुआ था और उनकी वाणी को नयी स्फूर्ति मिली थी...

रात बहुत काफी गुज़र चुकी थी, जब निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किया गया और सर्वसम्मति से पास किया गया:

"पेत्रोग्राद सोवियत तथा किसानों की कांग्रेस के साथ एक असाधारण अधिवेशन मे सयुक्त त्से-ई-काह, मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की दूसरी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत भूमि तथा शांति-सबंधी आज्ञप्तियों की और मजदूर-नियंत्रण संबधी आज्ञप्ति की भी पुष्टि करती है और अपना यह दृढ विश्वास प्रगट करती है कि मजदूरो, किसानों तथा सैनिकों की एकता, सभी मजदूरो तथा सभी शोषितो की यह बिरादराना एकता उनके द्वारा विजित सत्ता को संहत करेगी और यह कि दूसरे देशों मे मजदूर वर्ग के हाथों में सत्ता के अंतरण को शीघ्रतर सपन्न करने के लिए यह एकताबद्ध शक्ति सभी क्रांतिकारी कदम उठायेगी और यह कि इस प्रकार वह एक न्याय्य शांति तथा समाजवाद की विजय को स्थायी रूप से सपन्न करना सुनिश्चित बनायेगी।"

जॉन रीड
की
टिप्पणियां

जॉन रीड द्वारा संकलित तथा अनूदित सामग्री उनकी पुस्तक का एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिशिष्ट है। इस सामग्री को रूसी मूल पाठ के साथ मिला कर देखा गया है और कहीं कहीं जहां स्पष्टतः अनुवाद की ग़लतियां हैं, सुधार किया गया है। – सं०

पहले अध्याय की टिप्पणियां

१

ओबोरोन्त्सी – "प्रतिरक्षावादी"। सभी "नरम" समाजवादी दलों ने यह नाम अपनाया था, या उन्हें यह नाम दिया गया था, क्योंकि वे इस बिना पर कि यह युद्ध एक राष्ट्रीय रक्षात्मक युद्ध है, मित्र-राष्ट्रों के नेतृत्व में युद्ध को चलाते रहने के लिए सहमत थे। बोल्शेविक, वामपथी समाजवादी-क्रांतिकारी, मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादी (मार्तोव का गुट) और सामाजिक-जनवादी अंतर्राष्ट्रीयतावादी (गोर्की का दल) इस हक में थे कि मित्र-राष्ट्रों को जनवादी युद्ध-उद्देश्यों की घोषणा करने के लिए और इन शर्तों पर जर्मनी से शांति-संधि का प्रस्ताव करने के लिए बाध्य किया जाये।

२

क्रांति से पहले तथा क्रांति के दौरान तनखाहें तथा निर्वाह-खर्च

तनखाहों तथा निर्वाह-खर्च की निम्नलिखित तालिकायें मास्को के वाणिज्य-मंडल तथा श्रम मंत्रालय के मास्को-विभाग की एक संयुक्त समिति

द्वारा अक्तूबर, १६१७ मे तैयार की गई थीं, तथा २६ अक्तूबर, १६१७ को 'नोवाया जीज्न' में प्रकाशित की गई थी:

रोज़ीना

(रूबलों और कोपेकों में)

वृत्ति	जुलाई १६१४	जुलाई १६१६	अगस्त १६१७
बढ़ई, सुतार	१.६०–२.००	४.००–६.००	८.५०
बेलदार	१.३०–१.५०	३.००–३.५०	–
राज, पलस्तर करनेवाला	१.७०–२.३५	४.००–६.००	८.००
रंगसाज, सोफ़ासाज	१.८०–२.२०	३.००–५.५०	८.००
लोहार	१.००–२.२५	४.००–५.००	८.५०
चिमनी साफ़ करनेवाला मजदूर	१.५०–२.००	४.००–५.५०	७.५०
तालासाज	०.६०–२.००	३.५०–६.००	६.००
मददगार	१.००–१.५०	२.५०–४.५०	८.००

मार्च १६१७ की क्रांति के तुरत बाद तनख़ाहों की ज़बरदस्त बढ़ती के बारे मे अनगिनत कहानियों के बावजूद, श्रम मंत्रालय द्वारा पूरे रूस में जीवन-अवस्थाओं के लिए उपलक्षक आंकड़ों के रूप में प्रकाशित किये गये ये आकड़े यह प्रगट करते है कि तनख़ाहें क्राति के बाद एकदम नही बढ़ी, वरन् धीरे-धीरे करके बढ़ी। तनख़ाहों में औसतन ५०० प्रतिशत से किंचित अधिक वृद्धि हुई।

परंतु इसके साथ ही रूबल का मूल्य उसको पहले की क्रयशक्ति के मुक़ाबले एक-तिहाई से भी कम रह गया और ज़िंदगी की जरूरियात का ख़र्च बेतरह बढ़ गया।

दूसरी जरूरियात की क़ीमतें

(रूबलों और कोपेकों में)

	अगस्त १६१४	अगस्त १६१७	प्रतिशत वृद्धि
कैलिको (फी अर्शीन*)	०.११	१ ४०	११७३
सूती कपडा "	०.१५	२.००	१२३३
तैयार कपड़े "	२.००	४०.००	१६००
कैस्टर* कपड़ा "	६.००	८०.००	१२३३
मर्दाना जूता (एक जोडी)	१२.००	१४४.००	१०६७
तल्ले का चमडा (फी अर्शीन)	२०.००	४००.००	१६००
रबर के जूते (एक जोड़ी)	२.५०	१५.००	५००
मर्दाना सूट	४०.००	४००–४५५	६००–११०६
चाय (फी फ़ून्त)	४.५०	१८.००	३००
दियासलाई (एक कार्टन)	०.१०	०.५०	४००
साबुन (फी पूद)	४.५०	४०.००	७८०
पेट्रोल (फी वेद्रो*)	१.७०	११.००	५४७
मोमबत्ती (फी पूद)	८.५०	१००.००	१०७६
कैरेमल (फी फ़ून्त)	०.३०	४.५०	१४००
जलाने की लकड़ी (एक गट्ठा)	१०.००	१२०.००	११००
लकड़ी का कोयला	०.८०	१३.००	१५२५
फुटकर धातु की वस्तुएं	१.००	२०.००	१६००

ऊपर दी गई जरूरियात की मद्दों की कीमतों में औसतन ११०६ प्रतिशत वृद्धि हुई, अर्थात् तनख़ाहों में वृद्धि की दुगुनी से ज्यादा।' कहने की जरूरत नहीं कि क़ीमतों और तनख़ाहों के इस अंतर से सट्टाबाजों और व्यापारियों की जेबें भरीं।

---

*एक अर्शीन ७१.१२ सेंटीमीटर के और एक वेद्रो दस लिटर के बराबर है; कैस्टर–ऊनी कपड़ा है।–सं०

सितंबर, १९१७ मे, जब मैं पेत्रोग्राद पहुचा, एक कुशल औद्योगिक मजदूर की औसत रोजाना तनख़ाह – उदाहरण के लिए पुतीलोव कारख़ाने के एक इस्पात मज़दूर की तनखाह – लगभग ८ रूबल थी। इसके साथ ही मुनाफे ख़ूब बढ़े हुए थे... पेत्रोग्राद के उपनगर में स्थित एक अंग्रेजी कारख़ाने, थार्नटन ऊनी मिल के एक मालिक ने मुझे बताया कि उनके कारख़ाने में जहा तनख़ाहे ३०० प्रतिशत बढ़ी हैं, वही मुनाफ़े ९००प्रतिशत तक बढ गये हैं।

३

समाजवादी मंत्री

जुलाई की अस्थायी सरकार मे समाजवादियो द्वारा पूजीवादी मन्त्रियों के साथ मिल कर अपने कार्यक्रम को पूरा करने की कोशिशों का इतिहास राजनीति में वर्ग-संघर्ष का एक ज्वलत उदाहरण हे। इस विचित्र व्यापार की व्याख्या करते हुए लेनिन कहते हैं :

"पूजीवादियों ने.. यह देखते हुए कि सरकार की स्थिति ऐसी थी कि वह चल नही सकती थी, एक ऐसी प्रणाली का आश्रय लिया, जो सन् १८४८ से दशाब्दियो तक पूजीपतियो द्वारा मज़दूर वर्ग को चक्कर में डालने, उसमे फूट डालने और अन्ततः उसे बेबस करने के लिये इस्तेमाल की जाती रही है। यह प्रणाली पूजीवादियों तथा समाजवादी ख़ेमे के भगोड़ों को लेकर बनाई गई तथाकथित संयुक्त मंत्रिमंडल है।

"उन देशों में, जहां मजदूरों के क्रांतिकारी आंदोलन के साथ ही साथ राजनीतिक स्वतंत्रता तथा जनवाद का अस्तित्व रहा है – उदाहरण के लिये, इंगलैंड और फ़ास मे – पूजीपतियों ने इस तिकड़म का इस्तेमाल किया है और बड़ी कामयाबी के साथ किया है। मन्त्रिमंडलों में शामिल होने पर 'समाजवादी' नेता निरपवाद रूप से केवल नामधारी नेता, खिलौनें, पूजीपतियो के लिए बस एक आड, मज़दूरों को चकमा देने के लिए एक साधन भर सिद्ध होते है। रूस के 'जनवादी तथा जनतंत्रीय' पूजीपतियों ने इसी तिकड़म को चालू किया। समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मेन्शेविक इस

तिकड़म के शिकार हो गये और छः मई को चेर्नोव, त्सेरेतेली, स्कोबेलेव, अव्क्सेन्त्येव, साविन्कोव, जारुद्नी और निकीतिन* की शिरकत में एक 'संयुक्त' मंत्रिमंडल एक निष्पन्न वास्तविकता बन गया..."

४

मास्को में सितंबर के नगरपालिका-चुनाव

नीचे चुनाव-परिणामों की जो तुलनात्मक तालिका दी जाती है, उसे अक्तूबर, १९१७ के पहले सप्ताह में 'नोवाया जीज्न' ने इस टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया था कि इन परिणामों का अर्थ यह है कि मिल्की वर्गों के साथ संश्रय स्थापित करने की नीति एक दिवालिया नीति है। "यदि गृहयुद्ध से अभी भी बचा जा सकता है, तो ऐसा सभी क्रांतिकारी जनवादी अंशकों के एक संयुक्त मोर्चे द्वारा ही किया जा सकता है..."

मास्को की केंद्रीय दूमा तथा वार्ड दूमाओं के चुनाव

	जून, १९१७	सितंबर, १९१७
समाजवादी-क्रांतिकारी	५८ सदस्य	१४ सदस्य
कैडेट	१७ "	३० "
मेन्शेविक	१२ "	४ "
बोल्शेविक	११ "	४७ "

५

प्रतिक्रियावादियों की बढ़ती हुई उद्धतता और हेकड़ी

१८ सितंबर। कीयेव नगर के एक समाचारपत्र में लिखते हुए कैडेट शुलगीन ने कहा कि अस्थायी सरकार ने यह घोषणा कर कि रूस एक जनतंत्रीय देश है अपने अधिकारों का घोर दुरुपयोग किया है। "हम न तो

---

*मूल रूसी पाठ में केवल चेर्नोव और त्सेरेतेली के नाम हैं। — सं०

जनतंत्र को स्वीकार कर सकते है और न मौजूदा जनतंत्रीय सरकार को... और हमें इस बात का निश्चय नही है कि हम रूस मे जनतंत्र चाहते हैं..."

२३ अक्तूबर। रियाजान नगर मे हुई कैडेट पार्टी की एक सभा में म० दुखोनिन ने घोषणा की: "हमें जरूर पहली मार्च को वैधानिक राजतंत्र की स्थापना करनी चाहिए। हमें राज्य सिंहासन के न्यायसम्मत उत्तराधिकारी मिखाईल अलेक्सान्द्रोविच को हरगिज ठुकराना नही चाहिये..."

२७ अक्तूबर। मास्को मे व्यापारियो के सम्मेलन मे स्वीकृत प्रस्ताव*:

"सम्मेलन... का आग्रह है कि अस्थायी सरकार सेना मे अविलंब निम्नलिखित कदम उठाये:

"१. समस्त राजनीतिक प्रचार पर रोक लगाई जाये; यह जरूरी है कि सेना राजनीति से अलग रहे।

"२. राष्ट्र-विरोधी तथा अंतर्राष्ट्रीय विचारों और सिद्धांतों के प्रचार मे सेना की आवश्यकता से इनकार किया जाता है और उससे अनुशासन को क्षति पहुचती है। इसलिए ऐसे प्रचार की मनाही होनी चाहिये और सभी प्रचारकों को दंड देना चाहिये...

"३. सैनिक समितियों का काम अनिवार्यतः एकमात्र आर्थिक प्रश्नों तक सीमित रखना चाहिये। उनके सभी निर्णयों की पुष्टि उनके ऊपर के अधिकारियो द्वारा होनी चाहिये, जिन्हें किसी भी समय इन समितियों को भंग करने का अधिकार प्राप्त है...

"४. सलामी की प्रथा पुन:स्थापित की जाये और उसे अनिवार्य बना दिया जाये। सजाओ की नजरसानी के अधिकार के साथ पूरे अनुशासनिक अधिकार फिर से अफ़सरों को दिये जायें।

"५. अफ़सर कोर से उन सभी लोगों को बर्खास्त किया जाये, जो आम सिपाहियों के आदोलन में, जिससे उन्हे सरकशी की ही तालीम मिलती है, भाग लेकर कोर को लाछित करते है... इस प्रयोजन के लिए प्रतिष्ठा न्यायालयों को पुन:स्थापित किया जाये...

---

*नीचे जो सूत्र दिये गये हैं, उन्हे रीड ने अत्यंत सक्षिप्त रूप मे तथा अनुवाद की अशुद्धियों के साथ प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त, तथ्य यह है कि यह प्रस्ताव व्यापारियों के एक सम्मेलन द्वारा नही, सार्वजनिक कार्यकर्ताओ के एक सम्मेलन द्वारा स्वीकृत किया गया था।—सं०

"६. ग्रस्थायी सरकार को सेना में उन जनरलों तथा दूसरे ग्रफसरों की बहाली को मुमकिन बनाने के लिए जरूरी कार्रवाइयां करनी चाहिए, जिन्हें समितियों तथा दूसरे गैरज़िम्मेदार संगठनों के ग्रसर से ग्रन्यायपूर्ण रूप से बर्खास्त कर दिया गया है..."

दूसरे ग्रध्याय की टिप्पणियां

१

कोर्नीलोव के विद्रोह का मेरी ग्रगली पुस्तक 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' में विशद वर्णन किया गया है। कोर्नीलोव की कोशिश जिस परिस्थिति का परिणाम थी, उसके लिए केरेन्स्की की ज़िम्मेदारी ग्रब काफ़ी स्पष्ट रूप से निश्चित हो चुकी है। केरेन्स्की के ग्रनेक पक्षपोषक कहते हैं कि वह कोर्नीलोव की योजनाग्रों के बारे में जानते थे, ग्रौर उन्होंने कुछ ऐसी चाल चली कि कोर्नीलोव ग्रसमय ही मैदान में उतर ग्राये ग्रौर पिट गये। श्री ए० जी० सैक तक ने ग्रपनी पुस्तक, 'रूसी जनवाद का जन्म' में कहा है:

"कई बातें... प्रायः निश्चित हैं। पहली बात तो यह है कि केरेन्स्की को मालूम था कि कई दस्ते मोर्चे से पेत्रोग्राद की ग्रोर ग्रा रहे हैं, ग्रौर यह संभव है कि प्रधान मंत्री तथा युद्ध-मंत्री की हैसियत से उन्होंने बढ़ते हुए बोल्शेविक ख़तरे को समझते हुए इन दस्तों को बुलाया हो..."

इस तर्क में एक ही दोष है, वह यह कि उस समय कोई "बोल्शेविक ख़तरा" नहीं था, क्योंकि सोवियतों के ग्रंदर वे ग्रभी भी निःसहाय ग्रल्पमत की स्थिति में थे ग्रौर उनके नेता जेलों में थे या फ़रार थे।

२

जनवादी सम्मेलन

जब जनवादी सम्मेलन का प्रस्ताव पहले पहल केरेन्स्की से किया गया, उन्होंने सुझाव दिया कि बैंकरों, कारख़ानेदारों, ज़मींदारों तथा कैडेट पार्टी के प्रतिनिधियों समेत राष्ट्र के सभी ग्रंशकों की—उनके शब्दों में,

"जीवंत शक्तियों" की—सभा बुलायी जाये। सोवियत ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया और सम्मेलन में प्रतिनिधित्व की निम्नलिखित तालिका तैयार की, जिसे केरेन्स्की ने मान लिया:

१०० प्रतिनिधि—मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतें
१०० —किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतें
५० —मजदूरों तथा सैनिकों की प्रांतीय सोवियतें
५० —किसानों की भूमि समितियां
१०० —ट्रेड-यूनियनें
८४ —मोर्चे की सैनिक समितियां
१५० —मजदूरों तथा किसानों की सहकारी समितियां
२० —रेल मजदूर यूनियन
१० —डाक-तार मजदूर यूनियन
२० —वाणिज्य-कार्यालयों के क्लर्क
१५ —उदार पेशों के लोग—डाक्टर, वकील, पत्रकार इत्यादि
५० —प्रांतीय ज़ेम्सत्वो
५६ —राष्ट्रीय संगठन—पोल, उक्रइनी इत्यादि

यह अनुपात दो-तीन बार बदला गया। अंत में प्रतिनिधियों को निम्नलिखित रूप से बांटा गया:

३०० प्रतिनिधि—मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतें
३०० —सहकारी समितियां
३०० —नगरपालिकायें
१५० —मोर्चे की सैनिक समितियां
१५० —प्रांतीय ज़ेम्सत्वो
२०० —ट्रेड-यूनियनें
१०० —राष्ट्रीय संगठन
२०० —अनेक छोटे छोटे दल

३

सोवियतों का काम खत्म हो गया है

२८ सितंबर, १९१७ को त्से-ई-काह् के मुख पत्र 'इज़्वेस्तिया' ने एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें पिछले अस्थायी मंत्रिमंडल का ज़िक्र करते हुए कहा गया था:

"अन्ततोगत्वा एक सच्ची जनवादी सरकार को, जिसे रूसी जनता के सभी वर्गों के संकल्प ने जन्म दिया है, भावी संसदीय शासन-प्रणाली के पहले ढांचे को क़ायम किया गया है। हमारे आगे संविधान सभा है, जो बुनियादी कानूनों से संबंधित सभी प्रश्नों को हल करेगी, जो क़ानून मूलतः जनवादी होंगे। सोवियतों का काम ख़त्म हो गया है, और वह वक़्त नज़दीक आ रहा है, जब शेष क्रांतिकारी मशीनरी के साथ उन्हें एक स्वतंत्र तथा विजयी जनता के रंगमंच से प्रस्थान करना होगा, जिसके अस्त्र अब से राजनीतिक क्रिया के शांतिपूर्ण साधन होंगे।"

२५ अक्तूबर को 'इज़्वेस्तिया' के संपादकीय लेख का शीर्षक था: 'सोवियत संगठनों में संकट'। लेख के आरंभ में कहा गया था कि सफ़र से लौटे लोगों का कहना है कि स्थानीय सोवियतों की सरगर्मियां सर्वत्र कम हो रही हैं। "यह स्वाभाविक ही है," लेखक ने कहा। "कारण, जनता अधिक स्थायी विधानांगों में—नगर दूमाओं तथा ज़ेम्स्त्वोओं में—दिलचस्पी लेने लगी है...

"पेत्रोग्राद तथा मास्को के महत्वपूर्ण केंद्रों में, जहां सोवियतें सब से अच्छी तरह संगठित हैं, उन्होंने सभी जनवादी अंशकों को अपने अंदर शामिल नहीं किया... अधिकांश बुद्धिजीवियों और अनेक मजदूरों ने भी उनमें भाग नहीं लिया—कुछ मजदूरों ने इसलिए भाग नहीं लिया कि वे राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं और कुछ ने इसलिए कि उनके लिए उनकी अपनी यूनियनें ही आकर्षण का केंद्र हैं... हम इस बात से

इनकार नही कर सकते कि ये संगठन जन-साधारण के साथ दृढ़ रूप से एकजुट है और उनकी रोजमर्रा की जरूरतों को बेहतर तरीके से पूरा करते हैं...

"यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात है कि स्थानीय जनवादी प्रशासन प्रबल रूप मे संगठित किये जा रहे हैं। नगर दूमायें सार्विक मतदान द्वारा चुनी जाती है और विशुद्ध स्थानीय मामलों में उन्हें सोवियतों से अधिक अधिकार प्राप्त है। एक भी जनवादी यह नही कहेगा कि इसमें कुछ भी अनुचित है...

"... नगरपालिकाओं के चुनाव सोवियतों के चुनावों से बेहतर और अधिक जनवादी रूप से सपन्न किये जा रहे हैं... नगरपालिकाओं मे सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व प्राप्त है... और जैसे ही स्थानीय स्वशासन ने नगरपालिकाओं में जीवन का संगठन करना शुरू किया, स्थानीय सोवियतों की भूमिका स्वाभावतः समाप्त हो जायेगी...

"...सोवियतों में दिलचस्पी कम होने के दो कारण हैं। हम कह सकते हैं कि पहला कारण जन-साधारण मे राजनीतिक दिलचस्पी का कम होना है; नये रूस के निर्माण का संगठन करने के लिए प्रातीय तथा स्थानीय प्रशासन निकायों की बढ़ती हुई कोशिशें दूसरा कारण है... इस दूसरी दिशा में प्रवृत्ति जितना ही ज़ोर पकड़ती है, उतनी ही जल्दी सोवियतो का महत्व समाप्त हो जाता है...

"खुद हमारे लिए कहा जा रहा है कि हम अपने ही संगठन के 'ताबूतबरदार' हैं। वास्तव में हम खुद नये रूस के निर्माण में सबसे अधिक परिश्रम करनेवाले कार्यकर्ता हैं...

"जब निरंकुश शासन तथा समूचा नौकरशाही निज़ाम ध्वस्त हुआ, हमने अस्थायी बारिकों के रूप मे सोवियतो की स्थापना की, जहा समस्त जनवाद पनाह ले सकता था। परंतु अब हम बारिकों की जगह एक नयी व्यवस्था के स्थायी भवन का निर्माण कर रहे है और जनता स्वाभावतः धीरे धीरे बारिकों को छोड़ कर अधिक सुविधापूर्ण आवास को ग्रहण करती रही है।"

रूसी जनतंत्र की परिषद् में त्रोत्स्की का भाषण*

"त्से-ई-काह् द्वारा बुलाये गये जनवादी सम्मेलन का उद्देश्य अनुत्तरदायी, वैयक्तिक प्रकार के शासन को, जिसने कोर्नीलोव को जन्म दिया, समाप्त करना और एक उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना था, जो युद्ध का अंत करने मे समर्थ होगी और नियत समय पर संविधान सभा का बुलाया जाना सुनिश्चित बनायेगी। इस बीच, जनवादी सम्मेलन के पीठ पीछे, धोखा और फरेब के जरिए, नागरिक केरेन्स्की, कैडेटों तथा मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टियों के नेताओं के बीच सौदेबाजी के जरिए, हमें आधिकारिक रूप से घोषित उद्देश्य से उल्टे ही परिणाम प्राप्त हुए। एक ऐसी सत्ता की स्थापना की गयी, जिसके गिर्द और जिसके अंदर कोर्नीलोव जैसे आदमी प्रत्यक्ष अथवा प्रच्छन्न रूप से नेतृत्वकारी भूमिका अदा कर रहे हैं। जब यह घोषणा की जाती है कि रूसी जनतंत्र की परिषद् परामर्शदात्री सभा होगी, तब इसका अर्थ यह है कि सरकार के अनुत्तरदायित्व की आधिकारिक रूप से घोषणा की जाती है। क्रांति के आठवें महीने मे यह अनुत्तरदायी सरकार बुलीगिन दूमा के इस नये संस्करण के रूप मे अपने लिए एक नयी आड़ तैयार करती है।

"मिल्की वर्गों के लोग इस अस्थायी परिषद् मे जिस अनुपात में शामिल हुए हैं, उसमे, देशव्यापी चुनावो को देखते हुए, साफ पता चलता है कि उनमें बहुतों को यहा होने का बिल्कुल कोई हक नही है। इसके बावजूद कैडेट पार्टी ने, जो कल तक चाहती थी कि अस्थायी सरकार राजकीय दूमा के प्रति उत्तरदायी हो, इसी कैडेट पार्टी ने सरकार को जनतंत्र की परिषद् से स्वतंत्र बना दिया। इसमे सदेह नहीं कि संविधान सभा

---

*यह त्रोत्स्की का भाषण नही, बल्कि बोल्शेविक दल की एक घोषणा है, जिसे त्रोत्स्की ने जनतन्त्र की परिषद् मे २० अक्तूबर, १९१७ को पढ़ा था। – सं०

मे मिल्की वर्गों की स्थिति उतनी सुविधापूर्ण न होगी, जितनी कि इस परिषद् मे है, और वे सविधान सभा के प्रति अनुत्तरदायी नहीं रह सकेगे।

"यदि मिल्की वर्ग आज से छः हफ़्ते बाद संयोजित होनेवाली सविधान सभा के लिए सचमुच तैयारी करते होते, तो इस समय सरकार के अनुत्तरदायित्व को स्थापित करने का कोई कारण नहीं था। पूरी सचाई यह है कि अस्थायी सरकार की नीतियों का निर्देश करने वाला पूंजीपति वर्ग सविधान सभा को छिन्न-भिन्न करने का उद्देश्य रखता है। इस समय मिल्की वर्गो का, जो हमारी समूची राष्ट्रीय नीति को, चाहे वह विदेश नीति हो या गृह नीति, नियंत्रित करते है, यही मुख्य उद्देश्य है। उद्योग, कृषि तथा सभरण के क्षेत्र में, सरकार के साथ मिलकर काम करने वाले मिल्की वर्गो की राजनीति युद्धजनित स्वाभाविक विशृंखलता को और भी बढ़ा रही है। मिल्की वर्ग, जो किसान-विद्रोह भडका रहे है, मिल्की वर्ग, जो गृहयुद्ध भडका रहे हैं, खुल्लमखुल्ला अकाल की विभीषिका के आसरे अपनी नीति चला रहे हैं। वे अकाल और भुखमरी के ज़रिए क्राति को उलट देने और संविधान सभा की संभावना को समाप्त कर देने का इरादा रखते है।

"पूजीपति वर्ग और उसकी सरकार की अंतर्राष्ट्रीय नीति कम अपराधपूर्ण नही है। चालीस महीनों की लड़ाई के बाद राजधानी के लिए साघातिक ख़तरा उत्पन्न हो गया है। इस ख़तरे का मुक़ाबला करने के लिये सरकार को मास्को में स्थानातरित करने की योजना बनायी गयी है। राजधानी को छोड़ देने का विचार पूंजीपति वर्ग के अंदर गुस्सा पैदा नही करता। उल्टे, उसे प्रतिक्रातिकारी षड्यंत्र को अग्रसर करने के लिए आकल्पित सामान्य नीति के स्वाभाविक अंग के रूप में ग्रहण किया जाता है... यह मान लेने के बजाय कि देश का निस्तार शाति संपन्न करने में है, कूटनीतिज्ञों तथा साम्राज्यवादियों की उपेक्षा कर सभी थके-मादे जनों के सामने अविलंब शाति-संधि का विचार खुल्लमखुल्ला रखने तथा इस तरह युद्ध का चलाया जाना असंभव बनाने के बजाय, अस्थायी सरकार, कैडेट प्रतिक्रातिकारियों और मित्र-राष्ट्रों के साम्राज्यवादियों के हुक्म पर इस हत्यारे युद्ध को निर्बुद्धि, निष्प्रयोजन तथा योजनाहीन रूप से लंबा खींचती

जा रही है, और इस प्रकार लाखों सिपाहियों और मल्लाहों को निरर्थक ही मौत के मुह मे डाल रही है तथा पेत्रोग्राद का समर्पण करने और क्राति का ध्वंस करने की तैयारी कर रही है। एक ऐसे वक़्त, जब दूसरों की ग़लतियों और अपराधों के फलस्वरूप दूसरे सिपाहियों और मल्लाहो के साथ बोल्शेविक सिपाही और मल्लाह भी अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं, तथाकथित मुख्य सेनापति (केरेन्स्की) ने बोल्शेविक अख़बारों का दमन जारी रखा है। परिषद् की प्रमुख पार्टिया स्वेच्छा से इन नीतियों को आड़ दे रही हैं।

"हम सामाजिक-जनवादी पार्टी के बोल्शेविक दल के लोग घोषणा करते हैं कि जनता के साथ गद्दारी करने वाली इस सरकार के साथ* हमारा कही भी मेल नही है। सरकार की आड़ मे जनता के ये हत्यारे जो काम कर रहे हैं, उसके साथ हमारा कही भी मेल नही है। हम इस काम पर एक दिन के लिए भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पर्दा डालने से इनकार करते हैं। ऐसे वक़्त, जब विल्हेल्म की सेनाओ ने पेत्रोग्राद को ख़तरे मे डाल दिया है, केरेन्स्की और कोनोवालोव की सरकार पेत्रोग्राद से भागने और मास्को को प्रतिक्राति का गढ़ बनाने की तैयारी कर रही है!

"हम मास्को के मजदूरों और सिपाहियों को चेतावनी देते हैं कि वे चौकन्ने रहें। इस परिषद् का परित्याग करते समय हम पूरे रूस के मजदूरों, किसानों और सिपाहियो की जवामर्दी और दानिशमंदी का भरोसा करते हुए उनसे अपील करते हैं। पेत्रोग्राद ख़तरे मे है! क्राति ख़तरे मे है! सरकार ने इस ख़तरे को बढ़ा दिया है– शासक वर्गों ने उसे और उग्र बना दिया है। इस समय जनता ही स्वयं अपने को और देश को बचा सकती है।

"हम जनता से अपील करते हैं। तत्काल, सच्ची, जनवादी शांति–ज़िदाबाद!. समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ मे! समस्त भूमि जनता के हाथ में! संविधान सभा–ज़िदाबाद!"

---

*यहा जॉन रीड ने ये शब्द छोड़ दिये हैं: "प्रतिक्राति को शह देने वाली इस परिषद् के साथ"।–सं०

स्कोवेलेव को दिया गया "नकाज़"

(सारांश)

(त्से-ई-काह् द्वारा स्वीकृत तथा स्कोवेलेव को पेरिस-सम्मेलन में रूस के क्रांतिकारी जनवाद के प्रतिनिधि के लिए निर्देश के रूप में दिया गया।)

*यह आवश्यक है कि शांति-संधि निम्नलिखित सिद्धांत पर आधारित हो: "संयोजन न किये जायें, हरजाने न लिये जायें, जातियों को आत्म-निर्णय का अधिकार दिया जाये।"

प्रादेशिक समस्यायें

(१) आक्रांत रूस से जर्मन सेनायें हटायी जायें। पोलैंड, लिथुआनिया तथा लाटविया के लिए आत्म-निर्णय का पूर्ण अधिकार।

(२) तुर्की आर्मेनिया के लिए स्वायत्त शासन और बाद में, जैसे ही स्थानीय सरकारें स्थापित होती हैं, पूर्ण आत्म-निर्णय का अधिकार।

(३) एलसस - लारें का प्रश्न सभी विदेशी सेनाओं की वापसी के बाद जनमत-संग्रह द्वारा हल किया जाये।

(४) बेल्जियम की बहाली। एक अंतर्राष्ट्रीय कोष द्वारा क्षतिपूर्ति।

(५) सर्बिया तथा मान्टेनेग्रो की बहाली और उनकी एक अंतर्राष्ट्रीय सहायता कोष द्वारा सहायता। सर्बिया के लिए एड्रियाटिक सागर में निर्गम-मार्ग। बोसनिया और हर्जेगोविना को स्वायत्त अधिकार।

(६) बाल्कन-प्रदेश के वे प्रांत, जिनके बारे में झगड़ा है, अस्थायी काल के लिए स्वायत्त होंगे और बाद में वहां जनमत-संग्रह किया जायेगा।

---

*यहां जॉन रीड ने ये शब्द छोड़ दिये हैं: "यह आवश्यक है कि, जहां तक युद्ध के उद्देश्यों का सम्बन्ध है, नयी संधि को सार्वजनिक रूप से घोषित किया जाये।" – सं०

(७) रूमानिया की वहाली, लेकिन वह दोब्रुजा को पूर्ण आत्म-निर्णय का अधिकार देने के लिए बाध्य होगा... रूमानिया को बर्लिन संधि की उन धाराओं का, जिनका संबंध यहूदियों से है, पालन करने के लिए और उन्हे पूर्णाधिकार प्राप्त रूमानियाई नागरिक मानने के लिए बाध्य करना होगा।

(८) आस्ट्रिया के इतालवी क्षेत्रों मे अस्थायी काल के लिए स्वायत्त शासन, पश्चात् राज्य की स्थिति को निश्चित करने के लिए जनमत-संग्रह।

(९) जर्मन उपनिवेश लौटाने जाये।

(१०) यूनान तथा फारस की वहाली।

नौचालन-स्वतन्त्रता

जिन जल-संधियो की निकासी अंतर्देशीय समुद्रो मे है, उनका तथा स्वेज और पनामा नहरों का तटस्थीकरण। वाणिज्य-नौचालन निर्बाध होगा। निजी युद्धपोतो के उपयोग का अधिकार रद्द किया जायेगा। वाणिज्य-पोतों पर तारपीडो चलाने की मनाही की जायेगी।

हरजाने

सभी योधी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार के हरजाने की, जैसे उदाहरण के लिए, कैदियों के निर्वाह के लिए खर्च की, मांगो का परित्याग करेगें। युद्ध-काल मे जो हरजाने या जंगी महसूल वसूल किये गये है, वे अनिवार्यतः लौटाये जायेगें।

आर्थिक शर्तें

वाणिज्य-संधियां शांति की शर्तों के अंग नही होंगी। यह आवश्यक है कि प्रत्येक देश अपने वाणिज्य-संबंधो के मामलों मे स्वतंत्र रहे, और शांति-संधि द्वारा उसे न कोई आर्थिक संधि करने के लिए विवश किया जाये न रोका जाये। इसके बावजूद शांति-संधि के अंतर्गत सभी राष्ट्रों को यह बंधन स्वीकार करना चाहिए कि वे युद्ध के पश्चात् आर्थिक नाकेबंदी नही करेंगे, न ही पृथक् टैरिफ क़रार करेंगे। यह आवश्यक है कि परममित्र राष्ट्र-अधिकार बिना किसी भेदभाव के सभी देशों को दिया जाये।

शांति की गारंटियां

शांति-सम्मेलन में प्रत्येक देश की राष्ट्रीय प्रतिनिधि-संस्थाओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि शांति-संधि संपन्न करेंगे। शांति-संधि की शर्तें संसदों द्वारा अनुसमर्थित की जायेंगी।

गुप्त कूटनीति का अंत किया जायेगा; सभी पक्ष इसके लिए वचनबद्ध होंगे कि वे कोई भी गुप्त संधि संपन्न नहीं करेंगे। ऐसी संधियां अंतर्राष्ट्रीय कानून के खिलाफ और लिहाज़ा बातिल घोषित की जाती हैं। सभी संधियां, जब तक कि विभिन्न राष्ट्रों के संसद उनका अनुसमर्थन न कर लें, बातिल समझी जायेंगी।

भूमि तथा समुद्र दोनों पर क्रमिक निरस्त्रीकरण तथा एक मिलिशिया-व्यवस्था की स्थापना। प्रेजिडेंट विलसन ने जिस "राष्ट्र-संघ" (लीग आफ नेशन्स) का सुझाव दिया है, वह अंतर्राष्ट्रीय कानून का एक महत्त्वपूर्ण साधन हो सकता है, बशर्ते कि (क) उसमें सभी राष्ट्रों का समान अधिकारों के साथ भाग लेना अनिवार्य हो, और (ख) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को जनवादी रूप दिया जाये।

शांति के मार्ग

मित्र-राष्ट्र अविलंब घोषणा करें कि वे, जैसे ही शत्रु-शक्तियां समस्त बलात् संयोजनों का परित्याग करने के लिए अपनी सहमति प्रगट करें, शांति-वार्ता आरंभ करने के लिए प्रस्तुत हैं।

यह आवश्यक है कि मित्र-राष्ट्र यह इकरार करें कि वे एक आम शांति-सम्मेलन, जिसमें सभी तटस्थ देशों के प्रतिनिधि शामिल होंगे, से बाहर न कोई शांति-वार्ता करेंगे, न शांति-संधि संपन्न करेंगे।

स्टाकहोम समाजवादी सम्मेलन के रास्ते से सभी अड़चनें दूर कर दी जायेंगी, और जो पार्टियां या संगठन उसमें भाग लेना चाहते हैं, उनके सभी प्रतिनिधियों को अविलंब पासपोर्ट दिये जायेंगे।

(किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ने भी एक नकाज़ जारी किया, जो उपरोक्त नकाज़ से विशेष भिन्न नहीं है।)

६

रूस को बलि चढ़ा कर शांति

आस्ट्रिया द्वारा फ़्रास से शांति का प्रस्ताव किये जाने के बारे मे रिबो* का भंडाफोड़; १६१७ की गर्मियों में वर्न, स्विट्ज़रलैंड में हुआ तथाकथित "शांति-सम्मेलन", जिसमें सभी युद्धरत देशों के प्रतिनिधियों ने, जो इन सभी देशों के वृहत् वित्तीय स्वार्थों का प्रतिनिधित्व करते थे, भाग लिया था; और एक अंग्रेज प्रणिधि द्वारा बुल्गारियाई चर्च के एक उच्च पदाधिकारी के साथ वार्ता का प्रयत्न—ये सब बाते इस तथ्य की ओर निर्देश करती थी कि दोनों ओर रूस को बलि चढ़ा कर शांति संपन्न करने के पक्ष में प्रबल प्रवृत्ति थी। मैं अपनी अगली पुस्तक 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' में इस मामले की तफ़सील से चर्चा करने और पेत्रोग्राद मे विदेश मंत्रालय मे पायी जानेवाली कई गुप्त दस्तावेज़ों को प्रकाशित करने का इरादा रखता हूं।

७

फ़्रांस में रूसी सिपाही

अस्थायी सरकार की आधिकारिक रिपोर्ट**

"जिस समय रूसी क्रांति की ख़बर पेरिस पहुंची, उसी समय से अत्यंत उग्र प्रवृत्ति रखने वाले रूसी अख़बार वहां से निकलने लगे, और आम सिपाहियों के बीच में ये अख़बार बेरोकटोक बंटने लगे और कितने ही आदमी

---

*अलेक्सान्द्र फ़ेलिक्स जोज़ेफ़ रिबो फ़्रांस के एक राजनीतिक नेता थे, जो १६१७ मे फ़्रांस के प्रधान मंत्री बने।—सं०

**जॉन रीड ने अपने अनुवाद मे मूल रिपोर्ट को किंचित् संक्षिप्त तथा परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया है।—सं०

उनके बीच आजादी से घूमने-फिरने लगे, बोल्शेविक प्रचार करने लगे और अवसर फ़्रांसीसी पत्रिकाओं में छपनेवाली झूठी ख़बरें फैलाने लगे। आधिकारिक समाचारों के और यथातथ्य विवरण के अभाव में इस प्रचार-आंदोलन ने सिपाहियों के बीच असंतोष भडका दिया। फलतः वे रूस लौटने की इच्छा करने लगे और अपने अफसरों को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

"अन्ततः इस असंतोष ने विद्रोह का रूप ले लिया। अपनी एक मीटिंग में सिपाहियों ने क़वायद करने से इनकार कर देने के लिए अपील जारी की, क्योंकि उन्होंने यह फैसला कर लिया था कि अब वे लड़ेंगे नहीं। सरकश सिपाहियों को दूसरे सिपाहियों से अलहदा करने का फैसला किया गया और जनरल ज़ान्केविच ने अस्थायी सरकार के प्रति वफ़ादार सभी सिपाहियों को हुक्म दिया कि वे कुर्तीन के शिविर को छोड़ दें और अपने साथ सारा गोला-बारूद लेते जायें। २५ जून को इस हुक्म की तामील की गयी। शिविर में वे ही सिपाही रह गये, जिन्होंने कहा कि वे "कुछ शर्तों पर" ही अस्थायी सरकार की अधीनता स्वीकार कर सकते हैं। शिविर के सिपाहियों से मिलने के लिए कई बार विदेशों में रूसी सेनाओं के मुख्य सेनापति, युद्ध-मन्त्रालय के कमिसार राप, और उन पर अपना प्रभाव डालने के लिए इच्छुक अनेक जाने-माने भूतपूर्व उत्प्रवासी वहां आये, लेकिन ये कोशिशें बेकार गयीं, और अंत में कमिसार राप ने आग्रह किया कि विद्रोही सैनिक अपने हथियार रख दें और अपनी अधीनता प्रगट करने के लिए क्लोरावो नामक स्थान में सुव्यवस्थित रूप में मार्च करें। इस आज्ञा का केवल आंशिक रूप से पालन किया गया; सबसे पहले ५०० सिपाही निकले, जिनमे २२ को गिरफ़्तार कर लिया गया। चौबीस घंटे बाद करीब ६००० सिपाहियों ने उनका अनुगमन किया... क़रीब २००० रह गये...

"शिकंजा और कसने का फ़ैसला किया गया; विद्रोहियों के राशन घटा दिये गये, उनकी तनख़ाहें रोक ली गयीं और अक्कुर्तीन शहर जानेवाली सड़कों पर फ़्रांसीसी सिपाहियों का पहरा बैठा दिया गया। जनरल ज़ान्केविच को जब यह मालूम हुआ कि एक रूसी तोपखाना ब्रिगेड फ़्रांस से गुजर रहा है, उन्होंने फैसला किया कि विद्रोहियों को काबू में लाने के लिए पैदल सैनिकों तथा तोपख़ाने की एक मिली-जुली टुकड़ी कायम की जाये। विद्रोहियों के पास एक शिष्टमंडल भेजा गया, जो चंद घंटे बाद यह विश्वास लेकर

लौट ग्राया कि उनसे बातचीत करना फ़जूल है। १ सितंबर को जनरल जान्केविच ने विद्रोहियों को ग्रल्टीमेटम देते हुए माग की कि वे ग्रपने हथियार डाल दें, ग्रौर उन्हें धमकी दी कि ग्रगर उन्होंने ३ सितंबर को दस बजे तक इस हुक्म की तामील नही की, तो उन पर तोपख़ाने द्वारा गोलाबारी शुरू कर दी जायेगी।

"इस हुक्म की तामील नही हुई, लिहाज़ा नियत समय पर उस स्थान पर हल्की गोलाबारी शुरू की गयी। ग्रठारह गोले दाग़े गये ग्रौर विद्रोहियों को चेतावनी दी गयी कि गोलाबारी तेज़तर कर दी जायेगी। ३ सितंबर की रात को १६० सिपाहियों ने हथियार डाल दिये। ४ सितंबर को गोलाबारी फिर शुरू की गयी ग्रौर ३६ गोले दाग़े जाने के बाद ११ बजे विद्रोहियों ने दो सफ़ेद झंडियां दिखायी ग्रौर निहत्थे शिविर से बाहर निकलने लगे। शाम होते होते ८३०० सिपाहियों ने समर्पण कर दिया। उस रात १५० सिपाहियों ने, जो शिविर में रह गये थे, मशीनगनो से गोलिया चलानी शुरू की। ५ सितंबर को मामले को ख़त्म करने की गरज से शिविर पर भारी गोलाबारी की गयी ग्रौर हमारे सिपाहियो ने इंच-इच करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। विद्रोही सैनिक ग्रपनी मशीनगनो से धुग्राधार गोलिया चलाते रहे। ६ सितंबर को ६ बजे शिविर पर पूरी तरह क़ब्ज़ा कर लिया गया... विद्रोहियों को निहत्था करने के बाद ८१ गिरफ़्तारियां की गयी..."

यह तो थी रिपोर्ट। परंतु विदेश मत्रालय में मिली गुप्त दस्तावेज़ों से हम जानते है कि यह वर्णन सर्वथा सही नही है। सबसे पहले गड़बड़ी तब शुरु हुई, जब सिपाहियों ने ग्रपनी समितिया बनाने की कोशिश की– जैसा कि रूस मे उनके साथी कर रहे थे। उन्होंने माग की कि उन्हे वापिस रूस भेजा जाये। इस माग को ठुकरा दिया गया। ग्रौर फिर फ़ास मे उनके ग्रसर को ख़तरनाक समझ कर उन्हे सलोनिकी जाने का हुक्म दिया गया। उन्होंने वहा जाने से इनकार किया ग्रौर लड़ाई शुरू हो गयी... पता यह चला कि बग़ावत पर उतारू होने से पहले उन्हे एक शिविर मे बग़ैर ग्रफसरो के दो महीने तक छोड़ दिया गया था ग्रौर उनके साथ बुरा सलूक किया गया था। जिस "रूसी तोपख़ाना ब्रिगेड" ने उसके ऊपर गोलाबारी की थी, उसके नाम का पता चलाने की सारी कोशिशें बेकार हुई; मत्रालय

में जो तार मिले, उनमें यह नतीजा निकाला जा सकता है कि फ़ांसीसी गोपगोले का इस्तेमाल किया गया था...

समर्पण करने के बाद दो सौ से ज्यादा यात्रियों को बड़ी बेदर्दी से बंदूकों का निशाना बनाया गया।

८

तेरेश्चेन्को का भाषण

(सारांश)

"...विदेश नीति के प्रश्न राष्ट्रीय रक्षा के प्रश्नों के साथ घनिष्ठ रूप में जुड़े हुए हैं... और इसलिए यदि आप समझते हैं कि राष्ट्रीय रक्षा के प्रश्नों के बारे में गुप्त अधिवेशन करना आवश्यक है, तो अपनी विदेश नीति के मामले में भी हमें कभी कभी वैसी ही गोपनीयता बरतनी पड़ती है...

"जर्मन कूटनीति जनमत को प्रभावित करने का प्रयास करती है... इसलिए विशाल जनवादी संगठनों के जो नेता एक क्रांतिकारी कांग्रेस के बारे में और अपर शांति-अभियान की अमाध्यता के बारे में उच्च स्वर में बात करते हैं, उनके बयान ख़तरनाक हैं... ये सारे बयान बड़े महगे पड़ते हैं— उनका मोल कितनी ही जिंदगियों से चुकाना पड़ता है...

"मैं राज्य के सम्मान और प्रतिष्ठा के प्रश्नों को उठाये बिना केवल शासकीय तर्क की बात करना चाहता हूं। तर्क की दृष्टि से रूस की विदेश नीति रूस के हितों की सच्ची समझ पर आधारित होनी चाहिए... इन हितों का अर्थ यह है कि यह असंभव है कि हमारा देश अकेला रहे और यह कि इस समय हमारे साथ शक्तियों का (मित्र-राष्ट्रों का) जो संयोजन है, वह संतोषजनक है... समस्त मानवजाति शांति की कामना करती है, परंतु रूस ने कोई भी ऐसी अपमानपूर्ण शांति-संधि की इजाज़त नहीं दे सकता, जो हमारी पितृभूमि के राजकीय हितों का उल्लंघन करती हो!"

भाषणकर्ता ने कहा कि ऐसी शांति-संधि सदियों नही तो लंबे वर्षो तक जरूर ही संसार में जनवादी सिद्धांतों की विजय मे बाधक होगी और अनिवार्यतः नये युद्धों को जन्म देगी।

"मई के दिनों की बात किसी को भूली न होगी, जब हमारे मोर्चे पर ऐसा भाईचारा पैदा हुआ कि उससे सैनिक गतिविधि के ठप हो जाने और इस सहज रूप से लडाई के बंद हो जाने और एक शर्मनाक पृथक् शांति-संधि की दिशा मे देश के जाने का खतरा पैदा हो गया... मोर्चे पर आम सिपाहियों को यह समझाने के लिए कि रूसी राज्य इस तरीके से हरगिज युद्ध को समाप्त और अपने हितों को सुनिश्चित नही कर सकता, कितनी कोशिशें करनी पड़ी..."

उन्होने आगे कहा कि जुलाई के हमले का कैसा जादुई असर हुआ था, उसने विदेशों मे रूसी राजदूतों के शब्दों में कितनी शक्ति भर दी थी और रूस की जीतों से जर्मनी मे कितनी निराशा फैल गयी थी, और फिर रूस की पराजय से मित्र-राष्ट्रों का भ्रम किस प्रकार टूट गया था...

"जहा तक रूसी सरकार का सवाल है, उसने मई के सूत्र, 'न संयोजन किये जायें, न ताजीगे हरजाने लिये जायें' का अविचल भाव से समर्थन किया। हम जातियों के आत्म-निर्णय के अधिकार की ही नही, बल्कि साम्राज्यवादी लक्ष्यों के परित्याग की भी घोषणा करना आवश्यक समझते हैं..."

जर्मनी शांति स्थापित करने की लगातार कोशिश कर रहा है। वहा बस एक ही चीज की चर्चा है—शांति की। जर्मनी को मालूम है कि वह जीत नही सकता।

"मैं उन आलोचनाओं को मानने से इनकार करता हूं, जो सरकार को लक्ष्य करके की जाती है और जिनमें कहा जाता है कि रूस की विदेश-नीति युद्ध के लक्ष्यों को यथेष्ट स्पष्ट रूप से प्रगट नही करती...

"अगर यह सवाल उठाया जाता है कि मित्र-राष्ट्र किन लक्ष्यों का अनुसरण कर रहे हैं, तो सबसे पहले यह पूछना जरूरी है कि मध्य यूरोपीय शक्तियां किन उद्देश्यों के बारे मे एकमत हुई हैं...

"बहुधा यह इच्छा प्रगट की जाती है कि हम उन संधियों के विवरण प्रकाशित करें, जो मित्र-राष्ट्रों को एक सूत्र मे बाधती है, परंतु लोग इस

वात को भूल जाते है कि हम अभी तक यह नही जानते कि मध्य यूरोपीय शक्तिया किन संधियो से बंधी हुई हैं..."

उन्होंने कहा कि जर्मनी प्रत्यक्षतः यह चाहता है कि बीच में अनेक दुर्बल राज्यो को स्थापित करके रूस को पश्चिम से अलहदा कर दे।

"रूस के प्राणमूलक हितों पर प्रहार करने की इस प्रवृत्ति को रोकना होगा...

"क्या रूसी जनवादी अंशक, जिन्होने अपने फरहरे पर राष्ट्रों के अपना फ़ैसला अपने-आप करने के अधिकारो को अंकित किया है, चुपचाप बैठे आस्ट्रिया-हंगरी द्वारा सर्वाधिक सभ्य जनों का उत्पीड़न होते रहने देगे?

"जिन लोगों को यह भय है कि मित्र-राष्ट्र हमारी कठिन परिस्थिति से फायदा उठा कर हमारे ऊपर लड़ाई का हमारे हिस्से से ज्यादा बोझ डाल देने की कोशिश करेगे और हमारी कीमत पर शाति-संधि के प्रश्नों को हल करेगे, वे भयंकर भूल कर रहे हैं... हमारे दुश्मन की निगाह में रूस उसके माल के लिए एक बाज़ार है। लड़ाई ख़त्म होने पर हम बहुत कमजोर हालत मे होगे और जर्मनी का माल हमारी खुली सरहदों से पहुंच कर हमारे बाजारों को इस बुरी तरह पाट देगा कि वरसों के लिए हमारा औद्योगिक विकास सहज ही रुक सकता है। इस संभावना से बचाव के लिए कार्रवाइयां करनी होंगी।

"मै साफ़ साफ़ विना छिपाव-दुराव के कहता हूं: शक्तियों का जो सयोजन हमे मित्र-राष्ट्रों के साथ एकजुट करता है, वह **रूस के हितों के अनुकूल है...** इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि युद्ध तथा शाति के प्रश्नों के वारे मे हमारे विचार मित्र-राष्ट्रों के विचारो के साथ यथासभव स्पष्ट तथा पूर्ण रूप से मेल खाये... किसी भी तरह की गलतफहमी न होने पाये, इस ख़याल से मुझे साफ साफ कहना होगा कि पेरिस-सम्मेलन मे रूस को **एक ही दृष्टिकोण** उपस्थित करना होगा..."

वह स्कोवेलेव को दिये गये नकाज़ के विषय में टीका करना नही चाहते थे, परन्तु उन्होंने स्टाकहोम में सद्यः प्रकाशित डच-स्कैंदिनेवियाई समिति के घोषणापत्र का जिक्र किया, जिसमे लिथुआनिया तथा लाटविया की स्वायत्तता का पक्ष-ग्रहण किया गया था। "परन्तु, यह स्पष्टतः असभव

है," तेरेश्चेन्को ने कहा, "क्योंकि यह आवश्यक है कि रूस के पास बाल्टिक सागर तट पर पूरे साल चालू रहने वाले उन्मुक्त पत्तन हों...

"इस प्रश्न के संबंध में विदेश नीति की समस्यायें आतरिक राजनीति से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है, क्योंकि यदि समस्त वृहत् रूस की एकता की शक्तिशाली भावना का अभाव न होता, तो आप सर्वत्र विभिन्न जनों की केंद्रीय सरकार से पृथक् होने की इच्छा का बारम्बार प्रदर्शन न देखते... इस प्रकार का विलगाव रूस के हितों के प्रतिकूल है और रूसी प्रतिनिधि इसका समर्थन नहीं कर सकते..."

६

ब्रिटिश बेड़ा (वग़ैरह)

रीगा की खाड़ी में समुद्री लड़ाई के वक़्त बोल्शेविकों का ही नहीं, अस्थायी सरकार के मंत्रियों का भी ख़्याल था कि ब्रिटिश बेड़े ने जान-बूझ कर बाल्टिक सागर को छोड़ दिया है और इस प्रकार उस दृष्टिकोण को प्रगट किया है, जो अक्सर सार्वजनिक रूप से ब्रिटिश अख़बारों द्वारा तथा अर्ध-सार्वजनिक रूप से रूस में ब्रिटिश प्रतिनिधियों द्वारा इन शब्दों में व्यक्त किया जाता है, "रूस ख़त्म हो चुका है! रूस के बारे में फ़िक्र करने से कोई फ़ायदा नहीं!"

देखिये केरेन्स्की के साथ मुलाक़ात (टिप्पणी १३)।

जनरल गुर्को ज़ार के तहत रूसी सेनाओं के स्टाफ़-अध्यक्ष थे। वह भ्रष्ट शाही दरबार की एक बड़ी हस्ती थे। क्रांति के पश्चात् वह उन इने-गिने आदमियों में थे, जिन्हें उनकी राजनीतिक तथा वैयक्तिक करतूतों के लिए देशनिकाला दिया गया था। जिस समय रीगा की खाड़ी में रूसी बेड़े की पराजय हुई, उसी समय लंदन में सम्राट जार्ज ने जनरल गुर्को का सार्वजनिक रूप से स्वागत किया, उस आदमी का स्वागत किया जिसे रूस की अस्थायी सरकार जर्मनों का ख़तरनाक हितैषी तथा साथ ही प्रतिक्रियावादी भी समझती थी!

विद्रोह के ख़िलाफ़ अपीलें

मज़दूरों और सिपाहियों के नाम

"साथियो! यमदूती शक्तिया पेत्रोग्राद तथा दूसरे नगरों में **दंगा और फ़साद** कराने की अधिकाधिक कोशिश कर रही है। यमदूती शक्तियों के लिये फ़साद ज़रूरी है, क्योंकि उससे इन्हे क्रातिकारी आदोलन को ख़ून मे डुबो देने का मौक़ा मिलेगा। शाति और सुव्यवस्था स्थापित करने तथा नगरवासियों की रक्षा करने के बहाने वे कोर्नीलोव का आधिपत्य जमाने की आशा करते है, जिसे दबाने मे थोड़े ही दिन पहले क्रातिकारी जनता सफल हुई थी। अगर ये उम्मीदे पूरी होती हैं, तो फिर जनता का बेड़ा ग़र्क़ समझिये! विजयी प्रतिक्राति सोवियतों तथा सैनिक समितियों को मटियामेट करके छोड़ेगी, सविधान सभा को छिन्न-भिन्न कर देगी, भूमि‧ समितियों के हाथों मे भूमि के अतरण को रोक देगी, शीघ्र शाति स्थापित होने के बारे मे जनता की आशाओं पर पानी फेर देगी और सभी जेलों को क्रातिकारी सिपाहियों और मजदूरों से भर देगी।

"खाद्य-संभरण के विसंगठन, युद्ध के जारी रहने तथा जीवन की सामान्य कठिनाइयों के कारण जनता के अप्रबुद्ध भाग में जो गंभीर असंतोष फैला हुआ है, प्रतिक्रातिकारी तथा यमदूत-सभाई अपने हिसाब में उसका भरोसा करते हैं। वे सिपाहियो और मज़दूरों के प्रत्येक प्रदर्शन को दंगे की शक्ल देने की उम्मीद करते हैं, जिससे शातिपूर्ण जनता घबरा जाये और शाति तथा सुव्यवस्था के पुनःस्थापको के चंगुल मे फंस जाये।

"ऐसी स्थिति मे इन दिनों में प्रदर्शन संगठित करने का प्रत्येक प्रयास, चाहे वह प्रशंसनीय से प्रशंसनीय उद्देश्य के लिये क्यों न हो, एक अपराध होगा। सरकार की नीति से असंतुष्ट चेतन मजदूर और सिपाही यदि प्रदर्शनों मे भाग लेते हैं, तो वे सब अपने आपको और क्राति को क्षति ही पहुंचायेंगे।

"इसलिए त्से-ई-काह सभी मज़दूरों का आह्वान करती है कि वे प्रदर्शन करने की अपीलों को अनसुनी कर दें।

"मजदूरो और सिपाहियो! भड़कावे में न आइये! अपने देश के प्रति तथा क्रांति के प्रति अपने कर्तव्य का स्मरण कीजिए! प्रदर्शनों द्वारा, जिनका असफल होना अनिवार्य है, क्रांतिकारी मोर्चे की एकता को छिन्न-भिन्न न कीजिये!"

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की
केंद्रीय कार्यकारिणी समिति (त्से-ई-काह्)

रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी।

खतरा सन्निकट है!

सभी मजदूरों और सिपाहियों के नाम
(पढ़िये और दूसरों को पढ़ने के लिये दीजिये)

"साथी मज़दूरो और सिपाहियो! हमारा देश ख़तरे मे है। इस ख़तरे की वजह से हमारी स्वतंत्रता और हमारी क्राति एक मुश्किल वक़्त से गुज़र रही है। दुश्मन पेत्रोग्राद के दरवाज़े पर खड़ा है। अव्यवस्था घड़ी घड़ी बढ़ती जाती है। पेत्रोग्राद के लिए अनाज मुहैय्या करना अधिकाधिक कठिन होता जा रहा है। छोटे से छोटे से लेकर बड़े से बड़े तक हर आदमी के लिये ज़रूरी है कि वह अपनी कोशिशो को दुगुनी-चौगुनी बढ़ाये और उचित प्रबंध तथा व्यवस्था करने का प्रयत्न करे... हमे अपने देश को बचाना होगा, अपनी आज़ादी को बचाना होगा... सेना के लिए और भी ज्यादा हथियार और रसद-पानी! बड़े-बड़े शहरों के लिये अनाज! देश मे सुव्यवस्था तथा संगठन...

"और इन भयानक नाज़ुक घड़ियों में चुपके-चुपके अफ़वाहे फैल रही है कि कही पर प्रदर्शन की तैयारी की जा रही है, कि कोई सिपाहियों और मजदूरों का आह्वान कर रहा है कि वे क्रातिकारी शाति और सुव्यवस्था को मटियामेट कर दे... बोल्शेविकों का अख़बार 'राबोची पूत' जलती आग मे तेल डाल रहा है। वह अनभिज्ञ, चेतनाहीन लोगो की चापलूसी कर उन्हे ख़ुश करने की कोशिश कर रहा है, मजदूरों और सिपाहियों को ललचा रहा है और उन्हे ढेरो नेमतें देने का वादा कर सरकार

के ख़िलाफ भड़का रहा है... अनजान, सहज ही विश्वास कर लेने वाले लोग तर्क न करके उनकी बातों पर यक़ीन कर लेते हैं... और दूसरी ओर से भी अफ़वाहे आ रही हैं—ये अफवाहे कि यमदूती शक्तियां, जार के साथी-संघाती, जर्मन जासूस खुशी से बाग बाग हो रहे हैं। वे बोल्शेविकों का साथ देने के लिये और उनके साथ मिलकर इन उपद्रवों को और भी भड़का कर उन्हें गृहयुद्ध में वदल देने के लिए तैयार है।

"बोल्शेविक लोग और उनकी झासा-पट्टी मे पड़े हुए अनभिज्ञ सिपाही और मज़दूर ऊलजलूल नारे लगाते हैं: 'सरकार का नाश हो! समस्त सत्ता सोवियतो के हाथ मे!' और ज़ार के यमदूती चाकर तथा विल्हेल्म के जासूस उन्हें शह देंगे और उभाड़ेंगे, 'यहूदियों को मारो! दुकानदारों को पीटो! बाज़ारो को लूटो! दुकानो को उजाड़ो! शराब के गोदामों पर डाका डालो! मारो-काटो, लूटो, जलाओ!'

"और तव एक भयानक उलझाव पैदा होगा, जनता के एक भाग की दूसरे भाग के साथ लड़ाई शुरू होगी। हर चीज और भी गड़बड़ में पड़ जायेगी और शायद राजधानी की सड़को पर एक बार फिर ख़ून वहेगा। और तव—तव फिर क्या होगा?

"तव पेत्रोग्राद का रास्ता विल्हेल्म के लिये खुल जायेगा। तव अनाज का एक दाना पेत्रोग्राद नही पहुंचेगा और बच्चे भूखों मरेंगे। तव मोर्चे पर हमारी सेना बेआसरा हो जायेगी, खाइयों में पड़े हुए हमारे भाई दुश्मन की तोपों के मुंह में डाल दिये जायेंगे। तब दूसरे देशों में रूस की प्रतिष्ठा धूल में मिल जायेगी, हमारी मुद्रा का मूल्य जाता रहेगा, हर चीज इतनी महंगी हो जायेगी कि ज़िंदगी दुश्वार हो उठेगी। तव जिस संविधान सभा की हम इतने दिनों से आशा लगाये है, वह टाल दी जायेगी, उसे समय पर बुलाना असंभव हो जायेगा और तव—क्राति का नाश, हमारी स्वतंत्रता का नाश...

"मजदूरो और सिपाहियो, क्या आप यही चाहते है? नही! अगर आप यह नही चाहते, तो जाइये, ग़द्दारों द्वारा ठगे गए अनभिज्ञ लोगों के पास जाइये और उन्हे पूरी सचाई, जो हमने आपको वताई है, वताइये!

"सभी जान लें कि इन भयानक दिनों में जो भी आदमी आपको सरकार के ख़िलाफ़ सड़कों पर प्रदर्शन करने के लिए पुकारता है, वह या—

तो ज़ार का ख़ुफ़िया गुर्गा है, उकसावेबाज़ है या जनता के शत्रुओं का नासमझ सहायक है, या फिर विल्हेल्म का ज़रख़रीद जासूस है!

"यह आवश्यक है कि हर चेतन मजदूर क्रांतिकारी, हर चेतन किसान, हर क्रांतिकारी सिपाही, वे सभी लोग, जो यह समझते हैं कि सरकार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन अथवा विद्रोह से जनता को कितनी बड़ी क्षति पहुंच सकती है, एकजुट हों और जनता के शत्रुओं को हमारी स्वतंत्रता मटियामेट करने से रोकें।

मेन्शेविक-ओबोरोन्त्सों की पेत्रोग्राद निर्वाचन-समिति

११

लेनिन के 'साथियों के नाम पत्र'

यह एक लेखमाला है, जो अक्तूबर, १९१७ के उत्तरार्द्ध में 'राबोची पूत' में क्रमशः प्रकाशित हुई थी। यहां दो लेखो मे से कुछ उद्धरण दिये जा रहे हैं।.

"जनता के बीच हमारा बहुमत नहीं है; जब तक यह शर्त पूरी न हो, विद्रोह की सफलता की आशा नहीं की जा सकती..."

जो लोग ऐसा कह सकते हैं, वे या तो सत्य को विकृत करते हैं या वे पांडित्य बघारने वाले लोग हैं, जो पहले से यह गारंटी चाहते हैं कि एक छोर से दूसरे छोर तक समूचे देश में बोल्शेविक पार्टी को बिल्कुल ठीक ठीक आधे वोटों से एक वोट ज्यादा मिले...

आख़िरी बात यह है, पर यह कम महत्त्व की बात नहीं है, कि किसानों का विद्रोह वर्तमान काल मे रूसी जीवन का प्रमुख सत्य है... तम्बोव गुबेर्नियां का किसान-आंदोलन भौतिक तथा राजनीतिक, दोनों ही अर्थों मे विद्रोह था, एक ऐसा विद्रोह, जिससे शानदार राजनीतिक नतीजे हासिल हुए हैं, जैसे सबसे पहले यह नतीजा कि किसानों के हाथो में भूमि के अंतरण को मान लिया गया है। यह बात कुछ मतलब रखती है कि 'देलो नरोदा' समेत समाजवादी-क्रांतिकारियों की भीड, जो विद्रोह से घबराये हुए हैं, अब चीख रहे हैं कि भूमि को किसानों के हाथों में अंतरित कर देने की जरूरत है... किसान-विद्रोह का एक दूसरा शानदार राजनीतिक तथा

क्रांतिकारी नतीजा यह है कि तम्बोव गुबेर्नियां के रेलवे स्टेशनों में अनाज की बारबरदारी की जा रही है...

पूंजीवादी अख़बारों को भी, यहा तक कि 'रूस्काया वोल्या' को, इस आशय की सूचना प्रकाशित कर कि तम्बोव गुबेर्नियां के रेलवे स्टेशन गल्ले से पट गये हैं, अन्न की समस्या के ऐसे समाधान (एकमात्र यथार्थ समाधान) के अद्भुत परिणामों को स्वीकार कर लेना पड़ा है... और यह तब हुआ जब... **किसानों ने विद्रोह किया!!**

"हम इतने शक्तिशाली नही है कि सत्ता पर अधिकार स्थापित कर सकें, न ही पूंजीपति वर्ग इतना शक्तिशाली है कि वह संविधान सभा के संयोजन को रोक सके।"

इस तर्क का पहला भाग पहले वाले तर्क की ही एक अन्विति है। जब इस तर्क के प्रतिपादकों की भ्रांति तथा पूंजीपति वर्ग से उनकी दहशत मजदूरों के संबंध में निराशावाद और पूंजीपति वर्ग के संबंध में आशावाद के रूप में व्यक्त होती है, तब न तो वह तर्क अधिक प्रबल होता है न अधिक विश्वासप्रद। यदि युंकर और कज़्ज़ाक कहते है कि वे, जब तक उनके अंदर ख़ून का एक कतरा भी बाकी है, बोल्शेविकों से लड़ेंगे, तब यह बात इस योग्य है कि उस पर पूरा विश्वास किया जाये; परंतु यदि मजदूर और सिपाही सैकड़ों सभाओं में बोल्शेविकों के प्रति अपना पूर्ण विश्वास प्रगट करते हैं और यह ज़ोर देकर कहते हैं कि वे सोवियतों के हाथों में सत्ता के अंतरण का समर्थन करने के लिए तैयार है, तो यह याद दिलाना "समयोचित" समझा जाता है कि वोट देना एक बात है और लड़ना दूसरी!

बेशक अगर आप इस प्रकार तर्क करें, तो आप विद्रोह की संभावना का "खंडन" कर सकते हैं। परंतु, हम पूछ सकते है कि यह "निराशावाद", जिसकी एक विशिष्ट दिशा है और विशिष्ट प्रेरणा, पूंजीपति वर्ग के पक्ष में राजनीतिक मत-परिवर्तन से किस प्रकार भिन्न है?

और कोर्नीलोव काड ने क्या प्रमाणित किया है? उसने यह प्रमाणित कर दिया है कि सोवियतें एक यथार्थ शक्ति है...

यह किस प्रकार प्रमाणित किया जा सकता है कि पूंजीपति वर्ग इतना शक्तिशाली नही है कि वह संविधान सभा के संयोजन को रोक सके?

यदि सोवियतों में इतनी शक्ति नहीं है कि वे पूंजीपति वर्ग का तख़्ता उलट सकें, तो इसका अर्थ यह है कि पूंजीपति वर्ग में इतनी शक्ति है कि वह संविधान सभा के संयोजन को रोक सके, क्योंकि उसे रोकने वाला और है ही कौन! केरेन्स्की और उनकी मंडली के वादों पर विश्वास कर लेना, दुम हिलाने वाली पूर्व-संसद के प्रस्तावों पर विश्वास कर लेना—क्या यह सर्वहारा पार्टी के किसी भी सदस्य तथा क्रांतिकारी के लिए शोभनीय है?

यदि मौजूदा सरकार का तख़्ता उलट नहीं दिया जाता, तो इतनी ही बात नहीं है कि पूंजीपति वर्ग संविधान सभा के संयोजन को रोकने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है, बल्कि वह इसी लक्ष्य को परोक्ष रूप से—पेत्रोग्राद को जर्मनों के हवाले कर, मोर्चे को अरक्षित छोड़कर, तालाबंदी बढ़ाकर तथा खाद्य-संभरण को अस्तव्यस्त कर—सिद्ध कर सकता है...

"यह जरूरी है कि सोवियतें एक ऐसा तमंचा हों, जिसे इस माग के साथ सरकार की ओर सीधा तान दिया गया हो कि संविधान सभा बुलाई जाये और सभी कोर्नीलोवपंथी कुचक्र बंद किये जायें।"

विद्रोह को तिलांजलि देना और "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में हो!", इस नारे को तिलांजलि देना, दोनों एक ही बात है...

सितंबर से ही विद्रोह का प्रश्न पार्टी के अंदर विचाराधीन रहा है...

विद्रोह का परित्याग सोवियतो के हाथ में सत्ता के अंतरण का परित्याग है, उसका अर्थ है रुख़ बदल कर सभी आशाओं और उम्मीदों को उस मेहरबान पूंजीपति वर्ग पर "लगा देना", जिसने संविधान सभा बुलाने का "वचन" दिया है...

एक बार सत्ता सोवियतों के हाथ में आई नहीं कि संविधान सभा तथा उसकी सफलता सुनिश्चित हो जाती है...

विद्रोह के परित्याग का अर्थ है सीधे-सीधे लीबेर और दान जैसे लोगों की ओर चले जाना...

या तो लीबेर और दान जैसे लोगो की ओर चले जाइये और खुल्लमखुल्ला "समस्त सत्ता सोवियतो के हाथ में" के नारे का परित्याग कीजिये, या विद्रोह शुरू कीजिये।

इनके बीच कोई तीसरा रास्ता नहीं है।

"पूंजीपति वर्ग पेत्रोग्राद को जर्मनों के हवाले नहीं कर सकता, हालांकि रोद्ज्यान्को ऐसा करना चाहते है, क्योकि लड़ाई पूंजीपति वर्ग नहीं लड़ता, हमारे बहादुर मल्लाह लड़ते है..."

यह एक निर्विवाद सत्य है कि मोर्चे के सैनिक सदर मुक़ाम में सुधार नही किया गया है, और जिन अफ़सरों के हाथ में कमान है, वे कोर्नीलोवपंथी है।

यदि कोर्नीलोवपंथी (केरेन्स्की के नेतृत्व में, क्योकि वह भी कोर्नीलोवपंथी हैं) पेत्रोग्राद को जर्मनों के हवाले करना चाहते है, तो वे ऐसा दो या तीन तरीकों से कर सकते हैं।

पहले तो यह कि वे कोर्नीलोवपंथी अफसरों की ग़द्दारी के ज़रिए उत्तरी स्थल मोर्चा अरक्षित छोड़ सकते है।

दूसरे, वे जर्मन नौसेना, जो हमसे अधिक शक्तिशाली है, की गतिविधि की स्वतन्त्रता के लिए "सहमत" हो सकते हैं; वे जर्मन साम्राज्यवादियो और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों, दोनो के साथ सहमत हो सकते है। इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि "जो ऐडमिरल रफ़ूचक्कर हो गये है" उन्होने हमारी योजनायें जर्मनों के हवाले कर दी हों।

तीसरे, वे तालाबंदी के ज़रिए और खाद्य-संभरण को अंतर्ध्वस्त कर, हमारी सेना को घोर निराशाजनक तथा असहाय स्थिति में डाल सकते है।

इन तीनों तरीक़ों में से एक की भी असलियत से इनकार नहीं किया जा सकता। तथ्यों द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि रूस की पूंजीवादी-कज़्ज़ाक पार्टी ने इन तीनों दरवाज़ों को खटखटाया है, और हर दरवाज़े को धक्का देकर खोल देना चाहा है।

हमे इस बात का कोई अधिकार नही है कि हम इंतज़ार करते रह जायें और पूंजीवादी वर्ग क्रांति का गला घोंट दे...

रोद्ज्यान्को कारोबारी आदमी है...

दशाब्दियों से रोद्ज्यान्को ने पूजी की नीतियों को यथार्थ रूप से तथा बड़ी वफ़ादारी के साथ चलाया है।

इससे क्या निष्कर्ष निकलता है? निष्कर्ष यह निकलता है कि क्रांति की रक्षा के एकमात्र साधन के रूप में विद्रोह के प्रश्न पर दुविधाग्रस्त होने का अर्थ कायरतावश पूंजीपति वर्ग पर विश्वास कर बैठना है। यह

विश्वास आधा तो लीबेर-दानी, समाजवादी-क्रांतिकारी-मेन्शेविक प्रकार का है और आधा "किसानों की तरह" का मूक अवितर्की विश्वास है, जिसके ख़िलाफ़ बोल्शेविक सबसे ज्यादा लड़ते रहे हैं।

"हम दिन-दिन अधिक शक्तिशाली होते जा रहे हैं। हम संविधान सभा में प्रबल विरोध-पक्ष के रूप में प्रवेश कर सकते हैं; हम सब कुछ दाव पर क्यों लगा दें?.."

यह उस कूपमंडूक का तर्क है, जिसने "पढ़" रखा है कि संविधान सभा बुलाई जा रही है और जो भरोसा करके सबसे अधिक क़ानूनी, सबसे अधिक वावफ़ा, सबसे अधिक संविधानी रास्ते पर चलना चुपचाप स्वीकार कर लेता है।

मगर, अफ़सोस, संविधान सभा के लिए इंतज़ार करते रहने से न तो अकाल का प्रश्न सुलझता है, न पेत्रोग्राद के समर्पण का प्रश्न। भोले-भाले या उलझन में पड़े लोग या वे लोग, जो अपने को भयभीत हो जाने देते हैं, इस "छोटी सी" बात को भूल जाते हैं।

अकाल इंतज़ार करने वाला नहीं है। किसानों की बग़ावत ने इंतज़ार नहीं किया। लड़ाई इंतज़ार नहीं करेगी। रफूचक्कर हो जाने वाले ऐडमिरलों ने इंतज़ार नहीं किया...

और ऐसे अंधे लोग हैं, जो अभी भी इस बात पर अचरज कर रहे हैं कि क्यों भूखे लोग और सिपाही, जिनके साथ जनरलों और ऐडमिरलों ने ग़द्दारी की है, चुनावों के प्रति उदासीन हैं! वाह रे, पंडिताई छाटने वाले!

"अगर कोर्नीलोवपंथियों ने फिर विद्रोह शुरू किया, तो हम उन्हें मज़ा चखायेंगे! लेकिन हम भला ख़तरा क्यों [illegible] नाहक क्यों कूद पड़ें?.."

इतिहास की पु[illegible] ोती, परंतु [illegible] की ओर से मुंह मोड़ लें, प्र[illegible] का ध्यान [illegible] जपते जायें: "कोर्नीलोवपंथी [illegible]," अगर [illegible] क्या ख़ूब [illegible]

सर्वहारा नीति के लिए यह कैसा आधार है?

और मान लीजिये कि कोर्नीलोवपंथी जिस चीज़ का इतज़ार कर रहे हैं वह घटित हो यानी इसके पहले कि वे विद्रोह शुरू करें, रोटी-दंगे हों, मोर्चा टूटे और पेत्रोग्राद का समर्पण किया जाये? तब फिर? तब क्या होगा?

प्रस्ताव यह किया जाता है कि हम सर्वहारा पार्टी की कार्यनीति का, कोर्नीलोवपंथियों द्वारा उनकी एक पुरानी ग़लती के दुहराये जाने की संभावना के आधार पर, निर्माण करें!

जो सत्य बोल्शेविकों ने सैंकड़ों बार प्रदर्शित किया है और जो वे बराबर प्रदर्शित करते रहे हैं, हमारी क्रांति के छः महीनों के इतिहास ने जिस सत्य को प्रमाणित किया है, उसे हम भूल जायें अर्थात् इस बात को भूल जायें कि कोर्नीलोवपंथियों के अधिनायकत्व या सर्वहारा के अधिनायकत्व को छोड़ कर कोई रास्ता, यथार्थतः कोई भी रास्ता न है और न हो सकता है। हम यह भूल जायें, हम इससे दस्तबरदार हो जायें और इंतज़ार करें! किस चीज के लिए इंतज़ार करें? किसी चमत्कार के लिए...

१२

मिल्युकोव की तक़रीर

(सारांश)

"ऐसा लगता है कि हर आदमी यह स्वीकार करता है कि देश की रक्षा हमारा प्रधान कर्तव्य है और यह कि उसे सुनिश्चित बनाने के लिए सेना में अनुशासन और मोर्चे के पीछे सुव्यवस्था होना जरूरी है। इसे उपलब्ध करने के लिए एक ऐसी सत्ता आवश्यक है, जो समझाने-बुझाने ही नहीं, बल-प्रयोग का भी साहस करने में समर्थ हो... हमारी सभी बुराइयों की जड़ विदेश-नीति-संबंधी वह मौलिक यथार्थतः रूसी दृष्टिकोण है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण समझ लिया जाता है।

"महामना लेनिन महामना केरेन्स्की का अनुकरण ही करते हैं, जब वह यह कहते हैं कि रूस उस नये संसार को जन्म देगा, जो बूढ़े पश्चिम को पुनरुज्जीवन प्रदान करेगा और जो जड़सूत्रवादी समाजवाद की पुरानी-धुरानी पताका को फेंक कर उसके स्थान पर भूखे जन-साधारण द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई की नीति को ग्रहण करेगा—और यह मानवता को आगे की ओर धकेलेगा और उसे बलपूर्वक समाजवादी स्वर्ग के द्वार को उन्मुक्त करने के लिए बाध्य करेगा...

"ये लोग ईमानदारी के साथ यह विश्वास करते थे कि रूस के विघटन से पूरी पूंजीवादी शासन-व्यवस्था विघटित हो जायेगी। इस दृष्टिकोण का आधार ग्रहण कर वे युद्ध-काल मे सिपाहियों से बड़े मज़े से यह कह कर कि वे खाइयां छोड़ कर निकल आयें, और बाहरी दुश्मन से लड़ने के बजाय आंतरिक गृहयुद्ध उत्पन्न करके और मालिकों तथा पूंजीपतियों पर हमला करके अनजाने ही ग़द्दारी कर सकें..."

मिल्युकोव की बात काट कर वामपंथियों ने बड़े ग़ुस्से से उनसे पूछा कि किस समाजवादी ने कभी भी इस तरह की कार्रवाई की सलाह दी है...

"मार्तोव का कहना है कि सर्वहारा का क्रांतिकारी दबाव ही साम्राज्यवादी गुटों की दुष्ट इच्छा को लताड़ और जीत सकता है और उन गुटों के अधिनायकत्व को चूर चूर कर सकता है... सरकारों के बीच शस्त्रीकरण की सीमा बांध देने के समझौते द्वारा नहीं, वरन् इन सरकारों को निरस्त्र करने और सैनिक व्यवस्था के आमूल जनवादीकरण द्वारा..."

उन्होंने मार्तोव को बुरी तरह लताड़ा और फिर मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रांतिकारियों पर बरस पड़े, जिनके ख़िलाफ़ उन्होंने वर्ग-संघर्ष चलाने के प्रगट उद्देश्य से मंत्रियों के रूप में सरकार में शामिल होने का इलज़ाम लगाया।

"जर्मनी तथा मित्र-राष्ट्रों के समाजवादी इन आह्वान को खुल्लमखुल्ला हिक़ारत की नज़र से देखते थे, लेकिन उन्होंने फ़ैसला किया कि यह मामला उनका नहीं, रूस का है और उन्होंने हमारे यहां 'सारी दुनिया में आग लगाओ' के कुछ प्रचारक भेज दिये...

"हमारे जनवादियों का फार्मूला बड़ा सीधा-सादा है: विदेश नीति की जरूरत नही है, न ही कूटनीतिक कला की है, अविलंब जनवादी संधि चाहिए और मित्र-राष्ट्रों के सम्मुख यह घोषणा चाहिये, 'हम कुछ नही चाहते, हमे किसी चीज के लिए नही लड़ना है!' और फिर हमारे विपक्षी भी ऐसी ही घोषणा करेगे और इस प्रकार विभिन्न जनों का भाईचारा संपन्न हो जायेगा।"

मिल्युकोव ने जिम्मरवाल्ड घोषणापत्र पर भी चोट की और कहा कि केरेन्स्की तक "उस कमबख्त दस्तावेज के, जिसके लिए आप सदैव अपराधी रहेंगे, असर से बच नही सके।" फिर स्कोबेलेव को अपना निशाना बनाते हुए उन्होने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सभाओं मे, जहा वह अपनी ही सरकार की विदेश नीति से सहमत न होते हुए भी एक रूसी प्रतिनिधि की हैसियत से जायेंगे, उनकी स्थिति इतनी विचित्र होगी कि लोग पूछेंगे, "यह सज्जन अपने साथ क्या लाये हैं और हम उनसे किस चीज के बारे में बात करेगे?" जहा तक नकाज का प्रश्न है, मिल्युकोव ने कहा कि वह स्वयं शातिवादी हैं, कि वह एक अंतर्राष्ट्रीय विवाचन-मंडल की स्थापना मे, शस्त्रीकरण को सीमित करने की आवश्यकता मे और गुप्त कूटनीति के संसदीय नियंत्रण मे विश्वास करते है, परंतु इस नियंत्रण का यह अर्थ नहीं है कि गुप्त कूटनीति ही समाप्त कर दी जाये।

नकाज मे निहित समाजवादी विचारो के बारे मे, जिनको उन्होने "स्टाकहोमी विचारो" का नाम दिया, अर्थात् विजय-पराजय के बिना शाति, जातियों का आत्मनिर्णय का अधिकार तथा आर्थिक युद्ध का परित्याग, उन्होने कहा:

"जर्मनों ने प्रत्यक्षत: उसी अनुपात मे सफलतायें प्राप्त की है, जिस अनुपात नें अपने को क्रातिकारी-जनवादी कहने वाले लोगों ने की हैं। मैं यह नही कहना चाहता कि जिस अनुपात में क्राति ने सफलतायें प्राप्त की हैं, क्योंकि, मेरा विश्वास है कि क्रातिकारी जनवाद की पराजय क्राति की विजय है...

"विदेशों मे सोवियत नेताओं का प्रभाव महत्त्वहीन वस्तु नही है। विदेश-मंत्री के भाषण को सुनने से ही आपको यह विश्वास हो जायेगा कि इस भवन में विदेश नीति पर क्रातिकारी जनवाद का प्रभाव इतना प्रबल

है कि उसके सम्मुख मंत्री महोदय रूस के सम्मान और प्रतिष्टा की बात करने का साहस नहो करते!

"सोवियतों के नकाज़ से हम देख सकते हैं कि स्टाकहोम-घोषणापत्र के विचारों का दो दिशाओं में विकास किया गया है--एक तो कल्पनावाद की दिशा में और दूसरे जर्मन हितों की दिशा में..."

उनके भाषण के बीच में वामपंथियों ने गुस्से मे आकर आवाजे दी और अध्यक्ष महोदय ने भी उन्हें डांटा, लेकिन मिल्युकोव इस बात पर अड़े ही रहे कि यह प्रस्ताव कि कूटनीतिज्ञ नहीं, जन-सभायें शांति-संधि संपन्न करें और यह प्रस्ताव कि जैसे ही शत्रु संयोजनों को तिलांजलि दे दे, उसके साथ शांति-वार्ता आरंभ की जाये, जर्मनों के पक्ष में है। हाल में कूलमन ने कहा था कि अगर कोई व्यक्तिगत प्रकार की घोषणा करता है, तो उससे एकमात्र वही बंधता है, दूसरा नहीं... "बहरहाल इसके पहले कि हम मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियत की नक़ल करें हम जर्मनों की नक़ल करेंगे..."

मिल्युकोव ने कहा, "लिथुआनिया और लाटविया की स्वाधीनता से संबंधित धाराएं रूस के विभिन्न भागों में राष्ट्रवादी आंदोलन के लक्षण है, जिसकी जर्मन लोग रुपये-पैसे से मदद कर रहे हैं..."

वामपंथियों के हो-हल्ले के बीच उन्होने नकाज़ की एल्सस-लोरें, रूमानिया और सर्बिया से संबंधित धाराओं का जर्मनी तथा आस्ट्रिया की जातियों से संबंधित धाराओं के साथ मुक़ाबला किया और कहा कि नकाज़ मे जर्मन और आस्ट्रियाई दृष्टिकोण को ग्रहण किया गया है।

तेरेश्चेंको के भाषण को लेते हुए उन्होने बड़ी हिकारत से उनके खिलाफ यह इलज़ाम लगाया कि वह अपने मन का भाव प्रगट करने से घबराते हैं और रूस को महानता के दृष्टिकोण से विचार तक करने से कतराते है। दर्रे दानियाल रूस के ही हाथ में होना चाहिए...

"आप बार बार यह कहते हैं कि सिपाही को यह नहीं मालूम कि वह लड़ क्यों रहा है और यह कि जब उसे मालूम होगा, वह लड़ेगा... यह सच है कि सिपाही को यह नहीं मालूम कि वह क्यों लड़ रहा है, लेकिन अब आपने उससे यह कहा है कि उसके लिए लड़ने की कोई वजह नहीं है, कि हमारे कोई राष्ट्रीय हित नही हैं और यह कि हम परराष्ट्रों के उद्देश्यों की ख़ातिर लड़ रहे है..."

उन्होने मित्र-राष्ट्रों की सराहना की और कहा कि अमरीका की मदद से वे "अभी भी मानव-जाति के ध्येय की रक्षा करेंगे।" उनके अंतिम शब्द थे:

"मानव-जाति के प्रकाश-स्तंभ, पश्चिम के उन्नत जनवादी देश, जो एक लंबे अरसे से उस रास्ते चलते आये हैं, जिस पर हमने अब कही जाकर पाव रखा है, और वह भी हिचकिचाते, झिझकते क़दमों से, जीते रहें। हमारे साहसी मित्र-राष्ट्र जीते रहे!"

१३

केरेन्स्की के साथ मुलाक़ात

'एसोसियेटेड प्रेस' के संवाददाता ने रद्दा जमाया: "केरेन्स्की महोदय," उसने शुरू किया, "इंगलैंड और फ़्रांस मे लोग क्राति से निराश हो रहे हैं..."

केरेन्स्की ने उसकी बात काट कर मज़ाक़िया लहजे मे कहा, "जी हां, मैं जानता हूं, विदेशों मे क्राति अब फ़ैशनेबुल नही रही।"

"आपके ख़्याल मे इसकी क्या वजह है कि रूसियों ने लड़ना बंद दिया है?"

"यह एक बेवक़ूफी का सवाल है," केरेन्स्की ने चिढ कर कहा। "मित्र-राष्ट्रों में रूस ही सबसे पहले लड़ाई के मैदान मे उतरा और बहुत दिनों तक उसने अकेले ही लड़ाई का पूरा बोझ ढोया। उसे जो नुकसान पहुंचा है, वह दूसरे सभी राष्ट्रों के नुक़सान से बेअंदाज ज्यादा है। आज रूस को मित्र-राष्ट्रों से यह माग करने का अधिकार है कि वे इस युद्ध में अधिक शस्त्र-बल लगायें।" क्षण भर रुककर उन्होने प्रश्नकर्त्ता की ओर घूरकर देखा और फिर कहा, "आप यह पूछते हैं कि रूसियों ने लड़ना बद क्यों कर दिया है, और रूसी पूछते हैं कि जब जर्मन जंगी जहाज़ रीगा की खाड़ी मे मौजूद हैं, ब्रिटिश बेड़ा कहां है?" फिर यकायक रुककर वह उसी तरह यकायक उबल पड़े, "रूसी क्राति विफल नही हुई है, न ही क्रातिकारी सेना विफल हुई है। सेना में विश्रृंखलता क्राति ने उत्पन्न नहीं की है—यह विश्रृंखलता सालों पहले पुरानी व्यवस्था ने उत्पन्न की थी। रूसी क्यों नही

लड़ रहे हैं? मैं बताता हूं। क्योंकि जन-साधारण का ग्रार्थिक वल छीज गया है ग्रौर क्योंकि मित्र-राष्ट्रों के वारे में उनके भ्रम टूट गये है!"

यह इन्टरव्यू, जिसका मैंने यहा एक उद्धरण दिया है, तार के जरिये संयुक्त राज्य ग्रमरीका भेजा गया ग्रौर चंद रोज़ वाद ही ग्रमरीकी राज्य विभाग ने यह मांग करते हुए उसे लौटा दिया कि उसे "वदला" जाये। केरेन्स्की ने ऐसा करने से इनकार किया, लेकिन उनके सचिव ड० डेविड सोस्किस ने उसमें काट-छाट की ग्रौर इस प्रकार उसमें से मित्र-राष्ट्रों के वारे में ग्रप्रिय सकेतों को छाट कर उसे दुनिया के ग्रख़वारों को दिया गया...

तीसरे ग्रध्याय की टिप्पणियां

१

कारखाना समितियों का प्रस्ताव

१. राजनीतिक क्षेत्र में निरंकुश ज़ारशाही शासन का तख़्ता उलटने के बाद, मजदूर वर्ग उत्पादन के क्षेत्र मे भी जनवादी व्यवस्था की विजय को ग्रग्रसर करने की चेष्टा कर रहा है। मज़दूर नियन्त्रण का विचार इसी चेष्टा की ग्रभिव्यक्ति है। यह विचार स्वभावतः उस ग्रार्थिक विसगठन की भूमि से उत्पन्न हुग्रा, जो शासक वर्गों की ग्रपराधपूर्ण नीति का परिणाम था।

२. मजदूरों के नियंत्रण का संगठन ग्रौद्योगिक उत्पादन के क्षेत्र में मज़दूरों की क्रिया की वैसी ही स्वस्थ ग्रभिव्यक्ति है, जैसी कि राजनीति के क्षेत्र मे पार्टी-संगठन, नौकरी-धंधे के क्षेत्र मे ट्रेड-यूनियन, उपभोग के क्षेत्र में सहकारी समितियां तथा सस्कृति के क्षेत्र मे साहित्यिक गोष्ठियां है।

३. कारख़ानो के उचित तथा निर्विघ्न परिचालन मे मजदूर वर्ग को पूजीपति वर्ग की ग्रपेक्षा कही ग्रधिक दिलचस्पी है। इस सबंध मे मज़दूरों का नियंत्रण ग्राधुनिक समाज के, समस्त जनता के हितों की उन मालिकों की मनमानी इच्छा से कही बेहतर गारंटी है, जो भौतिक लाभ ग्रथवा राजनीतिक विशेषाधिकारो के लिए ग्रपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाग्रों द्वारा ही निर्देशित हैं। इसलिए सर्वहारा ग्रपने हित मे ही नहीं, बल्कि पूरे देश के

हित में मज़दूरों के नियंत्रण की माग करता है और क्रातिकारी किसानों को तथा क्रांतिकारी सेना को चाहिए कि वे इस माग का समर्थन करें।

४. हमारा अनुभव बताता है कि क्राति के प्रति पूंजीपति वर्ग के अधिकांश भाग के शत्रुतापूर्ण रुख़ को देखते हुए मज़दूरों के नियंत्रण के बिना कच्चे माल और ईधन का उचित वितरण तथा कारख़ानों का कुशलतम प्रबंध असंभव है।

५. पूंजीपतियों के उद्यमों पर मज़दूरों का नियंत्रण ही, जिससे काम के प्रति मज़दूरों का चेतन दृष्टिकोण पोषित होता है और उसका सामाजिक अर्थ स्पष्ट होता है, ऐसी अवस्थायें उत्पन्न कर सकता है, जो मज़दूरों में दृढ़ आत्म-अनुशासन के विकास के लिए तथा यथासंभव श्रम की उत्पादन-क्षमता के विकास के लिए अनुकूल हैं।

६. उद्योग का युद्ध से शांति में आसन्न आधार-परिवर्तन तथा पूरे देश में और विभिन्न कारख़ानों के बीच भी श्रम का पुनर्वितरण स्वयं मजदूरों के जनवादी स्वशासन द्वारा ही बिना विशेष उथल-पुथल के संपन्न किया जा सकता है... फलतः मज़दूरों के नियंत्रण का संपादन उद्योग के विसैन्यीकरण की एक अनिवार्य पूर्वावस्था है।

७. रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) द्वारा घोषित नारे के मुताबिक़ राष्ट्रीय पैमाने पर मज़दूरों का नियंत्रण फलप्रद होने के लिए यह आवश्यक है कि उसे आनुषंगिक तथा अव्यवस्थित रूप से संगठित न किया जाये, न ही देश के समग्र औद्योगिक जीवन से विच्छिन्न किया जाये, बल्कि उसे सुआयोजित रूप से पूजीपतियों के सभी उद्यमों मे स्थापित किया जाये।

८. देश का आर्थिक जीवन – कृषि, उद्योग, वाणिज्य तथा परिवहन – अवश्य ही एक ऐसी एकीभूत योजना के अधीन होना चाहिए, जो व्यापक जन-साधारण की व्यक्तिगत तथा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार की गई हो, जो उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा अनुमोदित की गई हो और जो राष्ट्रीय तथा स्थानीय संगठनों के माध्यम से इन प्रतिनिधियों के निर्देश में कार्यान्वित की गई हो।

९. यह आवश्यक है कि योजना का वह भाग, जो कृषि-श्रम से संबंध रखता है, किसानों तथा खेतिहर मज़दूरों के संगठनों के निरीक्षण में

कार्यान्वित किया जाये; और वह भाग, जो उजरती मजदूरों द्वारा परिचालित उद्योग, व्यापार तथा परिवहन से संबंध रखता है, मजदूरों के नियंत्रण में कार्यान्वित किया जाये। औद्योगिक कारखानों में कारखाना समितियां और दूसरी ऐसी समितियां और श्रम-बाजार में ट्रेड-यूनियनें मजदूर नियंत्रण के स्वाभाविक निकाय होंगी।

१०. श्रम की किसी भी शाखा में अधिकांश मजदूरों के लिए ट्रेड-यूनियनें तनख़ाहों के बारे में जो सामूहिक समझौते सम्पन्न करती हैं, वे प्रदेश विशेष में उसी प्रकार के श्रम का नियोजन करने वाले कारख़ानों के सभी मालिकों पर अवश्य ही लागू होंगे।

११. यह आवश्यक है कि रोज़गार-ब्यूरो, समग्र औद्योगिक योजना की सीमाओं में तथा उसके अनुरूप कार्य करने वाले वर्ग-संगठनों के रूप में, ट्रेड-यूनियनों के नियंत्रण तथा प्रबंध में रखे जायें।

१२. ट्रेड-यूनियनों को अवश्य ही यह अधिकार होना चाहिए कि वे खुद पेशक़दमी कर श्रम-समझौते अथवा श्रम-क़ानून भंग करने वाले सभी मालिकों के ख़िलाफ़ और श्रम की किसी भी शाखा में किसी भी मजदूर की ओर से क़ानूनी कार्रवाई शुरू कर सकें।

१३. उत्पादन, वितरण तथा श्रम-नियोजन पर मजदूरों के नियंत्रण से संबंधित सभी प्रश्नों के बारे में यह आवश्यक है कि ट्रेड-यूनियनें प्रतिष्ठान विशेष के मजदूरों के साथ उनकी कारख़ाना समितियों के माध्यम से परामर्श करें।

१४. नियुक्ति तथा बरख़ास्तगी, छुट्टियां, पारिश्रमिक-क्रम, काम की मनाही, उत्पादन-क्षमता तथा कौशल की मात्रा, समझौतों को रद्द करने के कारण, कारख़ाना-प्रशासन के साथ झगड़े और कारख़ाने के आंतरिक जीवन की दूसरी इसी प्रकार की समस्यायें – ये सारे मामले एकमात्र कारख़ाना समिति के जांच-परिणामों के मुताबिक़ निपटाये जाने चाहिये। समिति को अधिकार होगा कि वह कारख़ाना-प्रशासन के किन्हीं भी सदस्यों को बहस में भाग लेने से वंचित रखे।

१५. कारख़ानों को कच्चा माल, ईंधन, आर्डर, श्रम-शक्ति तथा तकनीकी कर्मचारी (मय साज़ व सामान के) की सप्लाई तथा दूसरी मद्दों की सप्लाई तथा प्रबंध का नियंत्रण करने के लिए तथा कारख़ाने

द्वारा सामान्य औद्योगिक योजना के पालन को सुनिश्चित बनाने के लिए कारखाना समिति एक आयोग की स्थापना करती है। कारख़ाना-प्रशासन इसके लिए बाध्य है कि वह मज़दूर नियंत्रण-निकायो की सहायता तथा सूचना के लिए व्यवसाय-संबंधी समस्त तथ्य-सामग्री को उनके हवाले करे और उनके लिए इन तथ्यों की जाच करना सभव बनाये और कारख़ाना समिति की माग पर उद्यम की हिसाब-बहियों को पेश करे।

१६. यदि कारख़ाना समितियों को प्रशासन की किन्ही गैरकानूनी कार्रवाइयो का पता चलता है, या ऐसी कार्रवाइयों के बारे में शुबहा पैदा होता है, जिनकी अकेले मज़दूरों द्वारा जाच-पड़ताल नही की जा सकती, सुधार नही किया जा सकता, तो ये मामले श्रम की जिस विशेष शाखा से उनका सबंध है उसके लिए ज़िम्मेदार कारखाना समितियों के केन्द्रीय मंडल-संगठन के सुपुर्द कर दिये जायेंगे, जो सामान्य औद्योगिक योजना के क्रियान्वयन के लिए ज़िम्मेदार संस्थानों के साथ मामले पर विचार करेंगे और कारख़ाने को ज़ब्त करने की हद तक मामले को निबटाने का उपाय करेंगे।

१७. यह आवश्यक है कि विभिन्न उद्यमों की कारख़ाना समितियों को विभिन्न रोजगार-धंधों के आधार पर संघबद्ध किया जाये, ताकि उद्योग की समस्त शाखा पर नियंत्रण स्थापित करने में सुविधा हो सके और उसे सामान्य औद्योगिक योजना के अंतर्गत किया जा सके; ताकि विभिन्न कारख़ानों के बीच आर्डरों, कच्चे माल, ईधन, तकनीकी तथा श्रम-शक्ति के वितरण की एक कारगर योजना बनाई जा सके; ताकि विभिन्न वृत्तियों द्वारा संगठित ट्रेड-यूनियनों के साथ सहयोग स्थापित करने में सुविधा हो सके।

१८. ट्रेड-यूनियनों तथा कारख़ाना समितियों की केंद्रीय नगर परिषदें सामान्य औद्योगिक योजना को तैयार करने तथा उसे क्रियान्वित करने के लिए और नगरों तथा गावों (मजदूरों तथा किसानों) के बीच आर्थिक संबंध संगठित करने के लिए स्थापित तदनुरूप प्रातीय तथा स्थानीय संस्थानों मे सर्वहारा का प्रतिनिधित्व करती हैं। जहा तक उनके हलके में मज़दूरों के नियत्रण का प्रश्न है, उन्हे कारख़ाना समितियों तथा ट्रेड-यूनियनो

के प्रवध का चरम ग्रधिकार प्राप्त है ग्रौर वे उत्पादन-चक्र में मजदूरों के ग्रनुशासन से संबधित ग्रनिवार्य नियमों को जारी करती हैं, परतु यह ज़रुरी है कि स्वयं मजदूर मतदान देकर इन नियमों का ग्रनुमोदन करें।*

२

बोल्शेविकों के बारे में पूंजीवादी ग्रख़बारों की टिप्पणियां

'रूस्काया वोल्या', २८ ग्रक्तूबर: "निर्णायक घड़ी ग्रा रही है... यह घडी बोल्शेविको के लिए निर्णायक है। या तो वे हमारे सम्मुख... १६–१८ जुलाई की घटनाग्रों का एक दूसरा संस्करण उपस्थित करेंगे, या फिर उन्हे मानना पड़ेगा कि वे ग्रपनी योजनायें ग्रौर इरादे लिये, सचेत राष्ट्रीय ग्रंशकों से ग्रपने को ग्रलग रखने की धृष्ठ नीति लिये, चारों खाने चित हुए हैं...

"बोल्शेविकों की सफलता की क्या संभावनाये हैं?

"इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है, क्योंकि उनका मुख्य ग्राधार... ग्राम जनता का ग्रज्ञान है। वे उसी पर दांव लगाते हैं ग्रौर उसे ऐसी लफ़्फ़ाज़ी द्वारा उभाड़ते हैं, जिसे कोई चीज रोक नही सकती...

"इस मामले में सरकार को ग्रपनी भूमिका ग्रदा करनी होगी। नैतिक

---

*जॉन रीड ने १६ वें ग्रनुच्छेद को छोड़ दिया है, जिसमें कहा गया है "देशव्यापी पैमाने पर मजदूरों के नियन्त्रण की [illegible] हुए, सम्मेलन साथियों को ग्रामन्त्रि[illegible] कि वे ग्रभी [illegible] तक उसे क्रियान्वित करें, [illegible] कि प्रत्येक [illegible] का सतुलन इस बात क[illegible] । सम्मेलन [illegible] करता है कि मजदूरों का इस [illegible] कब्जा [illegible] ही फ़ायदे [illegible] लिए [illegible] मेल[illegible] –सं०

रूप से जनतंत्र परिषद् का आधार ग्रहण कर, सरकार को बोल्शेविकों के प्रति एक स्पष्ट और निश्चित रुख़ अपनाना होगा...

"और यदि बोल्शेविक क़ानूनी सत्ता के ख़िलाफ विद्रोह भड़काते हैं और इस प्रकार जर्मन आक्रमण को सहज बनाते हैं, तो उनके साथ वही सलूक करना होगा, जो बाग़ियों और गद्दारों के साथ किया जाता है..."

'बिर्जेवोये वेदोमोस्ती', २८ अक्तूबर: "अब जब कि बोल्शेविकों ने शेष जनवादी अंशकों से अपने को अलहदा कर लिया है, उनके ख़िलाफ संघर्ष एक कहीं ज्यादा सीधी बात हो गया है, और बोल्शेविज्म से लड़ने के लिए यह तर्कसंगत न होगा कि जब तक वे प्रदर्शन न करें, तब तक प्रतीक्षा की जाये। सरकार को प्रदर्शन की इजाज़त तक नहीं देनी चाहिए...

"विद्रोह तथा अराजकता फैलाने के लिए बोल्शेविकों की अपीलें ऐसी हरकतें हैं, जो फ़ौजदारी अदालतों द्वारा दंडनीय हैं और स्वतंत्र से स्वतंत्र देश में ऐसी हरकत करने वाले लोगों को सख़्त सजायें दी जायेंगी। क्योंकि, जो काम बोल्शेविक कर रहे हैं, वह सरकार के ख़िलाफ़ या सत्ता तक के लिए भी राजनीतिक प्रकार का संघर्ष नहीं है, वह अराजकता, मार-काट और गृहयुद्ध के लिए प्रचार है। इस प्रचार का मूलोच्छेद करना आवश्यक है। यह अजीब बात होगी कि दंगा-फ़साद के आंदोलन के ख़िलाफ़ कार्रवाई शुरु करने के लिए तब तक इंतज़ार किया जाये, जब तक कि ये फ़साद बरपा न हो जायें..."

'नोवोये व्रेम्या', १ नवंबर: "...सरकार दूसरी नवंबर (जिस तारीख़ को सोवियतों की कांग्रेस बुलाई गई थी) के ही बारे में उत्तेजित क्यों है, वह १२ वीं सितंबर या तीसरी अक्तूबर के बारे में उत्तेजित क्यों नहीं है?

"यह पहला मर्तबा नहीं है, जब रूस भस्म हो रहा है और ढहकर खंडहरों का एक ढेर बन रहा है, जब इस भयानक अग्निकांड के धुयें से हमारे मित्र-राष्ट्रों की आंखों में जलन पैदा हो रही है...

"सत्तारूढ़ होने के दिन से लेकर आज तक सरकार ने अराजकता को रोकने के उद्देश्य से एक भी हुक्म जारी नहीं किया है; जिन लपटों में रूस भस्म हो रहा है, क्या किसी ने उन्हें बुझाने की कोशिश की है?

"और भी काम करने को पड़े थे...

के प्रबंध का चरम अधिकार प्राप्त है और वे उत्पादन-चक्र में मजदूरों के अनुशासन से सबंधित अनिवार्य नियमों को जारी करती है, परंतु यह शर्त है कि स्वयं मजदूर मतदान देकर इन नियमों का अनुमोदन करे।*

२

बोल्शेविकों के बारे में पूंजीवादी अखबारों की टिप्पणियां

'रूस्स्काया वोल्या', २८ अक्तूबर: "निर्णायक घड़ी आ रही है... यह घड़ी बोल्शेविकों के लिए निर्णायक है। या तो वे हमारे सम्मुख... १६-१८ जुलाई की घटनाओं का एक दूसरा संस्करण उपस्थित करेंगे, या फिर उन्हें मानना पड़ेगा कि वे अपनी योजनायें और इरादे लिये, सचेत राष्ट्रीय अशकों से अपने को अलग रखने की धृष्ठ नीति लिये, चारो खाने चित हुए हैं...

"बोल्शेविकों की सफलता की क्या संभावनायें है?

"इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है, क्योंकि उनका मुख्य आधार... आम जनता का अज्ञान है। वे उसी पर दांव लगाते है और उसे ऐसी लफ़्फ़ाज़ी द्वारा उभाड़ते है, जिसे कोई चीज रोक नही सकती...

"इस मामले में सरकार को अपनी भूमिका अदा करनी होगी। नैतिक

---

*जॉन रीड ने १६ वें अनुच्छेद को छोड़ दिया है, जिसमे कहा गया है: "देशव्यापी पैमाने पर मजदूरों के नियन्त्रण की माग करते हुए, सम्मेलन साथियों को आमन्त्रित करता है कि वे अभी से ही उस हद तक उसे क्रियान्वित करें, जिस हद तक कि प्रत्येक स्थान में शक्तियों का सतुलन इस बात की इजाजत देता है। सम्मेलन यह भी घोषणा करता है कि मजदूरों का इस गरज से उद्यमों पर क़ब्ज़ा करना कि वे उनका अपने ही फ़ायदे के लिए इस्तेमाल कर सकें, मजदूर-नियन्त्रण के उद्देश्यों के साथ मेल नही खाता। – सं०

"सरकार ने एक अधिक तात्कालिक समस्या की ओर ध्यान दिया। उसने एक ऐसे विद्रोह (कोर्नीलोव-कांड) का दमन किया, जिसके बारे में आज हर आदमी पूछ रहा है, 'क्या यह विद्रोह कभी हुआ भी था?'"

३

बोल्शेविकों के बारे में नरम समाजवादी अखबारों की टिप्पणियां

'देलो नरोदा' (समाजवादी-क्रांतिकारी), २८ अक्तूबर: "क्रांति के खिलाफ बोल्शेविकों का सबसे भयानक अपराध यह है कि जिन क्रूर विपदाओं को जन-साधारण झेल रहे हैं, वे उनका एकमात्र कारण क्रांतिकारी सरकार की बदनीयती को ठहराते हैं, जब कि वास्तव में ये विपदायें वस्तुगत कारणों से उत्पन्न होती हैं।

"वे जन-साधारण से पहले से यह जानते हुए सुनहरे वादे करते हैं कि वे अपना एक भी वादा पूरा नहीं कर सकते; वे जन-साधारण को गुमराह करते हैं और उनकी मुसीबतों की जड़ क्या है, इसके बारे में सच्ची बात न बताकर उन्हें धोखा देते हैं...

"बोल्शेविक क्रांति के सबसे ख़तरनाक दुश्मन हैं..."

'देन' (मेन्शेविक), ३० अक्तूबर: "क्या वास्तव में यही 'प्रेस-स्वातंत्र्य' है? 'नोवाया रूस' और 'राबोची पूत' रोज़ाना खुल्लमखुल्ला विद्रोह के लिए भड़कावा देते हैं। दर असल ये दोनों अख़बार रोजाना अपने कालमों के ज़रिए जुर्म करते हैं। रोज़ाना वे लोगों को दंगा-फसाद के लिए उभाड़ते हैं... क्या यही 'प्रेस-स्वातंत्र्य' है?

"सरकार को चाहिए कि वह अपने को बचाये और हमें भी। हमें यह आग्रह करने का अधिकार है कि जब नागरिकों का जीवन ख़ूनरेज बलवों के ख़तरे के कारण संकटापन्न हो सरकार की मशीनरी निष्क्रिय न रहे..."

६

विद्रोह के खिलाफ़ अपील

केंद्रीय सैनिक समिति की ओर से

"...हम सबसे ज्यादा इस बात पर जोर देते हैं कि जनतंत्र परिषद् के तथा त्से-ई-काह् के साथ एकमत, जनसत्ता-निकाय के रूप में अस्थायी सरकार द्वारा व्यक्त जनता के बहुमत की संगठित इच्छा को अविचल रूप से सपादित किया जाये...

"एक ऐसे समय, जब मंत्रिमंडल में संकट उत्पन्न होने का अनिवार्य परिणाम विसंगठन, देश का विनाश तथा गृहयुद्ध होगा, इस सत्ता को बल-प्रयोग द्वारा उलटने के लिए जो भी प्रदर्शन होगा, वह सेना द्वारा प्रतिक्रांतिकारी कार्य समझा जायेगा और शस्त्र-बल द्वारा दबा दिया जायेगा...

"निजी दलों और वर्गों के हितों को एक ही हित के—औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने और जिंदगी की जरूरियात के समुचित वितरण के हित के—अधीन करना चाहिए...

"जो लोग भी तोड़-फोड़, विसंगठन अथवा उपद्रव कर सकते हैं, उन सब को तथा सभी भगोड़ों, सभी कामचोरों और सभी लुटेरों को सेना के पृष्ठ भाग में सहायक सेवा करने के लिए बाध्य करना चाहिए...

"हम अस्थायी सरकार को आमंत्रित करते हैं कि वह जनता की इच्छा का उल्लंघन करने वाले, क्रांति से शत्रुता करने वाले इन लोगों को लेकर मोर्चे के पीछे, मोर्चे पर और उन खाइयों में, जिनपर दुश्मन की गोलाबारी हो रही है, काम करने के लिए मजदूर-टोलियां बनाये..."

७

६ नवंबर की रात की घटनायें

शाम होते होते लाल गार्डों के दस्ते पूंजीवादी अखबारों के छापाखानों पर कब्जा करने लगे, जहां उन्होंने 'राबोची पूत', 'सोल्दात' और विभिन्न घोषणाओं की लाखों प्रतियों में छापा। नगर मिलिशिया को हुक्म दिया

गया कि वह इन स्थानों को खाली कराये, लेकिन उसने देखा कि कार्यालयों के बचाव के लिए मोर्चाबंदी की गयी है और हथियारबंद लोग उनकी हिफाजत कर रहे हैं। सिपाहियों को छापाखानों पर हमला करने का हुक्म दिया गया, मगर उन्होंने इनकार कर दिया।

आधी रात के क़रीब युंकरों की एक कंपनी के साथ एक कर्नल 'राबोची पूत' के संपादक को गिरफ़्तार करने का वारंट लेकर "आजाद ख़्याल" नामक क्लब में पहुंचा। फ़ौरन बाहर सड़क पर एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई और उसने युंकरों को वहीं भुर्ता बना देना चाहा। इस पर कर्नल ने चिरौरी-विनती की कि उन्हें और युंकरों को गिरफ़्तार कर लिया जाये और हिफाजत के ख़्याल से पीटर-पाल किले में पहुंचा दिया जाये। यह अनुरोध मान लिया गया।

एक बजे रात को स्मोल्नी के सिपाहियों और मल्लाहों के एक दस्ते ने तारघर पर कब्जा कर लिया*। पैंतीस मिनट बाद डाकखाने पर क़ब्जा कर लिया गया। सवेरा होते होते सैनिक होटल हाथ में आ गया और पांच बजे टेलीफ़ोन-एक्सचेंज** । सवेरे राजकीय बैंक पर घेरा डाल दिया गया और दस बजे शिशिर प्रासाद पर भी सैनिकों का घेरा डाल दिया गया।

चौथे अध्याय की टिप्पणियां

१

७ नवम्बर की घटनायें

सवेरे के चार बजे से लेकर पौ फटने तक केरेन्स्की पेत्रोग्राद सैनिक स्टाफ़ के सदर मुकाम में मौजूद थे और कज्जाकों को तथा शहर के अंदर और शहर के आस-पास के अफ़सर स्कूलों के युंकरों को हुक्म पर हुक्म भेज रहे थे, लेकिन उन सबने एक ही जवाब दिया, वे अपनी जगह से हिलने में असमर्थ हैं।

---

*तारघर पर दो बजे रात को क़ब्जा किया गया।—सं०

**टेलीफ़ोन-एक्सचेंज पर सात बजे सवेरे कब्जा किया गया।—सं०

६

विद्रोह के खिलाफ़ अपील

केंद्रीय सैनिक समिति की ओर से

"...हम सबसे ज्यादा इस बात पर ज़ोर देते है कि जनतंत्र परिषद् के तथा त्से-ई-काह् के साथ एकमत, जनसत्ता-निकाय के रूप में अस्थायी सरकार द्वारा व्यक्त जनता के बहुमत की संगठित इच्छा को अविचल रूप से संपादित किया जाये...

"एक ऐसे समय, जब मंत्रिमंडल मे संकट उत्पन्न होने का अनिवार्य परिणाम विसंगठन, देश का विनाश तथा गृहयुद्ध होगा, इस सत्ता को बल-प्रयोग द्वारा उलटने के लिए जो भी प्रदर्शन होगा, वह सेना द्वारा प्रतिक्रांतिकारी कार्य समझा जायेगा और शस्त्र-बल द्वारा दबा दिया जायेगा...

"निजी दलों और वर्गों के हितों को एक ही हित के–औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने और जिंदगी की जरूरियात के समुचित वितरण के हित के–अधीन करना चाहिए...

"जो लोग भी तोड-फोड, विसंगठन अथवा उपद्रव कर सकते है, उन सब को तथा सभी भगोड़ो, सभी कामचोरों और सभी लुटेरों को सेना के पृष्ठ भाग मे सहायक सेवा करने के लिए बाध्य करना चाहिए...

"हम अस्थायी सरकार को आमंत्रित करते है कि वह जनता की इच्छा का उल्लंघन करने वाले, क्रांति से शत्रुता करने वाले इन लोगों को लेकर मोर्चे के पीछे, मोर्चे पर और उन खाइयों में, जिनपर दुश्मन की गोलाबारी हो रही है, काम करने के लिए मजदूर-टोलियां बनाये..."

७

६ नवंबर की रात की घटनायें

शाम होते होते लाल गार्डों के दस्ते पूंजीवादी अखबारों के छापाख़ानों पर कब्ज़ा करने लगे, जहां उन्होंने 'राबोची पूत', 'सोल्दात' और विभिन्न घोषणाओं को लाखों प्रतियों मे छापा। नगर मिलिशिया को हुक्म दिया

गया कि वह इन स्थानों को ख़ाली कराये, लेकिन उसने देखा कि कार्यालयों के बचाव के लिए मोर्चाबंदी की गयी है और हथियारबंद लोग उनकी हिफ़ाज़त कर रहे हैं। सिपाहियों को छापाखानों पर हमला करने का हुक्म दिया गया, मगर उन्होंने इनकार कर दिया।

आधी रात के क़रीब युंकरों की एक कंपनी के साथ एक कर्नल 'राबोची पूत' के सपादक को गिरफ़्तार करने का वारंट लेकर "आजाद ख़्याल" नामक क्लब में पहुंचा। फ़ौरन बाहर सड़क पर एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई और उसने युंकरों को वहीं भुर्ता बना देना चाहा। इस पर कर्नल ने चिरौरी-विनती की कि उन्हे और युंकरों को गिरफ़्तार कर लिया जाये और हिफाज़त के ख़्याल से पीटर-पाल किले मे पहुंचा दिया जाये। यह अनुरोध मान लिया गया।

एक बजे रात को स्मोल्नी के सिपाहियों और मल्लाहों के एक दस्ते ने तारघर पर कब्जा कर लिया*। पैंतीस मिनट बाद डाकखाने पर क़ब्ज़ा कर लिया गया। सवेरा होते होते सैनिक होटल हाथ में आ गया और पांच बजे टेलीफ़ोन-एक्सचेंज** । सवेरे राजकीय बैंक पर घेरा डाल दिया गया और दस बजे शिशिर प्रासाद पर भी सैनिकों का घेरा डाल दिया गया।

चौथे अध्याय की टिप्पणियां

१

७ नवम्बर की घटनायें

सवेरे के चार बजे से लेकर पौ फटने तक केरेन्स्की पेत्रोग्राद सैनिक स्टाफ के सदर मुकाम ने मौजूद थे और कज्ज़ाकों को तथा शहर के अंदर और शहर के आस-पास के अफ़सर स्कूलों के युंकरों को हुक्म पर हुक्म भेज रहे थे, लेकिन उन सबने एक ही जवाब दिया, वे अपनी जगह से हिलने में असमर्थ हैं।

---

*तारघर पर दो बजे रात को कब्जा किया गया।—सं०

**टेलीफ़ोन-एक्सचेंज पर सात बजे सवेरे क़ब्ज़ा किया गया।—सं०

नगर कमांडेंट कर्नल पोल्कोवनिकोव स्पष्टतः बिना किसी योजना के कभी स्टाफ़-दफ़्तर जाते, तो कभी शिशिर प्रासाद। केरेन्स्की ने हुक्म दिया कि पुलों को उठा दिया जाये; तीन घंटे बीत गये, मगर कोई कार्रवाई नहीं की गई। इसके बाद ख़ुद पेशक़दमी कर पांच सिपाहियों के साथ एक अफ़सर ने निकोलाई पुल पर जाकर पहरे पर तैनात लाल गार्डों के एक दल को भगा दिया और पुल को उठा दिया। मगर उनके वहां से रवाना होते ही कुछ मल्लाहों ने आकर पुल को फिर गिरा दिया।

केरेन्स्की ने हुक्म दिया कि 'राबोची पूत' के छापाख़ाने पर क़ब्ज़ा कर लिया जाये। इस काम के लिए नियुक्त अफ़सर को सिपाहियों का एक दस्ता देने का वादा किया गया। दो घंटे बाद वादा किया गया कि उसे कुछ युंकर दिये जायेंगे, और फिर केरेन्स्की के इस हुक्म को भुला दिया गया।

डाकघर तथा तारघर को बोल्शेविकों से छीन लेने की कोशिश की गई। कुछ गोलियां भी चलाई गई, मगर फिर सरकारी सैनिकों ने एलान किया कि अब वे सोवियतों की मुख़ालिफ़त नहीं करेंगे।

युंकरों के एक शिष्टमंडल से केरेन्स्की ने कहा, "अस्थायी सरकार के सभापति के तथा मुख्य सेनापति के रूप में मैं कुछ नहीं जानता और मैं आपको कुछ सलाह नहीं दे सकता। परंतु एक पुराना क्रांतिकारी होने के नाते मैं आपसे, आप तरुण क्रांतिकारियों से अपील करता हूं कि आप अपनी अपनी जगहों पर डटे रहें और क्रांति की उपलब्धियों की रक्षा करें।"

किश्किन के आदेश, ७ नवंबर:

"अस्थायी सरकार की एक आज्ञप्ति द्वारा पेत्रोग्राद में शांति और सुव्यवस्था पुनःस्थापित करने के लिए... मुझे असाधारण अधिकार दिये गये हैं, और सभी नागरिक तथा सैनिक अधिकारियों की पूरी कमान मेरे हाथ में है..."

* * *

"अस्थायी सरकार ने मुझे जो अधिकार दिये हैं, उनके अनुसार मैं पेत्रोग्राद सैनिक हलक़े के कमांडेंट कर्नल पोल्कोवनिकोव को कार्यमुक्त करता हूं..."

उप-प्रधान मंत्री कोनोवालोव द्वारा हस्ताक्षरित आबादी के नाम अपील, ७ नवंबर:

"नागरिको! पितृभूमि की, जनतंत्र की और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कीजिये। कुछ पागलों ने जनता द्वारा निर्वाचित एकमात्र राजकीय सत्ता, अस्थायी सरकार के खिलाफ विद्रोह भड़काया है...

"अस्थायी सरकार के सदस्य अपना कर्तव्य-पालन कर रहे हैं, अपने पदों पर डटे हुए हैं और पितृभूमि के कल्याण, शांति तथा सुव्यवस्था की पुनःस्थापना तथा उस संविधान सभा को बुलाने के लिए काम करते जा रहे हैं, जो रूस की, सभी रूसी जातियों की भावी प्रभुसत्ता होगी..."

"नागरिको, आपको अवश्य ही अस्थायी सरकार का समर्थन करना चाहिए। आपको उसके अधिकार को प्रबल करना चाहिए। आपको अवश्य ही उन सिरफिरे लोगों का विरोध करना चाहिए, जिनके साथ स्वतंत्रता तथा सुव्यवस्था के सभी शत्रु और ज़ारशाही व्यवस्था के सभी अनुयायी संविधान सभा को छिन्न-भिन्न करने, क्रांति की उपलब्धियों तथा हमारी प्रिय पितृभूमि के भविष्य को नष्ट करने के लिए मिल गये हैं...

"नागरिको! शांति और सुव्यवस्था तथा सभी जनों की ख़ुशहाली के नाम पर अस्थायी सरकार के अस्थायी अधिकार की रक्षा के लिए उसके गिर्द संगठित होइये .."

अस्थायी सरकार की घोषणा:

"...पेत्रोग्राद सोवियत ने घोषणा की है कि अस्थायी सरकार उलट दी गई है और उसने पीटर-पाल किले की और नेवा नदी मे लंगर डाले हुए 'अव्रोरा' क्रूजर की तोपों से शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी करने की धमकी देते हुए मांग की है कि राजकीय सत्ता उसके हवाले की जाये।

"सरकार अपनी सत्ता केवल संविधान सभा के हवाले कर सकती है; लिहाजा उसने समर्पण न करने और आबादी से तथा सेना से मदद मांगने का फैसला किया है। एक तार स्ताव्का को भेजा गया है; और जो जवाब मिला है, उसमे कहा गया है कि सिपाहियों का एक बड़ा दस्ता भेजा जा रहा है...

"सेना और जनता मोर्चे के पीछे बग़ावत पैदा करने की बोल्शेविकों की गैरज़िम्मेदार कोशिशों को ठुकरा दें..."

क़रीब नौ बजे सुबह केरेन्स्की मोर्चे के लिए रवाना हो गये...*

शाम होते होते साईकलों पर सवार दो सिपाही पीटर-पाल क़िले की गैरिसन के प्रतिनिधियों की हैसियत से सैनिक स्टाफ़ के सदर मुकाम मे पहुचे। जिस सभा-कक्ष में किशकिन, रुतेनबेर्ग, पालचीन्स्की, जनरल वग्रातुनी, कर्नल पारादेलोव और काउंट तोल्स्तोई इकट्ठे थे, उसमें घुस कर उन्होंने मांग की कि सैनिक स्टाफ़ फ़ौरन समर्पण करे। उन्होंने धमकी दी कि इनकार की सूरत में सदर मुकाम पर गोलाबारी की जायेगी... दहशतज़दा सैनिक स्टाफ़-अधिकारियों ने दो मीटिंगें की और पसपा होकर शिशिर प्रासाद चले गये; लाल गार्डों ने सदर मुकाम पर क़ब्ज़ा कर लिया...

दिन ढलते ढलते कई बोल्शेविक बख़्तरबंद गाड़ियां प्रासाद-चौक में चक्कर लगाने लगी और सोवियत सिपाहियों ने युंकरों के साथ बातचीत करने की कोशिश की, मगर उन्हें कामयाबी न मिली...

"शाम को करीब सात बजे शिशिर प्रासाद पर गोली-वर्षा आरंभ हुई..

रात दस बजे तोपों ने तीन ओर से गोले दाग़ने शुरु किये, लेकिन ज़्यादातर गोले ख़ाली थे और केवल तीन श्रप्नेल गोलियां प्रासाद के सामने के हिस्से पर लगी...

२

केरेन्स्की का पलायन

७ नवंबर की सुबह पेत्रोग्राद से रवाना होकर केरेन्स्की मोटर से गातचिना पहुचे, जहा उन्होने अपने लिए स्पेशल ट्रेन मागी। शाम होते होते वह प्स्कोव प्रात मे ओस्त्रोव नामक स्थान मे पहुंचे। दूसरे दिन सुबह मजदूरों तथा सैनिको के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियत का असाधारण अधिवेशन हुआ, जिसमे कज्जाक प्रतिनिधियो ने भी भाग लिया–ओस्त्रोव मे छः हजार कज्जाक मौजूद थे।

---

*जिन सैनिक दस्तों को केरेन्स्की ने बुलाया था, उनसे "मिलने" के लिए वह ११.३० बजे दिन मे पेत्रोग्राद से रवाना हुए थे।–सं०

केरेन्स्की ने बोल्शेविकों के खिलाफ सहायता की अपील करते हुए और प्राय. कज़्ज़ाकों को ही सबोधित करते हुए सभा में भाषण दिया। सैनिकों के प्रतिनिधियों ने प्रतिवाद प्रगट किया।

"आप यहा क्यों आये?" लोग चिल्लाये। केरेन्स्की ने जवाब दिया, "बोल्शेविक विद्रोह को कुचलने के लिए कज़्ज़ाकों की सहायता मागने के लिए!" इस पर उग्र प्रतिवाद प्रगट किया गया, जो तब और भी उग्र हो गया, जब केरेन्स्की ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा, "मैंने कोर्नीलोव-विद्रोह को कुचल दिया, और मैं बोल्शेविकों को भी कुचल दूगा!" शोर-गुल यहा तक बढ़ा कि उन्हे मच से उतर आना पड़ा।

सैनिक प्रतिनिधियों तथा उसूरी प्रदेश के कज़्ज़ाकों ने केरेन्स्की को गिरफ़्तार कर लेने का फ़ैसला किया, लेकिन दोन-प्रदेश के कज़्ज़ाकों ने उन्हे ऐसा नही करने दिया और उन्हे रेल-गाड़ी मे चढ़ा कर वहा से निकाल ले गये... उसी दिन सैनिक क्रांतिकारी समिति स्थापित की गयी थी और उसने प्स्कोव की गैरिसन को सूचना देने की कोशिश की, परतु टेलीफोन तथा टेलीग्राफ के तार काट डाले गये थे...

केरेन्स्की प्स्कोव नहीं पहुंच सके। क्रांतिकारी सिपाहियों ने रेल की लाइन काट दी थी, ताकि राजधानी के खिलाफ सेनाये न भेजी जा सके। ८ नवबर की रात को वह मोटर से लूगा पहुचे, जहा, वहा पर तैनात शहीदी टुकड़ियों ने उनका अच्छा स्वागत किया।

दूसरे दिन वह रेल-गाड़ी से दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे के लिए रवाना हो गये और सदर मुकाम में सैनिक समिति से मिले। लेकिन बोल्शेविकों की सफलता का समाचार पाकर पाचवी सेना की खुशी का ठिकाना न रहा था, और सैनिक समिति केरेन्स्की को किसी प्रकार की सहायता का वचन देने में असमर्थ थी।

वहा से वह मोगिल्योव स्ताव्का (सेना का सदर मुकाम) मे पहुचे, और हुक्म दिया कि मोर्चे के विभिन्न भागों से दस रेजीमेंटे पेत्रोग्राद के खिलाफ बढ़ें। सिपाहियों ने प्रायः सर्वसम्मति से इनकार कर दिया। जो रेजीमेंटें रवाना भी हुई, वे रास्ते में रुक गयी। सिर्फ़ करीब पाच हज़ार कज़्ज़ाकों ने ही उनका साथ दिया...

३

शिशिर प्रासाद में लूटपाट

यह कहना मेरा इष्ट नहीं है कि शिशिर प्रासाद मे कोई लूटपाट नहीं हुई। शिशिर प्रासाद के पतन के बाद और पहले भी काफ़ी चोरी हुई। परंतु समाजवादी-क्रांतिकारी समाचारपत्र 'नरोद' और नगर दूमा के सदस्यों का यह बयान कि बहुत सी क़ीमती चीजें उठा ली गयी, जिनका कुल मूल्य ५० करोड़ रूबल से कम न होगा, अत्यधिक अतिरंजित है।

प्रासाद की सबसे अधिक महत्वपूर्ण कला-निधियां – चित्र, मूर्तियां, टैपेस्ट्रिया, दुर्लभ चीनी मिट्टी के बरतन तथा ज़िरह-बख़्तर – सितंबर के महीने में मास्को भेज दिये गये थे। और बोल्शेविक सैनिकों द्वारा क्रेमलिन पर क़ब्ज़ा होने के दस दिन बाद भी वे शाही महल के तहख़ाने मे अच्छी और महफ़ूज़ हालत मे थे। मैं ख़ुद इस बात की तसदीक़ कर सकता हूं...

फिर भी कुछ व्यक्तियों ने और विशेषतः आम पब्लिक ने, जिसे शिशिर प्रासाद पर क़ब्ज़ा होने के बाद कई दिनों तक वहां बेरोक-टोक आने-जाने दिया गया, चादी के बरतनों को, घड़ियों, कीमती चीनी मिट्टी और कीमती पत्थर के कुछ अनूठे फूलदानों और ओढ़नों-बिछौनों को उड़ा दिया, जिनकी कुल कीमत ५० हजार डालर होगी।

सोवियत सरकार ने अविलंब उड़ायी गयी चीज़ों को प्राप्त करने के लिए कलाकारो और पुरातत्वविदों को लेकर एक विशेष आयोग गठित किया। १४ नवम्बर को दो घोषणायें जारी की गयी :

"पेत्रोग्राद के नागरिको!

"हम सभी नागरिकों से प्रबल आग्रह करते हैं कि ७–८ नवंबर की रात को शिशिर प्रासाद से जो चीजें चुरायी गयी, उनमें से जो भी पायी जा सकती हैं, वे उन्हें ढूंढ़ने की अपनी भरसक पूरी कोशिश करें और उन्हें शिशिर प्रासाद के कमांडेंट के पास भेज दें।

"इन चुरायी हुई चीज़ों को हस्तगत करनेवाले, पुराविद और दूसरे लोग, जिनके बारे में यह साबित हो जाता है कि वे इन चीज़ों को छिपाये

महिला-बटालियन की महिलाओं के साथ बलात्कार

शिशिर प्रासाद पर कब्ज़ा किये जाने के तुरंत बाद बोल्शेविक-विरोधी अख़बारों में प्रासाद की रक्षा के लिये नियुक्त महिला-बटालियन के बारे में तरह तरह की सनसनीखेज़ कहानियां छापी गई और ये कहानियां नगर दूमा में भी सुनाई गई। कहा गया कि बटालियन की कुछ लड़कियों को खिड़कियों में से नीचे सड़क पर उछाल दिया गया, बाकी लड़कियों में अधिकांश के साथ बलात्कार किया गया और जिन विभीषिकाओं से उन्हें गुजरना पड़ा, उनके फलस्वरूप कितनी ही लड़कियों ने आत्महत्या कर ली।

नगर दूमा ने इस मामले की तहकीकात के लिये एक आयोग नियुक्त किया। १६ नवंबर को आयोग महिला-बटालियन के सदर मुकाम, लेवाशोवो से लौटा। श्रीमती तिर्कोवा ने बताया कि लड़कियों को पहले पाव्लोव्स्की रेजीमेंट की बारिकों में ले जाया गया, जहां कुछ के साथ बुरा सलूक किया गया। लेकिन इस वक़्त अधिकांश लड़कियां लेवाशोवो में थी और बाक़ी छिटफुट निजी घरों मे थीं। आयोग के एक दूसरे सदस्य डा० मान्देलबाउम ने दोटूक कहा कि एक भी औरत को शिशिर प्रासाद की खिड़की से नीचे नहीं फेंका गया, कि एक भी ज़ख्मी नहीं हुई, कि तीन के साथ बलात्कार किया गया और एक ने आत्महत्या की और एक पुर्ज़ा छोड़ गई, जिसमें लिखा हुआ था कि वह "अपने आदर्शों से निराश हुई थी"।

२१ नवंबर को सैनिक क्रांतिकारी समिति ने स्वयं लड़कियों के अनुरोध पर महिला-बटालियन को आधिकारिक रूप से भंग कर दिया, और इन लड़कियों ने फ़ौजी वर्दी उतार कर फिर से नागरिक वेष-भूषा धारण की।

लुईसे ब्रयांत की पुस्तक, "Six Red Months in Russia" (रूस में छः लाल महीने) में महिला-सिपाहियों के इन्हीं दिनों के हाल के बारे में बड़ा रोचक वर्णन है।

पांचवें अध्याय की टिप्पणियां

१

अपीलें और घोषणायें

सैनिक क्रांतिकारी समिति की ओर से, ८ नवंबर

"सभी सैनिक समितियों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सभी सोवियतो के नाम।

"पेत्रोग्राद की गैरिसन ने केरेन्स्की की सरकार का तख़्ता उलट दिया है, जिस सरकार ने क्राति तथा जनता पर अपना हाथ उठाया था... मोर्चे तथा देश को यह समाचार देते हुए सैनिक क्रांतिकारी समिति सभी सिपाहियों से अनुरोध करती है कि वे अपने अफसरों के आचरण पर सतर्क दृष्टि रखें। जो अफसर प्रगट तथा स्पष्ट रूप से क्राति का पक्ष नही लेते, उन्हे फौरन शत्रु समझ कर गिरफ़्तार कर लेना चाहिये।

"पेत्रोग्राद सोवियत नई सरकार के कार्यक्रम की निम्नलिखित रूप से व्याख्या करती है: तत्काल सामान्य जनवादी शाति-सधि का प्रस्ताव, जमीदारों की जमीनो का फौरन किसानो के हाथो मे अतरण, समस्त सत्ता का सोवियतों के हाथो में अन्तरण और सविधान सभा का ईमानदारी से बुलाया जाना। जन-क्रातिकारी सेना को उन टुकड़ियों को क़तई पेत्रोग्राद भेजे जाने देना नही चाहिए, जिनके पक्का होने के बारे मे शक हो। तर्क से, नैतिक आग्रह से काम लीजिये, परतु यदि इससे काम न चले, तो कठोर बल-प्रयोग द्वारा इन सैनिकों की गतिविधि को रोक दीजिये।

"यह आवश्यक है कि मौजूदा आदेश सेना की प्रत्येक शाखा के प्रत्येक सैनिक दस्ते मे तत्काल पढ कर सुनाया जाये। जो भी व्यक्ति इस आदेश को आम सिपाहियो मे छिपाता है... वह क्राति के खिलाफ भयकर अपराध करता है और उसे क्रातिकारी कानून की पूरी सख़्ती के साथ सजा दी जायेगी।

"सिपाहियो! शांति, रोटी, ज़मीन और जनता की सरकार के लिये उठिये!"

"सभी मोर्चे और पिछायें की सेनाओं, कोरों, डिवीज़नों, रेजीमेंटों और कंपनियों की समितियों के और मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियो की सभी सोवियतों के नाम।

"सिपाहियो और क्रांतिकारी अफ़सरो!

"मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के बहुमत की राय से सैनिक क्रांतिकारी समिति ने आज्ञप्ति जारी की है कि जनरल कोर्नीलोव और उनके षड्यंत्र मे शामिल सभी साथी-संघाती पीटर-पाल किले में कैद किये जाने और उन पर सैनिक क्रांतिकारी न्यायालय में मुकदमा चलाने के लिए फ़ौरन पेत्रोग्राद लाये जायें...

"समिति यह घोषणा करती है कि जो भी इस आज्ञप्ति के पालन का प्रतिरोध करेगा, वह क्रांति के प्रति विश्वासघाती है, और उसके आदेशों को शून्य और व्यर्थ घोषित किया जाता है।

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की
पेत्रोग्राद सोवियत के अधीन
सैनिक क्रांतिकारी समिति"

"मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सभी प्रांतीय तथा मंडल सोवियतों के नाम।

"सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के प्रस्ताव द्वारा भूमि समितियों के सभी गिरफ़्तार सदस्यों को फ़ौरन रिहा किया जाता है। जिन कमिसारों ने इन्हें गिरफ़्तार किया था, वे हिरासत मे ले लिये जाने वाले हैं।

"इस घडी से समस्त सत्ता सोवियतो के हाथ मे है। अस्थायी सरकार के कमिसार हटाये जाते हैं। विभिन्न स्थानीय सोवियतों के अध्यक्षों को आमंत्रित किया जाता है कि वे सीधे सीधे क्रांतिकारी सरकार के साथ संबंध स्थापित करे।

सैनिक क्रांतिकारी समिति"

२

नगर दूमा का प्रतिवाद

"सर्वाधिक जनवादी सिद्धान्तों के आधार पर निर्वाचित केंद्रीय नगर दूमा ने घोर विशृंखलता की घड़ी में नगरपालिका के कामकाज का तथा खाद्य-संभरण के प्रबंध का भार ग्रहण किया है। संविधान सभा के चुनावों से तीन सप्ताह पहले और बाहरी दुश्मन के ख़तरे के बावजूद बोलशेविक पार्टी शस्त्र-बल से एकमात्र वैध क्रातिकारी सत्ता को हटाकर, इस समय नगरपालिका स्वायत्त शासन के अधिकारों तथा स्वतंत्रता का अतिक्रमण करने का प्रयास कर रही है और अपने कमिसारों तथा अपनी अवैध सत्ता की अधीनता स्वीकार करने की मांग कर रही है।

"इस भयानक और दुःखद घड़ी मे पेत्रोग्राद नगर दूमा अपने निर्वाचकों के सम्मुख तथा समस्त रूस के सम्मुख प्रबल रूप से घोषणा करती है कि वह अपने अधिकारो तथा अपनी स्वतंत्रता का किसी प्रकार का अतिक्रमण सहन नही करेगी और राजधानी की जनता के सकल्प द्वारा आहूत हो कर उसने जो उत्तरदायित्व ग्रहण किया है, उसका परित्याग नही करेगी।

"पेत्रोग्राद की केंद्रीय नगर दूमा रूसी जनतंत्र की सभी दूमाओं तथा ज़ेम्सत्वोओं से अपील करती है कि वे रूसी क्रांति की एक महत्तम उपलब्धि – जन-स्वशासन की स्वाधीनता तथा अनुल्लंघनीयता की रक्षा के लिये एकजुट हों।"

३

भूमि आज्ञप्ति – किसानों का "नकाज़"

"भूमि का प्रश्न अपने समग्र व्यापक रूप मे केवल जन-संविधान सभा द्वारा ही हल किया जा सकता है।

"भूमि के प्रश्न का सबसे न्यायपूर्ण हल निम्नलिखित ढंग से होना चाहिए :

"१) भूमि पर निजी स्वामित्व हमेशा के लिए ख़त्म किया जाता है; भूमि न बेची-खरीदी जा सकती है, न लगान या रेहन पर दी जा सकती है और न किसी भी अन्य प्रकार से हस्तान्तरित की जा सकती "

"सारी भूमि: राज्य की, राज-परिवार के सदस्यों की, मठों की, गिरजाघरों की, फ़ैक्टरियों की, पुश्तैनी ज्येष्ठाधिकार की, निजी, सार्वजनिक, किसानों आदि की, बिना मुआवज़ा दिये ज़ब्त कर ली जायेगी, सार्वजनिक सम्पत्ति में बदल दी जायेगी और ज़मीन जोतने वालों द्वारा उपयोज्य होगी।

"सम्पत्ति के इस उलट-फेर की लपेट में आनेवालों को केवल उतने ही समय के लिए सार्वजनिक सहायता का अधिकारी समझा जायेगा, जितना अपने को जीवन की नयी परिस्थितियों के अनुकूल ढालने के लिए उन्हें आवश्यक होगा।

"२) समस्त खनिज सम्पदा: खनिज धातु, तेल, कोयला, नमक आदि और त्यों ही राज्य के लिए महत्व रखनेवाले वन तथा जल-क्षेत्र एकमात्र राज्य द्वारा उपयोज्य होंगे। सारी छोटी छोटी नदियां, झीलें, वन आदि स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के बन्दोबस्त के तहत सामुदायिक उपयोग के लिए उपलब्ध होंगे।

"३) ऊंचे स्तर की वैज्ञानिक खेतीबारी वाली ज़मीनें, जैसे बाग, बगान, बीजों की क्यारियां, नर्सरियां, पौध-घर आदि, बंटवारे के तहत नहीं आयेंगी, बल्कि आदर्श फ़ार्म बना दी जाएंगी और अपने आकार तथा महत्व के अनुसार एकमात्र राज्य अथवा समुदायों के उपयोग के लिए दे दी जाएगी।

"शहरों तथा गावों में घरों के साथ लगी ज़मीनें, ख़ाना-बाग़ों समेत, अपने वर्तमान मालिकों के उपयोग में रह जायेंगी और ज़मीन के उन टुकड़ों का आकार तथा उनके उपयोग के लिए लगाये जानेवाले कर का स्तर कानून द्वारा निर्धारित होगा।

"४) घोड़ा-फ़ार्म, अच्छी नस्ल के पशु-पालन तथा मुर्गी-पालन आदि के सरकारी तथा निजी फार्म ज़ब्त कर लिए जाएंगे, सारी जनता की सम्पत्ति बन जायेंगे और अपने आकार तथा महत्त्व के अनुसार एकमात्र राज्य या समुदायों के उपयोग में आयें।

"मुआवज़े के प्रश्न पर संविधान सभा विचार करेगी।

"५) ज़ब्त की गयी ज़मीनों के सभी हल-बैल ज़मीनों के आकार तथा महत्व के अनुसार बिना मुआवज़ा के एकमात्र राज्य या समुदाय के उपयोग में आयें।

"जिन किसानों के पास बहुत थोड़ी जमीन है, उनके कृषि-संबंधी साज-सामान जब्त नहीं किये जायेंगे।

"६) भूमि के उपयोग का अधिकार रूसी राज्य के हर उस नागरिक को (स्त्री-पुरुष का भेदभाव किये बिना) दिया जायेगा, जो स्वयं अपने श्रम से, अपने परिवारवालों की सहायता से या साझे में उसपर खेती करना चाहेगा, परंतु केवल उसी समय तक के लिए जब तक वह उसपर खेती कर सकेगा। उजरती मजदूर लगाने की इजाज़त नहीं है।

"ग्राम-समुदाय के किसी सदस्य की लगातार दो वर्ष तक की इत्तफाकी शारीरिक अक्षमता की स्थिति में जब तक वह फिर काम करने योग्य न हो जाये, तब तक उसकी भूमि पर सामूहिक रूप से खेती करके उसकी सहायता करने के लिए ग्राम-समुदाय बाध्य है।

"जो किसान वृद्धावस्था या अस्वस्थता के कारण स्थायी रूप से अक्षम हो गये हैं और अपनी भूमि पर स्वयं खेती करने में असमर्थ हैं, उनको उस भूमि के उपयोग का अधिकार नहीं रह जायेगा, परंतु उसके बदले में उन्हें राज्य की ओर से पेंशन मिलेगी।

"७) भूमि का उपयोग समानता के आधार पर किया जायेगा, अर्थात् स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए श्रम-प्रतिमान अथवा उपभोग-प्रतिमान के अनुसार मेहनतकशों के बीच भूमि का बंटवारा किया जायेगा।

"भूमि के उपयोग के रूपों पर बिल्कुल पाबन्दी नहीं होगी। इस का फ़ैसला हर गांव और बस्ती में अलग अलग होगा कि जमीन पारिवारिक हो, गवबहरी फार्मों की हो, सामुदायिक हो, अथवा सहकारी हो।

"८) जब्त होने के बाद सारी भूमि सार्वजनिक भू-निधि में शामिल हो जायेगी। मेहनतकशों के बीच उसके बंटवारे का काम जनवादी ढंग से संगठित वर्गेतर ग्रामीण तथा नागरिक समुदायों से लेकर केंद्रीय प्रादेशिक संस्थाओं तक, समस्त स्थानीय तथा केन्द्रीय स्वशासन-संस्थाओं के हाथ में रहेगा।

"जनसंख्या में वृद्धि और कृषि की उत्पादनशीलता तथा उसके वैज्ञानिक स्तर में उन्नति के अनुसार भू-निधि का समय-समय पर पुनर्वितरण किया जायेगा।

"खेतों की सीमाओं की तबदीली की हालत में उस खेत के मूल केन्द्रीय भाग को ज्यों का त्यों रहने दिया जायेगा।

"अपने समुदाय को छोड़कर चले जानेवाले सदस्यों की भूमि भू-निधि में वापस चली जायेगी, जिस पर सब से पहला अधिकार उन लोगों को दिया जायेगा, जो छोड़कर जानेवाले सदस्यों के निकट संबंधी होंगे या उनके द्वारा नामजद किए गए होंगे।

"यदि भू-निधि में वापसी के समय किसी ज़मीन में लगी खाद या किये गये सुधारों का कोई अंश ऐसा हो, जिसका पूरी तरह लाभ न उठाया गया हो, तो उतने अंश की लागत का मुआवज़ा दिया जायेगा।

"यदि किसी इलाक़े में उपलब्ध भू-निधि स्थानीय निवासियों की आवश्यकता के लिए अपर्याप्त हो, तो अतिरिक्त आबादी को कहीं और बसाया जायेगा।

"पुनर्वासन के संगठन की जिम्मेदारी राज्य अपने ऊपर लेगा और उसका तथा औजार आदि बहम पहुंचाने का ख़र्च भी देगा।

"पुनर्वासन निम्न क्रम से किया जायेगा: पहले वे भूमिहीन किसान जो नयी जगह में जाकर बसना चाहते हैं, फिर समुदाय के ऐसे सदस्य जिनकी आदतें ख़राब है, या जो भगोड़े हैं आदि, और अंत में चिट्ठी डालकर या आपस के समझौते द्वारा।

"इस आदेश के समूचे अन्तर्य को, सारे रूस के वर्ग-चेतन किसानों के विशाल बहुमत की परम इच्छा की अभिव्यक्ति मानकर, अस्थायी कानून घोषित किया जाता है, जिसे संविधान सभा बुलाये जाने तक के लिए यथासंभव फ़ौरन लागू किया जायेगा और जहां तक इसके कुछ उपबंधों का सम्बन्ध है, उन्हें किसान-प्रतिनिधियों की उयेज़द-सोवियतों के निर्णयानुसार यथाक्रम धीरे-धीरे लागू किया जायेगा।"

४

भूमि और भगोड़े सैनिक

भूमि पर भगोड़े सैनिकों के अधिकारों के बारे मे कोई फ़ैसला करने के लिये सरकार को बाध्य नहीं होना पड़ा। युद्ध का अंत तथा सेना का वियोजन होने से भगोड़े सैनिकों की समस्या अपने आप हल हो गई...

ग्रौर वे बाहरी दुश्मन पर भी कड़ी नजर रखें, जो इस मौके का, जब मोर्चाबंदी कमजोर कर दी गई है, फ़ायदा उठाना चाहेगा..."

समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की
केंद्रीय समिति की सैनिक शाखा

• • •

'प्राव्दा' से एक उद्धरण :

"केरेन्स्की कौन है ?

"एक बलादग्राही, जिसकी जगह कोर्नीलोव ग्रौर किशकिन के साथ पीटर-पाल जेल में है।

"एक मुजरिम ग्रौर मजदूरों, सिपाहियों ग्रौर किसानों को, जिन्होंने उसमें विश्वास किया, दगा देने वाला गद्दार।

"केरेन्स्की ? सिपाहियों का हत्यारा !"

"केरेन्स्की ? दिन-दहाड़े किसानों को सूली पर चढ़ाने वाला जल्लाद !

"केरेन्स्की ? मज़दूरों का गला घोंटने वाला !

"ऐसा है यह कोर्नीलोव का ही ग्रवतार, जो इस समय स्वतंत्रता की हत्या करना चाहता है !"

सातवें ग्रध्याय की टिप्पणियां

१

दो ग्राज्ञप्तियां

प्रेस के बारे में

क्रांति तथा उसके तुरंत बाद के दिनों की गंभीर निर्णायक घड़ी में ग्रस्थायी क्रांतिकारी समिति को मजबूर होकर सभी रंगों के प्रतिक्रांतिकारी ग्रख़बारों के ख़िलाफ़ कार्रवाइयों का एक पूरा सिलसिला शुरू करना पड़ रहा है।

ऐसा करने पर चारों ओर से आवाजें आने लगी हैं कि प्रेस-स्वातंत्र्य का अतिक्रमण कर नई समाजवादी सत्ता अपने ही कार्यक्रम के मूलभूत सिद्धांतों का उल्लंघन कर रही है।

मजदूरों तथा किसानों की सरकार जनता का ध्यान इस बात की ओर दिलाती है कि हमारे देश में उदारतावाद की इस आड़ में शिक्षित वर्गों को गुप्त रूप से यह अवसर प्राप्त होता है कि वे प्रेस की समस्त सुविधाओं का अधिकांश भाग स्वयं हड़प लें और इस प्रकार जन-मानस को विषाक्त करें तथा जन-साधारण की चेतना को विभ्रान्त करें।

सभी जानते हैं कि पूंजीवादी अखबार पूंजीपति वर्ग के सबसे शक्तिशाली साधनों में है। विशेषत. इस नाजुक घड़ी में, जब मजदूरों और किसानों की नई सत्ता संहत हो रही है और जब ये अखबार बमों और मशीनगनों से कुछ कम खतरनाक नहीं हैं, उन्हें शत्रु के हाथ में छोड़ना असंभव है। यही कारण है कि भ्रष्ट, जरखरीद अखबार जो कूड़ा-करकट और कुत्सा-निंदा छाप रहे हैं, जिससे वे जनता की नई विजय को अभिभूत कर प्रसन्न होंगे, उसे रोकने की गरज से अस्थायी रूप से असाधारण कार्रवाइयां की गई हैं।

नई व्यवस्था संहत हुई नहीं कि अखबारों के खिलाफ सभी प्रशासनीय कार्रवाइयां रोक दी जायेंगी और उन्हें, कानून के सामने जिम्मेदारी की हद के अंदर, उदार से उदार तथा प्रगतिशील से प्रगतिशील नियमों के अनुसार पूर्ण स्वतंत्रता दी जायेगी...

फिर भी इस बात को ध्यान में रखते हुए कि नाजुक घड़ियों में भी प्रेस-स्वातंत्र्य पर कोई भी प्रतिबंध वहीं तक स्वीकार्य है, जहां तक कि वह अनिवार्य है, जन-कमिसार परिषद् निम्नलिखित आदेश देती है:

१. निम्नलिखित श्रेणियों के समाचारपत्र बंद किये जा सकते हैं:

(क) वे समाचारपत्र, जो मजदूरों तथा किसानों की सरकार का खुल कर मुकाबला करने और उससे नाफ़रमां होने के लिए भड़काते हैं;

(ख) जो जाहिरा और जानबूझकर ख़बरों को तोड़-मरोड़ कर उलझाव पैदा कर रहे हैं;

(ग) जो कानून द्वारा दंडनीय अपराधपूर्ण प्रकार की हरकतों के उकसावा दे रहे हैं।

२. जन-कमिसार परिषद् के निर्णय द्वारा ही किसी भी समाचारपत्र को अस्थायी अथवा स्थायी रूप से बंद किया जा सकता है।

३. मौजूदा आज्ञप्ति अस्थायी प्रकार की है और जब सार्वजनिक जीवन की सामान्य अवस्थायें पुन:स्थापित हो जायेंगी, उसे एक विशेष उकाज़ (आदेश) द्वारा रद्द कर दिया जायेगा।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्लादीमिर उल्यानोव (लेनिन)

मज़दूर-मिलिशिया के बारे में

१. मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सभी सोवियतें मज़दूर-मिलिशिया कायम करेंगी।

२. यह मज़दूर-मिलिशिया पूर्णतः मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के अधीन होगी।

३. यह आवश्यक है कि सैनिक तथा नागरिक अधिकारी मज़दूर-मिलिशिया को हथियारों से लैस करने और उसे तकनीकी साज-सामान की सप्लाई करने में, सरकार के युद्ध-विभाग के हथियारों को अधिकार में ले लेने की हद तक भी, हर प्रकार की सहायता दें।

४. यह आज्ञप्ति तार द्वारा जारी की जायेगी।

आंतरिक मामलों के जन-कमिसार
अ० इ० रीकोव

इस आज्ञप्ति ने पूरे रूस में लाल गार्डों के दस्तों की स्थापना को बढ़ावा दिया, जो आगामी गृहयुद्ध में सोवियत सरकार के सबसे महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुए।

२

हड़ताल-कोष

हड़ताली सरकारी कर्मचारियों तथा बैंक-क्लर्कों के लिये स्थापित कोष में पेत्रोग्राद तथा दूसरे नगरों के बैंकों और कोठियों तथा रूस में

व्यापार करने वाली विदेशी कंपनियों ने भी अवदान दिये थे। बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ हड़ताल करने के लिए सहमत सभी लोगों को पूरी तनख़ाहें दी गईं और कुछ की तनख़ाहें तो बढ़ाई भी गईं। हड़ताल-कोष के लिए चंदा देने वाले लोगों ने जब यह समझ लिया कि बोल्शेविक दृढ़ रूप से सत्तारूढ़ हो गये हैं और फलतः जब उन्होंने हड़ताल के लिए पैसा देने से इनकार कर दिया, हड़ताल टूट गई।

आठवें अध्याय की टिप्पणियां

१

केरेन्स्की का बढ़ाव

नौ नवंबर को केरेन्स्की और उनके कज्ज़ाक गातचिना में पहुंचे, जहां की गैरिसन ने, जिसमें बुरी तरह फूट पड़ गई थी और जो दो गुटों में बंट गई थी, फ़ौरन हथियार डाल दिये। गातचिना सोवियत के सदस्य गिरफ़्तार कर लिये गये। पहले तो उन्हें गोली मार देने की धमकी दी गई, लेकिन बाद में नेकचलनी का मुचलका देने पर उन्हें रिहा कर दिया गया।

कज्ज़ाकों के अगले दस्तों ने बिना किसी ख़ास विरोध के पाव्लोव्स्क, अलेक्सान्द्रोव्स्क और दूसरे स्टेशनों पर क़ब्ज़ा कर लिया और दूसरे दिन, अर्थात् १० नवंबर की सुबह वे त्सारस्कोये सेलो के पास पहुंच गये। देखते देखते वहां की गैरिसन तीन गुटों में बंट गई – अफ़सर, जो केरेन्स्की के प्रति वफ़ादार थे; कुछ बेसनद अफ़सर और सिपाही, जिन्होंने अपने को "तटस्थ" घोषित किया; और अधिकांश आम सिपाही, जिन्होंने बोल्शेविकों का पक्ष ग्रहण किया। नेतृत्व तथा संगठन के अभाव में बोल्शेविक सिपाही पीछे राजधानी की ओर हटे। स्थानीय सोवियत भी पीछे हटकर पूल्कोवो के गांव में चली आयी।

पूल्कोवो से त्सारस्कोये सेलो सोवियत के छः सदस्य एक मोटर में घोषणायें भर कर कज्ज़ाकों के बीच प्रचार करने के लिये गातचिना गये। उन्होंने प्रायः दिन भर गातचिना का चक्कर लगाया और एक

बारिक से दूसरी बारिक समझाते-बुझाते, बहस करते और अपील करते घूमते फिरे। शाम होते होते कुछ अफसरों को उनकी मौजूदगी का पता लगा और उन्हें गिरफ़्तार कर जनरल क्रास्नोव के सामने लाया गया, जिन्होंने कहा, "आप लोगों ने कोर्नीलोव के खिलाफ हथियार उठाया और अब आप केरेन्स्की की मुखालफत कर रहे हैं। मैं आप सब को गोली से उड़वा दूंगा!"

जिस आज्ञा द्वारा उन्हें पेत्रोग्राद हलके का मुख्य सेनापति नियुक्त किया गया था, उसे उनके सामने पढ़ते हुए क्रास्नोव ने पूछा कि क्या वे बोल्शेविक हैं? उन्होंने जवाब दिया कि हां हैं, जिस पर क्रास्नोव वहां से चले गये। थोड़ी देर बाद एक अफसर ने वहां आकर यह कहते हुए उन्हें रिहा कर दिया कि वह जनरल क्रास्नोव की आज्ञा से ऐसा कर रहा है ..

इस बीच पेत्रोग्राद से शिष्टमंडल पर शिष्टमंडल चला आ रहा था – दूमा का, उद्धार समिति का और अंत में विक्ज़ेल का शिष्टमंडल। रेल मज़दूर यूनियन ने आग्रह प्रगट किया कि गृहयुद्ध रोकने के लिये कोई समझौता किया जाये और मांग की कि केरेन्स्की बोल्शेविकों के साथ बातचीत करें और पेत्रोग्राद पर अपना बढ़ाव रोक दें। इनकार की सूरत में विक्ज़ेल ने ११ नवंबर की आधी रात से आम हड़ताल शुरू करने की धमकी दी।

केरेन्स्की ने कहा कि उन्हें इस मामले में समाजवादी मन्त्रियों तथा उद्धार समिति के साथ बातचीत करने का मौका दिया जाये। ज़ाहिर था कि वह दुविधा में पड़े हुए थे।

११ तारीख़ को कज़ाकों के अगले दस्ते क्रास्नोये सेलो पहुंच गये, जहां से स्थानीय सोवियत तथा सैनिक क्रांतिकारी समिति की पंचमेल सेना हड़बड़ी में भाग खड़ी हुई। उनमें से कुछ ने तो अपने हथियार भी डाल दिये... उसी रात वे पूल्कोवो की सरहद पर भी पहुंचे, जहां पहली बार उनका असल तौर पर मुकाबला किया गया...

केरेन्स्की की सेना को छोड़ कर चले आने वाले कज़्ज़ाक सिपाही छिटफुट पेत्रोग्राद पहुंचने लगे। उन्होंने कहा कि केरेन्स्की ने उन्हें ठगा था और मोर्चों पर ऐसी घोषणायें प्रसारित की थीं, जिनमें कहा गया था कि पेत्रोग्राद धू-धू कर जल रहा है, कि बोल्शेविकों ने जर्मनों को घुस आने

का न्योता दिया है और वे औरतों और बच्चों को क़त्ल कर रहे हैं और मनमानी लूट मचाये हुए हैं...

सैनिक क्रांतिकारी समिति ने फ़ौरन हजारों की संख्या में अपीलें छपवा कर दर्जनों "प्रचारकर्ताओं" को कज्ज़ाकों को वास्तविक परिस्थिति से परिचित कराने के लिये भेजा...

२

सैनिक क्रांतिकारी समिति की घोषणायें

"मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सभी सोवियतों के नाम।

मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस स्थानीय सोवियतों पर यह ज़िम्मेदारी डालती है कि वे अविलंब सभी प्रतिक्रांतिकारी तथा यहूदी-विरोधी उपद्रवों और सभी दंगो-फ़सादों का, चाहे वे जिस प्रकार के भी क्यों न हों, मुकाबला करने के लिये ज़ोरदार से ज़ोरदार क़दम उठायें। मजदूरों, किसानों तथा सैनिकों की क्रांति की प्रतिष्ठा किसी भी प्रकार के उपद्रव को सहन नहीं कर सकती...

"पेत्रोग्राद के लाल गार्डों, क्रांतिकारी गैरिसन तथा मल्लाहों ने राजधानी में पूर्ण शांति तथा सुव्यवस्था क़ायम रखी है।

"मजदूरो, सिपाहियो तथा किसानो, आपको सर्वत्र पेत्रोग्राद के मजदूरों और सिपाहियों की मिसाल पर चलना चाहिये।

"साथी सिपाहियो और कज्ज़ाको, सच्ची क्रांतिकारी सुव्यवस्था कायम रखने की ज़िम्मेदारी आपके कंधों पर आ पड़ी है...

"समूचे क्रांतिकारी रूस तथा पूरी दुनिया की निगाहें आपके ऊपर लगी हुई हैं...

"सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस आदेश करती है:

"मोर्चे पर केरेन्स्की द्वारा दोबारा लागू किये गये मृत्यु-दंड का अंत किया जायेगा।

"देश में पूर्ण प्रचार-स्वातंत्र्य पुनःस्थापित किया जायेगा। सभी सिपाही तथा क्रांतिकारी अफ़सर, जो इस समय तथाकथित राजनीतिक 'अपराधों' के लिए जेल में बंद हैं, फ़ौरन रिहा कर दिये जायेंगे।

"भूतपूर्व प्रधान मंत्री केरेन्स्की, जनता ने जिनका तख़्ता उलट दिया है, सोवियतों की कांग्रेस की अधीनता स्वीकार करने से इनकार करते हैं और अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा निर्वाचित क़ानूनी सरकार – जन-कमिसार परिषद् – के ख़िलाफ संघर्ष करने की कोशिश करते हैं। मोर्चे ने केरेन्स्की की मदद करने से इनकार कर दिया है। मास्को ने नई सरकार का समर्थन किया है। अनेक नगरों (मीन्स्क, मोगिलयोव, ख़ार्कोव) में सत्ता सोवियतों के हाथ मे है। कोई भी पैदल टुकड़ी मज़दूरों और किसानों की सरकार के ख़िलाफ़ अभियान करने के लिये तैयार नहीं है, उस सरकार के ख़िलाफ, जिसने सेना तथा जनता के दृढ़ संकल्प के अनुसार शांति-वार्ता शुरू की है और किसानों को भूमि दी है...

"हम सार्वजनिक रूप से चेतावनी देते हैं कि अगर कज़्ज़ाक केरेन्स्की को रोकते नहीं हैं, जिन्होंने कज़्ज़ाकों को धोखा दिया है और जो पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने में उनका नेतृत्व कर रहे हैं, तो क्रांतिकारी शक्तियां क्रांति की बहुमूल्य उपलब्धियों – शांति तथा भूमि – की रक्षा के लिए पूरे जोर-शोर से उठ खड़ी होंगी।

"पेत्रोग्राद के नागरिको! केरेन्स्की राजधानी को जर्मनों के हवाले कर देने की इच्छा करनेवाले किशकिन, नगरपालिका खाद्य-संभरण का अंतर्ध्वंस करने वाले यमदूत-सभाई रूतेनबेर्ग और तमाम जनवादियों द्वारा घृणा की दृष्टि से देखे जाने वाले पालचीन्स्की के हाथों में अपने अधिकार सुपुर्द कर शहर से भाग खड़े हुए हैं। आपको जर्मनों के, अकाल और खूरेज़ क़त्ले-आम के सामने निराश्रित छोड़कर केरेन्स्की भाग खड़े हुए हैं। विद्रोही जनता ने केरेन्स्की के मन्त्रियों को गिरफ़्तार कर लिया है और आपने देखा है कि किस प्रकार पेत्रोग्राद की सुव्यवस्था तथा संभरण-प्रबंध में तत्काल सुधार आया है। अभिजात मालिकों, पूंजीपतियों, सट्टेबाजों के हुक्म पर केरेन्स्की ने आपके ख़िलाफ़ इस गरज से मुहिम शुरू की है कि भूमि जमींदारों को वापिस दी जा सके और इस घृण्य तथा विध्वंसपूर्ण युद्ध को लगातार चलाया जा सके।

"पेत्रोग्राद के नागरिको! हम जानते है कि आपका प्रबल बहुमत जनता की क्रातिकारी सत्ता के पक्ष मे तथा केरेन्स्की के नेतृत्व मे चलने वाले कोर्नीलोवपथियों के ख़िलाफ़ है। आप नपुसक पूजीवादी षड्यंत्रकारियो की झूठी घोषणाओं के बहकावे में न आइये। उन्हें बिना किसी रू-रिआयत के कुचल दिया जायेगा।

"मजदूरो, किसानो, सिपाहियो! हम आपका क्रातिकारी निष्ठा तथा अनुशासन के लिए आह्वान करते हैं!

"करोड़ों किसान और सिपाही हमारे साथ है।

"जन-क्रांति की विजय सुनिश्चित है!"

पेत्रोग्राद, २८ अक्तूबर, १९१७

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की
पेत्रोग्राद सोवियत की
सैनिक क्रांतिकारी समिति

३

जन-कमिसार परिषद् की आज्ञप्तियां

इस पुस्तक मे मै उन्ही आज्ञप्तियो को दे रहा हूं, जो मेरी राय मे बोल्शेविकों द्वारा सत्ता पर अधिकार किये जाने से संबंध रखती है। शेप आज्ञप्तियां सोवियत राज्य के ढाचे के विशद वर्णन की कोटि में आती है और प्रस्तुत पुस्तक में उनके लिए स्थान नही है। इनकी दूसरी पुस्तक, 'कोर्नीलोव काड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की सधि तक' मे, जो इस समय तैयार हो रही है, विशद चर्चा की जायेगी।

आवासों के संबंध में

१. स्वाधीन स्वशासी नगरपालिकाओं को अधिकार है कि वे सभी ख़ाली आवासो को अपने अधिकार में ले लें।

२. नगरपालिकायें, उनके द्वारा स्थापित नियमों तथा प्रबंध-व्यवस्था के अनुसार, सभी सुलभ ग्रावासों में ऐसे नागरिकों को ग्राश्रय दे सकती हैं, जिनके पास रहने का स्थान नहीं है, या जो अत्यंत जन-संकुल स्थानों मे रहते हैं।

३. नगरपालिकायें ग्रावासों की एक निरीक्षण-सेवा स्थापित तथा संगठित कर सकती हैं और उसके अधिकारों को सुनिश्चित कर सकती हैं।

४. नगरपालिकायें ग्रावास-समितियों की स्थापना के बारे में ग्रादेश जारी कर सकती हैं, उनके संगठन की रूपरेखा तथा उनके अधिकारों को निश्चित कर सकती हैं और उन्हें क़ानूनी अधिकार दे सकती हैं।

५. नगरपालिकायें ग्रावास-न्यायाधिकरणों की स्थापना कर सकती हैं तथा उनके अधिकारों और उनकी प्रभुता को निश्चित कर सकती हैं।

६. यह ग्राज्ञप्ति तार द्वारा जारी की जाती है।

ग्रातरिक मामलों के जन-कमिसार

ग्र० इ० रीकोव

सामाजिक बीमा के बारे में

रूसी सर्वहारा ने अपने फरहरे पर उजरती मजदूरों और साथ ही शहर और गांव के ग़रीबों के लिए मुकम्मल सामाजिक बीमा का वचन अंकित किया है। जार की, जमींदारों और पूंजीपतियों की सरकार और समझौतापरस्त संयुक्त सरकार भी सामाजिक बीमा के बारे मे मज़दूरों की इच्छाओं को पूरा करने मे असमर्थ रही।

मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के समर्थन का भरोसा रखती हुई मजदूरों तथा किसानों की सरकार रूस के मज़दूर वर्ग तथा शहर और गाव के गरीबों के सामने घोषणा करती है कि वह अविलंब मजदूर-संगठनों द्वारा प्रस्तावित सूत्रों के आधार पर सामाजिक बीमा क़ानूनों को तैयार करेगी:

१. निरपवाद रूप से सभी उजरती मजदूरों तथा साथ ही शहर और गांव के सभी ग़रीबों के लिए सामाजिक बीमा।

२. ऐसी बीमा-व्यवस्था, जिसमें कार्य-क्षमता के ह्रास की सभी श्रेणियां ग्रा

जायें जैसे रोग, निर्बलता, वृद्धावस्था, प्रसव, विधवावस्था, अनाथावस्था तथा बेकारी।

३. बीमे का सारा ख़र्च मालिकों के ज़िम्मे हो।

४. कार्य-क्षमता के सभी प्रकार के ह्रास तथा बेकारी की अवस्था में बतौर मुआवज़े के पूरी तनख़ाह दी जाये।

५. सभी बीमा-संस्थाओं का मजदूर ख़ुद पूरी तरह प्रबंध करें।

रूसी जनतन्त्र की सरकार के नाम पर श्रम जन-कमिसार

अलेक्सान्द्र श्ल्याप्निकोव

जन-शिक्षा के बारे में

रूस के नागरिको!

७ नवंबर के विद्रोह के फलस्वरूप मेहनतकश जन-साधारण ने पहली बार वास्तविक सत्ता पर अधिकार किया है।

सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस ने इस सत्ता को अस्थायी रूप से सोवियतों की कार्यकारिणी समिति तथा जन-कमिसार परिषद् दोनों के हाथों मे अंतरित कर दिया है।

क्रांतिकारी जनता की इच्छानुसार मुझे शिक्षा जन-कमिसार नियुक्त किया गया है।

जहां तक जन-शिक्षा केंद्रीय सरकार के हाथ में है, वहां तक इसका सामान्य निर्देश करने का कार्य, संविधान सभा बुलाये जाने तक, एक जन-शिक्षा आयोग के सुपुर्द किया जाता है, जिसके अध्यक्ष तथा कार्यकारी अधिकारी जन-कमिसार हैं।

यह राजकीय आयोग किन बुनियादी प्रस्थापनाओं का आधार ग्रहण करेगा? उसका अधिकार-क्षेत्र किस प्रकार निश्चित किया जायेगा?

शिक्षा-संबंधी क्रिया-कलाप का सामान्य मार्ग: एक ऐसे देश में, जहां निरक्षरता तथा अज्ञान का बोलबाला है, प्रत्येक सच्ची जनवादी सत्ता को शिक्षा के क्षेत्र में इस जहालत से संघर्ष करना अपना प्रथम उद्देश्य बनाना होगा। उसे आधुनिक शिक्षा-विज्ञान की आवश्यकताओं के अनुरूप स्कूलों का एक जाल बिछा कर कम से कम समय में सार्विक साक्षरता को उपलब्ध

करना होगा। उसे सब के लिए सार्विक, अनिवार्य, निःशुल्क शिक्षा आरंभ करनी होगी, और साथ ही ऐसे शिक्षक-संस्थानों और ट्रेनिंग स्कूलों का एक जाल बिछा देना होगा, जो कम से कम समय मे जन-शिक्षकों की एक शक्तिशाली सेना तैयार कर देंगे, जो हमारे निस्सीम रूस की जनता की सार्विक शिक्षा के लिए इतनी जरूरी है।

विकेंद्रीकरण: राजकीय जन-शिक्षा आयोग ऐसी केंद्रीय संस्था कदापि नही है, जिसे शिक्षण तथा अनुदेश संस्थानों पर हुकूमत चलाने का अधिकार है। इसके विपरीत स्कूलो का सारा काम स्थानीय स्वशासी निकायों के हाथो मे अंतरित कर देना चाहिए। राज्य केंद्र तथा नगरपालिका केंद्रों दोनों को चाहिए कि वे मजदूरो, सिपाहियों और किसानों के, खुद पेशकदमी करके, सांस्कृतिक तथा शिक्षा संस्थानों को स्थापित करने के स्वतंत्र कार्य को पूर्ण स्वायत्तता प्रदान करे।

राजकीय आयोग का काम है कि वह नगरपालिका संस्थाओं तथा निजी संस्थाओ को, विशेषतः मजदूरों द्वारा स्थापित विशेष वर्ग-चरित्र रखनेवाली संस्थाओ को एक सूत्र मे बाधे और उनके भौतिक तथा नैतिक समर्थन के लिए सुविधायें जुटाने मे उनकी सहायता करे।

राजकीय जन-शिक्षा समिति: राजकीय जन-शिक्षा समिति ने, जो अपनी सदस्यता की दृष्टि से एक पर्याप्त जनवादी निकाय है और जिसे अनेक विशेषज्ञों की सेवा प्राप्त है, क्रांति के आरंभ से ही अनेक क्रमबद्ध महत्त्वपूर्ण कानूनी योजनाओ को तैयार किया है। राजकीय आयोग सचमुच इस समिति का सहयोग चाहता है।

उसने समिति के ब्यूरो को यह अनुरोध करते हुए लिखा है कि वह निम्नलिखित कार्यक्रम को पूरा करने के लिए समिति का एक असाधारण अधिवेशन बुलाये:

१. समिति मे प्रतिनिधित्व के नियमों मे अधिक जनवादीकरण की दिशा मे संशोधन।

२. समिति के अधिकारों मे, उन्हें और व्यापक रूप देते हुए, इस प्रकार का परिवर्तन कि समिति को, रूस में सार्वजनिक अनुदेश तथा शिक्षा का जनवादी सिद्धांतो के आधार पर पुन.संगठन करने के लिए उपयुक्त क़ानूनी योजनाओं को तैयार करने के निमित्त, एक बुनियादी राजकीय संस्थान मे रूपान्तरित किया जा सके।

३. नये राजकीय आयोग के साथ सम्मिलित रूप से उन कानूनों का संशोधन, जिन्हें समिति ने पहले से ही तैयार कर लिया है और जिनके संशोधन की आवश्यकता इसलिए उत्पन्न हुई है कि, उनके इस संकुचित रूप में भी, उन्हें सपादित करने मे समिति को उसके रास्ते मे रोड़ा अटकाने वाले पहले के मंत्रिमंडलों की पूंजीवादी भावना का ध्यान रखना पड़ा था।

इस संशोधन के पश्चात् ये क़ानून बिना किसी प्रकार की नौकरशाही लाल फीतेशाही के, क्रांतिकारी पद्धति से लागू किये जायेंगे।

अध्यापक तथा समाजशास्त्री: राजकीय आयोग जनता को—देश के स्वामियो को—शिक्षित करने के उज्ज्वल तथा सम्मानपूर्ण कार्य मे अध्यापकों का स्वागत करता है।

जन-शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी सत्ता अध्यापको के प्रतिनिधियो की ध्यानपूर्ण मंत्रणा के बिना कोई कदम नही उठा सकती।

दूसरी ओर, एकमात्र विशेषज्ञों के सहयोग द्वारा ही कोई फ़ैसला किसी भी सूरत मे नही किया जा सकता। यही बात सामान्य शिक्षा-संस्थानो के सुधारो के ऊपर भी लागू होती है।

सामाजिक शक्तियों के साथ अध्यापकों का सहयोग—आयोग स्वयं अपने संघटन में, राजकीय समिति मे तथा अपने समस्त क्रिया-कलाप में इसी रूप मे व्यवहार करेगा।

आयोग की दृष्टि मे उसका पहला काम यह है कि वह अध्यापकों का, और सर्वप्रथम, उन बेहद गरीब परंतु सांस्कृतिक कार्य के प्रायः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदाताओं—प्रथमिक स्कूलो के अध्यापकों—का दर्जा उठाये। उनकी जायज़ मागे फौरन और किसी भी क़ीमत पर पूरी होनी चाहिये। स्कूलों के सर्वहारा मांग करते रहे हैं कि उनकी तनखाह बढ़ा कर एक सौ रूबल माहवार कर दी जायें, लेकिन इसका कोई असर नही हुआ। रूसी जनता के विशाल बहुसंख्यक भाग को शिक्षा देने वाले अध्यापकों को अब और मोहताजी की हालत मे रखना कलंक की बात होगा।

संविधान सभा निस्संदेह शीघ्र ही अपना काम शुरू करेगी। वही हमारे देश मे राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन की व्यवस्था को और साथ ही जन-शिक्षा के संगठन के सामान्य चरित्र को स्थायी रूप से निर्धारित कर सकती है।

३०*

सोवियतों के हाथ में सत्ता के अंतरण के साथ अब संविधान सभा का वास्तविक जनवादी चरित्र सुनिश्चित बन गया है। राजकीय समिति पर भरोसा करते हुए राजकीय आयोग जिस नीति का अनुसरण करेगा, उसमें संविधान सभा के प्रभाव से शायद ही कोई परिवर्तन करना पड़े। उसका पूर्व-निर्धारण किये विना, नई जनता की सरकार यह समझती है कि इस क्षेत्र में ऐसी अनेक कार्रवाइयों के लिए क़ानून बना कर वह अपनी अधिकार-सीमा का उल्लंघन नहीं कर रही है, जिनका उद्देश्य है देश के मानसिक जीवन को यथाशीघ्र समृद्ध तथा प्रबुद्ध बनाना।

मंत्रालय : इस मध्य में मौजूदा काम को जन-शिक्षा मंत्रालय द्वारा ही चलाना होगा। उसके रूप तथा गठन में जो परिवर्तन आवश्यक हैं, उन्हे संपन्न करने के लिए सोवियतों की कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्वाचित राजकीय आयोग तथा राजकीय समिति जिम्मेदार होगी। कहने की जरूरत नही कि जन-शिक्षा के क्षेत्र में राजकीय नेतृत्व की क्रम-व्यवस्था संविधान सभा द्वारा स्थापित की जायेगी। तब तक राजकीय जन-शिक्षा समिति तथा राजकीय जन-शिक्षा आयोग दोनों के लिये ही मंत्रालय एक कार्यकारी उपकरण की भूमिका अदा करेगा।

देश के निस्तार की गारंटी इस बात में है कि उसकी सभी प्राणवान् तथा वास्तव में जनवादी शक्तियां सहयोग करें।

हमारा विश्वास है कि श्रमिक जनता तथा ईमानदार प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों के प्रबल प्रयास के फलस्वरूप देश इस कष्टप्रद संकट से निकलेगा और पूर्ण जनवाद स्थापित कर समाजवाद तथा राष्ट्रों के भाईचारे के युग में प्रवेश करेगा।

जन-शिक्षा के जन-कमिसार

अ० व० लुनाचास्की

क़ानूनों के अनुसमर्थन तथा प्रकाशन-क्रम के विषय में

१. जब तक संविधान सभा बुलाई नहीं जाती, क़ानूनों का अधिनियमन तथा प्रकाशन मजदूरों, किसानों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की अखिल

रूसी कांग्रेस द्वारा निर्वाचित मौजूदा मजदूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार द्वारा आदेशित क्रमानुसार संपन्न किया जायेगा।

२. प्रत्येक विधेयक संबंधित मंत्रालय द्वारा, नियमानुसार अधिकृत जन-कमिसार द्वारा हस्ताक्षरित होकर सरकार के विचारार्थ प्रस्तुत किया जायेगा; अथवा वह सरकार से संलग्न विधायी विभाग द्वारा विभाग-अध्यक्ष के हस्ताक्षर के साथ पेश किया जायेगा।

३. सरकार द्वारा अनुसमर्थित होने पर यह आज्ञप्ति अपने अंतिम रूप में रूसी जनतंत्र के नाम पर जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष द्वारा अथवा उनके स्थान पर उन जन-कमिसार द्वारा हस्ताक्षरित की जायेगी, जिन्होंने उसे सरकार के विचारार्थ प्रस्तुत किया था और फिर इस आज्ञप्ति को प्रकाशित किया जायेगा।

४. जिस तारीख़ को यह आज्ञप्ति आधिकारिक 'मजदूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार के गजेट' मे प्रकाशित की जायेगी, उसी तारीख़ से वह क़ानून का दर्जा हासिल करेगी।

५. आज्ञप्ति मे प्रकाशन-तिथि से भिन्न एक तिथि का निर्देश हो सकता है, जब यह आज्ञप्ति कानून का रूप लेगी, अथवा उसे तार के जरिये प्रवर्तित किया जा सकता है; इस सूरत में प्रत्येक स्थान में तार का प्रकाशन होने पर उसे कानून माना जायेगा।

६. राज्य सेनेट द्वारा सरकार के विधायी अधिनियमों का प्रख्यापन समाप्त किया जाता है। जन-कमिसार परिषद् से संलग्न विधायी विभाग समय समय पर सरकार के उन विनियमों तथा आदेशों के संग्रहों को प्रकाशित करता है, जिन्हे कानून का दर्जा हासिल है।

७. मजदूरों, किसानों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति (त्से-ई-काह) को सदा सरकार की किसी भी आज्ञप्ति को रद्द या मुलतवी करने या बदलने का अधिकार होगा।

रूसी जनतंत्र के नाम पर

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष

व्ला० उल्यानोव-लेनिन

४

शराब की समस्या

सैनिक क्रांतिकारी समिति द्वारा जारी किया गया आदेश:

१. जब तक दूसरा आदेश न दिया जाये, एलकोहल तथा एलकोहलीय पेयों के उत्पादन की मनाही की जाती है।

२. एलकोहल तथा एलकोहलीय पेयों के सभी उत्पादनकर्ताओं को आदेश दिया जाता है कि वे २७ तारीख़ से पहले इस बात की सूचना दें कि उनके गोदाम ठीक ठीक कहां पर हैं।

३. इस आदेश का उल्लंघन करने वाले सभी अपराधियों पर सैनिक क्रांतिकारी अदालत मे मुकद्दमा चलाया जायेगा।

सैनिक क्रांतिकारी समिति

• • •

आदेश नं० २

फ़िनलैंडी गार्ड रिज़र्व रेजीमेंट की समिति द्वारा सभी आवास-समितियों तथा वासील्येव्स्की ओस्त्रोव इलाक़े के नागरिकों के नाम

पूंजीवादियों ने सर्वहारा के खिलाफ़ लड़ाई का एक बहुत नापाक तरीका चुना है; उन्होंने शहर के मुख्तलिफ़ हिस्सों में शराब के बड़े बड़े गोदाम क़ायम किये हैं और वे सिपाहियों के बीच शराब बटवा रहे हैं और इस प्रकार क्रांतिकारी सेना की पांतों में असंतोष उत्पन्न करने की कोशिश कर रहे हैं।

सभी आवास-समितियों को आदेश दिया जाता है कि इस आदेश के चिपकाये जाने के तीन घंटे के अन्दर वे स्वयं गुप्त रूप से फ़िनलैंडी गार्ड रेजीमेंट की समिति के अध्यक्ष को यह सूचित करें कि उनके मकानों में कितनी शराब मौजूद है।

जो लोग इस आदेश का उल्लंघन करेंगे, उन्हें गिरफ़्तार कर लिया जायेगा और उन पर एक ऐसी अदालत में मुकद्दमा चलाया जायेगा, जो उनके साथ रू-रियायत नहीं करेगी। उनकी जायदाद जब्त कर ली जायेगी और उनके पास शराब का जो स्टाक पाया जायेगा, उसे चेतावनी के दो घंटे बाद डाइनामाइट से उड़ा दिया जायेगा, क्योंकि जैसा कि अनुभव से मालूम हुआ है ज्यादा नरम कार्रवाइयों से चाहा हुआ नतीजा नहीं निकलता।

याद रखिये, डाइनामाइट लगाने से पहले दूसरी कोई चेतावनी नहीं दी जायेगी।

फिनलैंडी गार्ड रेजीमेंट की रेजीमेंट समिति

नौवें अध्याय की टिप्पणियां

१

सैनिक क्रान्तिकारी समिति, बुलेटिन नं० २

१२ नवंबर की शाम को केरेन्स्की ने क्रांतिकारी सेनाओं के पास प्रस्ताव भेजा कि वे "अपने हथियार डाल दें"। केरेन्स्की के सिपाहियों ने गोलाबारी शुरू की। हमारे तोपखाने ने इसका जवाब दिया और दुश्मन की तोपों को ख़ामोश कर दिया। कज्ज़ाकों ने हमला शुरू किया। मल्लाहों, लाल गार्डों और सिपाहियों की भयानक गोलाबारी ने कज्ज़ाकों को पीछे हटने पर मजबूर किया। हमारी बख़्तरबंद गाड़ियां दुश्मन की पांतों में पिल पड़ीं। दुश्मन भाग रहा है। हमारे सिपाही पीछा कर रहे हैं। केरेन्स्की को गिरफ़्तार कर लेने का हुक्म दिया गया है। क्रांतिकारी सैनिकों ने त्सारस्कोये सेलो पर कब्ज़ा कर लिया है।

लाटवियाई बंदूकची: सैनिक क्रांतिकारी समिति को पक्की सूचना मिली है कि बहादुर लाटवियाई बंदूकचियों की टुकड़ी मोर्चे से आ पहुंची है और उसने केरेन्स्की के गिरोहों के पिछाये में मोर्चा कायम किया है।

केरेन्स्की के दस्तों ने गातचिना तथा त्सारस्कोये सेलो पर इसलिये क़ब्ज़ा कर लिया था कि इन जगहों में तोपें और मशीनगनें बिल्कुल ही न थी, जब कि केरेन्स्की के घुड़सवारों को शुरू से ही तोपख़ाने की मदद हासिल थी। पिछले दो दिनों में हमारे स्टाफ को क्रांतिकारी सैनिकों के लिए आवश्यक संख्या में तोपें, मशीनगनें, मैदानी टेलीफोन वग़ैरह जुटाने के लिए जोरदार काम करना पड़ा। जब यह काम—स्थानीय सोवियतों और कारख़ानों (पुतीलोव कारख़ाने, ओबूख़ोव और दूसरे कारख़ानों) की प्रबल सहायता से पूरा कर लिया गया, तब प्रत्याशित मुठभेड़ का परिणाम संदेह में न रहा। क्रांतिकारी सैनिकों के पास न केवल अतिरिक्त मात्रा में साज-सामान था और पेत्रोग्राद जैसा एक शक्तिशाली भौतिक आधार था, उन्हें अत्यधिक नैतिक श्रेष्ठता भी प्राप्त थी। पेत्रोग्राद की सभी रेजीमेंटें बड़े जोश-ख़रोश से मोर्चों की ओर बढ़ी। गैरिसन-सम्मेलन ने पांच सिपाहियों का एक नियंत्रण-आयोग चुना और इस प्रकार मुख्य सेनापति तथा गैरिसन के बीच पूर्ण एकता को सुनिश्चित बना दिया। गैरिसन-सम्मेलन में सर्वसम्मति से निर्णायक कार्रवाई शुरू करने का फ़ैसला किया गया।

१२ नवंबर को जो गोलाबारी शुरू हुई, उसमें दिन के तीन बजे तक असाधारण तेजी आ गई। कज्जाकों की हिम्मत बिल्कुल ही टूट गई। उनके यहां से एक दूत क्रास्नोये सेलो के दस्ते के स्टाफ के पास आया और उसने गोलाबारी बंद करने का प्रस्ताव किया और यह धमकी दी कि अगर ऐसा नही किया गया तो उसकी ओर से "निर्णायक" कार्रवाई की जायेगी। उसे जवाब दिया गया कि गोलाबारी तभी बंद की जायेगी, जब केरेन्स्की अपने हथियार डाल दें।

बराबर ज़ोर पकड़ती हुई इस लड़ाई में सेना के सभी हिस्सों—मल्लाहों, सिपाहियों और लाल गार्डों—ने असीम साहस प्रदर्शित किया। मल्लाह तब तक आगे बढते गये, जब तक कि उन्होने अपने सारे कारतूस खाली न कर दिये। हताहतों की संख्या अभी तक निश्चित नही की गई है, परंतु प्रतिक्रांतिकारी सैनिकों में, जिन्हें हमारी एक

बख्तरबंद गाड़ी के कारन भारी क्षति उठानी पड़ी, अधिक लोग हताहत हुए हैं।

केरेन्स्की के स्टा.. ने इस भय से कि कहीं वे घिर न जायें, पीछे हटने का हुक्म दिया। उनकी यह पसपाई देखते देखते भगदड़ बन गयी। रात के ११—१२ बजे तक रेडियो-स्टेशन समेत त्सारस्कोये सेलो पूरी तरह सोवियत सैनिकों के हाथ में आ गया। कज्जाक गातचिना और पिनो की तरफ़ भागे।

सैनिकों के मनोबल की जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। भागते हुए कज्जाकों का पीछा करने का हुक्म दिया गया है। त्सारस्कोये सेलो स्टेशन से तुरंत ही एक रेडियो-तार मोर्चे तथा पूरे रूस में सभी स्थानीय सोवियतों के पास भेजा गया। आगे की घटनायें फ़ौरन सूचित की जायेंगी।

२

पेत्रोग्राद में १३ तारीख की घटनायें

पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक में जिनोव्येव ने कहा, "शत्रु को बल-प्रयोग द्वारा ही चूर किया जा सकता है। फिर भी कज्जाकों को हर शांतिपूर्ण उपाय से अपनी ओर लाने की कोशिश न करना एक अपराध होगा... हमें जिस चीज की जरूरत है, वह है सैनिक विजय... युद्ध-विराम की खबर गलत है... जब दुश्मन कोई नुकसान करने क़ाबिल नहीं रहेगा, हमारा सैनिक स्टाफ़ युद्ध-विराम संपन्न करने के लिए तैयार होगा...

"इस समय हमारी विजय के प्रभाव से एक नई राजनीतिक परिस्थिति उत्पन्न हो रही है... आज समाजवादी-क्रांतिकारी नई सरकार में बोल्शेविकों को शामिल करने की प्रवृत्ति रखते हैं... एक निर्णायक विजय जरूरी है, ताकि जो लोग दुविधा में पड़े हुए हैं उनकी हिचकिचाहट दूर हो जाये..."

नगर दूमा में पूरा ध्यान नई सरकार के गठन पर केंद्रित था।

कैडेट शिंगारेव ने ज़ोर देकर कहा कि नगरपालिका को बोल्शेविकों के साथ किसी भी समझौते में हिस्सा नही लेना चाहिये... "जब तक कि ये सिरफिरे अपने हथियार नही रख देते और ख़ुदमुख़्तार अदालतों के अख़्तियार को नही मानते, उनके साथ कोई भी समझौता नामुमकिन है..."

येदीन्स्त्वो दल की ओर से यार्त्सेव ने कहा कि बोल्शेविकों के साथ किसी भी प्रकार का समझौता करने का मतलब होगा बोल्शेविकों की जीत...

समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से मेयर श्रेइदेर ने बयान दिया कि वह बोल्शेविकों के साथ किसी भी तरह के समझौते के ख़िलाफ़ हैं... "जहां तक सरकार का प्रश्न है, सरकार जनता की इच्छा से उत्पन्न होनी चाहिये और चूंकि जनता की इच्छा नगरपालिका-चुनावों में अभिव्यक्त हुई है, इसलिये जनता की जो इच्छा सरकार को उत्पन्न कर सकती है, वह वास्तव में दूमा मे ही केंद्रित है..."

दूसरे भाषणकर्ताओं के बोलने के बाद, जिनमे एकमात्र मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों का प्रतिनिधि ही बोल्शेविकों को नई सरकार मे लेने के बारे मे विचार करने के पक्ष में था, दूमा ने वोट देकर फ़ैसला किया कि उसके प्रतिनिधि विक्ज़ेल के सम्मेलन मे भाग लेते रहें, परंतु सबसे पहले अस्थायी सरकार की पुन:स्थापना के लिए आग्रह किया जाये और बोल्शेविकों को नई सरकार से बाहर ही रखा जाये।

३

युद्ध-विराम। उद्धार समिति को क्रास्नोव का उत्तर

"अविलंब युद्ध-विराम प्रस्तावित करते हुए आपने जो तार भेजा है, उसके जवाब मे मुख्य सेनापति, इस बात की इच्छा करते हुए कि व्यर्थ में और अधिक रक्तपात न हो, वार्ता शुरू करने और सरकार तथा विद्रोहियों की सेनाओं के बीच संबंध स्थापित करने के लिए सहमति प्रगट करते हैं। वह विद्रोहियों के जनरल स्टाफ से प्रस्ताव करते हैं कि वह अपनी रेजीमेंटों को पेत्रोग्राद वापिस बुलाये, लीगोवो–पूल्कोवो–कोलपिनो लाइन को

तटस्थ घोषित करे और सरकार की घुड़सवार-सेना के अगले दस्तों को सुव्यवस्था स्थापित करने के उद्देश्य से त्सारस्कोये सेलो में प्रवेश करने दे। इस प्रस्ताव का उत्तर कल सवेरे ८ बजे से पहले हमारे दूतों के हाथ में होना चाहिए।

क्रास्नोव"

४

त्सारस्कोये सेलो की घटनाये

जिस शाम को केरेन्स्की के सैनिक त्सारस्कोये सेलो से पीछे हटे, उसी शाम कुछ पादरियों ने शहर की सड़कों पर एक धार्मिक जुलूस निकाला और नागरिकों के सामने भाषण दिये, जिनमें उन्होंने जनता से अपील की कि वह वैध सत्ता का, अर्थात् अस्थायी सरकार का समर्थन करे। प्रत्यक्षदर्शियों के बयान के मुताबिक कज़ाकों के भागने के बाद जब लाल गार्डों की पहली टुकडिया शहर में दाखिल हुई, पादरियों ने सोवियतों के खिलाफ जनता को भड़काया और रस्पूतिन की कब्र पर, जो शाही महल के पीछे थी, दुआये मांगी। आग-बबूला हो कर लाल गार्डों ने एक पादरी, धर्मपिता इवान कुचूरोव को गिरफ़्तार कर लिया और उन्हे गोली मार दी...

जिस वक्त लाल गार्ड शहर में दाखिल हुए, ठीक उसी वक्त बिजली की बत्तिया गुल कर दी गई और सड़कों पर घुप अंधेरा छा गया। सोवियत सैनिकों ने बिजलीघर के डाइरेक्टर लुबोविच को गिरफ़्तार कर लिया और उनसे पूछा कि उन्होंने बत्तिया क्यों बुझवाई थी। कुछ देर बाद जिस कमरे में उन्हे बंद कर दिया गया था, वहा वह मरे पाये गये; उन्होंने अपने माथे में गोली मार ली थी।

दूसरे दिन पेत्रोग्राद के बोल्शेविक-विरोधी अख़बारों ने बड़ी बड़ी सुर्खियों में छापा, "प्लेखानोव को ३६ डिग्री (सें०) का बुख़ार!" प्लेखानोव त्सारस्कोये सेलो में रहते थे और बीमार पड़े थे। लाल गार्डों ने

उस मकान में आकर हथियारों के लिए तलाशी ली और बूढ़े आदमी से सवाल किये।

"आप समाज के किस वर्ग से आते हैं?" उन्होंने पूछा।

प्लेखानोव ने उत्तर दिया, "मैं एक क्रांतिकारी हूं, जिसने चालीस वर्षों से अपना जीवन स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए अर्पित कर रखा है!"

"बहरहाल," एक मजदूर ने कहा, "अब आपने अपने को पूंजीपति वर्ग के हाथों बेच दिया है।"

मजदूर रूसी सामाजिक-जनवाद के मार्गदर्शक और प्रवर्तक प्लेखानोव को भूल गये थे!

५

सोवियत सरकार की अपील

"गातचिना के दस्तों ने, जिन्हें केरेन्स्की ने धोखा दिया था, अपने हथियार डाल दिये हैं और केरेन्स्की को गिरफ़्तार करने का फ़ैसला किया है। प्रतिक्रांतिकारी मुहिम का वह सरगना भाग खड़ा हुआ है। सेना ने विशाल बहुमत से सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस और उसके द्वारा स्थापित सरकार के समर्थन की घोषणा की है। मोर्चे से बीसों प्रतिनिधि सोवियत सरकार को सेना की वफ़ादारी का विश्वास दिलाने के लिए भागे-भागे पेत्रोग्राद पहुंचे हैं। सचाई को कितना तोड़ा-मरोड़ा गया, क्रांतिकारी मजदूरों, सिपाहियों और किसानों को बदनाम किया गया, लेकिन उससे जनता को पस्त न किया जा सका। मजदूरों और सिपाहियों की क्रांति विजयी हुई है...

"त्से-ई-काह प्रतिक्रांति के झंडे के नीचे मार्च करने वाले सैनिकों से अपील करती है और उनका आह्वान करती है कि वे अविलंब अपने हथियार रख दें, मुट्ठी भर जमींदारों तथा पूंजीपतियों के हित में अपने भाइयों का खून अब और न बहायें। मजदूरों, सिपाहियों और किसानों का रूस उन लोगों को लानत भेजता है, जो क्षणभर के लिए भी जनता के शत्रुओं के झंडे के नीचे रहते हैं..

"कज्ज़ाको! विजयी जनता की पांतों में चले आइये! रेल मजदूर, डाक और तार कर्मचारी, आप सब, आप सभी जनता की नई सरकार का समर्थन कीजिये!"

दसवें अध्याय की टिप्पणियां

१

क्रेमलिन को क्षति

क्रेमलिन को जो क्षति पहुंची थी, उसकी मैंने खुद जांच की है। मैं वहां गोलाबारी के फ़ौरन बाद पहुंचा था। लघु निकोलाई प्रासाद को मुंकरों की बारिकों की तरह इस्तेमाल किया गया था। इस प्रासाद का कोई विशेष महत्व न था और उसमें बस कभी कभी ज़ार-परिवार की एक रानी के स्वागत-समारोह हुआ करते थे। उसपर गोले ही नहीं बरसाये गये, उसे ख़ासी अच्छी तरह लूटा भी गया। सौभाग्यवश उसमें ऐतिहासिक महत्व की कोई वस्तु न थी।

उस्पेन्स्की के बड़े गिरजे के एक गुंबद पर गोला लगने का निशान था, परंतु उसकी छत के मोजेक के थोड़े से हिस्से को छोड़ कर उसे कोई नुकसान न पहुंचा था। ब्लागोवेश्चेंस्की के बड़े गिरजे के द्वार-मंडप के भित्ति-चित्रों को एक गोला लगने से बेहद नुकसान पहुंचा था। एक दूसरा गोला इवान वेलीकी नामक घंटाघर के एक कोने पर गिरा था। चुडोव मठ पर करीब तीस गोले गिरे थे, लेकिन सिर्फ़ एक गोला ही खिड़की के रास्ते भीतर पहुंचा, बाक़ी ईंट की दीवारों और छतों की कार्निसों को नुकसान पहुंचा कर रह गये।

स्पास्काया द्वार के ऊपर का घंटा चकनाचूर हो गया। त्रोइत्स्की द्वार भी टूट-फूट गया था, लेकिन उसकी आसानी से मरम्मत की जा सकती थी। एक निचली मीनार का कलश, जो ईंटों से बना था, टूट गया था।

सेंट बेसिल (वसीली ब्लजेन्नी) का गिरजाघर अछूता रहा और उसी प्रकार विशाल शाही महल भी, जिसके तहख़ानों में मास्को और पेत्रोग्राद की सारी निधियां पड़ी थीं और जिसके ख़ज़ाने में शाही जवाहिरात थे। इन जगहों में किसी ने प्रवेश भी नहीं किया।

२

लुनाचार्स्की की घोषणा

"साथियो! आप देश के तरुण स्वामी हैं और यद्यपि इस समय आपके लिये करने और सोचने को बहुत कुछ पड़ा हुआ है, आपको यह जरूर जानना चाहिये कि आप अपनी कलात्मक तथा वैज्ञानिक निधियों की रक्षा किस प्रकार कर सकते हैं।

"साथियो! मास्को में जो हो रहा है, वह एक भयानक अमार्जनीय दुर्भाग्य है। सत्ता के लिये अपने संघर्ष के सिलसिले में जनता ने हमारी गौरवपूर्ण राजधानी को क्षत-विक्षत कर दिया है।

"हिंसापूर्ण संघर्ष, विध्वंसक युद्ध के इन दिनों में जन-शिक्षा का कमिसार होना एक विशेष भयानक बात है। समाजवाद की, जो एक नई तथा श्रेष्ठतर संस्कृति का उत्स है, विजय की आशा ही मुझे सात्वना देती है। मेरे ऊपर जनता की कला-संपदा की हिफाजत करने की जिम्मेदारी है... अपने पद पर, जहा मेरा कोई प्रभाव न था, क़ायम रहने मे असमर्थ हो कर मैंने इस्तीफा दिया*।

'परंतु, साथियो, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप मुझे सहारा दें... अपने लिये और अपने वंशजो के लिये हमारे देश के सौंदर्य को सुरक्षित रखिये; जनता की संपदा के संरक्षक बनिये।

"जल्द, बहुत जल्द जाहिल से जाहिल लोग भी, जिन्हे इतने दिनो से जहालत मे रखा गया है, जागेंगे और समझेंगे कि कला आनंद, शक्ति तथा बुद्धिमत्ता का कितना बड़ा उत्स है..."

३ नवंबर, १९१७

जन-शिक्षा के जन-कमिसार

अ० लुनाचार्स्की

---

*अ० व० लुनाचार्स्की ने शिक्षा के जन-कमिसार के अपने पद को छोड़ा नही।—सं०

३

पूंजीपति वर्ग के लिए प्रश्नावली

वार्ड. . . . . पारिवारिक नाम. . . . | आवास-समिति. . . . .
नं० . . . .
पता. . . . . नाम . . . . | नं० . . . .

पुरुष अथवा स्त्री	अवस्था	मौजूद सामान			
		कपड़ा	अर्शीन मे	बने-बनाये कपड़े वग़ैरह	अदद
मासिक औसत				जाड़े, गर्मियो और शरद्काल के	
आय	व्यय	अंडरवियर के लिये .	. . .	ओवरकोट	. . .
		सूटों के लिये	. . .	पोशाकें और सूट . . .	. . .
किराया फ़ी माह		ओवरकोटों के लिये .	. . .	अंडरवियर.	. . .
		दूसरे पहनावो के लिए .	. . .	जूते	. . .
फ्लैट	कमरा			रबर के जूते . . .	. . .

४

क्रांतिकारी वित्तीय कार्रवाई

आदेश

मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की मास्को सोवियत के अधीन सैनिक क्रांतिकारी समिति द्वारा जो अधिकार मुझे सौंपे गये हैं, उनके बल पर मैं आदेश देता हूं:

१. जब तक दूसरी आज्ञा न दी जाये अपनी शाखाओं समेत सभी बैंक, शाखाओं समेत केंद्रीय राजकीय बचत बैंक और डाक-तार घरों के बचत बैंक २२ नवंबर को सवेरे ११ बजे से लेकर १ बजे तक खुले रहेंगे।

२. उपरोक्त संस्थान चालू लेखे पर तथा बचत बैंक के लेखे पर अगले हफ़्ते के दौरान प्रत्येक जमाकर्ता को १५० रूबल से अधिक अदायगी नहीं करेंगे।

३. चालू लेखों तथा बचत बैंक के लेखों पर फ़ी हफ़्ता १५० रूबल से ज्यादा रकमों की अदायगी तथा दूसरे सभी तरह के लेखों पर अदायगी अगले तीन दिनों—२२, २३ और २४ नवंबर—में केवल निम्नलिखित मामलों में करने की इजाज़त दी जायेगी:

(क) सैनिक टुकड़ियों के लेखों पर, उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए;

(ख) उन तालिकाओं तथा सूचियों के अनुसार कर्मचारियों की तनख़ाहें तथा मजदूरों की मजदूरी की अदायगी के लिए, जो कारख़ाना समितियों अथवा कर्मचारियों की सोवियतों द्वारा प्रमाणित हों और कमिसारों के अथवा सैनिक क्रांतिकारी समिति के और हल्कों के सैनिक क्रांतिकारी समितियों के प्रतिनिधियों के दस्तख़तों से तसदीक की गई हों।

४. हुंडियों पर १५० रूबल से ज्यादा अदायगी नहीं की जायेगी; बाक़ी रकम चालू लेखे में दाख़िल की जायेगी और उसकी अदायगी वर्तमान आज्ञप्ति द्वारा निश्चित क्रम से की जायेगी।

५. इन तीन दिनों में बैंकों को और कोई भी लेन-देन का काम करने की मनाही की जाती है।

६. सभी लेखों में किसी भी मात्रा में रुपया जमा किया जा सकता है।

७. तीसरी धारा में सूचित प्राधिकरणों के प्रमाणीकरण के लिए वित्त-परिषद् के प्रतिनिधि इल्यीका मार्ग पर स्टाक-एक्सचेंज भवन में दिन के दस बजे से दो बजे तक काम करेंगे।

८. बैंक तथा बचत बैंक रोज़ाना नकदी लेन-देन का कुल हिसाब वित्त-परिषद् के सुपुर्द करने के लिए उसे पांच बजे शाम तक स्कोबेलेव चौक पर सोवियत के भवन में सैनिक क्रांतिकारी समिति को भेजेंगे।

९. सभी तरह की उधार-संस्थाओं के सभी कर्मचारी और प्रबंधकर्ता, जो इस आज्ञप्ति का पालन करने से इनकार करते हैं, क्रांति तथा जन-

साधारण के शत्रुओं के रूप में क्रांतिकारी न्यायाधिकरणों के सम्मुख जिम्मेदार ठहराये जायेंगे। उनके नाम सामान्य सूचना के लिए प्रकाशित किये जायेंगे।

१०. इस प्राज्ञप्ति के अंतर्गत बचत बैंकों तथा बैंकों की शाखाओं के लेन-देन के काम के नियंत्रण के लिए हल्के की सैनिक क्रांतिकारी समितियां तीन-तीन प्रतिनिधियों को चुनेंगी और उनके काम की जगह निश्चित करेंगी।

सैनिक क्रांतिकारी समिति के पूर्ण अधिकृत कमिसार

स० शेवेरदीन-माक्सीमेन्को

ग्यारहवें अध्याय की टिप्पणियां

१

इस अध्याय की सीमाएं

इस अध्याय में दो महीने से कुछ कम या ज्यादा वक़्त में हुई घटनाओं का वर्णन है। उसमें मित्र-राष्ट्रों के साथ वार्ता, जर्मनों के साथ वार्ता तथा युद्ध-विराम, और ब्रेस्त-लितोव्स्क में शांति-वार्ता के आरंभ के काल का और साथ ही उस काल का वर्णन है, जिसमें सोवियत राज्य की बुनियादें रखी गई थीं।

परन्तु इस पुस्तक में मेरा यह बिल्कुल उद्देश्य नही है कि इन अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन और उनकी व्याख्या करूं, जिसके लिए अधिक स्थान की आवश्यकता है। इसलिए मैंने उन्हें एक दूसरी पुस्तक 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' के लिए छोड़ दिया है।

इस प्रकार मैंने इस अध्याय में अपने को सोवियत सरकार की देश में अपनी राजनीतिक सत्ता संहत करने की कोशिशों तक ही सीमित रखा है और देश के अंदर विरोधी अंशकों पर एक के बाद एक उनकी जीतों की रूपरेखा प्रस्तुत की है – जिन जीतों की प्रक्रिया ब्रेस्त-लितोवस्क की दुर्भाग्य-पूर्ण संधि द्वारा अस्थायी काल के लिए रुक गई थी।

प्रस्तावना – रूस की जातियों के अधिकारों की घोषणा

मजदूरों और किसानों की अक्तूबर (नवम्बर) क्रांति सर्वव्यापक मुक्ति-पताका के नीचे शुरू हुई।

किसानों को ज़मीदारों की सत्ता से मुक्त किया जा रहा है, क्योंकि अब ज़मीदार को भूमि पर स्वामित्व का कोई अधिकार न रहा – उसका उन्मूलन कर दिया गया है। सिपाही और मल्लाह निरंकुश जनरलों की प्रभुता से मुक्त किये जा रहे हैं, क्योंकि अब से जनरल चुने जायेंगे और वे वापिस बुलाये जा सकेंगे। मज़दूर पूंजीपतियों की मौज और मनमानी से मुक्त किये जा रहे हैं, क्योंकि अब से मिलों और कारख़ानों पर मजदूरों का नियंत्रण स्थापित होगा। जो भी जीवित है अथवा जीने की क्षमता रखता है, उसे घृण्य बंधनों से मुक्त किया जा रहा है।

अब केवल रूस की जातिया ही बाकी रह गयी हैं, जिन्होंने उत्पीड़न और निरंकुशता को झेला है और झेल रही हैं, और जिनकी मुक्ति को अविलब शुरू करना होगा, जिन्हें दृढ़ तथा निश्चित रूप से स्वतंत्र करना होगा।

ज़ारशाही ज़माने में रूस की जातियां बाकायदा एक दूसरे के खिलाफ़ भड़काई जाती थी। इस नीति का परिणाम क्या हुआ, यह मालूम है: एक ओर कत्ले-आम और दगा-फ़साद, दूसरी ओर जातियों की गुलामी।

इस शर्मनाक नीति की ओर न लौटा जा सकता है, न लौटना चाहिए। उसके स्थान पर अब से रूस की जातियो की स्वैच्छिक तथा सच्ची एकता की नीति को स्थापित करना होगा।

साम्राज्यवाद के काल मे, जब फ़रवरी (मार्च) क्राति के बाद सत्ता कैडेट पूंजीपति वर्ग के हाथो मे अंतरित की गई थी, उकसावे की नग्न नीति की जगह रूस की जातियो के प्रति भयपूर्ण अविश्वास की नीति, छिद्रान्वेषण की, जातियों की अर्थहीन "स्वतंत्रता" तथा "समता" की नीति चालू की गई। इस नीति के परिणाम भी मालूम हैं: राष्ट्रीय वैर-विरोध मे वृद्धि तथा पारस्परिक विश्वास की हानि।

फूट तथा अविश्वास, छिद्रान्वेषण तथा उकसावे की यह निकम्मी नीति जरूर ही खत्म होनी चाहिए। अब से जरूर ही उसकी जगह एक ऐसी साफ, खुली और ईमानदार नीति अपनानी चाहिए, जिसके फलस्वरूप रूस की जातियों के बीच पूर्ण पारस्परिक विश्वास स्थापित हो सके। इस विश्वास के फलस्वरूप ही रूस की जातियों की सच्ची तथा स्थायी एकता स्थापित हो सकती है। और इस एकता के फलस्वरूप ही रूस की जातियों के किसान और मजदूर संहत होकर एक ऐसी क्रांतिकारी शक्ति बन सकते हैं, जो साम्राज्यवादी-संयोजनकारी पूंजीपति वर्ग की सभी कोशिशों का मुकाबला करने में समर्थ होगी।

३

आज्ञप्तियां

बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बारे में

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के व्यवस्थित संगठन के, बैंकों की सट्टेबाजी के संपूर्ण उन्मूलन के और मजदूरों, किसानों तथा पूरी मेहनतकश आबादी की बैंक-पूंजी द्वारा शोषण से पूर्ण मुक्ति के हित में और रूसी जनतंत्र के एक ही राष्ट्रीय बैंक की स्थापना की दृष्टि से, जो जनता तथा गरीब वर्गों का वास्तविक हित-साधन करेगा, केंद्रीय कार्यकारिणी समिति (त्से-ई-काह) फैसला करती है:

१. बैंक-व्यवसाय राजकीय ईजारेदारी घोषित किया जाता है।

२. सभी मौजूदा निजी मिश्रित-पूंजी बैंक और बैंक-कार्यालय राजकीय बैंक में मिला दिये जाते हैं।

३. बंद किये जाने वाले प्रतिष्ठानों के समस्त देयादेय राजकीय बैंक द्वारा ग्रहण किये जाते हैं।

४. राजकीय बैंक में निजी बैंकों के विलयन का क्रम एक विशेष आज्ञप्ति द्वारा निश्चित किया जायेगा।

५. निजी बैंकों के मामलों का अस्थायी प्रबंध राजकीय बैंक के बोर्ड के सुपुर्द किया जाता है।

६. छोटे छोटे जमाकर्ताओं के हित सुरक्षित रहेंगे।

सभी फ़ौजी आदमियों के दर्जे की बराबरी के बारे में

सेना में पहले की असमानता के सभी अवशेषों को अविलंब तथा निर्णायक रूप से समाप्त करने के बारे में क्रांतिकारी जनता की इच्छा को संपन्न करती हुई जन-कमिसार परिषद् आदेश देती है:

१. कारपोरल के पद से लेकर जनरल के पद तक, सेना के सभी पद तथा श्रेणियां समाप्त की जाती हैं। अब से रूसी जनता की सेना मे क्रांतिकारी सेना के सैनिक की सम्मानपूर्ण उपाधि रखनेवाले स्वतंत्र तथा समान नागरिक होंगे।

२. पहले के पदों तथा श्रेणियों से संबंधित सभी विशेषाधिकार तथा वैशिष्ट्य के सभी बाह्य चिह्न समाप्त किये जाते हैं।

३. पद से पुकारने की प्रथा समाप्त की जाती है।

४. सभी विभूषक, पदक तथा वैशिष्ट्य के दूसरे चिह्न समाप्त किये जाते हैं।

५. अफ़सर के पद की समाप्ति के साथ अफसरों के सभी अलहदा सगठन समाप्त किये जाते हैं।

६. सेना में अर्दलियों की मौजूदा प्रथा समाप्त की जाती है।

टिप्पणी – अर्दली केवल सदर मुकाम, चांसरियों, समितियों तथा दूसरे सैनिक संगठनों के लिए छोड़े जायेंगे।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष व्ला० उल्यानोव (लेनिन)
सैनिक तथा नौसैनिक मामलों के लिए जन-कमिसार न० क्रिलेन्को
सैनिक मामलों के जन-कमिसार न० पोद्वोइस्की
परिषद्-सचिव न० गोर्बुनोव

सेना में निर्वाचन-सिद्धांत तथा अधिकार के संगठन के बारे में

१. मेहनतकश जनता की इच्छा का पालन करती हुई सेना जनता की सर्वोच्च प्रतिनिधि – जन-कमिसार परिषद् के अधीन है।

२. सैनिक यूनिटों तथा संयोजनों की सीमा के अन्दर पूर्ण अधिकार संबंधित सैनिक समितियों तथा सोवियतों में निहित है।

३. सैनिकों के जीवन तथा क्रिया-कलाप की जो शाखाएं अभी से समितियों के अधिकार क्षेत्र में हैं, उन पर अब औपचारिक रूप से उनका प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया जाता है। उनके क्रिया-कलाप की जिन शाखाओं को समिति अपने अधिकार में नही ले सकती, उन पर सैनिकों की समितियों या सोवियतों का नियंत्रण स्थापित किया जाता है।

४. कमांडिंग स्टाफ़ के निर्वाचन की प्रथा चलाई जाती है। रेजीमेंट कमांडरों समेत सभी कमांडर स्क्वाडों, प्लाटूनों, कंपनियों, स्क्वाड्रनों, बैटरियों, डिवीज़नों (तोपखाना – १–३ बैटरियां) और रेजीमेंटों के सामान्य मतदान द्वारा चुने जायेंगे। मुख्य सेनापति समेत, रेजीमेंट-कमांडर के ऊपर सभी कमांडर समितियों की कांग्रेसों अथवा सम्मेलनों द्वारा निर्वाचित किये जायेंगे।

टिप्पणी – "सम्मेलन" शब्द का अर्थ है समिति-विशेष की एक दर्जा नीचे की समितियों के प्रतिनिधियों के साथ सभा। (जैसे कंपनी-समितियों के प्रतिनिधियों के साथ रेजीमेंट-समितियों का सम्मेलन। – लेखक)

५. यह ज़रूरी है कि रेजीमेंट कमांडर के पद के ऊपर के निर्वाचित कमांडरों को निकटतम सर्वोच्च समिति मंज़ूर करे।

टिप्पणी – यदि कोई सर्वोच्च समिति, नामंज़ूरी की वजह के बारे में बयान देती हुई, किसी निर्वाचित कमाडर को मंज़ूर करने से इनकार करती है और नीचे की समिति उसे दोबारा निर्वाचित करती है, तो उसे मंज़ूर करना ही होगा।

६. सेनाओं के कमाडर सेनाओं की कांग्रेसों द्वारा निर्वाचित होंगे। मोर्चों के कमांडर संबंधित मोर्चों की कांग्रेसों द्वारा निर्वाचित होंगे।

७. तकनीकी प्रकार के पदों के लिए, जहां विशेष ज्ञान तथा दूसरी अमली तैयारियों की ज़रूरत है, जैसे: डाक्टर, इंजीनियर, तकनीकज्ञ, तार और रेडियो आपरेटर, हवाबाज़, मोटर-ड्राइवर वग़ैरह, सेवा-विशेष की यूनिटों की समितियों द्वारा ऐसे ही लोग चुने जायेंगे, जो अपेक्षित विशेष ज्ञान से संपन्न हों।

८. स्टाफ़-अध्यक्ष अवश्य ही उन्ही लोगों के बीच से चुने जायेंगे, जिन्हें इस पद के लिए विशेष सैनिक प्रशिक्षण मिला है।

९. स्टाफ़ के सभी दूसरे सदस्य स्टाफ-अध्यक्षों द्वारा नियुक्त होगे और संबंधित कांग्रेसों द्वारा इन नियुक्तियों की पुष्टि की जायेगी।

टिप्पणी – यह आवश्यक है कि विशेष प्रशिक्षण प्राप्त सभी व्यक्तियो के नामों को एक विशेष सूची में दर्ज किया जाये।

१०. सामरिक सेवा में नियुक्त सभी कमांडरों को, जो सैनिकों द्वारा किसी भी पद के लिए चुने नही जाते और फलतः जो सामान्य सैनिक का दर्जा रखते हैं, सेवा से निवृत्त करने का अधिकार आरक्षित रखा जाता है।

११. आर्थिक विभागों के पदों को छोड़ कर, और कमान से सबंध रखने वाले पदों के अतिरिक्त, दूसरे सभी पद संबंधित निर्वाचित कमाडरों की नियुक्ति द्वारा भरे जायेंगे।

१२. कमांडिंग स्टाफ़ के चुनाव के बारे मे विस्तृत निर्देश अलग से प्रकाशित किये जायेंगे।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष

व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

सैनिक तथा नौसैनिक मामलों के लिए जन-कमिसार

न० क्रिलेन्को

सैनिक मामलों के जन-कमिसार

न० पोद्वोइस्की

परिषद्-सचिव न० गोर्बुनोव

सभी वर्गों तथा उपाधियों की समाप्ति के बारे में

१. सभी वर्ग तथा वर्ग-विभेद, सभी वर्ग-विशेषाधिकार तथा प्रतिबंध, सभी वर्ग-संगठन तथा संस्थान और सभी नागरिक पद समाप्त किये जाते हैं।

२. समाज के सभी वर्ग (अभिजात वर्ग, व्यापारी, निम्न-पूंजीवादी वर्ग इत्यादि) तथा सभी उपाधिया (प्रिंस, काउण्ट इत्यादि) तथा नागरिक

प्रत्येक वयस्क सदस्य पीछे उसे १०० रूबल माहवार अतिरिक्त दिया जायेगा...

किसी भी सरकारी अधिकारी को दी जाने वाली यह सबसे ऊंची तनख़ाह थी...

४

काउन्टेस पानिना को गिरफ़्तार किया गया और उन पर सर्वोच्च क्रांतिकारी न्यायाधिकरण में मुकद्दमा चलाया गया। मेरी आगामी पुस्तक, 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' के 'क्रांतिकारी न्याय' नामक अध्याय में इस मुकद्दमे का वर्णन किया गया है। कैदी के लिए फ़ैसला किया गया कि वह "रुपया लौटा दें और फिर सार्वजनिक घृणा के सम्मुख खुली छोड़ दी जायें।" दूसरे शब्दों मे, उन्हे रिहा कर दिया गया।

५

नई व्यवस्था का मज़ाक़ उड़ाना

१८ नवंबर के 'द्रूग नरोदा' (मेन्शेविक) से:

"बोल्शेविकों की 'तत्काल शांति-संधि' की कहानी हमे एक मज़ेदार फिल्म की याद दिलाती है... नेरातोव दौड़ते है, त्रोत्स्की पीछा करते हैं; नेरातोव एक दीवार पर चढ जाते हैं और उनके पीछे त्रोत्स्की भी; नेरातोव पानी में गोता लगाते हैं, त्रोत्स्की भी पीछे पीछे पानी मे कूद पड़ते हैं; नेरातोव छत पर चढ़ जाते हैं, त्रोत्स्की उनके ठीक पीछे हैं; नेरातोव बिस्तर में छिप जाते हैं और त्रोत्स्की उनको पकड़ लेते हैं! जी हा, उनको पकड़ लेते हैं! और स्वभावतः शांति-संधि पर अविलंब दस्तख़त हो जाते हैं...

"विदेश मंत्रालय खाली है और वहा सन्नाटा छाया हुआ है। संदेशवाहक वाग्रदब पेश आते हैं, मगर उनके चेहरों पर एक तीखा भाव है...

"अगर किसी राजदूत को गिरफ़्तार कर लिया जाये और उसके साथ युद्ध-विराम और शांति-संधि पर दस्तखत किये जायें तो कैसा रहे? लेकिन ये राजदूत भी कुछ अजीब ही लोग हैं। वे ऐसा मौन साधे हुए हैं, जैसे

उन्होंने कुछ सुना ही न हो। ओ इंग्लैंड! ओ फ़ांस! ओ जर्मनी! हमने आपके साथ युद्ध-विराम-संधि संपन्न की है! क्या यह संभव है कि आप इसके बारे में कुछ नहीं जानते? लेकिन उसे सभी जगह छापा गया है और सभी जगह दीवारों पर चिपका दिया गया है। एक बोल्शेविक की प्रतिष्ठा की शपथ है, शांति-संधि संपन्न की गयी है! हम आपसे ज्यादा कुछ नहीं कहते, आपको सिर्फ़ दो शब्द लिख देने हैं...

"राजदूत मौन के मौन रहते हैं। राष्ट्र मौन रहते हैं। विदेश मंत्रालय खाली है और वहां सन्नाटा छाया हुआ है।

"रोबेसपियेर के अवतार त्रोत्स्की ने अपने सहायक मरात के आधुनिक संस्करण उरीत्स्की से कहा, 'ज़रा ब्रिटिश राजदूत के यहां दौड़ जाओ और उनसे कहो कि हम शांति का प्रस्ताव कर रहे हैं!'

"'आप ख़ुद जाइये,' मरात-उरीत्स्की ने कहा, 'वह किसी से मिलते नहीं हैं।'

"'तब फिर उन्हें फ़ोन करो।'

"'मैंने फ़ोन करने की कोशिश की, मगर बेसूद। टेलीफोन रिसीवर अलग धर दिया गया है।'

"'उन्हें तार भेज दो।'

"'मैंने पहले ही भेज दिया।'

"'तो फिर, कुछ नतीजा निकला?'

"मरात-उरीत्स्की ठंडी सांस भरकर चुप रह जाते हैं। रोबेसपियेर-त्रोत्स्की गुस्से से एक कोने में थूकते हैं।

"'मरात सुनो,' त्रोत्स्की क्षण भर बाद फिर कहते हैं। 'हमें यह बिल्कुल ही दिखा देना है कि हम एक सक्रिय विदेश नीति चला रहे हैं। हम यह कैसे कर सकते हैं?'

"'नेरातोव को गिरफ़्तार करने के बारे में एक और आज्ञप्ति जारी कीजिये,' उरीत्स्की ने बड़े गंभीर भाव से कहा।

"'मरात, तुम्हारी अक्ल घास चरने गई है!' त्रोत्स्की ने चिल्लाकर कहा। यकायक वह उठते हैं, रौद्र-मूर्ति और तेजस्वी, उस घड़ी ऐसा लगता था कि सचमुच रोबेसपियेर ही हों।

"'उरीत्स्की, लिखो,' उन्होंने सख़्त लहजे में कहा, 'ब्रिटिश राजदूत

को, रसीद की मांग करते हुए, एक रजिस्ट्री चिट्ठी लिखो। लिखो, मैं भी लिखूगा! संसार के जन अविलंब शांति की प्रतीक्षा कर रहे हैं!'

"विशाल, रिक्त विदेश मंत्रालय में बस दो टाइपराइटरों की खटखट सुनाई दे रही है। त्रोत्स्की स्वयं अपने हाथों से एक सक्रिय विदेश नीति चला रहे हैं..."

६

समझौते के सवाल के बारे में

सभी मजदूरों और सिपाहियों की जानकारी के लिए।

११ नवंबर को प्रेम्रोब्राजेन्स्की रेजीमेंट के क्लब में पेत्रोग्राद गैरिसन की सभी यूनिटों के प्रतिनिधियों की एक असाधारण सभा हुई।

यह सभा प्रेम्रोब्राजेन्स्की तथा सेम्योनोव्स्की रेजीमेंटों की पेशकदमी पर इस सवाल का फ़ैसला करने के लिए बुलाई गई थी कि कौन सी समाजवादी पार्टियां सोवियतों की सत्ता की ओर है और कौन ख़िलाफ़ है, कौन जनता की ओर है और कौन ख़िलाफ़ है और यह कि क्या उनके बीच समझौता संभव है या नहीं।

त्से-ई-काह, नगर दूमा, अव्क्सेन्त्येव-पंथी किसानों की सोवियतों के और बोल्शेविकों से लेकर जन-समाजवादियों तक सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि सभा मे बुलाये गये थे।

देर तक विचार करने और सभी पार्टियों तथा संगठनों की घोषणाओं को सुनने के बाद, सभा विशाल बहुमत से इस निश्चय पर पहुची कि केवल बोल्शेविक और वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी जनता की ओर हैं और बाकी सभी पार्टियां समझौते की कोशिश करने की आड़ में जनता को नवंबर की महान् मज़दूरो तथा किसानों की क्रांति के दिनों में प्राप्त उपलब्धियों से वंचित करने के लिए सचेष्ट है।

पेत्रोग्राद गैरिसन की इस सभा में जो प्रस्ताव ११ वोटों के ख़िलाफ़ ६१ वोटों से, और १२ के तटस्थ रहते हुए, पास किया गया, उसका मज़मून नीचे दिया जाता है:

"सेम्योनोव्स्की तथा प्रेग्रोव्राजेन्स्की रेजीमेंटों की पेशकदमी पर बुलाया गया गैरिसन सम्मेलन, विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के बीच समझौते के सवाल पर सभी समाजवादी पार्टियों तथा जन-संगठनों के प्रतिनिधियों को सुनने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि:

"१. त्से-ई-काह के प्रतिनिधियों, बोल्शेविक पार्टी तथा वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के प्रतिनिधियों ने निश्चित रूप से घोषणा की कि वे सोवियतों की सरकार का, भूमि, शांति तथा उद्योग पर मज़दूरों के नियंत्रण संबंधी ग्राज्ञप्तियों का समर्थन करते हैं और यह कि वे इस कार्यक्रम के आधार पर सभी समाजवादी पार्टियों से समझौता करने के लिए तैयार हैं।

"२. इसके साथ ही दूसरी पार्टियों (मेन्शेविकों, समाजवादी-क्रांतिकारियों) के प्रतिनिधियों ने या तो कोई जवाब नहीं दिया, या बस इतना ही कहा कि वे सोवियतों की सत्ता के तथा भूमि, शांति और मज़दूरों के नियंत्रण संबंधी ग्राज्ञप्तियों के ख़िलाफ़ हैं।

"इस बात को देखते हुए सभा फ़ैसला करती है.

"१. वह उन सभी पार्टियों की कठोर निंदा करती है, जो समझौते की आड में वस्तुतः नवंबर की क्रांति की लोकप्रिय उपलब्धियों को नष्ट कर देने की इच्छा रखती हैं।

"२. वह त्से-ई-काह तथा जन-कमिसार परिषद् में पूर्ण विश्वास प्रगट करती है और उन्हें पूर्ण समर्थन का आश्वासन देती है।

"इसके साथ ही सभा यह आवश्यक मानती है कि वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी साथी जनता की सरकार में प्रवेश करें।"

७

शराबियों के दंगे-फ़साद

बाद में इस बात का पता चला कि सिपाहियों के बीच दंगा-फ़साद भड़काने के लिए कैडेटों की देखरेख में बाकायदा एक संगठन काम कर रहा था। टेलीफोन से विभिन्न बारिकों को ख़बर दी जाती कि फलां या फलां

पते पर शराब बांटी जा रही है और जब सिपाही उस मुकाम पर पहुंचते, वहां एक शख़्स उन्हें बताता कि शराब का तहख़ाना किस जगह है...

जन-कमिसार परिषद् ने शराबख़ोरी-विरोधी संघर्ष के लिए एक कमिसार नियुक्त किया, जिसने शराबियों के दंगों को सख़्ती से कुचलने के अलावा शराब की लाखों बोतलों को तुड़वा डाला। शिशिर प्रासाद के तहख़ानों में, जहां ५० लाख डालर से ज्यादा की क़ीमत की दुर्लभ अंगूरी शराब की बोतलें मौजूद थीं, पहले पानी भर दिया गया और फिर यह शराब वहां से हटाकर क्रोंश्तादत ले जाई गई और नष्ट कर दी गई।

इस काम में त्रोत्स्की के शब्दों में, "क्रांतिकारी सेना के बेहतरीन सपूत, जिन पर हमें नाज़ है", क्रोंश्तादत के मल्लाहों ने अपना कर्त्तव्य लौह-अनुशासन के साथ निभाया।

८

सट्टेबाज़

उनके बारे में दो आदेश:

जन-कमिसार परिषद् द्वारा सैनिक क्रांतिकारी समिति को

युद्ध के कारण तथा व्यवस्था के अभाव के कारण उत्पन्न खाद्य-संभरण का विसंगठन सट्टेबाज़ों, लुटेरों और रेलों, जहाजी दफ़्तरों और चालान दफ़्तरों वगैरह में उनके अनुयायियों की बदौलत नितांत उत्कट हो रहा है।

राष्ट्र की घोर विपदाओं का फ़ायदा उठाकर ये अपराधी लुटेरे अपने मुनाफ़े के लिए करोड़ों सिपाहियों तथा मज़दूरों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

यह परिस्थिति अब एक दिन के लिए भी बर्दाश्त नहीं की जा सकती।

जन-कमिसार परिषद् सैनिक क्रांतिकारी समिति से प्रस्ताव करती है कि वह सट्टेबाज़ी, तोड़-फोड़, चोरगोदामों में माल रखने तथा धोखा-

घड़ी से माल को रोकने वगैरह को उन्मूलित करने की दिशा में निर्णायक से निर्णायक क़दम उठायें।

जो लोग भी ऐसे काम करने के अपराधी होंगे, उन्हें सैनिक क्रांतिकारी समिति की विशेष आज्ञा द्वारा फौरन गिरफ़्तार किया जा सकता है और जब तक उन्हें क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के सामने आरोप के लिए न लाया जाये, उन्हे क्रोंश्तादत की जेलों में बंद रखा जा सकता है।

सभी जन-संगठनों को आमंत्रित किया जाता है कि वे खाद्य-संभरण को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले लोगों के ख़िलाफ इस संघर्ष मे सहयोग करें।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष

व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

सभी ईमानदार नागरिकों के नाम

सैनिक क्रांतिकारी समिति आदेश करती है:

लुटेरे, डाकू, सट्टेबाज़ जनता के शत्रु घोषित किये जाते हैं...

सैनिक क्रांतिकारी समिति सभी सार्वजनिक सगठनों, सभी ईमानदार नागरिकों से प्रस्ताव करती है: उन्हें लूट, डाकेजनी, सट्टेबाजी के जिन मामलों की ख़बर लगती है, उन सब की सूचना तुरंत सैनिक क्रांतिकारी समिति को पहुंचायें।

इस बुराई के साथ लड़ना सभी ईमानदार लोगों का काम है। सैनिक क्रांतिकारी समिति उन सभी लोगों के समर्थन की आशा करती है, जिन्हें जनता के हित प्रिय हैं।

सट्टेबाजों और डाकुओं का पीछा करने में सैनिक क्रांतिकारी समिति कोई रू-रिआयत नही करेगी।

सैनिक क्रांतिकारी समिति

पेत्रोग्राद, २ दिसंबर, १९१७

६

कलेदिन के नाम पुरिश्केविच का पत्र

"पेत्रोग्राद की परिस्थिति घोर निराशाजनक है। शहर बाहरी दुनिया से कट गया है और पूरी तरह बोल्शेविकों के चंगुल में है... लोग राह-चलते गिरफ्तार कर लिये जाते हैं, नेवा नदी में उछाल कर डुबो दिये जाते हैं और बिना किसी अभियोग के जेलों में बंद कर दिये जाते हैं। बूर्त्सेव तक को पीटर-पाल किले में कड़े पहरे में बंद कर दिया गया है।

"जिस संगठन का मैं अध्यक्ष हूं, वह सभी अफसरों को और अवशिष्ट युंकर स्कूलों को एकताबद्ध करने तथा उन्हें हथियारों से लैस करने के लिए अनथक काम कर रहा है। अफसरों तथा युंकरों की रेजीमेंटों को स्थापित किये बिना परिस्थिति बचाई नहीं जा सकती। इन रेजीमेंटों को लेकर हल्ला बोलकर और पहली सफलता प्राप्त कर बाद में हम गैरिसन के सिपाहियों की मदद हासिल कर सकते हैं। परन्तु इस पहली सफलता के बिना एक भी सिपाही का भरोसा करना असंभव है, क्योंकि हजारों सिपाही बंटे हुए हैं और हर रेजीमेंट में मौजूद नीचों से आतंकित हैं। जनरल दूतोव, जिन्होंने उस मौके को हाथ से जाने दिया, जब निर्णायक कदम उठाकर कुछ हासिल किया जा सकता था, की विचित्र नीति की बदौलत अधिकांश कज़ाकों पर बोल्शेविक प्रचार का रंग चढ़ गया है। समझाने-बुझाने और कायल करने की नीति रंग लाई है: सभी भद्रजनों पर जुल्म ढाया गया है और तेली-तबोली और अपराधी हावी हो गये हैं... उन्हें गोली मारे और फांसी पर चढ़ाये बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता।

"जनरल, हम यहां पर आपका इंतज़ार कर रहे हैं, और हम आपके आगमन की घड़ी में सभी उपलब्ध सैनिकों को लेकर आगे बढ़ेंगे। परंतु इसके लिए आवश्यक है कि हम आपके साथ किसी न किसी तरह का संपर्क स्थापित करें और सबसे पहले निम्नलिखित बातों का स्पष्टीकरण करें:

"(१) क्या आप जानते हैं कि आपके नाम पर उन सभी अफसरों को, जो लड़ाई में हिस्सा ले सकते हैं, आपकी सेना में शामिल होने के बहाने से पेत्रोग्राद छोड़ने का बुलावा दिया जा रहा है?

"(२) हम तकरीबन् किस वक़्त आपके पेत्रोग्राद पहुंचने का भरोसा कर सकते हैं? हम यह जानना चाहेंगे, ताकि हम अपनी गतिविधियों को मिला सकें।

"यहां के चेतन लोगों की अपराधपूर्ण निष्क्रियता के बावजूद, जिन्होंने बोल्शेविज्म का जुआ हमारी गर्दन में पड़ने दिया, अधिकाश अफसरों के, जिन्हें संगठित करना इतना कठिन है, असाधारण गावदीपन के बावजूद, हमारा विश्वास है कि सचाई हमारी ओर है और हम देशप्रेम के उद्देश्य से और देश को बचाने के लिए अनिष्टमूलक तथा अपराधपूर्ण शक्तियों पर विजय प्राप्त करेंगे।"

पुरिश्केविच पर क्रांतिकारी न्यायाधिकरण मे मुकद्दमा चलाया गया और उन्हे थोड़े दिनों की कैद की सजा दी गई...

१०

विज्ञापनों की इजारेदारी के बारे में आज्ञप्ति

१. समाचारपत्रों, पुस्तकों, नोटिसबोर्डों, स्टालों, दफ़्तरो और दूसरे प्रतिष्ठानो मे विज्ञापनों का प्रकाशन राजकीय इजारेदारी घोषित किया जाता है।

२. विज्ञापन केवल पेत्रोग्राद में मजदूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार के मुखपत्रों में और स्थानीय सोवियतों के मुखपत्रो मे प्रकाशित किये जा सकते हैं।

३. समाचारपत्रों तथा विज्ञापन कार्यालयो के मालिको को और साथ ही ऐसे प्रतिष्ठानों के सभी कर्मचारियो को, विज्ञापन-व्यवसाय के सरकार के हाथों मे अंतरित होने तक... इस बात की निगरानी रखते हुए कि उनके कार्यालय बराबर चलते रहे और समस्त निजी विज्ञापनों तथा उनके लिए पाई गई रकमों और साथ ही हिसाब-बहियो, लेखाओं तथा कापी को सोवियतों के सुपुर्द करते हुए, अपने अपने पदों पर कायम रहना चाहिए।

४. सशुल्क विज्ञापन का कारोबार करने वाले सभी प्रकाशनों तथा प्रतिष्ठानों के सभी प्रबंधकर्ता तथा उनके कर्मचारी और मजदूर, सोवियत

प्रकाशनों में विज्ञापन-व्यवसाय को अधिक पूर्ण तथा उचित रूप में संगठित करने तथा विज्ञापन के सार्वजनिक लाभ के निमित्त बेहतर नियम तैयार करने के लिए, नगर-कांग्रेस आयोजित करने और पहले तो, नगर की ट्रेड-यूनियनों के रूप में एकजुट होने और फिर एक अखिल रूसी यूनियन में एकजुट होने के लिए बाध्य है।

५. जो लोग भी दस्तावेजें अथवा रुपया-पैसा छिपाने या अनुच्छेद ३ और ४ में सूचित विनियमों को विफल करने के दोषी पाये जायेंगे, उन्हें तीन साल तक कैद की सजा दी जायेगी और उनकी समस्त संपत्ति जब्त कर ली जायेगी।

६. निजी प्रकाशनों में पैसा लेकर विज्ञापन निकालने अथवा उन्हें प्रच्छन्न रूप में निकालने के लिए भी कठोर दंड दिया जायेगा।

७. सरकार विज्ञापन-कार्यालयों को जब्त करती है; आवश्यक होने पर उनके मालिकों को मुआविज़ा पाने का हक होगा। जब्त किये हुए प्रतिष्ठानों के छोटे छोटे मालिकों, जमाकर्ताओं और भागीदारों का इस व्यवसाय में जो भी रुपया लगा हुआ है, वह उन्हें लौटा दिया जायेगा।

८. सभी प्रकाशनों और कार्यालयों और सामान्यतः विज्ञापन का व्यवसाय करने वाले सभी प्रतिष्ठानों को चाहिए कि वे मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों को अपने पते की सूचना दें और अपने व्यवसाय का अन्तरण आरंभ करें, नहीं तो वे अनुच्छेद ५ में सूचित दंड के भागी होंगे।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष व्ला० उल्यानोव (लेनिन)
जन-शिक्षा के जन-कमिसार अ० व० लुनाचार्स्की
परिषद्-सचिव न० गोर्बुनोव

११

अनिवार्य अध्यादेश

१. पेत्रोग्राद नगर मुहासिराबंद घोषित किया जाता है।

२. सड़कों और चौकों पर सभी सभाओं, मीटिंगों और जमावड़ों की मनाही की जाती है।

३. शराब के तहख़ानों, गोदामों, कारख़ानों, स्टोरों, कोठियो तथा निजी घरों वगैरह, वगैरह को लूटने की कोशिशे **बिना चेतावनी के मशीनगन चलाकर बंद की जायेंगी।**

४. श्रावास-समितियों, दरवानों, चौकीदारो श्रौर मिलिशिया को सभी घरों, श्रहातों श्रौर सड़कों मे कड़ाई से सुव्यवस्था रखने का जिम्मा दिया जाता है। घरों के दरवाजों श्रौर सहन के फाटको मे शाम के नौ बजे तक श्रवश्य ही ताला लग जाना चाहिए श्रौर उन्हे सवेरे सात बजे खोलना चाहिए। शाम को नौ बजे के बाद केवल किरायेदार ही श्रावास-समितियों की कड़ी निगरानी मे घर से निकल सकते हैं।

५. जो लोग किसी भी प्रकार के एलकोहलीय पेय के वितरण, ख़रीद या बिक्री के श्रपराधी होंगे श्रौर वे भी जो धारा २ तथा धारा ४ का उल्लंघन करने के श्रपराधी होगे, उन्हे फ़ौरन गिरफ्तार कर लिया जायेगा श्रौर उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जायेगी।

मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियत की
कार्यकारिणी समिति के श्रधीन
दंगा-विरोधी संघर्ष समिति

पेत्रोग्राद, ६ दिसंबर, रात, तीन बजे

१२

श्राबादी के नाम

साथी मजदूरो, सिपाहियो, किसानो – सभी मेहनतकशो!

मजदूरों तथा किसानों की क्रांति पेत्रोग्राद श्रौर मास्को मे विजयी हुई है... हर रोज हर घड़ी मोर्चे से श्रौर गावों से नई सरकार को श्रभिनंदन-संदेश श्रा रहे हैं... यह देखते हुए कि जनता का बहुमत क्रांति का समर्थन करता है... उसकी विजय सुनिश्चित है।

यह बिल्कुल ही समझ में श्राने लायक बात है कि मालिक श्रौर पूजीपति, पूजीपति वर्ग के साथ घनिष्ठ रूप मे सम्बद्ध कर्मचारी श्रौर श्रमले – एक शब्द में सभी धनी-मानी लोग श्रौर उनके साथ सांट-गांठ करने वाले लोग – नई क्रांति को शत्रुता की दृष्टि से देखते हैं, उसकी सफलता का

विरोध करते हैं, बैंकों के कारोबार को ठप करने की धमकी देते हैं और अन्य प्रतिष्ठानों के काम को भीतर से तोड़ते-फोड़ते या उसमें अड़चन डालते हैं... हर चेतन मजदूर इस बात को बखूबी समझता है कि यह शत्रुता अनिवार्य है... परंतु मेहनतकश वर्ग इस प्रतिरोध से क्षण भर के लिए भी घबराते नहीं हैं। जनता का बहुमत हमारी ओर है। समूची दुनिया के मजदूरों और मजलूमों का बहुमत हमारी ओर है। न्याय हमारी ओर है। हमारी अंतिम विजय निश्चित है।

पूंजीपतियों और बड़े बड़े अफ़सरों का प्रतिरोध चूर चूर कर दिया जायेगा। बैंकों तथा वित्तीय सिंडीकेटों के राष्ट्रीयकरण के बारे में एक विशेष कानून के बिना कोई भी अपनी संपत्ति से वंचित नहीं किया जायेगा। यह कानून तैयार किया जा रहा है। किसी भी मजदूर को एक भी कोपेक का नुकसान नहीं होगा; इसके विपरीत, उसकी मदद की जायेगी। इस घड़ी नये टैक्स लगाये बिना, नई सरकार यह अपना एक प्राथमिक कर्तव्य समझती है कि वह पिछली हुकूमत द्वारा लागू किये गये टैक्सों की वसूली का कड़ाई से हिसाब करे और उस पर नियंत्रण स्थापित करे...

साथी मजदूरो! याद रखिये कि सरकार की बागडोर ख़ुद आपके हाथों में है। जब तक आप ख़ुद अपने को संगठित नहीं करते और राजकाज को ख़ुद अपने हाथों में नहीं ले लेते, कोई आपकी मदद करने वाला नहीं है। आपकी सोवियतें अब राजकीय सत्ता के निकाय बन गई हैं... उन्हें मजबूत बनाइये, कठोर क्रांतिकारी नियंत्रण स्थापित कीजिये। शराबियों, लुटेरों, प्रतिक्रांतिकारी युंकरों और कोर्नीलोवपंथियों की अराजकता की कोशिशों को बेरहमी के साथ कुचल डालिये।

उत्पादन के ऊपर तथा उपज के हिसाब के ऊपर कड़ा नियंत्रण स्थापित कीजिये। जो भी उत्पादन में तोड़-फोड़ कर, अनाज के रिजर्व स्टाक को, दूसरे माल के रिजर्व स्टाक को छिपा कर, अनाज के चालानों में अड़चन डाल कर, रेल-व्यवस्था, डाक और तार-व्यवस्था में गड़बड़ी पैदा कर या सामान्यतः शांति स्थापित करने तथा किसानों के हाथों में भूमि अंतरित करने के महान् कार्य का विरोध कर जनता की संपत्ति को नुकसान पहुंचाता है, उसे गिरफ़्तार कर लीजिए और जनता के क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के हवाले कर दीजिये...

"साथी मजदूरो, सिपाहियो, किसानो – सभी मेहनतकशो!

"समस्त सत्ता अपनी सोवियतों के हाथों मे सौप दीजिये... हम किसानों के बहुमत की सहमति और अनुमोदन से धीरे धीरे, पग पग कर दृढ तथा निष्कंप भाव से समाजवाद की विजय की ओर बढ़ेंगे, जिस पर सर्वाधिक सभ्य देशों के मजदूर वर्ग के हरावल मुहर लगा देंगे और जो लोगों को स्थायी शांति प्रदान करेगी और उन्हे हर तरह की गुलामी तथा हर तरह के शोषण से मुक्त करेगी।"

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

पेत्रोग्राद, १८ नवंबर, १९१७

१३

" पेत्रोग्राद के सभी मजदूरों के नाम!

"साथियो, क्रांति विजयी हो रही है – क्रांति विजयी हुई है। समस्त सत्ता हमारी सोवियतों के हाथ मे आ गई है। पहले हफ्ते सबसे ज्यादा मुश्किल हफ्ते होंगे। प्रतिक्रिया को, जिसकी कमर टूट गई है, अंतिम रूप से कुचल देना होगा, हमें अपने प्रयासो मे पूर्ण विजय प्राप्त करनी होगी। इन दिनों मे मजदूर वर्ग को, नई, सोवियतों की जन-सरकार के सभी उद्देश्यों की पूर्ति मे सुविधा पहुंचाने की गरज से, **सबसे अधिक दृढ़ता और सहनशीलता** प्रदर्शित करनी चाहिए। अगले चंद दिनों के अंदर मजदूरों के सवाल के बारे में आज्ञप्तियां जारी की जायेगी, और पहली ही आज्ञप्तियों मे उद्योग के उत्पादन तथा नियमन पर मजदूरों के नियंत्रण संबंधी आज्ञप्ति होगी।

"**इस समय पेत्रोग्राद में मजदूर-समुदायों द्वारा हड़ताल और प्रदर्शन से हानि ही हो सकती है।**

"हम आपका आवाहन करते है कि आप सभी आर्थिक और राजनीतिक हड़तालों को अविलंब बंद कर दें, अपना काम हाथ मे ले और उसे पूर्ण व्यवस्थित रूप से करें। कारखानों और सभी उद्योगों का काम सोवियतों की नयी सरकार के लिए जरूरी है' क्योंकि इस काम में कोई रुकावट पड़ने

से हमारे लिए नयी मुश्किलें पैदा होंगी, जबकि यूं भी मुश्किलें कुछ कम नहीं हैं। आप सभी अपना अपना स्थान ग्रहण करें।

"इन दिनों में नयी सोवियतों की सरकार का समर्थन करने का सबसे अच्छा तरीका है – अपना काम करना।

सर्वहारा की फ़ौलादी मजबूती जिंदाबाद! क्रांति जिंदाबाद!"

मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत

ट्रेड-यूनियनों की पेत्रोग्राद परिषद्

कारख़ाना समितियों की पेत्रोग्राद परिषद्

१४

अपीलें और जवाब में दूसरी अपीलें

राजकोय तथा निजी बैंकों के कर्मचारियों की ओर से पेत्रोग्राद की आबादी के नाम

"साथी मजदूरो, सिपाहियो और नागरिको!

"सैनिक क्रांतिकारी समिति ने एक 'असाधारण सूचना' में राजकीय तथा निजी बैंकों तथा दूसरे संस्थानों के कर्मचारियों के ख़िलाफ़ 'मोर्चे के लिए संभरण सुनिश्चित करने की ओर निर्देशित सरकार के काम में बाधा डालने' का इलजाम लगाया है।

"साथियो और नागरिको, हमारे ख़िलाफ़, उन लोगों के ख़िलाफ़, जो श्रम की सामान्य सेना के अंग हैं, इस कुत्सा पर विश्वास मत कीजिये।

"हमारे परिश्रमपूर्ण जीवन में हिंसात्मक कार्यों द्वारा हस्तक्षेप का जो बराबर डर लगा हुआ है, उसके साथ काम करना हमारे लिए कितना भी कठिन क्यों न हो, यह जानना कि हमारा देश तथा क्रांति विनाश के कगार पर है कितना भी निराशाजनक क्यों न हो, नीचे से लेकर ऊपर तक हम सभी कर्मचारी, आर्तेलशिचक, हिसाब-किताब रखने वाले लोग, मजदूर, संदेशवाहक वगैरह मोर्चे तथा देश के लिए रसद-पानी व गोला-बारूद सुनिश्चित बनाने के काम से संबद्ध अपने कर्तव्यों को पूरा करते जा रहे हैं।

"साथी मज़दूरो और सिपाहियो, वित्त तथा बैंकिंग के सवालों के बारे मे आपके अज्ञान का भरोसा कर आपको उन लोगों के ख़िलाफ़ भड़काया जा रहा है, जो आप ही की तरह मज़दूर हैं, क्योंकि मोर्चे पर हमारे सिपाही-भाइयों के फ़ाके करने और मरने की ज़िम्मेदारी को अपराधी व्यक्तियों के ऊपर न डाल कर उन निर्दोष मजदूरों के सिर मढ़ना ज़रूरी है, जो सामान्य गरीबी और विसंगठन के बोझ के नीचे अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं।

"मज़दूरो और सिपाहियो! याद रखिये, बैंक-कर्मचारी स्वयं श्रमिक जनता के अंग हैं और उन्होंने सदा उसके हितों का समर्थन किया है और सदा करेंगे। कर्मचारियों ने मोर्चे के लिए और मजदूरों के लिए जरूरी एक भी कोपेक को न कभी रोका है और न रोकेंगे।

"छ नवंबर से २३ नवंबर तक, अर्थात् १७ दिनों के बीच, मोर्चे को ५० करोड़ रूबल और मास्को को १२ करोड़ रूबल भेजे गये हैं – दूसरे शहरों को भेजी गयी रक़मे अलग हैं।

"जनता की संपदा की चौकसी करते हुए, जिस संपदा की स्वामी पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा ही हो सकती है, कर्मचारी उन उद्देश्यो के लिए पैसा देने से इनकार करते हैं, जिनके बारे मे वे कुछ नही जानते।

"जो मिथ्या आरोपकर्ता क़ानून अपने हाथों में लेने के लिए आपका आह्वान कर रहे हैं, उन पर विश्वास मत कीजिये!"

राजकीय बैंक-कर्मचारियों की
अखिल रूसी यूनियन का केंद्रीय बोर्ड।
उधार-संस्थाओं के कर्मचारियों की
अखिल रूसी ट्रेड-यूनियन का केंद्रीय बोर्ड

पेत्रोग्राद की आबादी के नाम

"नागरिको! इन अंधकारमय दिनों में रूस के उद्धार के लिए परिश्रम करने वाले, खाद्य मंत्रालय के कर्मचारियों तथा दूसरे खाद्य-संभरण संगठनों के कार्यकर्ताओं के ख़िलाफ भयानक अभियोगों का प्रचार करके

गैरजिम्मेदार लोग आपके सामने जिस झूठ को व्यंजित कर रहे हैं उसपर विश्वास न कीजिये। नागरिको! दीवारों पर चिपकाये गये पोस्टरों मे आप से कहा गया है कि आप हमें जिंदा न छोड़ें, उनमें हमारे ऊपर तोड़-फोड व हड़ताल करने की झूठी तोहमत लगायी गयी है, और हमारी जनता जो तकलीफें और मुसीबतें झेल रही है, उन सब के लिए हमें दोषी ठहराया गया है, हालांकि हम रूसी जनता को भुखमरी की विभीषिका से बचाने का सतत् और अनथक प्रयत्न करते रहे हैं और अभी भी कर रहे हैं। दुखी रूस के नागरिक होने के नाते हम जो कुछ भी सहन कर रहे हैं, उसके बावजूद हमने सेना तथा आबादी को रसद का संभरण करने के भारी और जिम्मेदारी के काम का घडी भर के लिए भी परित्याग नही किया है।

"भूखी तथा ठड से ठिठुरती, अपना खून बहाकर और दारुण यातना सहन कर हमारे अस्तित्व की ही रक्षा करने वाली सेना की तसवीर हमारे मन से क्षण भर के लिए भी नही उतरती।

"नागरिको! यदि हम अपनी जनता के जीवन तथा इतिहास के अधकारमय से अंधकारमय दिनो में बचे रह सके हैं, यदि हम पेत्रोग्राद को अकाल के मुह से बचा सके हैं, यदि हम मुसीबतजदा सेना के लिए प्रबल, प्रायः अतिमानवीय प्रयत्नों द्वारा अनाज और चारे का बंदोबस्त कर सके हैं, तो इसीलिए कि हम ईमानदारी के साथ अपना काम करते रहे हैं और अभी भी करते जा रहे हैं...

"सत्ता हड़पनेवालों की 'आखिरी चेतावनी' का हम यह जवाब देते हैं: आपका, जो देश को तबाही की ओर लिये जा रहे हैं, मुंह ऐसा नहीं है कि आप हमें, उन लोगों को, जो देश को बर्बादी से बचाने के लिए अपनी भरसक सब कुछ कर रहे हैं, धमकियां दें। हम धमकियों से नहीं डरते; हमारे सामने यातनाग्रस्त रूस की पवित्र मूर्ति है। हम आख़िरी दम तक, जब तक आप हमें अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने से रोकते नही, सेना तथा जनता को अनाज की सप्लाई करने का काम करते रहेंगे। इसकी विपरीत दशा में सेना तथा जनता के सामने अकाल की विभीषिका मंडरायेगी, परन्तु इसकी जिम्मेदारी हिंसा का कुकर्म करने वालों पर होगी।"

खाद्य मंत्रालय के कर्मचारियों की
कार्यकारिणी समिति

चिनोव्निकों (सरकारी कर्मचारियों) के नाम

"इसके द्वारा यह सूचित किया जाता है कि सभी अधिकारी और व्यक्ति, जिन्होंने सरकारी तथा सार्वजनिक संस्थानों की नौकरी छोड़ दी है, या जिन्हें तोड़-फोड़ के लिए या मुकर्रर दिन पर काम के लिए हाजिर न होने के कारण बर्ख़ास्त कर दिया गया है और जिन्होंने इसके बावजूद अपनी तनख़ाहें पेशगी उस वक़्त के लिए ली हैं, जिसमे उन्होंने काम नही किया है, ये तनख़ाहे २७ नवंबर, १९१७ से पहले उन संस्थानों को लौटाने के लिए बाध्य हैं, जहां वे काम करते थे।

"ऐसा न किये जाने की सूरत में ये व्यक्ति ख़जाने का माल चुराने के लिए ज़िम्मेदार ठहराये जायेंगे और उनपर सैनिक क्रांतिकारी अदालत में मुकद्दमा चलाया जायेगा।"

२४ नवंबर, १९१७

सैनिक क्रांतिकारी समिति

विशेष खाद्य-संभरण-बोर्ड की ओर से

"नागरिको!

"पेत्रोग्राद को खाद्य-संभरण करने के हमारे काम की अवस्थायें दिन-दिन अधिकाधिक कठिन होती जा रही हैं।

"हमारे काम में सैनिक क्रांतिकारी समिति के कमिसारों का हस्तक्षेप— जो हमारे कारोबार के लिए इतना विनाशकारी है—अभी भी जारी है।

"उनकी मनमानी के, उनके द्वारा हमारे आदेशों के रद्द किये जाने के फलस्वरूप अनर्थ हो सकता है।

"एक ठंडे गोदाम को, जहां आबादी के लिए उद्दिष्ट गोश्त और मक्खन रखा जाता है मुहरबंद कर दिया गया है और हम, यह सामान ख़राब न जाने पाये, इस गरज़ से गोदाम के तापमान का नियमन करने में असमर्थ हैं।

"एक गाड़ी आलू और एक गाड़ी बंदगोभी को क़ब्ज़े में लेकर उन्हें न जाने कहां भेज दिया गया है।

ग़ैरजिम्मेदार लोग आपके सामने जिस झूठ को व्यंजित कर रहे हैं उस पर विश्वास न कीजिये। नागरिको! दीवारों पर चिपकाये गये पोस्टरों में आप से कहा गया है कि आप हमें जिंदा न छोड़ें, उनमें हमारे ऊपर तोड़-फोड़ व हड़ताल करने की झूठी तोहमत लगायी गयी है, और हमारी जनता जो तकलीफ़ें और मुसीबतें झेल रही है, उन सब के लिए हमें दोषी ठहराया गया है, हालांकि हम रूसी जनता को भुखमरी की विभीषिका से बचाने का सतत् और अनथक प्रयत्न करते रहे हैं और अभी भी कर रहे हैं। दु.खी रूस के नागरिक होने के नाते हम जो कुछ भी सहन कर रहे हैं, उसके बावजूद हमने सेना तथा आबादी को रसद का संभरण करने के भारी और जिम्मेदारी के काम का घड़ी भर के लिए भी परित्याग नहीं किया है।

"भूखी तथा ठंड से ठिठुरती, अपना खून बहाकर और दारुण यातना सहन कर हमारे अस्तित्व की ही रक्षा करने वाली सेना की तसवीर हमारे मन से क्षण भर के लिए भी नहीं उतरती।

"नागरिको! यदि हम अपनी जनता के जीवन तथा इतिहास के अंधकारमय से अंधकारमय दिनों में बचे रह सके है, यदि हम पेत्रोग्राद को अकाल के मुह से बचा सके हैं, यदि हम मुसीबतज़दा सेना के लिए प्रबल, प्राय. अतिमानवीय प्रयत्नो द्वारा अनाज और चारे का बंदोबस्त कर सके हैं, तो इसीलिए कि हम ईमानदारी के साथ अपना काम करते रहे हैं और अभी भी करते जा रहे हैं...

"सत्ता हड़पनेवालों की 'आखिरी चेतावनी' का हम यह जवाब देते हैं: आपका, जो देश को तबाही की ओर लिये जा रहे हैं, मुह ऐसा नही है कि आप हमे, उन लोगों को, जो देश को बर्बादी से बचाने के लिए अपनी भरसक सब कुछ कर रहे हैं, धमकियां दें। हम धमकियो से नही डरते; हमारे सामने यातनाग्रस्त रूस की पवित्र मूर्ति है। हम आखिरी दम तक, जब तक आप हमें अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने से रोकते नहीं, सेना तथा जनता को अनाज की सप्लाई करने का काम करते रहेंगे। इसकी विपरीत दशा में सेना तथा जनता के सामने अकाल की विभीषिका मंडरायेगी, परन्तु इसकी जिम्मेदारी हिंसा का कुकर्म करने वालों पर होगी।"

खाद्य मंत्रालय के कर्मचारियों की
कार्यकारिणी समिति

चिनोव्निकों (सरकारी कर्मचारियों) के नाम

"इसके द्वारा यह सूचित किया जाता है कि सभी अधिकारी औ व्यक्ति, जिन्होने सरकारी तथा सार्वजनिक संस्थानों की नौकरी छोड़ दी है या जिन्हें तोड़-फोड़ के लिए या मुकर्रर दिन पर काम के लिए हाज़िर होने के कारण बर्ख़ास्त कर दिया गया है और जिन्होने इसके बावजूद अपनी तनख़ाहें पेशगी उस वक़्त के लिए ली हैं, जिसमे उन्होने काम नही किया है ये तनख़ाहें २७ नवंबर, १९१७ से पहले उन संस्थानों को लौटाने के लि बाध्य हैं, जहां वे काम करते थे।

"ऐसा न किये जाने की सूरत में ये व्यक्ति खजाने का माल चुराने के लिए जिम्मेदार ठहराये जायेंगे और उनपर सैनिक क्रांतिकारी अदालत में मुकद्दमा चलाया जायेगा।"

सैनिक क्रांतिकारी समिति

२४ नवंबर, १९१७

विशेष खाद्य-संभरण-बोर्ड की ओर से

"नागरिको!

"पेत्रोग्राद को खाद्य-संभरण करने के हमारे काम की अवस्थायें दिन दिन अधिकाधिक कठिन होती जा रही हैं।

"हमारे काम मे सैनिक क्रांतिकारी समिति के कमिसारों का हस्तक्षेप— जो हमारे कारोबार के लिए इतना विनाशकारी है—अभी भी जारी है।

"उनकी **मनमानी के**, उनके द्वारा हमारे आदेशों के रद्द किये जाने के फलस्वरूप **अनर्थ हो सकता है**।

"एक ठंडे गोदाम को, जहा आबादी के लिए उद्दिष्ट गोश्त और मक्खन रखा जाता है मुहरबंद कर दिया गया है और हम, **यह सामान ख़राब न जाने पाये**, इस गरज से गोदाम के तापमान का नियमन करने में असमर्थ हैं।

"एक गाड़ी आलू और एक गाड़ी बदगोभी को कब्जे में लेकर उन्हें न जाने कहा भेज दिया गया है।

"ऐसा माल भी, जो अधिग्रहण से बरी है (हलुवा), कमिसारों द्वारा अधिग्रहीत किया जाता है, और, एक दिन का वाकया है, कमिसार ने हलुवे के पाच डिब्बे अपने जाती इस्तेमाल के लिए जब्त कर लिये।

"हम अपने माल के गोदामों का बंदोबस्त करने की स्थिति में नहीं हैं, जहा स्वयं-नियुक्त कमिसार माल को बाहर निकालने नही देते और हमारे कर्मचारियों को गिरफ्तार करने की धमकी देते हुए उन्हे आतंकित करते हैं।

"पेत्रोग्राद में जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में प्रांतों में जानकारी है, और दोन में, साइबेरिया में, वोरोनेज और दूसरी जगहों में लोग आटा और अनाज भेजने से इनकार कर रहे हैं।

"यह चीज़ बहुत दिन नहीं चल सकती।

"काम हमारे हाथ से बाहर हुआ जा रहा है।

"हमारा कर्तव्य है कि हम आबादी को इसके बारे में आगाह करें।

"तनिक भी संभावना रहते, हम आबादी के हितों की चौकसी नहीं छोड़ेंगे।

"हम आसन्न अकाल को रोकने की अपनी भरसक पूरी कोशिश करेंगे। परंतु यदि इन कठिन परिस्थितियों में हमारा काम लाचारी दर्जे ठप हो जाता है, तो जनता जान ले कि यह हमारा क़सूर न होगा..."

१५

पेत्रोग्राद में संविधान सभा के चुनाव

पेत्रोग्राद में उन्नीस दलों की टिकटों पर चुनाव लड़े गये। ३० नवबर को प्रकाशित चुनाव के नतीजे नीचे दिये जाते हैं :

पार्टी	वोट
जन-समाजवादी	१६,१०६
कैडेट	२४५,००६
किसान-जनवादी	३,७०७
बोल्शेविक	४२४,०२७

बच्चों के लिए अपने साधनों से क्रिसमस-वृक्ष तथा आमोद-प्रमोद का प्रबंध कीजिये और मांग कीजिये कि छुट्टियों के बाद जो तिथि दूमा निर्धारित करेगी, उस तिथि को स्कूल खोले जायें।

"साथियो, सार्वजनिक शिक्षा के मामलों में अपनी स्थिति सुदृढ बनाइये और स्कूलो पर सर्वहारा संगठनों के नियंत्रण के लिए आग्रह कीजिये।"

केन्द्रीय नगर दूमा के अधीन
जन-शिक्षा आयोग

१७

जन-कमिसार परिषद् की ओर से मेहनतकश कज़्ज़ाकों के नाम

"कज़्ज़ाक भाइयो!

"आपको धोखा दिया जा रहा है। आपको जनता के खिलाफ भड़काया जा रहा है। आपसे कहा जा रहा है कि मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतें आपके दुश्मन हैं, कि वे आपकी कज़्ज़ाक ज़मीनों को, आपकी कज़्ज़ाक 'आज़ादी' को छीन लेना चाहती हैं। कज़्ज़ाको! इस बात पर विश्वास मत कीजिये... खुद आपके जनरल और जमींदार आपको अंधेरे और गुलामी मे रखने के लिए आपको धोखा दे रहे हैं। हम जन-कमिसार परिषद् के सदस्य आप कज़्ज़ाकों का इन शब्दों के साथ सबोधन करते हैं। उन्हें ध्यान से पढ़िये और फ़ैसला कीजिये कि सत्य क्या है और क्रूर प्रवंचना क्या है।

"एक कज़्ज़ाक के जीवन तथा उसकी नौकरी का अर्थ सदा से दासता और कठोर श्रम-कारावास रहा है। अधिकारियों की पुकार होते ही कज़्ज़ाक सिपाही को हमेशा अपने घोड़े पर जीन कस कर किसी मुहिम पर निकल जाना पड़ता था। कज़्ज़ाक सिपाही को अपना सारा हरबा-हथियार अपनी ही गाढ़ी कमाई से जुटाना पड़ता था। कज़्ज़ाक तो लाम पर है और उधर उसकी सारी खेती-बारी चौपट हो रही है। क्या ऐसी स्थिति उचित है? नहीं। उसे हमेशा के लिए बदल देना होगा।

कज्जाकों को दासता से मुक्त करना होगा। नई, जनता की सोवियत सत्ता मेहनतकश कज्जाकों की मदद के लिए आने को तैयार है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि कज्जाक खुद पुरानी व्यवस्था को समाप्त करने का फैसला करें, कि वे गुलामों को हाकने वाले अपने अफसरों, जमीदारों और अमीरों की अधीनता स्वीकार न करें, कि वे अपनी गर्दन से यह घिनौना जुआ उतार फेंकें। कज्जाको! उठिये, एक होइये! जन-कमिसार परिषद् आपका एक नये, अधिक सुखद जीवन में प्रवेश करने के लिए आह्वान करती है।

"नवंबर और दिसंबर में पेत्रोग्राद मे सैनिको, मजदूरो तथा किसानो के प्रतिनिधियों की सोवियतो की अखिल रूसी काग्रेसें हुई। इन काग्रेसों ने विभिन्न स्थानों में समस्त सत्ता को सोवियतो के हाथ मे, अर्थात् जनता द्वारा चुने गये लोगों के हाथ मे अंतरित कर दिया। अब से रूस में हरगिज ऐसे कोई शासक या अहलकार नही होने चाहिए, जो जनता पर ऊपर से हुकूमत करें और उन्हें हांके। जनता स्वयं सत्ता उत्पन्न करती है। एक जनरल को उतने ही अधिकार प्राप्त हैं, जितने कि एक सिपाही को। सभी बराबर हैं। सोचिये कज्जाको, यह गलत है या सही? कज्जाको, हम आपका आह्वान करते हैं कि आप इस नई व्यवस्था मे शामिल हों और स्वयं अपनी कज्जाक प्रतिनिधियों की सोवियतें स्थापित करें। विभिन्न स्थानों में समस्त सत्ता अनिवार्यतः इन्ही सोवियतों के हाथ मे होनी चाहिए – जनरल का ओहदा रखने वाले हेतमानों के हाथ में नहीं, बल्कि मेहनतकश कज्जाको के निर्वाचित प्रतिनिधियों के, आपके अपने विश्वसनीय, भरोसे लायक आदमियो के हाथ मे होनी चाहिए।

"सैनिको, मजदूरों तथा किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियतों की अखिल रूसी काग्रेसों ने जमीदारों की सारी जमीनो को मेहनत-मशक्कत करने वाले लोगो के हाथों में अंतरित करने के लिए एक प्रस्ताव पास किया है। कज्जाको, क्या यह मुनासिब नही है? कोर्नीलोव, कलेदिन, दूतोव, कराऊलोव, वारदिजी जैसे लोग धनिको के स्वार्थों की प्राणपन से रक्षा करते हैं और वे जमीनों को जमीदारों के हाथों मे रखने के लिए रूस को खून से नहला देने के लिए तैयार हैं। परन्तु मेहनतकश कज्जाको, क्या आप खुद गरीबी, जुल्म और जमीन की तंगी से परेशान नही हैं? कितने ऐसे कज्जाक हैं, जिनके पास फी परिवार ४–५ देस्यातीना से ज्यादा जमीन है?

परन्तु कज्जाक-जमींदार, जिनके पास हज़ारों देस्यातीना अपनी जमीनें हैं, इन जमीनों के अलावा कज्जाक-सिपाहियों की जमीनों को हथिया लेना चाहते हैं। नये सोवियत क़ानूनों के अनुसार कज्जाक-ज़मींदारों की ज़मीनें बिला मुआविज़ा कज्ज़ाक मेहनतकशों, गरीब कज्जाकों के हाथों में अनिवार्यतः अंतरित की जायेंगी। आपसे कहा जा रहा है कि सोवियतें आपसे आपकी जमीनें छीन लेना चाहती हैं। आपको कौन डरा रहा है? धनी कज्ज़ाक, जो यह जानते हैं कि **सोवियत सत्ता जमींदारों की जमीनों को आपके हाथों में देना चाहती है।** तब फिर कज्ज़ाको, आप ही फ़ैसला कीजिये, आप किसका समर्थन करेंगे: कोर्नीलोव और कलेदिन जैसे लोगों का, जनरलों और अमीरों का या किसानों, सैनिकों, मज़दूरों तथा कज्जाको के प्रतिनिधियों की सोवियतों का।

"अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा निर्वाचित **जन-कमिसार परिषद् ने सभी राष्ट्रों से, किसी भी राष्ट्र को क्षति या हानि पहुंचाये बिना, अविलंब युद्ध-विराम तथा सम्मानपूर्ण जनवादी शांति-संधि संपन्न करने का प्रस्ताव किया है।** *सभी पूंजीपति, जमींदार, कोर्नीलोवपंथी जनरल सोवियतों की* शांतिपूर्ण नीति के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं। लड़ाई उनकी तिजोरियों को भर रही थी, उनकी ताकत को बढ़ा रही थी और उनका मरतबा ऊंचा कर रही थी। और आप, आम कज्ज़ाक-सिपाहियो के लिए लड़ाई ने क्या किया? आप अपने भाइयों, सिपाहियों और मल्लाहों, की ही तरह बेवजह, बेमतलब अपनी जान गंवा रहे थे। शीघ्र ही इस निकम्मी लड़ाई को चलते हुए साढ़े तीन साल हो जायेंगे, उस लड़ाई को, जिसे सभी देशों के पूंजीपतियों और जमींदारों ने अपने मुनाफ़ों के लिए, विश्व के पैमाने पर अपनी डाकेज़नी के लिए आयोजित किया है। मेहनतकश कज्ज़ाको के लिए लड़ाई तबाही और मौत ही लाई है। लड़ाई ने कज्ज़ाक फ़ार्म-जीवन को साधनहीन कर दिया है। हमारे पूरे देश और विशेषतः कज्ज़ाकों के लिए निस्तार इसी में है कि अविलंब सच्ची शांति स्थापित हो। जन-कमिसार परिषद् ने सभी सरकारों और जनों के सम्मुख घोषणा की है: हम अन्य जनों की संपत्ति नहीं चाहते और हम अपनी संपत्ति देना भी नहीं चाहते। बिना संयोजनों के और बिना हरजानों के शांति! प्रत्येक राष्ट्र अपने भाग्य का निपटारा स्वयं करे। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र द्वारा हरगिज उत्पीड़ित न

किया जाये। यह है वह सच्ची, जनवादी जन-शांति, जिसे जन-कमिसार परिषद् मित्र और शत्रु, सभी सरकारों और सभी जनों से प्रस्तावित कर रही है। और उसके परिणाम प्रत्यक्ष हैं: रूसी मोर्चे पर युद्ध-विराम संपन्न किया गया है। सिपाहियों का और कज्जाकों का खून अब बहा और नहीं बह रहा है। कज्जाको, अब आप ही फैसला कीजिये: क्या आप इस तवाह-कुन, अहमकाना और मुजरिमाना मारकाट को जारी रखना चाहते हैं? अगर चाहते हैं तो कैडेटों का, जनता के शत्रुओं का समर्थन करें, चेर्नोव, त्सेरेतेली, स्कोबेलेव का समर्थन करें, जिन्होंने आपको पहली जुलाई के हमले में झोंक दिया; कोर्नीलोव का समर्थन करें, जिन्होंने मोर्चे पर सिपाहियों और कज्जाकों के लिए मृत्यु-दंड का विधान किया। परंतु यदि आप अविलंब और सच्ची शांति चाहते हैं, तो सोवियतों की पांतों में प्रवेश कीजिये और जन-कमिसार परिषद् का समर्थन कीजिये।

"कज्जाको, आपका भाग्य आपके अपने ही हाथों में है। हमारे सामान्य शत्रु, जमींदार, पूंजीपति, कोर्नीलोवपंथी अफसर, पूंजीवादी अखबार आपको धोखा दे रहे हैं और आपको तबाही के रास्ते हांके लिये जा रहे हैं। ओरेनबुर्ग में दूतोव ने सोवियत को गिरफ़्तार कर लिया है और गैरिसन को निरस्त्र कर दिया है। दोन प्रदेश में कलेदिन सोवियतों को धमका रहे हैं। उन्होंने घोषणा की है कि दोन प्रदेश युद्ध की स्थिति में है और वह अपने सैनिकों को एकत्र कर रहे हैं। काकेशिया में कराऊलोव स्थानीय कवायलियों को गोलियों से भून रहे हैं। कैडेट पूंजीपति वर्ग ने उनके लिए अपनी तिजोरियां खोल दी हैं। उनका सामान्य उद्देश्य है जनता की सोवियतों को कुचलना, मज़दूरों और किसानों को दबाना, सेना में फिर से कोड़े का अनुशासन कायम करना, और मेहनतकश कज्जाकों की दासता को चिर-स्थायी बनाना।

"हमारी क्रांतिकारी सेनायें जनता के ख़िलाफ़ इस अपराधपूर्ण विद्रोह को समाप्त करने की गरज़ से दोन और उराल की ओर बढ़ रही हैं। क्रांतिकारी सेनाओं के कमांडरों को हुक्म दिया गया है कि वे विद्रोही जनरलों के साथ किसी प्रकार की बातचीत न करें और बिना किसी रू-रिआयत के निर्णायक कार्रवाई करें।

"कज्जाको, अब यह आपके ही ऊपर निर्भर है कि आपके भाई

का खून अभी और बहेगा या नही। हम आपकी ओर अपना हाथ बढा रहे हैं। समस्त जनता के साथ, उसके शत्रुओ के ख़िलाफ़, एक होइये। कलेदिन, कोर्नीलोव, दूतोव, कराऊलोव और उन्हें मदद करने वाले और शह देने वाले सभी लोगो को जनता के शत्रु, ग़द्दार और दग़ाबाज़ घोषित कीजिये। उन्हें ख़ुद अपने सैनिको को लेकर गिरफ़्तार कर लीजिये और उन्हें सोवियत सत्ता के सुपुर्द कर दीजिये, जो खुले और सार्वजनिक रूप से क्रातिकारी न्यायाधिकरण में उनका निर्णय करेगी।

"कज्ज़ाको, कज्ज़ाकों के प्रतिनिधियों की सोवियते स्थापित कीजिये! कज्जाकों के सभी मामलों के इतज़ाम को अपने उन हाथों में ले लीजिये, जिनमे मशक्कत करते करते घट्टे पड़ गये हैं। अपने धनी ज़मीदारों की ज़मीनों को ले लीजिये। लड़ाई से तबाह मेहनतकश कज्ज़ाकों की ज़मीनों को जोतने-बोने के लिए इन ज़मीदारों के अनाज को, उनके औज़ारों तथा पशुधन को ले लीजिये।

"कज्जाको, जनता के सामान्य ध्येय के लिए संघर्ष में आगे बढ़िये!

"मेहनतकश कज्ज़ाक – ज़िंदाबाद!

"कज्जाकों, सिपाहियों, किसानों और मज़दूरों की एकता – ज़िंदाबाद!

"कज्जाको, सैनिकों, मज़दूरों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतो की सत्ता – ज़िंदाबाद!

"लड़ाई – मुर्दाबाद!

"ज़मीदार और कोर्नीलोवपंथी जनरल – मुर्दाबाद!

"शाति और जातियो का भाईचारा – ज़िंदाबाद!"

जन-कमिसार परिषद्

१८

सोवियत सरकार की कूटनीतिक चिट्ठी-पत्री

त्रोत्स्की द्वारा मित्र-राष्ट्रों तथा तटस्थ शक्तियों के पास भेजे गये पत्र और साथ ही जनरल दुख़ोनिन के नाम मित्र-राष्ट्रों के सैनिक अटैचियों के पत्र इतने लंबे-चौड़े हैं कि वे यहा पर नही दिये जा सकते। इसके अलावा उनका संबंध सोवियत जनतत्र के इतिहास के एक दूसरे पहलू से है,

जिससे साथ इस किताब का कोई ताल्लुक नहीं है, अर्थात् सोवियत सरकार के परराष्ट्र संबंधों से। मैं अपनी अगली पुस्तक, 'कोर्नीलोव काड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' में इस विषय की विशद चर्चा कर रहा हूं।

१६

दुख़ोनिन के खिलाफ़ मोर्चे से अपील

"...शाति के सघर्ष को पूजीपतियो तथा प्रतिक्रातिकारी जनरलों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है... अखबारों की रिपोर्टों से मालूम होता है कि पूजीपति वर्ग के गुमाश्ते और साथी-सघाती, वेर्ख़ोव्स्की, अव्क्सेन्त्येव, चेर्नोव, गोत्स, त्सेरेतेली वगैरह भूतपूर्व मुख्य सेनापति दुख़ोनिन की स्ताव्का (सदर मुकाम) में इकट्ठे हो रहे हैं। यह भी मालूम होता है कि वे सोवियतों के खिलाफ एक नई सत्ता स्थापित करना चाहते हैं।

"साथी सिपाहियो! जिन व्यक्तियो का उल्लेख हमने किया है, वे सभी मत्री रह चुके हैं। उन्होंने केरेन्स्की और पूजीपति वर्ग के साथ मेल रखते हुए काम किया है। वे पहली जुलाई के हमले के लिए और लड़ाई को लंबा खीचने के लिए जिम्मेदार हैं। उन्होंने किसानो को भूमि देने का वादा किया और फिर भूमि समितियों के सदस्यों को गिरफ्तार किया। उन्होंने सिपाहियों के लिए मृत्यु-दड को पुन स्थापित किया। उन्होंने फ़ासीसी, अंग्रेज और अमरीकी थैलीशाहो के हुक्मों की तामील की।

"जनरल दुख़ोनिन को जन-कमिसार परिषद् की आज्ञा को मानने से इनकार करने के लिए मुख्य सेनापति के पद से बर्ख़ास्त कर दिया गया है... उत्तर में वह साम्राज्यवादी मित्र-शक्तियों के सैनिक अटैचियों द्वारा भेजे गये पत्र को सेना में वितरित कर रहे हैं और प्रतिक्राति भड़काने की कोशिश कर रहे हैं...

"दुख़ोनिन के हुक्म की तामील न कीजिये! उनके भड़कावे में न आइये! उन पर और प्रतिक्रातिकारी जनरलो के उनके दल पर कड़ी नजर रखिये! .."

क्रिलेन्को की ओर से

आदेश नं० २

"...भूतपूर्व मुख्य सेनापति जनरल दुख़ोनिन को, आदेशों के परिपालन में रुकावट डालने के लिए, नया गृहयुद्ध भड़का सकने वाली अपराधपूर्ण कार्रवाइयों के लिए जनता का शत्रु घोषित किया जाता है। जो लोग भी दुख़ोनिन का समर्थन करते हैं, उन्हें, उनकी सामाजिक अथवा राजनीतिक स्थिति का या उनके अतीत का लिहाज़ किये बिना, गिरफ़्तार कर लिया जायेगा। विशेष अधिकारसम्पन्न व्यक्ति इन गिरफ़्तारियों की कार्रवाई करेंगे। मैं उपरोक्त अध्यादेश के पालन की ज़िम्मेदारी जनरल मानिकोव्स्की को सौंपता हूं..."

बारहवें अध्याय की टिप्पणी

१

किसानों के प्रश्नों का उत्तर

किसानों ने कितनी ही बातों के बारे में जो पूछ-ताछ की है, उसके जवाब में यह स्पष्टीकरण किया जाता है कि देश में समस्त सत्ता अब से मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के हाथों में है। मजदूरों की क्रांति, पेत्रोग्राद तथा मास्को में विजय प्राप्त कर, अब रूस के दूसरे सभी केंद्रों को सर करती जा रही है। मजदूरों तथा किसानों की सरकार, जमींदारों के ख़िलाफ़ और पूंजीपतियों के ख़िलाफ़, मजदूरों के साथ आम किसानों, ग़रीब किसानों, अधिकांश किसानों के संश्रय को सुनिश्चित बनाती है।

अतएव किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतें, सर्वप्रथम हल्कों की सोवियतें और तत्पश्चात् प्रांतों की सोवियतें अब से लेकर संविधान सभा

के अधिवेशन तक अपने अपने स्थानों में राज्य सत्ता के पूर्ण अधिकार-संपन्न निकाय हैं। सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा भूमि पर जमींदारों के सभी हक रद्द कर दिये गये हैं। मौजूदा मजदूरों और किसानों की अस्थायी सरकार ने अभी से भूमि के संबंध में एक आज्ञप्ति जारी की है। उपरोक्त आज्ञप्ति के आधार पर समस्त भूमि, जो अभी तक जमींदारों की संपत्ति थी, अब पूरी तरह बिना मीन-मेख के, किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के हाथ में अंतरित की जाती है। वोलोस्त (कई गांवों का एक समूह) भूमि समितियां अविलंब जमींदारों की समस्त भूमि अपने हाथ में ले लेंगी और उसका कड़ाई से हिसाब रखेंगी। यह देखते हुए कि अब से सभी निजी जमींदारियां सार्वजनिक संपत्ति हो गई हैं और इसलिये स्वयं जनता द्वारा अवश्य ही रक्षणीय हैं, वे इस बात का ध्यान रखेंगी कि सुव्यवस्था क़ायम रहे और पूरी जमींदारी की अच्छी तरह हिफ़ाजत की जाये।

क्रांतिकारी सत्ता द्वारा जारी की गई आज्ञप्तियों के पालन में, किसानों के प्रतिनिधियों की मंडल-सोवियतो की राय से वोलोस्त भूमि समितियों द्वारा दिये गये सभी आदेश सर्वथा क़ानूनी हैं और उनको तत्काल अनुल्लंघनीय रूप मे कार्यान्वित किया जायेगा।

सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा नियुक्त मजदूरों तथा किसानों की सरकार को जन-कमिसार परिषद् का नाम दिया गया है।

जन-कमिसार परिषद् किसानों का आह्वान करती है कि वे प्रत्येक स्थान में समस्त सत्ता अपने हाथों मे ले लें।

मजदूर हर तरीक़े से, पूर्ण तथा निरपेक्ष रूप से किसानों का समर्थन करेंगे, मशीनों और औज़ारों के सिलसिले मे उनकी जो भी जरूरतें होंगी, उनका इंतजाम करेंगे और बदले मे वे किसानों से अनुरोध करते हैं कि वे अनाज की बारबरदारी कर मजदूरों की मदद करें।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

प्रकाशक
की
ओर से

अमरीकी कम्युनिस्ट लेखक जॉन रीड की पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' १९१९ में संयुक्त राज्य अमरीका में प्रकाशित हुई थी और सोवियत संघ में रूसी भाषा में वह सबसे पहले १९२३ में निकली थी, जिसके बाद उसका पुनः प्रकाशन किया गया है।

अमरीकी संस्करण की अपनी प्रस्तावना में लेनिन ने इस पुस्तक की भूरि भूरि प्रशंसा की। उसमें अक्तूबर (नवम्बर) समाजवादी क्रांति का, जिसे जन-साधारण की सच्ची जन-क्रांति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, यथार्थ वर्णन किया गया है। उसमें जनता की युगविधायक सृजनात्मक क्षमता का तथा मजदूर वर्ग, किसानों और ग्राम सिपाहियों के संकल्प के वाहक बोल्शेविकों की उस क्रांति में प्रमुख भूमिका का ज्वलन्त चित्रण किया गया है।

महान् अक्तूबर क्रांति मानव इतिहास में अपने ढंग की पहली क्रांति थी, जिसको, व्लादीमिर इल्यीच लेनिन के नेतृत्व में, बोल्शेविक पार्टी तथा उसकी केंद्रीय समिति ने प्रेरित, अनुप्राणित तथा संगठित किया था।

बोल्शेविक पार्टी तथा उसके नेता लेनिन ने क्रांति के प्रक्रम का, उसके सभी संभाव्य पेंच और ख़म का, क्रांतिकारी जन-साधारण के तथा विरोधी वर्गों और पार्टियों के आचरण का अचूक पूर्वानुमान किया था। विद्रोह का पथ-प्रदर्शन करने वाले विभिन्न निकायों—बोल्शेविक पार्टी का राजनीतिक ब्यूरो तथा पार्टी केंद्र, पेत्रोग्राद सोवियत तथा उसका सामरिक केंद्र, सैनिक क्रांतिकारी समिति, जिसके हाथ में विद्रोह की बागडोर थी—के क्रिया-कलाप लेनिन के विचारों द्वारा दीप्त तथा अनुप्राणित थे।

लेनिन के विचार उन अवसरवादियों के साथ भीषण मुठभेड़ों के दौरान कार्यान्वित किये गये थे, जिनका सर्वहारा क्रांति की क्षमता में तथा

रूस में उसकी विजय की संभावना में विश्वास न था। ये लोग पराजयवादी थे और उन्होंने या तो लेनिन की सशस्त्र जन-विद्रोह की योजना का प्रत्यक्ष विरोध किया, या विद्रोह के विचार को स्वीकार करने का दम भरते हुए, एक ऐसी कार्यनीतिक योजना का सुझाव दिया, जो क्रांति को निश्चित रूप से सर्वनाश के मुंह में डाल देती।

विद्रोह के पूर्व (सितम्बर और अक्तूबर में) लेनिन ने जो लेख और पत्र लिखे, उनमें जनता की विजय में गहनतम विश्वास व्याप्त है, जिस विश्वास का आधार क्रांति के, तथा क्रांति के शत्रुओं के शिविर में मौजूद परिस्थिति का उनका धीर-गंभीर मूल्यांकन था। उनमें क्रांति की संगीन घड़ी में दुश्मन के सामने हथियार डाल देने की प्रवृत्ति रखने वाले कायरों और गद्दारों की कलई खोली गई थी और उनकी लानत-मलामत की गई थी।

२९ सितम्बर (१२ अक्तूबर)* को 'संकट परिपक्व हो चुका है' शीर्षक लेख में लेनिन ने बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति के सदस्य, जिनोव्येव, कामेनेव और त्रोत्स्की के तथा पार्टी की ऊपरी परतों में उनके मुट्ठीभर अनुयायियों के रुख़ की आलोचना की थी। लेनिन ने जिनोव्येव तथा कामेनेव को आड़े हाथों लिया, जिन्होंने इस बात के लिए आग्रह किया था कि बोल्शेविकों को पूर्व-संसद में भाग लेना चाहिए। इसका अर्थ यह होता कि क्रांतिकारी शक्तियां सैद्धांतिक दृष्टि से निहत्थी हो जाती और विद्रोह के लिए तैयारी करने के काम से उनका ध्यान हट जाता। लेनिन ने त्रोत्स्की जैसे नेताओं का भी पर्दाफ़ाश किया, जो "सोवियतों की कांग्रेस के लिए इंतज़ार करने की हिमायत करते हैं और अविलंब सत्ता हाथ में लेने का विरोध करते हैं, तत्काल विद्रोह करने का विरोध करते हैं," जो कि सभी व्यावहारिक कार्यभारों में सबसे ज्यादा ज़रूरी है।

लेनिन ने गुस्से से लिखा, "इस प्रवृत्ति अथवा मत पर क़ाबू पाना होगा, नहीं तो बोल्शेविक लोग अपने को सदा के लिए कलंकित कर लेंगे और एक पार्टी के रूप में अपना सर्वनाश कर लेगे। क्योंकि ऐसी घड़ी को

---

*यहां तिथियां पुराने रूसी पंचांग के अनुसार दी गई हैं। कोष्ठकों में नये पंचांग की तिथियां हैं, जिनका जॉन रीड ने अपनी पुस्तक में इस्तेमाल किया।—सं०

हाथ से जाने देना और सोवियतों की कांग्रेस के लिए 'इतजार करना' घोर मूर्खता या सरासर गद्दारी होगी... सोवियतों की कांग्रेस के लिए 'इंतजार करने'... का अर्थ होगा एक ऐसे वक़्त कई हफ़्ते गंवा देना, जब एक एक हफ़्ता, यहां तक कि एक एक दिन हर चीज़ के लिए निर्णायक है... इसी घड़ी सत्ता हाथ में लेने से परहेज़ करना, 'इंतजार करना', केंद्रीय कार्यकारिणी समिति में बातें बघारना, (सोवियत के) 'मुखपत्र के लिए संघर्ष करने' तक, 'कांग्रेस के लिए संघर्ष करने' तक अपने को महदूद रखना, **क्रांति को विनाश के हवाले कर देना है**" ('संकट परिपक्व हो चुका है')।

केंद्रीय समिति के अंदर पराजयवादियों के ख़िलाफ़ लेनिन के अविरत संघर्ष की परिणति विजय में हुई। १० (२३) अक्तूबर को केंद्रीय समिति ने मौजूदा परिस्थिति के बारे में लेनिन की रिपोर्ट को सुना और लेनिन द्वारा सूत्रबद्ध प्रस्ताव को स्वीकृत किया, जिसमें यह माना गया था कि विद्रोह अनिवार्य तथा आसन्न है और यह सुझाव दिया गया था कि पार्टी के सभी संगठन अपने व्यावहारिक क्रिया-कलाप में इसी विचार पर अमल करें। ज़िनोव्येव और कामेनेव ने प्रस्ताव के ख़िलाफ़ वोट दिया। त्रोत्स्की भी अपने मोर्चे पर डटे रहे और उन्होंने सुझाव दिया कि दूसरी कांग्रेस के उद्‌घाटन से पहले विद्रोह शुरू नहीं करना चाहिए, जिसका अर्थ वास्तव मे सरासर टालमटोल होता और विद्रोह के मुहूर्त को दुश्मन पर जाहिर कर देना होता।

त्रोत्स्की ने २३ अक्तूबर (५ नवम्बर) को हुए पेत्रोग्राद सोवियत के पूर्ण अधिवेशन में तथा अन्यत्र अपने इस दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया था। अपनी पुस्तक में जॉन रीड त्रोत्स्की के वक्तव्य को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत करते हैं। यह पूछे जाने पर कि बोल्शेविक कब क़दम उठाने का इरादा रखते हैं, त्रोत्स्की ने उत्तर दिया: "सत्ता का यह अंतरण अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा संपन्न किया जायेगा... हम आशा करते हैं कि अखिल रूसी कांग्रेस अपने हाथों में वह सत्ता और अधिकार ग्रहण करेगी, जिसका आधार है जनता की संगठित स्वतंत्रता" (इस पुस्तक का पृ०१०८)।

लेनिन ने इस घातक कार्यनीति का विरोध किया और २४ अक्तूबर (६ नवम्बर) को केंद्रीय समिति के सदस्यो के नाम एक पत्र में अपील

की कि सरकार के मंत्रियों को उसी शाम को, बहरसूरत उसी रात को गिरफ़्तार कर लिया जाये और सत्ता पर अविलंब अधिकार स्थापित किया जाये। "हमें हर्गिज इंतजार नहीं करना चाहिए! हम सब कुछ गंवा सकते हैं!.. इतिहास उन क्रांतिकारियों को इसके लिए क्षमा नहीं करेगा, जो ऐसे वक़्त, जब वे आज विजयी हो सकते हैं (और वे आज निश्चय ही विजयी होंगे), जब वे कल पर टाल कर बहुत कुछ गंवा बैठने का ख़तरा मोल लेंगे, वास्तव में सब कुछ गंवा बैठने का ख़तरा मोल लेंगे, टालमटोल करते हैं और देर लगाते हैं... यदि हम आज सत्ता पर अधिकार करते हैं, तो हम ऐसा सोवियतों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं, उनके नाम पर करेंगे... २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) के दोलायमान मतदान की प्रतीक्षा करना अनर्थ होगा, अथवा कोरी औपचारिकता होगा। जनता का यह अधिकार है और वह इसके लिए कर्त्तव्यबद्ध है कि वह ऐसे प्रश्नों का निर्णय मतदान द्वारा नहीं, बल्कि बल-प्रयोग द्वारा करे; क्रांति की नाज़ुक घड़ियों में उसका यह अधिकार है और वह इसके लिए कर्त्तव्यबद्ध है कि वह अपने प्रतिनिधियों को निर्देश दे... और उनका मुंह न जोहे" ('बोल्शेविक पार्टी के सदस्यों के नाम पत्र')।

२४–२५ अक्तूबर (६–७ नवम्बर) की रात को स्मोल्नी पहुंचने पर लेनिन ने विद्रोह का पूर्ण नेतृत्व ग्रहण किया। २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) की रात को दर्जनों मजदूरों और सिपाहियों ने, लाल गार्डी दस्तों के मुखियों और संदेशवाहकों ने, जो वार्डों, कारख़ानों और सैनिक टुकड़ियों का प्रतिनिधित्व करते थे, स्मोल्नी आकर लेनिन से मुलाक़ात की। सैनिक क्रांतिकारी समिति ने ज़बरदस्त पैमाने पर काम करना शुरू किया, और लेनिन द्वारा व्यापक भाव से प्रेरित मज़दूरों और सिपाहियों के क्रांतिकारी उपक्रम ने उसे भरोसे लायक़ ताकत पहुंचाई।

लेनिन की अद्भुत कार्यनीति विजयी हुई।

लेनिन की दृढ़, निष्कंप शक्ति इस बात में निहित थी कि वह संगठन की प्रतिभा के साथ, प्रचुर बौद्धिक तथा सैद्धांतिक साधनों से संपन्न थे। सितंबर और अक्तूबर में कार्यनीति-संबंधी अपने पत्रों में लेनिन ने जो योजना प्रस्तुत की थी, पार्टी केंद्र तथा सैनिक क्रांतिकारी समिति ने उसका अक्षरशः पालन किया।

जॉन रीड ने लेनिन का एक असाधारण नेता के रूप में चित्रण किया है। और सचमुच ही वह एक असाधारण नेता थे! वह पश्चिम यूरोपीय प्रकार के सामाजिक-जनवादी नेता के आडंबरपूर्ण ढोंग से घृणा करते थे और वह अपने आचरण तथा विचारों में असाधारण सादगी के साथ असाधारण बुद्धिमत्ता रखते थे। जॉन रीड के शब्दों में उनमें "गहन विचारों को सीधे-सादे शब्दों में समझाने की और किसी भी ठोस परिस्थिति को विश्लेषित करने की अपूर्व क्षमता थी। और उनमें सूक्ष्मदर्शिता के साथ साथ बौद्धिक साहसिकता कूट कूट कर भरी थी।" इन सब गुणों का स्रोत जनता के साथ महान् लेनिन का घनिष्ठ सम्बन्ध था। जनता को ही वह इतिहास का निर्माता मानते थे और उसकी सृजनात्मक, रचनात्मक क्षमता में उन्हे अगाध विश्वास था।

विजयी जन-विद्रोह के बाद अपने पहले ही भाषण में, जो २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) को तीसरे पहर पेत्रोग्राद सोवियत के पूर्ण अधिवेशन में दिया गया था, लेनिन ने अपना यह निश्चित विश्वास प्रगट किया कि जनता अंतिम रूप से विजयी हुई है। नये सोवियत रूस के भविष्य की ओर दृष्टिपात करते हुए, उन्होंने बोल्शेविकों, मज़दूर वर्ग और शेष जन-साधारण के सम्मुख उपस्थित ऐतिहासिक कार्यभार की सीधे-सादे और स्पष्ट शब्दों में परिभाषा की। लेनिन ने कहा कि अब यह उन्ही लोगों का काम है कि वे समाजवादी सर्वहारा राज्य का निर्माण करें और रूस में समाजवाद की विजय को सुनिश्चित बनायें।

बोल्शेविकों की धीर-गंभीर आशावादिता सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में त्रोत्स्की द्वारा दिये गये पराजयवादी वक्तव्य का प्रबल रूप से खण्डन करती है। जॉन रीड ने कांग्रेस मे त्रोत्स्की के भाषण के इस प्रसंग से संबंधित अंश को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है: "... अगर यूरोप पर साम्राज्यवादी पूंजीपति वर्ग का शासन बना रहा, तो किसी भी सूरत में क्रांतिकारी रूस का विनाश निश्चित है... हमारे सामने दो ही विकल्प हैं: या तो रूसी क्रांति यूरोप में भी क्रांतिकारी आंदोलन को जन्म देगी, या यूरोपीय शक्तियां रूसी क्रांति का काम तमाम कर देंगी!" (इस पुस्तक का पृ० २०७)।

त्रोत्स्की ऐसा इसलिए सोचते थे कि उन्हें यह विश्वास नही था कि

मेहनतकश किसान विजयी रूसी सर्वहारा को कभी भी अपना क्रांतिकारी समर्थन देंगे। उन्हें यह विश्वास नहीं था कि सर्वहारा ग्राम किसानों को अपनी ओर लाने की क्षमता रखता है। उनका यह अविश्वास "स्थायी क्रांति" के उनके मेन्शेविक सिद्धांत में अंतर्निहित था, जिसे उन्होंने १६०५ में प्रतिपादित किया था। इस सिद्धांत के अनुसार जब तक सर्वहारा प्रमुख यूरोपीय देशों में सत्तारूढ़ न हो जाये, किसी एक देश में समाजवादी क्रांति विजयी नहीं हो सकती। अक्तूबर (नवम्बर) क्रांति से कुछ ही दिन पहले त्रोत्स्की ने अपने पैंफ़्लेट 'शांति का कार्यक्रम' में लिखा था: "जर्मनी में क्रांति के बिना रूस में अथवा इंगलैंड में क्रांति की विजय अकल्पनीय है और इसी तरह रूस और इंगलैंड में क्रांति के बिना जर्मनी में क्राति की विजय अकल्पनीय है।" यह धारणा कि समाजवादी क्रांति तभी विजयी हो सकती है, जब वह प्रमुख यूरोपीय देशों में सर्वहारा की एकसाथ विजय के रूप में संपन्न हो, त्रोत्स्की के उस इंटरव्यू में भी व्यक्त है, जो उन्होंने १७ (३०) अक्तूबर को जॉन रीड को दिया था। भावी सरकार की विदेश नीति की चर्चा करते हुए त्रोत्स्की ने कहा: "मेरी दृष्टि में इस युद्ध के पश्चात् यूरोप का पुनर्जन्म होगा – कूटनीतिज्ञों के हाथों नहीं, सर्वहाराओं के हाथों। यूरोप का संघात्मक जनतन्त्र – यूरोप का संयुक्त राज्य..." (इस पुस्तक का पृ० ६७)। इस प्रकार त्रोत्स्की ने सर्वहारा क्रांति के लेनिनवादी सिद्धात, जिसमे एक देश में समाजवाद की विजय का विचार निहित था, के विरोध मे अपना, यूरोप के संयुक्त राज्य का विचार प्रस्तुत किया, जो "स्थायी क्राति" के उनके पराजयवादी सिद्धात से उत्पन्न होता था।

रूस में युगविधायक घटनाओं का कठोर, निर्मम तर्क ऐसा था कि पराजयवादी नीति के प्रतिपादक कभी कभी अपने ही विश्वासों के विरुद्ध बोलते तथा आचरण करते थे। विद्रोह के समय त्रोत्स्की के साथ भी यही बात हुई। क्राति की वास्तविक गतिविधि ने पेत्रोग्राद सोवियत के अध्यक्ष के नाते उन्हें लेनिन की कार्यनीति का अनुसरण करने पर विवश कर दिया। २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) को पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक मे, जब किसी ने अपनी जगह पर बैठे बैठे चिल्लाकर कहा कि क्रांति की विजय की घोषणा ग़ैरकानूनी है, क्योंकि अभी तक काग्रेस ने अपनी मर्ज़ी को जा-

हिर नही किया है, त्रोत्स्की ने लेनिन की कार्यनीति के अनुरूप उत्तर दिया, क्योंकि वह इस हकीक़त से मुंह नही मोड़ सकते थे कि जनता ने बगावत की थी और जीती थी। उन्होंने कहा, "पेत्रोग्राद के मजदूरों और सिपाहियों ने सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस की इच्छा का पूर्वानुमान किया है!" (इस पुस्तक का पृ० १४०)। जैसा हम देखते हैं, उन्हें दो ही दिन पहले २३ अक्तूबर (५ नवम्बर) को पेत्रोग्राद सोवियत के पूर्ण अधिवेशन में दिये गये अपने वक्तव्य से बिल्कुल उल्टी ही बात कहनी पड़ी।

परंतु इन युगांतरकारी घटनाओं के तर्क ने त्रोत्स्की, उनके पक्के अनुयायिओं और अन्य पराजयवादियों के दृष्टिकोण के सार-तत्त्व को नही बदला, न ही वह उसे बदल सकता था। इन लोगों ने रूस मे समाजवादी क्रांति की तथा समाजवाद की विजय की संभावना से इनकार किया, और वस्तुतः ऐतिहासिक दृष्टि से यह अनिवार्य माना कि इस देश मे पूंजीवादी जनतंत्र की संसदीय व्यवस्था स्थापित होगी। पार्टी तथा देश के मामलों मे उनकी बाद की गतिविधि यह प्रगट करती है कि उन्होंने सोवियत राज्य को संहत करने तथा सोवियत संघ में समाजवादी समाज का निर्माण करने की लेनिनवादी सामान्य नीति के ख़िलाफ एक के बाद एक कितनी ही विश्वासघातपूर्ण कार्रवाइयां की। ब्रेस्त की शांति-वार्ता के समय उन्होंने जो स्थिति ग्रहण की, वह राजद्रोह थी – उससे घट कर कुछ नही। उन्होंने नयी आर्थिक नीति के माध्यम से समाजवादी निर्माण करने की लेनिन की कार्यनीति पर शब्दांबरपूर्ण प्रहार किये। उन्होने पार्टी की केंद्रीय समिति की कुत्सा की, जो समाजवादी औद्योगीकरण तथा कृषि के सामूहीकरण की लेनिनवादी नीति को अग्रसर कर रही थी। लेनिनवादी सामान्य नीति के ख़िलाफ़ पराजयवादी दलों तथा गुटों के इस अनवरत संघर्ष का यह स्वाभाविक तथा अनिवार्य परिणाम था कि उन्होंने पार्टी से अपना नाता बिल्कुल ही तोड लिया और सोवियत-विरोधी रुख़ अपनाया।

जिस यथार्थ परिस्थिति में जॉन रीड को अपनी पुस्तक के लिए तथ्यों को एकत्रित तथा हृदयंगम करना पड़ा, उसके कारण वह विद्रोह के पहले और उसके दौरान बोल्शेविक पार्टी के केंद्रीय निकायों के कार्य का उतने ठोस और प्रामाणिक रूप से अध्ययन न कर सके, जितना कि वांछनीय था, क्योंकि उस समय विद्रोह की विजय से पहले, बोल्शेविक पार्टी तथा लेनिन

ने जो कुछ किया, वह अनिवार्यतः गुप्त रूप से किया। यही कारण है कि लेनिन और उनके घनिष्टतम सहयोगियों ने पराजयवादियों और त्रोत्स्की की कार्यनीति के ख़िलाफ़ जो दृढ़, अविरत संघर्ष किया, उसे इस पुस्तक में पर्याप्त रूप से प्रत्यक्ष नही किया गया है। यही कारण है कि रीड अक्तूबर (नवम्बर) क्रांति के प्रारंभिक दिनों में त्रोत्स्की के वक्तव्यों के अंतर्विरोधपूर्ण स्वरूप को देख न पाये।

जॉन रीड ने जब यह कहा कि "लेनिन, त्रोत्स्की, पेत्रोग्राद के मजदूरों और सीधे-सादे सिपाहियों को छोड़ कर, यह बात शायद किसी के दिमाग़ में नहीं आई होगी कि बोल्शेविक तीन दिन से अधिक सत्तारूढ़ रह सकते है," तब उन्होंने अपने को धोखा ही दिया। लेनिन, केंद्रीय समिति, बोल्शेविक पार्टी के अधिकांश स्थानीय संगठनों को यक़ीन था कि यह विजय पक्की और पाएदार होगी। दिवालिया मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टियों, सत्ताच्युत शोषक वर्गों के सदस्यों और उनके पिट्ठुओं, तथा बोल्शेविक पार्टी के अंदर मुट्ठीभर पराजयवादियों को छोड़ कर किसी ने भी यह "भविष्यवाणी" नही की थी कि विजयी क्रांति का अनिवार्यतः पतन हो जायेगा। सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस में रूसी क्रांति के भविष्य के बारे में त्रोत्स्की का घोर निराशापूर्ण वक्तव्य इसी काल में दिया गया था। जिन परिस्थितियों में केंद्रीय समिति ने सशस्त्र विद्रोह का निर्णय किया था, उनके बारे में रीड का वर्णन (देखिये, पृष्ठ ८० तथा फुटनोट) ऐतिहासिक तथ्यों के साथ मेल नही खाता।

फिर भी पुस्तक की ये सारी कमियां तथा विभिन्न अशुद्धियां इस आधारभूत तथ्य के महत्त्व को कम नही कर सकती कि जॉन रीड की पुस्तक महान् अक्तूबर (नवम्बर) समाजवादी क्रांति का एक बड़ा जंचता हुआ तथा सच्चा वर्णन है।

इस पुस्तक का लेखक लेनिन के, बोल्शेविक पार्टी के विचारों से उद्दीप्त था, जो विद्रोह के क़ानूनी सामरिक केंद्रों की गतिविधि के, उठ खड़ी हुई जनता के साहस, पराक्रम तथा क्रांतिकारी सृजनात्मकता के रूप में फलीभूत हुए थे। इसी चीज़ ने जोशीले क्रांतिकारी तथा प्रतिभाशाली लेखक की तीक्ष्ण दृष्टि को ऐसी क्षमता प्रदान की कि वह अपने सामने उद्घाटित घटनाक्रम में निहित सार-तत्त्व का बोध कर सके तथा उसके गहन ऐतिहासिक

अर्थ को ग्रहण कर सके। यही इस पुस्तक की ख़ास ख़ूबी है। लेनिन के शब्दों में, "सर्वहारा क्रांति तथा सर्वहारा अधिनायकत्व वास्तव मे क्या है, इसको समझने के लिए जो घटनायें इतनी महत्त्वपूर्ण हैं, उनका इस पुस्तक में सच्चा और जीता-जागता चित्र दिया गया है।"

रूस में अक्तूबर (नवम्बर) क्रांति का महान् सत्य, जिसके लिए रीड ने अपनी पुस्तक अर्पित की, अमरीकी और दूसरे साम्राज्यवादियों की मूल प्रकृति के ही प्रतिकूल था। उन्होंने अपने अख़बारों में बोल्शेविकों के ख़िलाफ इस गरज से गंदा, कुत्सित प्रचार किया कि उनके द्वारा शोषित जन-साधारण का ध्यान रूसी मज़दूरों, किसानों तथा सैनिकों द्वारा प्रस्तुत क्रांतिकारी निर्भयता तथा साहस के संक्रामक आदर्श से विचलित हो जाये। उन्होंने जॉन रीड द्वारा संग्रहीत सामग्री को ज़ब्त कर लेने की कोशिश की। एक के बाद एक छः बार भाड़े के घुसपैठियों ने उनकी पुस्तक की पाडुलिपि को चुरा लेने और नष्ट कर देने के उद्देश्य से रीड के प्रकाशक के कार्यालय पर छापा मारा।

परंतु सारी विघ्न-बाधाओं तथा कठिनाइयों के बावजूद जॉन रीड की पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' १९१९ मे संयुक्त राज्य अमरीका मे प्रकाशित हुई। यह विदेश में प्रकाशित पहली पुस्तक थी, जिसने संसार को बताया कि मानव-इतिहास मे एक नये युग, सर्वहारा क्रांतियो के युग का सूत्रपात करनेवाली रूस की विजयी समाजवादी क्रांति के बारे मे यथार्थ सत्य क्या है।

एल्बर्ट विलियम्स

जॉन रीड की जीवनी

पहला अमरीकी नगर, जहां मजदूरों ने सबसे पहले कोल्चाक की सेना के लिए फौजी साज-सामान लादने से इनकार किया, प्रशान्त महासागर के तट पर स्थित पोर्टलैंड नगर था। इसी नगर में २२ अक्तूबर, १८८७ को जॉन रीड का जन्म हुआ था।

उनके पिता उन पोढ़े शरीर और उदार मन वाले पुरोगामियों में थे, जिनका वर्णन जैक लंडन ने पश्चिम अमरीका के बारे मे अपनी कहानियों मे किया है। वह प्रखर मस्तिष्क के व्यक्ति थे, जिन्हें पाखड तथा छल-प्रपंच से चिढ़ थी। प्रभावशाली तथा सम्पत्तिशाली व्यक्तियों का पक्ष लेने के बजाय उन्होंने उनका विरोध किया, और जब बड़ी बड़ी कम्पनियों ने पसर कर राज्य के जंगलात तथा अन्य प्राकृतिक संपदाओं को अपने चंगुल मे ले लेना चाहा, उन्होंने उनसे जबर्दस्त मोर्चा लिया। उन पर हजार जुल्म ढाये गये, उन्हें मारा-पीटा गया और बार बार काम से निकाल दिया गया, लेकिन उन्होंने दुश्मन के सामने कभी घुटने नही टेके।

इस प्रकार अपने पिता से जॉन रीड को एक ख़ासी अच्छी वपौती मिली – एक योद्धा का रक्त, जो उनकी शिराओं में प्रवाहित था, आला दर्जे का दिमाग़ और दृढ़, साहसपूर्ण भावना। जॉन रीड की प्रतिभा का विकास शीघ्र ही हुआ। हाई स्कूल पास कर वह आगे पढ़ने के लिए हारवर्ड गए। हारवर्ड विश्वविद्यालय तैलाधीशों, कोयला-शाहों तथा इस्पात-सम्राटों के बेटों का विश्वविद्यालय है। वे जानते थे कि जब चार साल के खेल-कूद, आमोद-प्रमोद तथा "भावशून्य विज्ञान के भावशून्य अध्ययन" के बाद उनके बेटे घर लौटेंगे, वे उग्र विचारों के कलुष से सर्वथा मुक्त होगे। और सचमुच अमरीका के हजारहा नौजवान कालेजों और युनिवर्सिटियो में इसी प्रकार

मौजूदा व्यवस्था के हिमायतियों—प्रतिक्रिया के सफेद गार्डों—के रूप में शिक्षित-दीक्षित होते हैं।

जॉन रीड ने हारवर्ड में चार साल विताये, जहां उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा तथा आकर्षक स्वभाव के कारण सभी उनसे स्नेह करते थे। विशेषाधिकार-संपन्न वर्गों की संतान के साथ उनका रोज़ का रब्त-ज़ब्त था। उन्होंने समाजशास्त्र के शिक्षकों के शब्दाडंबरपूर्ण भाषण सुने। उन्होंने पूंजीवाद के राजपुरोहितों, अर्थशास्त्र के प्राध्यापकों के उपदेशपूर्ण व्याख्यान सुने। और सब कुछ के बाद उन्होंने धनिकतंत्र के उस गढ़ में, उसके ऐन केंद्र में, एक समाजवादी क्लब का संगठन किया। कूढ़मग्ज़ों के मुह पर यह एक करारा तमाचा था। बड़े-बूढ़ों ने यह सोचकर संतोष कर लिया कि यह बस एक लड़कपन वाली धुन है, और कुछ नही। उन्होंने कहा, "उसने कालेज छोड़कर ससार में प्रवेश किया नही कि उसके ये गरम विचार ठंडे पड़ जायेंगे।"

जॉन रीड ने अपनी पढ़ाई ख़त्म की, अपनी डिग्री हासिल की, व्यापक संसार में प्रवेश किया और देखते देखते उसे जीत लिया। उन्होंने उसे अपनी जिंदादिली और जोश से, अपनी क़लम के ज़ोर से जीत लिया। अभी जब वह विद्यार्थी ही थे, उन्होंने हास्य रस की एक छोटी सी पत्रिका «Lampoon» (व्यंग्यलेख) के संपादक के रूप में यह प्रमाणित कर दिया कि वह हास्यपूर्ण, ललित शैली मे पूरे पारंगत हैं। उनकी लेखनी से कविताओं, कहानियों, नाटकों की एक अजस्र धारा प्रवाहित हुई। प्रकाशकों के प्रस्तावो की एक बाढ़ सी आ गई; सचित्र पत्रिकाओं ने उनकी रचनाओ के लिए मुहमागे पारिश्रमिक दिये और बड़े बड़े अख़बारों ने उनसे अंतर्राष्ट्रीय गतिविधि का पर्यवेक्षण करने का आग्रह प्रगट किया।

इस प्रकार वह संसार के राजमार्गों के पथिक बन गये। जो लोग भी संसार की समकालीन गतिविधि से परिचित रहना चाहते थे, उनके लिए जॉन रीड के लेखों पर नज़र रखना ही पर्याप्त था, क्योंकि प्रभंजन पक्षी की तरह वह सदा वही दौड़कर पहुंचते, जहां तूफ़ानी घटनायें हो रही होती।

पीटरसन में सूती मिल मज़दूरों की हड़ताल ने बढ़कर एक क्रांतिकारी तूफ़ान का रूप धारण कर लिया। जॉन रीड उस तूफ़ान मे पिल पड़े।

कोलोराडो के खनन-क्षेत्र में राकफेलर के ग़ुलाम अपनी "बिलों" से निकल आये और हथियारबंद रक्षकों की लाठी-गोली के बावजूद उन्होने उनमें वापस जाने से इनकार किया। विद्रोहियों की हिमायत में जॉन रीड वहां भी पहुंचे।

मेक्सिको में किसानों ने बग़ावत की और पान्चो विल्ला के नेतृत्व में राजधानी की ओर बढ़े। घोड़े पर सवार जॉन रीड उनके साथ थे।

इस कारनामे का विवरण «Metropolitan» (महानगर) मे और बाद में 'क्रांतिकारी मेक्सिको' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ। रीड ने लाल, गेरू के रंग की पहाड़ियों और "चारों ओर से विशाल नागफनियों से रक्षित" रेगिस्तानी मैदानों का वर्णन किया। दूर दूर तक फैले हुए मैदानों ने, और उनसे भी अधिक वहा की, ज़मीदारों और कैथोलिक चर्च द्वारा निर्मम रूप से शोषित, आबादी ने उन्हें मुग्ध कर लिया। उन्होंने लिखा कि पहाड़ी चरागाहो मे अपने ढोरों को चराने वाले और रात होने पर अलावों के चारों ओर बैठकर गीत गाने वाले ये लोग आज़ादी की फ़ौज मे शामिल होने के लिए बेताब थे, और नंगे पैर, फटे-चीथड़े पहने वे भूख और ठंड की परवाह न कर, आज़ादी के लिए, ज़मीन के लिए बड़ी बहादुरी से लड़े।

साम्राज्यवादी युद्ध शुरु हुआ, और जहा तोप के धमाके हो रहे थे, वहीं जॉन रीड भी मौजूद थे। वह फ़्रांस, जर्मनी, इटली, तुर्की, बाल्कन प्रदेश, यहां तक कि रूस मे भी पहुचे। ज़ार के अफ़सरो की ग़द्दारी का पर्दाफ़ाश करने और ऐसे तथ्य सग्रह करने के लिए उनको और प्रसिद्ध कलाकार बोर्डमैन राबिन्सन को पुलिस द्वारा हिरासत में ले लिया गया, जिनसे यह साबित हो जाता था कि यहूदियों की संगठित हत्या के काडों में इन अफ़सरों का भी हाथ था। लेकिन हमेशा की ही तरह अपनी सूझ-बूझ, तदबीर, तिकड़म या संयोगवश ही उन्होने जेल से छुटकारा पाया, और फिर हंसते हंसते अपने दूसरे साहसिक अभियान में उतर पड़े।

कोई भी ख़तरा इतना बड़ा न था कि वह उन्हे रोक सकता। ख़तरे की परिस्थिति उनके लिए स्वाभाविक थी। वह सदा किसी न किसी प्रकार निषिद्ध क्षेत्रों में अथवा मोर्चे की खाइयों में पहुंच जाते।

सितंबर, १६१७ में जॉन रीड तथा बोरीस रेइनश्तेइन के साथ रीगा के मोर्चे की अपनी यात्रा मुझे याद है। हमारी मोटर-गाड़ी दक्षिण में वेन्देन की ओर जा रही थी, जब जर्मन तोपखाने ने एक छोटे से गांव पर गोले दाग़ने शुरू कर दिये। यकायक वह गांव जॉन रीड की दृष्टि में संसार का सबसे आकर्षक स्थान बन गया! उन्होने आग्रह किया कि हम वहां जायें। सावधानी बरतते हुए हम धीरे धीरे चीटी की चाल से आगे बढ़े। इतने में यकायक हमारे पीछे एक भारी गोला फट पड़ा और सड़क का जो हिस्सा हमने अभी अभी पार किया था, उसके परखचे उड़ गये और काले धुएं और गर्द-गुबार का जैसे एक फ़ौवारा छूट पड़ा।

हम मारे डर के एक दूसरे को थामे रह गये, लेकिन क्षण भर बाद ही जॉन रीड का चेहरा खु़शी से खिल उठा, जैसे अभी अभी उनकी कोई आंतरिक इच्छा पूरी हुई हो।

इसी प्रकार उन्होंने संसार का ओर-छोर नाप डाला, उन्होने ग़ैरमामूली जोखिम के एक काम के बाद दूसरे काम में हाथ डालते हुए सभी देशों की यात्रा की, सभी मोर्चों का चक्कर लगाया। परंतु वह जान जोखिम में डालने वाले कोई मामूली आदमी नही थे, न ही पर्यटक पत्रकार अथवा दर्शक मात्र थे, जो जनता की मुसीबतों को भावशून्य दृष्टि से देखता है। न्याय तथा औचित्य की उनकी भावना इस सारी गड़बड़ी, गंदगी तथा खू़ंरेजी से आहत होती थी। वह धैर्यपूर्वक इन बुराइयों की जड़ तक पहुंचने की कोशिश करते थे, ताकि उन्हे समूल नष्ट किया जा सके।

जब वह अपनी यात्राओं से न्यू-यार्क लौटते तो आराम करने के लिए नही, नया काम और आंदोलन शुरू करने के लिए।

मेक्सिको से लौटने पर उन्होंने घोषणा की: "हां, मेक्सिको में बग़ावत और गड़बड़ी है, लेकिन उसके लिए ज़िम्मेदारी किसानो की नही, उन लोगों की है, जो रुपये की थैलियां और गोला-बारूद भेजकर झगड़े को बढ़ाते हैं, मतलब यह कि ज़िम्मेदारी प्रतिद्वंद्वी अमरीकी तथा ब्रिटिश तेल-कंपनियों की है।"

पीटरसन से लौटकर उन्होंने मैडिसन स्क्वायर उद्यान के हाल में "पूंजी के ख़िलाफ पीटरसन के सर्वहारा का युद्ध" नाम से एक जबरदस्त नाट्य-प्रदर्शन संगठित किया।

कोलोराडो से लौटकर उन्होने लुडलो के हत्याकांड का वर्णन किया, जिसकी विभीषिका ने साइबेरिया में लेना-खान की गोलीबारी को भी मात कर दिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार खान-मज़दूरों को गर्दनियां देकर उनके घरों से बाहर निकाल दिया गया, किस प्रकार उन्हें तंबुग्रों में रहना पड़ा, किस प्रकार इन तंबुग्रों पर पेट्रोल छिड़ककर उनमें ग्राग लगा दी गई, किस प्रकार सिपाहियों ने भागते हुए मज़दूरों को ग्रपनी बंदूकों का निशाना बनाया ग्रौर किस प्रकार दर्जनों स्त्रियां ग्रौर बालक लपटों में स्वाहा हो गये। करोड़पतियों के मुखिया राकफ़ेलर का संबोधन करते हुए उन्होंने कहा: "वे खानें ग्रापकी ही खानें हैं ग्रौर वे हत्यारे ग्रापके ही भाड़े के टट्टू हैं। ग्राप हत्यारे हैं!"

लड़ाई के मोर्चों से भी जब वह लौटे, उन्होंने इस या उस युद्धरत देश की नृशंसताग्रों के बारे में कोरी बकवास नहीं की, वरन् उन्होंने घोर पाशविकता के रूप में, विरोधी साम्राज्यवादों द्वारा संगठित नरमेध के रूप में उस युद्ध को ही धिक्कारा। उग्र क्रांतिकारी पत्रिका, «Liberator» (मुक्तिदाता) में, जिसको उन्होंने ग्रपनी बेहतरीन रचनाएं बिना एक पैसा लिये दी, उन्होंने 'ग्रपने सिपाही बेटे के हाथ बांध दो', यह नारा देते हुए एक प्रचंड साम्राज्यवाद-विरोधी लेख प्रकाशित किया। उन पर ग्रौर दूसरे संपादकों पर न्यू-यार्क की एक ग्रदालत में राजद्रोह का ग्रभियोग लगाया गया। सरकारी वकील इस बात पर तुला हुग्रा था कि देशभक्तिपूर्ण विचारों की जूरी उन्हें ग्रपराधी क़रार दे। उसने यहां तक किया कि मुकद्दमे की सुनवाई के दौरान राष्ट्र-गीत की धुन बजाते रहने के लिए ग्रदालत की इमारत के पास एक बैंड पार्टी को तैनात कर दिया! इसके बावजूद रीड ग्रौर उनके साथियों ने ग्रपने विश्वासों का पूरी दृढ़ता से समर्थन किया। जब रीड ने साहसपूर्वक कहा कि मैं क्रांतिकारी झंडे के नीचे सामाजिक क्रांति के लिए काम करना ग्रपना कर्त्तव्य समझता हूं, सरकारी वकील ने जिरह की:

"ग्राप क्या इस युद्ध में ग्रमरीकी झंडे के नीचे लड़ेंगे?"

रीड ने दृढ़ उत्तर दिया:

"नहीं, मैं नहीं लड़ूंगा!"

"क्यों नहीं?"

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए रीड ने एक ओजस्वी भाषण दिया, जिसमें उन्होंने उन विभीषिकाओं का वर्णन किया, जो उन्हें मोर्चों पर देखने को मिली थीं। यह वर्णन इतना यथार्थ, सजीव तथा मर्मस्पर्शी था कि पूर्वाग्रहों से आविष्ट मध्यवर्गीय जूरी के कुछ सदस्य भी विह्वल होकर रो पड़े और संपादकों को छोड़ दिया गया।

ऐसा हुआ कि जिस समय अमरीका ने युद्ध में प्रवेश किया, उसी समय रीड को आपरेशन कराना पड़ा, जिसके कारण उन्हें अपने एक गुर्दे से हाथ धोना पड़ा। डाक्टरों ने राय दी कि वह सैनिक सेवा के योग्य नहीं हैं।

इस पर जॉन रीड ने कहा कि "एक गुर्दे के जाते रहने से मुझे राष्ट्रों के बीच युद्ध में भाग लेने से चाहे छुट्टी मिल जाये, लेकिन उससे वर्ग-युद्ध में भाग लेने से छुट्टी नहीं मिल जाती।"

१६१७ की गर्मियों में रीड भागे-भागे रूस गये, जहां उन्होंने यह भांप लिया कि शुरुआती क्रांतिकारी मुठभेड़ों का रंग-ढंग ऐसा है कि वे एक विराट् वर्ग-युद्ध का आकार ग्रहण कर सकते हैं।

उन्होंने परिस्थिति का मूल्यांकन करने में देर नहीं लगाई और यह समझा कि सर्वहारा द्वारा सत्ता पर अधिकार युक्तिसंगत तथा अनिवार्य था। परंतु क्रांति का मुहूर्त्त बार बार टल जाने और देर लगने के कारण वह व्यग्र थे। रोज़ सुबह वह उठते और यह देखकर कि अभी क्रांति शुरू नहीं हुई है, उन्हें खीझ और झुंझलाहट होती। आख़िरकार स्मोल्नी ने संकेत दिया और जन-साधारण क्रांतिकारी संघर्ष के लिए आगे बढ़े। यह एक स्वाभाविक बात थी कि जॉन रीड उनके साथ साथ क़दम बढ़ाते। वह "सर्वविद्यमान" थे: पूर्व-संसद भंग की जा रही थी, बैरीकेड बनाये जा रहे थे, फ़रार हालत से निकलने पर लेनिन और ज़िनोव्येव का स्वागत किया जा रहा था या जब शिशिर प्रासाद का पतन हो रहा था – सभी जगह रीड मौजूद थे...

लेकिन इन सब घटनाओं का उन्होंने अपनी पुस्तक में वर्णन किया है।

एक जगह से दूसरी जगह घूमते हुए, उन्होंने अपनी सामग्री जहां से भी वह प्राप्य थी, संग्रह की। उन्होंने 'प्राव्दा' तथा 'इज्वेस्तिया' की पूरी फाइलों, सभी घोषणाओं, पैम्फलेटों, पोस्टरों, विज्ञप्तियों को इकट्ठा

लिया। पोस्टरों के पीछे तो वह पागल थे। जब भी कोई नया पोस्टर निकलता और उसे पाने का कोई और तरीक़ा न होता, तो वह उसे बेहिचक दीवार से फाड़ लेते।

उन दिनों पोस्टर इतनी तेजी से और इतनी बड़ी संख्या में छापे जा रहे थे कि उनके लिए दीवारों पर जगह न रह गयी थी। कैडेटों, समाजवादी-क्रांतिकारियों, मेन्शेविकों, वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों और बोल्शेविकों के पोस्टर एक के ऊपर एक इस तरह चिपका दिये जाते कि उनकी खासी मोटी परतें बन जातीं। एक दिन रीड ने एक के ऊपर एक तह-ब-तह लगाये गये १६ पोस्टरों का एक ढेर दीवार से फाड़कर अलग कर लिया और भागे भागे मेरे कमरे में आकर कागजों का यह भारी पुलिंदा उछालते हुए बोल पड़े: "यह देखो! मैंने एक ही झपाटे में पूरी क्रांति और प्रतिक्रांति को समेट लिया है!"

इस प्रकार भिन्न भिन्न तरीकों से उन्होंने एक बड़ा अच्छा संग्रह जुटाया, जो इतना अच्छा था कि जब १९१८ के बाद वह न्यू-यार्क बन्दरगाह में उतरे, संयुक्त राज्य अमरीका के अटार्नी जनरल के एजेंटों ने उसे जब्त कर लिया। लेकिन उन्होंने किसी प्रकार उसे फिर अपने क़ब्ज़े में ले लिया और उसे न्यू-यार्क के अपने कमरे में छिपा दिया, जहां उन्होंने भूगर्भी रास्ते की घड़-घड़, खड़-खड़ और अपने सिर के ऊपर और पैरों के नीचे गाड़ियों के दौड़ने की लगातार शोर-गुल के बीच अपनी पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' की रचना की।

यह समझ में आने वाली बात है कि अमरीकी फ़ासिस्ट यह नहीं चाहते थे कि यह किताब सर्वसाधारण के हाथ में पहुंचे। छः छः बार वे पाण्डुलिपि को चुराने की गरज से पुस्तक के प्रकाशक के कार्यालय में ताला तोड़कर घुस गये थे। अपने प्रकाशक को अपना फ़ोटो-चित्र देते हुए जॉन रीड ने उस पर निम्नलिखित शब्द लिखे थे: "अपने प्रकाशक होरेस लाइव-राइट को, जो इस पुस्तक का प्रकाशन करते हुए बर्बादी से बाल बाल बचे हैं।"

यह पुस्तक रूस के बारे में सचाई का प्रचार करने के उनके साहित्यिक प्रयत्नों का एकमात्र परिणाम न थी। पूंजीपति वर्ग को यह सचाई फूटी आंखों भी नहीं सुहाती थी। वह रूसी क्रांति से नफ़रत करता था और

उससे दहशत खाता था, और उसने धुआंधार झूठा प्रचार कर उस पर पर्दा डाल देने की कोशिश की। राजनीतिक मंचों, सिनेमा के पर्दों, पत्र-पत्रिकाओं के कालमों से घृणित कुत्सा की मटमैली धारा अजस्र प्रवाहित होने लगी। वे ही पत्रिकायें, जिन्होंने कभी रीड के लेखों के लिए याचना की थी, अब उनकी रचनाओं को छापने से बाज आते। लेकिन इस तरह उनका मुंह बंद नहीं किया जा सका। उन्होंने असंख्य जन-सभाओं में भाषण दिये।

उन्होंने स्वयं अपनी पत्रिका की स्थापना की। वह वामपंथी समाजवादी पत्रिका 'क्रांतिकारी युग' के और बाद में 'कम्युनिस्ट' के संपादक बन गये। उन्होंने «Liberator» पत्रिका के लिए लेख पर लेख लिखे, वह सम्मेलनों में भाग लेते हुए, अपने इर्द-गिर्द के लोगों को राशि राशि तथ्य देते हुए, उन्हें अपने स्फूर्ति तथा क्रांतिकारी उत्साह से अनुप्राणित करते हुए अमरीका के एक छोर से दूसरे छोर तक घूमे, और अंत में उन्होंने जो बहुत बड़ी बात की, वह यह कि अमरीकी पूंजीवाद के गढ़ में कम्युनिस्ट लेबर पार्टी का संगठन किया, उसी प्रकार जैसे उन्होंने हारवर्ड विश्वविद्यालय के केंद्र में समाजवादी क्लब की स्थापना की थी।

जैसा बहुधा होता है, "पंडितों" ने ग़लत सोचा था। जॉन रीड का उग्रवाद एक ऐसी धुन नहीं था, जो वक़्त के साथ गुज़र जाये। उनकी भविष्यवाणियों के बावजूद वाह्य संसार से संपर्क ने रीड का किसी भी प्रकार "उद्धार" नहीं किया था। उसने उनके उग्र विचारों को और भी उग्र कर दिया। ये विचार कितने गहरे और प्रबल थे, यह जॉन रीड द्वारा संपादित नये कम्युनिस्ट मुखपत्र 'मज़दूरों की आवाज़' से प्रत्यक्ष था। अमरीकी पूंजीवादियों का माथा ठनका—उनकी अब समझ में आया कि देश में आख़िरकार एक सच्चा क्रांतिकारी पैदा हुआ है। अब वे इस "क्रांतिकारी" शब्द से भीत और त्रस्त थे! यह सच है कि सुदूर अतीत में अमरीका के अपने क्रांतिकारी हुए थे और अब भी वहां "अमरीकी क्रांति की वीरबालायें" तथा "अमरीकी क्रांति के सपूत" जैसी जानी-मानी सामाजिक संस्थायें हैं, जिनके द्वारा प्रतिक्रियावादी पूंजीपति वर्ग १७७६ की क्रांति को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। परंतु वे क्रांतिकारी कब के मर चुके, जबकि जॉन रीड हाड़-मांस के क्रांतिकारी है, जीते-जागते क्रांतिकारी हैं, वह पूंजीपति वर्ग के लिए मूर्त्तिमान् चुनौती हैं, साक्षात यमराज हैं।

लिहाजा यह नहीं कहा जा सकता कि रूस ने जॉन रीड को क्रांतिकारी बनाया। लेकिन उसने उन्हें वैज्ञानिक रूप से सोचने वाला सुसंगत क्रांतिकारी जरूर बनाया। और यह एक बहुत बड़ी सेवा है। रूस ने उन्हे इसके लिए प्रवृत्त किया कि वह अपनी मेज को मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन की किताबों से लाद दें। उसने उन्हें इतिहास तथा घटनाक्रम की एक समझ दी। उसी की बदौलत उन्होंने अपने किंचित अस्पष्ट मानवतावादी विचारों के स्थान पर अर्थशास्त्र के निर्मम, कठोर सत्य को ग्रहण किया। और उसी ने उनको यह प्रेरणा दी कि वह अमरीकी मजदूर आंदोलन के शिक्षक बनें और उसके लिए वही वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करने का प्रयास करें, जो उन्होंने अपने विश्वासों के लिए प्रस्तुत किया था।

उनके दोस्त उनसे कहा करते, "जॉन, तुम राजनीति के लिए नही बने हो! तुम कलाकार हो, न कि प्रचारक। तुम्हें चाहिए कि तुम अपनी प्रतिभा को साहित्यिक सृजन में लगाओ।" वह इस बात की सचाई को अक्सर महसूस करते, क्योकि उनके दिमाग में नई कवितायें, नये उपन्यास तथा नाटक के विचार भरे होते और वे अभिव्यक्ति पाने के लिए जोर मारते, निश्चित आकार ग्रहण करने के लिए हठ करते। जब उनके दोस्त आग्रह करते कि वह अपने क्रातिकारी प्रचार-कार्य को छोड़कर अपनी मेज पर जम जायें, तब वह मुस्कराते हुए जवाब देते, "अच्छी बात है, मैं ऐसा ही करूंगा।"

परंतु उन्होंने अपना क्रातिकारी कार्य कभी बंद नही किया; वह ऐसा कर ही नही सकते थे! रूसी क्राति ने उनके मन-प्राण को जीत लिया था। उसने उनको पक्का कर दिया था और उनकी ढुलमुल, अराजक भावना पर कम्युनिज्म के अनुशासन का कठोर अंकुश लगा दिया था। उसने उन्हें इस बात के लिए प्रवृत्त किया कि वह क्रांति के एक अग्रदूत के रूप में अपना ज्वलंत संदेश लेकर अमरीका के नगरों में विचरण करें। १६१६ में क्रांति के आह्वान पर वह संयुक्त राज्य अमरीका की दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों को एक में मिलाने के सिलसिले में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के साथ काम करने के लिए मास्को पहुंचे।

कम्युनिस्ट सिद्धांत के नये तथ्यों से लैस होकर वह फिर गुप्त रूप से न्यू-यार्क के लिए रवाना हुए। एक मल्लाह ने दगा की और उनका भेद

खोल दिया; उन्हें जहाज से उतार लिया गया और फिनलैंड की एक जेल में एकांत कारावास में रखा गया। यहां से वह फिर रूस लौट आये, 'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल' में लिया, एक नई पुस्तक के लिए सामग्री जुटाई और बाकू में हुई पूर्वी जनों की कांग्रेस मे एक प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। उन्हें टाइफस ज्वर की छूत लग गयी (संभवतः काकेशिया में); अत्यधिक परिश्रम से उनका शरीर पहले ही छीज चुका था, फलतः वह इस रोग के ग्रास बने और रविवार, १७ अक्तूबर, १९२० को उनकी मृत्यु हो गई।

जॉन रीड की तरह दूसरे लोग भी थे, जिन्होंने अमरीका में और यूरोप में प्रतिक्रांतिकारी मोर्चे का वैसी ही बहादुरी के साथ मुकाबला किया, जैसी कि सोवियत संघ में लाल सेना ने प्रतिक्रांति से अपने संघर्ष में दिखाई। इनमें कुछ संगठित हत्याकांडों में मारे गये, और कुछ के मुंह पर जेलों में हमेशा के लिए ताला लगा दिया गया। एक को वापिस फ़्रांस लौटते हुए श्वेत सागर में तूफान के दौरान जान गंवानी पड़ी। एक और क्रांतिकारी सान-फ़्रांसिस्को में शहीद हुआ; जिस हवाई जहाज़ से वह हस्तक्षेप के प्रति प्रतिवाद करने वाली घोषणाओं को नीचे गिरा रहा था, उससे वह ख़ुद लुढ़क पड़ा। साम्राज्यवाद ने क्रांति पर प्रचंड आक्रमण किया अवश्य, परंतु यदि ये योद्धा न होते, तो वह आक्रमण और भी प्रचंड हो सकता था। प्रति-क्रांति का दबाव शिथिल करने में उन्होंने भी अपना योगदान दिया। रूसी क्रांति को रूसियों, उक्रइनियों, तातारों और काकेशियाइयों ने ही मदद नही पहुंचाई; चाहे कम ही सही, लेकिन फ़्रांसीसियों, जर्मनों, अंग्रेज़ों और अमरीकियों ने भी उसे सहारा दिया। इन "ग़ैर-रूसी विभूतियों" में जॉन रीड का नाम सदा उजागर रहेगा, क्योंकि वह एक असाधारण मेधावी व्यक्ति थे, जो भरी जवानी में मृत्यु के ग्रास हुए।

जब हेल्सिंगफोर्स और रेवेल से उनकी मृत्यु का समाचार हमारे पास पहुंचा, हमने यही समझा कि यह उन्हीं झूठों में एक झूठ है, जिन्हे प्रतिक्रांतिकारियों के झूठ के कारख़ाने रोजाना गढ़ा करते थे। परंतु जब लुईसे ब्रयांत ने इस स्तम्भित कर देने वाले समाचार की पुष्टि की, तब हमें इस समाचार के खंडन की आशा का परित्याग करना पड़ा, यद्यपि यह हमारे लिए अत्यंत कष्टप्रद था।

जब जॉन रीड की मृत्यु हुई, वह निर्वासित थे और पांच साल क़ैद की सज़ा उनके सिर पर मंडरा रही थी, लेकिन फिर भी पूंजीवादी अख़बारों तक ने कलाकार तथा मानव के रूप में उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। पूंजीवादियों ने चैन की सांस ली: जॉन रीड, जो उनकी झुठाई का पर्दाफ़ाश करना ख़ूब जानते थे और जिन्होंने अपनी लेखनी से उनकी इतनी निर्मम आलोचना की थी, अब जीवित न थे।

अमरीका के क्रांतिकारी जगत को अमार्जनीय क्षति पहुंची। उनकी मृत्यु के कारण हमारी अभाव की भावना का अमरीका से बाहर रहने वाले साथी मुश्किल से ही अंदाज़ा लगा सकते हैं। यह मृत्यु रूसियों की दृष्टि से स्वाभाविक बलिदान है, क्योंकि उनके लिए यह एक मानी हुई बात है कि एक व्यक्ति अपने विश्वासों के लिए अपने प्राणों की आहुति देता है। यहां भावना के लिए कोई स्थान नहीं है। सोवियत रूस में हज़ारों आदमियों ने समाजवाद के हेतु मृत्यु का वरण किया। परंतु अमरीका में अपेक्षाकृत कम बलिदान हुए हैं। आप चाहे तो कह लें कि जॉन रीड कम्युनिस्ट शहीद थे, आने वाले हज़ारों शहीदों के पूर्वगामी। सुदूर मुहासिराबंद रूस में उनके उल्का सदृश जीवन का सहसा अंत अमरीकी कम्युनिस्टों के लिए कठोर आघात था।

पुराने मित्रों और साथियों के लिए सांत्वना की बस एक बात है, वह यह कि जॉन रीड को उसी स्थान में समाधिस्थ किया गया, जो उन्हें संसार में सबसे ज्यादा प्यारा था – क्रेमलिन की दीवार के ज़ेर साये लाल चौक में। उनकी क़ब्र पर एक स्मारक खड़ा किया गया – उनके चरित्र के ही अनुरूप ग्रेनाइट का एक बेकाटा-तराशा शिलाखंड, जिस पर लिखा है:

"जॉन रीड, तीसरे इंटरनेशनल के प्रतिनिधि, १६२०।"

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषयवस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।

हमारा पता है :

२१, जूबोव्स्की बुलवार, मास्को,
सोवियत संघ।